नाना

एमिल ज़ोला

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :

प्रभात प्रकाशन

मथुरा

★

अनुवादक :

यादवचन्द्र जैन, ऐम० ए०

★

★

नवम्बर १९५७ ई०

★

मुद्रक :

सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस,

मथुरा

★

मूल्य :

छः रुपया

१.

इस समय ६ बज रहे थे किन्तु वेराइटी-थियेटर्स अभी तक रिक्त था। प्रतीक्षा में, बालकनी व आरकेस्ट्रा स्टाल में कुछ व्यक्ति बैठे दिखाई दे रहे थे जो गारनेट रंग की मखमली कुर्सियों में खोये से मालूम होते थे और जिन पर गैसेलियर से आता हुआ भीना प्रकाश पड़ रहा था। भव्य लालिमा लिए झीना पर्दा छाया में डूब रहा था और उसके अन्दर के स्टेज में निःशब्द वातावरण फैला हुआ था। स्टेज के आगे की फुट-लाइट अभी तक प्रकाशित नहीं हुई थी, और स्वर-वादकों के स्थान भी अभी तक रिक्त थे। ऊँचे पर तीसरी गैलरी में जो छत के निकट थी और जहाँ स्त्रियों के नग्न चित्र तथा बालकों के बादलों से इठलाते भावमय चित्र प्रदर्शित हो रहे थे, कुछ चीख व हँसी के शब्द सुनाई पड़ रहे थे और जहाँ से बातचीत का स्वर निरन्तर बाहर आ रहा था। जहाँ स्त्रियों और पुरुषों की भीड़ क़तारों में बैठी थी और जो टोपियां पहने हुए थे जिससे वे श्रमिक वर्ग के प्रतीन होते थे। वे एक प्रकार से छत को ही छूते हुए बैठे थे। थोड़ी थोड़ी देर में व्यवस्था बनाये रखता हुआ कोई न कोई कर्मचारी आता और ऊपर होने वाले शोर तथा चीख को रोकता। इसमें या तो कोई पुरुष होता जो शाम की पोशाक में घूमता था या कोई महिला जो धीरे २ टहल कर सामने आती और सारे हॉल को एक दृष्टि में देखकर घूम पड़ती। यकायक आरकेस्ट्रा के निकट के स्टाल में दो व्यक्ति चमके! वे कुछ क्षण खड़े होकर अपने चारों ओर देखते रहे।

"मैंने क्या कहा था, हेक्टर!" उस व्यक्ति ने कहा जो अपेक्षाकृत बड़ा व लम्बा दीख रहा था और जिसके छोटी-सी काली मूंछ थी। "हम लोग बहुत जल्दी आ गये हैं। तुम्हें कम से कम मेरी सिगार तो समाप्त कर लेने देना था।"

तभी एक व्यवस्थापिका निकट से निकली "ओह; मिस्टर फाचरी।" उसने परिचयात्मक स्वर में कहा—"अभी आधे घन्टे से पहले प्रारम्भ नहीं होगा।"

"तब क्यों, उस दुनियाँ में, वे अपने विज्ञापनों में ९ बजे की बात प्रकाशित करते है ?" हेक्टर ने प्रश्न किया, जिसकी लम्बी व पतली आकृति क्रोध का भाव प्रदर्शित कर रही थी। "आज ही सुबह क्लारिस ने जो स्वयं इसकी भूमिका में है, मुझसे निश्चित कहा था कि पर्दा ठीक ९ बजे उठ जावेगा।"

एक मिनट तक दोनों मौन रहे और अपने सर उठाकर बाक्सों की परछाइयों पर दृष्टि गड़ाये रहे, किन्तु हरे कागज, को जिसके द्वारा वे पंक्तिबद्ध थे, देखकर तो वे और भी हताश हो गये। नीचे, छोटे बाक्स बालकनी के नीचे के अन्धकार में पूर्णतः छिपे हुये थे। बालकनी के बाकसों में एक स्वस्थ महिला दीख रही थी जो बड़ी गम्भीरता से मखमल में ढके खम्भों की कतार को निहार रही थी। दाँई ओर तथा बाँई ओर काफ़ी ऊँचाई पर स्टेज के बाक्स झालरदार पर्दों से ढके किन्तु खाली दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण हॉल, जो सफेद तथा सुनहले आवरणों से सजा हुआ था और जहाँ बीच बीच में पीली हरियाली छाई हुई थी—लग रहा था मानो सुनसान पड़ा हो किन्तु यहां चमकते गैसेलियर से छनकर आते प्रकाश में ऊपर से एक प्रकार की धुंधली छाया उठती दिखाई दे रही थी।

"क्या तुम लूसी के लिए स्टेज-बाक्स प्राप्त करने में सफल हो सके हो ?" हेक्टर ने प्रश्न किया।

"हाँ," दूसरे ने उत्तर दिया—"किन्तु बिना अत्यधिक परिश्रम के नहीं ! ओह ! किन्तु लूसी के इतनी जल्दी आने का कोई प्रश्न नहीं है, वह आवेगी भी नहीं।" उसने एक जमुहाई ली और कुछ देर शांत रह कर कहना प्रारम्भ किया—"पहली रात्रि में ही आपको यह देखने को मिल रहा है, यह कम सौभाग्य की बात नहीं। 'ब्लान्ड वेनस' वर्ष का सफल प्रयास होगा। हर व्यक्ति इसके सम्बन्ध में छै महीने पहले से बात कर रहा है। आह, मेरे बच्चे ! ऐसा संगीत, ऐसा प्रवाह ! वार्डनोव ने जो यह जानता है कि किस प्रकार क्या होता है, प्रदर्शिनी के विशेष अवसर के लिए इसे सँभाल कर रख छोड़ा है।"

हेक्टर ने उपदेश के रूप में वह सब सुना ? अन्त में उसने एक प्रश्न किया—"और नाना नई तारिका जो वेनस की पात्री है, उसके सम्बन्ध में कुछ जानते हैं।"

"ओह ! फाँसी लटकाओ उसको। क्या तुम उसको भी प्रारम्भ करने वाले हो ?" गहरी उदासीनता प्रदर्शित करते हुये फाचरी ने कहा—"आज प्रातःकाल से ही मैंने सिवा नाना के और कुछ सुना ही नहीं है। मैं अपने परिचित कम से कम बीस व्यक्तियों से मिला होऊँगा पर जिधर देखो नाना ही नाना। क्या, तुम सोचते हो, मैं पेरिस के हर पेटीकोट से परिचित हूँ ? नाना, वार्डनोव की एक नई ईजाद है। हाँ, वह एक अच्छा चुनाव अवश्य होगी।"

इस बवंडर के पश्चात् वह कुछ देर तक मौन रहा। किन्तु हॉल की नीरवता, झीने प्रकाश जिसने उस सबको घेर रक्खा था, प्रवेश द्वारों के खुलने और बन्द होने की ध्वनि और हुश् हुश् के स्वर से जो एक चर्च की याद दिलाता था—वह चिढ़ रहा था।

"छोड़ो इसको," उसने अचानक कहा—"मैं यह सब सहन नहीं कर सकता। मैं निश्चित बाहर जाऊँगा। सम्भव है नीचे हमें वार्डनोव मिले जिससे हमें कुछ विशेष जानकारी प्राप्त हो सके।"

संगमरमर के चमकदार फर्श पर, जहाँ बुकिंग-ऑफिस था, उन्होंने जनता को आते हुये पाया। खुले हुये उन तीन द्वारों से—बाउलेवार्ड के उस व्यस्त वातावरण में, अप्रैल की एक शाम के मोहक दृश्य का आनन्द प्राप्त किया जा सकता था। गाड़ियां शीघ्रता में थियेटर तक आ रही थीं और तेज़ आवाज़ के साथ दरवाजे खुल व बन्द हो रहे थे। दो २ तीन २ के समूहों में समुदाय बढ़ता चला आ रहा था और तभी कुछ देर बाक्स-आफिस के सामने रुक कर बीच की दोहरी सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। महिलायें धीरे २ किन्तु इठलाती हुई, आगे बढ़ रही थीं। दूधिया प्रकाश में, हॉल की नंगी दीवारों में जिनकी साधारण सजावट से पता लग रहा था जैसे वे एक ऐसे स्टाइल की है जो एम्पायर के कार्ड-बोर्ड के मन्दिर सी लग रही थीं; जिनमें पीले पोस्टर लगे हुये थे और उनमें नाना का नाम बहुत बड़े बड़े काले अक्षरों में उभर रहा था। इन पोस्टरों को पढ़ते हुये लोग टहल रहे थे। कुछ लोग खड़े हुए आपस में

वार्तालाप कर रहे थे और प्रवेश द्वारों को घेरे हुए थे। दूसरी ओर बाक्स-आफिस के निकट एक सुसज्जित व्यक्ति अपनी भव्य क्लीन-शेव की हुई आकृति में खड़ा, उन लोगों को शीघ्रता में उत्तर दे रहा था जो व्यर्थ की घबड़ाहट में अपनी सीट पाने के लिए उत्सुक थे।

जैसे ही वह हेक्टर के साथ सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था फाचरी ने कहा—"वह है वार्डनोव।"

किन्तु मैनेजर ने अपनी दृष्टि से उसे पकड़ लिया, "आप बहुत भले आदमी हैं," उसने कहा—"वह एक तरीका है जिस प्रकार आपने मुझे वह नोटिस दिया था, है न ? आज प्रातःकाल ही मैंने 'फिगारो'* को देखा था किंतु उसमें एक शब्द भी नहीं था।"

"थोड़ा रुकिये।" फाचरी ने उत्तर दिया—"मैं उसके सम्बन्ध में कुछ लिखूँ इसके पहले मैं तुम्हारी नाना को अवश्य देख लूँगा। इस पर भी मैं कोई वादा नहीं करता।"

तब आगे का विवाद रोकने के लिए उसने अपने भतीजे का परिचय दिया। "एम. हेक्टर, डि. ला फेलो, एक स्वस्थ युवक जो अपनी शिक्षा पूर्ण करने के लिए पेरिस आये हैं।" मैनेजर ने एक दृष्टि में युवक को तोलना चाहा किन्तु हेक्टर भी मैनेजर को भावुकता की दृष्टि से आंक रहा था।

और यह रहा वार्डनोव, स्त्रियों की नुमाइश लगाने वाला, जिसको वह जेल के वार्डर की श्रेणी में रखता था, जिसका मस्तिष्क सदैव धन प्राप्त करने की नूतन योजनाओं में लगा रहता है; पूरा सनकी, हमेशा हल्ला मचाने वाला, या थूकते रहने वाला और अपनी जांघों पर हाथ पटकने वाला जिसमें एक प्रकार से सैनिक का सा खुरदरा मस्तिष्क था। हेक्टर उस पर एक अच्छा प्रभाव उत्पन्न कर लेने को उत्सुक हो रहा था।

"आपका थियेटर है।" उसने साफ और संगीतमय स्वर में कहना प्रारम्भ किया।

वार्डनोव ने उसे धैर्यपूर्वक रोककर कहा, व्यक्ति के ऐसे सन्तोषप्रद

---

*फिगारो—पेरिस का प्रसिद्ध समाचार पत्र।

भाव से जो वस्तुओं को ठीक नाम से पुकारने को महत्व देते हैं, "कहिये मेरा एक प्रकार का चकला या वेश्यालय।"

फाचरी स्वीकारात्मक हँसी हँसा किन्तु ला. फेलो कुछ अंश तक आश्चर्यान्वित हुआ और उसका वह प्रसाद उसके गले में अटका रह गया जिसको उसने एक प्रकार से निगलने की चेष्टा की थी कि जैसे वह उस व्यंग्य की सराहना कर रहा हो। मैनेजर तपाक् से आगे बढ़ा और ड्रामा के उस अलोचक से हाथ मिला लिया जिसकी समीक्षा का एक विशेष महत्व है। जब तक वह लौटा तब तक ला. फेलो व्यवस्थित हो चुका था। वह कुछ डरा भी कि अत्यधिक उपेक्षा से कहीं ऐसा न हो कि वह प्रान्तीयतावादी की श्रेणी में आ जावे।

"मुझसे ऐसा कहा गया है"—उसने ऐसे प्रारम्भ किया, जैसे कि किसी भी भाँति कुछ कहा जा सके—"नाना की स्वर लहरी बड़ी मधुरिन है।"

"वह" मैनेजर ने चीख कर कहा और अपने दोनों कन्धे हिला लिए—"उसके कोई स्वर नहीं है अपितु एक चिंचियाहाट है।"

युवक ने शीघ्रता में जोड़ दिया—"इसके अतिरिक्त वह एक सुन्दर अभिनेत्री भी है।"

"वह एक व्यर्थ का लौंदा है। वह यह भी नहीं जानती कि कहां हाथ टिकाया जाता है और कहां पैर?"

ला फेलो का रङ्ग कुछ गहरा हो गया। उसमें यह उलझन हो रही थी कि वह क्या समझे? तभी उसने स्थिर होकर कहा—"किसी भी प्रकार मैं यह पहली रात नहीं छोड़ सकता था। मैं जानता हूँ कि आपका थियेटर······।"

"कहिये मेरा चकला", वार्डनोव ने पुनः रोकते हुये कहा जो अपनी सान्त्वना के लिए पूर्णतः दृढ़ था।

इसी बीच में जो महिलायें प्रवेश कर रही थीं उन्हें फाचरी शान्तिपूर्वक देख रहा था। तभी वह अपने भतीजे की सहायतार्थ आगे बढ़ा जो उस क्षण यह सोच सकने में असमर्थ था कि वह हँसे अथवा क्रोधित हो।

"वार्डनोव को सन्तोष दो। उनके थियेटर को वैसे ही कहो जैसा वे चाहते हैं क्योंकि इसमें उन्हें आनन्द मिलता है। और प्रिय महोदय! आप के लिए······आप हम लोगों को मूर्ख बनाने की चेष्टा न कीजिये। यदि तुम्हारी

नाना न नृत्य कर सकती है न अभिनय कर सकती है तो आज रात को निश्चित ही तुम एक तमाशा बनाओगे। और सचमुच वैसी ही मैं आशा भी कर रहा था।"

"असफल ! असफल।" मैनेजर चिल्लाया। उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। "क्या एक स्त्री के लिए यह आवश्यक है कि वह नाचना और अभिनय करना जाने ही ? ओह, मेरे लड़को, तुम आवश्यकता से अधिक उदण्ड हो। नाना में कुछ और है, छोड़ो उसको। और कुछ ऐसा है जो उस वस्तु की पूर्ति है जो उसमें नहीं है। मैंने उसका अनुभव किया है। उसमें यह विशेषता अधिक मात्रा में है। या मैं केवल मूर्ख ही हूँ। तुम देखोगे, तुम देखोगे, उसको केवल प्रकट भर होने दो और तब सभी दर्शक निर्वाक् रह जावेंगे।" उसने अपनी लम्बी भुजाओं को फैला दिया जो उत्साह से काँप रही थीं और अपने स्वर को धीमा करते हुये 'स्वगत' कहा—"हाँ, वह आगे चली जावेगी। छोड़ो उसको ! आह ! हाँ, वह आगे बढ़ जावेगी। एक शरीर, ओह, ऐसा गात ?"

तब फाचरी के प्रश्नों के उत्तर में विस्तृत विवरण देते हुये उसने कुछ ऐसी कठोर भाषा का प्रयोग किया कि हेक्टर तिलमिला उठा। वह नाना से परिचित था और उसको प्रकाश में लाना चाहता था; कुछ ऐसा संयोग हुआ कि उसे *'वीनस' की आवश्यकता थी। वह अधिक समय तक किसी स्त्री को अपने ऊपर लटकाये नहीं रखना चाहता था और वह जनता को भी उसके द्वारा उसके अधिकार को देना ही चाहता था। तब उसकी दूकान में उसका समय बड़ी ही चिन्तनीय दशा में व्यतीत होता था। और तभी इस इठलाती लड़की ने एक हलचल उत्पन्न कर दी। रोज मिगनन जो उसकी मुख्य पात्री थी और जो बड़ी सुन्दर अभिनेत्री थी और जिसके संगीत में मीठा लोच था प्रतिदिन छोड़कर चले जाने की धमकी दिया करती थी। नाना में प्रतिद्वन्द्विता का अनुभव कर वह निरंतर आवेश में आती जा रही थी। और खेलों के वे विज्ञापन, क्या तमाशा बनाया था उन्होंने ! तब किसी प्रकार उसने निश्चय किया कि दोनों अभिनेत्रियों का नाम वह एक ही प्रकार के अक्षरों में छापेगा। जब उसकी छोटी अभिनेत्रियाँ जैसे क्लारिस या साइमोन वैसा नहीं करती जैसा उनको आदेश दिया जाता तो वह उनको ठोकर मारकर पीछे ढकेल देता और यदि वैसा न किया जाता

*वीनस—एक देवता, शुक्र का तारा।

तो वे चैन न लेने देतीं। इस प्रकार इन सबसे उसे काम लेना पड़ा। वह उनके मूल्य को भलीभाँति जानता था।

"आह !" कहते हुए उसने अपने आप को रोका। "सामने से रोज मिगनन और स्टेनियर आ रहे हैं। वे सदैव एक साथ रहते हैं। आप जानते हैं कि स्टैनियर, रोज में पूर्णतः सीमित हो रहा है, और तभी पति उसमें प्लास्टर की तरह चिपका रहता है कि कहीं वह गायब न हो जावे।"

चमक कर थियेटर की कार्निस पर दौड़ते हुए दूधिया बल्व 'फुटपाथ' पर प्रकाश की एक बिखरती तह फैला रहे थे। दो छोटे २ वृक्ष अपनी हरी ताजगी में स्पष्ट खड़े दीख रहे थे, और खम्भा प्रकाश की चमक में इतना दमक रहा था कि उसमें लगे पोस्टर बहुत दूर से भी स्पष्ट पढ़े जा सकते थे, जैसे दोपहरी फैल रही हो। साथ ही, कुछ दूर पर, बाउनेवार्ड के अन्तरंग में जड़ित विद्युत् के अनगिन लट्टू गहरे अंधियारे को समेट रहे थे और चलती-फिरती व्यस्त भीड़ को प्रकट कर रहे थे। बहुत से लोग तुरन्त ही हॉल में नहीं घुसे थे, अपितु अपनी सिगार को समाप्त करने के लिये बाहर ही टहल रहे थे और 'गैस-लाइट' में आपस चर्चा कर रहे थे, जिससे उनकी आकृतियाँ स्पष्ट दीख रही थीं, और उनकी छोटी और काली छाया फर्श पर नीचे फैल रही थी। मिगनन एक लम्बा और स्वस्थ व्यक्ति, हरकुलीज की भाँति घूमती हुई चौकोर खोपड़ी लिये, अपने उभरे कंधों से मार्ग बनाता, भीड़ में आगे बढ़ रहा था। उसके साथ बैंकर स्टेनियर था, एक छोटा व बड़े पर वाला व्यक्ति, जो अपने गोल चेहरे के साथ सफेद सी दाढ़ी लिये हुए था।

"हाँ तो!" बार्डनोव ने बैंकर से कहा—"तुमने उसे कल मेरे आफिस में देखा था।"

"आह ! क्या वही थी ?" स्टेनियर ने कहा—"मैंने इतना सोचा भर था, मैं निकल रहा था और वह अन्दर आ रही थी। मैं उसको तनिक ही देख पाया था।"

नीचे गड़ी हुई निगाह से मिगनन ने सुना, जो प्रतिक्षण अपनी छोटी उंगली की हीरे की अँगूठी को घुमाता जा रहा था। उसने तुरन्त जाना कि वे नाना के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे हैं। अपनी नई तारिका के सम्बन्ध में

कुछ व्यक्ति करने के लिये बार्डनोव ज्योंही यह देखकर आगे बढ़ा कि उससे बैंकर की आँखें चमक रही हैं, तो उसने उसे रोकने का निश्चय किया।

"यह सब ठीक है, प्रिय महोदय! वह देखने योग्य भी नहीं है। जनता शीघ्र ही उसे बैरंग लौटा देगी। स्टेनियर–मेरे बच्चे, तुम जानते हो कि मेरी पत्नी तुम्हें अपने ड्रैसिंग रूम में बुला रही है।"

उसने उसे आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया, किंतु स्टेनियर ने बार्डनोव को छोड़ने से इन्कार कर दिया। बाक्स आफिस के निकट की भीड़ और गहरी हो चली थी, और चहल-पहल की ध्वनि बढ़ती चली जा रही थी। प्रत्येक के ओठों पर नाना का नाम था, जो उन दो शब्दों को संगीतमय स्वर में गुनगुना रहे थे। पुरुष, जो पोस्टरों के सामने खड़े थे, जोर-जोर से पढ़ रहे थे; कुछ जो आगे बढ़ते जाते थे, प्रश्नसूचक भावों से देखते जा रहे थे, और स्त्रियाँ हँसती हुई किंतु कुछ परेशान सी धीरे से उसको दोहरा रही थीं, किंतु उनमें एक आश्चर्य की भावना मिश्रित थी। नाना को कोई नहीं जानता था। धरती के किस ओर से नाना आई है, किसी को पता नहीं था। छोटे २ मजाक एक कान से दूसरे कान में घूम जाते थे, और मन-गढ़ंत कहानियाँ प्रकट हो रही थीं। मन्त्र की भाँति प्रत्येक के ओठों पर वही नाम गूँज रहा था। निरंतर ध्वनि होने के कारण वह समुदाय में मनोरंजन का कारण बना हुआ था। उत्सुकता का वातावरण चतुर्दिक फैला हुआ था। वह पेरिसवासियों की वैसी उत्सुकता थी, जो कभी २ बढ़कर सिर दर्द उत्पन्न कर देती है। प्रत्येक व्यक्ति नाना को देखने को लालायित था। एक महिला के कपड़े फट गये थे व एक सज्जन का हैट खो चुका था।

"ओह! आप तो मुझे तंग कर रहे हैं।" बार्डनोव चिल्लाया, जिसे चारों ओर से बीस आदमी घेर कर प्रश्नों की झड़ी लगाये हुए थे। "आप लोग अभी स्वयं देख लेंगे। मुझे अब जाना चाहिये। वे लोग मेरी प्रतीक्षा में होंगे।"

वह गायब हो गया किन्तु जनता को उत्सुकता में छोड़कर वह बड़ा गर्वित था। मिगनन ने अपने कन्धे हिला दिये और स्टेनियर को याद दिलाने लगा कि पहले अङ्क के कपड़े दिखाने के लिये रोज उसकी प्रतीक्षा में होगी।

"हल्लो ! वह सामने लूसी अपनी गाड़ी से उतर रही है।" ला फेलो ने फाचरी से कहा।

निश्चित् ही वह लूसी स्टेवर्ट थी--जो क़द में छोटी, असुन्दर और लगभग ४० की आयु की स्त्री थी; उसकी गर्दन लम्बी, पतला और मुरझाया हुआ चेहरा, मोटे ओठ--किंतु उसमें कुछ ऐसा आकर्षण, कुछ ऐसी मिठास थी कि वह प्रत्येक को मोह रही थी। उसके साथ केरोलीन हेकेट और उसकी माँ थी। केरोलीन में शान्त सौंदर्य था और माँ अधिक वैभवयुक्त थी, मानो वह भारी २ लग रही थी।

"तुम निश्चित् ही हमारे साथ आ रहे हो।" उसने फाचरी से कहा—"मैंने तुम्हारे लिये एक स्थान रख छोड़ा है।"

"जिससे मैं कुछ देख ही न सकूँ।" उसने उत्तर दिया। "मेरे पास एक आरकेस्ट्रा स्टाल है। मैं वहाँ बैठना अधिक उपयुक्त समझता हूँ।"

लूसी एक साथ तमतमा उठी—"क्या वह उसके साथ देखे जाने से डरता है ?" तब तुरन्त अपने को शांत करते हुए वह दूसरे विषय पर आ गई।

"तुमने मुझे कभी यह क्यों नहीं बताया कि तुम नाना को जानते हो ?"

"नाना, मैंने तो उसे कभी देखा नहीं।"

"क्या यह सचमुच सही है ? मुझसे तो यह निश्चित् रूप से कहा गया है कि तुम एक रात्रि उसके साथ रहे हो।"

किन्तु मिगनन जो उनके सामने था, अपने ओठों पर उंगली रखकर संकेत दे रहा था कि शांत रहिये। और जब लूसी ने पूछा—"क्यों ?" तो उसने एक युवक की ओर संकेत करके, जो निकट से बाहर जा रहा था, कहा—"नाना का प्रेमी।"

वे सब उसकी ओर झांकने लगे। वह निश्चित् ही अति सुन्दर था। फाचरी ने उसे पहचान लिया। उसका नाम डागनेट था, जिसने औरतों पर तीन हजार फ्रांक बुरी तरह लुटाये थे। अब कुछ धन बनाने के लिये सट्टे के पानी में खेल रहा है, जिससे उसकी सम्मान-गोष्ठियाँ और दावतें कर सके। लूसी ने सोचा, उसके बड़े मोहक नेत्र हैं।

"आह ! वह ब्लान्च है।" उसने कहा—"यह वही है जिसने मुझसे कहा था कि तुम एक रात नाना के साथ रहे थे।"

ब्लान्च डि. शिवरी—बहुत् हसीन, जिसका अति सुन्दर मुखड़ा मासलता से भर रहा था, सामने आई जिसके साथ एक सुव्यवस्थित और दुबला आदमी था, किंतु जिसका व्यक्तित्व अलग उभर रहा था।

"काउन्ट एक्जेवियर ब्रान्डेन्नेस", फाचरी ने लौ फेलो से कहा।

काउन्ट ने उस पत्रकार से हाथ मिलाया और दूसरी ओर लूसी व ब्लान्च में वार्तालाप छिड़ गया। उभरती झालरों से युक्त उनके स्कर्ट आवागमन में एक प्रकार से रुकावट उत्पन्न कर रहे थे, उनमें एक पीला और दूसरा नीला था, और नाना का नाम उनके ओठों से बारम्बार ऐसे निकल रहा था कि बढ़ती भीड़ सहसा रुक कर वह सुनती थी। थोड़ी देर काउन्ट, ब्लांच को लेकर आगे बढ़ गया, किंतु चारों कोनों से नाना का नाम इस प्रकार ध्वनित होता रहा कि स्वर निरंतर तीव्र होता चला गया। "क्या अभी वे आरम्भ नहीं करेंगे ?" लोगों ने अपनी घड़ियाँ देखीं। देर में आने वाले आदमी गाड़ियों से उतर कर तब तक आगे लपकते रहे जब तक वे भीड़ से रुक न गये। समूहों ने मार्ग छोड़ दिया, जब कि सड़क पर जाने वाले उचक २ कर यह देखते रहे कि हॉल में क्या हो रहा है, और वे फैली रोशनी में आगे बढ़ते गये। एक मार्ग का भिखारी सीटियाँ बजाता हुआ सामने आया, बाहर लगे एक पोस्टर के सामने कुछ देर रुका और नशे की आवाज में चिल्ला उठा—"ओह, मेरी नाना ?" और अपने मार्ग में लुढ़क गया तथा अपने पुराने जूतों को कढ़ेलता रहा। लोग हँसते रहे और कुछ सुसज्जित वेश-भूषा में बढ़ते हुए दोहराने लगे—"नाना ! ओह, मेरी नाना !" भीड़ अत्यधिक थी। बाक्स आफिस में झगड़ा भी हो गया। "नाना, नाना" की चिल्लाहट बढ़ती ही गई। उस प्रकार के उद्दण्ड आवेश जो ऐसी भीड़-भाड़ में सम्भव हैं, वैसे ही इस भीड़ में भी स्थान पा गये। इसी हल्ले-गुल्ले में घण्टी का एक लहराता स्वर गूँजा। बाउलेवार्ड में यह अफवाह गर्मी से फैल गई कि पर्दा उठने वाला है; तब धक्का-मुक्की और भीड़ बढ़ी, प्रत्येक व्यक्ति अन्दर घुसने को उतावला हो रहा था, थियेटर के कर्मचारियों की दशा बड़ी चिन्तनीय थी। मिगनन ने, जो घबड़ा रहा था,

स्टेनियर को पकड़ लिया। रोज क्या पोशाक पहनेगी, यह देखने वह अभी तक नहीं गया था। घण्टी की पहली चीत्कार पर, लौ फेलो भीड़ में आगे बढ़ गया। वह साथ में फाचरी को इस डर से आगे घसीट रहा था कि कहीं उस धक्का-मुक्की में वह छूट न जावे। लूसी स्टेवर्ट इस सब व्यर्थ की भावुकता को देखकर बिगड़ रही थी। कैसे बेहूदे लोग हैं, जो स्त्रियों को धक्का देकर चलते हैं। वह अन्त तक कैरोलीन हेकेट और माँ के साथ रही। अन्त में मुख्यद्वार के सामने का स्थान रिक्त हुआ। बाहर निरंतर शोर हो रहा था।

"ऐसा लगता है जैसे उनके अभिनय के अंश, सदैव हँसाने वाले रहते हैं।" जीने में चढ़ते हुए लूसी दोहरा रही थी।

फ़ाचरी और लौ फेलो, अपने स्थानों पर खड़े होकर हॉल का निरीक्षण कर रहे थे, जो इस समय जगमगा रहा था। चमकते गैंसेलियर से आता प्रकाश चीख-पुकार में आशा का वातारण उत्पन्न कर रहा था, और वह सुनहला प्रकाश जो छत्त से आकर फर्श पर बिखर रहा था—ऐसा लगता था मानो स्वर्ण वर्षा कर रहा हो। गारनेट रंग के मखमल की कुर्सियों से ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे कोई लाल झील उमड़ आई हो। सुनहले काम की जगमगाहट के बीच फैली छत्त की पीली हरियाली की सजावट, आकर्षक लग रही थी। उस झिलमिलाते लाल पर्दे पर पड़ता 'फुट-लाइट' का प्रकाश भव्यता व शालीनता में राज-प्रासाद का सा अनुभव करा रहा था। इसके विपरीत उसके फ्रेम की गरीबी व उसके सूराखों द्वारा प्रकट होने वाला प्लास्टर खेद व्यक्त कर रहा था। उस समय अत्यधिक गर्मी भी हो रही थी। 'आरकेस्ट्रा' में स्वर-वादक अपने बाजों की तानें मिला रहे थे; बाँसुरी की गुनगुनाहट, हार्न की कड़कड़ाहट और वायलिन की सुरीली तानों की ध्वनियाँ भीड़ की उमड़ती गड़गड़ाहट में कभी २ दब जातीं। सभी दर्शक आपस में वार्तालाप कर रहे थे। बैठने के स्थान तक पहुँचने के लिये आगे बढ़ रहे थे या घसीटे जा रहे थे। किनारे की गैलरी में तो भीड़ इतनी अधिक थी कि निरंतर आने वालों के सीमारहित आगमन से द्वार निरर्थक सिद्ध हो रहे थे।

दूरी से मित्र आपस में एक दूसरे को अभिवादन कर रहे थे। वस्त्रों की विभिन्नता व नवीनता से ऐसा लग रहा था मानो आधुनिकता का जलूस बढ़

रहा हो। वेश-भूषा की सुन्दरता में कभी कोई काली पोशाक या गहरा ओवर कोट अलग ही दिखाई देता।

किसी प्रकार सब स्थान भर गये थे। इधर-उधर चमकदार रंग की पोशाकें, जिनमें कामदानी की धारियाँ खिंची हुई थीं, और जिनमें स्थान २ पर जवाहरात झलक रही थी, दीख जाती थीं। एक बाक्स में दूर से एक सुन्दरी के नग्न कंधे चमक रहे थे, जो संगमरमर या हाथी दाँत की तरह दूधिया लग रहे थे। अन्य स्त्रियाँ प्रतीक्षा में शांत बैठी अपने पंखों को झल रही थीं, और निरंतर आती हुई भीड़ की ओर निहारती जाती थीं।

नवजवान अलबेलों का एक जत्था, आरकेस्ट्रा स्टाल में खड़ा था। इनकी कमीजें सब आगे की ओर थीं, और वे अपने बटन होलों में फूल-पत्तियाँ लगाये हुए थे, साथ ही अपने ओपेरा ग्लासों में गहरी दृष्टि से चारों ओर देखते जाते थे, जिनकी उंगलियों के आगे का भाग-खुशनुमा ग्लोब्स से ढँका हुआ था।

परिचितों की खोज में दोनों भतीजे चारों ओर झाँक रहे थे। मिगनन और स्टेनियर बाक्स में पास २ बैठे गये और उन्होंने अपने हाथ मखमली खम्भों पर टिका दिये। ब्लांच डी. शिवरी एक स्टेज बाक्स में अकेली दीख रही थी। किन्तु ला फेलो, डागनेट को निरंतर देख रहा था, जो आरकेस्ट्रा स्टाल में उससे दो पंक्ति आगे बैठा था। उससे आगे एक अल्हड़ युवक बैठा था, जो केवल १७ वर्ष का होगा और कॉलेज से बिल्कुल ताजा २ आया दिखाई पड़ता था, जो अपनी 'चेरव'* की तरह की चमकदार आँखें फैला देता था। फाचरी ने जैसे ही उसे देखा, तो वह हँस दिया।

"बालकनी में वह महिला कौन है?" ला फेलो ने अचानक प्रश्न किया। "मेरा आशय उससे है, जिसके निकट नीली पोशाक पहिने एक नव-जवान लड़की बैठी है।"

उसने अपने निकट बैठे मित्र का ध्यान उस ओर आकर्षित किया जहाँ वह महिला बैठी थी, जो देखने सुनने में सुडौल और कसे हुए कपड़ों में थी, तथा किसी समय के जिसके आकर्षक बाल, आज सफेद हो गये थे और वह पीली पड़ी हुई थी। जिसके गोल चेहरे पर पाउडर लगा हुआ था और लाली चमक रही थी, जो इधर-उधर पड़ी एक दो अलकों से पुत रही थी।

---

*सुन्दर बालक।

"वह गागा है।" फाचरी ने साधारण रूप से कह दिया । किन्तु यह सोचकर कि केवल नाम बता देने मात्र से तो उसके भतीजे को कोई विवरण प्राप्त नहीं हो सका है, उसने जोड़ दिया—"क्या तुमने गागा के सम्बन्ध में नहीं सुना है। वह लुई फिलिपि के शासन के प्रथम वर्षों की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी रही है। अब वह अपनी पुत्री के साथ के अतिरिक्त, कभी कहीं नहीं देखी जाती है।"

उस तरुणी की ओर ला फेलो अधिक आकर्षित न था । हाँ, गागा के प्रति वह अद्भुत रूप से आकर्षित हुआ था; उसे निरंतर देखते रहने का मोह वह संवरण न कर सका। वह उसे अब भी बड़ी सुन्दर समझ रहा था, किंतु वस्तुतः यह बात कहने का साहस उसमें न था। अन्त में आरकेस्ट्रा के निर्देशक ने संकेत दिया, और वादकों ने प्रारम्भ की लय ध्वनि की । दर्शक अब भी चले आ रहे थे, और शोर निरंतर बना हुआ था।

विशेष अवसरों पर—जसा कि यह था, मित्रगण अपनी मुस्कान-भरी-मादकता से हॉल के एकान्त भाग में मिलते थे; साथ ही प्रतिदिन के परिचित भी इधर-उधर करके, भृकुटी संकेतों से मिलन-व्यापार परिपूर्ण कर लेते थे। सम्पूर्ण पेरिस नगरी वहाँ विराज रही थी। इनमें विद्वान थे, धनिक थे, मन-रञ्जक थे, अनेक पत्रकार थे, कुछ चुने हुए लेखक थे, कुछ सटोरिये भी थे। सम्भ्रांत महिलाओं की अपेक्षा, मेल-जोल व गुप्त-व्यापार की लड़कियाँ अधिक संख्या में थीं। यह सारा समुदाय, संक्षेप में, एक ऐसा मिला-जुला 'मिक्श्चर' था—जिसमें सब प्रकार की विशेषताएँ थीं; साथ ही इसमें भिन्न जाति के व्यक्ति भी थे। किंतु हाँ, सभी एक-सी चहल-पहल, एक-सा आकर्षण, एक-सी उत्सुकता व एक-सा उतावलापन था। अपने भतीजे के प्रश्न के उत्तर में फाचरी संकेत द्वारा विभिन्न समाचार पत्रों व क्लबों के पृथक २ बाक्स, उसे दिखा रहा था। अभिनय के आलोचकों का पृथक स्थान था, उनमें एक दुबला-पतला चमरख सा व्यक्ति था, जिसके पतले व डरावने ओठ थे। विशेष तौर पर एक स्वस्थ व सुन्दर प्रकृतियुक्त आकृति लिये एक दूसरे सज्जन थे, जो अपने एक साथी की पीठ पर झुके हुए थे, जो देखने में नीरस से लग रहे थे, किंतु उस ओर वह श्रद्धायुक्त नेत्रों से देखता रहा। तुरन्त ही संक्षेप में उसने अपने को घुमा लिया, जब उसने देखा कि जिन व्यक्तियों ने बीच का बाक्स प्राप्त किया है, उनकी

ओर लौ फेलो विनय भाव से देख रहा है , वह कुछ आश्चर्यचकित सा हो रहा था ।

"क्या ! तुम काउण्ट मुफर डि. वाडपिले को जानते हो ?" उसने प्रश्न किया ।

"ओह, हाँ ! मैं उनको बहुत समय से जानता हूँ ।" हेक्टर ने उत्तर दिया । "मुफर की जागीर हम लोगों के निकट ही है । मैं अनेक बार उनसे मिलता-जुलता रहा हूँ । काउण्ट अपनी पत्नी व पिता के साथ हैं, उनका नाम है—मारक्युस डि. चौरड ।"

परिचय के इस आश्चर्य से प्रसन्न होकर और कुछ गर्व का अनुभव करते हुए, ला फेलो ने उनका विस्तृत विवरण देना प्रारम्भ किया—"मारक्युस, एक स्टेट काउन्सिलर थी, और काउण्ट अभी महारानी के चेम्बरलेन चुने गये हे ।" फाचरी ने अपना ओपेरा ग्लास ऊपर उठाकर काउण्टेस का निरीक्षण किया—एक स्वस्थ मासल नारी, जिसका गात गौरवर्ण था और अति सुन्दर काली २ आँखें थीं ।

अन्त में उसने कहा—"अवकाश-काल में तुम उनसे मेरा परिचय करा देना, वैसे मैं काउण्ट से मिल चुका हूँ किंतु मैं मङ्गलवार को उनके घर जाने का इच्छुक हूँ ।"

ऊपर की गैलरी से एक तीव्र 'हुश' का स्वर गूँजा । कार्यारम्भ हो गया था, किंतु आगन्तुक अब निरंतर चले आ रहे थे । देर आये व्यक्तियों को मार्ग व स्थान देने के लिये कतारों में बैठे प्रत्येक व्यक्ति को उठना पड़ता और इस प्रकार पूरी लाइन की लाइन को खड़ा होना पड़ता था । बाक्सों के द्वार निरंतर थपथपाये जा रहे थे । झगड़े व शोर-गुल की तेज आवाज किनारों से बार-बार आ रही थी ।

वार्तालाप की तीखी ध्वनियाँ सूर्यास्त के समय, होने वाले पक्षियों के कलरव की भाँति निरंतर फैल रही थी । प्रत्येक वस्तु एक विचित्र सी उथल-पुथल में थी । वह सिर और हिलते-डुलते हाथों का एक विचित्र सा घुला-मिला घेरा था, जिनके अधिकारी या तो सानन्द बैठे हुये थे या अच्छी से अच्छी जगह खोजने में व्यस्त थे अथवा खड़े होकर चारों ओर की अन्तिम झाँकी

देखकर बैठ जाते थे। "बैठ जाग्रो, बैठ जाग्रो।" की चिल्लाहट दूर तक के कोनों से ग्राकर चारों ग्रोर घूम जाती। प्रतीक्षा व ग्राकर्पण में सब लोग उलझे बैठे थे और तब ग्रन्त में प्रसिद्ध नाना—जिसके सम्बन्ध में लोग हफ़्तों से चीख चिल्ला रहे थे, प्रकट होने को थी। बहुत ग्रंशों में ग्रब चिल्लाहट कम हो गई थी। बीच बीच में कभी स्वर तीव्र हो जाता था।

ग्रन्त में उस मुरझाये फुसफुसाहट के स्वर के मध्य, समाप्त होते वार्तालाप के मध्य, ग्रारकेस्ट्रा का तरल मधुर स्वर नर्तन के 'बाल्टज' के स्वरों में ध्वनित होने लगा। उसकी मीठी लय ने कुछ अधिक हँसने वाले विदूषकों को हँसने का ग्रवसर दिया जो हॉल में गूँज गया। वह भीड़ जो ग्रधिक ग्रंशो में इस क्षण उत्तेजित हो रही थी सहसा मुस्करा दी। हॉल के ग्रागे की पंक्तियों में बैठे व्यक्तियों ने ऊंचे स्वर में प्रशंसा सूचक प्रकट कर दिये ग्रौर पर्दा उठा।

"हल्लो।" ला फेलो ने कहा—जिसकी जिह्वा ग्रब भी हिल रही थी, "लूसी के साथ एक व्यक्ति है।" ग्रौर उसने स्टेज बाक्स की दाहिनी ग्रोर झांकना प्रारम्भ किया। सामने लूसी बैठी थी ग्रौर बीच में कैरोलीन की माँ का ठाठदार चेहरा दिखाई पड़ रहा था, ग्रौर वहीं से लम्बे ग्रौर हल्के बालों वाले एक युवक की ग्राकृति का ग्रर्ध भाग दिखाई दे रहा था जो निर्दोष वेश-भूषा से सज्जित था।

"देखिये" ला फेलो ने गम्भीरता से बात दोहराई, "वहाँ एक व्यक्ति है।"

फाचरी ने धीरे से ग्रपना ग्रोपेरा-ग्लास घुमाते हुये उस ग्रोर देखा जिस बाक्स की ग्रोर संकेत था ग्रौर तब तुरन्त ही ग्रपना सर दूसरी ग्रोर घुमा लिया।

"ग्ररे वह लेबोरडेट ही तो है।" उसने उदासीनता भरे स्वर में कहा—मानो उस व्यक्ति की उपस्थिति बड़ी प्राकृतिक हो ग्रौर साथ ही जैसे संसार में वह बड़ी तुच्छ बात हो।

उनके पीछे कोई चिल्लाया—"हुश।" ग्रौर सब शान्त हो गये। ग्रब प्रत्येक व्यक्ति स्थिर था ग्रौर खुले सरों का उमड़ता सागर, सीधा ग्रौर शान्त, सारे हॉल में 'स्टाल' से लेकर 'एम्पी-थियेटर' तक फैला हुग्रा था।

ब्लान्ड-वेनस का प्रथम दृश्य—ग्रालिम्पस* में ग्रवस्थित किया गया था। ग्रालिम्पस कार्डबोर्ड का बना हुग्रा था, जिसके चारों ग्रोर घने बादल थे ग्रौर

*ग्रालिम्पस—ग्रीक पुराणों के ग्रनुसार देवताग्रों का स्वर्ग में निवास स्थान।

ज्युपिटर[1] का सिंहासन दाहिनी ओर था। आयरिश और गेनीमीड[2] पहले अवतरित हुये। वे स्वर्ग के सहचरों से घिरे हुये थे। वे देवों के स्थान को सभामंच में जैसे जैसे संवारते जाते थे वैसे ही वैसे कोरस गाते जाते थे। अनुमानत: पैसा देकर क्रय किये हुये व्यक्तियों की प्रशंसा की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी पर दर्शक उसका प्रत्युत्तर देने को तत्पर न थे। ला फेलो ने किसी प्रकार क्लारिस वेसनस, जो बार्डनोव की एक उप-अभिनेत्री थी, की प्रशंसा कर दी। वह आयरिश की पात्री थी जो पीत-नीलम वेश में थी जिसकी कमर में सतरंगा फैला हुआ स्कार्फ शोभायमान था।

"तुम जानते हो, इस पोशाक को धारण करते समय उसने अपना सेमीज पृथक कर लिया है।" उसने फाचरी से उच्च स्वर में कहा—"हमने आज सुबह ही उसका निरीक्षण किया था और सेमीज बाहुओं और कमर के ऊपर झलक रहा था।"

रोज मिगनन जब डियाना[3] के रूप में प्रकट हुई तो हॉल में एक प्रकार की कंपकंपी उत्पन्न हो गई। वस्तुत: न आकृति और न उसका शरीर ही उस भूमिका के लिए उपयुक्त था क्योंकि वह पतली और गहरे रंग की थी और वैसे भी उसमें पेरिस की छोकरी की सी असुन्दरता थी और लग रहा था कि वह उस भूमिका की खिल्ली उड़ा रही थी जो उसे दी गई थी। उसका प्रवेश संगीत इतना अरुचिकर था कि उससे नींद आना सम्भव था। और उसमें जब वह 'मार्स'[4] से उपालम्भ कर रही थी जो वीनस के कारण उससे विमुख था तो वह संगीत और भी व्यर्थ का था और इतना ऊटपटांग था कि दर्शक अव्यवस्थित हो उठे। उसका पति और स्टेनियर, जो बराबर २ बैठे थे, अट्टहास कर उठे। और तब सारा हॉल प्रशंसा में गद्गद् हो गया, जब उनका इच्छित पात्र प्रूलियर-मार्स की भूमिका में सामने आया जो एक जनरल की पोशाक पहिने था और उसके कलंगी लगी हुई थी। वह तलवार निकालता जाता था जो उसके कंधे तक पहुँच रही थी। वह डियाना से ऊब चुका था, और वह उससे बहुत कुछ चाहती थी, और तभी उसने उसकी गतिविधि पर दृष्टि रखने व बदला लेने की

१—बृहस्पत नक्षत्र, इन्द्रदेवता

२—यूनान में इन्द्रधनुष की देवी

३—चन्द्रमा

४—मंगल ग्रह

प्रतिज्ञा की। उनकी दोहरी भूमिका एक प्रकार से हँसाने वाला नौसिखियापन सी प्रतीत हो रही थी। उस गाने को प्रूलियर ने अत्यधिक मनोरंजक ढङ्ग से गाया, और उसके स्वर में मानो क्रोध का पुट था। उसमें–नवयुवक प्रशंसा प्राप्त अभिनेता के मनोरंजक भावों का समावेश था और जब वह अपनी आँखें मटकाता था तो बाक्सों में बैठी स्त्रियाँ बड़े आकर्षक ढंग से हँस देती थीं। उसके बाद भीड़ वैसी ही शांत हो गई जैसी पहले थी। इसके पश्चात् के दृश्य अपनी सीमा तक नीरस थे।

बूढ़ा बास्क निर्बल ज्युपिटर (बृहस्पति) की भूमिका सम्पन्न कर रहा था। उसका सर एक भारी मुकुट से दबा जा रहा था। जब वह जूनो[१] से उसके रसोइये के वेतन के सम्बन्ध में झगड़ रहा था तब एक मुस्कान प्रकट करने मात्र में वह सफल हो गया था।

नेपच्यून[२], प्लूटो[३], मिनर्वा[४], और अन्य देवताओं के जुलूस ने तो और भी परिस्थिति बिगाड़ दी। दर्शक बहुत उतावले हो रहे थे। धीरे धीरे फुसफुसाहट प्रारंभ हो गई और वे अपना धैर्य खोने लगे। किसी को भी खेल में कोई आकर्षण प्रतीत नहीं हो रहा था। सभी स्टेज को न देखकर हॉल को देख रहे थे। लूसी, लेबोरडेट के साथ हँस रही थी; काउन्ट डि० वेन्डेव्रे स, ब्लान्च के फैले कन्धों से हट कर पीछे हो गये थे; दूसरी ओर फाचरी मुफर को कनखियों से देख रहा था। काउन्ट बहुत ही गम्भीर दीख रहा था जैसे उसकी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। साथ ही काउन्टेस शुष्क हँसी हँस रही थी मानो ऊब रही हो। किंतु अचानक जनता में एक तीव्र अट्टहास गूँजा और प्रत्येक दृष्टि एक बार स्टेज पर टिक गई। क्या अन्त में यह नाना थी—वह नाना जिसने उनको इतनी प्रतीक्षा में रखा था।

गेनीमीड और आयरिश द्वारा प्रस्तुत वह सब एक प्रकार से मनुष्यों का प्रतिनिधि मण्डल था जिसमें सब सम्भ्रान्त नागरिक थे—सब छले हुए पति जो ज्युपिटर के सम्मुख वीनस के विरोध में एक प्रार्थना पत्र लाये थे जिसने उनकी पत्नियों को अत्यधिक विरोधी बना दिया था। कोरस, जो साधारण और एक

१–रोम देश में बृहस्पति की स्त्री। ३–पाताल का ग्रीक देवता
२–समुद्र का देवता, वरुण। ४–सरस्वती, ग्रीक देश की देवी 'एकना' की भाँति

प्रकार से पृथक पृथक रूप में गाया जा रहा था, बड़ा विचित्र था और उसमें रह रहकर एक रुकावट उत्पन्न होती थी जो बहुत भद्दी और दर्शकों के लिये हास्य का विषय थी। सारे हॉल में एक फुसफुसाहट फैल गई "कुकोल्ड का कोरस है, कुकोल्ड का कोरस है!" जैसे वह नाम चिपक कर रह गया और अनेक बार दोहराया गया। गायकों की सजावट बड़ी ही हास्यास्पद थी; उनकी आकृतियाँ ठीक वैसी ही थीं जैसी भूमिका वे कर रहे थे, बस एक ही विशेषता थी: एक स्वस्थ व्यक्ति की आकृति इतनी गोल थी जितना चन्द्रमा। बलकन एक प्रकार से भयंकर आवेश में दृष्टिगत हुआ जो अपनी पत्नी को ढूँढ़ता फिर रहा था जो घर से तीन दिन हुये चली गई थी। कोरस पुनः गाया गया जो कुकोल्डस के देवता बलकन को प्रेरित करने के लिए था कि वह उनकी सहायता करे। बलकन की भूमिका एक मनोरञ्जक पात्र फान्टन कर रहा था जिसमें यह विशेषता थी कि वह स्वाभाविक से स्वाभाविक और बनावटी से बनावटी भूमिका बड़े आकर्षक ढंग से पूरी कर देता था। गाँव के लोहार की हुलिया में उस समय वह था, उसके सर पर झूमता हुआ लाल साफा था, उसके हाथ खाली थे और उनमें खरोचें लगी हुई थीं और उसका हृदय तीरों से छिदा हुआ था। एक स्त्री की चीखती आवाज़ गूँजी—"ओह! क्या यह बदसूरत नहीं है?" और कौतूहल में सब हंस दिये।

अगला दृश्य अतिशयोक्तिपूर्ण दीख रहा था। क्या ज्युपिटर सब देवताओं को एक साथ नहीं मिला सकता कि वह उनके सम्मुख छले गये पतियों का प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर सकें? और अब भी कहीं नाना नहीं थी। जब तक पर्दा नहीं गिरे तब तक क्या वे नाना को रोक रखेंगे? इस प्रकार देर तक की प्रतीक्षा लोगों को अधीर बना रही थी। उन्होंने पुनः चख़-चख़ प्रारम्भ कर दी।

"यह निरन्तर बिगड़ता जा रहा है।" मिगनन ने कहा और स्टेनियर उससे प्रसन्न हुआ। "एक निश्चित असफलता! देखना यदि वैसा न हो तो।"

इस समय घने बादल स्टेज के पीछे से हट गये और वीनस प्रकट हुई। नाना, अधिक लम्बी व छरहरी, अपने अट्ठारहवें वर्ष में अप्सरा सी श्वेत वस्त्रों में थी जिसके सुन्दर सुनहले बाल कन्धों पर बिखरे हुये थे। वह बड़े ही स्थिर पग टेकती हुई शान्तिपूर्वक फुट लाइट के निकट तक गई। वह दर्शकों की भीड़ के सम्मुख एक मुस्कान छिटकाती जाती थी।

तब उसके ओठ खुले और उसने वह भव्य गीत गाया।

"व्हेन वीनस टेक्स एन इवनिंग स्ट्राल"—

दूसरी पंक्ति पर दर्शकों ने एक दूसरे को चकित भाव से देखा। क्या यह वार्डनोव का मज़ाक था या कोई दाव था ? इसके पूर्व ऐसा नीरस स्वर अथवा ऐसा शुष्क प्रदर्शन कभी नहीं देखा गया। मैनेजर ने सही कहा था कि उसके सचमुच कोई स्वर नहीं है अपितु एक चिंचियाहट है, न वह यह जानती है कि स्टेज पर कैसे घूमा या खड़े हुआ जाता है। वह अपने हाथ आगे फेंकती थी और बदन को ऐसे घुमाती थी जिसे कभी भी उचित नहीं कहा जा सकता। वह बड़ा ही अशोभनीय है। हॉल में फुसफुसाहट प्रारम्भ हो गई। सही रूप में कई ओर से सीटियाँ सुनाई दीं। तभी आरकेस्ट्रा स्टाल से एक आवाज जो चीखते कौवे की सी थी तीव्र स्वर में गूँज गई—

"यह ठिठुरी जा रही है।"

सारा हॉल देखने लगा कि ये शब्द किसने कहे हैं। वह वही कालेज से आया हुआ ताजा चेरव था जिसकी चमकती आँखें खुली हुई थीं और जिसकी लड़कों की सी आकृति नाना की प्रशंसा में उमड़ी पड़ रही थी। जब उसने प्रत्येक को अपनी ओर झांकते देखा तब वह लज्जा से लाल हो गया क्योंकि उससे वह तीव्र स्वर अनायास ही निकल पड़ा था। डागनेट जो उसके निकट बैठा था उसे देख कर हँस दिया और तब दर्शकों की भीड़ ने फुसफुसाहट का बिना विचार किये तीव्र अट्टहास उत्पन्न कर दिया। साथ ही श्वेत-नवयुवक, जो सफेद खाल के दस्ताने पहने थे, नाना की लचक से रोमांचित होकर बड़े जोर से प्रशंसायुक्त स्वर में चिल्ला उठे।

"तो वह यह है।" वे चिल्लाये—"जिओ।"

प्रत्येक को हँसते देखकर नाना भी हँस दी और तब इसने और आनन्द उत्पन्न किया। वह रूपसी तो थी ही इसके साथ साथ हँसमुख भी थी; और जैसे ही वह हँसी, उसकी ठोढ़ी पर एक स्निग्ध गड्ढा पड़ गया। उसने प्रतीक्षा की, कुछ उलझन मानकर नहीं, अपितु उसके विपरीत सरल भाव से; और दर्शकों से पूर्णत: अपनत्व प्रदर्शित करते हुये व्यक्त किया जैसे वह अपने नेत्रों से स्वत: कह रही हो कि माना कि उसमें वैसी आकर्षक कला नहीं, इस पर भी कोई चिन्ता की

बात नहीं है। उसमें उससे कुछ और अधिक महत्व का है। और निर्देशक को एक संकेत देते हुये जिसका आशय था 'बुड्ढे, तुम जाओ।' उसने अपनी दूसरी पंक्ति कही—

"एट मिडनाइट बीनस पासेज बाई।"

यह स्वर भी उसी श्रेणी का था किन्तु इस बार उसने श्रोताओं में एक रोमांच उत्पन्न किया और तब वह प्रशंसायुक्त फुसफुसाहट उत्पन्न करने में सफल हुई। उसके रक्ताभ ओठों पर मुस्कान निरन्तर दीख रही थी। वह चमक उसके बड़े बड़े हल्के नीले रङ्ग के नेत्रों में भी थी। कुछ पंक्तियों में जिनके अर्थ बड़े उलझे हुये थे, उसके गुलाबी नासापुटों में एक सौन्दर्य चमका और वह उसके गालों पर भी बिखर गया। निरन्तर वह अपने लचकते शरीर को इधर उधर घुमा रही थी। इसके अतिरिक्त और वह करे क्या, उसे स्वयं ज्ञान न था, किन्तु वह कुछ वैसा अप्रिय नहीं लग रहा था। इसके विपरीत लोगों के ओपेरा-ग्लास केवल उस पर ही स्थिर थे। जैसे ही उसने गीत समाप्त किया उसका स्वर उखड़ गया और उसने देखा कि अब आगे वह कुछ भी कर सकने में असमर्थ है। किन्तु इससे तनिक भी घबड़ाये बिना उसने अपने नितम्बों पर एक ऐसा झटका दिया कि उससे उनकी मांसलता तंग वस्त्रों के अन्दर से झलक आई। तब उसने अपने को आगे की ओर झुका लिया और अपने नग्न उरोजों को प्रकट करते हुये उसने अपने हाथ आगे को फेंक दिये। हॉल के चारों ओर से प्रशंसा का स्वर गूंज गया। तुरन्त वह घूम गई—ऐसा प्रदर्शित करते हुए जैसे वह स्टेज के पीछे की ओर अपनी गर्दन के बल मुड़ी हो, उसके सुनहले बाल किसी सुन्दर पशु के मुलायम ऊन से दीख रहे हों। तब हॉल की प्रशंसा कानों को फोड़ रही थी।

दृश्य का अन्तिम भाग नीरस हो गया था। बलकन अपनी पत्नी के मुख पर तमाचा मारना चाहता था। देवताओं ने मन्त्रणा की और निश्चित किया कि पृथ्वी पर वे इस बात की जाँच करेंगे और तभी वे उन छले हुये पतियों के प्रार्थना-पत्र पर कुछ निर्णय दे सकेंगे। डियाना ने मार्स और वीनस की कोमल वार्ता के कुछ अंश अपने कानों से सुन लिए और तब निश्चय किया कि वह यात्रा के समय एक पल को भी उनको अपनी आँखों से ओझल न होने देगी। एक

दृश्य ऐसा भी था। जिसमें क्यूपिड (कामदेव) ब रह् वर्ष की १ लड़की के साथ अभिनय कर रहा था और उसके प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में वह कहता जाता था—"हाँ, मा···मा", "न, मा···मा", भर्राये गले से कहता जाता था तथा उसने उँगलियाँ अपनी नाक पर टिका रक्खी थीं। तब ज्युपिटर ने स्वामित्व के पूर्ण अधिकार व रोष सहित, क्यूपिड को एक अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया तथा 'टु लव' 'प्यार करो' शब्द की विभक्तियाँ बीस-बीस बार दोहराने का आदेश दिया। अन्त में एक अत्याकर्षक व मधुर कोरस अधिक सफल रहा। किंतु जब पर्दा गिरा दिया गया तो उन खरीदे हुए लोगों ने प्रशंसा में तालियाँ बजा २ कर पुनर्वाद की इच्छा प्रकट की; वैसे प्रत्येक दर्शक उठ खड़ा हुआ और द्वार की ओर लपका। जैसे २ भीड़ कतारों के बीच से होकर द्वार की ओर बढ़ रही थी, लोग अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते जाते थे। एक ही बात प्रत्येक ओर दोहराई जा रही थी—"यह एक साधारण बेहूदगी है।"

एक आलोचक कह रहा था कि खेल में अत्यधिक काट-छाँट की आवश्यकता है। वास्तव में खेल का तो विशेष महत्व भी नहीं था, केवल नाना ही उस सारी बातचीत का मुख्य विषय थी। फाचरी व ला फेलो, जिन्होंने सबसे पहले अपनी कुर्सियाँ छोड़ी थीं, मार्ग में, जो स्टाल की ओर जाता था, स्टेनियर और मिगनन से मिले।

उस गोले में वातावरण बड़ा घिचपिच लग रहा था मानो वह किसी खदान की गैलरी हो, जो नीची व तंग थी और जिसमें स्थान २ पर चमकदार गैस-लाइट से प्रकाश किया गया हो। वे जीने के निचले भाग में, एक क्षण को दाहिनी ओर रुके, जो रेलिंग से घिरा हुआ था। दर्शक हॉल के ऊपरी भाग से, बड़े शोर व अपने जूतों की तेज़ आवाज के साथ उतर कर नीचे आ रहे थे। सांध्यवेश पहने पुरुषों का जुलूस, लग रहा था मानो, रुकेगा ही नहीं। बाक्स खोलने वाली महिला अपनी कुर्सी का बचाव कर रही थी कि भीड़ कहीं उड़ न जाये, क्योंकि उस पर उसने अपने कोट और शाल रख छोड़े थे।

"किंतु मैं उसे जानता हूँ।" स्टेनियर ने फाचरी को देखते ही उच्च स्वर में कहा—"मैंने उसको निश्चित् ही कहीं न कहीं देखा है। मैं सोचता हूँ, केसिनों में ही देखा है, और तब वह इतने नशे में थी कि उसे बन्द कर दिया गया था।"

"ठीक है, मुझे भी कुछ निश्चय नहीं है।" पत्रकार ने कहा—"तुम्हारी ही भाँति मैं भी उससे कहीं मिला हूँ।" उसका स्वर धीमा हो गया और हँसते हुए उसने जोड़ दिया—"मैं निश्चित् कह सकता हूँ कि ओल्डट्रिकन्स की जगह में देखा है।"

"सचमुच किसी भद्दी ही जगह।" मिगनन ने कहा, जो कुछ बिगड़ रहा था। "निम्न श्रेणी की वेश्या द्वारा प्रस्तुत कार्य-कलापों का जनता द्वारा ऐसा स्वागत हो, यह कितना अशोभनीय है। शीघ्र ही रंगमंच पर एक भी सम्भ्रांत महिला रह न जावेगी। हाँ, भविष्य में रोज़ को अभिनय करने के लिये मैं निश्चित् ही मना कर दूंगा।"

फाचरी अपनी मुस्कान को रोक न सका। अब तक भारी भीड़ सीढ़ियों से उतरती चली आ रही थी। एक छोटे से आदमी ने, जिसका सिर टोपी से ढँका था, ओठों को चबाते हुए कहा—"आह, मेरी! वह बड़ी मांसल है। तुम उसे चबा सकते हो।"

गैलरी में दो नौजवान, जिनके बाल बड़े सुन्दर व घुंघराले थे, जो बड़े आकर्षक वेश में थे और जिनके कालर उठे हुए थे व आगे को आकर तनिक झुक गये थे, एक प्रकार से आपस में लड़ रहे थे। एक कह रहा था—"तुच्छ! तुच्छ!" किंतु उसके इस कथन की पुष्टि में उसके पास कुछ कहने को न था; जब कि दूसरा उत्तर में कहता गया—"कंपन! कंपन!" इससे आगे कुछ व्यक्त करने में वह भी घृणा का अनुभव कर रहा था। ला फेलो ने उसे अत्यधिक पसन्द किया। किंतु वह केवल इतना ही कहने का साहस कर सका कि यदि उसका स्वर ठीक हो जावे तो वह और अच्छी हो सकती है। तब स्टेनियर, जो एक प्रकार से अनसुना सा दीख रहा था, लगा जैसे सोकर अचानक जाग पड़ा हो। उन्हें प्रतीक्षा करनी ही होगी। जो भी हो, सम्भव है आगे के दृश्यों में कुछ सन्तोष मिले। दर्शक समुदाय जो अब तक बड़ा उदार बना हुआ था, इस प्रसंग से पूर्णतः उदास न हो पाया था। मिगनन ने कसम खाकर कहा कि कोई भी अन्त तक नहीं बैठेगा; और जब सैलून में जाते हुए ला फेलो व फ़ाचरी ने उसे छोड़ दिया, तो उसने स्टेनियर का हाथ पकड़कर उसे कन्धों तक दबाते हुए उसके कान में धीरे से कहा—"जवान लड़के! आओ, और

दूसरे अंक के लिये मेरी पत्नी की पोशाक को देखो । वह अपने में सर्वथा पूर्ण है ।"

ऊपर तीन चमकदार गैसेलियरों से "फायर" पूरी तरह जगमगा रहा था। दोनों चचेरे भाई एक क्षण के लिये रुके। काँच के दरवाजे जो पूरे खुले हुए थे, नर-मुण्डों की थिरकती लहर प्रदर्शित कर रहे थे, जिनमें दो ओर से आती जाती लहरें भँवर की सी व्यस्तता प्रकट कर रही थीं। उन्होंने अन्दर प्रवेश किया। व्यक्तियों के पाँच या छै समूह आपस में गपशप व बातचीत कर रहे थे, जब कि अन्य व्यक्ति कतारों में ऊपर-नीचे जा-आ रहे थे जो चलते हुए अपनी ऐड़ियों को दबाते जाते थे, जिससे तख्तों पर आवाज होती थी । बायें और दायें, स्त्रियाँ लाल मखमल में मढ़ी कुर्सियों पर बैठी थीं, जो पत्थर के भारी खम्भे के बीच में थीं। वे निरंतर थकी हुई सी, भीड़ को देखती जाती थीं, लगता था जैसे कड़ी गर्मी से सब त्रस्त होगये हैं। उनके पीछे उनके चिगनन दीवारों पर उभरते बड़े २ शीशों में स्पष्ट दिखाई दे रहे थे । सैलून के अन्तिम द्वार पर, एक लम्बोदर 'बार' के निकट खड़ा शर्बत का गिलास पी रहा था। फाचरी ने बालकनी के बाहर जाकर ताजी हवा लेनी चाही । ला फेलो उन कुछ चित्रों को देख रहा था जो फ्रेमों में जड़े हुए थे, जिनमें बीच २ में खम्भों पर दर्पण लगे हुए थे, जो उसका पीछा करते हुए वहाँ आकर मानो थम गये थे। गैस-लाइट की कतार अभी २ धीमी पड़ गई थी। वहाँ बालकनी में अन्धकार था, साथ ही शीतलता भी और जो पूर्णतः रिक्त दिखाई दे रही थी—केवल एक एकांतिक परछाँई को छोड़कर जो एक युवक की थी, जो अँधेरे में घिरा हुआ था और आराम से दाहिनी ओर सिगरेट पीते हुए, पत्थर के खम्भे पर झुका हुआ था। फाचरी ने डागनेट को पहचान लिया । उन्होंने आपस में हाथ मिलाये ।

"ओ पुराने आदमी ! वहाँ क्या कर रहे हो ?" पत्रकार ने प्रश्न किया—"गलत कोनों पर छिपे हुए, जब कि तुम नियमपूर्वक प्रथम रात्रि के प्रदर्शन में, कभी स्टाल नहीं छोड़ सकते ।"

"किंतु जैसा तुम देख रहे हो, मैं केवल सिगरेट पी रहा हूँ ।" डागनेट ने उत्तर दिया ।

तब फाचरी ने उसको गले से लगाते हुए कहा—"और वह नई अभिनेत्री, उसके सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ? आलोचनायें जो उसके सम्बन्ध में हॉल के चातुर्दिक मैंने सुनी हैं, वे तो बड़ी तुच्छ हैं।"

"ओह !" डागनेट ने बुदबुदाते हुए कहा—"उन व्यक्तियों द्वारा जिनसे उसे कुछ लेना-देना नहीं है।"

यही वह आलोचना थी जो उसने नाना की कला पर प्रकट की। ला फेलो आगे को झुका हुआ बाडलेवर्ड को ऊपर से नीचे तक देख रहा था। दूसरी ओर के एक होटल व क्लब की खिड़कियाँ जगमगाते प्रकाश से चमक रही थीं, और फुटपाथ पर ग्राहकों की खचाखच भीड़ 'केफ़ डि मेड्रिड' की मेज़ों पर जमी हुई थी। समय के आधिक्य की बिना चिन्ता किये भी भीड़ अत्यधिक थी, हरेक को धीरे चलना पड़ता था। जनसमूह का उमड़ता सागर 'जौफराय के मार्ग' की ओर से बढ़ता चला आ रहा था, और लोगों को शांत भाव से पाँच मिनट तक प्रतीक्षा करनी ही पड़ती थी, तब वे सड़क के एक ओर से दूसरी ओर जा सकते थे, सवारियों का ऐसा बड़ा तांता बँधा हुआ था।

"कैसी चेतना है ! कैसी चिल्लाहट है !" ला फेलो ने, जो पेरिस को देखकर अभी भी आश्चर्य का अनुभव कर रहा था, अनेक बार कहा।

एक घण्टी बजी और सैलून शीघ्र ही रिक्त हो गया। हर व्यक्ति मार्ग की ओर शीघ्रता से बढ़ रहा था। पर्दा उठ चुका था, किंतु भीड़ अब भी बढ़ती ही आ रही थी, जो पहले से बैठे हुए दर्शकों के मन में एक क्षोभ का कारण बनी हुई थी। देर में आने वाले लोग चैतन्य किंतु, एकाग्र दृष्टि से देखते हुए, अपने स्थानों की ओर बढ़ रहे थे। ला फेलो की पहली दृष्टि गागा के लिये थी, किंतु यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि वह लम्बा किंतु छोटे बालों वाला व्यक्ति, जो पहले अंक में उसके पास बैठा था, इस समय लूसी के 'स्टेज बाक्स' में था।

"आपने क्या कहा था ? क्या नाम है उस व्यक्ति का ?" उसने प्रश्न किया।

जिसके विषय में प्रश्न था, फाचरी अनायास उसे देख नहीं पाया। "ठीक, हाँ···हाँ, लेवर्डेट", अन्त में उसने कहा। उसके स्वर में पहले की सी ही उदासीनता थी।

दूसरे अङ्क के दृश्य बड़े आश्चर्यजनक थे । ग्रामीण लोक-नृत्यों के निम्न श्रेणी के स्थान--जिनको 'स्रोव ट्यूस्डे' में 'वाडलेनायर' के नाम से पुकारा जाता है, उनमें दिग्दर्शित थे। कुछ नकाबपोश, जो दोरंगी पोशाक पहने हुए थे, एक मनोरञ्जक गीत गा रहे थे। यह सम्मिलित-संगीत उन्होंने अपनी ऐड़ियों के थापों के सहयोग में निर्धारित किया था। उनके शब्द व गतियाँ बहुत व्यवस्थित न होकर भी विचित्र सी थीं, और जिनसे दर्शकों का अधिक मनोरंजन हो रहा था और तभी वे तालियाँ बजाकर उसकी सराहना कर रहे थे। इसी स्थान पर देवताओं का एक दल, आयरिश के नेतृत्व में विच्छिन्न सा प्रकट हुआ, जो बहका कर यह घोषित कर रहा था कि वह पृथ्वी को जानता था, और अपनी जाँच पड़ताल में व्यस्त था। उनका रूप प्रकट न हो, इससे वे छद्म-वेश में दिखाई दे रहे थे। राजा डेग्रोबर्ट के वेश में 'ज्युपीटर' प्रकट हुआ, जिसकी बिजिस गलत प्रकार से दूसरी ओर को उलटी हुई थी, और जिसके सर पर बड़ा भारी टीन का एक मुकट लगा हुआ था। 'फोबस', लांग्जीम्याऊ का पस्टीलियन की पोशाक का नकाब पहने हुआ था। 'मिनर्वा', नार्मन की दुधारी धाय के वेश में प्रकट हुआ। उच्च हास्य ने मार्स का स्वागत किया जो निरर्थक पोशाक पहने हुए था और स्विस एडमिरल लग रहा था; किन्तु हँसी ने उद्दण्डता का रूप धारण कर लिया, जब नेपच्यून एक ब्लाउज व लम्बी टोपी पहने हुए प्रकट हुआ। उसके घुँघराले केशों की अलकें माथे पर चिपकाई हुई थीं, वह स्लीपर पहने हुए था और विचित्र से स्वर में कह रहा था—"हाँ, अब आगे क्या ? जब कोई सुन्दर है तो उसे अपने प्रति प्रशंसा की स्वीकृति देनी ही चाहिये।" इससे कुछ लोग अत्यधिक मुग्ध हुए। 'ओह, हो !' का स्वर सर्वत्र गूँज गया तथा महिलाओं ने अपने हाथ के पंखे तेजी से हिलाना प्रारम्भ कर दिये। अपने स्टेज बाक्स में लूसी इतने वेग से हँसी कि केरोलिन हेक्टर को उसे शांत होने के लिये कहना पड़ा। इस क्षण से प्रदर्शन एक प्रकार से संभल गया और सफल भी रहा। देवताओं के इस कार्नीवाल को आलीम्पस धूल में घेर लाया। धर्म और सङ्गीत एक साथ प्रकट हुआ, जिससे जनता में एक मोद की भावना उत्पन्न हुई। वस्तुतः बौद्धिक जनों के उस प्रथम रात्रि के दर्शक समूह में इसके प्रति एक अश्रद्धा सी उत्पन्न हुई; प्राचीन गाथा में एक

प्रकार से परों से कुचली गई और पूज्य प्रतिमायें तोड़ी गई। ज्युपीटर के एक अच्छा सर दीख रहा था व मार्स भी सफल रहा। राजसत्ता छिन्न-भिन्न व सेना एक खिलवाड़ सी दीख रही थी। जब ज्युपीटर एक धोबिन के आकर्षण से अनायास द्रवित दिखाई दिया और भीषण केनकेन की सी अवस्था में जागृत हुआ और साइमोन ने, जो धोबिन का अभिनय कर रही थी, जब अपने एक पैर को देवताओं के स्वामी की नाक तक की ऊँचाई तक, यह कहते हुए उठाया—"मेरे मोटे बुड्ढे लड़के", तो हॉल में विक्षिप्तों की सी हँसी गूँज गई, और देवता नाचते रहे। फोबस ने मिनर्वा को गरम शराब भेंट की, नेपच्यून सात या आठ स्त्रियों के बीच में घिरा बैठा रहा, जो उसके मुँह में रोटियाँ ठूँसती जाती थीं। दर्शकों में उदास उत्तेजना छा गई, एक विचित्र सी उद्विग्नता प्रकट होने लगी जब कि कोई भी तत्पर न था, और स्टालों में बैठे व्यक्तियों ने अद्भुत से शब्दों में वह सब प्रकट करना प्रारम्भ किया, जिनके भिन्न २ अर्थों में वह एक अवहेलना थी। ऐसी मूर्खतापूर्ण व अपमानजनक अवस्था अभिनय-प्रेमी-जनता को बहुत काल से देखने को नहीं मिली थी। वह उसकी चरम-सीमा थी। मुख्य कथा-भाग, इस उप-दृश्य के अनन्तर आगे बढ़ा। आधुनिक वेश-भूषा में सज्जित बालकन, वीनस का पीछा करता हुआ प्रकट हुआ, जिसकी पोशाक पीली थी व हाथों में भी पीले दस्ताने पहने था–साथ ही आँखों में चश्मा लगाये हुए था। अन्त में वह एक मछुवा-स्त्री के वेश में आई। उसके सर पर एक रूमाल बँधा हुआ था। उसके उन्नत उरोज आगे को निकले पड़ रहे थे। वह पुराने व भारी सोने के जेवरों से लदी हुई थी। नाना, इस अभिनय में अत्यधिक श्वेत और इतनी मांसल थी कि इस भूमिका में उसके उभरे नितम्ब इस प्रकार की स्त्री के प्रदर्शन में बड़े आकर्षक प्रतीत हो रहे थे, जिससे सारे दर्शक प्रसन्न थे। रोज मिगनन, जो बड़ी मीठी व सुहानी बच्ची सी लग रही थी और जिसके सर पर बच्चों का हैट था और जो मसलिन की छोटी सी स्कर्ट पहने हुए थी, इसमें बिल्कुल ही भुला दी गई। वस्तुतः उसने अभी-अभी डियाना का गीत बड़े मधुर स्वर में गाया भी था। दूसरी बड़ी लड़की, जिसके हाथ 'सकिम्बों' के से थे और जो मुर्गी की तरह फुदक रही थी–बड़ी चंचल व स्त्री के ऐसे मादक स्वरूप में थी कि दर्शक एक प्रकार से मस्त हो गये।

तदनन्तर नाना ने जो कुछ भी प्रदर्शित किया, उस पर कोई महत्व नहीं दिया गया। वह बेढंगे रूप में दिखाई पड़ी, ऊटपटाँग तरह से गतिशील बनी रही, संगीत का प्रत्येक स्वर अशुद्ध गाती रही और अन्त में अपनी भूमिका ही भूल गई। वह केवल दर्शकों की ओर झुक कर मुस्कराती रही, जिससे सराहना की ध्वनियाँ गूँजती रहीं। प्रत्येक बार अपने नितम्बों को वह विचित्र प्रकार से उचका देती, जिससे स्टाल में बैठे दर्शक आशान्वित होते रहे और वह उत्तेजना एक गैलरी से दूसरी गैलरी में फैलती गई जो छत्त को भी छू रही थी, और जब वह नृत्य करती तो उसकी सफलता पूर्ण थी। उसने अपने खुले हुए हाथों से वीनस को कीचड़ में घसीटा। संगीत भी गन्दे नाले के से स्वर में लिखा गया था। ऐसा लगता था जैसे वह भोंपू से बजाया जा रहा हो, और जो 'सेन्ट क्लाउड' के मेले से लौटने की सी याद दिला रहा था, जिसमें क्लैरिनेट और बाँसुरी की ध्वनें और कूद-फांद भरी रहती है। तब दो कोरस और गाये गये। वह 'वाल्टज' मोहक था, जिससे देवतागण निकटतक आते-जाते थे। किसान की स्त्री जूनो ने ज्युपीटर को धोबिन के साथ सांठगांठ करते हुए पकड़ा, और उसके एक तमाचा मारा। डियाना ने, जो वीनस व मार्स के मिलन की व्यवस्था कर रही थी, वीनस को आश्चर्यान्वित कर दिया, और वह समय व स्थान की सूचना देने 'वलकन' की ओर दौड़ गई, और उसने कहा—"मेरी अपनी व्यवस्था है।" दृश्य का अन्तिम भाग कुछ विशेष स्पष्ट न था। देवताओं की जाँच पड़ताल सरपट समाप्त हो गई। तदनन्तर ज्युपीटर ने अपने झलकते पसीने और गहरी सांसों के बीच अपने राजमुकुट को खोलते हुए घोषणा की कि संसार की कमनीय स्त्रियाँ बड़ी मोहक हैं—और केवल पुरुष ही दोषी है। तब पर्दा गिरा और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उच्च स्वर में हॉल के चारों ओर प्रतिध्वनित हुआ, "सब, सब।" पर्दा पुनः उठा और तब अभिनेता व अभिनेत्रियाँ हाथों में हाथ डालकर प्रकट हुए। उनके मध्य में नाना व रोजमिगनन थीं, जो पास-पास झुकी हुई थीं। तब सराहनासूचक ध्वनियाँ पुनः गूँजीं। इस बार की गड़गड़ाहट ने पूर्ववर्ती सभी शोर को दबा दिया और तब देखते २ अभिनय-भवन आधे से अधिक रिक्त हो गया।

"काउण्टेस मुफर के निकट जाकर मुझे निश्चित् ही अपनी श्रद्धा व्यक्त करनी चाहिये।"—ला फेलो ने कहा।

"बहुत सुन्दर!" फाचरी ने उत्तर दिया—"और तुम मेरा परिचय भी करा सकते हो। तदनन्तर हम बाहर जा सकते हैं।"

किन्तु बालकनी बाक्सों तक जाना कोई सरल बात न थी, क्योंकि मार्ग की भीड़ में घुमकर पार हो जाना असम्भव सा ही था। विभिन्न समूहों के बीच से होकर जाने के लिये अपनी कोहनियों का स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग करना आवश्यक था। दीवार के समक्ष प्रकाश-स्तम्भ के नीचे, एक उग्र-आलोचक अभिनय के सम्बन्ध में अपना स्पष्ट मत, ध्यानस्थ व्यक्तियों पर प्रकट कर रहा था। लोग जब इसके निकट आते तो एक क्षण रुक कर धीमे स्वर में अपने मित्रों से बताते कि वह व्यक्ति कौन है? वह ऐसा फूला हुआ था और वह सारे दृश्य भर हँसता रहा था; जो भी हो इस समय वह अपने को अति गम्भीर प्रदर्शित कर रहा था और नैतिकता व उच्च आदर्शों की बातें करता जाता था। और आगे, यह आलोचक अपने पतले ओठों में सहानुभूतिपूर्ण भी था, किन्तु उसकी टिप्पणियाँ एक अनचाहा स्वाद छोड़ रही थीं—उसी प्रकार जैसे कि दूध फट कर अप्रिय हो जाता है। फाचरी ने द्वारों की छोटी, गोल खिड़कियों में से बाक्सों को झाँका। तभी काउण्ट डि. वैन्डेव्रे स ने कुछ प्रश्न करने के लिये उसे रोका। जब उसको ज्ञात हुआ कि दोनों भाई उसके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करना चाहते हैं, तो उसने बाक्स नं० ७ की ओर संकेत किया, जिसको उसने अभी २ छोड़ा था। तब उसने पत्रकार के कान में फुसफुसाकर कहा—

"मैं कहता हूँ, पुराने साथी! यह नाना वही लड़की है जिससे हम एक रात सूये डि. प्रावेन्स के कोने पर मिले थे।"

"क्यों, ठीक-ठीक, आप ठीक कह रहे हैं", फाचरी ने प्रश्न किया—"मैं इस सम्बध में दृढ़ था कि मैं उससे कहीं मिला हूँ।"

ला फेलो ने अपने भाई को काउण्ट मुफर डि. वाडविले से परिचय कराया जिसकी गतिविधि की शीतलता चरम-सीमा की थी। किन्तु फाचरी का नाम सुनकर काउण्टेस ने शीघ्रता में अपनी दृष्टि उसकी ओर कर ली और बड़े ही प्रशंसायुक्त शब्दों में फिगारो में प्रकाशित उसके एक लेख के लिये

उसकी सराहना की। मखमल से ढके बालूस्ट्रेड की ओर झुकते हुये अपने उभरे कन्धों के आकर्षक कंपन के साथ वह उसकी ओर आधा घूम गयी। कुछ मिनट तक वे वार्तालाप करते रहे और तब बातचीत नुमायश की ओर झुक गई।

"वह निश्चित ही बड़ी सुन्दर होगी" काउन्ट ने कहा जिसकी चौखूटी आकृति और निरन्तर परिवर्तित भंगिमा में अधिकारी की सी शालीनता थी। मैंने आज चेम्प डिमार्श का निरीक्षण किया था और मैं वहाँ से बड़ा आश्चर्य-चकित सा लौटा।"

"जो हो, ऐसा कहा जाता है कि वह समय तक पूर्ण न हो सकेगी" ला फेलो ने अपनी बात कही। "कुछ गड़बड़ी हो गई है।"

"वह तैयार हो जावेगी। बादशाह उस पर जोर दे रहे हैं।" काउन्ट ने बीच में टोकते हुये तीव्र स्वर में कहा।

फाचरी ने प्रसन्न होते हुये कहा कि कैसे वह एक दिन उसके बनते समय जब अपने लेख के लिये कुछ सामग्री जुटाने के अभिप्राय से वहाँ गया था तो बहाव में खो गया था। काउन्टेस मुस्करा दी। वह रह रहकर हॉल के चारों ओर देखती जाती थी। उस समय वह अपना हाथ ऊपर को उठाती थी जिसमें कोहनी तक के सफेद दस्ताने गढ़े हुये थे और धीरे-धीरे हवा करती जाती थी। कुर्सियाँ अधिकतर रिक्त हो चुकी थीं; कुछ सम्भ्रान्त पुरुष जो स्टालों में रह गये थे शाम का समाचार पत्र पढ़ रहे थे; कुछ स्त्रियाँ बड़े अपनत्व में घर की ही भाँति अपने मित्रों से मिल रही थीं। चमकते गैसेलियर के नीचे, जिसकी जगमगाहट खेल समाप्त होने के अनन्तर की सुहानी धूल से धीमी पड़ गई थी, केवल फुसफुसाहट का धीमा स्वर प्रकट हो रहा था। दरवाजों के निकट कुछ लोग अटके रह गये थे जो कुर्सियों पर बैठी कुछेक स्त्रियों को देखते जाते थे; एक पल के लिये वे निश्चल खड़े रहे—अपनी नासिका को फुलाते हुये और अपनी सफेद कमीजों को आगे फैलाते हुये।

"आगामी मंगलवार को हम लोग तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहेंगे," काउन्टेस ने ला फेलो से कहा।

और तब उसने फाचरी को भी निमन्त्रित किया जिसने प्रत्युत्तर में किंचित झुककर उनको धन्यवाद दिया। खेल अथवा नाना के विषय की कोई

भी चर्चा नहीं हुई। काउन्ट का व्यवहार उस क्षण बड़ा नीरस किन्तु गम्भीर था जिससे कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि वे जैसे कार्पस लेजिस्लेटिव के अधिवेशन में बैठे हों। उन्होंने अवसर पाकर कहा जैसे वे अपनी उस क्षण की उपस्थिति के सम्बन्ध में स्पष्ट करना चाहते हों कि उनके श्वसुर थ्येटर के अत्यधिक प्रेमी हैं। बाक्स का द्वार खुला हुआ था और मारक्युस डि. चोरड, जो आगन्तुकों को स्थान देने के लिये बाहर चले गये थे, इस समय द्वार पर सीधे खड़े हुये थे। उनका पीला व पिलपिला चेहरा उनके फैले हुये हैट की छाया से घिरा हुआ था। उनकी धीमी आँखें पास से जाती स्त्रियों की ओर घूमती जाती थीं। ज्योंही काउन्टेस ने निमन्त्रण दिया, फाचरी तुरन्त पीछे हट गया और सोचने लगा कि उस परिस्थिति में खेल के सम्बन्ध में कुछ भी वार्तालाप करना अनुपयुक्त होगा। ला फेलो ने सबसे अन्त में बाक्स छोड़ा। उसने अभी २ देखा कि काउन्ट डि० वाउन्डेवेयर्स के स्टेज बाक्स में सुन्दर बालों वाला लेवार्डेट बड़े आराम से खड़ा है और ब्लान्च डि० शिवरी से बड़ी तन्मयता में घुल-मिल कर बातें कर रहा है।

"मैं कहता हूँ," उसने अपने भाई के निकट आते हुए कहा—"दिखता है कि यह लेवार्डेट प्रत्येक स्त्री को जानता है। अब वह ब्लान्च के साथ है।"

"वह निश्चिततः उन सबको जानता है।" फाचरी ने शुष्कता से कहा—"किन्तु नवयुवक ! तुमको क्या उलझन हो रही है ?"

मार्ग इस समय अधिक घिरा हुआ नहीं था। फाचरी जिस क्षण सीढ़ियों से नीचे जाने को था उसी समय लूसी स्टेवर्ट उसके निकट आई। उस समय वह अपने बाक्स के दरवाजे पर खड़ी थी। उसने कहा कि बाक्स के अन्दर अत्यधिक गर्मी थी, और तब कैरोलिन हेक्टेर व माँ के साथ मार्ग की सारी चौड़ाई को उसने घेर रक्खा था और वह जले हुये बादाम कुटकुटाती जाती थी। द्वार-रक्षिका में से एक मातृत्व के भाव से उनसे वार्तालाप करती जाती थी। लूसी ने पत्रकार से तुरन्त एक झगड़ा मोल ले लिया। वह एक बड़ा भला आदमी था व अन्य स्त्रियों से मिलने की अति शीघ्रता में भी था किन्तु वह कदापि न आ सका, न उन्हें किसी पेय के लिये निमन्त्रित ही कर सका।

तब अनायास वार्तालाप को भंग करते हुए उसने साधारण रूप में कहा—

"मैं कहती हूँ, पुराने मित्र, नाना एक बड़ी भारी चोट है।"

अन्तिम दृश्य के लिए वह उसे अपने बाक्स में ही देखना चाहती थी, किन्तु—"दृश्य के अन्त में वह उनसे मिलेगा," यह वचन देकर वह भाग आया। सामने थियेटर के बाहर फाचरी व ला फेलो ने सिगरेट जलाई। फुटपाथ को एक छोटी सी भीड़ ने घेर रक्खा था। इस भीड़ में वे दर्शक पुरुष थे जो सीढ़ियों से उतर कर बाहर की स्वच्छ हवा प्राप्त करने के ध्यान में बाहर आये थे और जो बाउलेवर्ड में निरन्तर घिरी उदासी से ऊब चुके थे।

इसी बीच मिगनन, स्टेनियर को केफ डि० वेराइटीज़ की ओर घसीट लाया। नाना की सफलता देखकर वह बड़े उत्साह से उसके सम्बन्ध में कह रहा था और प्रतिक्षण कनखियों से वह बैंकर को निहारता जाता था। वह उसको जानता था; रोज को छलने में उसने दो बार उसकी सहायता की थी और जब केपरिस (झमेला) समाप्त हो गया तब उसने उनका समझौता कराया और वह उसके निकट बड़े विनय और स्नेह के भाव में आया था। केफ के अन्दर संगमरमर की मेजों को घेरे बहुतेरे ग्राहक बैठे हुए थे और कुछ पुरुष खड़े हुए थे, जो जल्दी में कुछ पी रहे थे; खोपड़ियों के इस समूह को बड़े बड़े शीशे 'एड इनफिनिटम'* की भाँति प्रदर्शित कर रहे थे। तीन गैसेलियर से आच्छादित उस संकरे सैलून को वे अधिक विस्तृत बनाते थे। मोल की खाल की बनी कुर्सियों व घुमावदार सीढ़ियों में जो लाल कपड़े में जड़ी हुई थीं, वह बड़ा सुहावना लग रहा था। बाहरी कमरे की एक मेज़ के निकट स्टेनियर बैठा था जो बाउलेवर्ड की ओर पूर्णतः खुला हुआ था जिसका बाह्य भाग इस अवसर के लिये पहले से खोल दिया गया था। फाचरी व उसका भाई जैसे ही उधर से निकले तो बैंकर ने उन्हें रोका।

"आओ, हमारे साथ बीयर का एक गिलास पियो।" उसने कहा।

वैसे वह स्वयं अपने ही विचारों में तल्लीन था; उसकी इच्छा हुई थी कि वह हरियाली का एक गुच्छा नाना के ऊपर फेंकता। तब उसने अपने एक सुपरिचित प्रतीक्षक को जिसका नाम आगस्टस था, पुकारा। मिगनन ने, जो वह

---

*एड इनफिनिटम—अनन्त, असीम।

सब कुछ सुन रहा था व उसकी ओर गहरी दृष्टि से देख भी रहा था, संदिग्ध स्वर में कहा—"दो गुलदस्ते आगस्टस और उनके एक सेवक को दे दो। प्रत्येक अभिनेत्री के लिए एक, उचित अवसर पर, तुम समझे।"

कमरे के दूसरे छोर पर, एक लड़की जिसका सर एक शीशे के फ्रेम पर टिका हुआ था और जिसकी अवस्था अट्ठारह वर्ष से अधिक न होगी निश्चल बैठी थी। वह देर तक की व्यर्थ प्रतीक्षा से थकी हुई सी प्रतीत हो रही थी। उसके प्राकृतिक घुंघराले व सुन्दर बालों में कौमार्य की पवित्रता लिये एक मोहक मूर्ति दो चमकती व सरस आँखों की झलक समेटे दिखाई दे रही थी जिनमें बड़ी शालीनता व सच्चाई प्रकट हो रही थी। हल्के हरे रङ्ग की रेशमी पोशाक वह पहने हुए थी जिसके ऊपर गोल हैट था जिसमें जगह जगह गड्ढे पड़े हुये थे, जो लगता था, घूँसों को मार-मार कर किये गये थे। संध्या की शीतल वायु से उसकी आकृति व दृष्टि में धवलता प्रकट हो रही थी।

"हल्लो, क्यों वह है सेटीन," फाचरी ने उसे जैसे ही देखा वैसे ही पुकार कर कहा।

ला फेनो ने उससे प्रश्न किया—"ओह! वह कुछ नहीं है। एक निम्न-कोटि की बाजारू लड़की। उसका चेहरा ऐसा शरारती है कि उससे बात करना भी भला नहीं है," और पत्रकार ने अपना स्वर उच्च करते हुये प्रश्न किया—"सैटीन! तुम वहाँ क्या कर रही हो?"

"थककर मेरी आँतें बाहर आ रही हैं," उसने शान्त भाव से बिना हिले डुले कह डाला।

वे चार व्यक्ति, अत्यधिक प्रसन्न होकर अट्टहास कर उठे। मिगनन ने औरों को सन्तोष दिया कि जल्दी की कोई आवश्यकता नहीं है; तीसरे अङ्क के दृश्यों को व्यवस्थित करने में कम से कम बीस मिनट लगेंगे। किन्तु दोनों भाइयों ने, जिन्होंने अपनी बीयर समाप्त कर ली थी, चाहा कि थियेटर में लौट जावें। वे शीत का अनुभव कर रहे थे। तब मिगनन, स्टेनियर के साथ अकेला रह गया, जो अपनी कोहनियों के बल मेज़ पर झुका बैठा था और उसको गौर से देखता हुआ बोला—"तब ठीक है, यह पूरी तरह समझ लिया गया है, हम लोग उसके पास जावेंगे, और मैं तुम्हारा परिचय कराऊँगा। तुम जानते हो,

यह केवल हमारे बीच की बात है; मेरी पत्नी को इसके सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं होना चाहिये।"

अपने स्थानों में लौट आने पर, फाचरी और ला फेलो ने बाक्सों की दूसरी पंक्ति में एक अति सुन्दर स्त्री को देखा जिसकी पोशाक बड़ी मोहक थी। वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ थी जिसकी दृष्टि में शालीनता थी व अन्तर्देशीय-मन्त्रालय के विभाग का वह मुखिया था जिसको ला फेलो मुफट के यहाँ से जानता था, क्योंकि उनकी वहीं भेंट हुई थी। फाचरी के लिए, उसने कहा—"अनुमानतः वह मैडम राबर्ट के नाम से पुकारी जाती है—एक सुयोग्य स्त्री, जिसका एक प्रेमी है, किन्तु एक से अधिक नहीं और वह भी कोई उच्च आस्था प्राप्त व्यक्ति।" जैसे ही वे घूमे, डागनेट उन पर हँस दिया। अब जब नाना ने अपनी सफलता सिद्ध कर दी है तब उसे पीछे रहने की कोई आवश्यकता नहीं है; वह अभी-अभी हॉल का एक चक्कर लगाकर लौटा था व उसकी विजय पर उन्मत्त हो रहा था। वह छोकरा जो कालेज से नया-नया आया था और उनके निकट बैठा था, एक बार भी अपने स्थान से नहीं उठा। नाना को देखकर उसके अन्तरङ्ग में उसके प्रति सराहना की एक असीम धारा प्रवाहित हो रही थी। वह यन्त्रचालित की भाँति अनेक बार अपने हाथों के दस्तानों को निकालता व पहनता था। लग रहा था मानो स्त्री के प्रसंग से वह लज्जास्पद बना बैठा हो। अन्त में जब उसके पड़ोसी ने नाना के सम्बन्ध में कुछ कहा तो वह तपाक् से प्रश्न कर उठा—

"क्षमा कीजियेगा, महानुभाव," उसने कहा—"किन्तु यह महिला. जो अभिनय कर रही है, क्या आप उसको जानते हैं?"

"हाँ, बहुत थोड़ा—" डागनेट ने चकित होकर उत्तर दिया जिसमें एक हिचकिचाहट थी।

"तो आप उसका पता जानते होंगे?"

प्रश्न इतना अचानक व ऐसा अप्रत्याशित था कि डागनेट की इच्छा उस लड़के के मुँह पर तमाचा जड़ देने की हुई।

"मैं नहीं जानता," उसने रुखाई से उत्तर दिया और अपनी पीठ घुमा ली।

उस लड़के ने समझा कि कुछ अनुचित कहने का अपराध वह कर बैठा है; वह और अधिक लज्जालु हो गया और अधिक सीमा तक वह उदास होकर बैठ गया।

तीन थपथपी सारे हॉल में गूँज गई और कुछ कर्मचारी जिनके हाथों में 'ओपेरा-क्लोक' व ओवर-कोट लदे थे, बड़े प्रयत्न से, उनके मालिकों को सामग्री देते जा रहे थे, जो शीघ्रता में अपने स्थान की ओर लपक रहे थे।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच दृश्य की सराहना की गई जिसमें ऐटना पर्वत के शीत-प्रदेश का चित्र अङ्कित किया गया था जहाँ चाँदी की खान की एक सुरंग थी जिसके किनारे, नये बने चमकते सिक्कों की भाँति दीपित थे; इसके पीछे वल्कन की फोर्ज थी जिसमें अस्ताचल के सूर्य की सी दृश्यावली अङ्कित की गई थी। दूसरे अङ्क में डियाना ने देवता से सारी व्यवस्था ठीक की थी जो किसी यात्रा का बहाना करके वीनस व मार्स के लिये किनारे रिक्त कर गया था। एक पल के लिये ही डियाना एकान्त में रह पाई थी कि वीनस का आगमन हुआ। दर्शकों में एक कंपन घूम गया। नग्नावस्था से तनिक ही कम दशा में नाना प्रकट हुई। नग्नता के दिग्दर्शन में मूक-निर्भयता घोपित करते हुये वह प्रकट हुई थी जिसको अपनी मांसलता की शक्ति पर पूरा भरोसा था। एक झीना कपड़ा उस पर ढका हुआ था; उसके चमत्कृत उरोज; जिनकी गुलाबी घुण्डियों की नोकें दृढ़ व सीधी खड़ी थीं जैसे उठते भाले। उसके चौड़े नितम्ब बड़ी ही कामुक गतिविधि से झूम रहे थे; उसकी मांसल जांघे; सचमुच उसका सम्पूर्ण शरीर दैविक सा लग रहा था और उससे भी अधिक वह फेनिल सा स्वच्छ था जो आर-पार दिखाई देने वाले झीने कपड़े के अन्दर से हठात् झांक रहा था। वह वीनस (शुक्र) था जो सागर से प्रकट हो रहा था जिसके ऊपर उसके बालों के अतिरिक्त कोई पर्दा न था। और जब नाना ने अपने हाथ ऊपर उठाये तो फुट-लाइट की चमक ने हर उचटती दृष्टि को उसके हाथ के महीन रोओं तक को स्पष्ट दिखा दिया। वहां सराहना का कोई शब्द न था।

इस क्षण कोई हँस भी नहीं रहा था। मनुष्यों की गम्भीर आकृतियाँ सामने को झुकी हुई थीं, उनके नथुने फूल रहे थे, उनके मुँह शुष्क व आवेश में थे। एक हलकी सांस, एक अदृश्य धमक के साथ सर्वत्र छा गई। इस खिलखिलाती छोकरी के स्थान पर अनायास ही एक पूर्ण विकसित नारी प्रकट हो गई, उसने उन सबको निस्तेज कर दिया जो उसको रोके हुए थे, उसके 'सेक्स' की प्रत्येक निम्नता को सर्वोपरि बनाते हुए और सृष्टि की उसमें छिपी असीम उत्तेजना व चाह को दिग्दर्शित करते हुए। नाना प्रतिक्षण मुस्करा रही थी किन्तु यह एक मखौल था, जो पुरुष को विध्वंस कर देता है।

"शैतान!" फाचरी ने ला फेलो से कहा।

मार्स ने इसी समय सभा में जाने की शीघ्रता में, दो स्वर्ग-देवियों के बीच अपने को फँसा हुआ पाया। वह बड़ा सा टोप व कलंगी लगाये हुए था। तब एक दृश्य प्रकट हुआ, जिसमें प्रूलियर बड़े ही असंयत ढङ्ग से अभिनय कर रहा था। डियाना उसको पकड़े हुए थी, जो चाहती थी कि वाल्कन के विरोध को समक्ष उपस्थित करने के पूर्व उसे उचित मार्ग पर ले आवे और जिसके लिये वह अन्तिम प्रयास में लगी हुई थी, उसको वीनस ने फुसला रक्खा था, जिसके प्रतिद्वन्द्वी को देखकर उसमें एक उत्तेजना उत्पन्न हुई; और तब अपने को उस स्नेह की प्रवंचना में मानकर एक गधे के से अनुराग भरे स्वर में, जो घास के मैदान में घूम रहा हो, उसने कुछ व्यक्त किया। दृश्य तीन बड़ों के साथ समाप्त हुआ और इसी क्षण एक कर्मचारी ने लूसी स्टेवर्ट के बाक्स में प्रवेश किया, और श्वेत-लिली के दो बड़े गुलदस्तों को स्टेज पर फेंक दिया। प्रत्येक व्यक्ति ने प्रशंसा सूचक ध्वनियाँ प्रकट कीं तथा नाना व रोज मिगनन ने विनय-पूर्वक उसका स्वागत किया और प्रूलियर ने कुसुम-गुच्छों को उठा लिया। स्टालों में बैठे कुछ व्यक्तियों ने मुस्कराते हुए उस ओर देखा जहाँ स्टेनियर व मिगनन बैठे हुए थे। बैंकर-जो उत्तेजित हो रहा था, अपनी ठोड़ी को ऐंठते हुए हिला-डुला रहा था, जैसे उसके गले में कोई वस्तु अटक गई हो। तदनन्तर का अभिनय भवन में बैठे दर्शकों में तूफान सा उत्पन्न कर रहा था। डियाना क्रोधावेश में अव्यवस्थित हो उठी थी, वीनस ने जो काई के बिस्तर पर बैठा हुआ था,

तुरन्त मार्स को उसके निकट बुलाया। इसके पूर्व रङ्गमंच पर बलात्कार का ऐसा असभ्यतापूर्ण दृश्य कभी नहीं दिखा था। नाना जिसकी दोनों बाँहें प्रूलियर के गले में पड़ी हुई थीं, रुक-रुक कर उसको भींचती थी, तब फान्टन विचित्र रूप से, भयङ्कर क्रोध प्रदर्शन करने का निरर्थक प्रयास कर रहा था जो क्रोधित पति के आवेश की अप्राकृतिक चेष्टायें प्रकट करता जाता था और अपनी पत्नी को उसी दृश्य में विस्मित बना रहा था, और हिम-प्रदेश के पिछले भाग में दीख रहा था। उसके हाथ में उसका प्रसिद्ध लोहे का जाल था, एक क्षण के लिये मछुये की भाँति उसे फेंकने का उसने अभिनय किया, तदनन्तर किसी रूप में वीनस व मार्स उसमें फँस गये। जाल ने उन्हें पकड़ लिया और अपराधी की स्थिति में, वे कड़े बन्धन में बाँध दिये गये।

तब गहरी सांस लेने के से स्वर की फुसफुसाहट हॉल में फैल गई। कुछ हाथों ने तालियां बजाईं और प्रत्येक ओपेरा-ग्लास वीनस पर स्थित हो गये। शनैः-शनैः,नाना दर्शकों पर अधिकार प्राप्त करती जा रही थी, और वे उस पर आश्रित हो गये। जिस चाह और आसक्ति को उसने जागृत किया था, वह किसी पशु की सी धधकती गर्मी थी और वह तब तक निरन्तर बढ़ती गई जब तक उसने सम्पूर्ण हॉल को नहीं घेर लिया। अब उसकी उस गति में भी एक उत्सुकता थी। उसकी छोटी उङ्गली की किंचित इंगति,मांसलता की गुदगुदाहट में एक थिरकन उत्पन्न कर रही थी। उसकी पीठ मुड़कर कमान सी हो गई थी, उसमें मांसलता की सी उभरी चंचलता थी जैसे उसमें सारङ्गी के से अनेक तारों का सा कंपन हो, और जो किसी अदृश्य हाथों द्वारा गतिशील हो। उठी हुई गर्दनों के नीचे आकर निकलती हुई श्वांस का गरम व सीधा-वाष्प अनेक स्त्रियों के ओठों से जैसे दूर भाग रहा हो। फाचरी उस छोकरे को थामे हुए था जो नया-नया कॉलेज से आया था और जो उसके आगे बैठा था तथा आवेश में कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया था। उसमें काउण्ट डि. वैन्डेव्रेस को देखने की उत्सुकता बढ़ रही थी। जो पीला पड़ा हुआ था, उसके ओठ कठिनाई से आपस में चिपके हुए थे—और वह बलिष्ठ स्टेनियर, उसका मिर्गी का सा चेहरा जैसे आवेश में फूटने वाला था। लेबार्डेट अपने चश्मे से जैसे चकित होकर जाकी की भाँति किसी स्वस्थ घोड़ी को देखकर प्रशंसा कर रहा था।

डागनेट, जिसके कान लाल हो रहे थे, हर्ष से काँप रहा था। तब एक क्षण के लिये जैसे वह घूमा तो मुफट के बाक्स में उसने जो कुछ देखा उससे वह स्तम्भित रह गया। काउण्टेस के पीछे, जो पीत व गम्भीर प्रतीत हो रही थी, काउण्ट उठ खड़े हुए थे, जिनका मुँह फैला हुआ था और जिनका चेहरा लाल धब्बों में म्लानता बिखेर रहा था जब कि उनके निकट, परछाँईं में मारक्युस डि. चोरड की घबड़ाई आँखें देखने में बिल्ली की सी लग रही थीं, जिनमें फासफोरस की सी तेज़ी व सोने की सी दमक थी।

गर्मी दम घोटने वाली थी; सरों से पिघलते पसीनों में बालों का बोझ भी भारी लग रहा था। निरन्तर तीन घण्टे तक, जब तक खेल होता रहा, श्वासोच्छ्वास की उद्विग्नता से वातावरण में एक प्रकार से मानुष-गन्ध सी फैल रही थी। प्रकाश की चमक में धूल कुछ गहराई लिये हुए दिखाई दे रही थी, और वह थमी हुई, मूक और बड़े चमकते गैसेलियर में शांत प्रतीत हो रही थी। दर्शकों का समुदाय थका और उद्विग्न सा अर्धरात्रि की इच्छाओं के आलस्य में घिरा था; जिन्हें वे आराम के कमरों में बुदबुदा कर अपनी चाहना को व्यक्त करते हैं, जो धीरे २ उनमें एक चमक पैदा कर रही थी। और नाना, इस अर्धमूर्छित भीड़ के समक्ष, उन पन्द्रह सौ व्यक्तियों के सम्मुख, जो एक दूसरे के ऊपर भरे हुए थे, जो आवेश में डूबे हुए थे, अन्त भाग की ओर उन्मुख–जिनकी उत्तेजित शिरायें उभर रही थीं, अपने संगमरमर के से चमकते व दूधिया मांस को थिरका कर विजयोन्मत्त थी, जिसका केवल मात्र 'सेक्स' ही ऐसा बलवान था कि वह उन्हें जीत सकता था, तब भी वे हानि-रहित ही बने रह सकते थे।

खेल धीरे २ अन्त की ओर आ रहा था। वाल्कन के विजय-घोष के उत्तर में, सब *आलीम्पस में प्रेमियों के सामने अपमानित किये गये। वे नादानी व मूर्छा की पुकार कर रहे थे या ऊटपटांग व्यंग्यों में उलझे हुए थे। ज्युपीटर ने कहा—"मेरे बच्चे, मैं सोचता हूँ कि तुम बड़े मूर्ख हो जिसने यह सब देखने के लिये हमें यहाँ बुलाया। तब अचानक वीनस के प्रति सद्भावनाओं के रूप

---

*आलीम्पस—स्वर्ग, ग्रीक देश के बड़े श्रेष्ठ देवता का निवास स्थान।

में एक परिवर्तन प्रकट हुआ । कुकोल्ड्स का वह प्रतिनिधि-मण्डल, पुन; आयरिश द्वारा प्रेषित किया गया; देवताओं के अग्रणी से प्रार्थना करते हुए कि वह उनकी प्रार्थना पर कदापि ध्यान न दे क्योंकि जब इनकी पत्नियाँ सन्ध्या-काल में घर पर रहती हैं तो ये उनका जीवन आतंकित कर देते हैं। अतः इनको छले जाना पसन्द है और उसको ये विशेष महत्व देते हैं व उसी में प्रसन्न भी रहते हैं, यही इस सारे अभिनय का आदर्श था। वीनस इसलिये मुक्त कर दी गई। वाल्कन ने तब कानूनी विच्छेद प्राप्त किया। मार्स ने पुनः डियाना से समझौता कर लिया। ज्युपिटर ने घर में शांति और सन्तोष बनाये रखने के उद्देश्य से धोबिन को तारा-मण्डल में भेज दिया, और क्यूपिड अन्त में बंदी-गृह से मुक्त कर दिया गया जहाँ बैठा २ वह कागज की चिड़ियें बनाता रहा और 'प्रेम करो' की विभिन्न विभक्तियों को भूल गया। तब पर्दा एक देवतुल्यस्थान पर गिरा, कुकोल्ड्स का प्रतिनिधि-मण्डल झुका हुआ व वीनस के प्रति सराहना का मन्त्र गाता हुआ उसकी अजेय नग्नता पर मुस्कराता व हर्षित होता हुआ।

दर्शक अपनी कुर्सियों पर से उठ खड़े हुए थे, और शीघ्रता में द्वार की ओर लपक रहे थे। लेखक नाम लेकर पुकारे जा रहे थे और उस प्रशंसायुक्त गड़गड़ाहट में वहाँ दोहरी चीख-पुकार फैली हुई थी। "नाना, नाना" की चिल्लाहट अनेक बार दोहरायी जा रही थीं। और जब तक हॉल पूर्णतः रिक्त हो, वहाँ अंधकार फैल गया। फुट-लाइट बन्द हो चुकी थीं। गैसे-लियर का प्रकाश धीमा हो चुका था। गहरे और भूरे पर्दे बालकनी की सीढ़ियों पर खींचे जा चुके थे। गर्मी व शोर के स्थान पर अचानक मृत्यु सदृश गहन निस्तब्धता ने स्थान प्राप्त कर लिया था। कोहरे व धूल की गन्ध फैल चुकी थी। काउण्टेस मुफट अपने बाक्स के द्वार पर खड़ी थीं, जो अपने 'फरो' में लिपटी थीं व अंधकार की ओर दृष्टि गड़ाये हुए थीं और भीड़ छट जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। भीड़ से धक्का खाये कर्मचारी, मार्ग में, अपने मस्तिष्क से संतुलन को—शीघ्रता में, अङ्गरखों और कपड़ों के ढेरों के मध्य, खो रहे थे। फाचरी और ला फेलो ने जल्दी बाहर आकर निकलते हुए आदमियों को झांका। बरामदे में कुछ सम्भ्रात व्यक्ति पंक्तिबद्ध होकर प्रतीक्षा कर रहे थे।

उधर दोनों ओर की सीढ़ियों से व्यक्तियों का ठसाठस जुलूस, अविराम गति से, नीचे उतर रहा था।

स्टेनियर, मिगनन की सहायता पाकर–पहला था, जिसने वह छोड़ा। काउण्ट डि. वैन्डेब्रेस, ब्लान्च डि. शिवरी का हाथ लेकर बाहर हो गये। एक क्षण के लिए गागा व उसकी लड़की घबड़ाई सी दिखी, किन्तु लेबार्डेट ने लपक कर उनके लिये एक बग्घी ठीक कर दी और ढिठाई से उनकी ओर देखता रहा। डागनेट को जाते हुए किसी ने नहीं देखा। वह कॉलेज वाला नया छोकरा, जिसके गाल चमक रहे थे, स्टेज-द्वार पर निरन्तर प्रतीक्षा करने को कटिबद्ध था। वह शीघ्रता में 'पैसेज डेज पेनोरमाज' की ओर लपका, जिसका द्वार उसने बन्द पाया, सैटीन फुटपाथ पर टहल रही थी; वह आई और अपने स्कर्ट से हलके में उसके ऊपर चढ़ गई, किन्तु उसने पूर्णतः निरुत्साहित रूप में, शुष्कता पूर्वक उसकी इस बढ़ावे के ढंग को अस्वीकार कर दिया और भीड़ में गायब हो गया। उसकी आँखों में उद्विग्न चाह के उमड़ते आँसू छलछला रहे थे। कुछ दर्शक, सिगार जलाते हुए व गीत गुनगुनाते हुए—"व्हेन वीनस टेक्स एन ईवनिंग स्ट्राल" बाहर निकल गये। सैटीन "केफ डेस वेराइटीज" में लौट आई जहाँ आगस्टस ग्राहकों से बची शक्कर के दाने, उसे खाने की अनुमति दे रहा था। एक बलिष्ठ व्यक्ति, जो अत्यधिक आंदोलित था, जिसने थ्येटर अभी-अभी छोड़ा था, अन्त में बाउलेवर्ड में धीरे २ उभरते उस अन्धकार में सेटीन को लिवा ले गया।

दोहरी सीढ़ियों से भीड़ अब भी उतरती चली आ रही थी। ला फेलो, क्लारिस की प्रतीक्षा में था और फाचरी ने लूसी स्टेवर्ड को केरोलीन हेकेट व माँ के साथ उनकी रक्षा का भार लिया था। वे अब आगये थे और बरामदे के कोने को पूरी तरह अपने लिये घेर कर आगे बढ़ रहे थे। जैसे ही मुफट जो बड़ा उदास था, पास से निकला, तो वे अट्टहास कर उठे। उसी क्षण वार्डनोव एक छोटी खिड़की को खोलता हुआ बाहर निकता और फाचरी से उसने एक स्पष्ट लेख प्रकाशित करने का वचन लिया। वह पसीने से तर था, उसका चेहरा ऐसा लाल था जैसे उसे लू या धूप लग गई हो, किन्तु उसकी दृष्टि में विजयोन्माद स्पष्ट झलक रहा था।

"आप ा यह खेल कम से कम दो सौ रात्रि चलेगा", ला फेलो ने कृतज्ञता भरे स्वर में कहा—"समस्त पेरिस आपके थ्येटर को देखेगा।"

किन्तु बार्डनोव ने–जिसका आवेश उससे अधिक अच्छापन प्रकट कर रहा था, अपनी ठोढ़ी को जल्दी २ घुमाते हुए, भीड़ में जो बरामदे में घिरी हुई थी व जहाँ लोगों की आँखें चमक रही थीं एवं मुँह सूखे हुए थे, किन्तु जिनके अन्तर्मन निरन्तर विलास के उद्रेक में. नाना की चाह में डूबे हुए थे, ला फेलो के समक्ष उच्च स्वर में कहा—

"कहो मेरा चकला ! क्या तुम कह नहीं सकते ? तुम सुअर के से सर वाले जानवर !"

— — ——

२.

दूसरी सुबह को १० बजे तक, नाना सोती रही। बाउलेवर्ड हाशमैन में, एक नये मकान की दूसरी मञ्जिल पर उसने फ्लैट ले रक्खा था, जिसके मालिक ने अकेली स्त्री को मकान देने में इसलिये सन्तोष का अनुभव किया कि इससे उसके नये मकान का प्लास्टर जल्दी सूख जावेगा। मास्को के एक मालदार व्यापारी ने, जो पेरिस में एक सर्दी व्यतीत करने के अभिप्राय से आया था, उसको वहाँ टिकाया था और तब मकान मालिक को उसने दो तिमाही का किराया पेशगी जमा कर दिया था। कमरों में जो उसके लिये बहुत बड़े-बड़े थे, कभी पूरा फर्नीचर नहीं जमाया गया; वैभव व विलास की रङ्गीनियों में—सुनहली चमकदार कुर्सियों व पीछे के पर्दों के साथ कहीं-कहीं कबाड़ी की दूकान की चीजें भी लगी हुई थीं; महोगनी लकड़ी की आलमारियाँ और जस्ते की *'केन्डेलबरा' फ्लोरेन्टाईन की सी सुन्दरता प्रदर्शित कर रहे थे।

वहाँ, उस नौजवान लड़की के लिये उसके प्रथम व उचित अभिभावक द्वारा लगाया गया, सभी कुछ, अति शीघ्र समाप्त हो गया। तदनन्तर वह नवीन प्रेमियों के पंजे में फँसती गई; महान् दुष्कर्मों को उभारा गया और बड़ी आवारगी से उधार के काम किये गये, जिससे शीघ्रही मकान से निकाल बाहर किये जाने का डर प्रत्यक्ष उत्पन्न हो गया।

नाना—औंधे होकर पेट के बल लेटी हुई थी, उसके नंगे हाथ तकिये में लिपटे हुए थे जिसमें वह अपना मुँह छिपाये हुए थी, जो थकन से पीला हो रहा था। सोने का कमरा व शृङ्गार का कमरा इन्हीं दो कमरों के सम्बन्ध में

---

*बत्तियों का झाड़।

ही—पड़ोरा के घरू सामान के सौदागर का विशेष ध्यान था। पर्दे से छन कर आती भीने प्रकाश की तह की सहायता से ही आबनूस के लाल फर्नीचर व नीले तथा भूरे रंग के कुसियों के खोल पृथक २ दिखाई दे सकते थे। इस गरम व उदास सोने के कमरे के वातावरण में अचानक एक उत्तेजना के साथ नाना जगी और जैसे अपने पार्श्व के स्थान को रिक्त देखकर उसे कुछ आश्चर्य होने लगा। उसने अपने तकिये के निकटवर्ती दूसरे तकिये की ओर देखा जो अब भी अपनी चमकती झालर के बीच किसी सर की गरमाई के प्रभाव को प्रकट करता हुआ ठिठुर रहा था। तब, हाथ से टटोल कर, सरहाने लगी बिजली की घण्टी के बटन को उसने दबा दिया।

"तो, वह चला गया ?" उसने उस दासी से प्रश्न किया, जो अब तक सामने आ चुकी थी।

"हाँ, मैंडम, मोशियो पाल अभी-अभी दस मिनट पूर्व चले गये। चूंकि मैडम थकी हुई थीं इसलिये वे जगा न सके। किन्तु उन्होंने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं मैडम से कह दूँ कि वे कल फिर आवेंगे।"

कहते-कहते, दासी 'ज़ो' ने खिड़कियाँ खोल दीं। सुनहले प्रकाश की थिरकती किरणें कमरे में बिखर गईं। 'ज़ो' बड़े गहरे रङ्ग की थी और झालर-दार टोपी पहने हुए थी। कुत्ते की तरह उसका लम्बा व नोकीला चेहरा, नीला, काला व भद्दा था, जिस पर चपटी नाक चिपकी हुई थी, उसके भद्दे मोटे ओठ थे व अशान्त काली आँखें इधर-उधर घूम रही थीं।

"कल, कल", नाना ने दोहराया, जो अलसित सी, अभी आधी ही जगी थी, "तो क्या आने वाला कल ही उसका दिन नियत है ?"

"हाँ, मैडम, मोशियो पाल सदैव बुधवार को ही आते हैं।"

"ओह, हाँ, अब मुझे याद आया", नवयुवती ने, बिस्तर पर सीधे बैठते हुए कहा। "प्रत्येक वस्तु बदल चुकी है, यही मैं उससे आज प्रातःकाल कहना चाहती थी। वह *ब्लेकएमूर से भेंट करेगा और तब उस पंक्ति का कोई अन्त न होगा।"

---

*काला हब्शी।

"मैडम ने मुझसे संकेत नहीं किया था। भला मैं कैसे जान सकती थी ?" 'जो' बुदबुदाई। "अब की बार मैडम अपने दिन बदल देंगी और तब मैं तदनुसार कार्य करूँगी। तब वह पुराना खड्डूस और लोभी फिर कभी मंगलवार को नहीं आया करेगा।"

बिना किसी आवेग अथवा मुस्कराहट के यह उन दोनों के बीच की ही बात थी कि वे वहाँ आकर धन व्यय करने वाले दो व्यक्तियों को जिनमें एक फाबर्ग सेन्ट डेनिस का व्यापारी था और प्रकृति से कृपण और दूसरा वैलेचियन, जो एक बना हुआ काउण्ट था, जिससे पैसे बड़ी देर में आते थे और उसमें अजीब महक थी —'पुराना कृपण' व 'काला-हब्शी' के नाम से उन्हें सम्बोधित करती थीं। डागनेट ने अपने लिये उस पुराने कृपण के आने के अगले दिन निश्चित कर रक्खे थे; चूँकि व्यापारी को प्रातःकाल ८ बजे तक निश्चित अपनी दूकान पर पहुँच जाना होता था अतः उसके जाने तक, वह नौजवान जो कि रसोई में प्रतीक्षा करता रहता था, तब उस गरमाहट की जगह वह कूदता जिसको उसने तत्काल रिक्त किया होता था, वहाँ वह दस बजे तक रहता और तब वह भी अपने काम पर चला जाता। नाना और उसने यही कार्यक्रम उपयुक्त मानकर, अपने लिये निर्धारित कर दिया था।

"कुछ चिन्ता मत करो", उसने कहा—मैं उसे आज ही मध्याह्न के उपरान्त लिख भेजूँगी। और यदि दैवात उसे मेरा पत्र नहीं मिलेगा तो तुम कल, वह जब आवे तो, उसे अन्दर मत घुसने देना।"

'जो' धीरे २ कमरे में टहलती रही। वह गतरात्रि की भारी सफलता के विषय में चर्चा करती रही। मैडम ने ऐसी कला का प्रदर्शन किया, वे इतना सुन्दर गायीं। "आह ! मैडम, अब आपको अपने भविष्य के सम्बन्ध में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता शेष नहीं है।"

नाना, जिसकी कोहनियाँ तकिये पर टिकी हुई थीं केवल सर हिलाकर प्रत्युत्तर दे रही थी। उसका *सेमीज उसके कन्धों से उतर गया था, जिस पर उसके अस्तव्यस्त बाल बिखरे हुए थे।

---

*जनानी कुर्ती।

"इसमें कोई सन्देह नहीं है", किन्तु हम लोग प्रतीक्षा किस प्रकार कर सकेंगे ? आज, प्रत्येक प्रकार का आवेश मुझे रहेगा । हाँ, मकान मालिक ने क्या सुबह आदमी भेजा है ?"

तब वे दोनों अनेक प्रकार से उपायों और साधनों के सम्बन्ध में विचार विनिमय करती रहीं। तीन तिमाहियों का किराया देना था और मकान मालिक ने मुकदमा चलाने की धमकी दे रक्खी थी। इसके अतिरिक्त उधार वालों का ढेर लगा हुआ था; एक जाब-मास्टर, एक कपड़े वाला दर्जी, एक लिनेन सीने वाला, बाल संवारने वाला, कोयले वाला और बहुत से जो प्रतिदिन आते थे तथा *एन्टी-रूम में पड़ी बेन्च पर जमते थे; कोयले वाला सर्वाधिक अप्रिय था, वह जीने से ही चिल्लाता आता था।

नाना का सबसे अधिक सरदर्द लुई एक बच्चा था जिसे उसने अपनी सोलह वर्ष की अवस्था में जन्म दिया था जिसको उसने रम्बाउलेट के निकट एक कस्बे में पालन-पोषण के लिये छोड़ रक्खा था। वह धाय तीन सौ फ्रांक लेकर लड़के को देने को प्रस्तुत थी जो उसको लेना थे। पिछली बार जब से उसने बच्चे को देखा था तभी से उसका मातृत्व-स्नेह अत्यधिक जागृत हो उठा था और अब अपनी उस सर्वोत्कृष्ट इच्छा की पूर्ति में असफल होने के कारण वह अत्यधिक दुःखी थी क्योंकि अभी तक नर्स को देने के लिये धन का प्रबन्ध न हो सका था। वह चाहती थी कि बच्चे को लाकर बेरिन्गोल में अपनी चाची मैडम लेराट के पास रख देवे जिससे वह जब चाहे उसे जी भर देख सके। इस प्रसंग पर दासी ने सुझाव दिया कि वह उस 'वृद्ध कृपण' पर अपना यह क्लेश आश्रित कर देवे।

"मैं जानती हूँ," नाना ने कहा—"और मैंने वह सब उससे कह भी दिया है, किन्तु उसने कहा कि उसे स्वयं ही कुछ बड़े लम्बे-लम्बे बिलों का भुगतान करना है। वह महीने में एक हजार फ्रांक से अधिक नहीं अलग कर सकता, उस व्लेकएमूर के सम्बन्ध में यह है कि इस समय वह स्वयं ही अटका है और मेरा ध्यान है वह ताशों में अधिक हार रहा है। और वह दीन मीमी!

*प्रतीक्षा का कमरा।

उसे स्वयं ही इस समय धन की आवश्यकता है; वस्तुओं के भावों के गिर जाने से उसकी स्वत: पूरी तरह सफाई हो चुकी है। वह तो अब मेरे लिये एक फूल भी इन दिनों नहीं ला सकता है।"

वह डागनेट के सम्बन्ध में कह रही थी। सुबह-सुबह जगने पर वह सदैव स्थिर विचारों की स्थिति में रहती थी और तब वह 'जो' से सब कुछ बता देती थी। दासी, जो इस प्रकार की बाहरी बातचीत की अभ्यस्त थी, श्रद्धायुक्त सहानुभूति से चुपचाप सुन लेती। चूँकि मैडम अपने खास-मामलों की चर्चा उससे करती थी अत: वह भी अपनी सम्मति उन विषयों पर दे देती थी। सर्वप्रथम, वस्तुत: वह नहीं कह सकती थी कि वह मैडम को बहुत अधिक चाहती है; इसका एक मुख्य कारण भी था कि वह मैडम 'ब्लान्च' को छोड़ आई थी और भगवान जाने मैडम ब्लान्च उसे दुबारा बुलाने के अनेक उपाय कर रही थी; वह सर्वत्र परिचित थी और उसे एक उपयुक्त स्थान मिल जाने में कोई कठिनाई भी न थी, किन्तु उसका निश्चय था कि वह मैडम नाना के साथ ही रहेगी चाहें परिस्थितियाँ बहुत सन्तोषजनक न भी हों क्योंकि उसका विश्वास था कि मैडम का भविष्य बड़ा उज्वल और आकर्षक है। और उसने अपनी सम्मति देकर बात समाप्त कर दी। जब कोई जवान होता है तो वह बड़े ऊट-पटांग काम करता है। किन्तु अब बड़ा आवश्यक है कि सतर्क रहा जावे क्योंकि पुरुष केवल अपने मनोरञ्जन का ही ध्यान करते हैं। उनका कोई अन्त नहीं है। यदि मैडम पसन्द करे तो अपने लेनदारों को चुप कर देवे और उस धन को प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहे जिसकी उसे तुरन्त आवश्यकता है।

"वह सब कुछ मुझे तीन सौ फ्रांक कदापि न देगा," निरन्तर नाना कहती रही और अपनी उँगलियों को उलझे बालों में फेरती रही। "मुझे तीन सौ फ्रांक अभी चाहिये, आज ही, तुरन्त! कौन तीन सौ फ्रांक दे सकता है? उसको न जानना भी कैसी भद्दी बात है।"

और तब वह उस धन को प्राप्त करने के विविध उपाय सोचती रही। उसी सुबह को मैडम लेराट की वह प्रतीक्षा कर रही थी और वह कितनी प्रसन्न

होती यदि वह तुरन्त उसे रम्बाउलेट भेज सकती। इस समय की उसकी यह सनक शान्त न होने के कारण गतिरात्रि की विजय और सफलता को भी सत्यानाश कर रही थी। यह कि उन तमाम लोगों में जिन्होंने ऐसी प्रशंसा से उसका सम्मान किया था क्या एक भी ऐसा नहीं है जो उसे पन्द्रह ‡लुई लाकर दे सके? इस पर भी, वह उस प्रकार तो धन ले भी नहीं सकती। ओह! वह कितनी व्यथित थी। और तब वह अपने बच्चे के सम्बन्ध में सोचने लगी; उसकी नीली आँखें एक फरिश्ते की सी थीं, वह अपने ओठों से केवल 'मामा' ऐसे मोहक स्वर में कह सकता था कि उससे वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती थी।

इसी क्षण बाहर के द्वार की बिजली की घंटी बजी जिसके स्वर में चीख़ व तेजी थी। वहाँ कौन है, यह देखकर 'ज़ो' ने लौटते हुए गम्भीर फुसफुसाहट में बताया कि "वह एक स्त्री है।"

उसने उस स्त्री को इससे पूर्व लगभग बीस बार देखा था किन्तु वह सदैव यही बहाना करती रही कि वह उसे नहीं पहचान पाती, और उसमें—दुर्भाग्य से तुच्छ स्त्रियों के प्रति व्यवहार में एक प्राकृतिक शुष्कता थी, तभी उसने कहा—"मैडम ट्राइकन, उसने अपना नाम बताया है।"

'पुरानी ट्राइकन," नाना ने कहा। "क्यों, उसके सम्बन्ध में तो मैं सब कुछ भूल ही गई। मैं उससे मिलूँगी।"

'ज़ो' एक लम्बी और अधेड़ स्त्री को ले आई जिसके लम्बे व घुँघराले बाल थे और जो एक काउन्टेस की सी प्रतीत हो रही थी तथा सदैव अपने *'सालीसिटर' के यहाँ जाती रहती थी। तब वह लौट गई, निःशब्द वह गायब हो गई, सांप की तरह लहरा कर उसने कमरे को छोड़ दिया और तभी एक सम्भ्रान्त व्यक्ति ने पुकारा। वह जहाँ थी उसी प्रकार रही। पुरानी मैडम ट्राईकन ने अभी स्थान ग्रहण नहीं किया था। वह केवल कुछ स्फुट शब्द कह गई।

"आज, तुम्हारे लिये—मेरे पास एक व्यक्ति है। क्या तुम पसन्द करोगी?"

---

‡ फ्रांस का सिक्का। *कानूनी सलाहकार।

"हाँ ! कितना ?"

"बीस 'लुई' ।"

" किस समय ।"

"तीन बजे ! तो यह तय हैं ।

"हाँ ! तय ।"

मैडम ट्राइकन तुरन्त मौसम के सम्बन्ध में बातचीत करने लगी। वह बड़ा नीरस है किन्तु इसमें बाहर टहला जा सकता है। उसको और भी अभी चार पाँच व्यक्तियों से मिलना था और तब एक छोटी नोट बुक देखकर वह चली गई।

नाना, अकेली रह गई। उसने अनुभव किया जैसे एक बड़ा भारी बोझ उसके सर से उतर गया। उसकी पीठ पर एक कंपकंपी आई और घूम गई; तब उसने गरम कपड़े ओढ़ लिये, जैसे उसमें सर्द बिल्ली की सी काहिली हो। धीरे-धीरे उसके पलक मुँद गये, कल वह नन्हे लुई को सुन्दर २ कपड़े पहनावेगी, इस पुलक से वह मुस्करा दी; तब, जब निन्द्रा ने उसे घेर लिया, रात्रि का वही स्वप्निल-ज्वर, देर तक प्रशंसा में गड़गड़ाती तालियाँ, उसमें एक गहनता के रूप में लौट आया और उसकी थकान को दूर कर दिया। बारह बजे, जब 'ज़ो' ने मैडम लेराट को कमरे में प्रवेश कराया, नाना तब भी सो रही थी। किन्तु खटपट ने उसे जगा दिया और वह एक साथ चिल्ला उठी !

"ओह, तुम हो ! क्या तुम आज रम्बाउलेट जाओगी ?"

"मैं इसीलिये आई हूँ", चाची ने कहा। "बारह बजकर बीस मिनट पर एक ट्रेन जाती है। अभी समय है कि मैं उसे पकड़ लूँ।"

"नहीं, आज दोपहर बाद ही मेरे पास धन आ सकेगा", नवयुवती ने कहा और अपने को कपड़ों से बाहर निकाल लिया, ऐसा करते समय उसके उरोज उठ रहे थे। "तुम कुछ खा पी लो तब हम देखेंगे।"

ड्रेसिंग-गाउन, सामने लाते हुए 'ज़ो' धीरे से फुसफुसाई, "मैडम, बाल सँवारने वाला वहाँ है ?"

किन्तु नाना ड्रेसिंग-रूम में नहीं गई। उसने पुकारा—

"फ्रांसिस ! अन्दर आओ ।"

एक स्वस्थ व्यक्ति ने, बड़ी आकर्षक वेशभूषा में आकर, द्वार को ढकेल कर खोल दिया । आते ही वह झुका । उसी क्षण नाना अपने बिस्तर से बाहर निकल रही थी, उसके पैर बिल्कुल नंगे थे । जल्दी न करते हुए, उसने अपने हाथ आगे को फेंक दिये, जिससे 'ज़ो' ड्रेसिंग-गाउन की बाँहें उनमें पहना सके । फ्रांसिस बड़े आराम से उस भव्य रूप को पीता रहा और इधर-उधर देखकर सामने ही दृष्टि फेंकता रहा । जब वह बैठ गई और फ्रांसिस ने उसके बालों पर कंघा फेरना प्रारम्भ किया तो वह बोला—

'मैडम ने अनुमानतः अभी पेपर नहीं पढ़ा है । फिगारो में बड़ा सुन्दर लेख है ।"

चूंकि वह समाचार पत्र उसके पास था अतः मैडम लेराट ने तुरन्त अपना चश्मा निकाल लिया और उच्चस्वर में लेख को खिड़की के सामने खड़े होकर पढ़ डाला । एक फौजी के से लम्बे चौड़े बदन को फैलाते हुये वह तन-कर खड़ी रही और जब भी वह किसी विशेषता को ओठों से बाहर लाती तो उसके दोनों नथुने प्रत्येक बार फूलते और आपस में जुड़ जाते । वह फाचरी की एक विज्ञप्ति थी जिसको उसने थ्येटर से बाहर आकर ही सीधे लिखा था—दो कालम भरे हुये थे, बड़े ही मनोरञ्जक किन्तु अनुचित व्यंग्य थे जो अभिनेत्री के प्रति व्यक्त किये गये थे । जहाँ तक नारी का सम्बन्ध है बड़ी ही विकट व धूर्ततापूर्ण प्रशंसा की गई थी ।

'बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर !" फ्रांसिस दोहराता रहा ।

अपनी आवाज़ के सम्बन्ध में नाना को किंचित भी चिन्ता न थी । फाचरी, वह बड़ा अच्छा आदमी है । उसके सरस व आकर्षक तरीके के लिये वह उसे ईनाम देगी । लेख को दूसरी बार पढ़ कर मैडम लेराट ने अनायास कह डाला कि प्रत्येक पुरुष के पैरों में शैतान के पंजे होते हैं, और उसने आगे कुछ भी समझाने को मना कर दिया, इस शीघ्र प्रहार पर वह पूर्णतः सन्तुष्ट थी जिसको वह अकेली ही समझ पाई थी । तब तक फ्रांसिस ने नाना के बालों को संवारना समाप्त कर दिया था । उसने झुककर कहा—

"शाम के पत्रों को भी मैं देखूँगा—सदैव की ही भाँति उसी समय, मेरा ध्यान है—लगभग साढ़े पाँच बजे।"

"मेरे लिये पोमेड की एक शीशी और एक पौंड भुने हुए बादाम, बोग्राइसियर के यहाँ से लेते आना।" जैसे ही वह दरवाजा बन्द करके जा रहा था नाना ने ड्राइंग-रूम में पीछे से पुकार कर कहा।

उन दो स्त्रियों ने, जो पीछे रह गई थीं, ध्यान किया कि उन्होंने एक दूसरे को चूमा नहीं है तो उन्होंने स्नेहपूर्वक गालों को प्यार कर लिया। लेख ने उन्हें उत्तेजित कर दिया था। नाना, जो एक प्रकार से अब तक आधी ही जगी थी, अपनी सफलता पर उन्मत्त हो गई। आह! रोज मिगनन ने सचमुच बड़े सुहाने सबेरे का आनन्द लिया होगा। चूँकि उसकी चाची थ्येटर नहीं गई थी इसलिये कि वह कहती थी कि कोई भी भावोद्रेक उसके पेट को बिगाड़ देता है। अतः उसने कल शाम के सारे दृश्यों को अपनी चाची से कहना प्रारम्भ किया होगा। अपने गायन से तो वह इतनी मदोन्मत्त थी कि, उस प्रशंसा, में वह समझ रही थी कि सारे पेरिस को उसने कुचल कर रख दिया है।

तब अचानक अपने को रोक कर उसने हँसते हुए प्रश्न किया—"क्या कोई भी उस समय ऐसी आशा कर सकता था, उन दिनों जब उसने अपना यह छोटा सा किंतु कलुषित तन "सये डि. ला. गाउटे डि. ओर" में बरबस व्यतीत किया था।" मैडम लेरट ने अपना सिर झुका लिया—"नहीं नहीं, कोई भी उस समय इसको नहीं देख सकता था, न कह सकता था।" उत्तर देकर उसने गम्भीर स्वर में कहते हुए उसे अपनी लड़की कह कर सम्बोधित किया। "क्यों, क्या वह उसकी दूसरी माँ नहीं है जब कि उसकी अपनी माँ, पापा और बूढ़ी दादी के पास गई हुई है।' नाना उस समय बड़ी द्रवित हो रही थी, उसकी आँखों में अश्रु छलछला आये थे। किन्तु मैडम लेराट ने कहा—"जो बीत गया सो बीत गया। और वह तो बड़ा ही गन्दा अतीत है। वे चीजें हफ्ते में रोज-रोज कभी नहीं छूनी चाहियें।" बहुत समय से उसने अपनी भतीजी से मिलना-जुलना और उसे देखना बन्द कर दिया था, क्योंकि घर वाले कहा करते थे कि वह उसके साहचर्य में बुरी संगति में पड़ रही है। जैसे,

भगवान करे, क्या वैसी बातें भी सम्भव थीं। अपनी भतीजी के गुप्त-प्रसंगों को उसने कभी जानने की चेष्टा नहीं की। उसे विश्वास था कि वह एक उच्च व आदर्श जीवन व्यतीत कर रही है। और अब वह उसे अच्छी परिस्थिति में देखकर प्रसन्न हो रही है—यह देखकर कि अपने लड़के के प्रति उसमें मातृत्व की सुन्दर भावना अभी भी है। इस संसार में, अन्त में, सच्चाई व परिश्रम कभी निरर्थक नहीं जाते।

"तुम्हारे बच्चे का पिता कौन है ?" अपने उपदेश को रोकते हुए अनायास उसने प्रश्न किया। उसकी आँखें अत्यधिक कौतूहल से चमक रही थीं।

नाना चकित हो गई और एक सेकण्ड के लिये रुकी। "एक भला आदमी", उसने उत्तर दिया।

"आह !" चाची ने प्रारम्भ किया—"मुझसे कहा गया है कि वह एक मिस्त्री था जो तुमको पीटा करता था। ठीक है, यह सब तुम किसी दूसरे दिन मुझसे बताना। तुम जानती हो कि मुझ पर विश्वास किया जा सकता है। तुम घबड़ाओ नहीं, उसकी मैं ऐसी ही देखभाल करूँगी जैसे वह किसी राजकुमारी का लड़का हो।"

उसने नकली फूल बनाने का काम छोड़ दिया था। वह अब अपनी बचत पर ही आश्रित थी, जो छै सौ फ्रांक प्रति वर्ष थी, जिसे उसने एक-एक करके बचाया था। नाना ने उसके लिये एक अच्छा मकान दिलाने का वचन दिया। उसके अतिरिक्त सौ फ्रांक प्रति मास वह उसे और देगी। जब उसने यह सुना तो चाची हर्ष से फूल गई और अपनी भतीजी पर ऐसा प्रभाव उत्पन्न करना चाहा कि समय आने पर वह सब कुछ उसे लौटा देगी। वह पुरुषों की ओर संकेत कर रही थी। तब उन्होंने पुनः एक दूसरे का चुम्बन लिया। किन्तु नाना, हर्षातिरेक के बीच तथा अत्यधिक नन्हे लुई के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रही थी। इससे वह प्रसन्न भी थी, किन्तु अनायास जब उसे कुछ स्मरण हुआ, खेद की एक रेखा उसमें दौड़ गई।

"क्या बदतमीजी है, मुझे तीन बजे बाहर जाना है", उसने बुदबुदाया– "यह बड़ा दुःखदायी है।"

इसी समय 'जो' ने आकर कहा कि दोपहर का भोजन तैयार है। वे खाने के कमरे में गईं। वहाँ उन्होंने एक वृद्ध स्त्री को पहले से ही बैठे देखा। उसने अभी अपना टोप नहीं उतारा था। वह भद्दे रंग का गहरा गाउन पहने हुए थी जो काली व बैंजनी रंग की चित्तियों के बीच का सा था। नाना को उसे वहाँ देखकर कुछ आश्चार्य नहीं हुआ। उसने साधारणतः पूछा कि वह सोने के कमरे में क्यों नहीं गई।

"मैंने कुछ आवाजें सुनीं", उस वृद्धा स्त्री ने कहा—"मैंने समझा आप व्यस्त हैं।"

मैडम मेलोर, जिसका चेहरा सभ्य था और भिन्न गतिविधि थी, नाना की वृद्धा-स्त्री-मित्र का कार्य करती थी। वह उसका मनोरञ्जन करती व उसके साथ बाहर जाती थी। पहले तो मैडम लेराट की उपस्थिति से उसे कुछ असन्तोष हुआ, किन्तु जब उसने जाना कि अपरिचिता केवल उसकी चाची है, तो वह बड़े सरल व सरस भाव से उसे देखती रही व धीरे से मुस्करा दी। जो हो, नाना ने बताया कि उसका पेट नीचे एड़ियों में चला गया है, किन्तु जैसे-तैसे उसने मूली के कुछ टुकड़े, बिना रोटी के, निगल लिये। मैडम लेराट अत्यधिक मेहमानदारी दिखा रही थी; उसने मूली देना यह कहकर मना कर दिया कि वह वायु बढ़ाती है। जब 'जो' कुछ कटलेट लाई तब नाना खाने से खिलवाड़ कर रही थी और उसने केवल कोई वस्तु चचोर कर फेंक दी। थोड़ी-थोड़ी देर में वह अपनी वृद्धा-मित्र के टोप की ओर देखती जाती थी।

"क्या यह वही नया टोप है जिसे मैंने दिया था", उसने अन्त में पूछा।

"हाँ, अपने काम भर के लिये मैंने इसमें उचित परिवर्तन कर लिये हैं", मैडम मेलोर ने अपने भरे कण्ठ से बुदबुदा दिया।

वह टोप, उस बड़े पंख से, जिसे उसने उसमें लगा दिया था, बड़ा डरावना लग रहा था। मैडम मेलोर को एक सनक थी कि वह प्रत्येक टोप को

दुबारा ठीक-ठाक करती थी, केवल वही जानती थी कि उसे क्या भाता है, और एक पल में वह अच्छी से अच्छी वस्तु को बिगाड़ कर रख देती थी । हर बार बाहर जाने पर उसे शर्म न आवे इसके लिये नाना ने स्वयं उस टोप को लाकर उसे दिया था और अब उसे देखकर बिगड़ रही थी ।

"कम से कम इसे उतार कर तो रख दो" उसने चीख कर कहा ।

"नहीं, धन्यवाद", वृद्धा स्त्री ने बड़े नरम शब्दों में कहा—"यह मुझे कष्ट नहीं दे रहा है । इसे लगा कर भी मैं बड़े मजे से खा सकती हूँ ।"

कटलेट के बाद कुछ गोभी आया और तब बचा हुआ ठण्डा मुर्गी का गोश्त । किंतु जब भी कोई तश्तरी मेज़ पर आती नाना नाक सकोड़ लेती । उसने अपना सारा खाना अपनी तश्तरी छुये बिना ही छोड़ दिया । हर चीज को सूंघ कर व झटक कर कि वह क्या खावे, उसने अपना भोजन, कुछ मुरब्बा लेकर समाप्त कर दिया । वह उदासी कुछ देर तक रही, और 'ज़ो' ने तब तक कपड़ा नहीं उठाया जब तक उसने क़ाफ़ी प्रस्तुत नहीं कर दी, स्त्रियों ने केवल अपनी तश्तरियाँ सरका दीं । वे निरन्तर, बीती रात को मिली, महान् सफलता के सम्बन्ध में वार्तालाप करती रहीं । नाना ने सिगरेट सुलगाली और अपनी कुर्सी पर पीछे झुक कर पीती रही । तब 'ज़ो', कमरे में रुक कर, किनारे के तख्ते के सहारे खड़े होकर, अपने हाथों को हिला-हिला कर, अन्त में अपने जीवन की कहानी सुनाने लगी । उसने कहा कि वह एक 'मिड वाइफ' की लड़की है जो परेशानी में फँस गई थी । सर्वप्रथम उसने एक दाँत बनाने वाले के यहाँ काम किया, फिर एक बीमा कम्पनी के एजेंट के यहाँ किन्तु उसने वह पसन्द नहीं किया । और तब उसने अपने में गर्व का अनुभव करते हुए विभिन्न महिलाओं का नाम ले लेकर कहना प्रारंभ किया जिनके निकट वह उनकी दासी के रूप में कार्य कर चुकी थी । 'ज़ो' ने इन महिलाओं के सम्बन्ध में ऐसे कहा जैसे वे उसका सब कुछ चाहती हैं । निश्चित् ही उनमें से—एक से अधिक—गड़बड़ी में पड़ जातीं यदि वह न होती । उदहरणार्थ, एक दिन मैडम ब्लांच, मोशियो आक्टेव के साथ थी, तभी उसका पति अचानक आ गया । तब 'ज़ो' ने क्या किया ? वह जैसे ही ड्राइंग-रूम से होकर गुजरा

उसने गिरने का बहाना किया; तब उस मालिक ने दौड़ कर सहायता करनी चाही। वह रसोई में तेजी से जाकर पानी का गिलास ले आया। इसी बीच मोशियो आक्टेव सरलता से बाहर हो गया।

"आह! यह वो बढ़ा महान् था," नाना ने कहा। 'जो' सरल आकर्षण से सुन रही थी और एक प्रकार से प्रशंसा भी कर रही थी।

"और मेरे सम्बन्ध में, मुझे अनेक दुर्भाग्यों का सामना करना पड़ा है," मैडम लेराट ने प्रारम्भ किया, और अपनी कुर्सी को मैडम मेलोट के निकट घसीटते हुये उसने अपने वैयक्तिक जीवन की अनेक गुप्त कहानियाँ सुनायीं। वे दोनों ही शक्कर के उस टुकड़े को चूस रही थीं जिसे उन्होंने पहले काफी में डाला था। मैडम मेलोट दूसरों के रहस्य चुपचाप सुन लेती थी, किन्तु अपने सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं बताती थी। ऐसा कहा जाता था कि वह एक रहस्य-मयी पेन्शन पर जीवित रहती है और उस कमरे में किसी को जाने नहीं देती; जिसमें वह रहती है।

अचानक नाना उत्तेजित हो उठी। "चाची" उसने चिल्लाकर कहा—"चाकुओं से मत खेलो। तुम जानती हो, ये मुझे अस्तव्यस्त कर देते हैं।"

यह बिना सोचे हुये कि वह क्या कर रही है मैडम लेराट ने दो चाकू एक दूसरे के ऊपर विपरीत दिशा में रख दिये। इसके साथ ही उस नव-युवती ने इस बात पर भी जोर दिया कि वह अन्धविश्वासनी नहीं है। उदा-हरण के लिये, नमक को छलकाने से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, शुक्रवार को होने वाली बात का भला बुरा भी उस पर असर नहीं डालता; किन्तु विप-रीत दिशा में एक दूसरे पर रक्खे चाकुओं में उससे कुछ अधिक हैं जिस पर वह दृढ़ हो सकती है। वैसे उन्होंने उसे कभी पथभ्रष्ट नहीं किया है। किन्तु इस समय कुछ अनचाहा अवश्य होने को है। उसने एक जमुहाई ली और परेशानी के स्वर में कहा—"दो बज चुका। मुझे बाहर जाना है। क्या बेहूदगी है?" दोनों वृद्धा स्त्रियों ने एक दूसरे को देखा। तब तीनों ने बिना कुछ कहे अपने सर झुका लिये। ठीक है, हर समय बाहर जाना कुछ बात अच्छा नहीं है। नाना पुनः अपनी कुर्सी पर पीछे को उढ़की हुई थी और दूसरी सिगरेट पी रही थी

जब कि अन्य अपने ओठों को दाबे व दार्शनिक की सी दृष्टियां चलाते चुपचाप बैठी थीं।

"जब तुम जाओगी तब हम बिजिक का खेल खेलेंगे," मैडम मेलोर ने कुछ देर चुप रह कर कहा—"क्या मैडम उस खेल को जानती हैं!"

निश्चित मैडम लेराट जानती है और एक प्रकार से औरों से अच्छा। 'जो' को, जो कमरा छोड़ चुकी थी, वह छोड़ना ठीक नहीं था। मेज का एक कोना इतना ही वे चाहती थीं अतः उन्होंने गन्दी तश्तरियों पर एक कपड़ा ढक दिया। आलमारी की दराज़ से जैसे ही मैडम मेलोर ने ताश निकाले, नाना बोली कि वह उसे बहुत भली समझेगी यदि खेल प्रारम्भ करने के पूर्व वह उसके लिये एक पत्र लिख दे। लिखने में उसको उलझन होती है और शब्दों के ठीक-ठीक चयन में भी उसे अपने पर सन्देह रहता है जब कि उसकी वृद्धा–परिचिता पत्र बड़ी भली प्रकार से लिख लेती है। वह दौड़ कर गई और अपने सोने के कमरे से लिखने के बड़े सुन्दर कागज़ उठा लाई। एक त्रिकोण की सी पंचायती दावात लुढ़क रही थी व एक गन्दा कलम था। पत्र डागनेट के लिये था। मैडम मेलोर ने अपने सुन्दर गोल हाथों से लिखना प्रारम्भ किया—"मेरे प्यारे नन्हे आदमी," और तब उसने आगे लिख कर उसे निर्देश किया कि वह कल न आवे क्योंकि "वैसा हो नहीं सकता" किन्तु "दिन में, दूर या पास, प्रतिक्षण वह उसके विषय में सोचती रहेगी।"

"और, हजार चुम्बनों के साथ मैं इसका अन्त करूँगी," मैडम मेलोर बुदबुदाई।

मैडम लेराट ने प्रत्येक वाक्य पर अपना सिर हिला कर सराहना की। उसकी आँखें चमक गईं, प्रेम-व्यापारों में स्वतः घुसने की उसकी आदत व कमजोरी थी अतः कुछ न कुछ बढ़ाने के लोभ को वह न रोक सकी।

"तुम्हारी सुन्दर आँखों पर हजार चुम्बन," वह कूकी और अपनी सरल आंखें घुमा दीं।

"हां, यह ठीक है: 'तुम्हारी सुन्दर आँखों पर हजार चुम्बन'।" नाना

ने दोहराया जब कि स्वीकारात्मक भाव उन दो बुड्ढी स्त्रियों के चेहरों पर भी घूम गये।

'जो' के लिये उन्होंने घण्टी बजाई कि वह उस पत्र को उस अधिकारी को दे आवे। उस क्षण वह थ्येटर से आये एक व्यक्ति से बात कर रही थी जिसको स्टेज मैनेजर ने मैडम के पास एक सूचना लेकर भेजा था जो उसके पास सुबह पहुँच जानी चाहिये थी। नाना ने उस आदमी को अन्दर बुलाया, और वापिस जाते हुये मार्ग में उस पत्र को डागनेट के यहाँ देने का आदेश दिया। तब उसने उससे प्रश्न करने प्रारम्भ किये—"ओह! मोशियो वार्डनोव बड़े प्रसन्न हुये; सारे स्थान, कम से कम एक सप्ताह तक के लिये, भर चुके हैं। मैडम सोच ही नही सकतीं कि सुबह से कितने व्यक्तियों ने उनका पता जानने के सम्बन्ध में पूछताछ की है।"

जब सूचना लाने वाला चला गया तो नाना ने कहा कि वह बाहर आध घण्टे से अधिक नहीं रहेगी। यदि कोई आगन्तुक आवे तो 'जो' उसे प्रतीक्षा करने के लिये बैठा लेगी। जैसे ही उसने कहा वैसे ही बाहरी द्वार की बिजली की घंटी जोर से कड़क गयी। वह एक लेनदार था—जाब-मास्टर*। उसने एन्टी-रूम में पड़ी एक बेन्च पर अपना आसन जमाया। ओह! वह प्रतीक्षा करेगा और सम्भव है रात तक अपने घूंसे पटकता रहे; किन्तु वह उसके लिये अपने में किंचित भी अस्तव्यस्तता नहीं लावेगी।

"मैं अपने को साथ ही घसीटूंगी," नाना ने आलस्य में कहा। और अपने को उभारते हुये एक जमुहाई ले ली। "मुझे अब तक वहां पहुंच जाना चाहिये था।"

इतने सब पर भी वह हिली नहीं। वह खेल देखती रही जिसमें उसकी चाची ने सौ 'ऐस' बना लिये थे। उसकी ठोढ़ी उसके हाथ में थी और वह उस ओर आकर्पित हो रही थी; किन्तु तीन का घण्टा सुनकर अचानक वह चल दी।

"लानत है!" उसने शुष्कता से कहा।

तब मैडम मेलोर ने जो अपनी दस-दस की इकाइयाँ गिन रही थी,

---

*किराये पर घोड़ागाड़ी देने वाला।

उससे मुलायम और प्रोत्साहन की आवाज में कहा—"मेरी बच्ची, तुम बड़ा सुन्दर करोगी, यदि अपना काम तुरन्त समाप्त करके लौट आओ।"

"हां, हां, जल्दी करना।" मैडम लेराट ने जोड़ दिया और ताशों को मिलाने लगी। "मैं साढ़े चार बजे की गाड़ी से भी जा सकूंगी यदि तुम रुपयों के साथ चार बजे तक यहाँ आ जाओ।"

"ओह, वह कोई अधिक समय नहीं लेगा।" उत्तर में वह कह गई।

लगभग दस मिनट में 'जो' ने सहायता करके उसकी पोशाक व टोप पहना दिया। उसने इसकी चिन्ता नहीं की कि वह कुछ ऊल-जलूल लग रही है। जैसे ही वह जाने को प्रस्तुत हुई तत्क्षण द्वार पर एक और घण्टी बजी। इस बार वह कोयले वाला था। ठीक है! वह जॉब-मास्टर के निकट बैठेगा, और वे दोनों आपस में मनोरञ्जन करेंगे, और तब उस क़तार को रोकने के लिये वह जैसे-तैसे रसोई से होकर पीछे नौकरों वाले जीने से उतर गयी। वह अनेक बार उधर से जाती थी। उसे तब केवल इतना ही करना पड़ता था कि अपनी स्कर्ट को वह भूमि पर छूने से बचाती थी।

"जब कोई अच्छी मां हो तो···तो शेष सब निरर्थक है" मैडम मेलोर ने जो मैडम लेराट के साथ अकेली रह गयी थी, गम्भीरतापूर्वक कहा।

"मेरे अस्सी एम्परर जोड़ो," मैडम लेराट ने कहा जो ताशों में भारी कमजोरी रखती थी। तब वे अधिकाधिक ताशों के खेल में लिप्त हो गयीं।

मेज अभी भी साफ नहीं हुई थी। एक मिलीजुली गन्ध कमरे में बिखर रही थी—खाने की खुशबू और सिगरेट का धुंआ। दोनों स्त्रियां काफी में भीगी शक्कर को दुबारा चूसने लगीं। जैसे वे उसे चूसती जाती थीं वैसे ही बीस मिनट तक वे ताश खेलती रहीं। तब तक घण्टी तिबारा गनगना दी। तब 'जो' कमरे में आई और बड़े अपनत्व के स्वर में कहने लगी।

"मैं कहती हूँ।" उसने कहा—"वहां और घण्टी बज रही है। आप यहाँ बैठ नहीं सकतीं। जब और आदमी आवेंगे तब मुझे इस स्थान का प्रत्येक कमरा चाहिये। और बार-बार 'आप उठिये, आप उठिये'।"

मैडम मेलोर खेल समाप्त करना चाहती थी; किन्तु जब 'जो' ने ताश समेटने का बहाना किया तो उसने भली प्रकार से उन्हें उठाने का विचार कर लिया—बिना किसी वस्तु को गड़बड़ किये हुये; जब कि मैडम लेराट ने ब्राण्डी की बोतल, कुछ गिलास और शक्कर उठा ली और वे दोनों लपक कर रसोई में चली गई जहाँ उन्होंने वह सब सामान एक मेज के कोने पर जमाया, कुछ गन्दे कपड़ों के बीच में जो सूख रहे थे और एक बड़े बर्तन के निकट जिसमें चिकना पानी भरा हुआ था।

"मेरे तीन सौ चालीस हो गये हैं। अब तुम्हारा खेल है।"

"मैं ईट में जीत रही हूँ।"

जब 'जो' लौटी तो उसने पुनः उनको खेल में अत्यधिक व्यस्त पाया। कुछ क्षण के अनन्तर जब मैडम लेराट ने ताश समेट लिये और मिलाना प्रारम्भ किया तो मैडम मेलोर ने पूछा—

"वह कौन था ?"

"ओह ! कोई नहीं।" दासी ने लापरवाही से कहा—"केवल एक छोकरा ! मैं उसको उसके काम के लिये भेज देती किन्तु वह ऐसा सुहाना है, उसके चेहरे पर एक भी बाल नहीं है, उसकी नीली आँखें हैं और ऐसी लड़कियों की सी उसकी आकृति है कि मैंने उससे कहा कि वह प्रतीक्षा कर सकता है। उसके हाथ में एक बड़ा भारी फूलों का गुच्छा है और वह उसे अलग भी नहीं कर पा रहा था। उस पर अब भी बेंत पड़ने चाहिये, एक छोकरा, जिसको अब भी कॉलेज में ही होना चाहिये।"

मैडम लेराट पानी तथा शराब का मिला-जुला 'ग्राग' बनाने के लिये गरम पानी लाने को उठी; शक्कर और काफी ने उसे भूख का अनुभव करा दिया था। 'जो' बुदबुदायी कि वह भी कुछ संभाल करने में सफल हो सकती है। उसका मुँह का स्वाद बड़ा कड़वा सा हो रहा है।

"तो उसको तुमने कहां बैठाया है ?" मैडम मेलोर ने प्रश्न किया।

"क्यों, उस खाली कमरे में जिसमें फर्नीचर नहीं लगा है। वहाँ मैडम

का एक सन्दूक व एक मेज रक्खी है। वही जगह है जहाँ मैं ऐसे छोकरों को बैठालती हूँ।"

और वह अपने ग्राग को शकर के टुकड़े डाल-डाल कर मीठा करती जा रही थी। तब घण्टी की एक और आवाज ने उसे उछाल दिया। सब को फांसी लटकाओ। क्या वह शान्ति से पेय पदार्थ भी नहीं पी सकती। यदि उनके पास जो कुछ था वह उन्हें मिल गया, और यह उसका प्रारम्भ मात्र है, तो वह बड़ा सुन्दर होगा। जो, बाहर कौन है यह देखने के लिये, लपकी। जब वह लौटी और मैडम मेलोर की प्रश्नसूचक भंगिमा देखी तो उसने कहा—"केवल फूलों का गुच्छा था।"

एक दूसरे की ओर झुक कर उन तीनों ने वह पेय पिया। घंटी पुनः दो बार बजी, तब अन्त में 'जो' ने मेज साफ कर दी और गन्दी तश्तरियों को एक-एक कर पानी में डुबाती रही। किन्तु किसी भी घण्टी का कोई लाभ न था। रसोई में स्थान ग्रहण करने वालों को उसने प्रत्येक बात की सूचना दे रक्खी थी। दो बार वह आई और उसने उदास भाव से दोहराया "केवल फूलों का गुलदस्ता।"

दो बार ताश बांटते समय वे स्त्रियां जोर २ से हँसीं, जब उनसे उसने एन्टी रूम में बैठे लेनदारों की उस समय की भावभंगिमा बताई जब फूलों के गुच्छे आते थे। मैडम उन गुलदस्तों को अपनी शृङ्गार-मेज पर देखेंगी। यह कितना दयनीय है कि वे इतने कीमती हैं जब कि उन पर देने वाला कोई दस साउस भी नहीं देता है। हां, संसार में पैसा अधिक मात्रा में व्यर्थ नष्ट होता है।

"और केवल मेरे लिये" मैडम मेलोर ने कहा—"मैं इसमें कितनी सन्तुष्ट होऊंगी यदि पुरुष जितना पैसा फूलों में व्यय करते हैं, पेरिस की स्त्रियों को दे देवें।"

"मैं अधिकारपूर्वक कह सकती हूँ कि तुमको प्रसन्न होने में देर नहीं लगती।" मैडम लेराट ने कहा—"मुझे तो केवल उतना ही धन चाहिये जितना तार भेजने में व्यय होता है, मेरी प्यारी—साठ क्वीन।"

इस समय चार बजने में दस मिनट शेष थे। 'जो' अचम्भित हो रही

थी। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि मैडम इतनी देर बाहर कैसे रहीं ? साधारणतः जब वे कृपापूर्वक कभी बाहर जाती भी हैं तो दोपहर बाद वे थोड़ी देर में ही लौट आती हैं। किंतु मैडम मेलोर ने कहा कि व्यक्ति वह नहीं कर पाता जो सोचता है। "व्यक्ति को जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है", मैडम लेराट ने व्यक्त किया। "सर्वोत्तम वस्तु यही है कि प्रतीक्षा की जावे। यदि उसकी भतीजी को देर होगई है तो निश्चय ही वह रोक ली गई होगी। क्या ऐसा नहीं होगा ? इसके अतिरिक्त उन्हें कोई शिकायत भी नहीं है। रसोई में वे बड़े आराम से हैं।" और जब मैडम लेराट के पास खेलने को ईंट न रह गई तो उन्होंने पान खेलना प्रारम्भ किया। बिजली की घंटी में फिर गति हुई। इस बार जब 'ज़ो' सामने आई तो उसका चेहरा तमतमा रहा था।

"मोटा स्टेनियर, लड़कियो !" ज्योंही उसने द्वार पर झांका, फुफफुसा कर कहा—"मैं उनको बरामदे में बैठालूँगी।"

तब मैडम मेलोर ने उस बैंकर के सम्बन्ध में मैडम लेराट से कहा जो उस श्रेणी के भद्र पुरुषों को नहीं जानती थी—"तो क्या वह रोज़ मिग-नन को छोड़ने जा रहा है ?" 'ज़ो' ने अपना सिर हिलाया, वह बहुत सी बातें जानती थी। किन्तु उसे एक बार फिर कष्ट करके जाना पड़ा और घंटी का प्रत्युत्तर देना पड़ा।

"हाँ, अब इसने सबको दबा दिया", उसने लौटकर कहा—"वह ब्लेक-एमूर है। उससें कोई लाभ नहीं है, वैसे मैंने उससे बार-बार कहा कि मैडम घर में नहीं है। वह चला गया है और उसने सोने के कमरे में अपने लिये आराम का स्थान बना लिया है। आज संध्या के पूर्व हमें उसके आने की आशा नहीं थी।"

सवा चार बजे भी नाना अनुपस्थित थी। वह क्या कर रही होगी ? यह तो उसके लिये बड़ी भद्दी बात है। तब दो और गुलदस्ते लाये गये। 'ज़ो' यह सोचकर कि अब क्या करे, यह देखने गई कि कुछ क़ाफ़ी बची है अथवा नहीं। हाँ, स्त्रियाँ इच्छापूर्वक क़ाफ़ी समाप्त करेंगी। यह उनको फिर जगा देगी। वे कुछ २ अपनी कुर्सियों पर उढ़की हुई थीं, वे निरन्तर पैकेट में से

उसी गति से ताशों को निकाल रही थीं। तब आधा घंटा बजा। "कुछ न कुछ बात मैडम पर अवश्य हुई है।"—उन्होंने आपस में कानाफूसी की।

अनायास, अपने को भूलकर, मैडम मेलोर उच्च स्वर में चिल्ला उठी—"डबल बेजीक, पाँच सौ।"

"अपने को सँभालो?" 'जो' ने बिगड़ते हुए कहा—"वे सब भद्र पुरुष क्या सोचेंगे?"

और कुछ देर को नीरवता ने घेर लिया, बीच-बीच में उन दो स्त्रियों की बुदबुदाहट सुनाई पड़ जाती जो उन दो वृद्धा स्त्रियों के हल्के झगड़े के रूप में प्रकट होती। तभी शीघ्रता में चढ़ते पदचापों की ध्वनि पीछे के नौकरों वाले जीने में सुनाई दी। अन्त में वह नाना थी। उसके द्वार खोलने के पूर्व उसके हाँफने का स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहा था। अन्दर घुसते ही वह बड़ी लाल-लाल दिखी। उसकी गति-विधियों में बड़ी मदहोशी थी। उसका स्कर्ट, जिसकी धारियाँ टूट-फूट चुकी थीं, जीने में फट गया था और उसकी झालर पूर्णतः उस गन्दे पानी व कीचड़ में भीग कर तर हो गई थी जो ऊपर से बहाया गया था, क्योंकि रसोइया बिल्कुल बेवकूफ था।

"अन्त में तुम आ गई! ठीक है, यह बड़े सौभाग्य की बात है", मैडम लेराट ने उसके मुँह के सम्बन्ध में नाक सकोड़ते हुए कहा जो कि मैडम मेलोर के डबल विजिक से उखड़ी हुए थी—"तुम यह कह कर प्रसन्न हो सकती हो कि तुम किस प्रकार लोगों को प्रतीक्षा में रखने की क्षमता रखती हो।"

"मैडम सचमुच बहुत बेवकूफ है",—'ज़ो' ने जोड़ दिया।

नाना वैसे ही आपे के बाहर थी, इन तानों ने उसे और भी बिगाड़ दिया। इतनी दुःखपूर्ण परिस्थितियों के बीच से होकर आने के उपरांत क्या उसका स्वागत करने का यही ढंग है!

'अपना काम देखो, क्या देख नहीं सकतीं", वह चीखी।

"हुश! मैडम यहाँ कुछ और भी व्यक्ति हैं", दासी ने कहा।

अतः अपने स्वर को धीमा करके वह नवयौवना स्त्री हाँफते हुए कहने लगी—"तुम सोचती हो कि मैं मौज कर रही थी? मै तो सोच रही थी

कि मैं कभी निकल ही नहीं पाऊँगी। मैं सोचती हूँ कि मैं तुमको अपने स्थान पर देख पाती। मैं धधक रही थी। अन्त में मै तो घूँसे चलाने की परिस्थिति में आ गई थी। तब यहाँ तक आने के लिये एक भी सवारी नहीं मिली। दैवयोग से वह स्थान निकट ही है। साथ मे ही, मैं इतनी तेज दौड़ी जितना दौड़ सकती थी।"

"तो तुम्हें पैसे मिल गये ?" चाची ने प्रश्न किया।

"क्या सवाल है ?" नाना ने उत्तर दिया।

वह अँगीठी के पास एक कुर्सी पर बैठ गई, उसके बोझ को सँभालने में भी उसके पैर थक कर असमर्थ हो रहे थे और जब तक कि उसकी साँस व्यवस्थित हो सके, उसने अपने शरीर पर पहने कपड़ों के अन्दर एक लिफाफे का अनुभव किया, जिसे उसने बाहर निकाला। उसमें सौ-सौ फ्रांक के चार बैंक-नोट थे। खुलने की लम्बी धारी से—जो लिफाफे पर थी, और जो उसने इस संतोष के लिये बनाई थी कि वह देखे कि निश्चित् उसमें नोट ही हैं—नोट स्पष्ट झलक रहे थे। उसके चारों ओर की तीनों स्त्रियों ने उस कागज के सादे लिफाफे को गौर से देखा जो बड़ा गन्दा व मुड़ा-मुड़ाया था और उसकी पतली, दस्ताने पहनी हुई उंगलियों पर टिका हुआ था। तब तक बहुत देर हो गई थी, मैडम लेराट अगले दिन तक रम्बाउलेट नहीं जा सकती थीं। तब नाना ने उन्हें अनेक निर्देश किये।

"मैडम, यहाँ कुछ लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं", दासी ने पुनः दोहराया।

किन्तु वह पुनः उत्तेजित हो उठी। आदमी इन्तजार कर सकते हैं। वह उनसे एक-एक करके मिल सकती है, जब वह व्यवस्थित हो जावेगी व सोच सकेगी कि उसे क्या करना है। और जैसे ही उसकी चाची ने रुपये लेने के लिये हाथ बढ़ाया, "ओह, नहीं, सब नहीं", उसने कहा—"तीन सौ फ्रांक नर्स के लिये, पचास फ्रांक तुम्हारी यात्रा के लिये और पचास फ्रांक मैं अपने पास रक्खूँगी।"

उस समय उसका खुदरा करना एक बड़ी समस्या थी। वहाँ दस फ्रांक भी उस समय नहीं थे। उन्होंने मैडम मेलोर से, जो अनसुने भाव में बैठी

थी, नहीं पूछा क्योंकि आमनी-ब्रस के लिये आवश्यकता भर छै सास से अधिक उसके पास कभी नहीं रहता था। अन्त में 'ज़ो' उन्हें छोड़ गई और कहती गई कि वह जाती है और अपने ट्रंक में देखती है। तुरन्त ही वह सौ फ्रांक लेकर लौट आई जो पांच-पांच फ्रांक के नोट थे। उन्होंने उन्हें मेज़ के कोने में गिना। मैडम लेराट यह वचन देकर तुरन्त चली गई कि वह नन्हे लुई को कल तक ले आवेगी।

"तुम कहती हो कि वहाँ कुछ लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं?" नाना ने कहा जो अब भी विश्राम करने के लिये झुकी बैठी थी।

"हाँ मैडम, तीन व्यक्ति हैं।"

और 'ज़ो' ने बैंकर का नाम सर्वप्रथम लिया। नाना ने ओठ निकाल दिये। क्या स्टेनियर समझता है कि वह उसकी कोई भी बदतमीजी बर्दाश्त कर लेगी, इसलिये कि गत-रात्रि को उसने उसके ऊपर एक गुलदस्ता फेंका था।

"इसके अतिरिक्त" उसने कहा—"आज के लिये मेरे पास बहुत है। मैं किसी से नहीं मिलूँगी। जाओ और कहो कि वह मेरी और प्रतीक्षा न करे।"

"मैडम देखेंगी—मैडम मोशियो, स्टेनियर से मिलेंगी", 'ज़ो' ने कहा, बिना घबड़ाये हुए, जो बड़ी गम्भीर व रुष्ट दीख रही थी क्योंकि वह अपनी मालकिन को मूर्खतापूर्ण व्यवहार करते देख रही थी। तब उसने बेलेचियन के सम्बन्ध में कहा, जो अब समय पाने के लिये उतावला होकर अकेला सोने के कमरे में हाथों पर लटका बैठा होगा। किन्तु नाना क्रोधावेश में अत्यधिक कठोर हो गई, "नहीं, वह किसी से नहीं मिलेगी। वह क्यों ऐसे आदमी के द्वारा तङ्ग की जाती है जो इस हद तक बढ़ जाता है?"

"उन सब को ठोकर मारकर निकाल दो। मैं मैडम मेलोर के साथ बिल्डिक का एक गेम पूरा करूँगी। इनसे वह मुझे अधिक अच्छा लगता है।"

घंटी की गनगनाहट ने उसे उद्वेलित कर दिया। अब यह अत्यधिक है। अब उनमें से और कितने उसे तंग करने आवेंगे? उसने द्वार खोलने को 'ज़ो' को रोक दिया। उसने क्या कहा, बिना सुने 'ज़ो' रसोई के बाहर हो गई। जब वह लौटी तब उसने अपनी मालकिन को दो कार्ड देते हुए सरल भाव से

कहा—"मैंने उन आदमियों से कहा है कि मैडम उनसे मिलेंगी। वे ड्राइङ्ग-रूम में हैं।"

अत्यधिक क्रोध में नाना अपनी कुर्सी से उछल गई, किन्तु मारक्युस डि. चोरड और काउण्ट मुफर डि. बाडबिले के नामों वाले कार्डों ने उसे शान्त कर दिया। विचारों में तल्लीन होकर कुछ पल वह बैठी रही।

"है कौन ?" अन्त में उसने पूछा—"क्या तुम उन्हें जानती हो ?"

"मैं उस पुराने वाले को जानती हूँ",'ज़ो' ने उदास भाव से कह दिया। उसकी मालकिन नेत्रों में प्रश्नों की छाया बनाये रही, तब उसने शान्त होकर कहा—"मैंने उसे कहीं देखा है ?"

इस कथन ने उस नवयुवती को निश्चित कर दिया। अन्त में वह रसोई से चल दी—वह गरम-आरामगाह, जहाँ गप्पें मारी जाती हैं और आराम किया जा सकता है, कोयले की लाल लौ में पकती क़ाफ़ी की गन्ध के बीच। उसने अपने पीछे मैडम मेलोर को छोड़ दिया जो ताशों को काट रही थी व अपना भाग्य स्वयं व्यक्त कर रही थी। वह अब भी अपना टोप चढ़ाये हुए थी, केवल आराम पाने केलिये उसने उसके फीते को खोलकर उसके दोनों कोन को मिला दिया था और उसके कोनों को कन्धों पर पीछे की ओर डाल दिया था। ड्रेसिंग-रूम में जहाँ 'ज़ो'ने उसे व्यवस्थित होने में सहायता की,उन कठिनाइयों के बदले में जो उसे मिल रह थीं—नाना ने क्षीण स्वर में बड़बड़ाते हुए पुरुष मात्र के विरुद्ध अनेक घृणित कसमें खाई। उन भद्दे वाक्यों से दासी अत्यधिक क्षुब्ध हुई क्योंकि उसने दुःख के साथ देखा कि उसकी मालकिन के पूर्ववर्ती गन्दे विचारों और परिस्थितियों को दूर होने में बड़ा समय लगेगा। इतने पर भी साहस करके उससे शांत होने के लिये कहा।

"ओह, छी··· छी !" नाना ने रूखे स्वर में उत्तर दिया—"वह सुअर के बच्चों का एक समूह है, और इसे वे पसन्द करते हैं।"

जो हो, राजकुमारी की सी सुन्दरता प्रदर्शित करने के लिये उसने वह सब कुछ पहना जो वह चाहती थी और तब मन्थर-गति से ड्राइंग-रूम की ओर बढ़ी। तभी 'ज़ो' ने उसे रोक दिया, और अपनी इच्छा से, शीघ्र आगे

बढ़कर मारक्युस डि. चोरड व काउण्ट मुफर की ड्राइङ्ग-रूम में अभिवादन करने के लिये व्यवस्थित करने लगी। इस प्रकार अधिक उत्तम होगा।

"भद्रजन", सुस्थिर सरलता के स्वर में नवयुवती ने प्रारम्भ किया—"मुझे खेद है आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी।"

दोनों व्यक्ति झुके और बैठ गये। प्रकाश की थिरकती आभा कमरे में झाँक रही थी जो बड़ी भव्यता से सजाया गया था। सम्पूर्ण स्थान में वही एक सुव्यवस्थित बैठक थी। उसमें हल्के पर्दे पड़े हुए थे, एक सुन्दर संगमरमर की मेज टिकी हुई थी, एक बड़ा सा चौखटे या आधार पर लगा हुआ एक बड़ा काँच या दर्पण जो घूम सकता था, शेवल-ग्लास था जो फ्रेम में मँढ़ा हुआ था, एक घुमावदार कुर्सी थी और कुछ अन्य आराम-कुर्सियाँ थीं जिनमें नीली साटन के खोल चढ़े हुए थे। ड्रेसिंग-टेबल पर गुलाब का एक फूलदान रक्खा हुआ था जिसमें गुलाब, लिली और ह्यासिन्थ† लगे हुए थे, जो फूलों का गुम्बद-सा दीख रहा था जिससे स्पर्श करने वाली अत्यधिक मादक सुगन्धि चतुर्दिक फैल रही थी। साथ ही वातावरण की नमी में, गन्दे पानी से उठती कठिन दुर्गन्ध इधर-उधर फूट रही थी जो रह-रह कर कष्ट दे रही थी और जो टूटे प्याले के अन्दर के बन्द निकास से उभर कर भी इधर-उधर निकल रही थी। तब लहराते हुए आगे बढ़कर अपने खुले ड्रेसिंग-गाउन को समेट कर बाँधते हुए, थिरकती चप्पलों में नाना सामने आई और तब स्वतः वह अपने वेश-विन्यास से चकित हो उठी, उसका भीगा गात कठिनाई से सूख पाया था, वह एक मुस्कराहट बखेरती जाती थी और अपने फीतों में ही स्वयं बिखर रही थी।

"मैडम", काउण्ट मुफर ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"अचानक यों तूफान की तरह आपसे मिलने आने के कारण आप हमें क्षमा करें। हम एक चन्दे के लिये आपको कष्ट देने आये हैं। इस जिले की दरिद्र सहायक समिति के हम व ये सज्जन सदस्य हैं।"

---

†एक फूल

मारक्युस डि. चोरड ने गर्वोन्नत हो शीघ्रता में जोड़ दिया—"जब हमने सुना कि एक महान् अभिनेत्री इस भवन में रहती है तब हमने तुरन्त यहाँ आकर गरीबों की दीनता का वर्णन कर व उनके कार्य के लिये आपको उत्साहित करने की बात तय की । कला में भावना की अभिव्यंजना सदैव रहती है ।"

नैतिकता का विशाल प्रदर्शन नाना ने किया । अपने सिर को तनिक हिलाकर वह उनके वार्तालाप को सहमति देती रही किन्तु उसके अन्तर्मन में एक चीख प्रतिपल उभर रही थी । यह बुड्ढा आदमी ही दूसरे वाले को निश्चित् घसीट कर साथ लाया होगा ; उसकी आँखें कैसी पाजी की सी दीख रही हैं । साथ ही, दूसरे वाले पर भी सहज अविश्वास किया जा सकता था । इसका मस्तक, इसकी आकृति सभी जैसे सूज रही हो । वह अकेले आने की बात भी सोच सकता होगा । निश्चित् ही, इन्होंने उसके सम्बन्ध में किसी कुली से सुना होगा और प्रत्येक अपनी-अपनी बात कह रहा होगा ।

"निश्चित ही, भद्र महोदयो ! आपने आकर बड़ी कृपा की", उसने बड़ी ही सुकुमारता से कहा । किन्तु घंटी के दूसरे स्वर ने उसे चिंतित कर दिया । क्या ! और आगन्तुक ! और 'जो', उन्हें अन्दर न आने देने के लिये अड़ी हुई थी । "मैं, सचमुच कुछ भी दे सकने में बड़ी प्रसन्न होऊँगी", वह कहती रही । निश्चित् ही वह आत्म-प्रशंसा से गद्‌गद् हो रही थी ।

"आह, मैडम", मारक्युस ने प्रारम्भ किया—"यदि आप केवल उस कष्ट को कुछ भी जान सकतीं । हमारा जिला लगभग तीन हजार गरीबों से आबाद है और तब भी वह सबसे अमीर है । वहाँ कैसी असहायावस्था चल रही है, उसकी आप कल्पना नहीं कर सकतीं । बच्चों को खाना नहीं है, स्त्रियाँ बीमार हैं, जीवन की प्रत्येक आवश्यकता से वंचित हैं, ठंड से मर रही हैं ।"

"गरीब !" नाना ने अत्यधिक प्रभावित होकर कहा ।

उसकी दयनीयता इतनी अधिक थी कि उसके सुन्दर नेत्रों में आँसू छलछला आये । अधिक दुःख में–शीघ्र ही वह आगे को झुकी और अपने शरीर की चाल-ढाल और गतिविधि को उस क्षण भूल सी गई, और उसके खुले

ड्रेसिंग-गाउन ने उसके गले की सुन्दरता को झलका दिया, साथ ही उसके मुड़े हुए घुटनों ने, कमज़ोर हिस्सों के नीचे, उसके शरीर की गोलाई को स्पष्ट कर दिया। प्रकाश की एक क्षीण रेखा ने मारक्युस के भूत के से गालों को स्पष्ट किया और काउण्ट मुफट ने, जो बोलने को उद्धत् थे, अपनी आँखें झुका लीं। निश्चित् रूप से छोटे कमरे में बड़ी गरमाहट थी। एक गरम मकान की भाँति वह भारी व बन्द था। गुलाब मुरझा रहे थे और प्याले में बन्द पचौली की खुशबू मदहोशी पैदा कर रही थी।

"ऐसे अवसरों पर कोई भी बड़े से बड़ा अमीर होना चाहेगा", नाना ने जोड़ दिया—"किन्तु व्यक्ति अपनी शक्ति भर ही कर सकता है। आप मुझ पर विश्वास कीजिये, महानुभाव! यदि मुझे केवल मालूम होता···।"

उस क्षण भावोद्रेक में वह कुछ ऊटपटांग कह डालने को उद्धत् हो रही थी किन्तु उसने अपने को सँभाला तथा वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया। एक क्षण के लिये वह अनिश्चित् बनी रही और यह याद न कर सकी कि कपड़े बदलने में उसने वे पचास फ्रांक कहां रख दिये हैं; किन्तु अन्त में उसने स्मरण किया, वे ड्रेसिंग टेबिल के कोने में पोमेटम-पाट के नीचे उलटे रक्खे हैं। जब वह अपने स्थान से उठी तो अधिक कर्कश स्वर में इस बार घंटी बज उठी। हे भगवान्! कोई और! क्या यह कभी समाप्त न होगा। काउण्ट और मारक्युस भी उठ खड़े हुए और मारक्युस के कान द्वार की ओर स्थिर हो गये। निश्चित ही, उन बार-बार की घंटियों का क्या आशय है, यह वह समझ गया था। मुफट उसकी ओर झांका। अब दोनों भूमि की ओर देखने लगे। दोनों ही, एक दूसरे के रास्ते में थे। तदनन्तर उन्होंने अपने उद्रेक को स्थिर किया। एक गर्वीला और स्वस्थ दीख रहा था, उसका सिर गहरे भूरे रङ्ग के बालों से मढ़ा हुआ था। दूसरे ने अपनी चौड़ी हड्डियों से उन्नत कन्धों को उचका दिया, जिसके ऊपर कहीं-कहीं छिटके सफेद बालों का ताज रक्खा हुआ था।

"सचमुच, महानुभाव!" नाना ने हँसते-हँसते कहा। वह चाँदी के चमकते दस सिक्के ले आई थी। "मुझे डर है, मैं आप पर बोझ डाल रही हूँ। किन्तु ध्यान रखियेगा, ये गरीबों के लिये हैं।"

तब उसकी ठोढ़ी पर एक स्निग्ध गड्ढा पड़ गया। "वह खूब मिले", कहने की सी भावना में वह सरल भाव से खड़ी रही और चाँदी के सिक्कों में भरे हाथ को निकाले रही जैसे कहना चाहती हो—"आगे-आओ, कौन लेगा ?" काउण्ट अधिक चुस्त था। रुपये उसने ले लिये, किन्तु एक सिक्का उस नवयुवती के हाथों में ही रुका रहा और उसको वहाँ से पृथक करने में उसकी उँगलियाँ उसके थिरकते गात को अनायास छू गईं—वह गात ऐसा गरम व मुलायम था कि उससे सारे शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी। नाना प्रसन्न होकर निरन्तर हँसती रही।

"हाँ, महानुभाव !" उसने प्रारम्भ किया—"अगली बार, मैं आशा करती हूँ, इससे अधिक दे सकूँगी।"

अधिक रुकने का कोई बहाना न होने के कारण वे दोनों झुके और द्वार की ओर बढ़ गये। किन्तु ज्योंही वे कमरा छोड़ने को प्रस्तुत हो रहे थे, घण्टी पुनः बजी। मारक्युस आई हुई सरल मुस्कान को रोक न सका, जबकि काउण्ट की गम्भीर आकृति पर से एक छाया घूम गई। नाना ने एक पल के लिये उन्हें रोका जिससे 'जो' नवागन्तुक को इधर-उधर किसी कोने में टिका दे। वह यह पसन्द नहीं करती थी कि उसके यहाँ आने वाले लोग एक दूसरे से मिलें। इस बार तो जगह पूरी तरह भरी हुई थी। उसे आत्म-तुष्टि में एक आश्चर्य हो रहा था कि ड्राइंगरूम खाली है। तो क्या 'जो' ने उन्हें खाने की मेज़ों पर बिठा रक्खा है।

"नमस्कार, महानुभाव", उसने कहा। उस समय वह खुले द्वार पर खड़ी थी।

अपनी स्पष्ट मुस्कराहट और खुली आँखों में उसने उन्हें घेर लिया। संसार के भारी अनुभव को एक ओर टिकाते हुए, ताज़ी हवा की एक सांस लेने की चाह में, उस कमरे के साहचर्य से कुलकुलाते हुए और अपने साथ उस नारी व फूलों की इठलाती महक को ले जाते हुए जिसने उन्हें एक प्रकार से घोट दिया था, काउण्ट मुफट और नीचे झुक गये। और उनके पीछे, मारक्युस डि. चोरड, निश्चित यह सोचकर कि उन्हें कोई देख नहीं रहा है, नाना की ओर पलक मारने का साहस कर बैठे। उस क्षण उनका चेहरा ऐंठ रहा था व

उनकी जीभ ओठों पर दबी हुई थी। जब नवयुवती ने पुनः ड्रेसिंग रूम में प्रवेश किया तो 'ज़ो' प्रतीक्षा में खड़ी थी और उसके पास कुछ पत्र व विजिटिंग-कार्ड थे। वह पहले से अधिक तीव्रता में हँस दी और बोली—

"ठीक, वह मक्कारों का एक जोड़ा जा रहा है। वे फुसलाकर मेरे पचास फ्रांक मुझसे ले गये।"

किंतु वह बिगड़ी नहीं, यह सोचकर उसे प्रसन्नता होती थी कि पुरुष उससे पैसा मांगे। साथ ही वह सूअरों का एक जोड़ा था; अब उसके पास एक धेला भी शेप न था। उन कार्डों व पत्रों को देखकर वह एक बार फिर गुस्से में भड़क उठी। पत्रों को तो किसी प्रकार सँभाला जा सकता था। वे उन महानुभावों के थे जिन्होंने थ्येटर में उसकी प्रशंसा करने के अनन्तर अब अपने-अपने मन्तव्य शीघ्रता में लिख भेजे थे। जहाँ तक आगन्तुकों का प्रश्न है, वे शैतान के पास जावें। 'ज़ो' ने उन्हें हर जगह बैठाल रक्खा है और उसने ध्यान किया कि कमरों का यह सूट* बहुत उपयोगी है क्योंकि हरेक कमरे का द्वार रास्ते की ओर खुलता है। यह मैडम ब्लांच की भाँति नहीं है कि सदैव ड्राइंग रूम से होकर आना-जाना हो; और इससे मैडम ब्लांच को बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था।

"तुम उन सबको वापस कर दो", नाना ने प्रारम्भ किया और अपने मूल विचार पर आ टिकी, "ब्लैक एमूर से प्रारम्भ करो।"

"मैडम, मैंने उसको बहुत पहले बाहर कर दिया है", 'ज़ो' ने एक मुस्कराहट दिखाते हुए कहा। "वह केवल मैडम से इतना कहना चाहता था कि वह कल नहीं आ सकेगा।"

कैसी भारी प्रसन्नता है। नाना ने तालियाँ बजायीं। वह नहीं आ रहा है—कैसा सौभाग्य है। तब वह स्वतन्त्र रहेगी। उसने सन्तोष की एक सांस ली, जैसे उसे मिलने वाले भारी अपराध के दण्ड के समय अनायास मुक्ति मिल गई हो। उसका पहला ध्यान—डागनेट के प्रति था—वह कमज़ोर बत्तख जिसको उसने वृहस्पतिवार तक के लिये रोक दिया है। मैडम मेलोर

---

*हिस्सा।

को दूसरा पत्र जल्दी लिखना चाहिये। किंतु 'ज़ो' ने कहा कि सदा की भाँति मैडम मेलोर बिना किसी के जाने हुए चली गई हैं। तब नाना किसी को भेजने के लिये कह कर, झिझकी। वह बहुत थकी हुई थी। सारी रात सोने को मिलेगा—वंसा सुन्दर रहेगा। उस आराम और उस छुट्टी का ध्यान रोकना उसके लिये असम्भव हो गया। एक बार वह उसको देखेगी।

"थ्येटर से लौटकर मैं तुरन्त बिस्तर पर चली जाऊँगी", लोभ सा व्यक्त करते हुए वह बुदबुदाई—"और तुम मुझको बारह बजे तक चुपचाप सोने देना।" और तब अपना स्वर उच्च करते हुए उसने जोड़ दिया—"तब, ठीक से समझ लो, उन सबको जीने का रास्ता दिखाओ।"

'ज़ो' हिली नहीं। वह खुले भाव से मैडम को कभी परामर्श नहीं देती थी किंतु वह परिस्थितियों को कभी २ इस प्रकार व्यक्त करती थी कि मैडम उसके दीर्घ अनुभव से स्वतः लाभ उठावे। वह भी उस समय जब वह देखती थी कि मैडम मूर्खतापूर्ण कार्य कर रही हैं।

"मोशियो स्टेनियर को भी ?" उसने संक्षेप में पूछा।

"निश्चित्", नाना ने उत्तर दिया—"सबसे पहले।"

दासी तब भी प्रतीक्षा में खड़ी रही ताकि मैडम समय पाकर कुछ सोच सकें। क्या मैडम को इससे गर्व नहीं होना चाहिये कि वे अपनी प्रतिद्वन्दी रोज़ मिगनन को ऐसे व्यक्ति से दूर निकाल सकने में समर्थ होंगी जो थ्येटर में अत्यधिक प्रसिद्ध है और जो बहुत पैसे वाला है।

"ग़ौर करके देखो, मेरी प्यरी", नाना ने प्रारम्भ किया। वह भली प्रकार समझ चुकी थी—"और उससे कह दो कि उसे देखकर मुझे प्लेग चढ़ता है।" किन्तु यकायक उसने अपना मस्तिष्क बदल डाला। कल उसे उसकी आवश्यकता पड़ सकती है। तब पलक मारकर हँसते हुए उसने जोड़ दिया—"अन्त में यदि मुझे उसे फांसना है तो सबसे अच्छा उपाय है कि उसे प्यार किया जाये।"

इस बात को सुनकर 'ज़ो' चकित हो गई। तारीफ करने के ध्यान से उसने अपनी मालकिन को ग़ौर से देखा, और तब जाकर बिना किसी हिचक

के स्टेनियर को उसके काम के लिये अन्दर भेज दिया। नाना कुछ मिनट तक रुकी ताकि 'उसे समय मिल सके कि वह जगह को पकड़ ले'--वह उसको इसी रूप में व्यक्त करती थी। किसीने इसके पहले ऐसा हमला नहीं सुना था। वह ड्राइंगरूम को देखती रही, वह और खाने का कमरा भी खाली था। और जब सुनिश्चित् होकर, और स्थिर होकर वह अपनी खोज करती रही, कि अब किसी के संसर्ग में नहीं आवेगी तभी अचानक एक खाली कमरे का द्वार खोलकर उसके साहचर्य में एक बहुत छोटा आदमी आया। बड़े आराम से व बड़े प्रसन्न होकर देखते हुए अब तक वह एक सन्दूक के ऊपर बैठा था, जिसके घुटनों पर एक बड़ा भारी गुलदस्ता रक्खा हुआ था।

"ओह, भगवान !" नाना ने कहा—"यहाँ एक और है।"

उसको देखकर वह छोटा व्यक्ति भूमि पर कूद पड़ा, खसखस की तरह उसका चेहरा लाल हो रहा था और देखने से ऐसा लगता था कि वह यह नहीं समझ पा रहा है कि वह अपने गुलदस्ते का क्या करे, जिसको वह एक हाथ से दूसरे में बार-बार ले रहा था और भावोद्रेक में बावला हो रहा था। उसका यौवन, उसकी झिझक, उसकी अपने फूलों को देखकर प्रकट होने वाली सरल-तरल भाव-भंगिमा को देखकर नाना चंचल हो गयी और वह फूट कर हँसने लगी। क्या, बच्चे भी ? जब पुरुष उसके पास आते थे तो उनके पास लपेटने को चीथड़े भी नहीं बचते थे। वह बहुत सरल बन गयी। अपनत्व में, ममत्व में, वह पिघल गई; और अपनी जांघों को थपथपाते हुए, मजाक में उसने उससे पूछा—

"बच्चे, तो तुम यहाँ क्या बेंत खाने आये हो ?"
"हाँ", छोकरे ने झिझकी व दबी हुई जबान से कहा।

इस उत्तर ने उसे और भी आनन्दित कर दिया। वह केवल सत्तरह वर्ष का था और उसका नाम जार्ज हगन था। गत रात्रि वह वेराइटी थ्येटर में था और अब नाना को देखने यहाँ आया था।

"क्या ये फूल मेरे लिये हैं ?"

"हाँ ।"

"तो नन्हे बच्चे, वे मुझे दो ।"

और जैसे ही नाना ने वह गुलदस्ता लिया, छोकरे ने अपनी नन्हीं उम्र की भरान में उसका हाथ थाम लिया। उसको छोड़कर जाने के लिये नाना ने उसे ढकेला। वहाँ एक नया बन्दर था जो गरम हो रहा था। जब नाना ने उसे घुड़की दी तो वह स्वयं लजा गयी और मुस्करा दी। तब उसने उसे पुनः आने की अनुमति देते हुए बाहर भेज दिया। वह लड़खड़ाता रहा और बड़ी देर में द्वार ढूँढ़ पाया। नाना तब अपने ड्रेसिंगरूम में आई, जहाँ फ्रांसिस शाम के लिये उसके बाल सँवारने के ख्याल से तुरन्त वहाँ उपस्थित हुआ था। उसके पहले उसने कपड़े नहीं पहने थे। दर्पण के समक्ष हेयर-ड्रेसर की चुस्त उँगलियों की थिरकन में नीचा सिर करके बैठे हुए नाना मौन व गम्भीर बनी रही; तभी 'जो' यह कहते हुए अन्दर आई—

"मैडम, वहाँ एक व्यक्ति है जो नहीं जा रहा है।"

"तब ठीक है, उसे रुकने दो", उसने शांत स्वर में कह दिया।

"किन्तु यहां जितनी जल्दी पहले जाते हैं दूसरे आ जाते हैं।"

"चिन्ता मत करो। उनसे कह दो बैठो। जब वे बहुत भूखे हो जावेंगे तो अपने आप चले जावेंगे।"

उसने पुनः अपना मत बदला। प्रतीक्षा में लोगों को बैठाने में अब उसे आनन्द का अनुभव होने लगा। अचानक एक विचार ने उसके आनन्द को व्यवस्थित कर दिया। वह फ्रांसिस के हाथ से छूटी, और तब उसने भागकर दरवाजे की चटखनी बन्द कर ली। अब वे आ सकते हैं और अन्य कमरों को इच्छानुसार भर सकते हैं, किन्तु वे दीवार तोड़कर तो घुस नहीं सकेंगे, उसने सोचा। उस छोटे द्वार के द्वारा—जो रसोई में जाता था, 'जो' निरन्तर जाती-आती रही। जो हो, पहले की ही भाँति बिजली की सुन्दर घंटी बिना रुके बजती रही। हर पाँच मिनट के बाद उसकी आवाज आती, गनगनाती हुई और साफ, जैसे अच्छी तरह तेल की हुई व्यवस्थित मशीन और तब नाना उस स्वर की टनटनाहट को निराश भावना से गिनती रही। किन्तु अचानक एक स्मृति ने उसे घेर लिया।

"और मेरे भुने हुए बादाम, उनका क्या हुआ ?" वह चीखी।

भुने हुए बादामों को फ्रांसिस भी भूल रहा था। अपने फ्राक-कोट की जेब से उसने एक पैकेट निकाला, उस पुरुष के से बढ़िया ढङ्ग से जो संसार में अपनी नारी-मित्र को कोई उपहार भेंट करता है। जो हो, हर बार उसका भुगतान ठीक होजाता था और वह कभी भी भुने हुए बादाम अपने बिल में लगाना न भूलता था। नाना ने उन्हें अपने घुटनों के बीच में रख लिया और चबाना शुरू किया। रह-रह कर हेयर-ड्रेसर के हिलाने-डुलाने के साथ वह अपना सिर इधर-उधर हिला देती थी।

"शैतान !" एक चुप्पी के साथ वह बुदबुदाई—"वह उनकी एक निरंतर भीड़ है।" एक के बाद एक, तीन बार घण्टी बजी। कुछ घण्टियाँ बड़ी कोमल थीं, जैसे उनमें मिलन के प्रथम प्रहर की सी सरल प्रतिज्ञायें हों। दूसरी बड़ी कर्कश थीं जैसे उनमें छू कर किसी डरावने हाथ का चीत्कार गूँज रहा हो, और कुछ बड़ी शीघ्रता में थीं जो क्षण में आयीं और विलीन हो गयीं। उनमें एक न रुकने वाली छिलन थी, जैसा 'ज़ो' कहती थी कि उन तमाम पुरुषों का आगमन जो बिजली की घटी के ऊपर लगे हाथी दाँत के बटन के दबाव से उभरता था, पास-पड़ोस वालों को परेशान करने के लिये पर्याप्त था। वह मसखरा बार्डनोव बड़ा भद्दा था। उसने इतने लोगों को पता बता दिया है। लगता है गत रात्रि की सारी भीड़ यहाँ आने को टूटी पड़ रही है।

"वैसे ही, फ्रांसिस", नाना ने कहा—"क्या तुम्हारे पास पाँच लुई हैं।"

वह एक कदम पीछे हट गया। ऊपरी पोशाक को टटोला और तब धीमे स्वर में बोला—"पाँच लुई ? मुझे वह बड़ा सहारा है।"

"ओह, क्या तुम जानते हो", उसने उत्तर दिया—'यदि तुम जमानत चाहो···।"

और बिना वाक्य पूरा किये वह निकटवर्ती कमरों की ओर झाँकी। फ्रांसिस ने पाँच लुई दे दिये। 'ज़ो' बीच के समय में आयी और नाना के स्नानादि का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया। शीघ्र ही उसे आना था और कपड़े

पहनाने थे । नाना की तैयारी में अन्तिम प्रसाधन के कुछ चिह्न प्रदर्शित करने की इच्छा सहित हेयर-ड्रेसर प्रतीक्षा कर रहा था। किंतु घण्टी की ध्वनि, दासी को हर बार पुकारती रही। उसकी मालकिन अभी भी फीतों आदि में अस्तव्यस्त थी या केवल एक ही मोजा पहने हुए थी। अपने अनुभव के बाद भी वह बड़ी उलझन में थी। उसने यहाँ तक कि छोटे से छोटे कोने में भी पुरुषों को सब ओर बैठाकर, अन्त में उसने तीन-चार को एक ही स्थान पर बैठा दिया। वैसे यह व्यवस्था उसके नियम के विरुद्ध थी। ठीक है, इससे बुरा और क्या होगा यदि वे एक दूसरे को खाने लगें। तब वहाँ स्थान अधिक हो जावेगा। नाना, निश्चिन्तता से सटकनी लगाये हुए थी। यह कहते हुए कि वह उन्हें धुँआ उड़ाते और आपस में घूँसा चलाते सुनकर प्रसन्न हो सकती है, उनके ऊपर हँस रही थी। उन सबकी बड़ी ही विचित्र सी दृष्टियाँ होंगी। हरेक की जीभ लपलपा कर बाहर निकली पड़ रही होगी, जैसे एक वृत्त में बैठे बहुत से पिल्ले अपने पुट्ठों पर बैठे हों। यह गत रात्रि की सफलता थी जो निरन्तर आ रही थी। पुरुषों का यह समूह उसके साथ घसिटता चला आ रहा था।

"मुझे आशा है कि वे कुछ तोड़-फोड़ नहीं करेंगे", वह बुदबुदायी। अब वह कुछ घबड़ा रही थी। इस घबड़ाहट का कारण—दरवाजों की सन्दों से छन कर आती आगन्तुकों की गरम आहें थीं। और तभी 'जो' लेबोर्डेट को लेकर पहुंची, जिसको देखकर नाना ने सन्तोष की सांस ली। वह वहाँ इसलिये आया था कि उसके लिये उसने एक हिसाब 'शांति के न्यायाधीश' के पास ठीक किया था, और वही बताने वह नाना के निकट आया था। नाना ने कुछ भी नहीं सुना और वह निरन्तर यही कहती रही—मैं तुमको अपने साथ ले जाऊँगी। हम शाम को खाना साथ-साथ खावेंगे। तब तुम वेराइटी थ्येटर में मिलोगे। मैं साढ़े नौ बजे के पहले वहाँ नहीं जाऊँगी।"

वह प्रिय लेबोर्डेट ठीक समय पर ही वहाँ आ टपका था। उसने कभी कुछ माँगा नहीं। वह केवल नारियों का मित्र है और अपने को उनकी छोटी-छोटी बातों में भी आकर्षित बनाये रखता है। उदहरणार्थ, यहाँ आते हुए,

उसने उसके सारे लेनदारों को उल्टे पैरों लौटाल दिया था। वे भले आदमी, यह भी नहीं चाहते थे कि उनको पैसा दिया जावे; इसके विपरीत यदि वे प्रतीक्षा के लिये रुकना ही चाहते थे तो उसका आराम केवल मात्र इतना ही था कि वे स्वयं व्यक्तिगत रूप से मैडम को गतरात्रि की उनकी सफलता पर, अपनी सराहना, व्यक्त कर सकें।

"हमें अब चलना चाहिये", नाना ने कहा। वह तब तक कपड़े पहन चुकी थी।

तत्क्षण 'ज़ो' दौड़ती हुई कमरे में आई और चीख कर बोली—"मैं अब घण्टियों का उत्तर नहीं दे सकती, मैडम! वहाँ तो एक व्यवस्थित भीड़ है जो निरन्तर जीने पर चढ़ती चली आ रही है।"

जीने में एक भीड़। फ्रांसिस भी हँसा। अपने कन्धों को समेटते हुए और एक उदासी अनुभव करते हुए नाना लेबोर्डेट की बाँह को पकड़े हुए उसे रसोई में घसीट लाई और अन्त में पुरुषों से मुक्ति पाकर, वह तेज़ी में, प्रसन्न होकर बाहर निकल गयी। वह यह ध्यान कर रही होगी कि वह उसके साथ अकेली होगी—बिना इसकी चिंता किये कि वह अपने आपही अपने से मूर्ख बनेगा।

"तुम लौटकर मेरे साथ घर आना", जब वे पीछे के जीने से नीचे उत्तर रहे थे, उसने कहा—"तब मैं बची रहूँगी। तब केवल यही भावना जगाकर कि मैं सारी रात सोना चाहूँगी—एक पूरी रात केवल मेरे लिये होगी। वह मेरे मन की एक सनक है, मेरे पुराने दोस्त!"

३

काउन्टेस की माँ—जिसकी मृत्यु गत वर्ष ही हुई थी के स्थान पर अपने को बतलाते हुये, प्रति मंगलवार को रूये डि० पेन्थीवरे के कोने पर अपने मकान रूये डि० मेसमिल में काउन्टेस सेबीन—मैडम मुफट डि० वाउविले के रूप में प्रत्येक से मिलती थी। वह एक बड़ी चौकोर इमारत थी जो कि मुफट परिवार के अधिकार में पिछले सौ वर्षों से थी। सड़क पर उसका बाहरी हिस्सा, ऊँचा व गहरा था तथा उसमें कानवेन्ट* की सी शान्ति व उदास स्थिरता थी जिसमें अनगिनत दरवाजे थे जो सदैव बन्द ही रहते थे; बीच में एक नम बगीचा था जिसमें धूप की खोज में आतुर कुछ पेड़ उग आये थे। वे इतने ऊँचे व पतले थे कि ऊपर वाली छत को भी छू रहे थे। आज इस मंगल की विशेष संध्या को दस बजे के आसपास अधिक से अधिक एक दर्जन व्यक्ति ड्राइंग रूम में एकत्र थे। जब कि वह केवल अपने घनिष्ट मित्रों की प्रतीक्षा में थी, काउन्टेस ने बरामदे अथवा खाने के कमरे को खोला नहीं था। आग के सामने बैठ कर गपशप करने में किसी को भी बड़ा सुख मिलता था। इसके अतिरिक्त ड्राइङ्गरूम बहुत ऊँचा व लम्बा चौड़ा था। चार खिड़कियाँ बगीचे में झांक रही थीं जिससे आती हुई नमी की गन्ध इस अप्रैल की फुहारों वली शाम को, अग्नि स्थान में अधिक ईंधन के जलते रहने पर भी स्पष्ट उभर रही थी। सूर्य वहां कभी चमका न था। दिन के समय में भी हरे रङ्ग की बत्ती मन्द प्रकाश में उस हिस्से को प्रकाशित कर रही थी, किन्तु रात्रि के समय जब लैम्प और झाड़ जलाये जाते थे तभी वह केवल भव्य प्रतीत होता था, जहाँ भारी भारी महोगनी लकड़ी का फर्नीचर पहली बादशाहत के ढङ्ग पर सजा हुआ था और लटकते

*धार्मिक स्कूल।

पर्दे व कुर्सियों के खोल—पीली मखमल में मीनाकारी किये हुये साटन की भाँति—वहाँ थे। कमरे में प्रवेश करने पर मौन भव्यता के वातावरण का अनुभव होता था जो प्राचीन रीति-रिवाज व पुराने जमाने का सा था जिससे उच्चता की प्रशस्त गन्ध उभरती थी। जो हो, अग्नि-स्थान के किनारे, हत्थेदार कुर्सी के समक्ष जिसमें कि काउन्ट की माँ की मृत्यु हुई थी—एक चौकोर कुर्सी थी जिस पर कि सख्त व सीधा लकड़ी का काम था और कठोर गद्दा था। काउन्टेस सेबीन, एक छोटी आराम कुर्सी पर जो लाल रंग से ढकी हुई थी और जिसकी गद्दी में जंगली बतख के मुलायम परों की सी कोमलता थी—उढ़की हुई बैठी थी। वही, उस कमरे में आधुनिक फर्नीचर का एकमात्र प्रतीक था जो उस रुचि विशेष की प्रशंसक थी वैसे ही जैसे उस घिरी गहराई के मध्य ईश्वर निन्दा के रूप में अनास्था।

"तो," वह नवयुवती कह रही थी, "हमको पर्सिया के शाह मिलेंगे।"

वे उस महान् व्यक्तित्व के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे थे जो प्रदर्शनी के विशेष अवसर पर पेरिस आ रहे थे। कुछ महिलायें, अर्ध वृत्ताकार आग के सामने बैठी हुई थीं। मैडम डु जैन्क्वाय, जिसका भाई एक कूटनीतिज्ञ था और जिसने पूर्व में एक प्रतिनिधित्व किया था, उस शहन्शाह के दरबार के कुछ चित्र व्यक्त कर रही थीं।

"क्या, तुम कुछ अस्वस्थ हो, प्रिय?" मैडम चेन्टेराऊ ने, जो कि एक स्पात गलाने वाले की पत्नी थी, मैडम को कुछ कंपकपाते व पीला देखकर प्रश्न किया।

"ओह, नहीं, कदापि नहीं," उसने उत्तर दिया और मुस्करा दी। "मैं कुछ शीत का अनुभव कर रही हूँ। इस कमरे को गरम होने में बड़ा समय लगता है।" और उसने कमरे की दीवारों की ओर देखा तथा ऊपर छत तक देख गयी। उनकी पुत्री एस्टेला, सोलह वर्ष की एक नव-युवती जो बड़ी दुबली पतली व देखने में भद्दी थी, जिस स्टूल पर बैठी थी उससे उठ खड़ी हुई। वह आगे आई और उसने ईंधन का एक टुकड़ा आग में फेंक दिया जो एक ओर लुढ़क गया। मैडम डि० चेजील्स ने, जो कि सेबीन की कानवेन्ट की मित्र थीं, और उनसे लगभग पांच वर्ष छोटी थी, कहा—

"तो ! मैं चाहती हूँ कि मेरा ड्राइङ्गरूम भी तुम्हारे जैसा ही हो। तुम कम से कम, लोगों का स्वागत तो कर सकती हो। इन आधुनिक मकानों में, कमरे सन्दूक से बड़े नहीं होते। यदि मैं तुम्हारी जगह होती तो...... ।" वह बिना सोचे-विचारे कहती गयी और उत्साह से विभिन्न भाव भंगिमायें प्रकट करती गयी—यह व्यक्त करते हुए कि वह पर्दे बदल डालती, कुर्सियां व सब कुछ और तब वह नृत्य-समारोह आयोजित किया करती जिसमें समस्त पेरिस की यह इच्छा रहती कि वह बुलायी जावे। उसके पीछे, उसका पति, जो एक जज था, गम्भीर मुद्रा में सुनता रहा। यह कहा गया था कि वह खुले तौर पर उसके द्वारा छला गया है, किन्तु प्रत्येक ने उसे क्षमा कर दिया और इसके साथ ही उसको अपना भी लिया, क्योंकि जैसा कथन था कि वह उस समय पागल थी।"

"ओह, लियोनाइड !" काउन्टेस सेबीन ने अपनी हलकी मुस्कान से कुछ बुदबुदाते हुये कहा। उसके कन्धों की किंचित थिरकन ने उनके विचारों की शृङ्खला को पूर्ण कर दिया। सत्तरह वर्ष उस स्थान पर रह लेने के अनन्तर वह कभी सोच ही नहीं सकती थी कि उसे अपने ड्राइङ्गरूम को बदलना है। अब वह वैसा ही रहेगा जैसा उसकी सास ने अपने जीवनकाल में उसे रक्खा व चाहा था। तब वार्तालाप को प्रारम्भ करते हुये उसने कहा—"मुझसे ऐसा कहा गया है कि हमें पर्सिया के शाह व रूस के शहंशाह के भी दर्शन होंगे।"

"हां, ऐसा घोषित किया गया है कि बड़े समारोह होंगे," मैडम जोन्कोव ने कहा।

बैंकर स्टेनियर जिसको ल्योनाइड डि० चेजील्स ने अभी-अभी परिचित कराया था और जो सबको जानता था, दो खिड़कियों के बीच के सोफे पर बैठ कर बातचीत कर रहा था। वह एक डिप्टी से प्रश्न कर रहा था जिससे वह स्टाक-एक्सचेन्ज के विषय में शरारत में कुछ जानना चाहता था और उसे उसकी कुछ भनक पड़ भी गयी थी; जब कि काउन्ट मुफट उन सबके सामने निःशब्द हो सब कुछ सुन रहे थे और पहले से अधिक काले दिखाई दे रहे थे। चार या पांच नवयुवकों ने द्वार के निकट, एक पृथक समूह बना

लिया था। वे काउन्ट एक्जेवियर वैन्डेब्रे स को घेरे खड़े थे, जो उन्हें हुश-हुश के स्वर में अपने कुछ खतरनाक अनुभवों के विषय में बता रहे थे जो अनुचित थे, किंतु बिना किसी भय के वे बड़ा प्रयत्न करके अपनी हँसी को दाब रहे थे। उस कमरे के बीचोंबीच एक तगड़ा आदमी जो कि अन्तर्देशीय-मन्त्रालय का मुख्य था, बिलकुल अकेले एक हत्थेदार कुर्सी पर भारी सा बैठा हुआ था जो सो रहा था किन्तु उसकी आँखे खुली हुई थीं। किन्तु एक युवक जो बैन्डेब्रे स की कहानी पर अविश्वास के भाव से देख रहा था, अन्त में उच्च स्वर में बोला—

"फोक्रामेन्ट ! तुम अत्यधिक शक्की हो; तुम अपना सारा आनन्द नष्ट कर दोगे।"

और एक हँसी के साथ वह महिलाओं की ओर मुड़ गया। उस बड़े समाज का अन्तिम व्यक्ति औरतों की तरह नाजुक और समझदार अपने भारी पेट की ज्वाला में अपना भविष्य पी रहा था जिसको कुछ भी शान्त नहीं कर पा रहा था। उसका घुड़दौड़ का अस्तबल था जो पेरिस में अत्यधिक प्रशंसनीय था व जिसमें उसकी बड़ी लागत लगी हुई थी। इम्पीरियल-क्लब में उसका बहुत सा धन समाप्त होकर खेद उत्पन्न कर रहा था। उसकी पत्नियां प्रतिवर्ष कोई न कोई खेत या कई एकड़ बाग का जंगल समाप्त करा देती थीं और पिकार्डी की उसकी भारी स्टेट में बड़े खोखलै बनाती थीं।

"औरों को शक्की कहकर आप बड़ा अच्छा करते हैं, और तुम जो किसी पर विश्वास नहीं करते," उसके पीछे उसको स्थान देते हुये लियोनाइड ने कहा—"यह तुम हो जो अपना आनन्द बिगाड़ रहे हो।"

"सही है," उसने उत्तर दिया—"अपने अनुभव से मैं औरों को लाभ देना चाहता हूँ।"

किन्तु वह रोक दिया गया। वह मोशियो वेनट को भला बुरा कह रहा था। तब, कुछ महिलाओं ने घूम फिर कर, एक छोटी सोफा कुर्सी पर बैठे, साठ साल के एक नाटे से आदमी को जिसके बड़े भद्दे दांत व बड़ी शरारती आंखें थीं, देखा। वह वहां ऐसे चिपका हुआ था जैसे घर में बैठा हो। वह

सबकी सुन रहा था किन्तु स्वयं एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। एक जमुहाई के साथ उसने सोचा कि कहीं उसके विषय में तो कुछ बुरा भला नहीं कहा जा रहा है। वैन्डेब्रेस ने अपनी भव्य दृष्टि से गम्भीरतापूर्वक जोड़ दिया "मोशियो वेनट यह भली प्रकार जानते हैं कि मैं उन्हीं बातों पर विश्वास करता हूँ जिन पर मुझे विश्वास करना चाहिये।"

वह एक धार्मिक विश्वास का सा कार्य था। लियोनायड स्वयं सन्तुष्ट थी। कमरे के कोने वाले नवयुवक अब हँस नहीं रहे थे। वह एक संकरी पट्टीदार जगह थी तथा वे वहां अधिक हास्य नहीं कर सके। सब पर एक उदासी छा गयी। स्टेनियर की सुंघनी की सी आवाज उस नीरवता के बीच गूंजी और डिप्टी की इच्छा बैंकर के क्रोध में परिणत हो गई। कुछ मिनट तक काउन्टेस सेबीन आग की ओर देखती रहीं तब उन्होंने नवीन वार्तालाप प्रा म्भ किया—

"मैंने पर्सिया के शाह को गत वर्ष वाद न में देखा था। अपनी अव.था के बावजूद भी वह अभी ओजपूर्ण है।"

"काउन्ट बिस्मार्क उनके साथ होंगे। मैडम जे-क्राय ने व्यक्त किया। "क्या तुम काउन्ट को जानती हो। मैंने अपने भाई के यहाँ उनके साथ खाना खाया है। ओह, बहुत समय व्यतीत हो गया। उस समय पेरिस में वे पर्सिया का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। मैं समझ नहीं सकती कि ऐसी सफलता उस ऐसे व्यक्ति में कैसे है।"

"क्यों ?" मैडम चेन्टराउन्ट ने प्रश्न किया।

"हां, मैं नहीं जान सकती कि मैं तुम्हें कैसे बताऊँ ? उसने मुझे प्रसन्न नहीं किया। उसकी आँखें जंगली की सी हैं और उसका व्यवहार बड़ा भद्दा है। इसके अतिरिक्त, मैं तो उसे पूरा बदतमीज समझती हूँ।"

तब काउन्ट बिस्मार्क के सम्बन्ध में सब वार्तालाप करने लगे। बड़े ही भिन्न मत थे। वैन्डेब्रेस उन्हें जानता था और तभी उसने बताया कि वह बड़ा पीने वाला और बड़ा खेलने वाला है। जब बहस चरम सीमा पर थी तभी द्वार खुला और हेकटर ला फेलो प्रकट हुआ। फाचरी जो उसके साथ था

काउन्टेस के निकट आया और झुक कर बोला—"मैडम, मैं आपका मधुर निमंत्रण भूल न सका।"

उसने एक मुस्कान व मीठे शब्द के साथ उसका स्वागत किया। पत्रकार काउन्ट से हाथ मिलाकर एक क्षण के लिए खड़ा हो गया—जैसे एक मछली पानी के बाहर उस समुदाय के मध्य जहाँ वह केवल स्टेनियर को पहचानता था। वैन्डेव्रेस घूम गया और आकर उसने उसका स्वागत किया; और सम्मेलन में प्रसन्न होते हुये, साथ ही विचार विनिमय की इच्छा को लेकर फाचरी ने तुरन्त उसे किनारे कर दिया और धीमे स्वर में बोला:

"वह कल के लिये है; क्या तुम जा रहे हो ?"

"निश्चित।"

"उसके यहाँ, आधीरात को ?"

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, मैं ब्लान्च के साथ वहाँ जा रहा हूँ।"

उस क्षण वह स्त्रियों से बचना चाहता था व काउन्ट विस्मार्क के पक्ष में एक और बात कहना चाहता था। किन्तु फाचरी ने उसे रोक लिया।

"तुम ठीक अनुमान नहीं लगा सकते, क्या निमन्त्रण देने के लिये उसने मुझसे कहा है।"

और काउन्ट मुफट की ओर अपनी गर्दन उसने हिलाने दी जो उस समय डिप्टी व स्टेनियर से बजट पर बहस कर रहा था।

"ऐसा नहीं हो सकता।" वैन्डेव्रेस ने कहा, चकित होते हुये साथ ही अत्यधिक प्रसन्न होकर।

"अपनी प्रतिष्ठा पर। मैंने कसम खाई थी कि मैं उसे लाऊँगा। उसी प्रसंग पर मैंने किसी अंश में बुलाया था।"

उन दोनों ने एक शान्त हँसी हँसी और तब वैन्डेव्रेस ने महिलाओं की ओर बढ़ते हुये कहा—

"इसके विपरीत मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि काउन्ट विस्मार्क बड़ा हंसोड़ है। उदाहरणार्थ एक रात को जैसा मैंने सुना है उन्होंने एक बड़ा ही मनोरञ्जक हास्य उत्पन्न किया।

ला फेलो ने जैसे-तैसे, उन दो मित्रों में हुई मन्द-वार्ता के कुछ उड़ते हुये शब्द सुने थे; फाचरी की ओर प्रश्नात्मक रूप से उसने देखा व चाहा कि जो बात स्पष्ट नहीं हुई थी वह प्रकट करदी जावे—'वे किनको लिये जा रहे थे? अगले दिन अर्धरात्रि में क्या होने जा रहा है?' वह जहाँ कहीं जाता अपने भाई के साथ चिपका रहता था।

दूसरा भाई जाकर बैठ गया था। काउन्टेस सेब्रीन के प्रति उसका विशेष आकर्षण था। उसकी उपस्थिति में अनेक बार वह चर्चा का विषय बना रहा था। वह जानता था कि जब केवल सत्तरह वर्ष की अवस्था में उनकी शादी हुई थी तब उनको चौंतीस वर्ष का होना चाहिये था, और उसके बाद जब उनकी दुबारा शादी हुई तब से उनका जीवन, उनकी सास व पति के बीच में, दुनियां से अलग सा रहा था। कुछ लोग कहते थे कि समाज में वह ऐसी नीरस थी जैसे एक समर्पित व्यक्ति और कुछ के मन में आर्द्र भाव रहते थे, जब कि वे उनके हास्य, उनकी बड़ी बड़ी चमकीली आँखों और उनके उन दिनों की याद करते जब वे इस मकान में बन्द होने के पूर्व थीं। फाचरी ने उनकी परीक्षा की और झिझका। उनके एक कैप्टेन मित्र ने, जो अभी-अभी मैक्सिको में मारा गया था, अपने जाने के पूर्व सांध्य-भोज के अनन्तर, एक ऐसा राक्षसी रहस्योद्घाटन किया था जिसको कि किन्हीं क्षणों में अत्यन्त समझदार व्यक्ति शायद ही प्रकाशित करेंगे। किन्तु उस सम्बन्ध में फाचरी की स्मृति बड़ी धुंधली थी। जब उसने काउन्टेस को देखा जो काली पोशाक में थीं, जिनकी हँसी बड़ी मधुर व शान्त थी और जो पुरानी चाल के ड्राइङ्गरूम के बीच में बैठी थीं तब उस शाम उन दोनों ने बहुत डटकर भोजन किया और उसके मन में कुछ भ्रम उत्पन्न हुये। उनके पीछे रक्खा एक लैम्प उनकी तीखी छाया को अलग फेंक रहा था। वह एक मांसल और गेहूँयी रङ्ग की स्त्री थी जिसके कि केवल मात्र ओठों में ही, जो कुछ ही मोटे थे—एक विशेष प्रकार की आदेशात्मक गम्भीर विलासिता भरी हुई थी।

"उनको व उनके विस्मार्क को क्या हुआ है?" ला फेलो बुदबुदाया, जो सदैव ही समाज में अधिक असन्तुष्ट रहने की बात कहता रहता था—"यहाँ की

गति तो अत्यधिक मन्द है। तुम्हारा यहाँ आने का प्रस्ताव विचित्र-सा ही था।"

अनायास फाचरी ने उससे प्रश्न किया—"मैं कहता हूँ, यह काउन्टेस? क्या इसके कोई प्रेमी है!"

"ओह, नहीं मेरे प्यारे दोस्त, ओह नहीं," उसने विश्वास के साथ कहा और लगा जैसे उसे उलझन हो रही हो क्योंकि उसे अपने इस उद्दण्ड प्रश्न का कोई ध्यान नहीं रहा था। "तुम समझ रहे हो कि तुम कहाँ हो?" तब उसे ध्यान हुआ कि उसकी अव्यवस्था संसार के उस आदमी की सी नहीं है जैसा वह है, अतः सोफे पर पीछे झुकते हुए उसने कहा—"हाँ, तो मैं कह रहा हूँ, नहीं है। किन्तु वास्तविकता यह है कि मैं किसी बात के सम्बन्ध में सुनिश्चित नहीं हूँ। वहाँ एक आदमी है—वह फोक्र.मेन्ट जो सदैव इस जगह के इर्द-गिर्द दिखाई देता था। यह सही है कि किसी ने इससे भी विचित्र चीजें देखी थीं। मैं इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करता। जैसे-तैसे, यदि काउन्टेस इस प्रकार अपने को सुखी बनाती है तो वह बड़ी चालाक है, क्योंकि इस बात को किसी ने प्रकट में नहीं जाना है, न उसके सम्बन्ध में कभी इस प्रकार की बातचीत सुनने में ही आई है।"

इसके आगे वह कुछ भी पूछने का कष्ट दे इससे पूर्व, उसने उससे वह सब कुछ कह डाला जो मुफट-लोगों के बारे में उसे ज्ञात था। उन स्त्रियों की चटर-मटर के बीच जिसे वे अग्नि-स्थान के सम्मुख बैठकर कर रही थीं, वह बड़े धीमे स्वर में बोलता रहा। उनकी सफेद टाइयों व दस्तानों को देखकर कोई भी यह कह सकता था कि वे बड़े ही चुने हुये शब्दों में किसी गम्भीर विषय पर विचार विनिमय कर रही हैं। माम्मा मुफट, जिसको ला फेलो बहुत अच्छी तरह जानता था, सबसे असहयोग प्राप्त करने वाली पुरानी स्त्री थी जो सदैव पुजारियों के बीच में ही उलझी रहा करती थी। और मुफट, वह एक जनरल का काहिल लड़का था। वह नेपोलियन प्रथम द्वारा काउन्ट बनाया गया था। तभी वह स्वभावतः दो दिसम्बर के बाद ही अपने प्रति सहयोग पा सका था। उसका व्यक्तित्व कोई बहुत आकर्षक भी नहीं था, किन्तु वह बहुत

भला और नेकनीयत माना जाता था। इन तमाम बातों के साथ अपने सम्बन्ध में वह दूसरी दुनियाँ के से विचार रखता था। कोर्ट में अपने सम्बन्ध में तथा अपनी मान-प्रतिष्ठा व वैभव के सम्बन्ध में ऐसे ऊँचे दिमाग में रहता था कि वह अपने सिर को पवित्र सौगन्ध के रूप में सदा उठा कर चलता था। वह माम्मा मुफट थी जिसने उसको ऐसी सुन्दर शिक्षा दी थी। प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की चर्चा करने में उसमें कोई जीवन नहीं था, किसी प्रकार की उद्दण्ड बातें नहीं थीं न कोई उत्साह ही था। वह बड़ा धार्मिक था। उसको गहरी हिंसा के विरोध में समय-समय पर अनेक दौरे आते थे जैसे मस्तिष्क का बुखार चढ़ा हो। तब उसके चित्रांकन के अन्तिम विवरण को समाप्त करते हुये ला फेलो ने अपने भाई के कान में फुसफुसा कर कुछ कह दिया।

"यह सम्भव नहीं है," दूसरे ने कहा।

"मेरी प्रतिष्ठा पर विश्वास करो। उसके लिये मैं सुनिश्चित था। उसने अपनी शादी के समय तक वह रक्खा था।"

फाचरी ने काउण्ट को देखा और हँस दिया जिसका चेहरा गलमुच्छों से भरा हुआ था पर उसके मूछें न थीं जिसकी आकृति अत्यधिक चौकोर और कठोर दिखाई पड़ती थी। वह स्टेनियर को गिनतियों के जोड़ बताता जाता था जो उनके सम्बन्ध में मतभेद रखता था।

"ठीक है, वह उस प्रकार का लगता है," वह बुदबुदाया। उसने अपनी पत्नी को कैसा अच्छा उपहार दिया था। आह! मामूली चीज। उसने उससे उसको कितना क्षुब्ध किया होगा। मैं दावे से कह सकता हूँ कि वह इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानती होगी।"

तत्क्षण काउण्टेस सेबीन ने उससे कुछ कहा किन्तु वह काउण्ट के सम्बन्ध में जो कुछ जान रहा था उसमें इतना व्यस्त व आकर्षित हो रहा था कि उसने कुछ सुना ही नहीं। तब उसने अपना प्रश्न दोहराया—

'मोशियो फाचरी, क्या तुमने काउण्ट विस्मार्क पर कोई लेख नहीं लिखा है? तुमने उससे कहा था; क्या नहीं कहा था?"

वह तुरन्त अपनी कुर्सी से उठ बैठा और स्त्रियों के निकट आ पहुंचा

तथा अपने को सँभालते हुये और इसी बीच कुछ उत्तर सोचते हुये वह सरल भाव से खड़ा हो गया।

"सचमुच, मैडम, मैं उसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता हूँ क्योंकि मैंने वह लेख जर्मनी में प्रकाशित उनकी कुछ जीवनियों की सहायता से लिखा था। मैंने काउण्ट बिस्मार्क को कभी देखा नहीं है।"

वह काउन्टेस के ठीक आगे खड़ा रहा। जब वह उससे बातें करता जाता था तब अपने प्रभाव को निरन्तर समझता जाता था। वह अधिक अवस्था की नहीं लगती थी। कोई भी उसे अट्ठाईस वर्ष से अधिक की नहीं समझ सकता था। क्या थीं उसकी आँखें और उनकी वे लम्बी कगारें--जिन पर पड़ती हुई नीली छाया, विशेषतः यौवन की ज्योति को छिपाये हुये थी। वह अपने माता-पिता के द्वारा लालित-पालित थी जो उससे पृथक रहा करते थे। वह एक महीना मारक्युस डि० चोरड के साथ व एक महीना मारकोनिस के साथ रहा करती थी तथा उसने अपनी अल्पायु में ही शादी करली थी। अपनी मां की मृत्यु के तुरन्त बाद वह एक प्रकार से उद्विग्न रहती थी विशेषतः अपने पिता से क्योंकि उसके मार्ग में वह एक अटकाव की भाँति थी। वह बड़ा भयानक व्यक्ति था। मारक्युस और उसके सम्बन्ध में विचित्र कहानियाँ प्रचलित थीं। उसकी पवित्रता के अत्यधिक प्रदर्शन के अनन्तर भी वह सब प्रचारित था। तभी फाचरी ने पूछा—"क्या उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा?"

"निश्चित उसका पिता आवेगा, किन्तु बहुत देर में क्योंकि देख भाल करने को उसके पास अत्यधिक कार्य है।"

पत्रकार, जो यह जानता था कि वह बुड्ढा आदमी अपनी रंगीली शाम कहाँ बिताता है अपने में गम्भीरता बनाये रहा, किन्तु काउन्टेस के बायें गाल पर मुंह के नीचे उसने एक चिन्ह देखा, जिससे वह अधिक विस्मित हुआ। नाना के भी ठीक वैसा ही चिन्ह था। यह बड़ी मजे की बात थी। उस निशान पर कुछ छोटे घुंघराले बाल थे। नाना के ऊपर के बाल केवल कुछ छोटे थे, जबकि इस पर वे बहुत गहरे काले थे। किन्तु कुछ भी हो, इस स्त्री के कोई प्रेमी नहीं था।

"मैं हर समय महारानी अगस्ता के सम्बन्ध में जानना चाहती हूँ" उसने कहा—"मैंने सुना है कि वे बड़ी अच्छी, पवित्र व धार्मिक हैं। क्या तुम सोचते हो कि वे शाह के साथ आवेंगी।"

"मैडम, ऐसा कहा जाता है कि वे नहीं आवेंगी", उसने उत्तर दिया।

उसके कोई प्रेमी नहीं है यह सबको प्रत्यक्ष विदित था। यह पर्याप्त था कि सभी उसे वहाँ अपनी पुत्री के पास देख रहे थे। पुत्री अन्यमनस्क व सुस्त सी अपने स्टूल पर बैठी थी। वह मक़बरे की तरह का ड्राइंगरूम जिसमें गिर्जाघर की सी महक थी, इस बात की पर्याप्त घोषणा कर रहा था कि किसी लोहे जैसे हाथ के बीच और अन्यायपूर्वक उसने जीवन के दिन व्यतीत किये हैं। उस पुराने व आधुनिकता से शून्य मकान का उसका अपना कुछ न था। वह सब नमी से काला पड़ गया था। वह मुकट था जो इस पर एकाधिपत्य व शासन करता रहा था। वह अपनी एकपक्षीय शिक्षा के आधार पर तथा अपने सन्यास व व्रतों के आधार पर वहाँ जमा हुआ था। किन्तु उस बुड्ढे नाटे आदमी को देखने से—जिसके दांत गन्दे व दृष्टि चपल थी जिसको फाचरी ने अभी-अभी स्त्रियों के पीछे एक हत्थेदार कुर्सी पर बैठे देखा था—अब भी बहस का अधिक मजेदार मसाला प्राप्त हो रहा था। वह उस व्यक्ति को जानता था। वह था थियोफाइल वेनट जो एक भूतपूर्व वकील था और पुरोहितों के विषयों में अपनी एक विशेषता रखता था। अपने बड़े भव्य सौभाग्य से विश्राम पाकर वह अब एक प्रकार से रहस्यमय अवस्था रहता था। हर जगह उसका स्वागत होता था, बड़े सम्मान से वह बैठाला जाता था। उसके प्रति लोगों में कुछ डर भी था क्योंकि वे समझते थे कि उसमें विचित्र सी शक्ति भी विद्यमान थी। वह एक रहस्य था जिस की, कहा जाता था कि, परीक्षा की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त उसने एक बड़ा लज्जास्पद कार्य भी किया था। वह सेडेलीन में गिर्जाघर का रखवाला था जिस पद को उसने केवल इसलिये लिया था कि वह नवें एरोंडिसामेंट के मेयर का साथी था और अपने खाली समय को वहाँ बिताता था; ऐसा कहा भी करता था। काउन्टेस बहुत भली प्रकार रक्षित थी और उसमें कोई विशेष गड़बड़ी नहीं थी। उस स्थान पर कुछ भी करना सम्भव नहीं था।

"तुम ठीक कहते हो; यहां सचमुच मृत्यु की सी उदासीनता है," फाचरी ने अपने भाई से कहा। तभी वह स्त्रियों से जान छुड़ाकर यहाँ से हट सका। "हम चलें ?" उसने प्रश्न किया।

किन्तु स्टेनियर जिसको काउण्ट मुफट व डिप्टी ने अभी-अभी छोड़ा था, उसके समक्ष बिगड़ कर देखते हुये आया। वह पसीने-पसीने हो रहा था और उसकी धीमी आवाज घरघरा रही थी। "छिपाये रक्खो। अच्छा है यदि वे चाहते हैं तो अपनी सूचनायें अपने पास बनाये रक्खें। मुझे बहुत लोग मिल जावेंगे जो बता देंगे।" तब पत्रकार को ढकेल कर एक कोने में ले जाते हुये उसने गर्वोक्ति के से स्वर में कहा—"ऐसी क्या बात है ? वह कल के लिये है। मेरे प्रिय ! मैं वहाँ रहूँगा।"

"आह !," फाचरी विस्मित होकर बुदबुदाया।

"तुम जानते नहीं ? ओह, मैंने अपने घर में उसके लिए विचित्र काम ढूँढ़ा है। उसके अतिरिक्त, मैं जहां जाता हूँ मिगनन मेरे साथ चिपका रहता है।"

ठीक ऐसा ही उसने कहा था। हां, अन्त में वह मुझसे मिली और उसने मुझे निमन्त्रित किया। उसने कहा 'सुन्दर अर्धरात्रि में, थ्येटर के बाद आना।' बैंकर प्रसन्नता में घूर कर देख रहा था। उस ने अपनी आँखें चलायीं और जोड़ दिया "और तुम ? क्या वह बाहर आ गया ?" अपने प्रत्येक शब्द पर वह एक विशेष महत्व देता गया।

"तुम्हारा आशय क्या है ?" फाचरी ने, न समझते हुये प्रश्न किया। "वह मेरे लेख की प्रशंसा करना चाहती थी तभी वह मुझे बुलाने के लिये मेरे यहाँ आई थी।"

"हां, हां, तुम लोग भाग्यशाली हो। तुमको पुरस्कार मिलते ही हैं। वैसे वह कौन है जो कल का खर्च उठा रहा है ?"

पत्रकार ने हाथ खोले और कहना चाहा कि कोई अभी तक ढूँढ़ा नहीं गया था। तभी वैन्डेव्रेस ने स्टेनियर को बुलाया जो काउन्ट विस्मार्क को

जानता था। मैडम डु० जौन्कोय पूरी तरह सन्तुष्ट हो चुकी थीं। अन्त में वे कह रही थीं—

"उसने मेरे मस्तिष्क पर एक बुरा प्रभाव छोड़ा था। मैं सोचती थी वह शरारती की तरह देखता था। जो हो मैं यह मानने को तैयार थी कि वह बड़ा हँसोड़ है। वह उसकी महान् सफलता को प्रकट करेगा।"

"कोई आश्चर्य नहीं," बैंकर ने जो फ्रैंकफोर्ट का एक ज्यू था और जिसके भूत की सी हँसी थी, कहा।

इस बार ला फेलो साहस बटोर कर अपने भाई से प्रश्न करने के ध्यान में उसके पीछे-पीछे गया और कान में बोला—"तो क्या किसी स्त्री के यहाँ कल रात को भोज है? वह किसके यहाँ है? ह: वह किसके यहाँ है?"

फाचरी ने संकेत किया कि कोई सुन रहा है। उनको रहस्य गुप्त रखना ही चाहिये। द्वार फिर खुला और एक बूढ़ी स्त्री अन्दर आयी जिसके पीछे एक युवक था जिसको कि पत्रकार ने पहचाना। वह वही कालेज वाला ताजा ताजा छोकरा था जिसने ब्लान्ड-वेनस की प्रथम रात्रि को, 'क्या यह सिहरन उत्पन्न करने वाली नहीं है,' वाली प्रसिद्ध बात कही थी। वह अब तक चर्चा का विषय बना हुआ था। उस महिला के आगमन ने कमरे में एक गड़बड़ी उत्पन्न कर दी। काउन्टेस सेबीन ने अपनी कुर्सी से शीघ्रता में उठकर उसका स्वागत किया। उसने उसके हाथ पकड़ लिये और अपनी 'प्यारी मैडम हगन' कहकर उसे सम्बोधित किया।

अपने भाई को कुछ विस्मित होते देखकर, ला फेलो ने उसको प्रभावित करने के ख़्याल से कुछ शब्दों में स्पष्ट कर दिया। मैडम हगन एक तस्दीक करने वाले की विधवा पत्नी हैं और लेस फान्डेट नामक एकान्त स्थान में रहती हैं। आरलीन्स के निकट एक जमीदारी है जो उसके परिवार के पास बहुत समय से है। उसने पेरिस में भी एक छोटा सा स्थान ले रक्खा है जो सूये डि लेस फान्डेट्स में है जहाँ वह अपने पुत्र की, जो वकालत पढ़ रहा है, सब कुछ व्यवस्था करने के लिये कुछ हफ्ते रहती है। वह मारक्योनिस डि० चौरड की बड़ी दोस्त है और काउन्टेस के जन्म दिन पर वहाँ उपस्थित थी। काउन्टेस से

विवाह होने के पूर्व का बहुत सा समय उसने उसके पास बिताया था और वे अब भी एक दूसरे से बिछुड़ नहीं सकती थीं।

"मैं तुमसे मिलने के लिये जार्ज को लायी हूँ," मैडम हुगन सेबीन से कह रही थीं—"मैं सोचा करती थी कि तुम उसे पहले से बड़ा देखोगी।"

युवक अपनी चमकीली आंखों और सुन्दर घुँघराले बालों में लड़के की पोशाक पहने सुन्दर लड़की सा दिख रहा था। उसने काउन्टेस को अभिवादन किया। बिना किसी लजीलेपन के और एक स्मृति दिलाते हुये उसने कहा कि उसने उनके साथ एक बार बालडोर और शरताकाव नामक खेल, दो वर्ष पूर्व, लेस फान्डेट्स में साथ साथ खेला था।

"क्या फिलिप पेरिस में नहीं है ?" काउन्ट मुफट ने प्रश्न किया।

"ओह, नहीं।" वृद्ध स्त्री ने कहा—"वह अब भी बारगेज में सेना के साथ है।"

वह बैठ गयी और अपने लड़के के विषय में कहती रही जो एक बड़ा आदमी था जिसने शीघ्रता में सेना में भर्ती होकर अल्पकाल में ही लेफ्टिनेन्ट का पद पा लिया था। सब स्त्रियों ने सम्मानपूर्ण सहानुभूति से उसे घेर लिया। वार्तालाप और भी सुन्दर व सुरुचिपूर्ण होता गया। फाचरी उस भद्र महिला को वहाँ देखता रहा जिसका नाम मैडम हुगन था तथा जिसके बाल सफेद थे और जिसका मासूम सा भोला चेहरा था जो मीठी मुस्कराहट से सदैव विकसित रहता था। तब उसने अपने में बड़ा ही लज्जा का भाव इसलिये अनुभव किया कि उसने व्यर्थ ही एक क्षण के लिये काउन्टेस सेबीन पर सन्देह किया। जो हो, लाल रंग के रेशम में मढ़ी हुई बड़ी आराम कुर्सी पर काउन्टेस को पुनः बैठते देखकर वह आकर्षित हुआ। उसने सोचा, वहाँ बड़ा शोर है और उस पुराने ड्राइंगरूम में धुँये का ऐसा क्या कारण है कि वहां रहना ही कठिन है। निश्चित ही, वह काउन्ट नहीं था जिसने वैसी कामुक और विलासी काहिली को पनपने देने में सहायता की थी। कोई भी उसको एक प्रकार की परीक्षा ही मान सकता था कि चाह प्रारम्भ हो जावे और मनोरंजन भी बना रहे। तब उसकी विचार शृङ्खला अतीत में उलझ गयी। उसको बचा कर

कही गयी उस कहानी के विषय में जो एक शाम को एक रेस्टोरेंट के बन्द कमरे में कही गयी थी, वह सोचता रहा तभी से उसने चाहा था कि वह मुफट परिवार के सम्पर्क में आवे । वह उसमें मन का कामुक कौतूहल था जो जाग गया, क्योंकि एक उसका मित्र मेक्सिको में मारा गया था जो यह जानता था कि आया कुछ होना सम्भव था ? यह उसके देखने की बात थी । अन्त में उसमें कहीं कुछ था नहीं । किन्तु उसकी स्मृति उसमें एक अव्यवस्था व एक आकर्षण उत्पन्न कर रही थी, एवं उसके अन्दर के सारे विकार प्रकट हो रहे थे । वह बड़ी आराम कुर्सी उसे ढहती हुई सी दीख रही थी और उसकी पीठ का घुमाव उसमें आनन्द उत्पन्न कर रहा था ।

"हाँ, तो क्या हम जावेंगे ?" ला फेलो ने प्रश्न किया, यह सोचकर कि जब वे वहाँ जावेंगे तो वह यह जान सकेगा कि उस स्त्री का क्या नाम है जो कल भोज दे रही है ।"

"थोड़ी देर में," फाचरी ने उत्तर दिया।

और तब उसने आगे जल्दी नहीं की, इसके विपरीत, उस निमन्त्रण का बहाना लेकर जिसके द्वारा वह वहाँ आया था, वह बैठा रहा । महिलायें एक ऐसी नौजवान लड़की के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रही थीं जो हाल ही में वैरागिन हो गयी थी । वह समारोह जो बड़ा चित्ताकर्षक था, पेरिस के समस्त फैशनेबिल व्यक्तियों को तीन दिन तक प्रभावित करता रहा । बेटोनिस डि० फाउगोरी की सबसे बड़ी लड़की ने कारमेल्टीज* को स्वीकार कर लिया क्योंकि यह उसके अन्तर्मन की बलवती पुकार थी । मैडम चैन्टेराऊ, जो फौउ-गोरी की दूर की बहिन लगती थी, बता रही थी कि उसकी माँ बेरोनेस ने विवश होकर अगले दिन उसे उसके बिस्तर पर पहुंचाया । वह भावुकता से इतनी ओतप्रोत हो रही थी ।

"मेरे पास एक विशाल जगह थी," लियोनायट कहती रही–'मैंने उसे बड़ा विचित्र सोच रक्खा था ।"

मैडम हगन ने उस गरीब माँ के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की । अपनी

---

*वैराग्य

लड़की खो देना कितना कष्टप्रद है। "मुझ पर यह अपराध लगाया जाता है कि मैं एक पुजारिन हूँ," उसने सरल व स्पष्ट रूप में कह दिया " किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपने उन बच्चों के सम्बन्ध में सोच न सकूं जो इस प्रकार के कठोर आत्मघात पर तुल जावें।"

"हां, यह बड़ी भयानक चीज है।" काउन्टेस बुदबुदाई और थोड़ी कांप गयी जो अब तक आग के सामने कुर्सी में और चिपक कर बैठ गयी थी।"

तब महिलायें उस विषय की लम्बी बहस में उलझ गयीं किन्तु उनके स्वर डूबे हुये थे, और कभी-कभी एक हलकी हँसी का शब्द बातचीत की गम्भीरता को रोक देता था। मेण्टलपीस पर लगे दो लैम्प जिन पर गुलाबी रंग के शेड लगे थे, प्रकाश की क्षीण रेखा, उन पर बिखेर रहे थे और वहाँ केवल तीन लैम्प और थे जो दूर-दूर फर्नीचर पर रक्खे हुये थे। वह बड़ा कमरा एक मधुर छाया में घिरा हुआ था। स्टेनियर उतावला हो रहा था। उसने फाचरी से उस छोटी स्त्री मैडम डि० चेजील्डस के घटनाचक्र को प्रकट किया। जिसको वह अपनत्व में लियोनायड के नाम से पुकारता था। वह एक छिछली स्त्री थी, और उसने अपने स्वर को—स्त्रियों की कुर्सियों के पीछे से धीमा करते हुये वह बात कही थी। फाचरी ने उसको हलके नीले रंग की साटन की पोशाक में देखा। वह एक कुर्सी के कोने पर बैठी हुयी थी जो देखने में बड़ी पतली-दुबली व लड़कों की भाँति निर्लज्जता में दबी सी बैठी थी और तब उसने अन्त में उसकी ओर कौतुकभरी दृष्टि से निहार कर मुँह फेर लिया। केरोलीन हेकेट के यहाँ कैसे व्यवहार करना चाहिए, यह वे भली प्रकार जानते थे, जिसका रहन-सहन स्थिरता व भव्यता का सा था और उसकी माँ के द्वारा अभी-अभी व्यवस्थित किया गया था। वह किसी लेख का अच्छा विषय हो सकता था। पेरिस वालों की कैसी अनोखी दुनियाँ थी। छिपे से छिपे ड्राइंग-रूम भी आक्रान्त हो रहे थे। मौन बैठा थ्योफायल वेनट मुस्करा कर प्रसन्न हो रहा था। वह अपने गन्दे दांत दिखा रहा था और प्रकट रूप में मृत काउन्टेस की वसीयत बना हुआ था। वह उसी प्रकार दिख रहा था जैसी अन्य वृद्धा स्त्रियां मैडम चेन्टेराऊ, मैडम डु० जेन्क्वाय और चार या पांच दूसरे भद्र पुरुष जो अपने

अपने कोनों पर बिना हिले-डुले जमे हुए थे। काउण्ट मुफट कुछ सरकारी अधिकारियों को ले आये जो ट्यूलरीज के रिवाज के अनुसार वहाँ का अनुरूपता को व्यक्त कर रहे थे। इनके अतिरिक्त, वहाँ के विभाग का अध्यक्ष कमरे के बीचोबीच अपने में डूबा बैठा था, जिसका चेहरा सफाचट था और जिसकी आंखें मन्द प्रतीत होती थीं और जिसने अपने कोट के बटन इतने कसकर लगा रक्खे थे कि प्रतीत होता था मानो वह हिलना-डुलना नहीं चाहता था। लगभग सभी युवक और अन्य व्यक्ति जो कुछ अभिमानी-सी प्रकृति के थे, मार्क्विस डि. चोरड द्वारा परिचित कराये गये, जिन्होंने अपने सम्बन्ध शासन सम्बन्धी व्यक्तियों से बना रक्खे थे और साम्राज्य से निकटता स्थापित होने के अनन्तर तथा कौंसिल आफ स्टेट का सदस्य होने के पश्चात् बढ़ाये थे। तब वहां रह गया ल्योनायड डि. चेज़ीलज, स्टेनीयर और कुछ अत्यधिक संदिग्ध व्यक्तियों का समुदाय, जो सब को प्रसन्न करने वाली वृद्ध स्त्री मैडम हगन में व्यस्त थे। फाचरी ने, जो इस क्षण भी अपने लेख के चक्कर को मस्तिष्क से ओझल नहीं कर पाया था, उसे काउण्टेस सैबीन का सेट कहकर सन्तोष किया।

"दूसरे अवसर पर", स्टेनीयर ने बड़े धीमे स्वर में कहना प्रारम्भ किया—"ल्योनायड ने अपने दस के नोट को मान्टाउबन के पास भेज दिया है। वह उस समय चेटाऊ डि. बेग्राडरीसील में रहती थी जो यहाँ से केवल दो मील की दूरी पर है और प्रतिदिन वह अपनी दो घोड़ों की गाड़ी में होटल डु-लामन-डु-ओर में, जहाँ वह ठहरा हुआ था, देखने आती थी। गाड़ी द्वार पर खड़ी रहती थी और तब ल्योनायड होटल में घण्टों रहती थी। वहाँ भीड़ एकत्र हो जाती थी और घोड़ों की प्रशंसा किया करती थी।"

वार्तालाप समाप्त हो गया और एक गहन विराम फैल गया। दो नवयुवक आपस में घुल-घुल कर बातें कर रहे थे। तब वे शीघ्र ही चले गये और वहाँ काउण्ट मुफट के पगचापों की मन्द ध्वनि, उनके इधर-उधर बारबार चलने से कमरे में प्रकट हो रही थी। उसके अतिरिक्त कुछ भी सुनाई नहीं दिया। लैम्प धीमे जल रहे थे। अग्नि बाहर निकल रही थी और उन व्यक्तियों की एक छिपी हुई गहरी छाया घिरी हुई थी। वे उस परिवार के प्राचीन

मित्र थे और उन कुर्सियों पर बैठे थे जो उनके द्वारा पिछले सौ वर्षों से व्यवहार में लाई जा रही थीं। बातचीत के दौरान में—मेहमानों ने जाना कि यह काउण्टेस की माँ थी, जिसकी दृष्टि विशाल होते हुए भी नीरस थी। काउण्टेस सेबीन ने तभी कहना प्रारम्भ किया—

"कैसे भी क्यों न हो, वहाँ ऐसी सूचना थी। ऐसा जान पड़ता था कि वह नवयुवक मर गया। यह भी कहा जा सकता था कि मोशियो डि. फाडगेरे ने विवाह की स्वीकृति कभी नहीं दी।"

"वहाँ कुछ और भी बड़ी-बड़ी बातें थीं जो कही जा रही थीं", ल्योन्यायड ने शोखी से कहा।

तब वह अपनी बात को स्पष्ट करने को मना करते हुए हँस दी। सेबीन ने, उसके विनोद से प्रभावित होते हुए अपना रूमाल अपने मुँह में लगा लिया। तब उस स्थान की गम्भीरता में घूमकर, वह हास्य फाचरी से टकरा गया। उसमें जैसे शीशे के टूटने की सी ध्वनि हुई। बिना किसी भेद के जैसे वहाँ कोई वस्तु करकरा गई। तब महिलाओं ने ऊपरी बातचीत प्रारंभ कर दी। मैडम डु. जोन्कोय ने विरोध किया। मैडम चेन्टाराऊ इतना भर जानती थीं कि एक विवाह पक्का किया गया था किन्तु इससे अधिक कुछ न हो सका। तब पुरुषों ने भी अपने विचार व्यक्त करने का साहस किया। कुछ देर तक वहाँ मतभेद का वातावरण फैला रहा—जिसमें कि उस कमरे के विभिन्न दृष्टिकोणों के व्यक्ति थे, बोना पार्टिस्ट और सरकारी अधिकारी जो सांसारिक चर्चा में घिरे हुए थे और एक दूसरे को कोहनियों से उभारते जाते थे। साथ ही वे बराबर बोलते ही रहे। आग, और अधिक ईंधन डालने के ध्यान से इस्टेलम भागी। वह जैसे एक भयङ्कर उत्तेजना थी। फाचरी हँस रहा था जैसे वह बड़े सन्तोष में हो।

तब क्यों वे भगवान् को वरण करती हैं, जब कि वे उसके चचेरे भाई से शादी नहीं कर सकतीं", वैन्डेब्रेस ने अपने दाँतों के बीच में कहा, जो उस विषय से पूर्णतः ऊब उठा था और तब वह उठकर फाचरी के निकट आ गया। "मेरे बच्चे ! क्या तुमने किसी स्त्री प्रेमी को अर्जिका होते हुए

देखा है ?" उसने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की। धीमे स्वर में उसने जोड़ दिया— "मै कहता हूँ, हममें से कल कितने होंगे ? वहाँ मिगनन होंगे, स्टेनियर होंगे और तुम, ब्लांच और मैं। और कौन ?"

"केरोलीन, मैं सोचता हूँ साईमोन होंगी, संगीत भी निश्चित् ही होगा। कोई ठीक से नहीं जानता। क्या तुम जानते हो ? ऐसे अवसरों पर, कोई भी बीस या तीस पौंड चलाने की आशा करता है।"

वैन्डेव्रेस, जो स्त्रियों की ओर देख रहा था, दूसरे विषय पर घूम गया। "मैडम डि. जोन्कोय पन्द्रह वर्ष पूर्व निश्चित् ही देखने-सुनने में बड़ी सुन्दर होगी। दीखता है निर्बल ड्रस्टेल्म पहले से अधिक बढ़ी हुई दिखाई दे रही होगी।"

किन्तु उसने अपने को रोका और भोज के प्रश्न पर लौट आया। "इस प्रकार की बातों में सबसे भद्दापन यही है कि सदैव वे ही औरतें मिलती हैं। हमको कुछ नई चाहिएँ। प्रयास करो और एक खोजो। ठहरो ! मेरे मन में एक ध्यान है ! मैं जाऊँगा और उस हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति से पूछूँगा कि वह उस लड़की को लावे, जिसके पीछे वह कल शाम को वेराइटी-थ्येटर में चिपका था।"

वह विभाग के प्रमुख के विषय में चर्चा कर रहा था जो कमरे के बीचोबीच बैठा ऊँघ रहा था। दूर से होते हुए उस नाजुक सम्बन्ध को देखकर फाचरी मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। वैन्डेव्रेस उस बलिष्ठ पुरुष के पीछे बैठा था, जो देखने में बड़ा शालीन प्रतीत हो रहा था। थोड़ी देर तक वे बहस करते दिखाई दिये। वे उस प्रकार की पूरी गम्भीरता दिखा रहे थे जो उस क्षण का गम्भीर प्रश्न बना हुआ था, जिसका ठीक-ठीक कारण यही था कि एक नौजवान लड़की कैसे साध्वी बन सकती है। तब काउण्ट यह कहते हुए लौटा—

"यह सम्भव नहीं है ! वह कसम खा सकता है कि वह आकर्षक है। मना करने में वह दृढ़ होगी। हाँ, मैं दावा कर सकता हूँ कि मैंने उसे लारीज में देखा था।"

"क्या ! आप लारीज में जाते हैं।" फावरी हँसते हुये बुदबदाया। आप अपने व्यक्तित्व को ऐसे स्थान पर ले जाकर निडरतापूर्वक खतरे में डाल देते हैं। मैं सोचता हूँ कि वे हम गरीब व शैतान आदमी ही हैं जो ऐसा करते हैं।"

"ओह, मेरे प्यारे बच्चे ! हर व्यक्ति को प्रत्येक वस्तु देखनी चाहिये।" तब वे दोनों अपने मुँह के अन्दर जीभ चलाते रहे और उनकी आँखें चमक गयीं। वे रुयेडिस मारटायर्स के खाने के स्थान का विवरण आपस में देते रहे जहाँ मोटी लारी पाईडेफर तीन फ्राँक प्रति व्यक्ति के हिसाब से, उन स्त्रियों को भोजन देती थीं जिनका भाग्य उनके विपरीत हो। छोटी स्थिति की स्त्रियां लारी के मुँह का चुम्बन लेती थीं। जब काउण्टेस ने उनकी ओर देखा तो वे एक या दो उड़ते शब्द सुनकर पीछे हट गये। वे दोनों बड़े ही अच्छे व अत्यधिक प्रसन्न दिख रहे थे। उन्होंने जार्ज हगन को निकट खड़े हुये नहीं देख पाया। वह उनकी बातें सुनकर अधिक शर्मीला व कठोर बना हुआ था, इससे गर्दन से कान तक वह पूरी तरह सुर्ख हो गया था। वह बच्चा शर्म व खुशी का एक विचित्र मिला जुला मिकश्चर था। चूंकि उसकी मां ने उसे ड्राइङ्गरूम में अकेला छोड़ दिया था अतः वह मैडम डि चेजिल्ज के इर्द-गिर्द घूम रहा था। केवल वही एक स्त्री वहाँ ऐसी थी जिसके विषय में वह सोच सका था कि कहीं कुछ है या नाना ही उसे कुछ दे सकती है।

गत रात्रि, मैडम हगन कहती गई, "जार्ज मुझे थ्येटर ले गया। हां हम, वेराइटी गये थे जहाँ मैं निश्चित ही दस वर्ष या उससे अधिक समय से नहीं गई थी। बच्चों को संगीत से प्रेम है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, उससे मुझे कोई विशेष आनन्द नहीं मिलता था, किंतु वह यों बड़ा खुश दिखाई देता था। वे आजकल विचित्र से खेल सामने लाते हैं। मैं स्वीकार करती हूँ, जो हो, मुझे गाने से विशेष दिलचस्पी नहीं है।"

"क्या ! मैडम, तुम संगीत को महत्व नहीं देतीं।" मैडम डि. जोन्क्वाय ने आकाश की ओर दृष्टि उठा कर कहा—"क्या यह सम्भव है कि हर आदमी को संगीत न रुचे ?"

वह बात साधारण रूप में ही कही गयी थी। वेराइटी थ्येटर में प्रस्तुत खेल के सम्बन्ध में किसी ने कोई चर्चा नहीं की, जिसको कि वे महान् मैडम हगन किंचित भी नहीं समझी थीं; और महिलायें यह बात जानती थीं किन्तु कुछ कह नहीं सकती थीं। वे अचानक भावोद्रेक में घिर गईं और वह था बड़े लोगों की स्वस्थ व प्रसन्नतायुक्त प्रशंसा। मैडम डु जोन्क्वाय बेबर की चिन्ता कर रही थीं। मैडम चेन्टेराऊ इटैलियन लोगों को महत्व दे रही थी। महिलाओं की वार्ता की स्वर-ध्वनि ढीली व मुरझाई हुई सी थी। कोई भी कह सकता था कि उस क्षण अग्नि-स्थान के समक्ष एकत्र वह समूह ऐसा लग रहा था जैसे किसी गिर्जाघर में एकत्र हुआ हो और जै किसी छोटे गिर्जाघर में समझदारी व गम्भीरता से केन्टीकल* को ध्वनित किया जा रहा हो।

"हमें देखने दो," वैन्डेव्रेस बुदबुदाया और फाचरी को कमरे के बीच में ले गया, "हमें निश्चित ही किसी भी प्रकार कल के लिये एक नई औरत ढूँढ़ ही लेना चाहिये। सोचो, हम स्टेनियर से पूछें ?"

"ओह स्टेनियर," पत्रकार ने कहा—"जब तक पेरिस उससे सब कुछ पा नहीं लेता तब तक स्टेनियर ऐसी किसी स्त्री को नहीं छूता है।"

वैन्डेव्रेस ने फिर भी उसकी ओर देखा। "रुको," उसने कहना प्रारम्भ किया—"किसी सुन्दर चमकीली जादूगरनी के साथ मैंने कल फोक्रामेण्ट को देखा था। मैं जाऊँगा और उसे लाने के लिये कहूँगा।"

और तब वह फोक्रामेण्ट की ओर बढ़ गया। जल्दी-जल्दी उनके बीच कुछ शब्दों का आदान-प्रदान हुआ क्योंकि उन्होंने बड़े बचाव से साथ महिलाओं के एकर्टस को संभालते हुये एक दूसरे से भेंट की थी जिससे उनकी बातचीत बड़े आराम के साथ एक खिड़की के निकट हो गयी। फाचरी अकेला रह गया और उसने उन महिकाओं के समुदाय के निकट जाने का निश्चय किया जो आग के सामने बैठी थीं और उसी समय मैडम डु जैन्काव कह रही थीं कि वे वेबर का संगीत कभी नहीं सुन सकतीं जब तक कि वे तुरन्त झीलें, जंगल, मैदानों

---

*भजन अथवा प्रार्थना।

में उभरता सूर्य व ओस में डूबा हुआ दृश्य न देखलें। तभी किसी हाथ के स्पर्श से उसका कन्धा हिल गया और किसी आवाज ने पीछे से कुछ कहा—

"यह तुम्हारे लिये उपयुक्त नहीं है।"

"क्या नहीं है ?" उसने पूछा और घूम कर ला फेलो को पहचाना।

"कल रात्रि में होने वाले भोज के लिये तुमको कम से कम मेरे निमंत्रण की भी व्यवस्था करानी थी।"

फाचरी उत्तर देने को प्रस्तुत ही था कि वैन्डब्रेस लौटा और उससे बोला—"ऐसा लगता है कि उस लड़की का फोक्रामेण्ट से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह वहाँ बैठे दूसरे पुरुष से सम्बन्धित थी। वह तो आ नहीं सकेगी। क्या भद्दी बातें ? किन्तु साथ ही मैंने फोक्रामेण्ट को चमका दिया है। वह प्रयत्न करेगा और पैलेस रायल थ्येटर की लुई को लावेगा।"

"मोशियो डि० वैन्डेब्रेस" मैडम चैन्टोराऊ ने उच्च स्वर में प्रश्न किया "क्या यह सच नहीं है कि रविवार को बागनेट का संगीत हुआ था।"

"ओह, महा अनर्थ, महापाप, मैडम" अपनी विचित्र कोमलता से आगे बढ़ते हुये उसने उत्तर दिया। तब स्त्रियों ने उसे रोका नहीं और वह आगे बढ़ गया और चुपचाप पत्रकार के कान में बोला—"मैं जाऊँगा और कुछ को फुसलाऊँगा। इन सब नवजवानों को छोटी छोटी औरतों को जानना चाहिये।"

तब वह ऐसा दिखा कि मुस्करा कर अलग-अलग हर कोने में जाकर लोगों से बातें करता रहा। वह अलग-अलग समूहों में घुसा, इधर-उधर कुछ शब्द टपकाये और तब लौट आया। वह अपना पलक मारता जाता था व दूसरे संकेत करता जाता था। ऐसा लगता था जैसे वह अपने सरल भाव में, सबको एक संकेत-स्वर दे रहा हो। उसकी बात एक से दूसरे पर घूम रही थी और कार्यक्रम निर्धारित किये जा रहे थे, जब कि महिलाओं का सहज संगीत उद्रेक तथा उसका तिरस्कार इन सब लुभावने प्रयत्नों के कारण आवेश में भी दब गया।

"नहीं, तुम अपने जर्मनों का नाम मत लो," मैडम चेन्टेराउ ने

दोहराया "संगीत मधुर है, वह प्रकाश है। क्या तुमने इस बरबेरा * में यही सुना है।

"मीना-मीना", ल्योनायड फुसफुसाई जो केवल ओपेरा-बफे * की हवा पियानो पर उड़ा सकती थी।

काउन्टेस सेबीन ने चाय का संकेत किया जो कमरे में इधर से उधर तक घूम गया जबकि उस मंगलवार को आगन्तुक विशेष न थे। एक सेवक द्वारा एक छोटी मेज साफ कर दी गई। काउन्टेस ने काउन्ट डि वैन्डेब्रेस का आँख के इशारे से पीछा किया। इसकी उस नेहभरी मुस्कान में उसके सफेद दाँत चमक गये; और जैसे ही काउन्ट उसके निकट आया उसने प्रश्न किया :

"तुम मोशियो डि० वैन्डेब्रेस के साथ क्या योजना बना रहे थे ?"

"मैं, मैडम," उसने विनम्रता से उत्तर दिया, "मैं कोई भी ऊटपटाँग कार्यक्रम नहीं बना रहा था।"

"आह, लग रहा था तुम बड़े व्यस्त हो। देखो, तुमको कुछ काम भी आना चाहिये।"

उसने एक एलबम उसके हाथ में थमा दिया और कहा कि इसको पियानो पर रख आओ। साथ ही उसने फाचरी को सूचना देने का ध्यान किया कि गालनेने, वहाँ रहेगी जिसकी गर्दन व कन्धे सर्वाधिक सुन्दर हैं, और मेरिया ब्लान्ड भी रहेगी जो० 'फोलीज ड्रामारिक्स थ्येटर में प्रथम बार अवतरित हुई है। जैसा भी हो ला फेलो ने उसको हर कदम पर टोकने का प्रयत्न किया। ऐसा उसने इस आशय से किया कि उसे भी निमन्त्रण मिल जावेगा। अन्त में उसने अपने को सामने प्रस्तुत कर दिया। वैन्डेब्रेस ने उसे तुरन्त घेर लिया। उसने केवल यह वचन देने के लिये उसे बाध्य किया कि वह क्लारिस को लावेगा किन्तु जब ला फेलो ने कुछ सन्देह की दृष्टि से देखा तो वह बोला, "किन्तु मैं तुम्हें बुला रहा हूँ। इतना पर्याप्त है।" तब उसने उसे शान्त कर दिया।

---

* एक प्रकार का संगीत   * संगीत का दूसरा स्वरूप

इस पर भी उसको बड़ी प्रसन्नता होती यदि उसे यह ज्ञात हो जाता कि जिसके मकान में यह भोज आयोजित किया गया है उस स्त्री का नाम क्या है ? किन्तु काउन्टेस ने वैन्डेन्रेस को बुलाते हुये पूछा कि इंग्लैन्ड में चाय किस प्रकार बनायी जाती है ? वह अक्सर वहाँ रहता है, और घुड़दौड़ों में, जिनमें उसके घोड़े रहते हैं सम्मिलित होता है। उसके अनुसार केवल रूसी लोग ही यह जानते हैं कि चाय कैसे बनायी जाती है; और उसने उनके तरीके को बताया। वह बोलते समय अधिक चिन्तामग्न था अतएव अपने को रोकते हुये उसने प्रश्न किया, "और मारक्युस, तो क्या हम उन्हें नहीं देख पायेंगे ?"

"क्यों, हाँ; मेरे पिता ने निश्चित वचन दिया था" काउन्टेस ने उत्तर दिया। 'मुझे अब कुछ उलझन हो रही है। उनके काम ने उन्हें रोक लिया होगा।"

वैन्डेन्रेस कुछ समझदारी से हँस दिया। उसको भी इस बात में सन्देह हो रहा था कि वह कौन सा काम है जिसमें मारक्युस डि० चोरड फँस गये हैं। उसने एक अत्याकर्षक मुखड़े के सम्बन्ध में ध्यान किया जिसको मारक्युस कभी-कभी गाँवों में ले जाता था। सम्भव है कि वे उसे भोज में भी ले जावें। जो भी हो, फाचरी ने सोचा कि यह समय उपयुक्त है जब कि वह काउन्ट मुफट को वह निमन्त्रण दे। अब देर हो रही थी।

"क्या तुम गम्भीरतापूर्वक कह रहे हो ?" वैन्डेन्रेस ने प्रश्न किया जो अब तक उसे केवल एक मजाक ही मान रहा था।

"बहुत गम्भीरता से। यदि मैं उनसे नहीं कहूंगा तो वह मेरी आँखें बाहर निकाल लेगी। यह उसकी एक सनक है। तुम जानते हो।"

"तब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, मेरे बच्चे।"

घड़ी ने ग्यारह बजाये। काउन्टेस और उनकी लडकी ने चाय वितरित की। वहाँ केवल घनिष्ट मित्रों के अतिरिक्त दूसरा शायद ही कोई हो। अतः बिस्कुट तथा प्याले और प्लेटें बेतकुल्लफी से दे दी गईं। महिलायें आग के सामने अपनी कुर्सियों पर बैठी रहीं। वे चाय की चुसकियाँ लेती रहीं और बिस्कुट टूंगती रहीं। बिस्कुटों को उन्होंने अपनी उंगलियों की पोरों से पकड़ रक्खा था। संगीत से हट कर वार्तालाप व्यापारियों पर टूटपड़ा। ब्वायमियर से

अच्छा कोई मिठाई वाला नहीं है और कैथेरिन से अच्छा कोई बरफ वाला। मैडम चैन्टेराऊ ने लेटिन विले को महत्व दिया। तब वार्तालाप धीमा पड़ गया और थकान ने एक प्रकार से सब को घेर लिया। स्टेनियर ने 'डिप्टी' पर पुनः आक्रमण करना प्रारम्भ किया जिसको उसने सोफे के एक कोने में घेर रक्खा था। मोशियो वेनट, जिसके दाँत सम्भवतः मिठाई से नष्ट हो गये थे जल्दी से कोई करारा केक निगल रहा था और चूहे की तरह हलकी आवाज निकाल रहा था जब कि विभाग के प्रमुख जिसकी नाक प्याले के अन्दर थी प्रकट हो रहा था कि सन्तुष्ट नहीं है। काउन्टेस, धीरे-धीरे एक व्यक्ति से दूसरे के पास जाती थी। बिना किसी को दबाव दिये हुए, वह कुछ सेकंड रुकती हँसती और आगे बढ़ जाती। आग की गर्मी ने उनमें एक आकर्षक रंग उत्पन्न कर दिया था और वह इस समय अपनी लड़की की बहन सी दिखाई दे रही थी जो उनके सामने बड़ी दुबली-पतली और भद्दी लग रही थी। जैसे ही वह फाचरी के निकट आयी, जो उसके पति व वैन्डेव्रेस से वार्तालाप कर रहा था, उसने देखा कि उन्होंने बातचीत बन्द कर दी है। वह रुकी नहीं, और आगे बढ़ गई तथा अपने हाथ का चाय का प्याला उसने जार्ज हगन को दे दिया।

"वह एक ऐसी स्त्री है जो चाहती है कि आप भोज में उसको प्रसन्न करें।" पत्रकार ने काउन्ट मुफट से मुस्कराते हुये कहा।

काउन्ट, जिसकी आकृति शाम के पूरे समय निरन्तर गहरी बनी रही कुछ विस्मित सा दिखाई दिया। किस महिला के विषय में वे कह सकते हैं ?

"क्यों, नाना !" वैन्डेव्रेस ने कहा जिससे कि उसकी चिन्ता तुरन्त दूर हो जावे।

तब काउन्ट और अधिक गम्भीर हो गया उसने कठिनाई से पलक झपकाया ही होगा कि एक टीस, न्युरेलीजमा* के झटके सी उनमें व्याप्त हो गयी। "किन्तु मैं उस महिला को नहीं जानता।" उन्होंने कहा।

---

* कंपकंपी

"ओह ! तब आइये। तब क्यों आप उसके यहाँ गये और क्यों उससे मिले ?" वैन्डेव्रेस ने कह डाला।

"क्या ? मैं उसके यहाँ गया था ? आह, हाँ, दूसरे दिन उस दरिद्र सहायक समिति के लिये गया था। मैं वह तो भूल ही गया। किन्तु मैं तो उसे जानता भी नहीं। मैं वह स्वीकार नहीं कर सकता।

और उसने अपनी गम्भीर मुद्रा प्रकट कर दी और यह प्रदर्शित किया कि उसके उस मज़ाक का प्रभाव उस पर कैसा कड़वा हुआ है ? उसके समान स्तर वाले व्यक्ति का स्थान ऐसी स्त्री की मेज़ पर कदापि नहीं है। वैन्डेव्रेस ने विरोध किया : वह केवल एक भोज है जो कुछ अभिनेत्रियों को दिया जा रहा है; कला हरेक के लिये मान्य है। किन्तु उसके आगे बिना कुछ सुने उसने फाचरी की ओर ध्यान दिया जो कह रहा था कि एक दावत में एक महाराजा और एक रानी का लड़का एक ऐसी स्त्री के ठीक आगे बैठे थे जो संगीत-भवनों में गाती थी, काउन्ट ने अन्तिम नकारात्मक उत्तर दे दिया। इससे विनम्र स्वभाव के होते हुये भी उसमें एक प्रकार से रोष का भाव प्रकट हो गया।

जार्ज व ला फेलो ने खड़े होकर एक दूसरे के सम्मुख चाय पीते-पीते अपने निकट होने वाली वार्ता के कुछ उड़ते हुये शब्द सुन लिये। "हल्लो तब वह नाना के यहाँ है,' लो फेलो ने कहा। 'मुझे वह मालूम होना चाहिये था।'

जार्ज ने कुछ नहीं कहा और उसका चेहरा अत्यधिक लाल हो गया। उसके चमकदार बाल सब बिखर गये और उसकी नीली आँखें दीपक की भांति चमक गयीं। वह मनोविकार जिसने कि उसे गत कुछ दिवसों से घेर रक्खा था उसको जला रहा था तथा उद्विग्न बना रहा था। अन्त में, उसे वह सब मिलता है जिसके स्वप्न वह देख रहा था। "बेहूदगी यह है कि मैं पता नहीं जानता हूँ" ला फेलो ने कहा।

"वह बाउलेवर्ड हाउसमैन, रूये डि. आई. आवेड और रूये पैरस्वायर के बीच में. तीसरी मंजिल पर है," जार्ज ने एक सांस में कह डाला; और जब दूसरे ने उसकी ओर चकित होकर देखा तो उसने बात जोड़ दी। वह अब

और अधिक रक्तवर्ण हो गया था और एक प्रकार से उथलपुथल व घमंड के स्वर में बोला, "मैं जा रहा हूँ, उसने आज प्रातःकाल मुझे निमन्त्रित किया है।"

तत्क्षण उस ड्राइंगरूम में एक हड़बड़ी सी मच गई। तब वैन्डेन्नेस व फाचरी ने काउन्ट से अधिक आग्रह नहीं किया। मारक्युस डि० चोरड आ गया था और प्रत्येक उसका स्वागत करने के लिये शीघ्रता कर रहा था। लगता था कि वह बड़ी कठिनता से आगे बढ़ रहा है। उसके पैर उसका बोझ सा उठा रहे थे। अन्त में वह कमरे के बीचोबीच स्थिर खड़ा हो गया। उसका चेहरा धुंये की तरह म्लान था और उसकी आंखें मिचमिची सी हो रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे किसी बड़ी अँधेरी जगह से वह सीधा चला आ रहा हो और लैम्पों की उस रोशनी में वह अंधा सा हो रहा हो।

"मैंने तो आप की प्रतीक्षा निराश होकर छोड़ ही दी थी, फादर" काउन्टेस ने कहा। "जब तक मैं कल आपसे कुछ जान न लेती मुझे बराबर उलझन बनी रहती।"

वह उस व्यक्ति की भाँति निरुत्तर होकर देखता रहा जैसे कुछ समझ ही न रहा हो। उसकी नाक, क्लीव शेव आकृति में बड़ी ऊँची दिखाई दे रही थी और लगता था जैसे वहाँ बहुत कुछ इकट्ठा है: जब कि उनके ओंठ डूबे हुये थे। उसको अत्यधिक त्रस्त देखकर, मैडम हगन, पूर्णतः द्रवित हो गईं, और दयार्द्र हो उठीं।

"आप बहुत काम करते हैं। आपको विश्राम करना चाहिये। ऐसी अवस्था में हमें अपने काम अपने छोटों को दे देने चाहिये।"

"काम, आह! हाँ, काम," उसने अन्त में लड़खड़ा कर कहा "सदैव काम का बोझ भारी होता रहता है।"

वह पुनः सँभल रहा था। अपने झुके हुये शरीर को उसने सीधा किया। सुपरिचित ढंग से अपना हाथ उसने अपने सफेद बालों पर फेरा। उसकी छोटी अलकें कान के पीछे तक ब्रुशकी हुई थीं।

"इतनी देर तक आपको क्या काम बना रहा?" मैडम डि०

क्योम ने प्रश्न किया । "मैं सोच रही थी कि वित्त-मन्त्री द्वारा दिये गये स्वागत में आप रुके रहे ।"

किन्तु काउन्टेस ने बीच ही में बात बनाकर कहा, "मेरे मित्र को पार्लियामेन्ट के किसी बिल पर मनन करना था ।"

"हाँ, पार्लियामेन्ट काँ एक बिल," उन्होंने कहा, "एक बिल ठीक वही । मैंने अपने को कमरे के अन्दर बन्द कर लिया था । यह कुछ कारखानों के सम्बन्ध में था । मैं चाहता हूं कि वे रविबार को बन्द रहा करें । यह बड़ी लज्जा की बात है कि सरकार इस ओर विशेष उत्साह नहीं दिखा रही है । गिरजा घरों में तो आज कल कोई जाता नहीं है । यह सब एक बड़ी विपत्ति है जिसमें सब नष्ट हो जावेगा ।"

वैन्डेब्रेस ने फाचरी पर दृष्टि दौड़ाई । वे दोनों मारग्युस के पीछे थे और उनके निकट ही खड़े थे । जब वैन्डेब्रेस उसे एक ओर ले जा सका और उसने उससे उस आकर्षक आकृति के विषय में प्रश्न किया जिसे ये देहातों में ले जाने की आदत डाले हुए थे, तो उस बुड्ढे आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ । सम्भवतः उन्होंने उसे बैरोनेस डेकर के साथ देखा हो– वैरोपले में जिसके मकान पर वे कुछ समय व्यतीत करते हैं । वैन्डेब्रेस, विरोध स्वरूप, अनायास पूछ बैठा, "मैं कहता हूँ आप थे कहां ? जनाब की कोहनियाँ मकड़े के जाल व प्लास्टर में लिपट रही है ।"

"मेरी कोहनियाँ" कुछ परेशान होते हुए वह बुदबुदाया । "क्यों । ओह ! कुछ धूल । मेरे यहाँ आते हुए वह कहीं लग गई होगी ।"

कुछ लोग जा रहे थे । वह अर्ध रात्रि के आस पास का समय था । दो नौकरों ने खाली प्याले व केक की प्लेटें उठा लीं । महिलाएं अब भी आग के सामने पहले से छोटे वृत्त में बैठी थीं और संध्या की समाप्ति की थकावट में वार्तालाप करती जा रही थीं । कमरा स्वतः उदासी में डूबा हुआ था तथा बड़ी-बड़ी परछाइयाँ दीवारों पर झूम रही थीं । तब फाचरी ने लौटने की बात प्रारम्भ की । अपितु पुनः उसकी आँखों ने काउन्टेस सेबीन की अनुमति चाही । उसने मेहमानों को देखा । वह अपनी चिरपरिचित कुर्सी पर बैठी थी और कुछ भी नहीं बोल रही थी । उसकी दृष्टि एक लकड़ी के टुकड़े पर

टिकी थी जो जल कर समाप्त हो रहा था और उसका चेहरा ऐसा सफेद व अभेद्य हो रहा था कि उसके सन्देह स्वतः उसमें उभर आये। उस चिह्न पर उभरे छोटे-छोटे बाल--जो उसके मुँह के कोने पर थे; आग की लपटों में सुनहले से लग रहे थे। रंग में वह पूरी तरह नाना की ही भाँति था। उस सम्बन्ध में फाचरी वैन्डेब्रेस से बिना फुसफुसाये न रह सका। यह बिल्कुल सही था कि उसने वह विचार इसके पूर्व कभी नहीं किया था; और तब वे नाना व काउन्टेन्स के बीच के साम्य को सोचते रहे। उन्होंने ठोढ़ी व मुँह में हलकी समानता ढूँढ़ निकाली किन्तु आँखों में कोई समानता न थी। वहाँ नाना अत्यधिक कोमल हृदय व मृदु व्यवहार वाली प्रतीत हुई; जब कि काउन्टेन्स नितान्त संदिग्ध थी। कोई भी कह सकता था जैसे एक बिल्ली सोई हुई है जिसके नाखून छिपे हुये हैं और जिसके पंजे कुछ रोषयुक्त होकर काँप रहे हैं।

"जो हो, वह एक सुन्दर नारी है," फाचरी ने व्यक्त किया।

वैन्डेब्रेस ने एक दृष्टि में उसके कपड़ों के अन्दर की नग्नता को देखना चाहा। 'हाँ', उसने कहा; "किंतु तुम जानते हो, मुझे उसकी जाँघों के विषय में बड़ा संदेह है। मैं दावा कर सकता हूँ कि उसके सम्बन्ध में बातचीत करना व्यर्थ है—वे उसके योग्य नहीं हैं।"

जैसे ही फायरी ने अपनी कोहनी हिलाई वह सामने को देख कर रुक गया जो अपने स्टूल पर उसके सामने बैठी थी। उसने अपना सिर उसको बिना देखे ही ऊँचा कर लिया था और सम्भव है उसने उसकी बात सुन भी ली हो। जो हो, वह सीधी व स्थिर बैठी रही उसके लड़कियों की सी शीघ्र बढ़ने वाली पतली गर्दन थी जिस पर एक भी बाल नहीं आया था। अतः वे कुछ पग आगे बढ़ गये और तब वैन्डेब्रेस ने कहा कि काउन्टेस धनवान महिला है।

इस समय आग के सामने बैठी महिलाओं ने अपना स्वर तीव्र कर लिया और मैडम डु जेन्ववाय यह कहते सुनी गयी, "मैं यह स्वीकार कर चुकी हूँ कि सम्भवतः काउन्ट बिस्मार्क में मनोरंजन का पुट है। साथ ही तुम्हारी यह बात भी कि उनमें एक बनावट है।" वे सबके सब फिर बातचीत के

पुराने विषय पर लौट आये।

"क्या ! फिर बिस्मार्क।" फाचरी बोला ! "ठीक, इस समय मैं सच-मुच चला जाऊँगा।"

"एक मिनट रुको", वैन्डेब्रेस ने कहा, "हमको काउन्ट से अन्तिम 'न' ले लेना चाहिए।"

काउन्ट सुफट उस समय अपने श्वसुर व अन्य गम्भीर आकृति वाले कवियों से वार्तालाप कर रहे थे। वैन्डेब्रेस उनको एक ओर ले गया और तब निमन्त्रण को अधिक जोर से कहने लगा। उसने कहा कि वह स्वयं भोज में जा रहा है। एक आदमी कहीं भी जा सकता है। जहाँ तनिक सा भी कौतूहल हो वहाँ जाने से कोई हानि नहीं है। काउन्ट ने नीची दृष्टि किये हुए और अपनी भंगिमा को बिना हिलाये डुलाये वह सब सुना। वैन्डेब्रेस ने देखा कि उसको झिझक हो रही है। तभी मारक्युस डि चोरड उसके निकट आया। जिसके मुँह पर प्रश्नात्मक चिह्न थे और जब उसे बात बताई गई और फाचरी ने उसे भी निमंत्रित किया तो उसने अपने दामाद की ओर छिपी दृष्टि से देखा। वहाँ कुछ देर निःशब्दता व घबड़ाहट का वातावरण सा बना रहा; किंतु उन्होंने एक दूसरे को प्रोत्साहित किया और निःसन्देह उस सबका अंत स्वीकृति ही होगा यदि काउन्ट, मोशियोवेनट को उस क्षण अपनी ओर देखते हुये न देख लेते। वह बुड्ढा छोटा सा आदमी हँसा नहीं। उसके चेहरे पर मुर्दनी सी छाई हुई थी उसकी आँखें पैनी व बर्मे की तरह तेज थीं।

"नहीं," उसने ऐसे निश्चित स्वर में कहा कि अब उसके आगे कुछ भी कहना शेष न था। काउन्ट ने तुरन्त उत्तर दे दिया।

तब मारक्युस ने उससे भी अधिक तेजी में मना कर दिया। वे नैतिकता की बातचीत करने लगे। उच्च वर्ग को एक उदाहरण उपस्थित करना ही चाहिये। फाचरी हँसा और वैन्डेब्रेस से हाथ मिला लिया। वह उसके लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकता था। अस्तु तुरंत चला गया क्योंकि उसे अपने समाचार पत्र के कार्यालय में भी देखना था।

"नाना के यहाँ, अर्ध रात्रि में, भूलना नहीं।"

ला फेलो भी जा रहा था और स्टेनियर ने अभी-अभी काउन्टेस

से छुट्टी ली थी। अन्य लोग उनके पीछे जारहे थे और वे ही शब्द आपस में गुनगुना रहे थे। प्रत्येक दोहरा रहा था: "नाना के यहाँ, अर्ध रात्रि में।"

जैसे ही उसने 'एंटीरूम' में अपना ओवर कोट उतारा, फाचरी ने पुन: वही ध्यान किया। जार्ज, जो अपनी माँ की प्रतीक्षा कर रहा था, द्वार पर खड़ा हो गया और सबको ठीक पता बताता गया—तीसरी मंजिल बाईं ओर का द्वार है। जाने के पूर्व फाचरी ने चारों ओर अंतिम दृष्टि दौड़ाई। वैंडेव्रेस ने स्त्रियों के बीचोंबीच कुर्सी पर आसन लगाया था और ल्यो-पाल डि० चेजील्ज से इठला रहा था। काउंट मुफट व मारक्युस डि. चोरड वार्तालाप में संलग्न थे जब कि महान् मैडम हगन अपनी खुली आँखों से सोने जा रही थी। इन स्त्रियों के पेटीकोट के पीछे 'मोशियो वेनर' अपने को अव्यक्त दिखाते हुए मुस्करा रहा था, और तभी उस बड़े और शाँत कमरे में घड़ी ने अर्ध रात्रि की घोषणा की।

"क्या ? क्या ?" मैडम डु० जोंक्वाय ने कहा "तुम सोचते हो कि काउंट विस्मार्क हमारे विरुद्ध युद्ध घोषित करेंगे और हम सबको मरवा डालेंगे। ओह ! यह बहुत है।"

वे सब, वास्तव में मैडम चेंटाराउ पर हँस रहे थे, जिसने यह वक्तव्य दिया था और जिसे उन्होंने आँरसे में सुना था जहाँ उनके मीत की एक फैक्टरी थी।

"सम्राट प्रतीक्षा करा रहे हैं। चलो बहुत है, काउंट मुफट ने अधि-कारी की सी शालीनता में कहा।

ये अंतिम शब्द थे जो फाचरी ने सुने। काउंटेससेबीन की ओर पुन: एक बार देखते हुए उसने द्वार बंद कर दिया। विभाग के प्रमुख से वह शाँतिपूर्वक बात कर रही थी और लगता था जैसे उस हृष्ट पुष्ट व्यक्ति की बातों में आकर्षित हो रही थी। बहुत संभव है उसने कोई कमी की हो किंतु वहाँ कोई अनैतिकता दिख नहीं रही थी। वह एक दीनता मात्र थी।

"तो तुम नहीं आरहे हो ?" ला फेलो ने हॉल के अंदर से पूछा।

और बाहर फुटपाथ पर जैसे ही वे एक दूसरे की ओर झुक रहे थे और नमस्कार कर रहे थे; उन दोनों ने पुन: दोहराया; "कल नाना के यहाँ...।"

४

प्रातःकाल से ही 'जो' ने समूचा स्थान ब्रेवान्ट के यहाँ से आये एक आदमी के सुपुर्द कर दिया था जिसके साथ बहुत से बेटे व सहायक थे। भोजन, गिलास, क्राकरी, मेज के कपड़े, फूल और कुर्सियाँ तथा स्टूल भी। ब्रेवांट को ही सब व्यवस्थित करना था। नाना को एक दर्जन तौलिये, सब खाने की अलमारियों और सामान को उलटने-पलटने पर भी अपने यहाँ न मिलते और अभी वह समय भी नहीं आया था कि वह अपने को पूर्णतः स्वीकार कर सकती हो क्योंकि अपना नया जीवन आरम्भ करने के अनन्तर—किसी रेस्टोरेंट में जाने के मजाक के बजाय उसने अपने यहाँ रेस्टोरेंट को बुलाना अधिक ठीक समझा था। अभिनेत्री के रूप में उसने अपनी सफलता का आनन्द प्राप्त करने के लिए एक समारोह का आयोजन किया जिसमें भोज दिया जाता था जिसमें, उसने सोचा था, कि वह सर्वत्र चर्चा का विषय बने। चूंकि खाने का कमरा अत्यधिक छोटा था, उन्होंने मेज ड्राइङ्ग रूम में लगाई थी। वहाँ एक मेज थी जिसमें पास-पास पच्चीस व्यक्तियों के बैठने की एक साथ व्यवस्था थी।

"क्या सब कुछ तैयार है?" अर्ध रात्रि को घर लौट कर नाना ने प्रश्न किया।

"ओह! मैं नहीं जानती," रूखेपन से 'जो' ने उत्तर दिया जो एक प्रकार से बिगड़ रही थी। "भगवान की कृपा है। मुझे उसमें कुछ करना नहीं है। वे रसोई में सब कुछ तोड़-फोड़ रहे है और हर जगह वही हाल है। इस सब के साथ ही मेरे पास पुरुषों की एक पंक्ति और है। वे दोनों फिर आये थे। अपने वादे पर ही मैंने उन्हें यहाँ से बाहर निकाल दिया।"

वह मैडम के उन दोनों पुराने भद्र व्यक्तियों के विषय में कह रही थी—वही व्यापारी और दूसरा वेलेचियन—जिनको निकालने का नाना ने दृढ़ निश्चय कर लिया था; क्योंकि अपने भविष्य के सम्बन्ध में निश्चिन्त होने के बाद, वह अब जीवन का नया पृष्ठ खोलना चाहती थी और ऐसा ही वह कहती भी थी।"

"यह सब क्या बेहूदगी है," उसने कहा—"अब वे यदि फिर आवें तो उन्हें पुलिस से धमकाना।

तब उसने डागनेट और जार्ज को बुलाया जो एंटीरूम में अपने ओवरकोट लटकाये बैठे थे। वे 'पैसेज डेस-पेनोरमाज' के स्टेज द्वार पर मिले थे और तब वह उन्हें अपनी गाड़ी में ले आयी थी। चूंकि कोई भी अब तक नहीं आया था अतः उसने उनको ड्रेसिंग रूम में बुला लिया और 'जो' ने उसे तैयार किया। जल्दी में अपनी चीजें बिना बदले ही, उसने अपने बाल संवारे तथा कुछ सफेद गुलाब बालों और अपनी पोशाक पर लगाये। ड्राइंगरूम का सारा फर्नीचर ड्रेसिंग रूम में भरा हुआ था। छोटी गोल मेजों का एक दराना, सोफे, हत्थेदार कुर्सियाँ, एक दूसरे के ऊपर रक्खी हुई थीं और नाना भी पूरी तरह तैयार थी। तभी उसकी स्कर्ट एक कील में फंस कर चर्र हो गयी। तब उसने रोष में बहुत लानत-मलामत की। ऐसी घटनायें उसके साथ निरंतर होती थीं। उसने गुस्से में अपनी पोशाक खींच डाली और उतार फेंकी। पोशाक मुलायम सफेद रेशम की बनी हुई थी, और बहुत सादी, सरल और सुंदर थी। उसने उसे 'सेमीज' की तरह ढाँप लिया था, किंतु दूसरी पोशाक अपनी पसंद की न देख कर जोर से चिल्लाते हुए, और यह कहते हुए कि वह एक चीथड़े लपेटने वाली सी लगेगी उसने उसे ही पहन लिया। डागनेट व जार्ज ने उस फटे हुए हिस्से को आलपीनों से टाँक दिया और 'जो' ने फिर उसके बाल संभाल दिये। वे तीनों उसके इर्द-गिर्द घिरे रहे—विशेष रूप से वह छोकरा जो अपने घुटनों के बल जमीन पर बैठा था और जिसके हाथ उसकी स्कर्ट में दबे हुए थे। अंत में वह शांत हो गयी। डागनेट ने उसे साँत्वना दी कि अभी अर्ध रात्रि से १५ मिनट ही अधिक

व्यतीत हुये हैं क्योंकि 'ब्लान्ड वेनस' के अंतिम दृश्य को बेहूदी ताल से समाप्त करते हुये व गीतों को घोटते हुवे उसने जल्दी ही अंत कर दिया था।

"वह, जैसे-तैसे, उन मूर्खों के लिये आवश्यकता से अधिक अच्छा था," उसने कहा—"तुमने देखा था ? आज रात वे सारे के सारे दर्शक जैसे रम पिये हुए से लग रहे थे ! 'जो' मेरी बच्ची, तुमको यहाँ प्रतीक्षा करनी होगी। सोने मत चली जाना, सम्भव है मुझे तुम्हारी आवश्यकता हो। ओ जिगो ! ठीक समय से ! वहाँ कोई है।"

वह शीघ्रता में कमरे के बाहर आई। जार्ज को उसने भूमि पर छोड़ा, जिसके कोट का नीचे का हिस्सा कालीन को छू रहा था। अगनेट को अपनी ओर देखते हुये वह शर्मा गई। जो भी हो, एक प्रकार का अपनत्व वे एक दूसरे में पाने लगे। उन्होंने अपनी नेकटाइयों को पुनः बड़े दर्पण के सामने ठीक किया और दोनों ने एक दूसरे के कपड़ों पर ब्रुश भी किया क्योंकि नाना को छूने के कारण उनके कपड़ों में सफेद पाउडर लिपट गया था।

"यह तो शक्कर की तरह है" इच्छाओं में डूबे हुए लड़के की भाँति हँसते हुवे जार्ज बोला।

रात के लिये किराये पर लाया गया एक नौकर अतिथियों को बरामदे में बैठा रहा था। वह एक संकरा स्थान था, जिसमें केवल चार आराम कुर्सियाँ ही शेष रह गई थीं जिससे लोगों के लिए अधिक स्थान मिल सके। निकट के ड्राइंग रूम से प्लेटों व क्राकरी के रखने-उठाने की आवाज़ स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी। एक चमकीला प्रकाश कमरे में फैला हुआ था। नाना ने प्रवेश करते हुये क्लारीस बेसनस को सामने देखा जिसको ला फेलो लाया था और एक कुर्सी पर बैठा हुआ था।

"क्या ? तुम पहले हो ?" नाना ने अपनी सफलता के अनंतर उसे बड़ी मृदुता से अपनाते हुये प्रश्न किया।

"जी हाँ, यह दूसरा कसूर है," क्लारीस ने उत्तर किया। "देर होने के लिये यह हमेशा डरता रहता है। यदि मैंने इसकी सुनी होती तो न मैं अपनी टोपी ही ले पाता न अपना मेक अप (शृंगार)ही कर पाता।"

वह नवजवान, जो नाना से प्रथम बार मिला था, झुका और उसका स्वागत किया तथा अपने भाई के सम्बन्ध में कहते हुये अपनी घबड़ाहट को सरलता से छिपाता रहा। किन्तु बिना सुने हुये और बिना जाने कि वह कौन है, नाना ने अपना हाथ मिला लिया और बढ़कर रोज मिगनन का स्वागत किया। उस समय वह बहुत दिव्य लग रही थी।

"आह, प्रिय मैडम, तुम्हारी कैसी कृपा है? मेरी कितनी अभिलाषा थी कि तुम हम लोगों के बीच में आओ।"

"मैं विश्वास दिलाती हूँ कि मुझमें भी कम आकर्षण न था" उसी प्रकार अपनेपन से रोज ने उत्तर दिया

"कृपा करके बैठिये। क्या कुछ मँगाऊँ?"

'नहीं, धन्यवाद। आह; मैं अपना पंखा भूल गयी। स्टेनियर दाहिने हाथ की जेब में देखो तो।"

स्टेनियर और मिगनन रोज के पीछे आ गये थे। बैंकर बाहर गया और पंखा लेकर लौट आया, जब कि मिगनन ने भाई-चारे के नाते से नाना का आलिंगन कर लिया और रोज से भी चुम्बन लेने को कहा। क्या वे सब थ्येटर में होने के नाते एक ही परिवार के नहीं थे। तब उसने अपनी आँख मारते हुये जैसे स्टेनियर को प्रोत्साहित किया, किन्तु वह रोज की गडी दृष्टि से दबा रह गया और नाना के हाथ को चूमने के आगे वह कुछ करने का साहस न कर सका। तभी काउन्ट डि वैन्डेव्रेस, ब्लान्च डि शिवरी के साथ आया। वहाँ झुककर नमस्कार और सद्व्यवहार का वातावरण निरन्तर बना रहा। नाना ने बड़े ढङ्ग से ब्लान्च को कुर्सी पर बैठाया। वैन्डेव्रेस ने हँसते हुये कहा कि फाचरी आदमियों की एक कतार लिये नीचे खड़ा है, क्योंकि सिपाही लूसी स्टेवर्ट की गाड़ी मैदान में नहीं खड़ी होने दे रहा है। लूसी स्टेवर्ट की बातचीत निकट के ऐन्टी रूम से आते हुए उन्होंने सुनी। वे सब सिपाही को गन्दा काला पहरेदार कह कर सम्बोधित कर रही थीं। किन्तु जब नौकर ने द्वार खोला तो वह बड़े आकर्षक ढंग से मुस्कराते हुये अन्दर आयी। उसने अपना नाम अपने आप पुकारा और नाना के दोनों हाथ पकड़ लिये। "जब से उसने देखा है वह उसे

प्यार करने लगी है," वह बोली और यह कि वह सोचती है कि उसमें अद्भुत कला है। नाना ने उस घर की मालकिन की भाँति अपने में उस सबसे एक अहंकार का अनुभव करते हुये, किन्तु बहुत ही उलझन में, उसको धन्यवाद दिया। ऐसा लग रहा था कि फाचरी के आगमन के अनन्तर वह पहले से ही उसमें लीन हो गयी है। शीघ्र ही, जब वह उसके निकट आयी उसने धीमे से प्रश्न किया, 'क्या वह आवेगा ?"

"नहीं, उसने मना कर दियाहै," अचानक हड़बड़ाते हुए शुष्कता से पत्रकार ने उत्तर दे दिया। काउन्ट मुफट के नकार को वह इसके पहले ही बताना चाहता था। उसने अपनी उस उदण्डता को देखा जिसके कारण वह स्त्री उदास हो गयी थी और तब उसने उसे सन्तोष देने के ध्यान से पुनः प्रारम्भ किया; वे आने में असमर्थ थे, उन्हें आज रात काउन्टेस को, अन्तर्देशीय-मन्त्रालय द्वारा आयोजित एक 'बॉल' में (नृत्य करने) जाना था।"

"ठीक है," नाना ने कहा। उसने सोचा था कि इस मामले में उसने स्वयं को कष्ट नहीं दिया है, "मैं इसके लिये आगे से तेज बनाऊँगी, मेरे बच्चे"

"इधर देखो," उसने कुछ असन्तुष्ट होते हुये कहा, "मैं ऐसे कामों की चिन्ता नहीं करता हूँ। अगली बार से यह सब लेबार्डेट को दिया करो।"

वे दोनों ही नाराज हो गये थे तथा उन्होंने अपनी अपनी पीठ एक दूसरे की ओर कर ली। उस क्षण मिगनन ने नाना के विरुद्ध स्टेनियर को भड़काया। जब वह अकेली थी तो उसने धीमे स्वर में नाना से कहा—एक ऐसे भले आदमी की तथा अच्छे प्रकार की सनक की तरह जो अपने किसी मित्र का भला करना चाहता हो, "तुम जानती हो, वह तुम्हारे प्रेम में मरा जा रहा है। वह केवल मेरी पत्नी से डरता है। क्या तुम उसे संभालोगी नहीं ?"

न समझ पाने का नाना ने बहाना किया। वह हँसी और रोज़ की ओर देखने लगी और तब बैंकर की ओर देखते हुये उसने कहा, "मोशियो स्टेनियर, तुम ठीक मेरे पास बैठोगे।"

किन्तु अट्टहास के स्वर ऐन्टी रूम से निरन्तर आ रहे थे। वहाँ फुसफुसाहट थी, और थे इठलाती बातचीत के मन्द स्वर—जैसे कि लड़कियों का

समूचा स्कूल वहाँ खोल दिया गया हो। अपने साथ पांच स्त्रियों को समेटे हुये, अचानक लेबोर्डेट आया। "उसका स्कूल" लूसी स्टेवर्ट बिगड़ कर उससे ऐसा ही कहती थी। वहाँ गागा थी नीले मखमल की पोशाक मे, जो उसके ऊपर बुरी तरह कसी हुई थी और देखने में बड़ी उभरी हुई सी लग रही थी। दूसरी करोलीन हेकेट थी जो सदैव काले धुँये की सी रेशमी पोशाक में रहती थी और जो सदा चेन्टिली के फीतों में बंधी होती थी। लिया डे टार्न थी जो सदैव की ही भाँति अत्यधिक अल्हड़ पोशाक में थी और तब भारी भर-कम 'ताता नैन' एक हँसोड़ व सुन्दर लड़की जिसकी छातियाँ दुधारी धाय की सी थीं, जिसकी हर व्यक्ति मजाक बनाता था। और तब अनामें मेरिया ब्लान्ड थी, पन्द्रह वर्ष की एक लड़की, ऐसी पतली-दुबली व ऐसी चालाक जैसे, लड़कों का अरब, और इधर तो जब से फोलीज़ ड्रामेरिन्स थ्येटर में प्रथम बार स्टेज पर उतरी थी तब से तो वह सब ओर जाने का एक रिवाज सा बन गयी थी। लेबार्डेट उन सबको एक ही गाड़ी में लाया था; और अब भी वे उस बात को याद करके हँस रही थीं कि कैसे वे आपस में भिची बैठी रहीं थीं और मेरिया ब्लान्ड तो एक के घुटनों पर बैठी थी। तब उन्होने अपने को संयत कर लिया। वे हाथ मिलाते हुये और इधर-उधर झुकते हुये अधिक सम्मानित लोगों की भाँति घूमती रहीं। गागा बिल्कुल बच्चों की तरह तमाशा करती रही और एक प्रकार से ठीक व्यवहार करने के प्रयास में लड़खड़ा गयी। जो हो, 'ताला नेने' के लिये जैसा कहा जा रहा था कि छै नगे काले हब्शी उसके साथ होंगे और नाना के भोज के समय वह उनकी प्रतीक्षा करेगी किन्तु उनको न देखकर अब वह बड़ी चिन्तातुर हो उठी थी। लेबोर्डेट ने उसे हंसनी कहकर सम्बोधित किया और कहा कि वह बातचीत में संयत रहे।

"और बार्डनोव ?" फाचरी ने पूछा।

"ओह, मैं सचमुच बड़ी परेशान हो रही हूँ," नाना चीखी, "वह हम लोगों में सम्मिलित न हो सकेंगे।"

"हाँ," रोज़ मिगनन ने कहा, उसका पैर पेशाब वाले दरवाजे में फस गया और उसने अपना गट्टा बुरी तरह से तोड़ लिया। अब तुम उसे अपना पूरा पैर बाँधे हुए तथा एक कुर्सी पर फैले हुये, गालियां देते देख सकते हो।"

तब, सब ने खेद प्रकाश किया। बिना वार्डनोव के कभी भी किसी ने अच्छा सपर* नहीं दिया था। जैसे भी हो सब को उसके बिना ही निबटाना चाहिये। वे सब किसी दूसरे विषय पर बातचीत कर रहे थे तभी एक ऊँची आवाज उन तक पहुँची।

"आगे क्या है ? आगे क्या है ? तो यही ढंग है कि मैं दफना दिया गया और भुला दिया गया।"

वहाँ एक शोर था जिधर सभी के सिर घूम गये। वह वार्डनोव था—जो बड़ा भारी भरकम और समूचा लाल दिख रहा था। उसका पैर सीधा खुला हुआ था जो साइमन केवीरोव के कंधे पर झुका हुआ था। इधर कुछ समय से, साइमन उसके स्नेह की देवी हो रही थी। एक बच्ची, जिसने अच्छी शिक्षा पाई थी, जो पियानो बजा सकती थी व अँगरेजी बोल सकती थी। वह गोरे रंग की और बड़ी सुन्दर थी; किन्तु कोमल इतनी थी कि वार्डनोव के बोझ से झुकी पड़ रही थी। वैसे वह निरंतर हँसती जाती थी और सेवा-भावी बनी हुई थी। यह देखते हुये कि उन्होंने तो जैसे उसकी एक तस्वीर बनायी हुयी है वह कुछ सेकन्ड तो स्थिर खड़ा रहा।

"अब कहो, क्या कहती है ? देखो मैं तुम्हें कितना स्नेह करता हूँ," वह कहता रहा, "सचाई यह है कि मैं डर रहा था कि मैं अत्यधिक ऊबा हुआ हूँ। तब मैंने अपने आप से कहा, "मैं जाऊँगा।" तब उसने कसम खाते हुये अपने आपको टोका भी, धत्।"

साइमन ने एक पग बहुत शीघ्रता में आगे बढ़ा दिया और तब वह जोर से फिसल पड़ा। वह उसे भला-बुरा कहता रहा और उसने उसे झकोर डाला। हँसी को बिना रोके हुये अपने सुन्दर चेहरे को वह ऐसे लटकाये खड़ी रही जैसे मारे जाने के डर से कोई जानवर, और अपनी पूरी शक्ति भर वह उसको—एक मांसल व छोटी हसीन लड़की की तरह सँभाले रही। जो हो अन्य लोग शीघ्र ही उसकी सहायता के लिये आगे बढ़े। नाना और रोज मिगनन एक हत्थेदार कुर्सी आगे घसीट लायीं जिसमें वार्डनोव बैठ गया जब कि

---

*रात्रि भोजन

अन्य स्त्रियों ने दूसरी कुर्सी उसके चोट खाये पैर के नीचे टिका दी, और जो वहाँ स्वयं उपस्थित थीं, उन सब अभिनेत्रियों ने विनयपूर्वक उसको चूमा। वह काँखने व आहें भरने लगा।

"घबड़ाओ नहीं! घबड़ाओ नहीं! कुछ भी हो, पेट ठीक है; जैसा कि तुम लोग अभी देखोगे।"

अन्य अतिथि भी आ गये थे और अब कमरे में हिलना-डुलना भी असम्भव था। क्राकरी और प्लेटों की आवाज बन्द हो गई थी; किन्तु अब ड्राइङ्ग-रूम से एक झगड़े का स्वर आ रहा था, जहाँ कि मुख्य बैरा उच्च-स्वर में बिगड़ रहा था। नाना बहुत अधीर हो उठी थी। अब कोई आने वाला भी न था, किन्तु 'सपर' अभी तक नहीं परोसा गया था। जार्ज को उसने यह देखने भेजा कि बैरे लोग क्या कर रहे हैं, तभी उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और उसने देखा कि कुछ अन्य व्यक्ति, महिलायें व पुरुष भी कमरे में अन्दर आये। अन्तिम आगन्तुकों में से वह किसी को नहीं जानती थी। 'तब क्या करना है'—यह बिना समझे उसने बार्डनोव, मिगनन व लेबार्डेट से पूछा। किन्तु वे भी उन्हें न जानते थे। तब, जब उसने काउण्ट डि वैन्डेव्रेंस से पूछा तो उसे यकायक स्मरण आया। वे सब वही नवयुवक हैं जिनको काउण्ट मुफट के यहाँ देखा गया था। नाना ने उसे धन्यवाद दिया। वह सब ठीक है, सब ठीक है। केवल उनको और भिचकर बैठना होगा। और तब उसने लेबार्डेट से कहा कि सात प्लेटें और लगवा दो। वह कमरे के बाहर जाने ही को था कि नौकर तीन आदमियों को लेकर अन्दर आया। 'ओह! इस बार तो यह बड़ा मज़ाक बना जा रहा है; किसी के लिये भी कोई स्थान नहीं रहेगा।' नाना अब आवेश में आ चुकी थी और तब अपनी विलक्षण भाव-भंगिमा में उसने कहा: "यह तो बहुत खराब बात है।" किन्तु जब उसने दो को और देखा तो वह खिलखिला कर हँस दी। उसने सोचा, यह तो बड़ा भारी मज़ाक है। सबसे बड़ा घाटा यह था कि वे जितना भी स्थान दे सकेंगे, आपस ही में देंगे। रोज़ मिगनन व गागा को छोड़कर सब खड़े थे और बार्डनोव चार में से दो कुर्सियों पर कब्जा किये हुए था।

वहाँ बातचीत की फुसफुसाहट निरन्तर गूँज रही थी, कभी-कभी बीच में धीमी व ऊँची बातों में हल्की जम्हाइयाँ प्रकट हो जाती थीं।

"मैं कहता हूँ, मेरे बच्चे", थार्डनोव ने कहा : "क्यों न हम लोग मौज के लिये उठ चलें। हम सब अब पूरे हैं, क्या नही हैं ?"

"ओह ! हाँ, निश्चय ही हम लोग सब पूरे हैं।" नाना ने उत्तर दिया।

उसने अपने चारों ओर देखा। किन्तु वह अचानक गम्भीर बन गई ! वहाँ अब भी एक संदिग्ध अतिथि आना शेष था, जिसके सम्बन्ध में उसने कुछ कहा नहीं था ; उनको प्रतीक्षा करनी ही होगी। कुछ मिनट बाद ही उन्होंने अपने बीच में एक लम्बे व्यक्ति को पाया, जो एक राज-पुरुष की सी आकृति का था और जिसके लम्बी सफेद दाढ़ी थी। सबसे विचित्र बात यह थी कि उसको किसी ने कमरे में घुसते नहीं देखा था। वह उस स्थान पर, सोने के कमरे से, उस द्वार से आया था जो आधा खुला छोड़ दिया गया था। काउण्ट डि वैन्डेव्रे स ऊपरी तौर से उस व्यक्ति को जानता था, क्योंकि उन्होंने बड़े संदेह से एक दूसरे से हाथ मिलाया था; किन्तु वह मुस्करा कर केवल स्त्रियों के ही प्रश्नों का उत्तर दे रहा था। तब केरोलीन हेकेट ने धीमे स्वर में कहा कि वह दावा कर सकती है कि वह कोई इङ्गलिश राज-पुरुष था, जो अगले दिन लन्दन वापस जा रहा था। वहाँ उसकी शादी होने वाली थी। वह उसको अच्छी तरह जानती है। यह चर्चा महिलाओं में घूम गई। केवल मेरिया ब्लान्ड ने अपनी ओर से यह विरोध किया कि वह एक जर्मन राजदूत है और उसके प्रमाण में उसने बताया कि वह उसकी एक स्त्री-मित्र का निकटतम परिचित है। पुरुषों ने कुछ शब्दों में ही उसे शीघ्रता में पहचान लिया। वह कुछ पैसे वाला सा लग रहा था। सम्भवतः उसी ने 'सपर' का बोझ उठाया था, ऐसा अनुमान था। ऐसा लगता भी था। ठीक है, तब जब भोज बढ़िया है. तब इस बात से क्या प्रयोजन ? हर प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति संदेह में बना रहा। वे अब उस पुराने भद्र पुरुष की पुण्यकीर्ति—जिसके सफेद दाढ़ी थी, भूल से रहे थे। तभी मुख्य बैरे ने ड्राइंग-रूम का द्वार खोलते हुए कहा :

"मैडम, खाना परोसा जा चुका है।"

नाना ने बिना उस वृद्ध-पुरुष की आकृति के परिवर्तन को देखे अथवा ध्यान किये हुये स्टेनियर का हाथ पकड़ा। वह अपने आप उसके पीछे चल दिया। सभी पुरुष व स्त्रियां किसी प्रकार खुश होकर घुम गये, उस प्रकार के समारोह का अनेक व्यापारियों के होते हुये भी सदैव अभाव का अनुभव करते हुये। एक लम्बी मेज कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक बिछी हुई थी और फिर भी वह मेज छोटी थी क्योंकि उस पर रक्खी प्लेटें एक दूसरे को छू रह थीं। चार शमादान जिनमें दस-दस मोमबत्तियाँ थीं उसमें जगमगाहट फैला रहे थे। उसमें से एक पालिशदार धातु था जिसके दोनों ओर फूलदान थे। वह एक जलपानगृह की विलसिता थी। प्लेटों पर कुछ चिन्ह नहीं थे किन्तु उसके चारों ओर सुनहली लाइनें थीं। प्लेटें निरन्तर व्यवहार के कारण टूटी व खरोंचेदार थीं, गिलास सभी भद्दे व साधारण प्रकार के थे। यह जल्दी में की गयी मकान की उसी प्रकार की गरमाहट थी जैसे यकायक भाग्य के पलटने पर, तब तक जब तक कि जीवन की कोई ठीक व्यवस्था न हो जावे। एक गैसेलियर की आवश्यकता थी। केन्डलबरा जो कि बहुत बड़ा था और जिसकी बड़ी कठिनाई से गन्ध पी जा सकती थी—की बत्तियाँ बड़ी धीमी, पीली व धुँधली सी रोशनी—मेवा की तश्तरियाँ, बीच के स्थानों तथा कांच की प्लेटों जिनमें फल, केक और दूसरी चीजें मुरब्बे इत्यादि थे, पर पड़ रही थी।

"आप जानते हैं," नाना ने कहा, "आप लोग जहाँ जैसे चाहें, बैठिये। यह अधिक प्रसन्नता की बात होगी।"

वह मेज के बीचोबीच खड़ी थी और वह अधेड़ आदमी जिसको कोई नहीं जानता था, उसकी दाहिनी ओर खड़ा था और स्टेनियर को उसने अपनी बांई ओर संभाल रक्खा था। कुछ अतिथि अपने आप बैठ रहे थे, जब कि गालियों का एक तूफान सा छज्जे से आ रहा था। यह वार्डनोव था, जिसको लोग भूल गये थे और दुनियाँ में उसे ही सर्वाधिक कष्ट उस क्षण इस बात में था कि वह कैसे अपनी दो कुर्सियों से उठे, शोर मचावे और उस पाजी लड़की साइमन पर

चिल्लाए जो औरों के साथ चली गई थी। स्त्रियों ने दयार्द्र होकर उसको सँभाला। सहारा लेते हुये वार्डनोव तुरन्त पधारे। एक तरह से केरोलीन, क्लारस, ताता नेने और मेरिया ब्लान्ड उसे पूरी तरह उठा कर लाई थी। उसको ठीक से बैठा देना भी एक सिरदर्द था।

"मेज के बीचोबीच नाना के सामने!" वे सब चिल्लाईं। "वार्डनोव को बीचोबीच। वह सभापतित्व करेगा।"

तब स्त्रियों ने उसे उसी स्थान पर बैठा दिया, किन्तु अपने पैर के लिये उसे दूसरी कुर्सी की आवश्यकता थी। दो स्त्रियों ने शरीर के उस जख्मी हिस्से को उठाया और सीधा रख दिया। इससे कोई परेशानी नहीं है, वह करवट से खा लेगा।

"इस सबको दफनाओ," वह कुड़कुड़ाया, "यह बुरी तरह तंग है। आह, मेरी नन्हीं प्रियतमाओ! तुमको अपने पापा की देखभाल ठीक से करनी चाहिये।"

रोज मिगनन उसके दाहिने और लूसी स्टेवर्ट उसके बायें थी। उन्होंने उसकी देखभाल का पूरा वचन दिया। औरों ने अब बैठने की जल्दी की। काउन्ट डि वाउन्डेवर्स लूसी और क्लारिस के बीच में बैठा; और फाचरी रोज मिगनन और केरोलीन हेकेट के बीच में। दूसरी ओर हेक्टर डि० ला० फेलो ने शीघ्रता में अपना स्थान गागा के निकट सुरक्षित किया। वह उनकी ओर मुँह करके बैठा, जब कि मिगनन जो स्टेनियर के बहुत पास बैठने को उकता रहा था केवल ब्लान्च के कारण ही उससे दूर था और तातानेने उसके बायें थी। उसके बाद लेवार्डेट था और मेज के अन्त में कुछ युवक व महिलायें, साइमन लिया दे हार्न, मैरिया ब्लान्ड सब आपस में घिचपिच बैठे थे; जिनमें कोई भी व्यवस्था न थी। वहीं नाना को देख देख कर डागनेट व जार्ज हूगन मुस्करा रहे थे व एक दूसरे के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहे थे। वहां एक प्रकार की उलझन सी थी क्योंकि दो व्यक्तियों को स्थान प्रदान हो सका था। पुरुषों ने उन्हें अपने घुटनों पर बैठालने का आग्रह किया। क्लारिस अपनी कोहनी तक नहीं हिला डुला सकती थी अत: उसने वैन्डेब्रेस से कहा कि वह उसे खिलावे। उसी वार्डनोव ने एक बड़ी जगह अपनी दो कुर्सियों से घेर रक्खी थी। तब एक प्रयत्न और किया गया। पुन: एक उथल पुथल हुई और

सब अन्त में प्रत्येक बैठ गया। इस पर मिगनन ने कहा—"वे ऐसे भिंचे हुए बैठे हैं जैसे किसी नली या पीपे में मछलियां।"

"एसपारेगस सूप—डेसलिगनैक सूप", बैरे ने कहा और प्लेटें अतिथियों के सामने रखता गया।

वाडेनोव प्रत्येक को यह राय दे रहा था कि वे 'डेसलिगनेक सूप' लें, तभी विरोध का शोर और रोष की भावना जाग उठी। द्वार फिर खुला और देर में आने वाले तीन और आये, इनमें एक स्त्री व दो पुरुष थे—जो कमरे में घुस आये। ओह, नहीं! यह अब सीमा के बाहर है। यह कभी नहीं होगा। नाना ने फिर भी अपनी कुर्सी छोड़े बिना अपनी आँखें घुमायीं और चाहा कि देखें वह उन्हें जानती भी है अथवा नहीं। महिला तो लुई वायोलेन थी, किन्तु उसने उन पुरुषों को कभी नहीं देखा था।

"मेरे प्यारे!" वैन्डेव्रे स ने कहा: "ये महानुभाव, मोशियो डि. फोक्रामेन्ट, जिनको मैंने निमन्त्रित किया है, मेरे मित्र हैं व जलसेना के एक अधिकारी हैं।"

फोक्रामेन्ट ने सरल भाव से झुककर जोड़ दिया: "और मैंने अपने एक मित्र को लाने का साहस किया है।"

"ओह! बहुत ठीक, बहुत ठीक", नाना ने कहा: "कृपया वहीं बैठ जाइये!" "आओ क्लारिस, थोड़ा ऐसे घूम जाओ; वहां तुम्हारे पास बड़ी जगह है। वहां, थोड़ी सद्भावना के साथ बैठो।"

वे सब पहले से भी अधिक चिपक कर बैठे तथा फोक्रामेन्ट एवं लुई ने अपने लिये मेज का छोटा कोना ठीक किया। हाँ, उसके मित्र को उसकी प्लेट से कुछ दूर बैठना पड़ा और तब वह अपने पड़ोसी के कन्धे पर से हाथ डाल कर प्लेट से सामान उठाता रहा। बैरों ने सूप की प्लेटें उठा दीं व दूसरी चीजें लाये। वाडेनोव ने ढेर के ढेर नाम पेश कर दिये और कहा कि वह प्रुलियर, काउण्ट और पुराने बास्क को भी ला रहा था। इस क्षण नाना और गर्वोन्नत हो गई। उसने तीक्ष्णता में कहा कि वह उनका ऐसा स्वागत करती कि उन्हें वह रुचिकर न होता। अगर उसे अपने उन कामरेडों की आवश्यकता

होती तो वह स्वयं उनको निमन्त्रित करती। नहीं, नहीं, उसे ऐमों की आवश्यकता कदापि नहीं है। पुराना बास्क सदा पिये रहता है। प्रुलियर तो आवश्यकता से अधिक बहमी है, और जहां तक काउण्ट का सम्बन्ध है, वह तो अपनी ऊँची कर्कश आवाज व उद्दण्डता के कारण सोसाइटी में बैठाने के काबिल नहीं है। तब, आप देखिये ऐसे बदमाश मटरगश्त पुरुषों के साथ—जो कभी अपनी जगह स्थिर नहीं रहते।"

"हाँ, हाँ, यह बिल्कुल सही है", मिगनन बोला।

ये सभी लोग मेज के चारों ओर अपनी शानदार पोशाकों में बैठे थे, जिनके चेहरे पीले पड़े हुए थे और जो जोश में रहने-सहने की परम्परा के कारण और भी निखने हुए दीख रहे थे। वह बुड्ढा व्यक्ति अपने भाव परिवर्तन में अत्यधिक सुस्थिर था और बड़ी गम्भीरता से मुस्कराता जाता था जैसे वह कूटनीतिज्ञों के किसी सम्मेलन का सभापत्वि कर रहा हो। वैन्डेव्रेस अपने दोनों ओर बैठी महिलाओं के प्रति इतना उदार था कि कोई भी यह सोच सकता था कि मानो वह काउण्टेस मुफट के यहाँ बैठा हो।

आज ही प्रातःकाल नाना ने अपनी चाची से कहा था कि कोई भी इससे अच्छे व्यक्तियों की चाह नहीं कर सकता। जो उनकी आदर्श व्यक्ति हों या पैसे वाले हों। वास्तव में वे व्यक्ति ही आते हैं, जो आजकल एक रिवाज से हो गये हैं। जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध है, वे आपस में अत्यधिक व्यवहार कुशल होती हैं।

उनमें कुछ—ब्लान्च, लिया, लुई—अपनी नीची गर्दन वाली पोशाक में आयी थीं। गागा का प्रदर्शन अच्छा था। अब जबकि किसी प्रकार सबने बैठने की व्यस्था कर ली थी; हँसी-मजाक व चख-चख बन्द हो गई थी। जार्ज यह न सोच सका कि आरलीन्स में मध्यम-वर्ग के व्यक्ति के यहाँ उसने इससे अच्छा भोजन भी कभी देखा था। वहाँ अब कोई बातचीत नहीं थी। वे व्यक्ति, जो एक दूसरे को नहीं जानते थे, खेल गौर से देखते रहे और स्त्रियाँ मौन बनी रहीं। जार्ज सर्वाधिक चकित था। उसने सोचा वे सब सुस्थिर हैं। उसका ध्यान था कि सम्भवतः वहाँ अधिकाधिक चुम्बन-आलिंगन का व्यापार तुरन्त प्रारम्भ हो जायेगा।

तब भोजन का दूसरा भाग परोसा जाने लगा जिसमें 'राइन काप' और 'वेन्सन' अंगरेजी प्रकार से पकाये गये थे तभी ब्लान्च काउण्ट स्नेह से बोली—"लूसी, मेरी प्रिय, रविवार को मुझे तुम्हारा आलीवार मिला था। अब तो वह कितना लम्बा हो गया है।"

"हाँ, तुम जानती हो। वह अब अट्ठारह साल का हो गया है," लूसी ने उत्तर दिया। "अब मुझे कोई जवान थोड़े ही कह सकता है। वह कल स्कूल गया था।"

उसका लड़का आलीवर जिसके सम्बन्ध में वह इतने गर्व से कह रही थी, जलसेना के एक स्कूल में पढ़ता था। तब वे सब बच्चों के सम्बन्ध में वार्तालाप करने लगी। सभी स्त्रियाँ उस क्षण बड़ी कोमल-हृदय वाली हो गयी। नाना ने बताया कि अब वह कितनी प्रसन्न है कि उसका बच्चा, उसका लुई अब उसकी चाची के यहाँ है। प्रतिदिन वह उसे देखने के लिये प्रातः ११ बजे जाती है, और वह उसे अपने साथ सुलाती है। उसका लूलू अपने कुत्ते के साथ खेलता रहता है।" तुम सब को यह देखकर हँसी आवेगी कि वे दोनों बिस्तर के अन्दर घुस कर लेट जाते हैं। किसी को यह ध्यान नहीं था लुई इतना तेज हो जावेगा।"

"ओह ! कल, ऐसा दिन मैंने कल देखा," अपना अवसर आने पर रोज मिगनन ने कहा "अपनी प्रसन्नतावश मैं कल चार्लस और हेनरी को स्कूल से लेने गई और शाम को उन्होंने थ्येटर जाने का अनुरोध किया। वे आनन्द से उछल गये और अपने नन्हे हाथों से तालियाँ बजाते रहे, " हम गागा को एक्टिंग करते देखेंगे। हम गागा को एक्टिंग करते देखेंगे ! "ओह ! वे बड़े ही हर्षित थे।"

मिगनन सन्तोष की हँसी हँस रहा था। आँखें पितृ-प्रेम से विह्वल होकर गीली हो गई थीं। "और प्रदर्शन के बीच में," वह कहता रहा "वे बहुत प्रसन्न थे। वे अन्य लोगों की तरह गम्भीर बने रहे। लगता था जैसे रोज को अपनी आँखों में उतार रहे हों और मुझसे पूछ रहे थे कि हमारी गागा के पैरों में कोई वस्त्र क्यों नहीं है।"

मेज के चारों ओर लोग अट्टहास कर उठे। मिगनन जैसे अपने पुत्र-स्नेह से गर्वोन्वित हो उठा। उसने उन छोटे बच्चों की प्रशंसा की। उसकी चिन्ता केवल इतनी ही थी कि उस बात की चर्चा प्रारम्भ करके अपने भाग्य को और उत्साहित करे; एक चालाक कमीने की भाँति कि रोज जो धन थ्येटर या इधर-उधर प्राप्त करती है वह और बढ़े। जिस समय उनका विवाह हुआ था और वह उस संगीत-भवन के बैन्ड का मुखिया था जहाँ वह गाने के लिये नियुक्त थी उस समय वे एक दूसरे को बेहद प्यार करते थे। अब वे केवल अच्छे मित्र रह गये हैं। वह सब उनके बीच निश्चित हो गया है। उसने अपनी सारी कला व सारे सौन्दर्य के द्वारा उतना तीव्र परिश्रम किया जितना वह कर सकी। उसने अपना वायोलिन बजाना-केवल उसको एक सफल अभिनेत्री व नारी देखने के लिये-त्याग दिया। किसी ने इतना सन्तुष्ट व गहरा जोड़ा पहले कभी नहीं देखा।

"बड़े लड़के की क्या अवस्था है ?" वैन्डेव्रे स ने प्रश्न किया।

"हेनरी केवल नौ वर्ष का है," मिगनन ने उत्तर दिया। "किन्तु ओह ! वह बहुत तगड़ा है।"

तब उसने स्टेनियर का भूसा उड़ाना प्रारम्भ किया जो बच्चों की कभी चिन्ता नहीं करता। उससे उसने बड़ी कड़ाई से कहा कि वह यदि पिता होता तो अपना भाग्य उस बेहूदगी में न पनपने देता जिस में वह डूबा हुआ है। जब बात हो रही थी तब वह ब्लान्च के कन्धों के बीच से दृष्टि दौड़ा कर घूरता जा रहा था कि बैंकर की नाना के साथ कैसी घुट रही है। किन्तु कुछ मिनट पूर्व से, रोज और फाचरी में घुट-घुट कर बातें होते देख कर वह चिन्तित हो उठा था। उसको भरोसा था कि रोज ऐसी बदतमीजी में अपना समय नष्ट नहीं करेगी। यदि उसकी जगह वह होता तो ऐसे कायर को बचाना। जिसकी एक उँगली में हीरे की अँगूठी दमक रही थी—उस हाथ से उसने सामने का गोश्त काट डाला। बालकों से सम्बन्धित वार्तालाप चलता रहा। ला फेलो गागा के अधिक नजदीक उत्पन्न सिहरन से लजाकर उसकी लड़की के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने लगा। उसको देखने का सौभाग्य उसे उसके साथ वेराइटी थ्येटर में

मिला था। "लिली बहुत ठीक है, किन्तु वह अभी भी खिलौना है!" यह सुनकर वह स्तम्भित रह गया जब उसने सुना कि वह केवल उन्नीस वर्ष की है। जब उसने यह जानने का प्रयत्न किया कि वह लिली को साथ क्यों नहीं लाई, तो गागा उसकी दृष्टि में और अधिक गहरी होती गई।

"ओह! नहीं! कभी नहीं, कभी नहीं!" उसने अत्यधिक आवेश में कहा: "केवल तीन मास पूर्व उसने स्कूल छुड़ाने को विवश किया। मैं उसका विवाह तुरन्त कर देना चाहती हूँ। किन्तु वह मुझे बेहद चाहती है। मुझे अनिच्छा से उसे अपने साथ रखना पड़ता है। आह! अपनी इच्छा के विपरीत, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ॥"

उसकी नीली पुतलियें, जिनके कि पलकों के बाल पक चुके थे; किसी नवयुवती को जीवन में कैसे सुव्यवस्थित होना चाहिये—यह व्यक्त करते हुए चमक रही थीं। यदि अपनी इस अवस्था में, उसने एक भी 'साज' नहीं बजा पाया है; तो इसका एक मात्र कारण यह है कि सुखकर विवाह इन सब से बहुत ऊँचा है। क्योंकि वह सदैव कार्य करती रही है। वह पुरुषों को अब भी उपकृत करती है, विशेष कर बहुत नये छोकरों को, जिनकी वह दादी हो सकती है। वह लो फेज़ो की ओर झुक गई, जो उस भरे हुए नग्न व प्लास्टर किये हुए से कन्धों के बीच लाल हो गया। इतना ही नहीं, वह जैसे दबोच दिया गया था।

"तुम जानते हो", उसने कहा: "यदि वह कोई गलती करती है, तो उसमें मेरा दोष कदापि नहीं है। किन्तु लड़कियाँ, अपनी नई उम्र में कैसी विचित्र होती हैं।"

मेज के चारों ओर जोर की चखचख चल रही थी। बैरे इधर-उधर, शीघ्रता में व्यस्त थे। इसके बाद की वस्तुयें—जिनमें नाना प्रकार के भोज्य-पदार्थ थे, परोसी गई।

मुख्य बैरा, जो शराब लाने को प्रस्तुत था, अब तक म्योरासाल्ट भेज चुका था और अब चेम्बरटिन तथा ल्योविले भेज रहा था। प्लेट्स के उठाने रखने की आवाज के बीच, जार्ज ने, पहले की अपेक्षा अधिक विचित्र होकर,

डागनेट से पूछा कि क्या सब स्त्रियों के बच्चे होते ही हैं; और तब वह, उस प्रश्न से आनन्दित होता हुआ तत्सम्बन्धी कुछ बातें बता गया।

लूसी स्टेवर्ट नार्दर्न रेलवे के एक पोर्टर की लड़की थी, वह मूलतः इंगलिश थी। वह उन्तालीस वर्ष की थी और उसके घोड़े का सा सिर था, किन्तु उसकी अत्यधिक प्रशंसा की जा सकती थी। चाहे जितना खर्च हो, पर वह कभी मरने वाली न थी। वह वहाँ उपस्थित नारियों में सर्वाधिक मौज वाली थी और अपनी विजय की गणना में तीन राजकुमार व एक ड्यूक विकीर्ण कर चुकी थी।

केटोलीन हेकेट, बोर्डेक्स में उत्पन्न हुई थी और एक बड़े दीन क्लर्क की लड़की थी, जिसकी परिस्थितियाँ अत्यन्त चिन्त्य थीं और जो शर्म में ही मर गया था। उसको एक ठोस मस्तिष्क वाली माँ प्राप्त होने का सौभाग्य मिला था, जो प्रथम तो एक वर्ष तक उसके लिये दुष्कर बनी रही और निरीक्षण काल व्यतीत करती रही तदनन्तर मातृत्व प्रेम ने पुत्री के भावी सम्पन्नता के सुस्वप्नों ने उसे अपना लिया। पुत्री, चौबीस वर्ष की व बड़ी शुष्क प्रकृति की थी। किन्तु जिसने बाजार में सर्वाधिक रूपवती नारी का सम्मान पा रक्खा था और जिसका भाव कभी बदलता न था। माँ, जो कि अत्यधिक व्यवस्था-चतुर स्त्री थी, हिसाब-किताब को राई-रत्ती ठीक रखती थी, जिससे लाभ-हानि का पता चल सके। वह अपने संमूचे निवास-स्थान व व्यवस्था को स्वयं सँभालती थी। वह तिमंजिले पर था और जहाँ उसने दर्जीगीरी का भी एक व्यापार चला रक्खा था, जिससे लड़की के लिये बड़ी भव्य व आकर्षक पोशाक व उनके अन्दर के कपड़े भली भाँति बनते रहते थे।

जहाँ तक ब्लान्च डि. शिवरी का प्रश्न था, उसका मूल नाम जैकोलीन बाडडू था और जो एमीएन्स के निकट एक गाँव से आई थी। उसका बनाव व स्वरूप बड़ा भव्य व आकर्षक था, किन्तु वह बड़ी उद्दण्ड व अत्यधिक झूँठी थी। वह कहती थी कि उसके बाबा एक जनरल थे। उसकी अवस्था बत्तीस

वर्ष कदापि नहीं थी। अपनी माँसलता व मोटापे के कारण वह रूसी लोगों में खूब प्रचलित थी।

तब डागनेट ने जल्दी-जल्दी औरों के विवरण दे डाले। क्लारिस बैसनस, सेन्ट-आडबीन सूर मेरे से एक महिला द्वारा पेरिस लाई गई थी और दाईखाने की आया के काम पर नियुक्त की गई थी, किन्तु उसके पति ने उसे बरबाद कर दिया और उसका एक नया जीवन प्रारम्भ हो गया।

साइमोन केबीरोच, फाबर्ग-सेन्ट-एन्टोईन के एक फर्नीचर के व्यापारी की लड़की थी और 'गवर्नेस'* होने के ध्यान में एक उच्च शिक्षालय में शिक्षा प्राप्त कर चुकी थी।

मेरिया ब्लान्ड और लुई बायोलेन एवं लिया डे हार्न सब सड़कों पर खदेड़ी गई थीं। किन्तु ताता नेने, बीस वर्ष की अवस्था तक दरिद्र चेम्पेन में जानवर चराती रही। जार्ज, उन स्त्रियों को निरन्तर देखता व ये बातें सुनता रहा और उस प्रकार के नग्न चित्रण से अत्यधिक उद्विग्न व चकित होकर अपने कान के छिद्रों को तृप्त करता रहा। जब कि उसके पीछे खड़े बैरे निरन्तर "फैटेन्ड फुलेट–फिलेट आफ सोल" पुकारते रहे।

"मेरे बच्चे", डागनेट ने अपने अनुभव का लाभ देते हुए कहा: "मछली मत लेना! इतनी रात में उसका भोजन ठीक नहीं है। केवल लोविले ही लेना। यह कम कष्टदायक है।"

मोमबत्तियों की गर्मी तथा तश्तरियों से उठते धुएँ व मेज पर रक्खी अन्य वस्तुओं से वातावरण अत्यधिक भरा-भरा व अशान्त हो रहा था। वहाँ चारों ओर बैठे अड़तीस व्यक्ति श्वाँसावरोध का अनुभव कर रहे थे। बैरे अब तक उदासीन हो चुके थे। कालीन के ऊपर, जिस पर जगह-जगह चिकने धब्बे पड़े हुए थे, भद्दे ढङ्ग से मटरगश्ती कर रहे थे। भोजन अभी भी सरल भाव से चल रहा था। महिलायें अपने भोजन से जैसे झगड़ सी रही थीं और आधा प्लेटों में ही छोड़ रही थीं। केवल ताता नेने ने बिना कुछ छोड़े, सब कुछ खा लिया था। अर्धरात्रि के पश्चात् इतनी देर में भूख मरी हुई सी थी और

---

*व्यवस्थापिका।

पेट की दशा अस्त-व्यस्त हो रही थी। नाना के निकट बैठे वृद्ध महाशय ने सारी प्लेटें —जो उनके सम्मुख उपस्थित की गईं—लेने से इन्कार कर दीं। उसने केवल एक भरी चम्मच सूप लिया और अपने सामने की खाली प्लेटों को निरन्तर देखता रहा। रह-रह कर संदिग्ध जम्हाइयाँ चारों ओर उठ रही थीं। थोड़ी-थोड़ी देर में कुछ अतिथि अपनी आँखें बन्द कर लेते, तथा कुछेक के चेहरों पर मुर्दनी सी छाई हुई थी। जैसा वैन्डेव्रेस ने कहा, वहाँ बीहड़ सुस्ती चल रही थी। उस प्रकार का भोज—जो मनोरंजनार्थ हो, कभी नहीं चुनना चाहिये। अन्यथा, यदि सब भले व्यवहार के हों तो कोई भी जाकर भले समुदाय में भोजन कर सकता है। वहाँ किसी को इतनी उदासी न दीखेगी। यदि प्रतिक्षण चीखता हुआ वार्डनोव वहाँ न होता तो लग रहा था जैसे सब सो जाते। और वह काहिल जानवर जिसका पैर सँभाल कर रक्खा हुआ था, अपने को सुल्तान की सी तेजी में भरा दीख रहा था तथा अपने निकटस्थ बैठी लूसी व रोज को अपनी व्यवस्था के लिये घेरे हुए था। उन्होंने कुछ किया नहीं अपितु वे केवल उसे देखती रहीं और उसको खिला-खिला कर चीजें चखाती जाती थीं, तथा निरन्तर देखती जाती थीं कि उसकी प्लेटें व गिलास बराबर भरे जा रहे हैं। इस पर भी वह शिकायत किये बिना नहीं मान रहा था।

"मेरा भोजन मेरे लिये कौन ठीक करेगा? मैं अपने आप नहीं कर सकता। मेज मुझसे एक मील दूर है।"

प्रतिक्षण साइमोन उठती और वहाँ जाकर खड़ी हो जाती और उसको रोटी व सब्जी तोड़-तोड़ कर देती! वह क्या सोने का है! यही आकर्षण महिलाओं को बना हुआ था। वे बार-बार बैरों को बुलातीं और कह कर उसकी प्लेटें भरवा देतीं। तब साइमोन बार-बार उसका मुँह खोलती तथा रोज व लूसी उसकी प्लेट, छुरी व काँटा बदलती जातीं। वह उस सबको बड़ा भला कह रहा था और अपने आनन्द को व्यक्त करते हुए वह बोला: "वहाँ, तुम ठीक हो, मेरी लड़की! एक औरत किसी और बात के लिये नहीं बनाई गई है।"

तब सब लोग जैसे जागते रहने का प्रयत्न करते रहे। वार्तालाप बहुत साधारण बना रहा। सन्तरे का शरबत अभी-अभी चारों ओर वितरित कर दिया गया था। नाना अपने अतिथियों की चेतना से दूर जा पड़ी थी अतः वह इस क्षण उच्च स्वर में बोलना प्रारम्भ कर उठी।

"आप जानते हैं स्काटलैंड के राजकुमार ने ब्लान्ड वेनस देखने के उद्देश्य से अपने लिये एक स्टेज बाक्स पहले से ही बुक कराया है। वे उसे प्रदर्शनी के समय आने पर देखेंगे।"

"मैं आशा करता हूँ कि सब राजकुमार उसे आकर देखेंगे," वार्डनोव ने अपने पूरे भरे हुये मुँह से कहा।

"रविवार को पर्सिया के शाह के आने की सम्भावना है," लूसी स्टेवर्ट ने कहा।

तब रोज मिगनन शाह के हीरों की चर्चा करने लगी। वह एक चोगा पहनता है जो बहुमूल्य रत्नों से जड़ा हुआ है। वह एक संगमरमर है, एक चमकता सितारा है और लाखों रुपयों की कीमत का है। और सभी महिलायें अपनी पीत आकृतियों व चमकती आँखों से लालच में डूब गईं और तब अपनी गर्दन उठा-उठा कर आने वाले अन्य राजाओं और सम्राटों की चर्चा करती रहीं। वे राज्यवैभव के ख्यालों में तथा एक रात में भाग्य का सितारा चमकने की भावनाओं में डूब गईं।

"मैं पूछती हूँ, माई डियर," वैन्डेव्रेस की ओर झुकते हुये, केरोलीन हेकेट ने प्रश्न किया, "रूस के सम्राट की अवस्था क्या है?"

"ओह! उसकी कोई उम्र नहीं है," हँसते हुये काउन्ट ने उत्तर दिया, "मैं विश्वास दिलाता हूँ, वहाँ तुम्हारा कोई चान्स नहीं है।"

नाना ने अत्यधिक बुरा मानने का बहाना किया। वार्तालाप अधिक कर्कश हो रहा था। अनेकों ने फुसफुसाहट के बीच उसका विरोध किया; किंतु ब्लान्च ने इटली के बादशाह से सम्बन्धित कुछ बातें बताना प्रारम्भ कर दीं, जिसको मिलान में उसने एक बार देखा था। वह कुछ बहुत सुन्दर न था किंतु स्त्रियों में सफल होने में वह बात उसे रोक न सकी; और तब फाचरी द्वारा यह

सुनकर उसे बड़ा खेद हुआ कि विक्टर एमानुऐल नहीं आयेंगे। लुई वायोलेन एवं लिया ने आस्ट्रिया के शाह को महत्व दिया। अचानक छोटी सी मेरिया वान्ड को कहते सुना गया," पर्शिया का शाह क्या सूखी हुई लकड़ी है। गत वर्ष मैं बदेन में थी। मैं काउन्ट विस्मार्क के साथ उससे बराबर मिलती रही थी।"

"आह ! विस्मार्क," साइमोन ने रोकते हुये कहा, 'मैं उसे जानती थी। वह बड़ा आकर्षक व्यक्ति है।"

"ठीक यही मैं कल कह रहा था," वैन्डेव्रे स ने कहा, "किन्तु कोई विश्वास नहीं कर रहा था।"

और काउन्टेस सेबीन के यहाँ की ही भाँति काउन्ट विस्मार्क की चर्चा देर तक होती रही। वैन्डेव्रे स उन्हीं बातों को दोहराता रहा जो उसने पहले कही थीं। एक क्षण को प्रत्येक मुफट के ड्राइङ्ग रूम का सा अनुभव करने लगा। महिलायें, केवल, बदली हुई थीं। उसी प्रकार वार्तालाप संगीत की ओर बदल गया। तब फोकामेन्ट ने उस पर्दा लेने की बात को कहा जिसके सम्बन्ध में सारे पेरिस में चर्चा चल रही थी। तभी नाना उस ओर आकर्षित हुई तथा मैडेमाइसले डि फाडगेरे के सम्बन्ध में जानने के लिये अनुरोध करती रही। ओह ! कमजोर छोटी चीज, जाना और उस प्रकार अपने आप दफन हो जाना। जो भी हो, वह उसकी अपनी इच्छा थी। मेज के चारों ओर बैठी महिलायें अत्यधिक प्रभावित हो रही थीं। बारम्बार वे ही बातें सुनकर जार्ज ऊब रहा था और तभी नाना की निजी आदतों के सम्बन्ध में उसने डागनेट से जानना चाहा, और तब वार्तालाप बुरी तरह से काउन्ट बिस्मार्क पर स्थिर हो गया। तातानेने ने लेबार्डेट की ओर झुक कर उसके कान में पूछा कि वह विस्मार्क कौन था जिसके सम्बन्ध में उसने कभी नहीं सुना। तब लेबार्डेट ने शुष्कतापूर्वक कुछ अविश्वसनीय गप्प उड़ानी प्रारम्भ कर दी : बिस्मार्क का भोजन कच्चा गोश्त है; अपने किले में जब वह किसी स्त्री का सामना करता है तो वह उसे अपनी पीठ पर लाद कर ले जाता है, केवल चालीस वर्ष का होते भी उसके बत्तीस बच्चे है।

"केवल चालीस वर्ष का और बत्तीस बच्चे।" ताता नेने ने विस्मित होकर भी सन्तुष्ट होते हुये कह डाला। "तब वह बड़ा बूढ़ा दिखाई देने लगा होगा।" और जब सभी अट्टहास कर उठे तो उसने सोचा यह मज़ाक उसी के ऊपर है तभी उसने शीघ्रता में जोड़ दिया, "तुम कितने बदतमीज हो। तुम केवल हँसी कर रहे थे······तब···मैं कैसे जान सकती थी ?"

गागा, प्रदर्शनी के विषय में वार्तालाप करती रही। अन्य महिलाओं की भाँति वह आनन्द ले रहीं थी और अपनी तैयारी कर रहीं थी। वह एक बड़ा सुहाना अवसर होगा जब सभी प्रान्तीय व विदेशी लोग पेरिस की ओर चले आवेंगे। तब अनुमानतः प्रदर्शनी के पश्चात् यदि सब कुछ ठीक रहा तो वह तो जूवीसी चली जावेगी; उस छोटे से मकान में जिस पर उसकी दृष्टि बहुत समय से है।"

"वहाँ क्या करोगी ?' ला फेलो ने पूछा, " वहाँ तो कोई उन्नति नहीं है। हाँ, केवल जिसको कोई प्यार करता हो उसे तो है।"

गागा कुछ कोमलता का अनुभव कर रही थी क्योंकि उस नवजवान का घुटना उसके घुटने से छू रहा था उसका चेहरा अधिक लाल हो रहा था। वह प्रतिक्षण तुतलाती जाती थी और अपनी दृष्टि में उसे आंक रही थी। वह एक छोटा सा व्यक्ति था जो बहुत मालदार नहीं था। ला फेलो ने उसका पता पूछ लिया।

"देखो," वैन्डेव्रे स ने क्लारिस से कहा, "मैं सोच रहा हूँ गागा तुमसे तुम्हारे हेक्टर को छीन रही है।"

"ओह ! मैं उस जानवर की चिन्ता नहीं करती," अभिनेत्री ने उत्तर दिया। "वह मूर्ख है। मैंने पहले ही तीन बार उसे अपने यहाँ से निकलवा दिया है। किन्तु, तुम जानते हो, जब ये छोकरे बुढ़िया के पास जाते हैं तो मुझे बड़ी परेशानी होती है।"

तब उसने उसका ध्यान, कुछ झुककर, ब्लान्च की ओर कराया, जो, भोज प्रारम्भ होने के समय से बड़ी उलझन में, किन्तु गर्वित सी, झुकी हुई बैठी थी और उस प्रमुख अभ्यागत वृद्ध पुरुष की ओर उसके निकट ही थी और कन्धों से आकर्षित कर रही थी।

"तुम्हारी भी अवहेलना हो रही है, बैरे", क्लारिस ने कहा।

उदासीन भाव से वॅन्डेब्रेस मुस्करा दिया। वह निश्चित ही, ब्लान्च के विजय-मार्ग में कोई बाधा पहुँचाने को प्रस्तुत नहीं है। वह प्रदर्शनी में अधिक आकर्षित है। स्टेनियर अपनी ही धुन में मस्त था। बैंकर अपनी अनेक प्रेम-कहानियों के लिये प्रसिद्ध था। वह भयङ्कर जर्मन 'ज्यू' जो भारी व्यापारी था और लाखों रुपये अपने हाथ से पैदा किये थे, जब कभी किसी स्त्री के पीछे पड़ता तो मूर्ख बन जाता था, और चाहता था कि सब कुछ उसे मिल जावे। यदि कोई थ्येटर नहीं जा सकता था तो किसी भी मूल्य पर वह उसे वहाँ ले जावेगा। बड़े ऊट-पटांग आँकड़े कहे जाते थे। अपने जीवन-काल में दो बार 'फेयर सेक्स' की भूख ने उसे बरबाद किया था। जैसा वॅन्डेब्रेस कहता था: 'स्त्रियों ने ऊसके खजाने की पेरियाँ खाली करके नैतिकता से बदला लिया है।' 'लैन्ड्स' के नमक के करखानों में एक लम्बे शेयर के आदान-प्रदान से किसी प्रकार बोर्स में अपनी स्थिति को वह सँभाल पाया था और अब विगत छः सप्ताह से मिगनन लोग उसके लाभ में खुर-खुर कर रहे थे। किन्तु अब खुले प्रकार से ये दावे हो रहे थे कि ये मिगनन उसे समाप्त नहीं करेंगे, अपितु नाना ने उसे अपने सफेद दाँत दिखा दिये हैं। एक बार फिर स्टेनियर फुसलाया जा रहा था और ऐसी अच्छी तरह से कि नाना के निकट बैठकर एक प्रकार से बहरे की तरह वह बिना भूख के ही खाता चला जा रहा था। उसका अन्दर का ओठ लटक रहा था और उसके चेहरे पर भद्दे दागों के निशान उभर रहे थे। नाना को केवल पैसा तय करना था। किन्तु वह कुछ जल्दी नहीं कर रही थी, अपितु उसके साथ खिलवाड़ कर रही थी। उसके कानों में हल्की हँसी के गुब्बारे फोड़ रही थी और कभी-कभी उसके भारी चेहरे पर आई ऐंठन और अकड़ को देखकर वह आनन्दित हो रही थी। यदि सचमुच वह अनागरिक जानवर काउण्ट मुफट जोसेफ में खेलने जा ही रहा है तो उसको रोक रखने का काफी समय है।

"लोकिले या चेम्बरिन ?" एक बैरा ने उस समय अपने सर को नाना और स्टेनियर के बीच में डाल कर कहा जब वह उस नवयुवती के कान में कुछ कह रहा था।

"ऐह् ! क्या !" उसने अचकचा कर कहा : "तुम क्या पसन्द करोगी, इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है।"

वैन्डेव्रेस ने लूसी स्टेवर्ट को कोहनी का इशारा दिया जो ऊटपटांग बातें करती पाई गई थी। वास्तव में जब किसी बात के लिये उससे कहा जाता था तो स्वभाववश वह शैतान की सी सूरत बना लेती थी। साथ ही, शाम से ही, मिगनन के व्यवहार ने तो उसे और भी बिगाड़ दिया था।

"तुम जानते हो वह जायगा और मोमबत्ती दिखायेगा।" काउन्ट से उसने कहा : "वह वही करने की आशा भी करता है जो उसने नौजवान जोनकियर के साथ किया था। तुम्हें जोनकियर की याद है जो रोज के साथ थी और जिसको लम्बे लारी का मोह था। मिगनन गया और जोनकियर के लिये लारी से सब ठीक ठाक कर दिया और तब वह उसे हाथ में हाथ डाले हुये रोज के पास लौटा लाया। वह ऐसे पति की भाँति काम कर रहा था जिसे नाच-रंग पर जाने की अनुमति दे दी गई हो। किन्तु इस बार वह सब कुछ नहीं चलेगा। नाना ऐसी नहीं है जिसको एक वार आदमी उधार दिया जाय और वह उसे लौटा दे।"

"किन्तु मिगनन ऐसे रोप में अपनी पत्नी को और क्या देख रहा है ?" वैन्डेव्रेस ने प्रश्न किया।

वह कुछ आगे को झुका और उसने देखा कि रोज़ फ़ाचरी के साथ बहुत मीठी बनी हुई है। तभी उसका पड़ोसी ऐसे संदिग्ध-रूप में कह रहा था, यह बात उसने उसे समझायी। वह हँसते हुये कह गया, "वह शैतान ! क्या तुम्हें द्वेष हो रहा है।"

"विद्वेष !" आवेशपूर्ण लूसी ने दोहराया : "आह ! ठीक है, यदि रोज़ लियोन को चाहती है तो मैं उसे सरलतापूर्वक दे सकती हूँ। वह कोई विशेष महत्व का नहीं। हफ्ते में एक गुलदस्ता, और वह भी सदैव नहीं। मेरे बच्चे, तुम देखो, वे सब थ्येटर की लड़कियाँ एक सी ही हैं।" रोज़ आवेश में रो पड़ी जब उसने नाना पर लियोन का लेख पढ़ा "और वह उससे पैदा कर रही है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं लियोन को अपने यहाँ से ठोकर मार कर

निकाल दूंगी, तुम दावा करते हो।" तब 'ल्वोकिले' की दो बोतलें लिये हुये पीछे खड़े बैरे को रोककर उसने कुछ कहा और तब अपने स्वर को मन्द करके उसने प्रारम्भ किया, "व्यर्थ की चर्चा को मैं यों तिरस्कृत नहीं करना चाहती। वह मेरा तरीका नहीं है। किन्तु साथ ही वह बड़ी गन्दी बिल्ली है। यदि मैं उसका पति होती तो मैं उसे नाचने पर मजबूर कर देती। ओह! यह उसको किसी प्रकार का सौभाग्य नहीं ला देगा। वह मेरे फाचरी को जानती नहीं है। वह एक गन्दा आदमी है जो स्त्रियों से केवल इसलिये चिपका रहता है कि दुनियाँ में किसी प्रकार उसकी स्थिति अच्छी हो जावे। वह एक अच्छा रूप है।"

वैन्डेव्रे स ने उसे शान्त करने की चेष्टा की। बार्डनोव रोज़ व लूसी द्वारा उपेक्षित हो जाने पर बिगड़ रहा था और चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था, "सभी पापा को भूखा प्यासा मरते देख कर प्रसन्न हो रहे हैं।" इस चीख ने एक अच्छा प्रभाव डाला। भोज लगभग समाप्त सा हो रहा था। सभी ने खाना बन्द कर दिया था। किन्तु सूप के बाद की शैम्पेन को अनेक अतिथि पी रहे थे उसने नशे की सुस्ती उत्पन्न कर दी थी। अब अपने आचरण में वे और स्वतंत्र होते चले जा रहे थे। स्त्रियों ने ऊटपटांग तरीके से अपनी कोहनियाँ मेज़ पर टिका दी थीं। ताजी हवा लेने के लिये, पुरुषों ने पीछे झुककर आराम पा लिया था और उनके काले कोट चमकदार रंगीन पोशाकों से लिपट रहे थे। स्त्रियों के नग्न कन्धे, प्रकाश की ओर मुड़ रहे थे और रेशम की सी चमक उत्पन्न कर रहे थे। वातावरण अधिक गरम था। बत्तियों का प्रकाश अब भी पीला पड़ा हुआ था और चतुर्दिक टेबिल से उठा धुंआ छाया हुआ था। कभी-कभी, जब घुंघराली अलकों की फुहार के बीच कोई सिर आगे को झुक जाता था तो किसी हीरे के बहुमूल्य आभूषण से चमकती प्रकाश की किरण 'चिगनन' को ओर झलका देती। बढ़ता हुआ आनन्द सबको घेर रहा था। आँखों में हँसी झलक रही थी और मोती सी श्वेत दंत-पंक्तियों में सर्वत्र मुस्कराहट दौड़ रही थी जबकि 'कंडलबरा' से उभरता प्रकाश शैम्पेन के चमकते प्यालों को बारम्बार झिलमिला रहा था। गहरे मजाक उच्च स्वर में फूंटे पड़ रहे थे, और प्रत्येक उन निरुत्तर प्रश्नों व कटाक्षों के बीच हिल डुल रहा था जो कमरे के एक कोने से दूसरे तक गूंज रहे थे। इस सबके साथ बैरे अत्यधिक

शोर कर रहे थे जैसे वे सोच रहे थे कि वे अपने रेस्टॉरेन्ट में हैं और जब बरफ व मेवे लाते थे तब एक दूसरे को धकेलते व गन्दी बातें करते जाते थे।

"मेरे बच्चो !" वार्डनोव चीखा। "यह मत भूलो कि यह एक प्रदर्शन है। चलो, शैम्पेन से सतर्क रहो।"

"ओह" फोक्रामेन्ट ने कहा : "मैंने संसार की सब प्रकार की शराब पी हैं—कुछ ऐसे तरल पदार्थ, जो पीते ही आदमी सीधे पार बोल जाता है। किन्तु, मुझ पर उनका किंचित भी प्रभाव नहीं होता। मुझे कभी नशा नहीं होता। मैंने प्रयत्न भी किया किन्तु वह भी व्यर्थ रहा।"

वह कुर्सी के पीछे होकर शराब पी रहा था तथा बहुत म्लान व शुष्क दिख रहा था।

"इसके साथ ही," लुई वायोलेन ने कहा, "अब छोड़ो। तुमने काफी ले ली है। यह बड़ा हास्यास्पद होगा कि शेष सारी रात मैं तुम्हारी नर्सिग करती रहूँ।"

नशे की हलकी झलक लूसी स्टेवर्ट के गालों पर झूम गई जो मांसलता की गुरगुराहट व कोमलता में झलक दे रहे थे जब कि रोज मिगनन के नेत्र रसीले हो रहे थे। उसमें चीख उठने की एक आह सी उठ रही थी, जैसे वह बड़े कोमल हृदय की बनती जा रही थी। तातनेने अधिक खा लेने के कारण सुस्त हो रही थी और अपनी उद्दण्डता पर स्वयं मूर्खतापूर्वक हँस रही थी। अन्य—ब्लान्च, कैरोलीन, साईमोन, मेरिया आपस में बातचीत कर रही थीं और एक दूसरे को अपनी गहरी बातें बता रही थीं—कोचवान से झगड़ा, पूर्व से ही व्यवस्थित गाँव की एक यात्रा और प्रेमियों की कुछ उलझी हुई कहानियां जब वे चुराई गई और लौटाई गई थीं। किन्तु एक नवयुवक, जार्ज के निकट लिया डे० तर्न के चुम्बन लेने के प्रयत्न में एक थप्पड़ खाकर सुनता रहा। "मैं कहती हूँ, तुम ! तुम मुझे अकेले छोड़ दो।" किन्तु इस दुतकार में भी एक आह्वान था। जार्ज जो अधिक पी चुका था व नाना को देख-देखकर अत्यधिक आवेश में आ रहा था—अपने मस्तिष्क में उत्पन्न उस विचार को पूरा करने के पहले अनेक बार झिझक रहा था कि वह धीरे से मेज़ के नीचे से सरक कर

नाना के पैरों में कुत्ते की तरह लिपट जावे। उसे कोई देखता भी नहीं और वह भी पूरी तरह चुप बना रहता। तब, डागनेट ने; लिया की इच्छानुसार, उस नवयुवक से कहा कि वह ठीक आचरण करे और तभी जार्ज अचानक उदास हो गया। वस्तुत: वह अभी-अभी अपने आप को झिड़क चुका था; यह उद्दण्डता है, यह बड़ा नीरस है, संसार में रहने को कुछ भी शेष नहीं है। डागनेट, इस पर भी उससे मसखरापन कर रहा था। उसने उसे एक जग भर पानी पिला दिया और उससे पूछता रहा कि जब तीन गिलास शराब उसके लिये इतनी अधिक है तब यदि किसी स्त्री के साथ वह अकेला छोड़ दिया जावे तो क्या होगा ?

"उदाहरणार्थ," फोकामेन्ट ने प्रारम्भ किया, "हवाना में वे लोग बेरी से एक प्रकार की स्पिरिट बनाते हैं जो निगलती आग की सी होती है। एक रात मैंने उसके लगभग दो 'पिन' पी लिये किन्तु मुझ पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। किन्तु आप लोगों को मैं इससे भी अधिक बता सकता हूँ। दूसरे समय कोरोमन्डेल के किनारे कुछ जंगली लोग हमारे लिये एक मिक्श्चर लाये जो स्वाद में पीपल और तूतिये का सा था किन्तु उसका भी मुझ पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। मुझे नशा होता ही नहीं है।"

कुछ क्षण पूर्व उसने ला फेलो को, जो उसके सामने बैठा था, अपनी ओर आकर्षित कर लिया। वह नाक भौं सकोड़ रहा था तथा असभ्य वार्ता कर रहा था। ला फेलो जो हलका होता जा रहा था अत्यधिक हिल-डुल रहा था और प्रयत्न करके गागा के निकटतम होने की चेष्टा कर रहा था। किन्तु उसकी उतावली में अधिक उलझन तब बढ़ी जब किसी ने उसका रूमाल गायब कर दिया। वह शराबी की सी जिद में पूछ-ताछ कर रहा था। वह अपने निकटवर्ती लोगों से पूछ रहा था और उनकी कुर्सियों तथा उनके पैरों के नीचे झुक-झुककर देख रहा था। जब गागा ने उसे शान्त करने की चेष्टा की तो वह बोला, "यह बड़ी बदतमीजी है। उसमें कोने पर मेरा निशान व मेरा नाम लिखा हुआ है। वह मुझे परेशान कर सकता है।"

"मैं कहता हूँ, मोशियो फेलोम्वायस, लेमाफ्वायस, मेफाल्वायस !"

फोक्रामेन्ट चिल्लाया जिसने उस नौजवान का नाम बिगाड़ कर आन चाहा।

किन्तु ला फेलो बिगड़ गया। उसने उसके बुजुर्गों को गालियां देना शुरू कर दीं। उसने फोक्रामेन्ट के सिर पर पीक उड़ेलने की धमकी दी। तब काउन्ट डि० वैन्डेव्रेस ने बीचबचाव किया और बताया कि फोक्रामेन्ट बड़ा मसखरा व्यक्ति है। और सचमुच, सब लोग हँस दिये। उसने उस नौजवान के इरादों को उलट दिया और शान्त होकर बैठ गया। तब वह आज्ञापालक बच्चों की भाँति खाने लगा। यह उसने तब किया जब उसके भाई ने उसे बिगड़ कर ऐसा करने के लिये कहा। गागा ने पुनः उसे निकटस्थ कर लिया। थोड़ी थोड़ी देर में केवल संदेह व उत्सुकता से वह रूमाल की खोज में औरों पर दृष्टिपात कर लेता था।

तभी फोक्रामेन्ट ने मजाक के ही मूड में लेबार्डेट पर आक्रमण किया। वह टेबिल के दूसरे सिरे पर बैठा था। लुई वायोलेन ने उसे चुप करने की चेष्टा की क्योंकि उसने कहा कि वह जब भी इस प्रकार औरों से झगड़ा करता है तो वह झगड़ा उसके लिये बड़ा हानिकर सिद्ध होता है। लेबोर्डेट को "मैडम" सम्बोधित करके उसे बड़ा आनन्द आ रहा था। उससे वह अत्यधिक प्रसन्न हो रहा था। वह निरन्तर वैसे ही कहता रहा जबकि लेबोर्डेट शुष्कता-पूर्वक प्रत्येक बार अपने कन्धों को हिलाकर यही कह देता "चुप बैठो, छोकरे। बेवकूफ मत बनो।"

किन्तु जब फोक्रामेन्ट दोहराता ही रहा और एक प्रकार से जब वह अपमानजनक हो गया, क्यों? यह किसी को पता नहीं था, तब लेबोर्डेट ने उत्तर देना बन्द कर दिया और वह काउन्ट डि० वैन्डेव्रेस से बोला, "अपने मित्र को चुप करने की मेहरबानी कीजिये, महानुभाव। मैं अपना मस्तिष्क विकृत नहीं करना चाहता हूँ।"

वह दो बार आमने सामने लड़ चुका था। उसका लोहा माना जाता था तथा सर्वत्र उसका स्वागत होता था। अतः फोक्रामेन्ट के प्रति एक आवेश सर्वत्र उठ रहा था! प्रत्येक यह सोचकर आनन्दित हो रहा था कि फोक्रामेन्ट

बड़ा मजा किया है; किन्तु इसका यह अर्थ नहीं होना चाहिये था कि संध्या की शांति ही नष्ट हो जावे। वैन्डेव्रे स के सलोने चेहरे पर गहनता उभर रही थी। तभी उसने लेबोर्डेट के पुरुषत्व को ललकारा। अन्य व्यक्तियों ने—मिगनन, स्टेनियर, बार्डनोव, जो बहुत दूर चले गये थे, टोका। वे इतने जोर से चीखे कि आवाजें दब गईं और वह वृद्ध व्यक्ति, जो नाना के निकटस्थ बैठने के कारण पूर्णतः भूला हुआ सा था, बेचारा शालीन और मन्द मुस्कान से, अपने चारों ओर होते हुए उस झगड़े को म्लान नेत्रों से देखता रहा।

"मेरी छोटी सी चकोरी अगर हमें यहाँ कॉफी मिल जावे", बार्डनोव ने कहा : "तब तो हमें बड़ा आराम मिले।"

नाना ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। भोज प्रारम्भ होने के पश्चात्, 'वह घर में है', यह वह सोच ही न पाई थी। वह इन सब लोगों में एक प्रकार से भूली हुई थी। अपनी तेज आवाजों और बैरों को बुलाने की चीखों ने उसे हैरान कर दिया था जैसे वे सब किसी रैस्ट्रां में बैठे हों और पूरी तरह आराम में हों। उसने स्वयं भी, घर-मालकिन के कर्त्तव्य को भुला दिया था और केवल हृष्ट-पुष्ट स्टेनियर में ही पूरी तरह खोई हुई थी। वह उसके निकट बैठकर बेहोशी में उमड़ा पड़ रहा था। उसने उसे सुना, एक मिनट के लिये अपना सिर झुकाया और तब मांसल हसीना के से उत्तेजक हास्य से वह मुस्करा दी। जितनी शैम्पेन उसने पी थी, उससे उसका रंग और निखर गया था तथा उसके ओठ तर हो रहे थे। साथ ही उसके नेत्रों में एक विशेष चमक उभर रही थी; और बैंकर उसके कन्धों की फुसलाहट-भरी प्रत्येक गतिविधि पर और अधिक कीमती प्रस्ताव प्रेषित करता जा रहा था; तभी जब वह अपना सिर घुमाती, तो उसकी गर्दन आमन्त्रण एवं कामोत्तेजना के उभार से और अधिक उठ जाती थी। उसने, उसके कान के निकट, एक छोटा-सा सुहावना दाग देखा और उस मखमली गाल ने उसे एक प्रकार से बावला बना दिया। थोड़ी-थोड़ी देर में नाना अपने अतिथियों का स्मरण कर लेती थी और तब वह अपनत्व की भावना का ऐसा प्रदर्शन करती कि लगता था वह आतिथ्य सत्कार भली प्रकार जानती है। भोज के अन्त

में तो वह पूर्णतः मदहोश हो रही थी। इससे वह अत्यधिक उदास हो गयी थी। शैम्पेन तुरन्त उसके सिर को पकड़ लेती थी। तभी उसके मस्तिष्क में एक विचार आया, जिसने उसे पूर्णतः झकझोर डाला। वह एक गन्दी चाल थी जो दूसरी स्त्रियाँ उसके प्रति खेल रही थीं, क्योंकि वे उसी के कमरे में दुराचरण कर रही थीं। ओह ! उसने उस बात को भली प्रकार समझ लिया था। लेबार्डेट के विरुद्ध फोक्रामेन्ट को उत्तेजित करने के लिये लूसी आँख मार रही थी; जबकि रोज, केरोलीन तथा और स्त्रियाँ पुरुषों में उत्तेजना उत्पन्न कर रही थीं। अब, वह उफान जो चारों ओर फैल रहा था, उससे किसी की बातचीत की आवाज सुनना भी असम्भव हो रहा था। वह प्रदर्शन ऐसा था कि लग रहा था, नाना के यहाँ भोजन करते समय जिसकी जो इच्छा हो वह वैसा आचरण कर सकता था। ठीक है ! वे लोग वैसा देखेंगे ही ! वैसे वह मदहोश अवश्य थी, किन्तु नाना ही उन सब में सर्वाधिक सुन्दर, मोहक व अत्यधिक संयत थी।

"मेरी छोटी-सी चकोरी", वार्डनोव ने दोहराया : "उनसे कहो कि वे कॉफी यहाँ प्रस्तुत करें ! मैं पैर के कारण यह चाहता हूँ।"

किन्तु नाना अनायास अपनी कुर्सी से कूद पड़ी और स्टेनियर व वृद्ध व्यक्ति से बोली जो आश्चर्य में डूबे हुए थे : "मैं भली प्रकार सीख व समझ गई हूँ। अब भविष्य में कभी भी ऐसा तुच्छ समूह में निमन्त्रित नहीं करूँगी।" तब खाने के कमरे वाले द्वार की ओर संकेत करते हुए उसने जोर से कहा : "सुनो, यदि तुमको कॉफी की आवश्यकता है तो थोड़ी-सी वहाँ अन्दर है।"

प्रत्येक उठा और शीघ्रता में खाने के कमरे की ओर नाना के रोष को बिना देखे हुए बढ़ा। शीघ्र ही वार्डनोव को छोड़कर, कोई भी ड्राइङ्ग-रूम में नहीं था; जो दीवार को पकड़कर सतर्कतापूर्वक उन शैतान छोकरियों को ऊट-पटांग कहता हुआ उस ओर बढ़ रहा था, जिन्होंने यामा की तनिक भी चिन्ता नहीं की क्योंकि अब तो उनका पेट भरा हुआ था। उसके पीछे बैरे पहले से ही, अपने प्रमुख के आदेश पर जो अपने निर्देशों को उच्च स्वर में व्यक्त कर रहा था, कपड़े हटा रहे थे। वे एक दूसरे पर गिरते-पड़ते शीघ्रता

कर रहे थे और जादू के तमाशे की तरह सारे दृश्य को प्रमुख दृश्य-निर्देशक के आदेश पर जैसे बिलीन कर रहे थे और मेज को वहाँ से हटा ले जाना चाहते थे। पुरुष व स्त्रियों को कॉफी पीने के बाद ड्रइंगरूम में ही लौटना था।

"शुक्र है ! यहां उतनी गरमी नही है।" गागा ने हल्की कँपकँपी के साथ खाने के कमरे में घुसते ही कहा।

खिड़की खुली रखी गई थी। उस मेज पर दो लैम्प जल रहे थे जिस पर कॉफी, कुछ शराब के साथ वितरित की गई थी। वहाँ कोई कुर्सी न थी अतः उन सबने कॉफी खड़े-खड़े ही पी। तभी दूसरे कमरे वाले बैरों की आवाजें और तेज हो गई। नाना वहाँ से गायब हो गई थी किन्तु उसकी अनुपस्थिति से किसी को कोई असुविधा नहीं हुई। बिना उसके भी वे सब कार्य करते रहे। वे अपने आपको सहायता करते हुये और अपनी इच्छानुसार साइडबोर्डों में चम्मचें ढूंढ़ते हुये जुटे थे। कई समूह बन गये थे। भोज के समय जो लोग दूर हो गये थे, अब एक दूसरे के निकट आ गये थे और अपने नेत्रों का आदान-प्रदान कर रहे थे, मुस्करा रहे थे अथवा स्फुट वार्तालाप में संलग्न थे।

"मैं कहती हूँ आगस्टस", रोज़ मिगनन ने कहा : "क्या, मोशियो फाचरी को आकर किसी दिन मेरे यहाँ दोपहर का खाना नहीं खाना चाहिये ?"

मिगनन ने, जो अपनी घड़ी की चैन से खेल रहा था, पत्रकार की ओर एक सेकंड घूर कर देखा। उसने सोचा रोज़ पागल हो गई है। एक अच्छे मैनेजर की भाँति उसे इस सब व्यर्थ के व्यय को रोकना होगा। केवल एक लेख के लिये, जो ठीक और अच्छा था, कोई स्वीकृति नहीं मिली किन्तु यह समझकर कि कभी-कभी उसकी पत्नी का अपना पृथक मार्ग होता है, और तब उसकी वैसी मूर्खता न रोक पाने के समय वह अपनी सहज स्वीकृति प्रदान कर देता है; अतः उसने स्वीकृति के भाव से कहा : "निश्चित, मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। तब मोशिये फाचरी, कल ही क्यों न आइये ?"

लूसी स्टेवर्ट ने, जो स्टेनियर व ब्लान्च से वार्तालाप कर रही थी, उस निमन्त्रण को सुन लिया। उसने अपना स्वर ऊँचा किया और वह वैकंर से

बोली "क्या अब यह सबकी एक सनक हो गई है ?" इनमें से एक ने मेरे 'पर्पी' को ही चुरा लिया। सचमुच अब क्या यह मेरा दोष है कि तुमने उसका तिरस्कार कर दिया है ?"

रोज ने अपना सिर घुमाया। उसकी आकृति उस क्षण बड़ी म्लान थी जब उसने घूर कर स्टेनियर को देखा। वह धीरे-धीरे अपनी कॉफी की चुसकी लेती गई और उसका समस्त रोष आग की लपट की तरह और उसकी आँखों में दबी चमक की तरह प्रकट हो रहा था। उस प्रसंग को वह मिगनन से अच्छा समझती थी। जान्क्वायर के उदाहरण को दोहराना अथवा पुनः प्रकट करना अब एक भारी मूर्खता थी। इस प्रकार की चीज अब दुबारा नहीं आ सकती। ठीक है; किन्तु चाहे जितनी हानि हो वह फाचरी को प्राप्त करेगी। भोजन के बाद से उसके प्रति उसके मन में एक अटकाव उत्पन्न हो गया था। दूसरे समय कैसा व्यवहार हो इसकी शिक्षा भी उसे मिलेगी।

"तुम लड़ने नहीं जा रही हो, मैं आशा करता हूँ ?" वैन्डेव्रेस आया और लूसी स्टेवर्ट से बोला।

"ओह, नहीं, तुम कभी डरना मत! अच्छा होता कि वह चुप हो जाती अन्यथा अब मैं अपने मन की बात का ज्ञान कराऊँगी।" तभी फाचरी को क्रोधावेश के स्वर में पुकारते हुये उसने जोड़ दिया, "मैं तुम्हारी चप्पलें घर भूल आई हूँ। वह कल तुम्हारे नौकर को मैं दे दूँगी।"

उसके सम्बन्ध में उसने हँसी करनी चाही किन्तु वह राज-रानी की सी हवा में तेजी से दूर हट गई। क्लारिस ने, जो दीवार के सहारे झुक कर सरलतापूर्वक *किर्सच का गिलास पीने के उद्देश्य से खड़ी थी, अपने कन्धे हिला दिये। एक व्यक्ति के प्रति कैसा बाह्य सम्बन्ध दिखाया जाता है! क्या यह रिवाज नहीं है कि जब दो स्त्रियाँ अपने प्रेमियों के सम्मुख एक साथ प्रकट होती हैं तो प्रत्येक

---

*किर्सच = एक पेय

यह प्रयत्न नहीं करती कि वह दूसरी का पीछा करे ? यह तो एक मानी हुई बात है। यदि उसने चुन लिया है तो हेक्टर के कारण उसने गागा की आँखें बाहर निकाल ली हैं। किन्तु छी: छी:। वह जरा भी चिन्ता नहीं करती है। तब ज्यों ही लॉ फेलो उसके निकट से निकला उसने उससे कहा, "सुनो ! लगता है तुम बहुत आगे बढ़कर उन्हें चाह रहे हो। क्या तुमको इसमें सन्तोष नहीं है कि वे अब पूरी तरह पकी हुई या तैयार हैं ? क्या तुम सड़ी हुई चाहते हो ?"

लॉ फेलो अत्यधिक अव्यवस्थित हो गया। वह हैरान था। क्लारिस को चिढ़ाते देख कर वह उठ कर संदेह की दृष्टि से देखने लगा। "कुछ बदमाशी नहीं," उसने कहा, "तुमने मेरा रूमाल लिया है। मेरा रूमाल दे दो।"

"रूमाल के साथ वह क्या गन्दगी है !" वह चीखी : "इधर देखो, ए बेहूदे ! मैंने वह किस काम के लिये लिया है ?"

"क्यों', संदिग्ध स्वर में उसने कहा "क्या मेरे रिश्तेदारों के पास भेज कर मुझे नीचा दिखाने के उद्देश्य से ऐसा किया गया ?"

इस तमाम समय फोकामेन्ट शराब में लीन हुआ था। उसने जैसे ही लेबार्डेट को देखा वह नाक-भौं सिकोड़ने लगा। वह औरतों से घिरा हुआ अपनी कॉफी पी रहा था और अनेक वाक्य, बेतरतीब कहता चला जाता था। जैसे—"घोड़े बेचने वाले का लड़का, किसी काउन्टेस की हरामी-औलाद जिसके कोई ठिकाना नहीं, और फिर भी हर समय पच्चीस लुई अपनी जेब में रखने वाला, साधारण कोटि की तमाम लड़कियों का गुलाम, ऐसा आदमी जो कभी बिस्तर पर जाता ही नहीं "

"नहीं, कभी नहीं ! कभी नहीं !" वह क्रोधित होकर बड़बड़ाने लगा। "मैं कुछ नहीं कर सकता; मैं सचमुच उसके मुँह पर थप्पड़ लगाऊँगा।"

उसने '*चैर्टेरुज का एक गिलास उपर उछाला। चैर्टेरुज उसे कभी अव्यवस्थित नहीं करती। "उतना नहीं" उसने कहा और तब उसने अपने अँगूठे का नाखून अपने दाँतों में भींच लिया। किन्तु अचानक, जैसे ही वह

*चैर्टेरुज=एक शराब

लैबार्डेट की ओर बढ़ रहा था, मृत की तरह पीला पड़ गया और साइडबोर्ड के सामने एक ही कदम में लुढ़क गया ! वह बुरी तरह नशे में धुत्त था। लुई वायोलेन बड़ी उलझन में थी। उसने कहा था कि उसका अन्त बड़ा बुरा होगा। अब सारी रात उसे सँभालना पड़ेगा। किन्तु गागा ने उसे सन्तोष दिया। उसने अधिकारी को एक अनुभवी स्त्री की सी दृष्टि से देखा और घोषित किया कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। ये महाशय बिना किसी अनहोनी घटना के बारह या पन्दरह घंटे गहरी नींद में सोवेंगे। अतः उन्होंने फ्रोकामेन्ट को वहाँ से हटा दिया।

"हल्लो ! नाना कहाँ है ?" वैन्डेव्रेस ने पूछा।

यह ठीक है, वास्तव में खाने की मेज से ही उठ कर वह गायब हो गई थी। अब उन्होंने उसके सम्बन्ध में सोचना प्रारम्भ कर दिया। प्रत्येक ने छानबीन की ! स्टेनियर अचानक अधिक उद्विग्न हो उठा और सम्मान-पूर्वक उस वृद्ध व्यक्ति के सम्बन्ध में वैन्डेव्रेस से प्रश्न करने लगा क्योंकि वह भी गायब था; किन्तु काउन्ट ने उसके संदेहों को शान्त कर दिया। उसने उस वृद्ध व्यक्ति को अभी-अभी जाते हुये देखा था। वह एक महत्वपूर्ण विदेशी था जिसका नाम व्यक्त करना व्यर्थ था। वह बहुत मालदार व्यक्ति था और सारे भोज का भार उठाने में जैसे बड़ा सन्तुष्ट था। तब, सभी नाना को भूल गये किन्तु वैन्डेव्रेस ने डागनेट का सिर द्वार पर देखा जो संकेत से उसे बुला रहा था। सोने के कमरे में उसने उस मकान की स्वामिनी को तख्ते सी सख्त बने बैठे हुये देखा। उसके ओठ सफेद हो रहे थे और डागनेट व जार्ज सामने खड़े थे। उनकी दृष्टियाँ घबड़ाई हुई थीं।

'तुमको क्या हुआ है ?" चकित होकर उसने प्रश्न किया।

उसने उत्तर नहीं दिया और न उसने अपना सिर ही घुमाया। तब उसने अपना प्रश्न दोहराया।

"मैं अपने ही घर में अपने को बेवकूफ बनते नहीं देख सकती", अन्त में उसने कहा : "वही सब मामला है।"

तब उसने वह सब कुछ कह डाला जो जल्दी में उसकी जबान पर

आया। हाँ, हाँ, वह कोई बेवकूफ नहीं थी; वह सब समझ सकती थी कि उसके मतलब क्या थे। भोजन के समय सबने उसे मूर्ख बनाता था। उन्होंने कैसी जानवरों की सी बातें कहीं—केवल यह दिखाने के लिए कि वे उसकी किंचित भी चिन्ता नहीं करते हैं। वह एक वेश्याओं का पार्सल था जो उसके जूते भी साफ करने लायक नहीं थीं। आगे से वह उन सबकी चिन्ता नहीं करेगी और देखेगी कि कैसे बाद में उसके साथ पाजीपन का व्यवहार किया जाता है? वह कह नहीं सकती कि कैसे वह उस सब गन्दे समूह को ठोकर मारकर निकाल देने को रोक गई; और, तब आवेश ने उसे अवरुद्ध कर दिया। वह जोर से सिसकी मार कर रो पड़ी।

"यहाँ आओ, मेरी बच्ची। तुम नशे में हो।" वैन्डेव्रेस ने बड़े मीठे भाव से कहा: "तुमको संभल कर रहना चाहिये।"

"नहीं" उसने पहले से ही मना कर दिया। वह वहीं रहेगी सोचते हुये कहती गयी: "सम्भव है, मैं नशे में होऊँ किन्तु मैं चाहूँगी कि मेरा सम्मान हो।"

लगभग पन्दरह मिनट तक जार्ज और डागनेट असफलतापूर्वक यह अनुरोध करते रहे कि वह खाने के कमरे में चले किन्तु नाना जिद पकड़े हुए थी। उसके अतिथि स्वेच्छा से जो चाहें करें। अब उनके समक्ष जाने के पूर्व उनके प्रति उसके मन में अत्यधिक घृणा के भाव उठ रहे थे। कभी नहीं, कभी नहीं। चाहे वे उसके टुकड़े टुकड़े कर डालें। किन्तु वह अपने कमरे में ही रहेगी।

"मुझको यह पहले ही सोच लेना चाहिये था," उसने प्रारम्भ किया। "यह उसी वेश्या रोज की पूर्व व्यवस्थित चाल थी; और अब सन्देह नहीं कि यह वही हो जिसने उस सम्भ्रान्त महिला को आने से रोक दिया जिसको मैंने निमन्त्रित किया था।"

वह मेडम राबर्ट के सम्बन्ध में कह रही थी। वैन्डेव्रेस ने विश्वास दिलाया कि उसकी बात की प्रतिष्ठा रखते हुये, उसे यह मान लेना चाहिये कि मेडम राबर्ट ने अपनी स्वेच्छा से यह निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया था। उसने सुना और बिना हँसे हुये उस सम्बन्ध में विचार विनिमय किया।

जो कि वैसे दृश्यों से परिचित था और जानता था कि वैसी परिस्थिति में स्त्रियों से कैसे निबटना चाहिये। तभी जिस क्षण उसने नाना को वहाँ से उठा कर ले जाने के लिये उसका हाथ पकड़ा और कुर्सी से उठाना चाहा तभी वह आवेश में विरोध कर उठी। उदाहरणार्थ कोई भी उसे यह विश्वास नहीं दिला सकता था कि फाचरी ने काउन्ट मुफट को आने के लिये मना नहीं किया। वह फाचरी एक अच्छा खासा साँप है, अत्याधिक विद्वेषपूर्ण—ऐसा आदमी जो किसी स्त्री को नष्ट करने में अन्त तक उसके साथ चिपका रह सकता है और उसके आनन्द को मिटा सकता है क्योंकि वह भली प्रकार जानती थी कि काउन्ट में उसके प्रति आकर्षण है। वह उसको पा सकती थी!

"वह, माई डियर, कभी नहीं।" वैन्डेव्रेस ने अपने आप को भुलाते व हँसते हुये कहा।

"किन्तु, क्यों नहीं?' उसने गम्भीर और तनिक संतुलित होते हुये प्रश्न किया।

"क्योंकि, वह पादरियों से घुलता-मिलता है और यदि वह कभी तुमको अपनी उँगली के पोटुये से भी छू ले तो दूसरे दिन आकर वह क्षमा-याचना करेगा। तो अब मेरी भली सलाह मानो। दूसरे को भाग निकलने का मौका न दो।"

तब एक क्षण तक वह सोचती रही, तत्पश्चात उठी और बाहर जाकर अपनी आँखों को धोया। इस पर भी, जब उन्होंने पुनः उसको खाने के कमरे में चलने का अनुरोध किया तो उसने सवेग मना कर दिया। वैन्डेव्रेस ने एक मुस्कराहट के साथ कमरा छोड़ दिया और तब आगे अनुरोध नहीं किया। उसके सीधे चले जाने पर उसमें कोमल भावना का जागरण हुआ और तब उसने अपने हाथ डागनेट की ओर फैला दिये और बोली:

"आह! मेरी मीमी; तुम्हारी तरह कोई नहीं है? मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, तुम जानते हो कि तुमसे कितना प्यार करती हूँ? अच्छा होगा यदि हम साथ-साथ रहेंगे। ओह! नारी इतनी क्षुब्ध कीटाणु क्यों है?"

तब जार्ज को भी, जो उनको आलिंगन-बद्ध देखकर अत्यधिक रक्त-वर्ण हो गया, उसने चूम लिया। मीमी एक बच्चे के प्रति विद्वेष की भावना नहीं ला सकता था। उसने चाहा था कि पाल व जार्ज दोनों साथ-साथ आगे बढ़ें, कितना अच्छा हो यदि तीनों यह जानते रहें कि वे एक दूसरे को कितना प्यार करते है। किन्तु एक विचित्र से स्वर ने उन्हें अस्त-व्यस्त कर दिया। कोई कमरे के अन्दर खर्राटे ले रहा था। तब, चारों ओर देख कर, उन्होंने वार्डनोव को ढूँढ़ निकाला जो कॉफी पीने के बाद वहीं स्वच्छन्दतापूर्वक विश्राम कर रहा था। वह दो कुर्सियों पर सो रहा था और उसका सिर पंलग की पाटी पर था और उसके पैर बाहर को सीधे हो रहे थे। नाना ने सोचा कैसा मजेदार दिख रहा है, उसका मुँह पूरा खुला हुआ है, और उसकी नाक हर खर्राटे पर हिल रही है कि वह हँसते-हँसते वहीं झुक गई। तब उसने कमरा छोड़ दिया। उनके पीछे डागनेट व जार्ज थे। वे खाने के कमरे से होकर ड्राइंग रूम में चले आये जहाँ वह पहले से अधिक तीव्रता से हँसती रही।

"ओह, माई डियर !" पूरी तरह से रोज की बाहों में अपने को डालते हुये वह चिल्लाई "तुमको कुछ पता नहीं है, आओ और देखो।

सब स्त्रियाँ उसके साथ गई। वह ठीक से उन सबके हाथ पकड़े रही और घसीट लाई। आनन्दातिरेक में वे इतनी विह्वल थीं कि कारण ज्ञात होने के पूर्व ही हँस रही थीं। वे सब गायब हो गईं और एक मिनट बाद लौटीं, उनकी श्वाँस मन्द हो रही थी और वे बड़ी शान से चित्त लेटे वार्डनोव के चारों ओर एक क्षण रुक कर लौटी थीं। तब नये सिरे से उनका हास्य फूट पड़ा। जब उसने शान्त होने को कहा तो वार्डनोव के खर्राटे दूर से स्पष्ट सुनाई दे रहे थे।

इस समय ४ बजे थे। खाने के कमरे में ताश की मेज बिछा दी गई जिसके चारों ओर वैन्डेव्रेस; स्टेनियर; मिगनन और लेबार्डेट शीघ्रता में जा बैठे। लूसी और केरोलीन उनके पीछे खड़ी हो गई और दाँव लगाने लगीं। ब्लान्च बड़ी ही उदास व असन्तुष्ट दिख रही थी क्योंकि वह सोचती थी कि

उसकी शाम बेकार चली गई और तभी वह हर पाँच मिनट बाद वैन्डेव्र`स से पूछती थी कि वह जा रहा है अथवा नहीं। ड्राइंग रूम में अन्य लोग नृत्य की तैयारी कर रहे थे। डागनेट कृपापूर्वक पियानों पर सहायता कर रहा था क्योंकि नाना ने कहा कि वह सितार पसन्द नहीं करती है। मीमी चाहे तो कितने भी 'वाल्ट्ज' या 'पोलकाज' बजा सकता है। किन्तु नृत्य रुक गया; अनेक स्त्रियाँ सोफे पर आराम से बैठ कर आपस में गप शप करती रही थीं। अचानक वहाँ एक डरावना शोर प्रारम्भ हो गया। ग्यारह नौजवान जो अभी अभी साथ पहुंचे थे एन्टी रूम में बड़े जोर जोर से हँस रहे थे और ड्राइग रूम की ओर घुस रहे थे। इन लोगों ने अन्तर्देशीय मन्त्रालय के 'बॉल' को अभी-अभी छोड़ा था। वे सब अपनी शाम की पोशाक में थे तथा विचित्र सजाव शृंगार से विभूषित थे। उनके उस शोर पर नाना बिगड़ रही थी तभी उसने बैरों को पुकारा जो अब भी रसोई घर में थे और उनको आदेश दिया कि उन सब भले आदमियों को निकाल बाहर किया जावे क्योंकि उसने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था। फाचरी, लेबार्डेट, डागनेट, व अन्य लोग गृह-स्वामिनी की मर्यादा की रक्षार्थ शीघ्रता में आगे बढ़े। रोषपूर्ण वार्तालाप होगया तथा घूँसे तन गये। आगे के क्षणों में सिरों का कचूमर निकलना प्रारंभ हो जाता तभी एक छोटा सा सुन्दर बालों वाला युवक अपनी बीमार सी स्थिति लिये निरन्तर कहता रहा "अरे नाना, बाहर आओ। अरे उस रात को पीटर्स में; उस बड़े लाल कमरे में, तुमको निश्चित याद आ रहा होगा, तुमने हम सबको निमन्त्रित किया था।"

उस रात, पीटर्स में ? उसको कुछ भी याद नहीं आ रहा था। सर्व प्रथम, कौन सी रात को ? और जब उस छोटे से सुन्दर बालों वाले व्यक्ति ने कहा कि उस दिन, बुधवार को, तब उसे स्मरण हुआ कि बुधवार को पीटर्स में उसने भोजन किया था, किन्तु उसने किसी को निमन्त्रित नहीं किया, इस बारे में वह पूर्णतः निश्चित थी।

"किन्तु अब भी, मेरी बच्ची, यदि तुमने उनको निमन्त्रित किया था," लेबार्डेट ने कहा जिसे अब उस विषय पर संदेह होने लगा था, "तो थोड़ा और सही।"

तब नाना हँस दी । सम्भव है, वह कुछ कह नहीं सकती । जो भी हो जब भाई लोग वहाँ हैं तो उन्हें अन्दर आ जाना चाहिये । ड्राइंग रूम मे जो लोग थे उनमें उन नवागन्तुकों के अनेक परिचित निकल आये और तब वह झगड़ा आपस में हाथ मिला-मिला कर निबट गया । वह छोटा सा पतला दुबला व सुन्दर बालों वाला आदमी फ्राँस का सबसे बड़ा नामी व्यक्ति था । इसके साथ ही उन्होंने बताया कि उनके पीछे और लोग भी आ रहे हैं । और तभी, सचमुच, प्रतिक्षण द्वार खुलवाया गया तथा अधिकारियों की वेशभूषा में लोग 'किड' के सफेद दस्ताने पहने निरन्तर अन्दर आ रहे थे । वे अन्तर्देशीय मन्त्रालय के नृत्य से आ रहे थे । फाचरी ने मसखरेपन से कहा कि कहीं मन्त्री स्वयं ही तो शीघ्र पधारने वाले नहीं हैं; किन्तु नाना अत्यधिक बिगड़कर बोली कि मन्त्री सचमुच ऐसे लोगों के यहाँ जाते हैं जिनसे वह कहीं अच्छी है। जो कुछ वह नहीं कहना चाहती थी—वह एक आशा थी, जिसका आनन्द वह ले रही थी और वह यह कि उन सबके बीच में वह काउन्ट मुफट को घुसते हुए देखे । सम्भव है उसने अपना मस्तिष्क परिवर्तित कर लिया हो; और जब वह रोज़ से बातचीत कर रही थी, तो द्वार की ओर देखती जाती थी ।

पाँच बज गया । नाचना समाप्त ही हो चुका था । खेलने वाले ही केवल ताशों में जुटे हुए थे । लेबार्डेट ने अपना स्थान छोड़ दिया था तथा स्त्रियाँ ड्राइङ्गरूम में जा चुकी थीं । लैम्पों के प्रकाश का मन्द विस्तार देर से चारों ओर फैल रहा था और तभी उनकी बत्तियों की चमचमाहट उनकी चिमनियों पर लाल रंग का धुँआ लपेट रही थी । स्त्रियाँ मस्तिष्क की ऐसी विकृत स्थिति में पहुँच गई थीं जैसे कि वे स्वतः अपना इतिहास कहने लगती हैं । ब्लान्च डि० शिवरी ने अपने बाबा, एक जनरल की बातें कीं; क्वारिस ने एक ड्यूक के साथ नया वाला अनुराग कह डाला जब उसने उसके चाचा के यहाँ उसे बिगाड़ा था, जहाँ वह जंगली शेर का शिकार खेलने आया था; और प्रत्येक ने अपनी पीठ घुमाकर अपने कन्धों को हिलाते हुए कहा कि क्या ऐसी झूँठी बातें कहना भी सम्भव है ? जहाँ तक लूसीं स्टेवर्ट का सम्बन्ध था,

उसने अपनी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कसम खाकर ठीक-ठीक कहा और खुले तौर पर अपने यौवन काल की बातें कहती रही, जब उसके पिता, जो कि उत्तर रेलवे में पोर्टर थे, उसको एक इतवार का सेव का आदान-प्रदान कहा करते थे।

"ओह ! मैं तुमसे कहूँ !" छोटी-सी मेरिया ब्लान्ड ने अचानक कहा ; "एक महाशय मेरे मकान के सामने रहते हैं। वे एक रूसी हैं, संक्षेप में बड़े पैसे वाले हैं। तो मैंने कल फलों का एक भरा पिटारा पाया—ओह ! फलों का ऐसा पिटारा जिसमें अधिक संख्या में काफी बड़े आड़ू थे और ऐसे बड़े-बड़े अँगूर, सचमुच कुछ ऐसी विचित्र चीजें थीं जो वर्ष के इन दिनों में अप्राप्य हैं। और इन सब के बीच में एक-एक हजार फ्रांक के छै नये-नये बैंक-नोट थे। वह सब रूसी व्यवहार था। जो हो, मैंने वह सब लौटा दिया, किन्तु फलों के कारण मुझे खेद अवश्य बना रहा।

अन्य स्त्रियाँ एक दूसरे की ओर इस तरह देखने लगीं जैसे वे न मुस्कराने की चेष्टा कर रही हों। छोटी मेरिया ब्लान्ड के अपनी आयु के अनुसार विचित्र से गाल थे। वे जैसे सोच रही थीं कि उस जैसी बिल्ली के साथ भी ऐसी कहानी सम्भव है। वे एक दूसरे के प्रति घृणापूर्वक सोचने लगीं। लूसी अपने तीन राजकुमारों के कारण बुरी तरह जल रही थी। ब्वायस डि. बोलेन में जब से एक सुबह को लूसी ने घुड़सवारी प्रारम्भ की है, जहाँ से ही उसकी सफलता का प्रारम्भिक बिन्दु प्रकट होता है; तभी से घुड़सवारी की एक भयंकर सनक उन सब में भी पैठ गई है।

प्रभात फूटने को था। नाना ने अब द्वार की ओर झाँकना छोड़ दिया था क्योंकि अब कोई आशा न थी। हर कोई मरण की सी उदासी का अनुभव कर रहा था। रोज मिगनन ने 'स्लिपर' से गाने को मना कर दिया, और सोफे पर बल खाती हुई पड़ी रही। वहाँ वह फाचरी से कानाफूसी कर रही थी और मिगनन की प्रतीक्षा में थी, जो वैन्डेव्रे स से लगभग बीस लुईस अब तक जीत चुका था। एक सुदृढ़ और विशेष-आकर्षक दिखाई देने वाले व्यक्ति ने, जो सजा हुआ दीख रहा था, यह ठीक है कि अभी-अभी 'अब्राहम का बलिदान'

गाया था जो अल्सेटियन राग में था तथा जो कुछ-कुछ गन्दा था। एक दो शब्द से अधिक उसे कोई समझ न सका, अत: वह असफल रहा।

यह किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या किया जावे जिससे वातावरण में कुछ उत्साह उत्पन्न हो और रात आनन्द से व्यतीत की जावे। उदाहरणार्थ लेबार्डेट के मस्तिष्क में एक विचार था कि स्त्रियों द्वारा लॉ फेलो को बदनाम किया जावे क्योंकि वह प्रत्येक के आस-पास इसलिये चक्कर काट रहा था कि वह पता लगा सके कि कहीं किसी ने अपने वक्ष में उसका रूमाल तो नहीं छिपा रक्खा है। जो हो, शैम्पेन की कुछ बोतलें अभी भी साइडबोर्ड पर रक्खी थीं अत: नवयुवकों ने पुन: पीना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने एक दूसरे को भद्दी-भद्दी बातें कह कर उभारना चाहा; किन्तु एक अदृश्य क्षोभमय नशे की उदासी ने, जिसकी उद्दण्डता में रुखाई आना सम्भव था, सब को लपेट रक्खा था। तब वह छोटे से सुन्दर बालों वाला व्यक्ति जो सारे फ्रांस में प्रसिद्ध था, 'क्या करे' यह सोच कर परेशान था और यह विचार कर दुखित हो रहा था कि कुछ मजाक वह नहीं सोच पा रहा है। अचानक एक बात उसके ध्यान में आई; उसने शैम्पेन की एक बोतल लेकर पियानो पर उड़ेल दी। सब लोग हँसी में परेशान हो गये।

"हल्लो!" तातानेने ने विस्मित होकर देखते हुए कहा : "उसने पियानो में शैम्पेन क्यों उंड़ेली है?"

"क्या! मेरी बच्ची; तुम वह नहीं जानतीं?" लेबार्डेट ने गम्भीरता-पूर्वक उत्तर दिया : "पियानो के लिये शैम्पेन से अच्छी कोई चीज ही नही है। यह स्वर ठीक कर देती है।"

"आह! सचमुच", तातानेने ने पूर्णत: सन्तुष्ट होते हुए कहा।

और जब सब हँस दिये तो वह बिगड़ उठी : "उसको क्या पता था?" वे उसको हमेशा गलत ही बताते हैं। बातें भद्दी से और भी भद्दी होती जाती थीं। रात्रि असुन्दर व अनचाहे रूप में समाप्त हो रही थी। कमरे के एक कोने में मेरिया ब्लान्ड, लिया डे हार्न से उलझी हुई थी और उस पर यह आरोप लगा रही थी कि वह ऐसे व्यक्तियों से मिलती है जो पैसे वाले नहीं हैं; और तब वे

एक दूसरे के नेत्रों पर आक्षेप कर रही थीं। लूसी ने, जो बदसूरत थी, उनको शान्त कर दिया। नेत्र कुछ नहीं हैं; चीज तो यह है कि तस्वीर अच्छी होनी चाहिये। दूर, एक सोफे पर, किसी दूतावास के "अटेची" ने साइमन की कमर में हाथ डाल दिया था और उसकी गर्दन चूमने का प्रयत्न कर रहा था; किन्तु साइमन ने, थक कर चूर होने के कारण तथा अत्यधिक आवेश में आकर उसे प्रत्येक बार यह कह कर पीछे ढकेल दिया "मुझे दिक मत करो।" वह उसके सिर पर अपने पंखे की चोट करना जानती थी। इसके अतिरिक्त, कोई भी स्त्री अपने को छूने देने में आपत्ति करती थी। वे यह सब क्यों होने दें? जो हो, गागा ने लॉ फेलो को पकड़ रखा था और एक प्रकार से अपने घुटनों पर बैठाले हुये थी; जबकि क्लारिस, छेड़खानी की स्त्रियोचित उलझी मुस्कराहट में दो व्यक्तियों के बीच गायब हो रही थी। पियानों के चारों ओर छोटा खेल चल रहा था जिसमें अत्याधिक उद्दण्डता थी। धकेल-धकाल चल रही थी। हर व्यक्ति अपनी बोतल उसमें उड़ेलना चाहता था। वह बड़ी साधारण व छोटी बात थी।

"सुनो! पुराने दोस्त, शराब पियो। शैतान! क्या वह प्यासा नहीं है; यह बेचारा गरीब पियानो! उधर देखो! यहाँ एक और है; हम को एक बूँद भी छोड़नी नहीं चाहिये।"

नाना की पीठ चूंकि उन लोगों की तरफ थी अतः वह यह नहीं जान रही थी कि आखिर वे किसके पीछे पड़े हैं! नाना उस सुडोल व पुराने स्टेनियर को अच्छे से अच्छा मान देने को तत्पर थी जो उसके निकट बैठा हुआ था। यह कैसी बुरी बात थी। वह सब मुफट का दोष था कि वह आने को प्रस्तुत न था। मुलायम व सफेद रेशमी पोशाक में जो हलकी व शेमीज़ की तरह सिकुड़ी हुई थी और जिसने नशे को चूम रखा था और जिसने उस सुन्दर मुखड़े का सुनहला रंग अपने में समेट रखखा था जिससे उसकी रसीली आँखें भारी-भारी लग रही थीं; ऐसा लग रहा था मानो वह शान्त व स्वस्थ भावना से अपने को अर्पित कर रही हो। पोशाक व बालों में लगे गुलाब बिखर चुके थे थे और केवल डंठल रह गये थे। अचानक स्टेनियर ने उसके बालों से अपना

हाथ खींच लिया और जार्ज द्वारा लगाई हुई पिनों को पुनः खट् खट् करके बन्द कर दिया। रक्त की कुछ बूँदें उसकी उँगलियों से टपक गई। उनमें से एक पोशाक पर गिर गई और उसने वहाँ दाग बना दिया।

"अब तो इसकी पुष्टि हो गई" नाना ने गम्भीर होकर कहा।

दिन निकल आया था। भयंकर उदासी लिये संदिग्ध सा प्रकाश खिड़कियों से भर आया। तब जोड़ टूटने लगे। अशान्त और अनुदार विदा का कार्य-क्रम प्रारम्भ हो गया। सारी रात बरबाद होने के कारण केरोलीन हैक्टर पर अत्यन्त बिगड़ रही थी और कह रही थी कि अभी समय है कि वे लोग चले जावें जो कुछ विचित्र कामों में सहयोग न देना चाहते हों। रोज़ ने संभ्रान्त महिला की सी आकृति बना रक्खी थी जो टूट चुकी थी। ऐसा उन सभी गन्दी लड़कितों के साथ होता था। उन्हें यह कभी नहीं ज्ञात हुआ कि वे कैसा आचरण करें। पहले से ही वे सदैव बड़े असहनीय थे। उधर मिगनन ने वैन्डेव्रे स को ताशों में उधेड़ दिया था अतः वे दम्पत्ति, स्टेनियर के सम्बन्ध में बिना चिन्ता किये चले गये हालाँकि जाते समय फाचरी को कल के लिये निमन्त्रण देना वह न भूले। तब, लूसी ने पत्रकार को अब कभी उसका घर झाँकने तक को मना कर दिया और उच्च स्वर में उससे स्पष्ट कह दिया कि वह अपनी गन्दी अभिनेत्री के साथ चला जावे। रोज़ जिसने सुन लिया था, घूम गई और "भद्दी चुड़ैल", अपने दाँतों के अन्दर कह गई। किन्तु मिगनन स्त्रियों के उस प्रकार के झगड़ों से भली भाँति परिचित था अतः बुजुर्ग की तरह अपनी पत्नी को ढकेलता हुआ चुप रहने को कहता गया। उनके पीछे लूसी अकेली ही जीने में राजरानी की तरह उतरी। तब वह लॉ फेलो था, जो बीमार सा अनुभव कर रहा था व बच्चों की तरह सिसकियाँ भर रहा था जिसे गागा लिये जा रही थी जबकि उसने क्लारिस को पुकारा। परंतु वह बहुत पहले ही अपने दो व्यक्तियों के साथ जा चुकी थी। साइमन भी गायब होगई थी। वहाँ अब भी ताता, लिया, मेरिका रह गई थीं जिनकी सँभाल लेबार्डेट ने कृपापूर्वक अपने हाथ में ले ली थी।

"मुझे तो नींद आ नहीं रही है।" नाना ने कहा। "चलो कुछ करें ही।"

खिड़की के काँच से उसने आकाश देखा जो धुँधले रंग का था और जिस पर काले बादल बह रहे थे। इस समय छै बजा था। उसके सामने, बाउलेवर्ड हौशमैन के दूसरी ओर के मकान, अब भी नींद में सो रहे थे। उनकी नम छतें हलकी रोशनी में बाहर को खड़ी थीं; जबकि मेहतरों की एक टोली रिक्त फुटपाथ व सड़क पर चली जा रही थी जिस पर उनके लकड़ी के जूते खट खट कर रहे थे। एक रंगीले शहर के वैसे उदास जागरण के बीच, नाना में एक नवयौवना लड़की के से विचार पनप रहे थे, जिसमें अपने देश के प्रति बड़ी चाह थी, और जो आदर्श अस्तित्व पर टिकना चाहती थी, जो पवित्र व शान्तिमय हो।

"ओह ! मैं तुमसे क्या कहूँ," उसने स्टेनियर के निकट जाकर कहा, "तुम मुझे ब्वायस डि. बोलोन ले चलो। वहाँ हम कुछ दूध पियेंगे।"

उसने बच्चों की खुशी की तरह अपनी तालियाँ बजा दीं और अपने कन्धों पर एक *'पेलिसे' डालने को दौड़ गई। वह बैंकर के उत्तर की प्रतिक्षा किये बिना चली गई जो स्वभावत: स्वीकार कर रहा था और वस्तुत: बिगड़ रहा था तथा कुछ दूसरी ही बात मन में सोच रहा था। ड्राईंग-रूम में केवल वे ही नवयुवक शेष बचे थे जो एक साथ आये थे; किन्तु, सब चीजें बहा कर, यहाँ तक कि गिलासों को भी पियानों में गिराकर जाने की बातचीत वे कर रहे थे। तभी उनमें से एक गर्वित सा प्रकट हुआ जिसके हाथ में वह अन्तिम बोतल थी जिसको उसने रसोई-घर से ढूँढ निकाला था।

"रुको ! रुको !" वह चिल्लाया, चार्टरूज की एक बोतल ! वहाँ वह चार्टरूज की एक बोतल चाहता ही था जो उसे फिर ले आवेगी ! और बच्चो, सब लोग भगो। हम लोग शैतानों का एक झुण्ड हैं न।"

नाना को 'ज़ो' को जगाना था जो ड्रैसिंग-रूम में एक कुर्सी पर सो रही थी। गैस अब भी जल रही थी। उसने अपनी मालकिन को टोप व 'पेलिसे' पहनने में सहायता की तो वह काँप रही थी।

"तो, वह सब निबट गया; मैंने वैसा ही किया जैसी तुम्हारी इच्छा थी," नाना ने बडे अपनत्व के भाव से उससे कहा और यह सोच कर सन्तुष्ट होती

*पेलिसे—ओढ़ने का वस्त्र

गई कि अन्त में उसने मन में स्थिर कर लिया है। तुम ठीक ही थीं कि जहाँ दूसरा होगा वहाँ चकर भी रहेगा ही।

नौकरानी अब भी उदास और फूली हुई थी। वह तब भी घुड़घुड़ा रही थी कि मैडम को वह निश्चय पहली रात में ही कर लेना चाहिये था। जब वह उसके पीछे पीछे सोने के कमरे में गई तो उसने पूछा कि जो दो बचे हैं, उनका वह क्या करे ? बार्डनोव ने अभी खर्राटे लेना बन्द नहीं किया था। जार्ज ने, जो मक्कारी से वहाँ आया था, अपने सिर को एक तकिये में दाब रक्खा था और अन्त में सो गया था और देवदूत की सी शान्त मुद्रा में साँस लेता था। नाना ने उन्हें सोते रहने के लिये कहा। तब उसकी सारी कोमलता डागनेट को कमरे में प्रवेश करते देख कर उमड़ पड़ी। वह रसोई में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था—वह बड़ा उदास दिख रहा था।

"यहाँ आओ, मेरी मीमी, जरा समझदार बनो," उसको अपनी बातों में लपेटते हुये तथा प्यार के अनेक रूपों से उसको समेटते हुये उसने कहा : "कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है। तुम जानते हो वह केवल मेरा मीमी ही है जिसे मैं इतना प्यार करती हूँ। क्या तुम नहीं समझते हो ? मुझे वैसा विवश होकर करना पड़ा। मैं कसम खाती हूँ, हम सब और अधिक प्रसन्न रहेंगे। कल आओ, हम एक दूसरे को देखने व मिलने के घंटे निर्धारित कर लेंगे। तब, आओ, जल्दी करो, तुम जितना मुझे प्यार करते हो उतने ही प्यार ले लो ओह ! और, और इससे भी गहरे।"

और, तब उससे अपने को छुड़ा कर अत्याधिक हर्षित होते हुये व कुछ ताजा दूध पीने की आन्तरिक इच्छा के साथ वह पुनः स्टेनियर से आ मिली। उस कमरे में, जो वीरान पड़ा हुआ था काउन्ट डि. वैन्डेव्रे स उस शालीन आकृति वाले भद्र व्यक्ति के साथ जिसने "अब्राहम का बलिदान" गाया था, बना रहा। वे दोनों ताश की मेज पर बैठे थे, बिना यह समझे कि वे क्या कर रहे हैं; और बिना यह जाने कि दिन-दोपहरी चढ़ आई है। तभी ब्लान्ड सोफे पर लचकती हुई पड़ रही व नींद लाने का प्रयत्न करने लगी।

"आह ! ब्लान्च भी साथ जायेगी ?" नाना चिल्लाई। हम लोग कुछ

दूध पीने जा रहे हैं, प्रिय ! जल्दी आओ, तुम वैन्डेव्रैस के लिये शीघ्र लौट आना।"

ब्लान्च ने ढिलाई से अपने को उठाया। इस बार बैंकर का फूला हुआ चेहरा रोष से आक्रान्त हो गया। वह उस मोटी लड़की के साथ, जो उसके मार्ग का अवरोध होगी, जाने को कदापि प्रस्तुत न था। किन्तु दोनों स्त्रियाँ पहले ही से आगे बढ़कर उसका मार्ग-प्रदर्शन कर रही थीं—यह कहते हुए :

"तुम जानते हो, गायें दूध दें, यह हमें देखते रहना चाहिये।"

५.

'ब्लान्ड वेनस' चौंतीसवीं बार वेराइटी थ्येटर में प्रदर्शित किया जा रहा था। पहला अंक अभी-अभी समाप्त हुआ। धोबिन की भूमिका में साइमन अभी-अभी उतरी थी और ग्रीन-रूम में एक दर्पण के सम्मुख खड़ी थी जो दो द्वारों के बीच तथा ड्राईंग-रूम को जाने वाले मार्ग में लगा हुआ था। वह बिलकुल अकेली थी और दोनों ओर लगे गैस लैम्पों के चमकते प्रकाश के बीच उस क्षण अपनी सुकोमल उंगली को अपनी आँखों में फिरा कर अपने शृंगार को और भी उभार रही थी।

"क्या तुम जानते हो कि वह अभी आया है?" प्रुलियर ने प्रश्न किया जो 'स्विस-एडमिरल' की पोशाक में था तथा जिसके लम्बी तलवार, ऊँचे जूते और तन में मोटापा भरा हुआ था।

"तुम्हारा आशय किससे है?" अपने को बिना हिलाये-डुलाये, और अपने ओठों की सुन्दरता देखने के लिये हँसते हुये उसने कहा—

"राजकुमार"

"मैं नहीं जानती, मैं नीचे जा रही हूँ। आह! तो वह आ रहा है। तो वह रोज आता है।"

प्रुलियर अग्नि-कुण्ड तक गया जो दर्पण के सम्मुख था व जिसमें कोयले की आग जल रही थी तथा दो मोमबत्तियाँ दोनों सिरों पर चमक रही थीं। उसने अपने नेत्र उठाये और घड़ी एवं बेरोमीटर की ओर देखा जो बायें व दायें लगे हुये थे और साम्राज्य की सी भव्यता में पशुओं के भावात्मक सुनहले

चित्रण के साथ स्थिर थे। तब उसने अपने को बड़ी ऊँची पीठ वाली हत्थेदार कुर्सी में डुबो दिया जिसकी हरी मखमल अभिनेताओं की चार पीढ़ी के निरन्तर व्यवहार के कारण फट गयी थी और भद्दी हो गयी थी तथा स्थान-स्थान पर जिसमें पीला धुँआ सा लिपटा हुआ था। वह वहाँ स्थिर सा बैठा रहा। उसके नेत्र संदिग्ध रूप से उस स्थान को निहार रहे थे जिसमें अभिनेताओं के रिवाज की तरह पंक्तियों में "प्रतीक्षाओं" की सी उतावली व थकन थी। पुराने बास्क ने अभी-अभी अपनी झलक दिखलाई थी जो अपने पैरों को लटका रहा था और पुराने व पीले बाक्स-कोट में लिपटा हुआ था जो एक कन्धे से सरक कर बादशाह डैगोबर्ट के सुनहले काम के कुर्ते सा दिखाई दे रहा था। उदाहरणार्थ पियानों पर अपना मुकुट रख कर, बिना एक शब्द कहे हुये, वह क्रोधित सा अपने पैरों को चिपकाये हुये था किन्तु इस पर भी प्रति क्षण वह एक भले स्वभाव वाला व्यक्ति ही प्रतीत हो रहा था और जिसके हाथ सुरा के अधिक प्रभाव से काँप रहे थे जबकि उसकी लम्बी सी सफेद दाढ़ी एक बुजुर्ग की सी आकृति में उसके भन्नाये हुये शराबी से चेहरे को व्यक्त कर रही थी। तब, उस नीरवता को वर्षा की फुहार व तूफान ने समाप्त किया जो बड़ी व चौकोर खिड़कियों के झरोखों से अन्दर आ रही थी और तब आँगन को झाँकते हुये उसने निराशा की सी साँस ली।

"कैसा भद्दा मौसम है।" वह कुड़कुड़ाया।

साइमन और प्रलियर में से कोई भी नहीं हिला-डुला। दीवारों पर चार या पाँच तस्वीरें, एक नक्शा और वर्नेट अभिनेत, का चित्र टंगा हुआ था जो सब गैस की गर्मी से धीरे-धीरे पीले पड़ रहे थे। एक खम्भे पर अपनी शुष्क आँखों में एक कलाकार का आधा चित्र रंगा हुआ था जो वैराइटी थियेटर के वैभव का प्रतीक था। किन्तु अचानक आवाजों के स्वर गूँज गये। वह दूसरे अंक की अपनी पोशाक में फान्टन था जो पूर्णतः पीले कपड़े पहने हुये था व दस्ताने भी पीले रंग के ही चढ़ाये हुये था।

"मैं कहता हूँ।" वह हिलते-डुलते कह रहा था: "क्या तुम जानते नहीं हो? यह मेरा आज का दिन साधु का सा पवित्र दिन है।"

''तो अब क्या सचमुच ?'' सामइन ने जैसे अपनी लम्बी नाक व मसखरी आकृति से मुस्कराते हुये कहा : ''तो क्या एचील्स क्रिश्चियन हो गये ?''

''बिलकुल ! और अब मैं, मैडम ब्रान से यह कहने जा रहा हूँ कि मेरे लिये दूसरे अंक के बाद, कुछ शैम्पेन लावें ।''

अभी एक क्षरा पूर्व ही दूर, घंटी टनटनाती हुई सुनाई पड़ी थी । देर तक बजने के बाद ध्वनि समाप्त हो गई, तदनन्तर पुन: प्रगट हुई; और अन्त में जब घंटी बजनी बन्द हो गई तो सीढ़ियों के ऊपर-नीचे जाने वालों की चिल्लाहट प्रकट हुई और तब मार्ग में विलीन हो गई । ''दूसरे अंक के लिये उथल-पुथल मची हुई है । दूसरे अंक के लिये उथल-पुथल मची हुई है ।'' यही चिल्लाहट अन्त में ग्रीन-रूम तक आ पहुंची और एक पीला सा छोटा व्यक्ति अपने शीघ्र से उच्चतम स्वर में द्वार के निकट से चिल्लाता हुआ निकल गया ''दूसरे अंक के लिये चहल-पहल हो रही है ।''

''वह दो ! शैम्पेन !'' बिना किसी को देखे प्रुलियर कह गया : ''तुम ठीक कह रहे हो ।''

''तुम्हारी जगह यदि मैं होता, मैं उसे केफ से मंगवाता'', धीरे से पुराने बास्क ने हरी मखमल से मढ़ी एक बेंच पर बैठे हुये कहा । उसका सिर दीवार से टिका हुआ था ।

किन्तु साइमन ने कहा कि उनको मैडम ब्रान के थोड़े से मुनाफे को नहीं भूलना चाहिए ! उसने तालियाँ बजा दीं । वह अत्यधिक हर्षित हुई तथा अपने नेत्रों में फान्टन को पीती रही जब कि उसका बकरी का सा चेहरा, आँख, नाक और मुँह सहित निरन्तर गतिशील था । ''ओह ! वह फान्टन !'' वह बोली : ''उसके समान कोई नहीं है । उसके समान कोई नहीं है ।''

दरवाजे पूरी तरह खुले हुए थे, और ड्रैसिंग-रूम को जाने वाले मार्ग को प्रदर्शित कर रहे थे । साथ ही पीली दीवालों पर जिनमें अदृश्य गैस-लैम्पों का प्रकाश फैल रहा था, विभिन्न पोशाक वाले व्यक्तियों की अनेक छायायें पड़ रही थीं । स्त्रियाँ दुशालाओं में अर्ध-नग्न सी लिपटी हुई थीं । वह दूसरे

अंक का कोरस था। वे 'बाउल नायर' की नकावें पहने हुये थीं और उस मार्ग के अन्त में उनके जूतों की खट् खट्, पाँच सीढ़ियों पर पड़ती हुई सुनाई पड़ रही थी जो स्टेज को जाती थीं। जैसे ही लम्बीं क्लारिस तेजी में निकली, साइमन ने पुकारा किन्तु उसने उत्तर दिया कि वह एक मिनट में लौटेगी। और, सचमुच वह कुछ देर में काँपते हुये लौट आई। वह महीन कुरते व जाली में थी जो आयरिश ढंग की पोशाक थी।

"हे भगवान !" उसने कहा : "यह बहुत गरम नहीं है। वह मेरे पास था। मैं अपना फर-क्लोक अपने ड्रेसिंगरूम में छोड़ आई हूँ।" तब, आग के सामने, अपने पैरों को गरमाते हुये जिनमें कसे हुये वस्त्रों के अन्दर से शरीर का सुन्दर गात झलक रहा था, उसने कहा, "राजकुमार आ गये हैं।"

"आह !" औरों ने प्रश्नात्मक रूप से सम्बोधित किया।

"हाँ, मैं निश्चित करने गई थी; मैं देखना चाहती थी। वह पहले स्टेज बाक्स में दाहिनी ओर है, उसी प्रकार जैसे वृहस्पतवार को था। हाँ तो, सप्ताह में यह तीसरा दिन है जब वह यहाँ दिखाई दिया है। क्या, उस नाना का यह सौभाग्य नहीं है ? मैंने दावा किया था कि वह फिर नहीं आवेगा।"

साइमन ने अपना मुँह खोला किन्तु उसके शब्द दूसरी चीख में डूब गये, जो ग्रीन-रूम के निकट ही फूट निकली थी। पुराने नौकर की चिल्लाहट सारे मार्ग में गूँज गई, "परदा ऊपर उठ रहा है।"

"तीन बार ! ठीक है, यह कुछ विचित्र सी बनती जा रही है।" साइमन ने कहा : "तुम जानते हो, वह उसके घर कभी नहीं जावेगा। वह उसे अपने यहाँ ले जाता है। और ऐसा लगता है कि उसमें उसका साधारण सा ही व्यय होता है"

"क्यों, हाँ ! अपने मनोरंजन का मूल्य प्रत्येक को चुकाना ही चाहिये," घृणास्पद रूप में प्रुलियर ने कहा और कुछ उचक कर अपने उस स्वरूप को शीशे में निहारने लगा जिसने बाक्सों में ऐसा तूफान उठा रक्खा था।

"परदा उठ रहा है। परदा उठ रहा है।" विभिन्न गैलरियों में तेजी से बढ़ता हुआ नौकर कहता जा रहा था।

तब फान्टन ने, जो यह जानता था कि पहली बार प्रिन्स व नाना में क्या बीती, उस कथा को कहा जिसमें दो स्त्रियाँ उसके ऊपर डोरे डाल रही थीं। जब भी वह कुछ विवरण देने के लिये झुकता था, वे प्रत्येक बार बड़ी जोर जोर से हँसती थीं। पुराना बास्क, कुछ उदासीन सा, हिला-डुला नहीं। जैसी कहानी वह थी उससे उसे कोई आकर्षण नहीं था। वह रह-रह कर कछुये जैसी बिल्ली को छेड़ रहा था जो बेंच पर दुबकी सो रही थी और अन्त में किसी बावले राजा की अलमस्त कोमलता की भाँति उसने उसे अपने हाथों में लिपटा लिया। बिल्ली ने अपनी पीठ को गोल कर लिया। तब देर तक, लम्बी सफेद दाढ़ी को सूँघ कर, परेशान सी, ऊपरी दिखावे में गोंद की महक से ऊब कर वह पुनः बेंच पर कूद गई और कुण्डलाकार होकर सो गई। बास्क निरन्तर गम्भीर व चिन्तित बना रहा।

"यह सब कुछ होते हुये भी, यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो 'कैफ' से शैम्पेन मँगवा लेता, वह कहीं अच्छा रहता", उसने, जैसे ही फान्टन की कहानी समाप्त हुई, अचानक कह डाला

"परदा उठ गया है ?" अपनी भड़भड़ाती आवाज में नौकर ने कहा, "परदा उठ गया है, परदा उठ गया है।"

वह चीख कुछ देर के पश्चात शान्त हो गई। चलते फिरते पगचापों का स्वर गूँज रहा था और तब अचानक खुले द्वार से संगीत का मधुर स्वर बैठ गया। दूर से फुहफुसाहट आ रही थी तभी द्वार बन्द हुआ और वहाँ उदास नीरवता छा गई। पुनः ग्रीनरूम में एक बार निस्तब्धता फैल गई जैसे कि वह उस स्थान से १०० मील दूर है जहाँ दर्शक उच्च स्वरों में प्रशंसा व्यक्त कर रहे थे। साइमन और क्लारिस अब भी नाना के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रही थीं। वह कभी जल्दी नहीं करती ! एक रात पहले ही वह प्रवेश वाली पंक्ति नहीं प्राप्त कर सकी थी किन्तु उन्होने बातचीत बन्द कर दी क्योंकि एक लम्बी सी लड़की द्वार से झाँक रही थी। किन्तु यह जान कर कि उसने गलती की है, वह मार्ग की ओर शीघ्रता में बढ़ गई। वह सैटीन थी जो एक टोप व एक ओढ़न ओढ़े हुए थी, और बाहर घूमती हुए एक भली महिला

सी प्रतीत हो रही थी। "एक सुन्दर चीज !" प्रुलियर ने कहा, जो निरन्तर एक वर्ष से 'केफ डेस वेराइटीज' में बड़ी उत्सुकतापूर्वक उसे देखता चला आ रहा था। तब साइमन ने बताया कि कैसे उसका परिचय सैटीन से हुआ जो उसकी स्कूल की सहपाठिन थी और जिस पर उसका बड़ा स्नेह हो गया था। उसने बार्डनोव को बहुत कोंच-कोंच कर उसे प्रकट करने के लिये विवश किया था।

"हल्लो ! नमस्ते", फान्टन ने फाचरी और मिगनन से हाथ मिलाते हुए, जो अभी-अभी अन्दर आये थे, कहा।

पुराने बास्क ने भी अपनी एक उँगली बाहर निकाली जब कि दोनों स्त्रियाँ मिगनन से लिपट गईं।

"क्या आज का हाल अच्छा है ?" फाचरी ने प्रश्न किया।

"ओह ! बहुत सुन्दर !" प्रुलियर ने उत्तर दिया : "तुमको देखना चाहिये कि किस प्रकार उस सबको वे देखते हैं।"

"मैं कहता हूँ, मेरे बच्चो", मिगनन ने संकेत किया : "यह समय है जब आप लोग बढ़ते चलें, क्या नहीं है ?"

"हाँ, शीघ्र ही !" तब वे चौथे दृश्य तक प्रकट नहीं हुए। केवल बास्क उठा जो बोर्ड का पुराना सदस्य था और अपनी पंक्ति को दूर से ही समझ लेता था। तत्क्षण नौकर द्वार पर आया और पुकारने लगा : "महाशय बास्क ! मैडमो इसले साइमन !"

साइमन ने जल्दी से अपने कन्धों पर फर का लबादा डाला और बाहर निकल आई। बास्क ने स्थिर भाव से, अपना मुकुट निकाला और सिर पर पहन लिया। तब अपने चोगे को घसीटते हुए, अव्यवस्थित पगों द्वारा बुदबुदाया और सरोष नेत्रों सहित वह आगे बढ़ गया जैसे किसी व्यक्ति को तंग किया गया हो।

"तुमने अपने पिछले लेख में कुछ बड़ी मीठी बातें लिखी थीं", फान्टन ने फाचरी से कहा : "केवल इसीलिये तुम कहते हो कि मजाकिया लोग व्यर्थ होते हैं।"

"क्यों, नौजवान ! तुमने ऐसा क्यों कहा ?" मिगनन ने कहा और अपने भारी हाथों से पत्रकार के कन्धों को इस जोर से दाबा कि वह जमीन चूम गया।

प्रुलियर और क्लारिस बड़ी कठिनाई से हँसी रोक सके। कुछ दिन से कम्पनी के सदस्य उस विनोदपूर्ण प्रदर्शन से बड़े प्रसन्न हो रहे थे, जो पर्दों के पीछे दिखाया जा रहा था। मिगनन अपनी पत्नी की उस दीवानगी से अत्यधिक आवेशपूर्ण हो रहा था और यह देखकर बहुत दुःखी भी था कि फाचरी उनके इतने व्यय के परिणाम स्वरूप भी एक प्रश्नात्मक प्रचार के अतिरिक्त कुछ नहीं देता है और तब अपनी मित्रता के अनेक प्रमाण देकर भी वह उससे बदला लेने का सुन्दर मार्ग निकाल पाया था। हर शाम, जब वह उसे दृश्यों के पीछे मिलता तो थप्पड़-घूँसों से स्वागत करता। लगता मानो स्नेह-वश वह पुरस्कार दे रहा है; और फाचरी, इस भयानकता के समक्ष अपने को अत्यधिक कमजोर पाकर विवशतापूर्वक सहन करता और निरन्तर इसलिये हँसता रहता कि रोज के पति से उसका कोई झगड़ा न हो।

"आह ! मेरे बढ़िया दोस्त, तो तुम फान्टन का अपमान करते हो !" मिगनन ने प्रारम्भ किया। उसमें उद्दण्डता भर रही थी : "हाँ, सीधे खड़े हो ओ ! एक, दो—और एक पूरा धक्का छाती पर।"

उसने उस नौजवान को ऐसा जोर का धक्का दिया कि कुछ देर तक वह गरीब एकदम पीला पड़ा रहा और उसका बोल बन्द हो गया। किन्तु, पलक मारने के संकेत से क्लारिस ने उसका ध्यान रोज मिगनन की ओर आकर्षित किया जो द्वार पर खड़ी थी। जो कुछ हुआ वह रोज ने देखा। सीधी वह पत्रकार के निकट गई जैसे उसे अपने पति की उपस्थिति का पता ही न हो और पैरों के अँगूठों पर उचक कर खड़े होते हुए अपने नंगे हाथों से और अपनी बच्चों की सी पोशाक में उसने अपना मस्तक, बच्चों की भाँति चूमने को आगे बढ़ा दिया।

"गुड ईवनिंग, बेबी !" फाचरी ने अपने मन से उसको चूमते हुए कहा।

'यह उसका उपहार था। मिगनन ने उस सब आलिंगन को न देखने का बहाना किया। प्रत्येक अपनी पत्नी थियेटर में चूमता है। किन्तु वह पत्रकार पर एक थिरकती दृष्टि फेंक कर हँस दिया। रोज की इस निर्लज्जता का अधिक मूल्य फाचरी को चुकाना होगा। तब मार्ग का द्वारा खुला और बन्द हो गया तथा तूफानी प्रशंसासूचक शब्दों की गूँज से ग्रीन-रूम भर गया। अपना दृश्य समाप्त करके साइमन लौट आई थी।

"ओह! पुराने बास्क ने ऐसा हिट दिया।" वह चीखी: "राजकुमार हँसते-हँसते छटपटा रहा था और उसने वैसे ही प्रशंसा की जैसे उसको उसके लिये कुछ पैसा दिया गया हो। मैं पूछती हूँ, क्या तुम उस लम्बे आदमी को जानते हो, जो प्रिन्स की बगल में बैठा है? वह, एक स्वस्थ व्यक्ति; जो अत्यधिक शालीन दिख रहा है और जिसके ऐसे सुन्दर गलमुच्छे हैं?"

"वह काउन्ट मुफट है", फाचरी ने कहा: "मैं जानता हूँ कि परसों, एम्प्रेस में, प्रिन्स ने शाम के खाने पर उसे बुलाया था। उसीने उनसे अनुरोध किया होगा कि उसके बाद वह यहाँ आवे।"

"काउन्ट मुफट! क्यों, हम उनके श्वसुर को जानते हैं, क्या नहीं जानते आगस्टस!" रोज मिगनन ने पूछा: "तुम मारक्युस डि. चोरड को जानते हो, जिनके मकान पर मैं गाना गाने गई थी? वह भी आज रात यहाँ उपस्थित है। उसको मैंने किसी बाक्स में पीछे की ओर देखा है। वह एक पुराना...... ।"

प्रुलियर, जिसने अभी-अभी बड़ी कलंगी वाला मुकट सिर पर रक्खा था, घूमा और उससे बोला: "हि:! रोज, गौर से देखो।"

अपना वाक्य समाप्त करने के पूर्व ही वह तेजी से उसके साथ हो ली। इसी क्षण, द्वार-रक्षिका मैडम ब्रान निकट से निकली जो बड़ा भारी गुलदस्ता हाथ में लिये हुए थी। साइमन ने मजाक में पूछा कि क्या वह उसके लिये है? किन्तु बुड्ढी स्त्री ने बिना उत्तर दिये, अपनी ठुड्डी से नाना के ड्रेसिंग-रूम की ओर संकेत कर दिया जो मार्ग के अन्त में था। वह नाना! वे उसको फूलों से कैसे लादते हैं? और जब वह लौटी तो मैडम ब्रान ने एक

पत्र क्लारिस को दिया जिसने अपनी सांस के साथ कसम खाई । तब वह घबड़ाया हुआ लां फेलो ! वही एकमात्र व्यक्ति था जो उसे कभी अकेला नहीं छोड़ सकता था । और जब उसने सुना कि महानुभाव द्वार-रक्षिका के कमरे में प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो उसने कहा : "उनको बता देना कि जब दृश्य समाप्त हो जायगा तब मैं नीचे आऊँगी । मेरा मतलब, मैं ओठों से उसके गालों पर चटाका लगाऊँगी ।"

फान्टन तेजी से आगे बढ़ा और चिल्लाया : "मैडम ब्रान ! सुनो—अरे सुनो, मैडम ब्रान ! अङ्क समाप्त होने पर शैम्पेन की छै बोतलें लेती आना ।"

किन्तु पुराना नौकर पुनः प्रकट हुआ जो हाँफ रहा था और लड़खड़ाती आवाज में कह रहा था : "सब लोग स्टेज पर चलो ! जल्दी करो ! मोशियो फान्टन, जल्दी करो ! जल्दी करो !"

"हाँ, हाँ, मैं जा रहा हूँ, पुराने बेरीलाट", फान्टन ने परेशान होकर उत्तर दिया और मैडम ब्रान के पीछे दौड़ते हुए कहता गया : "तुम समझ रही हो न ? शैम्पेन की छै बोतलें, ग्रीन-रूम में, इस दृश्य के बाद । यह मेरा पवित्र दिन है; मैं शर्तें मानने जा रहा हूँ ।"

साइमन और क्लारिस जा चुकी थीं, तथा अपनी स्कर्ट से बड़ी आवाज करती गई थीं । जब वे सब चले गये और मार्ग के अन्त वाला द्वार एक बार फिर बन्द हो गया तो ग्रीन-रूम में नीरवता से वर्षा की झड़ी का स्वर खिड़कियों के काँच से स्पष्ट सुनाई दे रहा था । बेरीलोट, एक ठिगना काला सा आदमी जो थ्येटर में तीस वर्ष से काल-ब्वॉय था, मिगनन के निकट ऊपर गया और अपने मन से सुँघनी की डब्बी प्रस्तुत की । सुँघनी के इतने से प्रयोग ने, उसके प्रस्तुत करने और स्वीकार करने में, जीने और रास्ते की भाग-दौड़ में एक क्षण का विश्राम दे डाला था । वहाँ अब भी, निश्चित, मैडम नाना (ऐसे ही वह इसे पुकारता था) होगी । किन्तु वह सदैव वैसा ही करती जैसा वह सोचती है और जुर्माना देने की कुछ भी चिन्ता नहीं करती

है। जब उसकी इच्छा होती है कि वह अपना कार्य न करे तो वह उसे नहीं करती। यकायक, आश्चर्य में बुदबुदाते हुए वह रुका :

"क्यों ! वह यहाँ है; वह सचमुच तैयार है ! उसको निश्चित पता होगा कि राजकुमार यहाँ है।"

नाना भी मार्ग में प्रकट हुई। वह मछुये की पोशाक पहने थी; उसके हाथ व चेहरा—नेत्रों में केवल दो काले निशानों को छोड़कर बिलकुल सफेद थे। वह ग्रीन-रूम में नहीं घुसी, किन्तु साधारण रूप से मिगनन और फाचरी को देखकर उसने अपना सिर हिला दिया।

"शुभ-दिन, कैसे हो ?"

उसके बढ़े हुए हाथों को मिगनन ने केवल हिला दिया, और नाना अपने मार्ग में एक महारानी की सी चाल से बढ़ती चली गई। उसके पीछे-पीछे उसका पोशाक पहनाने वाला था, जो उसके एड़ियों पर चलने के साथ-साथ आगे बढ़कर स्कर्ट की धारियों पर अन्तिम हाथ लगाता जाता था। तब उस ड्रेसर के पीछे, जुलूस के पिछले सिरे की भाँति, सैटीन आगे बढ़ती चली जा रही थी और भद्र-महिला की तरह बनने का प्रयत्न करती जाती थी, किन्तु वास्तव में वह अत्यधिक उदास थी।

"और स्टेनियर ?" मिगनन ने अचानक पूछा।

"मोन्सियर स्टेनियर कल लाइरेट के लिये चले गये हैं", बेरीलोट ने स्टेज की ओर जाते हुए कहा : "मेरा विश्वास है कि वे कस्बे में एक निवास-स्थान ठीक करने गये हैं।"

"आह ! हाँ, मैं जानता हूँ; नाना के लिये एक स्टेट लेने।"

मिगनन अति गम्भीर हो गया। उस स्टेनियर ने रोज को एक बार एक हवेली देने का वचन दिया था। ठीक है, यह किसी के साथ झगड़ा करने की बात नहीं है। वह एक अवसर था जो उसने खो दिया, जो उसको अवश्य ही प्राप्त करना चाहिये था। वह विचारों में तल्लीन, किन्तु अपने पर जगा हुआ; अग्नि-कुण्ड से दर्पण तक अनेक बार चल फिर गया। ग्रीन-रूम में केवल वह व फाचरी रह गये थे। पत्रकार, थका हुआ सा, आराम कुर्सी पर

सीधा हो गया ; और बहुत शान्त होकर, अपनी अधमुँदी आँखों से आस-पास जाने-आने वालों को देखता रहा। जब वे अकेले थे तब मिगनन ने उसे मारना-पीटना छोड़ दिया। उससे लाभ ही क्या होगा जब उस मनोरंजन का आनन्द लेने वाला ही कोई न होगा। चुहलबाज पति के रूप में मनोरंजनार्थ खिलवाड़ करने की चिन्ता भी वह उस क्षण कम कर रहा था। इस संक्षिप्त विश्राम से सन्तुष्ट होकर फाचरी आग के सामने और सीधा होकर पड़ रहा तथा उसकी आँखें बैरोमीटर से घड़ी और घड़ी से बैरोमीटर पर घूमती रहीं। मिगनन ने अपनी चाल को रोका और वह पोटियर के चित्र के सामने स्थिर हो गया जिसको वह बिना देखे ही देखता रहा। तब वह खिड़की पर गया और नीचे के अँधेरे आँगन की ओर झांकने लगा। वर्षा बन्द हो गई थी और वहाँ गहरा सन्नाटा छाया हुआ था तथा वातावरण कोयले की गरम आँच व गैस-बत्तियों से विकृत हो चुका था। स्टेज से कोई शब्द सुनाई नहीं दे रहा था। जीना व रास्ता क़ब्र की तरह शान्त थे। वह नाटक के किसी अंक के समाप्त होने के बाद की सी शान्त उदासी थी जब कि सारी कम्पनी कान फोड़ने वाले शोर के बीच किसी दृश्य को पूरा करने में जुटी हुई थी और रिक्त ग्रीन-रूम में दम घुटने का सा प्रभाव था।

"ओह छिछोरी औरतें।" अचानक बार्डनोव ने भर्राये स्वर में कहा।

वह अभी-अभी पहुँचा था और अपनी कोरस की दो लड़कियों पर गरज रहा था जो स्टेज पर मूर्खों की भाँति एक प्रकार से गिर पड़ी थीं। जब उसने मिगनन और फाचरी को देखा तो कुछ दिखाने के लिये उसने उन्हें बुलाया। राजकुमार ने अभी-अभी यह अनुमति माँगी थी कि वह दृश्यों के बीच में ही ड्रेसिंगरूम में नाना को सम्मानित करेगा। किन्तु जब वह उन्हें स्टेज पर लिये जा रहा था तभी स्टेज-मैनेजर निकट से निकला।

"उन कमीनी फर्नेन्डे और मेरिया पर जुर्माना तो करो," बार्डनोव ने चीखते हुये कहा। तब अपने को शान्त करके और एक पिता तथा राजपुरुष की सी भावना को प्रदर्शित करने का प्रयत्न करते हुये; अपने रूमाल को चेहरे पर घुमा कर वह बोला : "मैं जाकर हिज हाइनेस को ले आऊँगा।"

प्रशंसा के तूफानी वातावरण के बीच पर्दा गिरा। तभी स्टेज पर मन्द प्रकाश के बीच भीड़भाड़ एकत्र हो गई। फुटलाइट की रोशनी अब वहां नहीं थी। अभिनेता व उनके संचालक ड्रेसिंग रूम की ओर लपक रहे थे और बढ़ई लोग शीघ्रता में दृश्यावलियाँ बदल रहे थे। साइमन और क्लारिस अब भी स्टेज के पीछे रुकी हुई थीं और आपस में फुसफुसा रही थीं। अन्तिम दृश्य के बीच, दो लाइनों के मध्य उन्होंने अपना छोटा सा काम ठीक किया हुआ था। काम समाप्त हो गया यह सोचकर क्लारिस ने यह उचित समझा कि वह ला फेजो से न मिले जो यह नहीं चाहता था कि वह आगे कभी गागा के साथ जावे। यह ठीक होगा कि साइमन उसे जाकर समझा देवे कि एक स्त्री के पीछे इस तरह पड़ना ठीक नहीं है। संक्षेप में, वह उसके कार्य के लिये उसे भेजने जा रही थी।

तब साईमन, हास्य-अभिनय में धोबिन की पोशाक पहने और अपने रोयेंदार कोट को कन्धे पर ओढ़े, तंग घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ गई जिसकी सीढ़ियाँ चिकनी व दीवालें नम थीं और जो द्वार-रक्षिका के कमरे को जाती थीं। यह कमरा अभिनेताओं और मैनेजर के जीनों के बीच में स्थिर था और कांच के द्वार से जो बायें-दाहिने को बन्द होता था, पृथक किया गया था। और लगता था कि यह आरपार दिखाई देने वाली कोई बड़ी सी लालटेन हो जिसके ऊपर बहुत ऊँचाई पर दो गैस लैम्प जल रहे हों। उसमें कबूतरखाने का सा एक बक्सा रक्खा हुआ था जिसमें चिट्ठियां और समाचार पत्र इत्यादि भरे हुये थे। मेज पर धरी हुई गन्दी तश्तरियों पर फूलों के गुलदस्ते पड़े हुये थे और एक पुरानी 'बाडिस' रक्खी हुई थी जिसके बटन लगाने के छेदों की मरम्मत करने में द्वार-रक्षिका व्यस्त रहती थी। इस अस्तव्यस्तता के बीच जो एक कूड़ेघर सा प्रतीत होता था, कुछ अधिक शौकीन नौजवान, बड़ी सुन्दर वेशभूषा से सुसज्जित और हलके 'किड' के दस्ताने पहने हुये, आगे बढ़े हुये पायों की पुरानी चार कुर्सियों पर धीर-गम्भीर चेष्टा में टिके हुये थे, और प्रत्येक बार मैडम ब्रान के थ्येटर के अन्दर से आने पर अपने लिये कुछ निर्देश लाने के विचार से अपने सिर घुमा लेते थे। उसने अभी-अभी एक पुर्जा एक नौजवान को लाकर दिया था जो गैस-लैम्प की रोशनी में देखने के लिये हॉल

की ओर लपका और तुरन्त उसी चिर परिचित वाक्य को पढ़कर, जिसको उसने उसी स्थान पर अनेक बार पहले भी पढ़ा था, पीला पड़ गया—"आज रात को नहीं, डकी; आज मैं व्यस्त हूँ।" लॉ फेलो, मेज और स्टोव के बीच में रक्खी कोने वाली कुर्सी पर बैठा हुआ था। पूरी संध्या वहीं व्यतीत करने को वह वहां प्रस्तुत प्रतीत हो रहा था, वैसे वह कुछ उतावला अवश्य था और अपने लम्बे पैरों को कुर्सी के नीचे दाबे हुये था क्योंकि छोटे-छोटे काले बिलौटे उछल-कूद मचा रहे थे, तभी उनकी बूढ़ी मां अपनी पीली आँखों से उसकी ओर गौर से देखती हुई बैठ गई थी।

"क्या! तुम यहाँ, महाशय साइमन? तुम क्या चाहते हो?" द्वार-रक्षिका ने प्रश्न किया।

साइमन ने लॉ फेलो को उसके निकट भेज देने को कहा, किन्तु मैडम ब्रान ऐसा तुरन्त न कर सकी। कुर्सियों के बीच में, गहरे कप-बोर्ड की भाँति उसने एक छोटा सा 'तहखाना' बना रक्खा था; जहां लोग दृश्यों के बीच के अवकाश काल में कुछ पीने आते थे और चूंकि उस क्षण ४-५ बड़े लोग वहाँ जमे हुये थे और 'बाउल न्वायर' की नकाबें पहने हुये थे, जैसे सभी बड़ी जल्दी में थे तथा शराब के लिए चीख़ रहे थे अतः वह किंचित हड़बड़ाहट में थी। कपबोर्ड के ऊपर चमकने वाली गैस लाइट की सहायता से यह दिखाई दे रहा था कि एक मेज टीन से ढकी हुई रक्खी हुई है जिसकी दराजें अधखाली बोतलों से भरी हुई हैं। इस कोयला-घर का द्वार जब खुला तो [१] अलकोहल की तेज़ गन्ध बाहर फूट निकली जिसके साथ जलती चरबी की बदबू भी थी जो हर समय कमरे को घेरे रहती थी। साथ ही गुलदस्तों की तेज महक, जो मेज पर रक्खे थे, अलग ही उभर रही थी।

"तो", जब द्वार-रक्षकों ने थ्येटर से सम्बन्धित प्रमुख लोगों की आवभगत समाप्त कर ली तब उसने कहना प्रारम्भ किया: "वह जो छोटा सा गहरे रंग का आदमी बैठा है, उसके सम्बन्ध में तुम कहना चाहती हो।"

---

१. नशीला द्रव पदार्थ

"नहीं, बदतमीजी मत करो !" साइमन ने कहा : "वह पागल सा है जो स्टोव के सामने बैठा है, और जिसका पाजामा तुम्हारी बिल्ली सूँघ रही है।"

और तब वह लॉ फेलो को हॉल में ले आई, जबकि अन्य व्यक्ति जो आधे दमघुटे से हो रहे थे पूर्ववत स्थिर बैठे रहे और जीने पर खड़े खड़े सुपर्स पीते रहे और आपस में नशे की झोंक में शोर-गुल और बकवास करते रहे। सीढियों से ऊपर बार्डनोव दृश्य बदलने वालों पर जो अब भी दृश्य बदलने में लगे हुये थे, दहाड़ रहा था : "इतना समय हो गया—व्यर्थ का काम हो रहा है, इनमें से कुछ जरूर राजकुमार के सिर पर गिरेंगे।"

"तब, सब को एक साथ पीछे लिपेट कर ढकेल दो।" उस कार्यकर्ता-समूह के प्रमुख ने जोर से कहा।

अन्त में पीछे की ओर अन्तिम-पर्दा उठा दिया गया और स्टेज खाली छोड दिया गया। मिगनन ने जो फाचरी को देखता जा रहा था, समय पाकर अपनी विनम्र चेतना को जागरूक रक्खा। उसने उसको अपने कड़े हाथों में दबोच लिया और चिल्लाकर बोला : "सावधान रहो, वह खम्भा तुम्हारे ऊपर गिरने ही वाला था।"

और वह उसको घसीट कर एक ओर हो गया। तब उसे पूर्ववत भूमि पर स्थिर करने के पहले उसने उसे कसकर झकझोर डाला। मजदूर जब हँस पड़े तो फाचरी पीला पड़ गया। उसके ओठ फड़फड़ा उठे, और वह अपने आवेश में प्रत्युत्तर देना ही चाहता था कि मिगनन बड़े सरल भाव से उसके निकट आया और बड़े स्नेह से उसके कन्धों को इतने जोर जोर से थपथपाते हुये जिससे वह दोहरा हो जाता था प्रत्येक बार कहता गया, "तुम जानते हो, मुझे तुम्हारी बड़ी चिन्ता रहती है। सचमुच, मैं डरता ही रहता हूँ कि तुम्हारे साथ कोई घटना न घटित हो जावे।"

तभी एक फुसफुसाहट एक से दूसरे के मुँह तक फैलती चली गई। "राजकुमार ! राजकुमार !" और प्रत्येक उस छोटे द्वार की ओर देखता रहा जिसमें होकर उन दर्शकों तक पहुँचा जा सकता था। प्रथम तो केवल बार्डनोव

की पीठ और उसकी कसाई की सी गर्दन दिखाई दी, जो कभी उठती, कभी हिलती और कभी अनेक बार झुक कर सम्मान करने की व्यस्तता में नीचे-ऊपर होती जाती थी। तब राजकुमार सामने आया, जो काफी ऊँचा व सुडौल था तथा सुन्दर दाढ़ी के साथ गहरे गुलाब के रंग की आकृति में, अपने में पूर्ण पुरुष सा दिख रहा था, तथा जिसका गठा हुआ शरीर चुस्त ओवर-कोट में दर्शनीय बना हुआ था। उसके पीछे काउन्ट मुफट और मारक्युस डि. चोरड थे। थ्येटर का वह कोना, जिसमें ये लोग थे, अधिक गहरा था। वे निरन्तर परिवर्तित होने वाली परछाइयों के बीच गुम हो गये। महारानी के इस कुमार के सम्बन्ध में कुछ कहने पर, जो राज सिंहासन का भावी उत्तराधिकारी था, बार्डनोव ने शेरों को सिखाने वाले की सी आवाज में बोलना प्रारम्भ किया और भावावेश में लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ता गया। वह कहता गया :

"योर हाईनेस ! कृपा करके मेरे साथ आवें—क्या, योर हाईनेस ! कृपा करके इस मार्ग से आवें ! योर हाईनेस, कृपया सावधानी से चलें··· ।"

राजकुमार को तनिक भी शीघ्रता न थी। इसके विपरीत उसने बड़े चाव से दृश्य बदलने वालों के कार्य-कलापों को देखा और रुका रहा। गोलाई में लिपटा एक पर्दा अभी-अभी नीचे गिराया गया और चमकती गैस-लैम्पों की रोशनी जिस पर तार की जाली कसी हुई थी; नीचे स्टेज पर जगमगा गई। मुफट, जो इस प्रकार थ्येटर के दृश्यों के पीछे कभी नहीं गया था, आश्चर्य में डूब गया और अप्रिय आवेश में घिरता चला गया जिसमें संदिग्ध अनिच्छा के साथ-साथ एक डर भी मिला हुआ था। उसके ऊपर लिपटे हुए अन्य पर्दों के घेरों को देखा जिन पर से आती हुई गैस-लाइट नीचे को झुकी हुई थी, जो नन्हे-नन्हे नीले तारक समूहों की भाँति उस लकड़ी के घेरे के बीच जगमगा रही थी। वहाँ रस्से और अनेक बड़ी-छोटी खूँटियाँ थीं जो सारे स्टेज को लटकाये हुए थीं और दूर तक फैले हुए पीछे वाले पर्दे थे ; लग रहा था जैसे बड़े भारी-भारी कपड़े के थान सुखाने के लिये फैलाये गये हों।

"हमें चलना चाहिये !" अचानक मुख्य दृश्य-परिवर्तक ने कहा।

और तब राजकुमार ने स्वयं काउन्ट को सचेत करने का कष्ट किया। पीछे का एक ड्राप-सीन नीचे गिराया गया। वे तीसरे अङ्क की दृश्यावलियाँ सजा रहे थे—वहीं माउन्ट एटेना की गुफा थी। कुछ लोग नीचे भूमि पर उसी उद्देश्य से बने स्थानों पर खम्भे लगा रहे थे; कुछ घेरे ला रहे थे जो दीवार के सहारे टिकाये जा रहे थे और खम्भों के साथ मोटी रस्सियों में बाँधते जाते थे। स्टेज के पीछे एक लैम्प-लाइटर में कई लाल बत्तियाँ जल रही थीं जिनसे अग्नि-देवता की दहकती भट्टी की परछाई पड़ रही थी। वहाँ सर्वत्र एक व्यस्तता और उधेड़-बुन लगी हुई थी किन्तु सब कुछ व्यवस्थित था; और इस सब शीघ्रता में निर्देशक, ऊपर-नीचे टहल रहा था और अपने पैर सीधे कर रहा था।

"योर हाईनेस, मैं अत्यधिक आनन्द से भर गया हूँ", बार्डनोव अब भी निरन्तर झुकते-झुकते कहता रहा: "थ्येटर कुछ विशेष लम्बा नहीं है, हम जितना कर सकते हैं, अच्छे से अच्छा करने का प्रयत्न करते हैं। अब यदि योर हाईनेस मेरे साथ आने की कृपा करें।"

काउन्ट मुफट पूर्व से ही उस मार्ग की ओर घूम चुका था, जो ड्रेसिंग-रूम की ओर जाता था। स्टेज का तीव्र आकर्षण उसे चकित किये रहा; किन्तु उसकी घबड़ाहट का कारण वे तख्ते थे जो उसके पैर के पास से निरन्तर काये जा रहे थे? खुले हुए ट्रेप-डोर से नीचे जलती गैस-लाइट स्पष्ट झलक रही थी। वह एक प्रकार से जमीन के अन्दर की सी दुनियाँ थी जिसमें गहरे तथा विचित्र कुण्ड बने हुए थे जिसके अन्दर से मानव-ध्वनियाँ प्रतिध्वनित होती थीं और नम गन्ध उभरती थी जो तंग गुफाओं की भाँति विचित्रता लिये हुए थी। किन्तु जैसे ही वह आगे बढ़ा, एक छोटी दुर्घटना ने उसे रोक लिया। दो छोटी स्त्रियाँ तीसरे अङ्क की पोशाक में पर्दे के पीछे से झाँकने वाले छेद के निकट खड़ी बातें कर रही थीं। उनमें से एक आगे को झुकी हुई व उस छिद्र को अपनी उँगली से अधिक फैलाते हुए, ताल के चारों ओर देख रही थी जिससे और साफ दिखाई दे सके।

"मैं उसे देख रही हूँ", उसने अचानक कहा, "ओह ! कैसा मूर्ख ।"

बार्डनोव को एक जोर का धक्का सा लगा । वह बड़ी कठिनाई से उसको ठोकर मार कर पीछे ढकेलने के आवेश को रोक सका । किन्तु राजकुमार हँसा । उन शब्दों को उड़ते-उड़ते सुनकर वह प्रसन्न हुआ और आकर्षित भी । वह उन छोटी औरतों को विनम्रतापूर्वक देखता रहा जिनको हिज़ हाईनेस की किंचित भी चिन्ता न थी । वह निर्लज्जतापूर्वक हँस दी । जो हो, बार्डनोव ने राजकुमार को आगे बढ़ा दिया । काउन्ट मुफट ने पसीने की परेशानी में अपना हैट उतार लिया । उसको सर्वाधिक कठिनाई उस स्थान और वातावरण की तंगी से हो रही थी जिसने एक प्रकार की गरमाहट सी उत्पन्न कर दी थी, और एक प्रकार से वह गहन बना दिया था जिसमें एक गहरी गन्ध घुमेड़ ले रही थी । वह पीछे के दृश्यों की गन्ध थी; वह गैस लाइट की दुर्गन्धि थी, दृश्यों की गोंद की चिपचिपाहट थी, इधर-उधर के कोनों की नम धूल थी और स्त्री-कार्यकर्त्रियों की स्नान न किये हुये शरीरों की गन्ध थी जो उभर रही थी । वह गन्दे पानी के जमाव के साथ ही खुशबूदार साबुन की सुगन्धि थी जो ड्रेसिंगरूम से उड़कर बाहर आती थी तथा वह समय-समय के जहरी उफान के बीच की गन्दी साँस भी थी जो उसके साथ मिली जुली थी । वह जैसे ही बढ़ा तो काउन्ट ने शीघ्रता में जीने को देख डाला जिस पर आती हुई प्रकाश की उभरती आभा और गर्मी से वह सीढ़ियों पर चढ़ते हुये गिर गया । ऊपर से मनुष्यों के हाथ मुँह धोने की आवाजें, खिलखिलाहट और एक दूसरे को पुकारने के स्वर, द्वारों के बन्द होने व खुलने के तीव्र स्वर, स्त्रियों से उभरती सुगन्धि, मेक-अप की कस्तूरी महक के साथ पीली-लाल खोपड़ियों के पसीनों की गन्ध निरन्तर आ रही थी । वह रुका नहीं और अपने पैर जल्दी में आगे बढ़ा दिये । अपने उस अब तक के अनदेखे संसार के अचानक दर्शन से आवेशपूर्ण होने की दशा में, वह बढ़ता चला गया ।

"यह, थ्येटर तो बड़ा कौतुकपूर्ण स्थान है, क्या नहीं है ?" अपने उस घरेलू अपनेपन की भावना से पुनः प्रसन्न होते हुये मारक्युस डि. चौरड ने अपना मत व्यक्त किया ।

तब बार्डनोव मार्ग के अन्त में स्थित नाना के ड्रेसिंग-रूम में पहुँच गया। उसने द्वार के हैन्डल को सरल भाव से घुमा दिया और किनारे खड़े होकर, बोला 'योर हाईनेस, कृपापूर्वक अन्दर आवें।"

वह एक स्त्री की पीठ थी जो अचानक उभर आई थी। तब नाना, कमर तक नंगी दिख गई। वह लपकी और उसने अपने को एक पर्दे के पीछे छिपा लिया जबकि उसका 'ड्रेसर', जो उसको सुखाने में व्यस्त था, तौलिया हाथ में लिये खड़े का खड़ा रह गया।

"ओह, इस प्रकार कमरे में प्रवेश करना कितना भद्दा है", अपने छिपने के स्थान से नाना ने कहा: "अन्दर मत आओ, तुम अच्छी तरह देख रहे हो। तुम अन्दर नहीं आ सकते।"

इस लज्जा से बार्डनोव कुछ अव्यवस्थित हो गया: "भागो मत, माई डीयर, इसकी किंचित् भी आवश्यकता नहीं है", उसने कहा: "हिज़ हाईनेस यहीं हैं। बाहर आओ, बच्चा मत बनो।" और जब उसने बाहर आने को मना किया तो वह एक क्षण को तो स्तम्भित रह गया किन्तु उसने पुनः हँसना प्रारम्भ करते समय कर्कश किन्तु बुजुर्गों जैसे स्वर में कहा, "क्या है ? मुझे प्रसन्न करो ! ये भद्र पुरुष यह भली प्रकार जानते हैं कि एक स्त्री की रुचि क्या हो सकती है। वे तुम्हें खा नहीं जावेंगे।"

"किन्तु यह कुछ निश्चित भी नहीं है", रौब से राजकुमार कह गया।

सभी राजसभा की भाँति अतिरेक में हँस दिये: "बड़ा हास्यपूर्ण व्यंग्य, पूर्णतः पेरिस के अनुरूप", बार्डनोव का मत था। नाना ने आगे कोई उत्तर नहीं दिया। पर्दा हिला; निःसन्देह वह बाहर आने के लिये अपने मस्तिष्क को संतुलित कर रही थी। तब काउन्ट मुफट ने, जिसका मुख, अत्याधिक रक्तवर्ण हो उठा था अपने चारों ओर देखा। वह एक चौकोर कमरा था जिसकी छत बहुत नीची थी जिसके चारों ओर वेस्ट-इंडियन वस्तुयें लटक रही थीं। उसी प्रकार का एक पर्दा पीतल की छड़ पर लटक रहा था और चेम्बर के एक हिस्से को पूरा बन्द किये हुये था। दो बड़ी

खिड़कियाँ, थ्येटर के आँगन की ओर झाँक रही थीं जो कोढ़ सी दिखने वाली दीवार से केवल कुछ फीट दूर था, जिस पर रात्रि के अन्धकार में, शीशे की चौखटों मे पीले चौखटों की पंक्तियाँ दिखती थीं। एक बड़ा शेवल-ग्लास, संग-मरमर की ड्रेसिंग टेबल के सम्मुख खड़ा था, जो अनगिन काँच की बोतलों, प्यालों और हेयर आयल की शीशियों से ढका हुआ था; साथ ही सेन्ट, फेस-पाउडर तथा मेक-अप की अन्य आवश्यक सामग्री भी वहीं रक्खी हुई थी। उस शीशे के निकट पहुंच कर काउन्ट ने अपनी आरक्त आकृति को स्वयं पकड़ा जिस पर पसीने की कुछ बूँदें मस्तक पर छलछला रही थीं। उसने अपने नेत्र झुका लिये और अपने को ड्रेसिंग टेबिल के सामने स्थित करने को वह आगे बढ़ गया जिस पर साबुन के झागदार पानी का एक बर्तन, कुछ गीले स्पंज तथा कुछ अन्य हाथी दाँत की वस्तुयें इधर-उधर फैली रक्खी हुई थीं। इस सब ने एक क्षण को काउन्ट का मस्तिष्क डुबा दिया। जैसी अशान्त भावना का अनुभव नाना से मिलने जाने पर उसे बाउलेवार्ड हाशमैन में हुआ था वैसी ही मन:स्थिति ने उसे यहाँ भी घेर लिया। उसे लग रहा था जैसे उसके पैरों के नीचे पड़े कालीन में वह धंसा जा रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो ड्रेसिंग-टेबल तथा शीशे के दोनों ओर जलते गैस-लैम्प उसी दहकती भट्टी की भाँति हों जिसकी लपटें उसके माथे के चारों ओर उभर रही हैं। एक मिनिट को, उस नारी-मय सुगन्धि के घेरे में, डर से बेहोश हो जाने की सी अवस्था में, जहां बड़ी गरमाहट थी और जिसमें छत की नीचाई से दस गुना अधिक नीचा-पन था जिसको उसने दुबारा देखा और वह मोटे गद्देदार सोफे के एक कोने पर बैठ गया। वह दो खिड़कियों के बीच में रक्खा था। वह अचानक उठ खड़ा हुआ और ड्रेसिंग टेबल के निकट आ गया। उसने किसी वस्तु का निरीक्षण नहीं किया, किन्तु वह अपनी आंखों में एक अस्थिर चंचलता लिये हुये था और ट्यूबरोज़ (गुलाब के फूलों) के एक गुलदस्ते का ध्यान कर रहा था जो उसके कमरे में बहुत समय पूर्व सूख गया था और जिसकी भयंकर और चैतन्य महक ने उसे एक प्रकार से मार ही डाला था। जब 'ट्यूबरोज़' नाश हो जाते हैं तो उनमें एक प्रकार की मानव गन्ध प्रगट होती है।

"जल्दी करो।" पर्दे के पीछे अपना सिर ले जाकर बाडेनोव बुदबुदाया।

राजकुमार, इस बीच, मरक्युसि डि. चोरड की बात को, विनम्र भाव से सुन रहा था, जो ड्रेसिंग-टेबल से खरगोश का एक पैर उठा कर यह समझा रहे थे कि अभिनेत्रियाँ किस प्रकार उससे पाउडर लगाती हैं। सैटीन, एक कोने में बैठी थी। और उस क्षण उसकी आकृति में कौमार्य की सी विशिष्टता प्रतीत हो रही थी। वह निरन्तर उन महानुभाव को देख रही थी। जब कि ड्रैसर—मैडम जूल्स—वीनस की पोशाक के 'ट्यूनिक' और चुस्त कपड़े तैयार कर रही थी। मैडम जूल्स की अब कोई अवस्था नहीं थी। उसका चेहरा सूखे चमड़े सा दिखाई देता था और उसकी भाव-भंगिमा सदैव अपरिवर्तित रहती थी। वह उस पुरानी दासी की तरह थी जिसने कभी जैसे यौवन देखा ही न हो। पेरिस के उन मान्यता प्राप्त विशिष्ट पेटों और वक्ष-भागों के मध्य, वह ड्रेसिंग-रूमों के गरम वातावरण में ही सूख गई थी। वह सदैव मुरझाई हुई काली पोशाक पहनती थी तथा उसकी सपाट एवं यौन-गुण-रहित वक्ष में हृदय के निकट ही अधिक संख्या में पिनें चुभी रहती थीं।

"आप मुझे क्षमा करें, महानुभाव", नाना ने पर्दे के किनारे हटते हुये कहा, "मैं अचानक घेर ली गई।"

प्रत्येक उसकी ओर घूम गया। उसने बिलकुल कोई वस्त्र नहीं पहन रक्खा था किन्तु एक *'केम्ब्रिक चेमिसेट' के बटन लगा रक्खे थे जो उसके उरोजों को आधा ढक पाये थे। जब सब लोग अचानक आ पहुँचे थे तब तक उसने अपने आधे वस्त्र उतार पाये थे और जल्दी में अपनी मछुये की पोशाक को उतार ही रही थी। उसके सेमीज का छोर उसकी दराज को खोलने पर दिखाई दे सकता था। अपनी नग्न बाहुओं और कन्धों तथा कड़े उभरते उरोजों, माँसल नवयौवन एवं सुकुमार सौन्दर्य की ताजगी के बीच वह एक हाथ से पर्दे को पकड़े रही जैसे उसको दुबारा खींच लेने को तत्पर हो, यदि उसको किंचित भी कोई डर समक्ष दिखाई दे।

---

*वक्ष पर पहनने का कपड़ा

"हाँ, मैं अचानक पकड़ली गई। मैं ऐसा साहस कदापि नहीं कर सकती—" अपने को बड़ी हैरानी में प्रदर्शित करने का मिथ्या आडम्बर दिखाती हुई अपनी गर्दन को सलज्ज डुलाते हुये एवं मस्ती की स्थिति की सी मुस्कराहट में बल खाती हुई वह कह गई।

"ओह! नानसेन्स!" बाईनोव बोला, "तुम इस क्षण जैसी हो अति सलौनी दिख रही हो।"

झिझक के कुछ अन्य मादक भाव प्रकट करते तथा कँपकँपाते हुये, जैसे उसे छेड़ा जा रहा हो, वह दोहराती गई, "हिज हाईनेस मेरा इतना सम्मान करते हैं। अपनी इस स्थिति में उनका स्वागत करने के लिये मैं हिज हाईनेस से क्षमा-याचना करती हूँ।"

"वह मैं हूँ, मैडम, जो यों अनधिकृत अवरोध कर बैठा।" राजकुमार ने कहा, "किन्तु तुम्हारी प्रशंसा करने की बलवती इच्छा को मैं सचमुच नहीं रोक पाया।"

'ड्रापर' पहने हुये, पुरुषों के बीच से, वह ड्रेसिंग-टेबिल तक गई। उपस्थित व्यक्तियों ने अलग हट कर मार्ग दे दिया। 'ड्रापर' में उभरे उसके माँसल नितम्ब भारी गुब्बारे से प्रतीत हो रहे थे साथ ही अपनी उभरी वक्ष को फैलाते हुये अपनी लजीली मुस्कान से वह अपने अतिथियों का स्वागत करती रही। यकायक उसने काउन्ट मुफट को पहचाना, और एक मित्र की भांति उनसे हाथ मिलाया और तब अपने यहाँ भोज में न आने का उसने उलाहना दिया। हिज हाईनेस अपने सामान्य भाव से काउन्ट मुफट को इस पर कुछ भला बुरा कहना चाहते थे जिसने बड़े परिश्रम से स्पष्टीकरण के लिये उत्तर सोच पाया था किन्तु साथ ही उसके गरम हाथ में अभी-अभी मुलायम उँगलियाँ आ दबी थीं जो इतनी शीतल थीं जितना वह पानी जिससे वे अभी-अभी धोई गई थीं, और इस सिहरन से वह पृथक ही रोमांचित हो रहा था। काउन्ट ने प्रिन्स के यहाँ डट कर भोजन किया था। वह बहुत खाने वाला व अत्यधिक पीने वाला था। वे दोनों ही वास्तव में, नशे

की झोंक में थे किन्तु वैसा वे भासित नहीं होने दे रहे थे। अपनी उलझन को दाबने के लिये उस क्षण वहाँ फैली गर्माहट के प्रति वह मुफट केवल इतना कह सका।

'यहाँ कितनी गर्मी है,'' उसने कहा : "मैडम, तुम कैसे ऐसी गर्मी में जिन्दा रहती हो।"

वार्तालाप यहाँ से प्रारम्भ होने को ही था कि द्वार पर जोर-जोर की आवाजें सुनाई दीं। बार्डनोव ने एक तख्ता सरका दिया जिससे एक विद्यालय की भाँति झांकने वाला एक छेद बन्द हो गया। वह फान्टन था जो प्रुलियर और बास्क के साथ था। तीनों शैम्पेन की अपनी-अपनी बोतलें बगल में लिये थे। उनके हाथों में भरे हुये गिलास थे।

वह खट्खट करता तथा जोर-जोर से चिल्लाता कि उसका पवित्र-दिन है और इसीलिये वह शैम्पेन जमा रहा है। नाना ने राजकुमार से दृष्टि-विनिमय किया। "क्यों, ठीक है! हिज हाइनेस किसी के मार्ग में अवरोध नहीं बनना चाहते। उनको स्वयं भी बड़ी प्रसन्नता होगी। किन्तु बिना-अनुमति की चिन्ता किये", फान्टन यह कहता हुआ कमरे में घुस आया।

"मैं कोई नीच पुरुष नहीं हूँ; मे शैम्पेन बर्दाश्त कर लेता हूँ।"

किन्तु अचानक उसने राजकुमार को देखा। वह नहीं जानता था कि वह वहाँ है। वह थोड़े में चुप हो गया और मसखरेपन की सी भोली सूरत बनाता हुआ बोला :

"बादशाह डेगोबर्ट बाहर हैं और पीने के लिये 'योर रायल हाईनेस' की स्वीकृति मांग रहे हैं।"

राजकुमार मुस्करा दिया तो सभी ने जाना वह कोई बड़ी हँसी की बात थी। जो हो, ड्राइङ्ग रूम इन सबों के लिये बहुत छोटा था। वे विवश होकर एक दूसरे से सटे खडे थे। सैटीन और मैडम जूल्स कमरे के दूसरे छोर पर पर्दे के सामने थीं। शेष सब लोग एक दूसरे से मिले-जुले नाना के चारों ओर खड़े थे जो अर्ध-नग्न थी। वे तीनों अभिनेता उस क्षण भी दूसरे अंक की पोशाक में थे। प्रुलियर, स्विस एडमिरल का अपना टोप उतार आया

था क्योंकि उसकी ऊँची और भारी कलंगी छत को छू सकती थी। बास्क अपने जामुनी रंग के लम्बे कुर्ते में था और टीन का मुकुट पहने हुये था किन्तु अपने नशे की झोंक में लड़खड़ाते पैरों को स्थिर करता हुआ वह राजकुमार का स्वागत कर रहा था ; जैसे कोई राज्य अपने सुदृढ़ पड़ोसी के पुत्र का सम्मान कर रहा हो। शराब ढाली गई और उन्होंने अपने गिलास खनखना दिये।

"योर हाइनेस के सम्मान में मैं पी रहा हूँ।" अत्यधिक राज्य सम्मान प्रदर्शित करते हुये पुराना बास्क बोला।

"सेना के सम्मान में !" प्रुलियर बोला।

"वीनस के सम्मान में !" फान्टन चिल्लाया।

राजकुमार स्वीकृत भाव से खड़ा अपने हाथ के चश्मे को सँभाल रहा था। वह रुका और तब तीन बार झुक झुक कर कह गया—"मैडम एडमिरल-सर।"

और तब वह एक घूंट में शराब चढ़ा गया। काउन्ट मुफट और मार-क्युस डि. चोरड ने भी वही किया। तब वहाँ अधिक व्यंग्य-हास्य न होकर वातावरण में राज्य परिषद् की सी गम्भीरता छा गई। थ्येटर का वह संसार उनके अपने वास्तविक संसार को भुला रहा था जो गम्भीर रहस्यवाद के रूप में गैस की उस गरम चमक में प्रकट हो रहा था। यह भूलकर कि वह अपने 'ड्राअर' में है, नाना अपने सेमीज के छोर को उभार रही थी और भव्य नारी रानी वीनस की भाँति सरकार के विशिष्ट व्यक्तियों के सम्मुख अपनी अन्तरतम माँगों को भूलकर मांसलता का नग्न प्रदर्शन करती जाती थी। प्रत्येक वाक्य के साथ वह ये शब्द जोड़ देती, 'रायल हाईनेस' जिन्हें वह अधिक सम्मानसूचक भावाभिव्यक्तियों से प्रकट करती जाती थी और वह उन नकाबपोश बास्क व प्रूलियर को यों देख रही थी जैसे कोई महारानी अपने प्राइम-मिनिस्टर (मुख्य-मंत्री) के साथ हो। उस विचित्र संगम-काल में कोई मुस्कराया नहीं। वहाँ, एक वास्तविक राजकुमार जो उस समय का राज्य-उत्तराधिकारी था, एक मटर-गश्त की भाँति शराब पी रहा था और देवताओं के उस कार्नीवाल में पूर्ण सन्तोष का अनुभव कर रहा था। अपनी राज्य-सत्ता के उस आडम्बर में वैसी

भीड़ के सम्मुख वह सब हो रहा था जो ड्रेसर और छिछोरी औरतों से मिल-कर बनी थी और ऐसे लोगों के बीच में वह था जो औरतों के खिलाड़ी या प्रदर्शक थे। उस दृश्यावलोकन से बार्डनोत्र अत्याधिक प्रभावित होकर सोचता रहा—काश, हिज हाईनेस इसी रूप में 'ब्लान्ड वेनस' के द्वितीय अंक में स्वयं अवतरित हो जावें तो उसे कितना धन प्राप्त होगा।

"मैं कहता हूँ!' अत्यधिक अपनेपन से वह बोला। "मैं अपनी सब छोटी औरतों को गिराऊँगी।"

किन्तु नाना ने इसका विरोध किया जैसे अपने आपको भुला बैठी हो! वह अपने चित्रकारी किये हुये चेहरे से उसे आकर्षित करती रही। वह उसके सन्निकट खड़ी रही और उसकी ओर गर्भवती स्त्री की भाँति कोमल भावना से निहारती रही जो अनुचित इच्छा से वशीभूत हो। तब अचानक उसने अत्याधिक अपनेपन से उससे कहा:

"आओ, आओ मेरे प्यारे निनी!"

फान्टन ने पुन: गिलासों को भर दिया और तब वही दोहराते हुये पीता गया:

"हिज हाईनेस।"

"सेना।"

"वीनस।"

किन्तु नाना मौन बनी रही! वह अपने गिलास को सिर से ऊँचा उठाते हुये बोली, "नहीं, नहीं, हम फान्टन के हेतु पियेंगे। यह फान्टन का पवित्र दिन है। फान्टन के हेतु! फान्टन!"

तब उन्होंने गिलासों को तीसरी बार खनका दिया और वे सब कह उठे, "फान्टन।" राजकुमार, उस नवयुवती को, अभिनेता को नेत्रों से पीते देख कर उसकी ओर झुक गया।

"मोशियो फान्टन" अपनी सजीव विनम्रता से उसने कहा। "मैं तुम्हारी सफलता के हेतु पी रहा हूँ।"

हिज हाइनेस का ओवरकोट उनके पीछे रखी संगमरमर की ड्रेसिंग

टेबल से रगड़ खा रहा था। वह जैसे किसी बन्द आरामगाह की गहराइयों में घिर गया हो या किसी तंग बाथरूम में उलझ गया हो जहाँ 'बेसिन' व 'स्पँजों' से मादक सुगन्धि तथा कुछ हलके खट्टे ढंग की शैम्पेन की नशीली गन्ध हवा में उड़ रही थी। राजकुमार व काउन्ट मुफट—जिनके बीच में नाना इस क्षण खड़ी थी विवश होकर अपने हाथ इस प्रकार बाँधे खड़ी थीं कि प्रति क्षण हिलने-डुलने वाले नाना के नितम्बों अथवा वक्ष स्थल से वे छू न जावें। तथा मैडम जूल्स, बिना किसी उलझन के प्रतीक्षा में खम्भे की भाँति सीधी खड़ी थी, जबकि सेटीन अपनी सम्पूर्ण उद्दण्ड विचार-शक्ति से चकित सी राजकुमार व भद्र पुरुष को अभी शाम की पोशाक में देख रही थी कि वे किस प्रकार एक नग्न नारी के पीछे दौड़ रहे हैं और उसने सोचा कि भले दिखने वाले लोग भी वैसे नैतिक नहीं होते जैसे उन्हें होना चाहिये।

पुराना बैरीलोट अपनी घंटी टुनटुनाता हुआ मार्ग में आया। जब वह ड्रेसिंग रूम के द्वार पर आया और तीनों अभिनेताओं को उसी दूसरे अंक की पोशाक में देखा तो वह एकदम सुन्न हो गया।

"ओह, भले आदमियो", उसने कहा "जल्दी करो, दर्शकों की गैलरी में घंटी बज चुकी है।"

"कोई चिन्ता की बात नहीं!" बार्डनोव ने शुष्कतापूर्वक कहा, "दर्शक प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

वास्तव में, जब बोतलें खाली हो गई तो अभिनेता कपड़े पहनने चले गये और जाते समय झुक कर विदा लेते गये। चूँकि बास्क की दाढ़ी शैम्पेन से तर हो गई थी अतः उसने उसको अलग कर लिया और तब उसके अन्दर से निकली प्रशंसित मुद्रा में वह शराबी पुनः झलक गया जिसका रोबीला व काला चेहरा पुराने अभिनेता को स्पष्ट कर रहा था जो पीने वाला था। जीने के नीचे वह फान्टन से जिसकी आवाज कर्कश थी व जो राजकुमार को विस्मित करना चाहता था, यह सुना गया—

"तो, क्या मैंने उसे आश्चर्यचकित नहीं कर दिया?"

हिज हाइनेस, काउन्ट और मारक्युस अब भी नाना के निकट थे।

बार्डनोव बैरीलोट के साथ यह आदेश देता हुआ चला गया कि मैडम को सूचना देने के पूर्व पर्दा मत उठाना।

"क्षमा कीजियेगा, महानुभाव," कहते हुये तीसरे अंक की विच्छृङ्खल नग्नता की भूमिका में और अधिक प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से वह अपने चेहरे व कोमल बांहों को सँवारने के विचार से आगे बढ़ गई। राजकुमार मारक्युस डि. चोरड के साथ सोफे पर बैठा था। केवल काउन्ट मुफट खड़ा था। शैम्पेन के गिलासों का जोड़ा, जो उस दमघोट वातावरण में लिया गया था, नशे को और उभार रहा था। सैटीन ने जब देखा कि उसके मित्र उससे घिर चुके हैं तो वह चतुराई से पर्दे के पीछे हट गई और वहाँ प्रतीक्षा में एक ट्रङ्क पर बैठी रही। किन्तु खाली बैठे २ वह ऊब रही थी, जब कि मैडम जूल्स, बिना दायें-बायें देखे कमरे में चुपचाप इधर से उधर टहल रही थी।

"तुमने अपना रोन्डेऊ[1] बहुत बढ़िया गाया," राजकुमार ने कहा।

तभी रुक-रुक कर स्फुट वाक्यों में वार्तालाप प्रारम्भ हो गया। नाना प्रति बार उत्तर नहीं दे रही थी। अपने हाथों से थोड़ी ठंडी क्रीम अपने मुख व बांहों पर मलते हुये उसने सफेद पाउडर को एक तौलिये के कोने से लगा लिया। एक क्षण के लिये स्वयं को शीशे में न निहार कर, बिना तौलिये या रंग को हाथ से अलग किये वह राजकुमार की ओर निहारने लगी और हँस दी।

"योर हाईनेस, ये मुझे नष्ट कर रहे हैं," उसने कहा।

मेक-अप करना बड़ा जटिल कार्य था जिसको मारक्युस डि. चोरड ने बड़े हर्षित भाव से समझा। तब उसने इतना कहने का साहस किया:

"क्या आरकेस्ट्रा," उसने प्रश्न किया, "और अधिक सरलतापूर्वक तुम्हारे स्वर के मेल में ध्वनित नहीं हो सकता? वह तुम्हारी आवाज को दाब देता है जो अक्षम्य अपराध है।"

इस बार नाना नहीं घूमी। उसने खरगोश का पैर हाथ में लिया और बड़ी सतर्कता व कोमलता से वह उसे अपने चेहरे पर फेरती रही और ड्रेसिंग-टेबिल पर आगे को ऐसे झुकी रही कि उसके सफेद 'ड्राअर' से उभरते

१—एक गीत

गोलाकार मांसल भाग और उभर आये। उसके शेमीज का कोना अब भी बाहर को निकला हुआ था। यह व्यक्त करने के लिये कि वह उस पुराने व्यक्ति की प्रशंसक भावना से अपरिचित नहीं है, उसने अपने उभरे नितम्बों को तनिक उचका दिया। एक नीरवता बिखर गई। तभी मैडम जूल्स ने नाना के ड्राअर में एक छिद्र देखा। उसने अपने हृदय के निकट लगी एक पिन को निकाला और एक मिनट तक भूमि पर झुकी रही और नाना के पैर को सँभालती रही; जब कि नवयुवती, बिना यह जाने कि वह वहाँ है, अपने को पाउडर में लपेट रही थी किन्तु इस बात को सतर्कतापूर्वक ध्यान में रखते हुये कि कपोलों के ऊपरी भाग में किंचित भी कुछ नहीं लगाना है।

तब राजकुमार ने जब यह कहा कि यदि वह लन्दन में गाना गाने के लिये आवे तो सारा इंग्लैण्ड उसकी प्रशंसा करने के लिये उत्सुक होगा तो वह हर्षित होकर मुस्करा दी और तब एक सेकन्ड के लिये घूम गई। पाउडर के घेरे में उसका बांया गाल अत्यधिक सफेद हो रहा था। तब वह अचानक अधिक गम्भीर हो गई। वह गालों व ओठों पर लाली लगाना चाहती थी। तभी उसने अपने को शीशे के सन्निकट ले जाकर अपनी उँगली को एक प्याले में डुबोया और उसको अपनी आँखों में फेर लिया जिसे वह बढ़ाते हुये कान के निकट की कगार तक ले गई। सभी लोग आदरसूचक आकृतियों सहित बैठे रहे।

काउन्ट मुफट ने जरा भी कोई शब्द नहीं कहा। वह अपने यौवनकाल की स्मृतियों में डूब गया। कमरा, जिसमें वह अपने बाल्यकाल में रहता था, अत्यधिक शीतल था। तदनन्तर जब वह सोलह वर्ष का था, तब प्रत्येक रात्रि को अपनी माँ का प्यार लेता था और तब अपनी निद्रा में भी वह उस स्नेह की बर्फ की सी शीतलता का अनुभव करता रहता था। एक दिन जब वह अधखुले द्वार के निकट से जा रहा था तब स्नान करते हुये एक दासी की झलक उसे दिखाई दी, और केवलमात्र वही एक ऐसी स्थायी स्मृति थी जो उसके यौवन प्राप्ति काल से लेकर विवाह होने तक तंग करती रही। तब उसने अपनी पत्नी में दाम्पत्य-कर्तव्यों की अनन्य गहराई को देखा। उसने स्वयं अपने

में एक प्रकार के धार्मिक मोड़ को देखा। वह बड़ा हुआ, वह बूढ़ा हुआ, किन्तु तब भी मांसलता के व्यवहारों से अनभिज्ञ ही बना रहा, और गहन धार्मिक भावना में ही डूबा रहा तथा अपने जीवन को निर्देशों व नियमों के बन्धन में पूर्णतः जकड़े रहा। किन्तु अचानक वह इस अभिनेत्री के ड्राइङ्ग-रूम में एक प्रकार से पूर्ण नग्न बालिका के सहचर्य में जैसे उसने अपने को बंधा पाया। वह जिसने कभी काउन्टेस मुफट को अपनी मोजे की गेटिसें उतारते भी नहीं देखा था, इस क्षण एक नारी के प्रसाधन की गुह्य से गुह्य परिस्थितियों में सहायक हो रहा था। उन आकर्षक व मदहोश बनाने वाली सुगन्धियों के बीच वह डूबा था जो चारों ओर घिरे थालों व बासनों में भरी रक्खी थीं। उसका अपना अस्तित्व ही विरोध कर उठा था। इस अल्पकाल में ही नाना की उपस्थिति ने धीरे-धीरे जिस प्रकार उसको घेरा था उससे वह घबड़ा रहा था और सोच रहा था कि अपने बाल्यकाल में उसने उन पवित्र-कथाओं में ठीक पढ़ा था कि कैसे मनुष्य को शैतान घेर लेता है। वह शैतान में विश्वास करता था। उसके मस्तिष्क की उस चंचल स्थिति में नाना अपनी मुस्कानों व उद्दण्डताओं में भरे सम्पूर्ण शरीर से घेर रही थी। वह सचमुच मूर्ति-रूप एक शैतान ही थी। किन्तु वह मजबूत बनेगा, वह यह अवश्य जानेगा कि अपना बचाव कैसे करे।

"तब यह तय रहा," राजकुमार सोफे पर अँगड़ाई लेते हुये बोला: "अगले साल तुम लन्दन आओगी। तब तुम वहाँ ऐसा भव्य स्वागत पाओगी कि तुम फिर कभी फ्रान्स नहीं लौटोगी। आह! माई डियर! काउन्ट, तुम अपनी सुन्दर स्त्रियों का वैसा मूल्यांकन नहीं करते हो। हम उन सबको तुमसे छीन ले जायेंगे।"

"वह उन्हें छोड़ेगा नहीं," मारक्युस डि. चोरड ने द्वेष भाव से कहा जो ऐसे अवसरों पर खुल पड़ता था जैसा उस क्षण वह था। "काउन्ट स्वतः ही एक सौभाग्य है।"

काउन्ट के उस सौभाग्य को सुनकर नाना ने उसकी ओर कुछ ऐसे विचित्र प्रकार से देखा कि मुफट अत्यधिक क्रोधित हो गया। किन्तु उसमें क्रोध

की वह भावना कैसे आई इसका ध्यान करके वह स्वयं पर ही नाराज़ हो रहा था। वह सौभाग्यशाली है इस तथ्य को उस लड़की के सामने जानकर लज्जित होने की क्या बात है। वह उसे पीट सकता है। किन्तु नाना ने आगे हाथ बढ़ाकर बालों की एक पेंसिल को उठाते उठाते गिरा दिया; और जैसे ही वह उसे उठाने के लिये नीचे झुकी, काउन्ट ने शीघ्रता में आगे बढ़कर उसकी सहायता की। उसकी श्वासोच्छ्वास हिल-मिल गई। वीनस की सुनहली अलकें उसके हाथों पर आ गिरीं। वह एक आनन्दातिरेक था जो कठोर प्रायश्चित की भावना में लिपटा हुआ था; वह किसी कैथोलिक का वैसा आनन्द था जो पाप करते समय नरक से प्रतिक्षण डरता जाता है।

तभी पुराने बेरीलोट की आवाज़ बाहर सुनाई दी, "मैडम, क्या मैं घंटी बजाऊँ ? दर्शक-समूह अधिक उतावला हो रहा है।"

"अभी नहीं," बिना शीघ्रता किये नाना ने उत्तर दिया।

तब उसने अपनी बालों की पेंसिल को काले प्याले में डुबोया; उसकी नाक ने एक प्रकार से शीशे को चूम लिया। तब उससे सटकर उसकी बाईं आँख मुँद गई और उसने बड़ी मुलायमी से अपनी भौहों को पेन्ट किया। मुफट, उसके पीछे खड़ा देखता रहा। उसने उसे शीशे में देखा, जिसके भरे कन्धे और गर्दन गुलाबी परछाईं बिखेर रहे थे; और तब वह प्रयत्न करके भी अपनी दृष्टि को न फेर सका जो उस मुखड़े पर टिकी हुई थी जो एक मुँदे नेत्र से अत्यधिक उत्तेजक हो रहा था और जो हँसकर कपोलों पर गड्ढे उभार रहा था जैसे इच्छाओं के आर पार झांक रहा हो। जब उसने अपनी दाहिनी आँख बन्द की और पेंसिल फेरी तो मुफट को लगा जैसे वह उसे पूर्णतः पी जाना चाहता है।

"मैडम," उस पुराने नौकर की तीखी आवाज़ पुनः गूंजी। "वे अपने पैर पटक रहे हैं, वे कुर्सियां तोड़-फोड़ कर समाप्त कर देंगे। क्या मैं घंटी दूं ?"

"ओह ! उन पर धूल फेंको !" नाना ने नाराज़ होते हुये कहा : "घंटी दो; मैं परवाह नहीं करती। यदि मैं तैयार नहीं हूँ तो उनको प्रतीक्षा करनी ही होगी।" अचानक अपने को शान्त करते हुये वह उन व्यक्तियों की ओर

घूमी और मुस्कराते हुये कह गई, "यह ठीक है, कोई कुछ देर तक शान्तिपूर्ण वार्तालाप भी नहीं कर सकता।"

उसने अब अपना चेहरा व बाहें पूर्ण कर ली थीं। तब उसने अपनी उँगली से ओठों पर लालिमा की दो गहरी तहें लगा दीं। काउन्ट मुफट अब भी अधिक आवेशपूर्ण हो रहा था। वह पाउडर व प्रसाधन सामग्रियों की महक से परेशान हो रहा था। उस प्रसाधन की हुई सुन्दरता की असीम चाह में डूब रहा था जिसका मुख अत्यधिक लाल और जिसका चेहरा अत्यधिक श्वेत था तथा जिसके नेत्र सुविकसित हो रहे थे तथा मादक और काले गोलों में उभर रहे थे जैसे प्रेम में घायल हो गये हों! तभी नाना वीनस की पोशाक के कसाव कसने के लिये कुछ देर को अन्दर चली गई जहाँ उसने अपना ड्राअर उतार दिया। तब किंचित भी लज्जा की भावना के बिना उसने अपना शेमीज उतारा और अपने हाथ मैडम जूल्स की ओर फैला दिये जिसने कुर्ते की पतली बाहें उन पर चढ़ा दीं।

"अब लाओ, मैं जल्दी से तुम्हें कपड़े पहना दूँ, क्योंकि वे एक उलझन उत्पन्न कर रहे हैं।" बूढ़ी औरत ने कहा।

राजकुमार अपनी अर्ध-निमीलित आँखों से उसकी गर्दन व वक्ष की एकरसता को सौन्दर्य-समीक्षक की दृष्टि से निहारता रहा और मारक्युस डि. चोरड अपना सिर हिलाता रहा। मुफट अब आगे कुछ देखने का साहस न कर सकने के कारण कालीन पर दृष्टि गड़ाये रहा। वीनस अब तैयार थी। एक झीना कपड़ा ही सब कुछ था जो उसने अपने उभरे कन्धों पर डाल रक्खा था। मैडम जूल्स उसके चारों ओर, लकड़ी काट कर गढ़ी गई बूढ़ी स्त्री की सी दृष्टि से स्पष्ट किन्तु अविचल नेत्रों में तथा रह रह कर अपने हृदय स्थान वाले अक्षय पिन कुशन से पिनें निकाल-निकाल कर वीनस के कुर्ते पर लगाते हुये और अपने हड्डे निकले हुये हाथों को उन अर्ध-नग्न मांसल सुगोल बाहों पर फेरते हुये अपने मस्तिष्क में अतीत का किंचित ध्यान करती जाती थी अथवा अपने सेक्स के प्रति पूर्णतः उदासीन भावना मानते हुये—नाना को देखती जाती थी।

"वहाँ !" शीशे के सम्मुख अपना अन्तिम प्रतिबिम्ब देखते हुये उस नवयुवती ने कहा।

"बार्डनोव लौट आया और विचलित सा कहता गया कि तीसरा अंक प्रारम्भ हो गया है।"

'ठीक है, मैं तैयार हूँ", उसने उत्तर दिया "यह क्या मजाक है ? मुझे औरों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।"

सभी लोगों ने ड्रैसिंग-रूम खाली कर दिया किन्तु किसी ने भी अन्तिम-अभिवादन नहीं किया क्योंकि राजकुमार की इच्छा तीसरे अंक को गौरव से देखने की थी। अपने को एकान्त में पाकर नाना ने अपने चारों ओर विस्मित भाव से देखा।

"वह कहाँ से अवतरित होगी ?" उसने अपने से प्रश्न किया।

वह सेटीन को ढूँढ़ रही थी और अन्त में उसने उसे पर्दे के पीछे पा लिया जो प्रतीक्षा में ट्रंक पर बैठी थी। सेटीन ने शान्त स्वर से कहा, "मैं निश्चित ही उन सब व्यक्तियों के सम्मुख तुम्हारे मार्ग में कोई अवरोध नहीं बनना चाहती थी।" और तब उसने यह भी कह दिया कि अब वह जाती है। किन्तु नाना ने उसे रोक लिया। जब बार्डनोव ने उसको मिलाने की स्वीकृति दी थी तो वह प्रदर्शन समाप्त होने के अनन्तर उसको निश्चित कर सकता था। उसको यह सब सोच कर बड़ी उलझन हो रही थी। सैटीन हिचकिचाई। वह ऐसा संदिग्ध व एकान्त स्थान था कि वह किसी भी बात के लिये वहाँ प्रस्तुत न थी। इस सब के होते हुये भी वह वहाँ रुकी रही।

जब राजकुमार लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे उतरा तो विचित्र सी आवाजें, गालियों की बौछारें और पैर पटकने की आवाजें, जैसे मनुष्य आपस में लड़ रहे हों, थ्येटर के दूसरे छोर से उसके पास तक आई। वह एक घटना के परिणाम स्वरूप थी जिसने अभिनेता व अभिनेत्रियों के कार्य में गतिरोध उत्पन्न कर दिया था। कुछ समय से मिगनन अपने आप को फाचरी का मजाक बना-बना कर प्रसन्न हो रहा था। उसने अभी-अभी एक युक्ति सोच निकाली थी जिससे वह थोड़ी-थोड़ी देर में रह-रह कर पत्रकार की नाक में

उँगलियाँ पटकता था और कहता जाता था—"वह मक्खियाँ उड़ा रहा है" यह छोटा सा तमाशा देखने वालों के लिये अच्छे परिहास का कारण बना हुआ था। इस सफलता से प्रसन्न होते हुये और इस प्रदर्शन में अधिक आकर्षण का अनुभव करके उसने पत्रकार के एक घूँसा धमक दिया जो सचमुच एक करा प्रहार था ! अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति में, फाचरी कदापि उस नाक पर पड़े प्रहार को—क्षीण हुयी पिचकन को, मुस्करा कर स्वीकार नहीं कर सकता था। और तब दोनों व्यक्तियों ने, उस आनन्द का अन्त करते हुये या अपनी तिरस्कारपूर्ण आकृतियों से देखते हुये, एक दूसरे की गर्दनें पकड़ लीं। वे स्टेज पर घूम गये, और आपस में अप्रत्याशित गालियाँ देते हुये एक उप-दृश्य के पीछे लड़खड़ा गये।

"मोशियो बार्डनोव ! मोशियो बार्डनोव !" साँस रोकते हुये घबड़ा कर स्टेज-मैनेजर ने भयभीत होकर पुकारा।

राजकुमार से क्षमा-याचना करके बार्डनोव उसके पीछे-पीछे आया। जब उसने फाचरी और मिगनन को जमीन पर लोटते हुये पहचाना तो उसने ऐसी मुद्रा बनाई जैसे वह सचमुच बड़ा हैरान हो। निश्चित ही, बड़ा उपयुक्त स्थान व समय चुना गया था जबकि उनके झगड़े को दर्शक भी भली प्रकार से सुन सकते थे। उसके क्रोध की चरम सीमा प्राप्त कराने के लिये, रोज मिगनन हाँफते हुये उस क्षण वहाँ आई जबकि उसे उस समय स्टेज पर जाना चाहिये था। बाल्कन उसके साथ अभिनय करने के लिये स्टेज पर पहुँच चुका था जब कि रोज, पत्थर की भाँति सामने खड़ी देख रही थी कि उसका पति व प्रेमी दोनों ही उसके पैरों पर पड़े लुढ़क रहे हैं और एक दूसरे को दबोच रहे हैं, भिड़ा रहे हैं, उनके बाल बिखर रहे हैं और उनके वस्त्र धूल में सन गये हैं। उस क्षण वह उनको छोड़ कर जाने में असमर्थता का अनुभव कर रही थी और एक दृश्य-परिवर्तक ने अभी-अभी सफलतापूर्वक फाचरी के हैट को स्टेज पर लुढ़क कर जाते-जाते रोका था जिससे वह दर्शकों को न दिख सका। बल्कन ने इस बीच दर्शकों को हँसाने के लिये ऐसे कलाप

दिखाये कि दर्शक प्रसन्न होते रहे और तब पुनः उसने रोज़ को आने का संकेत किया। किन्तु वह अविचल, दोनों व्यक्तियों को खड़ी देखती रही।

"उनकी ओर मत देखो", उसके पीछे खड़े होकर बार्डनोव ने गुस्से में कहा। "जाओ! जाओ! तुम्हारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम अपनी भूमिका खो रही हो।"

और तब उसके द्वारा आगे को ढकेले जाने पर रोज़, उन दोनों के भूमि पर बिखरे शरीर पर से होकर, स्टेज पर चढ़ गई और फुट-लाइट की चमक में दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत हो गई। वह यह नहीं समझ पाई थी कि वे दोनों भूमि पर पड़े क्यों लड़ रहे थे? तब उस कंपकंपी में और कानों में गूँजती भनभनाहट के बीच वह कन्डक्टर के निकट अपनी मादक मुस्कान बिखेरती हुई प्रेममग्न डियाना के रूप में गई और तब अपने द्विगीत की पहली लाइन को ऐसे मोहक स्वर में उसने प्रकट किया कि उसे अत्याधिक प्रशंसा प्राप्त हुई। किन्तु अब भी वह लड़ते हुये दोनों व्यक्तियों की झटका-पटकी की आवाजें सुनती जा रही थी। अब तक वे फुट-लाइट से कुछ दूर पहले ही लुढ़क कर पहुँच चुके थे। सौभाग्यवश दर्शकों तक पहुँचने वाले बैण्ड के स्वर ने घूँसों की आवाजों को रोक लिया।

"नीचता!" दुखित होते हुये बार्डनोव ने जब अन्त में उस जोड़े को पृथक कर दिया तब कहा, "क्या तुम लोग जाकर अपने घर में नहीं लड़ सकते। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं इस प्रकार की बातें पसन्द नहीं करता। तुम, मिगनन, तुम यहाँ निर्देशन विभाग की ओर रह कर मुझे तसल्ली दो। और तुम, फाचरी, मैं तुम्हें ठोकर मारकर थियेटर के बाहर फेंक दूँगा यदि 'ओ.पी. साइड' छोड़ने का तुमने तनिक भी साहस किया। तो अब समझ गये, हाँ! "प्राम्प्ट-साइड" और "ओ.पी. साइड" या फिर मैं रोज़ से कहूँ कि वह तुम दोनों को फिर मेरे पास लिवाकर न लावे।

जब वह राजकुमार के निकट आया तो उसने पूछा कि क्या बात थी। "ओह, कुछ नहीं", उसने शान्तिपूर्वक कह डाला।

नाना अपनी भूमिका की प्रतीक्षा में फर के लबादे में लिपटी उन व्यक्तियों से खड़े होकर बातें करती रही। ज्यों ही काउन्ट मुफट ने स्टेज की झलक देखने के लिये किनारे के दो दृश्यों से बढ़कर झाँकने की चेष्टा की त्यों ही मैनेजर ने संकेत द्वारा उसे बताया कि वह अपने पैरों को धीरे से आगे बढ़ावे। ऊपर पूर्णतः शान्ति थी। किनारे के गौरव, जो अत्यधिक प्रकाशित थे, के निकट खड़े कुछ लोग काना फूंसी कर रहे थे अथवा पंजों के बल चल रहे थे। गैस वाला अपने स्थान पर था और फीतों के उलझे बन्डलों के समीप बैठा था; 'फायरमैन' एक सहारे के बल से आगे को झांक रहा था और अपनी गर्दन निकाल कर प्रदर्शन की एक झलक देखने की चेष्टा कर रहा था जबकि वह व्यक्ति जो पर्दों की व्यवस्था में था अपने स्थान पर ऊपर को देखते हुये प्रतीक्षा कर रहा था। उसकी दृष्टि में एक गम्भीरता थी और उसे खेल से कोई प्रयोजन न होकर केवल इतना ही ध्यान रहता था कि घंटी बजे जिससे कि उसकी गतिविधि संचलित हो और वह अपने हाथ पैर चलावे। इस घिरे हुये वातावरण में तथा हलके पग-चापों की धीमी आवाज में और मन्द फुसफुसाहट के बीच स्टेज पर अभिनेताओं की आवाजों का स्वर विचित्र सा लग रहा था जो एक प्रकार से पूर्णतः बेसुरा था। तब, और दूर, आरकेस्ट्रा की चिल्लाहट के समीप दर्शक-समूह मानों एक भारी साँस ले रहा था जो बीच-बीच में बुदबुदाहट, हँसी और तालियों की गड़गड़ाहट में टूट जाती थी। जनता वहाँ है यह उसे बिना देखे भी अनुभव किया जा सकता था, जब वह शान्त होती तब भी समझा जा सकता था।

"कोई चीज खुली है", अपने फर-क्लोक को भींचते हुये अचानक नाना ने कहा। "बैरीलोट, जाओ और देखो। मुझे विश्वास है कि किसी ने खिड़की खोली है। सचमुच, वह जगह मेरे लिये मौत है।"

बेरीलोट ने विश्वास दिलाया कि उसने स्वयं अपने हाथ से सब चीजें बन्द की हैं सम्भवतः वहीं कहीं कोई खिड़की टूटी हुई थी। अभिनेता सदैव धक्के के सम्बन्ध में शिकायत करते रहते थे। गैस की उस भयानक गर्माहट में, ठंडी हवा का कोई झोंका, जो फेफड़ों में सूजन पैदा कर देता है, जैसा अनेक बार बहता था सम्भवतः अनुभव किया जाता।

"मैं चाहूँगी कि तुम्हें यहाँ नंगा खड़ा किया जावे", नाना ने गुस्से में कहा।

"चुप" बार्डनोव बोला।

स्टेज पर, अपने द्वि-गीत के किसी अंश पर रोज ने ऐसा आकर्षक स्वर ध्वनित किया था कि तालियों की गड़गड़ाहट ने संगीत को दाब दिया। नाना ने वार्तालाप बन्द कर दिया और वह अत्यधिक गम्भीर हो गई। किंग्स से और आगे बढ़ जाने के कारण काउन्ट को बेरीलोट ने यह कह कर रोक दिया कि वह दिखाई दे जावेगा। तब उसने टेढ़े खड़े हुये किनारे के दृश्यों से झाँक कर देखा, जिनके चौखटों की पीठ पुराने पोस्टरों की मोटी तहों से बनाई गई थी तथा आगे के ड्राप का एक हिस्सा भी उसने देखा जिस पर 'माउन्ट एटना' की रजत सुरंग तथा पीछे की ओर वाल्कन की भट्टी थी। बहार जो नीचे झुकाये गये थे प्रकाश की एक आभा फेंक रहे थे जिनसे रुपहला-पन झलक रहा था। कुछ लाल व नीले काँच आपस में इस प्रकार व्यवस्थित किये गये थे कि उनसे भट्टी से निकलती लपटों का आभास होता था। स्टेज के बीचों बीच भूमि पर दौड़ते 'गैस-लाइट' के प्रकाश में काली चट्टानों की पंक्तियाँ दिखाई दे रही थीं। इसके अतिरिक्त एक ढालू और चिकनी चट्टान पर जो चारों ओर प्रकाश से घिरी हुई थी और जो दीवाली के दिन घास पर फैली बहुत सी चीनी लालटेनों की सी दिख रही थी। मैडम ड्रुअर्ड, जो जूनो की भूमिका में थी और जो प्रकाश की तेजी में अंधी सी हो रही थी, उदास भाव से उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी जब उसकी भूमिका प्रारम्भ होने को थी।

इसी क्षण वहाँ थोड़ी सी उथल-पुथल हो गई। साइमन जो क्लारिस की एक कहानी सुन रहा था, बोला, "हल्लो! वहाँ बूढ़ी ट्रिकन है।"

वह, सचमुच, पुरानी ट्रिकन थी जिसके लम्बे घुँघराले बाल थे और जो अपने कानूनी सलाहकार से मिलने की तेजी में थी। ज्यों ही उसने नाना को देखा वह सीधी उसके पास चली गई।

"नहीं", नाना ने जल्दी-जल्दी बाहर आने वाले शब्दों में कहा, "इस समय नहीं।"

बूढ़ी स्त्री बड़ी भव्य दिख रही थी। प्रुलियर जब निकट से निकला तो उसने उससे हाथ मिलाये। दो गायक-लड़कियों ने बड़ी भावुकता में उसकी ओर देखा। एक मिनट वह हिचकती रही; तब उसने साइमन को पुकारा और तब जल्दी जल्दी कुछ वाक्य अपने आप बाहर आ गये।

"हाँ", अन्त में साइमन ने कहा। "आध घंटे में।"

किन्तु जब वह अपने ड्रेसिंग-रूम में गई तो मैडम ब्रान ने, जो पुनः कुछ पत्र वितरित कर रही थी, एक पत्र उसको दिया। धीमी आवाज में बार्डनोव ने पहरेदार को डाँटना प्रारम्भ किया क्योंकि उसने थियेटर में पुरानी ट्रिकन को अन्दर आने दिया था। उस स्त्री को, उस स्थान पर, जब कि हिज हाईनेस' वहाँ थे, वह बड़ा अप्रिय था। मैडम ब्रान ने जो कि थेयटर में लगभग तीस वर्ष से थीं, तीखे शब्दों में उत्तर दिया: उसने जाना कैसे? मैडम ट्रिकन हर स्त्री से अपना व्यापार-सम्बन्ध रखती है। बार्डनोव ने उनको वहां, बिना एक शब्द बोले, दर्जनों बार देखा था, जबकि मैनेजर हजार कसमें खा रहा था, और पुरानी ट्रिकिन शहजादे को शुष्कतापूर्वक निहार रही थी। वह उसके चेहरे की ओर अनिमेष-दृष्टि से देखती जा रही थी, उस स्त्री की भाँति जो पुरुष को एक दृष्टि में तोलना चाहती हो। उसके पीले चेहरे पर एक मुस्कान दौड़ गई। तब वह धीरे से उन छोटी स्त्रियों के बीच से होकर लौट गई जिन्होंने सम्मानपूर्वक उसको बाहर जाने का रास्ता दिया।

"जितनी जल्दी सम्भव हो, देखो; अब भूलना नहीं" साइमन की ओर मुड़ कर उसने कहा।

साइमन बड़ी परेशान दिखाई दे रही थी। वह पत्र एक युवक का था जिससे उसने उस सन्ध्या मिलने का वचन दिया था। उसने मैडम ब्रान को एक पर्ची दी। जो कुछ भी शीघ्रता में वह घसीट गई—"आज रात नहीं, डकी, आज मैं व्यस्त हूँ।" किन्तु वह अत्याधिक चिन्तित बनी रही; सम्भव है वह युवक निरन्तर प्रतीक्षा करता रहे। चूंकि वह तीसरे अंक में नहीं थी अतः उसने चाहा कि वह तुरन्त चली जावे। अतः उसने क्लारिस से कहा कि

जाकर देखो। क्लारिस को खेल के अन्त तक कुछ नहीं करना था। वह नीचे चली गई, जब कि साइमन, एक मिनट के लिये ड्रेसिंग-रूम में आई जिसमें अभी तक वे दोनों थीं। मैडम ब्रान के छोटे से 'बार' में केवल एक उच्च-व्यक्ति को छोड़ कर उस समय कोई नहीं था, जो कि लाल-सुनहली पोशाक पहने हुये था तथा प्लूटो की आकृति प्रकट कर रहा था। पहरेदार का काम सरल भाव से चल रहा था क्योंकि जीने के बीच का आराम-घर शीशों के धुँधलेपन के कारण अंधेरा था। क्लारिस ने अपनी पोशाक की स्कर्ट को समेटा जो चिकनी सीढ़ियों पर लिपट रही थी; किन्तु वह गम्भीरतापूर्वक उस स्थान पर रुक गई जहाँ से सीढ़ियाँ घूमती थीं और अपनी गर्दन झुका कर, उसने उस कमरे में झाँका।

वह उत्तेजित हो उठी, क्योंकि वह बदतमीज लॉ फेलो अब भी वहाँ प्रतीक्षा कर रहा था—उसी कुर्सी पर जो कि मेज व स्टोव के बीच में रक्खी हुई थी। जब साइमन ने उससे कहा था तो वह जाने का बहाना करके चला गया किन्तु वह तुरन्त ही सीधा लौट आया। वह कमरा भी, सांध्य-पोशाक पहने हुये भद्र पुरुषों से भरा हुआ था—जो हलके 'किड-ग्लोब' पहने हुये थे और जो गम्भीर व स्थिर दिखाई दे रहे थे। वे सब प्रतीक्षा में थे और गौर से एक दूसरे को देखते जाते थे। मेज पर केवल गन्दी प्लेटें रक्खी हुई थीं क्योंकि मैडम ब्रान ने अभी-अभी अन्तिम भोजन परोसा था। एक गुलाब जो उनमें से एक से गिर गया था—केवल आधा मुरझाया हुआ पुरानी बिल्ली के निकट पड़ा हुआ था जो गुड़मुड़ी होकर सो रही थी। साथ ही बिल्ली के बच्चे बैठे हुये लोगों के पैरों के इधर-उधर नाच रहे थे। क्लारिस ने एक क्षण रुक कर चाहा कि लॉ फेलो को निकाल बाहर करे। वह मूर्ख जानवरों को पसन्द नहीं करता; जिससे पता चलता है कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है। उसने अपने हाथ समेट रक्खे थे, इस डर से कि कहीं पास ही मेज पर लेटी बिल्ली से छू न जाँय।

"ध्यान रखना ! वह तुम्हें पकड़ लेगा", प्लूटो ने, जो एक हँसोड़ आदमी था, कहा। वह ऊपर चढ़ रहा था तथा हाथों से ओठों को रगड़ता जाता था।

तब क्लारिस ने लॉ फेलो से झगड़ने का ख्याल छोड़ दिया। उसने मैडम ब्रान को उस युवक को साइमन का पत्र देते हुये देखा जिसने आगे बढ़ कर गैस लाइट में उसको पढ़ा "आज रात नहीं, डकी; आज मैं व्यस्त हूँ"; और उस बात पर बिना संदेह किये हुये वह चला गया। वह, कम से कम, जानता था कि कैसे व्यवहार किया जाता है। वह औरों की भाँति नहीं था जो ज़िद करके मैडम ब्रान की बेंत की टूटी और पुरानी कुर्सियों पर प्रतीक्षा में बैठे हैं—उस लालटेन के नीचे जो शीशे का ढक्कन सी लगती है और जहाँ दुर्गन्ध आ रही है। पुरुष कितने गन्दे जानवर होते हैं! क्लारिस ऊपर लौट आई जो कि अत्यधिक दुखी थी। वह स्टेज के पीछे से निकली और शीघ्रता में जीने की तीन सीढ़ियों को लाँघ गई जो उसके ड्रेसिंग-रूम तक पहुँचता था साइमन को यह बताने कि वह युवक चला गया है। 'किंग्स' में शहजादे ने नाना को एक ओर कर रखा था और उससे बातें कर रहा था। वह उसके साथ पूरे समय रहा और अपनी आधी खुली आँखों से बड़ी कोमलता से उसे (नाना को) निरन्तर निहारता रहा। नाना ने, बिना उसकी ओर देखे, मुस्कराते हुये कह दिया—"हाँ" और अपना सिर झुका लिया। किन्तु अचानक, काउन्ट मुफट ने अपने अन्तर की अदृश्य भावना का सम्मान किया। उसने बार्डनोव को बाहर कर दिया—जो उसको कुछ इस प्रकार की सूचना दे रहा था कि गरारा व ढोल कैसे व्यवस्थित किये जावें और आगे बढ़ते हुये नाना व शहजादे की बात-चीत में बाधा पहुंचा रहा था। नाना ने अपने नेत्र ऊपर उठाये और उसी भाँति उसको देख कर हँस दी जिस भाँति हिज हाइनेस को देख कर वह हँसी थी। जो हो, वह निरन्तर अपने 'संवाद' को सुनती जाती थी।

"मैं सोचता हूँ तीसरा अंक सबसे छोटा है", शहजादे ने कहा, जो काउन्ट की उपस्थिति से अव्यवस्थित हो रहा था।

नाना ने कोई उत्तर नहीं दिया। एक पल में उसकी भाव-भंगिमा परिवर्तित हो गई और वह पूर्णतः अपने कार्य में संलग्न हो गई। उसने शीघ्रता में अपना रोंयेदार चोगा कन्धे से सरका दिया जिसे मैडम जूल्स ने, जो उसके पीछे खड़ी थी, हाथ में थाम लिया; और अपना हाथ

अपने बालों पर फेरने के पश्चात—जैसे वह उन्हें ठीक कर रही हो—वह स्टेज की ओर एक प्रकार से, नग्नावस्था में बढ़ गई।

"हुश ! हुश !" बार्डनोव बुदबुदाया।

काउन्ट और शहजादा आश्चर्य में खो गये। उस निस्तब्धता में श्वासोच्छ्वास का एक स्वर उभरा और दूर बैठी भीड़ का बुदबुदाना प्रकट हो गया। प्रत्येक रात्रि को ठीक वैसा ही प्रभाव प्रकट होता था जब वीनस, अपनी स्वर्ग-देवी का सा, नग्न प्रदर्शन करते हुये दिखाई देती थी। तब मुफट, देखने की इच्छा से पर्दे के एक छेद से झाँकता रहा। उस अर्द्ध गोलाकार प्रकाश के पीछे जो फुटलाइट से उभर रहा था –सम्पूर्ण हॉल गहरे रंग का दिखाई दे रहा था। लग रहा था जैसे लाल रंग के धुँये से भर रहा हो; और उस तटस्थ पृष्ठभूमि में, जिसमें पंक्तिबद्ध आकृतियाँ उदास उलझनें व्यक्त कर रही थीं—नाना अत्यधिक श्वेत धवलता में सीधी खड़ी रही। बाक्सों को छिपाकर दो सिरों और एम्पी थियेटर के बीच में वह खड़ी थी। वह उसकी झुकी हुई पीठ और खुले हुये हाथ भली प्रकार देख सकता था—जब कि उसके पैरों के समानान्तर पुराने'प्राम्प्टर'का सिर रक्खा हुआ था जो ऐसा लग रहा था मानों उसके धड़ से अलग कर दिया गया हो किन्तु उसमें सरल व सत्य भंगिमायें स्पष्ट झलक रही थीं। नाना के गीत की कुछ पंक्तियों पर—उसकी गर्दन में चंचल गतियाँ प्रारम्भ होगई थीं जो उसकी कमर तक पहुँच रही थीं और नाना की उखड़ी ध्वनियों के साथही नष्ट हो जाती थीं। जब नाना ने अपने अन्तिम स्वर सराहना के शब्दों के तूफान के बीच प्रकट किये तो वह स्वयं झुक गई। उसके झीने व चिपके कपड़े हिल गये। जैसा उसने प्रदर्शित किया उसके अनुसार उसके बाल उसके नितम्बों से जा टकराये। उसको उस रूप में देखकर—आगे झुके हुये, जाँघें फैली हुई तथा उस प्रकार उस छिद्र की ओर बढ़ कर जहाँ से वह झाँक रहा था, काउन्ट का चेहरा पीला हो गया और वह घूम गया। वहाँ स्टेज विलीन हो गया और जो कुछ भी वह देख पाया वह था केवल दृश्य का उलटा चित्र और पोस्टरों की घिचपिच जो सब तरफ से चिपके हुये थे। उस गैस-लाइट के मध्य, पर्वत मालाओं के पीछे 'आलम्पिया'

के अन्य देवता व देवियाँ मैडम ड्राइअर्ड से मिल रही थीं जो तब भी ऊँघ रही थी। वे दृश्य के अन्त की प्रतीक्षा में थीं। बास्क व फान्टन भूमि पर बैठे थे और उनकी ठोढ़ियाँ उनके घुटनों में दबी हुई थी। प्रुलियर कभी जंभाई लेता और कभी लम्बा फैलता जाता था और सध्या की अंतिम झांकी में दिखाई दे रहा था। वे सब थके हुये, आँखों में लाली दौड़ी हुई और तुरन्त घर भाग कर बिस्तर पर पहुँच जाने की उतावली में थे।

तभी फाचरी को, जो छत की ओर रहता रहा था और जिसे बार्डनोव ने 'प्राउन्ट' की ओर आने से रोक दिया था, काउन्ट मिल गया, जो और अधिक ठीक-ठाक करने की खोज में था। साथ ही उसने उसे अनेक ड्रेसिंग-रूम दिखाने का वादा भी किया था। मुफट में अनचाही सुस्ती घिर रही थी अतः वह मारक्युस डि. चोरड को वहाँ न देखकर उस पत्रकार के साथ हो लिया। उसने एक साथ ही 'विंग' छोड़ देने के कारण एक उलझन का अनुभव किया क्योंकि वहाँ से वह नाना की आवाज़ सुन रहा था। फाचरी उससे पहले ही जीने पर चढ़ गया था जो छोटे लकड़ी के दरवाजों से पहली व दूसरी मंजिल पर बन्द था। वह इस प्रकार का जीना था जैसा विशेष रूप से गन्दे कामों के लिये प्रसिद्ध स्थानों में पाया जाता है और जैसे अनेकों का अनुभव काउन्ट मुफट को दीन-सहायक-समिति के सदस्य के रूप में इधर उधर चक्कर काटता मिला था; जिनकी दीवारें खाली-खाली झुकी-झुकी और गन्दी पीली सी थीं; जिनकी सीढ़ियाँ निरन्तर पैरों के आने-जाने की चोट से घिसी हुई थीं और उनमें लगी 'रेल' हाथों की रगड़ से बड़ी चमकदार पालिश की हुई सी दिखाई देती थी। और जो लालटेनें दीवार में लगी थीं उनसे प्रकाश झलक रहा था जो उस सब दरिद्रता को बड़े भयानक रूप से प्रकट कर रहा था। साथ ही वह एक गरमी सी बाहर फेंक रहा था जो उभर कर तंग छत व सीढ़ियों में विलीन हो रही थी।

काउन्ट जैसे ही पहली सीढ़ी पर पहुँचा उसने पुनः अपने पीछे से वही नारी-सुगन्धि को ड्रेसिंग-रूम के ऊपरी भागों में से आते हुये अनुभव किया, जो प्रकाश और शोर के साथ दौड़ रही थी! और अब प्रत्येक सीढ़ी पर जब

वह चढ़ा तो उसने फेस पाउडर की कस्तूरी-महक का, ट्रायलेट-विनेजर की तीखी सुगन्धि का अनुभव किया जो उसमें एक उत्तेजना उत्पन्न कर रही थी, साथ ही पहले से अधिक उसको बावला बना रही थी। पहले विश्राम पर दो मार्ग तेजी से दो ओर को घूम गये थे; और उनमें कई द्वार खुले हुये थे जो पीले पुते हुये थे और जिनमें बड़े-बड़े सफेद नम्बर चिन्हित थे ! जिस सबसे लग रहा था कि वह स्थान एक ऐसे होटल से मिलता-जुलता है जो संदिग्ध चरित्रों को प्रदर्शित करता है। फर्श के बहुत से टायल गायब थे, और उसमें बहुत से गड्ढे खुद गये थे। काउन्ट साहस करके एक मार्ग की ओर बढ़ा और एक कमरे में झांका जिसका द्वार आधा उढ़का था। वह उसे एक गन्दा कबूतरखाना सा लगा; जो सचमुच किसी गन्दी जगह की तंग नाई की दुकान सा दिख रहा था, जिसमें दो कुर्सियाँ थीं। एक देखने का शीशा और एक 'ड्रेसिंग-टेबिल' थी जिसमें एक दराज थी जो चिकनाहट व कन्धे के तेल से काली हो गई थी। एक भारी भरकम आदमी पसीने से लाल, जिसके कन्धे भभक रहे थे अपना लंगोट बदल रहा था, जब कि उसी प्रकार के एक दूसरे कमरे में पास ही एक स्त्री बैठी थी जो जाने को प्रस्तुत थी और अपने 'ग्लोब' चढ़ा रही थी जिसके बाल तर व सीधे थे। लग रहा था जैसे वह अभी-अभी स्नान करके आई हो।

फाचरी ने यहाँ काउन्ट को पुकारा और वह दूसरी मंजिल पर ऐसी तेजी से पहुंच गया जैसे दाहिने हाथ के रास्ते से किसी ने भारी कसम खाई हो। मेथील्ड ने, जो भद्दी सी थी और जिसने वेश्या का सम्पन्न किन्तु अनधिकृत पेशा स्वीकार कर रक्खा था, अभी-अभी अपना हाथ धोने वाला बासन तोड़ दिया था, जिससे प्रवेश के निकट साबुन का पानी बह कर फैल रहा था। एक दरवाजा अभी तेजी से बन्द हुआ था, दो स्त्रियाँ मार्ग को छलांग गईं। दूसरी ने अपने शेमीज के कोने को दाँतों में दाब रक्खा था, जो शीघ्रता में प्रगट हुई और तेजी से ओझल हो गई। तब हँसी के बहुत से स्वर सुनाई दिये, झगड़े का स्वर भी प्रगट हुआ, एक संगीत-लहरी उभरी और तुरन्त विलीन हो गई। वैसे दीवार की दरारों और मार्ग के दरवाजों से नग्नता, गुलाबी-शरीरों की परछाई और अन्दर के सफेद वस्त्र कोई भी सुगमता से देख सकता था। दो लड़कियाँ, जो अत्यधिक खुश थीं, एक दूसरी को अपने शरीर के विभिन्न दाग दिखा रही

थी, तीसरी ने जो उम्र में अधिक कच्ची थी, जैसे एक बच्ची, अपनी 'स्कर्ट' ऊपर उठा ली थी और अपने जांघिये को सम्भाल रही थी। जब कि कपड़े पहनते समय उन्होंने दो व्यक्तियों को देखकर धीरे से भद्रता के व्यवहार में पर्दे बन्द कर लिये।

प्रदर्शन समाप्त होने के अनन्तर वहां बड़ी व्यस्तता दिखाई दे रही थी। सफेद पेन्ट, और लाली के धोने-धाने का तूफान मचा हुआ था। प्रति दिन पहनने वाली पोशाक पुनः पहनी जा रही थी जो 'फेस-पाऊडर' के बादलों में उड़ रही थी। मानुष-गन्ध उभर रही थी जो बन्द दरवाजों के बाहर फैली जा रही थी। उस मदहोशी की मस्ती में मुफट ने तीसरी मंजिल में आकर अपने को रोका। वहाँ विशिष्ट स्त्री के 'ड्रेसिंग-रूम' थे। लगभग बीस स्त्रियाँ एक साथ घिरी हुई थीं। साबुन व लेवेंडर के पानी की खुशबुओं से वायुमंडल घिरा हुआ था और लग रहा था जैसे वह निकट ही किसी अप्रसिद्धि प्राप्त मकान का एक चालू कमरा हो। जैसे ही वह निकट से गुजरा उसने दरवाजे के पीछे धोने की ऊँची आवाज और बेसिन में एक तूफान के वेग सा स्वर सुना। और वह सबसे ऊँचे की मंजिल में जा रहा था तभी उसके मन में एक दरवाजे के खुले रहने के कारण दिखाई देते हुये—झाँकने के छेद से कुछ देखने का कौतूहल उत्पन्न हुआ। कमरा रिक्त था और जो कुछ भी वह देख सका—वहाँ उस तेज रोशनी में उसे वह चिर परिचित बर्तन दिखाई दिया जो 'स्कर्टों' के बीच में; जो फर्श पर फैली हुई थीं, अलग दिखाई दे रहा था। इस अन्तिम दृश्य को देखकर वह आगे बढ़ गया। ऊपर की चौथी मंजिल में उसे लगा जैसे वह रुँधा जा रहा हो। सब तरह की खुशबुयें, सब प्रकार की गर्मी उसे घेर रही थी। पीली छत असुन्दर दिखाई दे रही थी। एक गैस बत्ती धुन्ध में प्रकाशित हो रही थी। एक क्षण को वह लोहे की रेलिंग पर टिका रहा जिस में जीवित माँस की सी गर्मी का अनुभव हो रहा था। तब अपनी पलकें मूंद कर उसने गहरी सांस ली। जैसे उसे लगा वह उस सब को जो स्त्री सेक्स' से सम्बन्धित है और जिससे जैसे वह अब भी अपरिचित है—एक सांस में पिये ले रहा हो। हालांकि जैसा वह था, उस सब में वह बुरी तरह घिर गया था।

"चले आओ," फाचरी ने पुकारा जो एक मिनट पहले ही वहाँ से गायब हो गया था—"कोई तुम्हें चाह रहा है।"

तब वह क्लारिस और साइमन के ड्रैसिंग-रूम में था—जो तुच्छता तुमा था, भद्दा बना हुआ और जिसमें अनगिन कौने थे। छत में बने दो रोशनदानों से प्रकाश झाँकता था। किन्तु उस समय रात्रि के अन्धकार में गैस की रोशनी झिलमिला रही थी; जिसमें दीवाल का कागज लटक रहा था; जिसमें हरी पत्तियों व शाखों के बीच गुलाबी फूल उभर रहे थे; और जो एक फादिंग में एक गज के मूल्य का प्रतीत होता था। पास ही पास दो लकड़ी की आलमारियाँ व जल-बोर्ड था जिनमें आयल-क्लाथ मढ़ा हुआ था और जो निरंतर छूने वाले गन्दे पानी से गन्दा हो रहा था। साथ ही जो ड्रैसिंग-टेबल का काम दे रहा था और काला होगया था। उसके नीचे ताँबे के कुछ बर्तन, दो या तीन गन्दे पानी से भरे बर्तन और कुछ भद्दे पीले चीनी के जग रक्खे हुये थे। वहाँ वास्तव में गन्दी और व्यवहार से खराब की हुई वस्तुओं की कोई गिनती नहीं थी। टूटे हुये बेसिन, सींग के बने हुये कंघे, जिनके आधे से अधिक दांतें टूटे हुये थे और सचमुच उन दो स्त्रियों की लापरवाही व जल्दबाजी से वह सब खराब हो रहा था, जो दोनों एक साथ धोना-धाना करती थीं, कपड़े बदलती थीं और उस स्थान में सामान को तितर-बितर छोड़ देती थीं, जिसे वेअल्प समय के लिये ही व्यवहार में लाती थीं। और तब उस गन्दगी व अस्त-व्यस्तता के, एक बार उस कमरे के बाहर हो जाने के पश्चात् उन्हें कोई चिन्ता भी नहीं रहती थी।

"चले आओ," फाचरी ने पुनः दोहराया—उस प्रकार के अहंकार के साथ जिस प्रकार का मनुष्यों की निम्न श्रेणी के बीच उत्पन्न हो जाता है। 'क्लारिस तुम्हारा चुम्बन लेना चाहती है।"

मुफट ने अन्त में कमरे में प्रवेश किया, किन्तु उसे अत्यधिक आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि मारक्युस डि. चोरड वहाँ एक कुर्सी पर दो ड्रैसिंग-टेबलों के बीच बैठा है। मारक्युस वहाँ विश्राम कर रहा था। वह वहाँ अपने पैर फैलाये हुये बैठा था क्योंकि वहाँ एक बर्तन टूटा हुआ था और

वहाँ चारों ओर साबुन का पानी फैल रहा था। लगा जैसे वह वहाँ बड़े आराम में है और जैसे ऊपर से देखने में उसने अपने लिये सर्वोत्तम स्थान चुना है। साथ ही जैसे वह उस स्नानागार के भयानक वातावरण में अधिक युवा प्रतीत हो रहा था—उस स्त्रियोचित अतृप्ति और आकर्षण के बीच जिसके चारों ओर अशुद्ध प्रक्रियाओं का अधिक प्राकृतिक प्रभाव वस्तुतः पूर्णतः क्षम्य वायुमंडल में उपस्थित था।

"क्या तुम उस बुड्ढे के साथ जा सकती हो।" साइमन ने धीरे से प्रश्न किया।

"कभी नहीं ! मैं जानती तब भी नहीं," दूसरी ने उसी प्रकार उत्तर दिया।

ड्रेसर, एक भद्दी व सुपरिचित नौजवान लड़की जो साइमन को वस्त्र पहनाने में सहायता दे रही थी, जोर से हँस दी। उन तीनों ने एक दूसरे को ऐसे शब्दों द्वारा उत्तेजित किया, जिससे उनमें और भी अधिक आनन्दातिरेक प्रकट हुआ।

"आओ क्लारिस, इन महाशय को चूमो," फाचरी ने कहा : "तुम जानती हो यह उसका मूल्य चुका सकता है।" और तब काउन्ट की ओर घूमते हुये उसने जोर दिया—"तुम देख रहे हो वह बड़ी मीठी है और वह तुम्हारा चुम्बन लेने जा रही है।"

किन्तु क्लारिस को मनुष्यों की कमी नहीं थी। उसने उन व्यक्तियों के सम्बन्ध में, जो नीचे दरबान के कमरे में बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे, उन जानवरों के प्रति अपमानजनक शब्दों से कहा। साथ ही वह नीचे जाने की जल्दी में भी थी क्योंकि सम्भवतः वे अन्तिम दृश्य के उसके अभिनय को ही छुड़वा सकते थे। तब जब फाचरी ने उसको रोकने के लिये दरवाजा रोक लिया, उसने मुफट के गलमुच्छों को चूम लिया—यह कह कर :

"इसलिये नहीं कि वह तुम हो ! जो हो, न वह इसलिये कि फाचरी उसको तंग कर रहा है" और वह शीघ्र बाहर हो गई।

काउन्ट अपने ससुर के समक्ष उस स्थिति में अत्यधिक उद्विग्नता का अनुभव कर रहा था। वह चेहरे से लाल हो गया। जब कि नाना के ड्रेसिंग-

रूम में, जो शीशों और तस्वीरों से भरा पड़ा था, उसने उस तीव्र उत्तेजना का लज्जास्पद अनुभव नहीं किया जितना उस क्षण उन दो स्त्रियों की उद्दंडता से उक्त कमरे के क्लेश को वह अनुभव कर रहा था। जो हो, मारक्युस साइमन के पीछे-पीछे गया जो सम्भवतः बड़ी जल्दी में था और साइमन के कान में कुछ कहता जाता था जिसे वह अपना सिर हिला कर स्वीकार कर रही थी। फाचरी ने हँसते हुये उनका पीछा किया। तब काउन्ट ने ड्रेसर के साथ अपने को अकेले पाया जो 'बेसिन' को धो रहा था। अतः वह भी चला गया और सीढ़ियों से उतरते हुये अनुभव करता रहा कि उसके पैर उसका वजन बरदास्त करने में असमर्थ हैं क्योंकि औरतों को पेटीकोट में देखकर वह सहमा रहा था जो उसके सामने आने पर शीघ्रता में दरवाजे बन्द करने को बढ़ आती थीं। किन्तु लड़कियों की चहल-पहल में उस चौमंजिली भारी कोठी में उसे सबसे अलग एक बिल्ली दीख पड़ी जो अपनी पूँछ को सीधे तान कर रेलिंग के सहारे सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी।

तभी एक स्त्री की तीखी अवाज गूँजी—"हां! मैं सोचती हूँ वे आज रात हमको साथ में रक्खेंगे क्योंकि सदैव ही उनका बुलावा बना रहता है।"

वह एक प्रकार से समाप्ति ही थी, क्योंकि पर्दा अभी-अभी गिरा था। सीढ़ियों के ऊपर काफी भीड़ भाड़ थी और वहाँ हर प्रकार की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं। प्रत्येक कपड़े पहन कर घर जाने की शीघ्रता में था। जैसे ही काउन्ट मुफट सीढ़ियों के नीचे पहुँचा उसने नाना व राजकुमार को धीरे-धीरे जाते हुये देखा। अचानक रुकते हुये उस तरुणी ने मुस्कराते हुये धीमे स्वर में कहा "तब बहुत ठीक है; थोड़ी देर बाद······।"

राजकुमार मंच पर चला गया जहाँ वार्डनोव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। तब नाना के निकट अपने को अकेला पाकर, मुफट आवेश व चाहना में भर गया और ज्यों ही वह अपने ड्रैसिंग-रूम में पहुंची उसने उसको भयंकरता से गर्दन के पास चूम लिया जहाँ उसके घुँघराले सुनहली बाल लटक रहे थे। वह वैसी बात थी जैसे वह चुम्बन का उत्तर दे रहा हो जो उसने सीढ़ियों के ऊपर प्राप्त किया था। नाना ने उद्विग्नता में अपने हाथ उठा लिये किन्तु जब उसने काउन्ट को पहचाना तो वह मुस्करा दी।

"ओह ! तुमने मुझे डरा दिया," वह बोली ।

उसकी वह मुस्कराहट सराहनीय थी तथा स्वीकृति प्रदान करने वाली भी क्योंकि ऐसा लग रहा था कि उस चुम्बन से वह अत्यधिक प्रसन्न थी । यों उसने उसका प्रत्युत्तर नहीं दिया । उनको प्रतीक्षा करनी होगी । अतः उसने कहा—

"तुम जानते हो अब भी मैं एक जमींदार हूँ । मैंने आरलीन्स के निकट एक स्टेट खरीद ली है जहां तुम पहले कभी गये थे । बेबी ने मुझसे कहा था—वह छोटा जार्ज हगन; क्या तुम उसे जानते हो, सच ? आओ, वहाँ मुझसे मिलो ।"

लजीला काउन्ट—उसने क्या कर डाला इस पर स्वयं घबड़ाता और लजाता हुआ, बड़े तपाक से झुका और उसके निमन्त्रण से लाभ उठाने के हेतु स्वीकृति देने लगा । तब वह राजकुमार से मिलने चला गया । वह ऐसे चल रहा था जैसे किसी स्वप्न में हिल-डुल रहा हो और वह जैसे ही आगे बढ़ा उसने ग्रीन-रूम से सैटीन की आवाज सुनी—

"तुम एक बुड्ढे गन्दे आदमी हो । मुझे योंही अकेले छोड़ दो ।"

वह मारक्युस डि. चोरड था जो किसी अच्छे की आशा में सैटीन से उलझ गया था । सैटीन का यों ध्यान था कि उसके पास एक से एक अच्छे व्यक्ति हैं । यह ठीक था कि नाना ने उसको बार्डनोव के समक्ष उपस्थित किया था, किन्तु उससे उसके मनमें बड़ी उलझन थी कि हर समय उसके समक्ष मुँह बन्द रक्खा जाय केवल इस डर से कि कुछ ऊटपटांग न निकल जावे अतः वह उस पात्र की चाहना में 'विंग' की ओर बढ़ गई जो प्लूटो की भूमिका कर रहा था तथा जो पूरे एक सप्ताह तक प्यार और चोट देता रहा था । वह उसकी प्रतीक्षा में थी और मारक्युस के प्रति इसलिये अत्यधिक रोषपूर्ण थी कि उसने उसे उस प्रकार से सम्बोधित किया था जैसे वह थियेटर की मामूली औरत हो । तभी उसने बड़े तेवर में कह डाला—

"मेरा पति सीधा यहां आयेगा, तब तुम देखना···!"

अभिनेता, अपने-अपने ओवरकोट पहने, और देखने में थके हुए से, एक-एक करके बाहर जा रहे थे। स्त्रियों व पुरुषों के समूह घुमावदार जीने से होकर उतर रहे थे जिनके पुराने टोपों की तथा शालों की परछाई दीवारों पर पड़ रही थी; और उन टहलते-फिरते लोगों के बेहूदेपन को भी देखा जा सकता था जो अपनी शैतानियों पर उतर आये थे। स्टेज पर जहाँ राजकुमार बार्डनोव का किस्सा सुन रहा था—सारे प्रकाश-बिन्दु बुझा दिये गये थे। वह नाना की प्रतीक्षा कर रहा था। अन्त में जब वह प्रकट हुई तो स्टेज अन्धकारमय था और जमादार हाथ में लालटेन लिये आखिरी तौर पर सब कुछ देखता हुआ घूम रहा था। हिज हाइनेस को पैसेज डेज़ तेनोरमज, के मार्ग से न जाना पड़े इसलिये बार्डनोव ने मुख्य मार्ग का द्वार खोल दिया जो चपरासी की कोठरी व थियेटर के किनारे के कमरे के निकट से होकर जाता था जहाँ बहुतसी औरतें इस भय से इकट्ठी थीं कि लोग शैतानी के इरादे से बाहर की ओर खड़े थे। वे एक दूसरे को धक्का देकर रास्ता साफ करते थे और हर तरफ झांक-झांक कर देखते जाते थे जैसे बाहर पहुँचने तक सांस रोके चल रहे हों। फान्टन, बास्क, प्रुलियर धीरे से घर की ओर बढ़ रहे थे और आपस में चख़ २ करते जाते थे और महिलाओं के बचाव के उस स्थान को देख-देखकर खिलखिला रहे थे। गम्भीर प्राकृति के लोग गैलरी डेस वेराइटीज, जो स्टेज के द्वार के निकट थी, से होकर शान्तिपूर्वक जा रहे थे और दुश्चरित्र औरतें अपने-अपने साथ एक न एक अपना चुना हुआ व्यक्ति लिये तेजी से निकल रही थीं। किन्तु क्लारिस विशेष चतुर था। वह लॉ फेलो को सतर्क करने के लिये दृढ़ था। और वस्तुतः वह चपरासी के कमरे के पास अन्य लोगों के साथ रुका हुआ था जो मैडम ब्रान की कुर्सी से चिपके हुये थे। वह एकाग्र होकर देख-सुन रहे थे और एक मित्र के निकट खड़े थे तभी वह चपलतापूर्वक उनके सामने आई। पुरुषों ने अपनी आँखें मटकाईं। वे स्कर्ट की दमक जो तंग जीने के नीचे झलक रही थी, को देखकर आश्चर्यचकित थे और अत्यधिक खिन्न भी कि औरतों की इतनी प्रतीक्षा के उपरान्त भी वे सब की सब बिना किसी एक को भी पहचाने खिसक गईं। बिल्ली के काले बच्चे, मोमिया कपड़े पर अपनी मां के इर्द गिर्द सो रहे थे जो अत्यधिक प्रसन्नता से उनको निकट लाने के लिये पैर फैलाये हुये थी जब कि

भारी बिल्ली मेज के दूसरे किनारे पर अपनी पूंछ फैलाये बैठी थी और औरतों के आवागमन को देख रही थी।

मुख्य मार्ग की ओर संकेत करते हुये बार्डनोव कह रहा था—"हिज हाईनेस सम्भवतः इधर से गुजरें...।"

कुछ महिलायें अब भी वहाँ थीं जो एक दूसरे को धक्का देकर बढ़ रही थीं। राजकुमार नाना के साथ था और मुफट व मारक्युस उनके पीछे आये। वह एक लम्बा मार्ग था जो थियेटर व दूसरे मकान के बीच में स्थित था। वास्तव में वह एक तंग गली सी थी जो ढलवां छत से ढकी हुई थी और जिस पर दो तीन बत्तियाँ झलक रही थीं। दीवारों की सील दिखाई दे रही थी और किसी गुफा की भाँति पैरों की आहट सुनाई पड़ रही थी। वह एक प्रकार से अस्त-व्यस्त पथरीला रास्ता था। वहाँ बढ़ई की एक बेंच थी जिस पर द्वार की देखभाल करने वाली स्त्री का पति कभी किसी दृश्यावली को सीधा कर लेता था जहाँ लकड़ी के टुकड़ों का भी एक गट्ठा रक्खा हुआ था जो कभी कभी सायंकालीन भीड़ को रोकने के लिये काम में लिया जाता था। नाना ने एक स्थान पर अपनी स्कर्ट को उठाकर हाथ में थाम लिया जहाँ गन्दा पानी बह रहा था। दरवाजे पर आकर प्रत्येक झुक गया और जब बार्डनोव अकेला रह गया तो उसने अपने कन्धों को हिलाकर राजकुमार के प्रति अपनी समस्त घृणा मिश्रित दार्शनिकता से अन्तर्भावों को प्रकट किया।

"वह किंचित उद्दण्ड है," उसने कहा और फाचरी के प्रति शान्त हो रहा जिसे रोज़ मिगनन अपने पति के साथ घर लिये जा रही थी। उसका विचार था कि उन दोनों को पुनः एक अच्छा मित्र बनवा दे।

बाहर फुटपाथ पर मुफट अकेला खड़ा था। हिज हाईनेस ने नाना को चुपचाप अपनी बग्घी में बिठाला और चल दिया। मारक्युस ने अत्यधिक उत्तेजना में सैटीन का पीछा किया। तब मुफट ने, जिसका सिर भट्टी की भाँति गरम हो रहा था, पैदल ही घर की ओर जाने का निश्चय किया। उसके अन्दर का समस्त संघर्ष विलीन हो गया था। उसके जीवन का एक प्रकार से

नया अध्याय प्रारम्भ हो रहा था जिसने उसकी चालीस वर्षीय आयु के सारे विचार और विश्वासों को पीसना प्रारम्भ किया था। वह जैसे-जैसे बाउलेवर्ड की ओर बढ़ रहा था—नाना के शब्दों की ध्वनि से उसके कान फूटे जा रहे थे। तेज रोशनी में नाना का नग्न चित्र, उसके चिकने हाथ और धवल कन्धे उसके नेत्रों के सामने जैसे नाच रहे थे और वह सोच रहा था कि वह सम्पूर्ण रूपेण उसका है। वह उसके लिये सब कुछ समर्पित कर सकता था। उसके पास जो कुछ है, उसे वह बेच सकता था केवल उस रात को केवल थोड़े से समय अपने पास रखने के विचार से। तब उसका यौवन उसके अन्दर निखर रहा था जो एक प्रकार से उसकी आयु की भूख की भयंकरता से अन्दर ही अन्दर जला जा रहा था तथा उसकी उस परिपक्व अवस्था को दीप्त कर रहा था।

६.

काउन्ट मुफट अपनी पत्नी व पुत्री सहित, विगत् संध्या, लैस फान्डेट्स में आये थे, जहाँ मैडम हगन ने, जो अपने पुत्र के साथ अकेली थीं, उन्हें निमंत्रित किया था कि वे एक सप्ताह उनके साथ व्यतीत करें। वह मकान जो सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में बनाया गया था, एक भारी चौकोर भूमि के ऊपर स्थित था, जिसमें किसी प्रकार की सजावट न थी किन्तु जिस पर कुछ बड़े-बड़े पेड़ व उछलते हुये फव्वारे थे जो निकटवर्ती जलाशय से जल प्राप्त करते थे। आरलीन्स से पेरिस की सड़क पर हरियाली ही हरियाली दीख पड़ती थी; जहाँ लगता था जैसे पेड़ों की कतारें थीं, जो उस मैदान की उदासी को दूर करती थीं और जहाँ हरे-भरे खेत क्षितिज तक छितरे हुये थे।

ग्यारह बजे, जब कि घंटे की उस पुकार ने हरेक को मध्याह्न-भोजन की मेज पर ला दिया था, मैडम हगन ने अपनी सरल मातृवत् मुस्कान में सैंटीन के दोनों गालों को चूम लिया और कहा—

"तुम जानती हो कि जब मैं अपने घर पर होती हूँ तो सदैव ऐसे ही करती हूँ। तुमको यहाँ पाकर मैं अपने को बीस वर्ष कम आयु की मानने लगती हूँ। तुम क्या अपने पुराने घर में ठीक से सोईं?"

तब बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये वे इस्टेल की ओर यह कहते हुये घूम पड़ीं—"तब यह छोटी छोकरी निश्चित रूप से सारी रात ठीक से सोई है। आओ, मुझे प्यार करो, मेरी बच्ची।"

वे एक विशाल भोजन के कमरे में बैठे हुये थे जिसकी खिड़कियां सजे हुये बगीचे की ओर खुलती थीं किन्तु वे अधिक निकट रहने के कारण उस

बड़ी मेज़ के एक कोने में एक साथ बैठे हुये थे। सेटीन बेहद खुश थी और अपने बचपन के किस्से सुना रही थी जिसको इस यात्रा ने तरोताजा कर दिया था। लेस फान्डेट्स में महीनों बीत गये; घूमने फिरने में एक फव्वारे के बीच में गिरने की बात ध्यान आई जब एक ग्रीष्म की सांझ को वैसा हुआ था। तब कुछ उबले हुये अंडे खा रहे थे और कुछ कटलेट। और मैडम हगन कहती जाती थीं कि एक अच्छी गृहणी ही उतने अधिक दाम उस कसाई को दे सकती है जो उतना अच्छा गोश्त देता है। वह सब कुछ उन्हें आरलीन्स से मंगाना पड़ता है और तब भी वे लोग वे वस्तुयें नहीं भेजते जो सही तौर पर उनसे मंगाई जाती हैं। वैसे यदि उनके अतिथि किसी प्रकार की शिकायतें करें तो दोष उन्हीं का है क्योंकि वे मौसम समाप्त हो जाने पर आते हैं।

"यह तो बड़ी मूर्खता है," उसने कहा। "कम से कम मैं तुम्हारी पिछले जून मास से प्रतीक्षा कर रही हूँ और अब हम सितम्बर के मध्य में हैं। जैसा तुम देख रही हो, बाहर घूमने का कोई मौसम नहीं है।"

एक निःश्वास के साथ उसने बाग के वृक्षों की ओर संकेत किया जिनकी पत्तियां पीली पड़ रही थीं। उस दिन कोहरा भी था। क्षितिज पर एक नीला सा धुंआ उड़ रहा था जो शान्तिमय उदासी को प्रकट कर रहा था।

"ओह! मैं कुछ लोगों की प्रतीक्षा कर रही हूँ," वह कहती रही—"तब बड़ा अच्छा रहेगा। पहले दो व्यक्ति होंगे जिन्हें जार्ज ने आमंत्रित किया है—वे लोग मोशियो फाचरी और मोशियो डागनेट। तुम उन्हें जानते हो। क्या नहीं जानते? तब मोशियो डि. वैन्डेब्रेस होंगे जिन्होंने कम से कम पाँच साल से वादा कर रक्खा है। इस वर्ष वे अवश्य आवेंगे।"

"आह! बड़ा अच्छा है" काउन्टेस ने हँसते हुये कहा "यदि मोशियो डि. वेन्डेब्रेस हैं तो हमें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी है। वह तो अत्यधिक व्यस्त हैं।"

"और फिलिप!" मुफट ने पूछा।

"फिलिप ने छुट्टी के लिये कहा है" वृद्ध महिला ने कहा, "किन्तु जब वह आवेगा सम्भवतः आप लेस फान्डेट चले जावें।"

कॉफी अभी-अभी प्रस्तुत की गई थी व वार्तालाप घूम फिर कर पेरिस तक पहुँच गया और तब स्टेनियर का प्रसंग छिड़ गया। वह नाम सुनकर मैडम हुगन ने एक बेहोशी की चीख प्रकट की।

"साधारणतः मोशियो स्टेनियर वही हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति है जो उस संध्या को तुम्हारे मकान में मिला था। क्या वही नहीं है?—एक बैंकर, मेरा ख्याल है। वह बड़ा भयानक आदमी है। उसने गोमीरीज के निकट, चाऊ के किनारे थोड़ी ही दूर पर एक अभिनेत्री के लिये एक छोटी सी स्टेट खरीदी है। आस पास के सभी लोग, इस बात से अत्यधिक मस्त हैं। मेरे दोस्त! क्या तुम यह बात नहीं जानते हो?"

"तनिक भी नहीं", मुफट ने उत्तर दिया। "आह, तो स्टेनियर ने यहीं निकट ही एक स्टेट खरीदी है?"

इस प्रसंग में अपनी मां को व्यस्त देख कर जार्ज ने अपनी नाक प्याले में दाब ली; किन्तु काउन्ट के उत्तर पर व्यथित होते हुये उसने अपना सिर पुनः ऊपर किया और तब मुफट के चेहरे को उसने बड़े गौर से देखा। उसने जान बूझ कर यह झूँठ क्यों बोला? नौजवान लड़के के हाव-भाव को अपने निकट ही देखकर काउन्ट ने शंकित होकर देखा। मैडम हुगन ने कुछ विशेष बातें बताईं। वह स्टेट 'लॉ मिगनट' कहलाती थी। वहाँ पहुँचने के लिये ग्रुमरीज तक चाऊ होकर जाना पड़ता था। वहाँ एक पुल था जिससे वह सड़क लगभग दो मील लम्बी पड़ती थी अन्यथा पानी की धार को पार करना पड़ता जहाँ गिरने का भी डर था।

"और अभिनेत्री का क्या नाम है?" काउन्टेस ने प्रश्न किया।

"आह! मैंने सुना है," वृद्ध महिला ने बुदबुदाया। "जार्ज! जब माली बातचीत कर रहा था तब तो तुम वहाँ थे।"

जार्ज ने याद करने का सा बहाना किया। एक चम्मच को अँगुलियों के बीच दाबते हुये; मुफट रुका। तब काउन्टेस ने उसको सम्बोधित कर कहा, "क्या मोशियो स्टेनियर उस वेराइटी थ्येटर की गायिका नाना के साथ नहीं रह रहे है?"

"नाना ! हाँ, यही तो नाम है। एक बड़ी ही बदनाम औरत……।" मैडम हुगन ने कहा जो, अपने मस्तिष्क का संतुलन खो रही थी । "और वे लोग उसकी प्रतीक्षा लाँ मिगनट में करेंगे। मैंने वह सब माली से सुना है । जार्ज ! क्या माली ने यह नहीं कहा था कि वे लोग आज शाम को ही उसकी प्रतीक्षा करेंगे।"

काउन्ट को किंचित आश्चर्य हुआ । परन्तु जार्ज ने तुरन्त उत्तर दिया, "ओह ! नाना ! माली ने बिना जाने-समझे कहा था । अभी कुछ ही देर पूर्व कोचवान इसके सर्वथा विपरीत कह रहा था । परसों से पहले लाँ मिगनट में किसी के भी आने की आशा नहीं है।"

उसने स्वाभाविक रूप में बात करने का प्रयत्न किया और कनखियों से काउन्ट को देखने का प्रयास भी किया कि उसके शब्दों का क्या प्रभाव होता है। मुफट ने, दृष्टि गड़ाते हुये पुनः चम्मच को उँगलियों में दाब लिया । काउन्टेस ने नीले क्षितिज पर अनिश्चितता से दृष्टि गड़ाते हुये प्रकट किया कि जैसे वह वार्तालाप से मीलों दूर है। एक छिपा हुआ विचार उसके मन में प्रकट हुआ और वह चुपचाप मुस्करा दी। जबकि इस्टेला, अपनी कुर्सी पर सीधी होकर, वह सब कुछ सुनती रही जो कुछ भी नाना के सम्बन्ध में कहा गया था। उसके अछूते, क्वारे व पीले चेहरे पर किंचित भी परिवर्तन दृष्टिगत नहीं हो रहा था।

एक जमुहाई लेते हुये अपने सरल स्वभावानुसार मैडम हुगन ने कहा—'तब ठीक है ! किसी के प्रति बुरे विचार लाना अनुचित है। प्रत्येक को जीने का अधिकार है। हम तो केवल यही कर सकते हैं कि अपनी चाल-ढाल में जब भी वह सामने पड़े, हम उस ओर ध्यान ही न दें ।"

और जब वे सब मेज पर से उठे तो उसने पुनः काउन्टेस सैटीन को उसके विलम्ब से आने के लिये फटकारा किन्तु काउन्टेस ने यह कह कर अपने को बचाया कि उस सब का दोष उसके पति पर है। दो बार' जब वे लोग अपने ट्रङ्क ठीक करके चलने को तत्पर हुये तो उन्होंने आने का कार्य-क्रम स्थगित कर दिया—यह कर कि किन्हीं आवश्यक कार्यों को लेकर उनका

पेरिस में रहना परमावश्यक है, और अब जब यह निश्चित सा ही हो चुका था कि यात्रा स्थगित कर दी गई, उसने यकायक चलने का आदेश दिया । तब उस महिला ने बताया कि कैसे दो अवसरों पर जार्ज के भी आने का कार्यक्रम था और वह एक बार भी नहीं आ पाया किन्तु उस दिन अचानक लेस फान्डेट में वह आ टपका जबकि उसकी किंचित भी प्रतीक्षा नहीं थी ।

अब वह लोग बगीचे में आगये थे । वे दो व्यक्ति, जो अधिक सम्भ्रान्त प्रतीत हो रहे थे, आपस में बातचीत करते जाते थे । वे औरतों के इधर-उधर चल रहे थे और उनके वार्तालाप को भी गम्भीरतापूर्वक सुनते जाते थे ।

अपने पुत्र के सुहाने बालों को चूमते हुये मैडम हगन बोली—"वह ठीक ही है कि 'जीजी' ने स्वदेश में आकर अपने को वृद्धा माँ में लीन कर लिया । प्रिय जीजी ! वह मुझे भूलता नहीं !"

मध्याह्न के अनन्तर वह अत्यधिक उद्विग्न होगई । जार्ज ने अपने सिर में दर्द बताया जो धीरे-धीरे भयंकर हो गया । चार बजे के लगभग, एक सही उपचार के नाते उसने कहा कि वह ऊपर जाकर सोयेगा और यदि वह कल प्रातःकाल तक सो लेगा तो बिलकुल ठीक हो जावेगा । उसकी माँ जिद करती रही कि वह स्वयं उसे बिस्तर पर सुलावे । किन्तु उसके कमरा छोड़ते ही वह भाग कर कमरे में पहुँच गया और उसे बन्द कर लिया । वह कहता रहा कि ऐसा उसने इसलिये किया कि कोई उसे तंग न करे । "सारी रात मैं ठीक से सोऊँगा ।", यह कहते हुये उसने माँ को रात्रि-नमस्कार किया ।

यों वह सोया नहीं और बहुत बढ़िया कपड़े पहन कर अपनी चमकदार आँखों सहित कुर्सी पर बैठकर प्रतीक्षा कर रहा था । जब रात्रि-भोजन की घंटी बजी तो काउन्ट मुफट को आते हुये देखता रहा । तब, अनायास, दस मिनट के उपरान्त वह चुपचाप खिड़की की राह बिना किसी के दिखे खिसक गया और एक झाड़ी से होते हुये चारदीवारी के बाहर हो गया । उस समय उसका पेट खाली था किन्तु उसका हृदय दहकती भावनाओं से ओत प्रोत था । ऐसी अवस्था में वह चाऊ की ओर बढ़ गया । अन्धकार छाया हुआ था और अच्छी बरसात होना प्रारम्भ हो गई थी ।

बात यह थी कि उस संध्या लॉ मिगनट में नाना के आने की सम्भावना थी। मई के महीने से, जबसे स्टेनियर उसको उसके ग्रामीण प्रवास-स्थान में लाया था तब से निरन्तर उसकी इच्छा वहीं रहने की हो रही थी। उसके प्रति उसके हृदय में इतनी उत्कट अभिलाषा बनी हुई थी कि भावावेश में वह कभी-कभी रो देने की सी अवस्था में हो जाती थी। किन्तु प्रत्येक बार बार्डनोव ने यह कह कर सितम्बर तक टाल दिया कि वह उसे एक रात को भी मुक्त नहीं कर सकता; विशेषतः नुमायश के दिनों में तो उसे रहना ही होगा। तब अगस्त में आकर अक्टूबर की बात होने लगी। किन्तु इस बार नाना ने रोष में प्रकट किया कि वह पन्द्रह सितम्बर तक अवश्य लॉ मिगनट पहुंच जावेगी और यह दिखाने के लिये कि जो कुछ वह कह रही है वही वह करना चाहती है; उसने बार्डनोव के समक्ष ही अनेक व्यक्तियों को वहाँ रहने को निमन्त्रित किया।

एक संध्या, मुफट ने जिसकी उत्तेजना को वह बड़े कलात्मक ढंग से देख रही थी, कम कठोर बनने के लिये उद्विग्न होकर कहा। तब उसने कहा कि जब वह अपने ग्राम्य-प्रवास में होगी तब उस पर कृपा करेगी और उसको भी उसने वहाँ पहुँचने की तिथि पन्दरह ही बताई।

तब बारह तारीख को ही, अकेले 'जो' के साथ जाने की इच्छा बलवती हो उठी। सम्भवतः बार्डनोव को जब पता लगता कि वह जा रही है तो किसी बहाने से वह उसे अवश्य रोकता। तब वह मन ही मन प्रसन्न होती रही कि उसे केवल एक डाक्टरी प्रमाणपत्र भेज कर भ्रम में रख लेगी।

तब इस कल्पना से कि बिना किसी को जाने वह पूरे दो दिन एकान्त में लॉ मिगनट में सुगमता से व्यतीत कर सकेगी, उसने 'जो' को उसके ट्रङ्क आदि व्यवस्थित करने में शीघ्रता करने को कहा और तुरन्त एक गाड़ी में बैठ गई जहाँ भावावेश में उसने 'जो' को क्षमा याचना सहित चूम लिया।

स्टेशन पहुँच कर ही उसे ध्यान आया कि वह अपने जाने की सूचना स्टेनियर को भेज दे। तब उसने उससे चाहा कि यदि वह उसे स्नेहमयी व सरल देखना चाहता है तो परसों के पहले वह वहाँ कदापि न आवे।

दुबारा उसके मस्तिष्क में एक नया विचार उत्पन्न हुआ और उसने एक दूसरे पत्र द्वारा अपनी चाची से आग्रह किया कि वह छोटे लुई को साथ लावें। उससे बच्चा बड़ा प्रसन्न होगा। वे दोनों वृक्ष के नीचे खेलेंगे। तब, आरलीन्स से पेरिस तक, ट्रेन में उसके मस्तिष्क में सिवा मातृत्व प्रेम, फूलों और वृक्षों के अतिरिक्त कोई विचार नहीं आये और वह आँसुओं में भरी-भरी चुप बैठी रही।

आरलीन्स से लॉ मिगनट लगभग तीन मील दूर था। एक सवारी प्राप्त करने में नाना को लगभग एक घंटा लग गया—वह भी एक खुली हुई पुरानी खचड़ा गाड़ी जो धीरे-धीरे चल रही थी और जिसका पुराना लोहा बुरी तरह चरचरा रहा था। ड्राइवर पर, जो एक बुड्ढा आदमी था, नाना ने तुरन्त प्रश्नों की बौछार कर दी। क्या वह कभी लॉ मिगनट गया है? क्या वह इन्हीं पहाड़ियों के पीछे है? सम्भवतः वहाँ पेड़ों की बहुतायत हो, क्या नहीं होगी? और क्या मकान दूर से दिखाई देता होगा? तब वह छोटा बुड्ढा आदमी केवल हूँ···हाँ करता रहा। उत्कण्ठा में नाना गाड़ी में उछलती रही जबकि पेरिस को अचानक इतनी जल्दी छोड़कर चले आने के कारण जो नराज बैठी हुई थी। तब अचानक घोड़ा ठहर गया और वे समझीं कि स्थान आ गया। उन्होंने प्रश्न किया—

"क्या हम लोग आगये?"

प्रत्येक प्रश्न पर कोचवान घोड़े पर चाबुक जमाता रहा जो बड़ी कठिनाई से पहाड़ों पर चढ़ सका। भूरे आकाश के नीचे फैले मैदान को देखकर नाना प्रसन्न हो रही थी।

"ओह! जो! देखो कितनी घास है! क्या वह कोई अनाज है? हे भगवान्! कितना सुन्दर है यह!"

"यह तो बहुत स्पष्ट है कि मैडम इस तरफ कभी नहीं आई हैं और मैं तो ऐसे स्थानों में बहुत रही हूँ, जब मैं एक डेन्टिस्ट के पास थी क्योंकि उसका एक मकान बागीवल में था। इस शाम को बहुत सर्दी भी है। हवा भी भयानक हो रही है।"

वे लोग कुछ पेड़ों के नीचे से गुजर रहे थे। छोटे कुत्त की भाँति नाना ने अपनी नाक से पत्तियों की सुगन्धि को पाने की चेष्टा की। अचानक, सड़क के मोड़ पर पहुँच कर उसने एक मकान देखा जो पेड़ों के बीच में था। सम्भवत: वही है ; तब उसने कोचवान से पुन: प्रश्न किया जिसने 'न' कहकर उत्तर दिया और तब पहाड़ी के उतार पर घोड़े पर चाबुक कसते हुए वह बोला : "वह वहाँ है।"

वह उछल पड़ी और उसने सामने देखा—"कहाँ ? कहाँ ?" वह चीखी ; जैसे वह बड़ी पीली पड़ रही हो और कुछ भी पहचानने में असमर्थ हो। अन्ततः उसने एक दीवार देखी और प्रसन्नता में गाने लगी। वह ऐसे उछल-कूद रही थी जैसे कोई नारी भावनाओं के आवेश में ओत-प्रोत हो।

"ज़ो ! मैं उसे देख रही हूँ। मैं उसे देख रही हूँ। देखो ! उस ओर देखो ! ओह, छत्त पर एक छोटा छज्जा है जो ईंटों का बना है। वहीं एक छोटी सी झोंपड़ी है, किन्तु वह विशाल जगह है। ओह ! मैं कितनी प्रसन्न हूँ। देखो ! ज़ो देखो !"

गाड़ी लोहे के फाटक के सामने रुक गई। किनारे का एक छोटा दरवाजा खुला हुआ था और माली—एक दुबला-पतला व लम्बा आदमी अपनी टोपी अपने हाथ में लिये हुए सामने आया। नाना ने अपने को गम्भीर बनाने की चेष्टा की, क्योंकि कोचवान यों ही, अन्दर ही अन्दर हँस रहा था ; हालाँकि उसके ओंठ एक दूसरे में बुरी तरह चिपके हुए थे। नाना ने जल्दी-जल्दी चलने से अपने को रोका और माली की बात सुनती रही जो कि बहुत बोल रहा था और मैडम से क्षमा माँगता जाता था कि चूँकि उसका पता उस सुबह को ही मिला है अतः स्थान ठीक नहीं हो पाया है। किन्तु अपने सब प्रयत्नों के अनन्तर भी प्रतीत हो रहा था कि नाना भूमि से ऊपर उठ गई है। ज़ो तो उसके साथ चल ही नहीं सकती थी। रास्ते के एक कोने पर वह खड़ी हो गई और मकान को एक झलक में देखने लगी। इटैलियन प्रकार की वह भव्य कोठी थी जिसे किसी अँगरेज ने बनवाया था जो नैपल्स में दो वर्ष तक रहा था, तब अचानक उसे वहाँ से अश्रद्धा हो गई।

"मैडम ! मैं सब स्थान दिखलाऊँगा", माली बोला ।

किन्तु नाना ने, जो कुछ दूरी पर थी, कहा कि वह कष्ट न करे । वह अपने आप ही सब कुछ देख लेगी और नाना अपनी हँसी व उत्साह से उस खाली स्थान को गुँजाती रही जो महीनों से रिक्त था । पहले, एक बड़ा हॉल था जो सीला हुआ था, किन्तु उससे क्या प्रयोजन । वहाँ किसी को सोना तो था नहीं । आगे ड्राइंग-रूम था जिसकी बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ बहुत अच्छी थीं, जो बाग की ओर खुलती थीं । केवल लाल रंग से ढका फर्नीचर भयावह लग रहा था जिसे वह बदलने की सोच रही थी । जहाँ तक खाने के कमरे का प्रश्न था, वह ठीक-ठाक था । और कहीं उतना बड़ा कमरा पेरिस में हो तो कैसी पार्टियाँ दी जा सकती थीं ?

तब, जब वह ऊपर चढ़ने लगी तो उसे ध्यान आया कि उसने रसोई घर नहीं देखा है । तब वह दुबारा नीचे गई और कुछ न कुछ बुदबुदाती जाती थी । जो अग्नि स्थान को देखकर तारीफ कर रही थी जो एक भेड़ को पका सके इतना बड़ा था । जब वह ऊपर गई तो अपने सोने के कमरे को देखकर उल्लसित हो उठी । वहाँ रक्त-वासन्ती छींट के पर्दे पड़े हुए थे, जो चौदहवें लुई के प्रकार के थे ।

तब, वहाँ ठीक से सोया जा सकता था । वह एक प्रकार से एक स्कूली लड़की का घरोंदा सा था । वहाँ, अतिथियों के और भी पाँच या छै सोने के कमरे थे—कुछ बहुत अच्छे थे जहाँ ट्रङ्क इत्यादि रक्खे जा सकते थे ।

जो बड़ी गुमसुम थी और बड़ी उदास होकर प्रत्येक कमरे को देख रही थी और मैडम से दूर-दूर चल रही थी । छत्त पर पहुँचने वाली सीढ़ियों के ऊपर पहुँचते-पहुँचते नाना विलीन हो गई । व्यर्थ के लिये धन्यवाद ! वह अपने पैर नहीं तोड़ना चाहती । किन्तु जैसे किसी चिमनी से कोई आवाज निकल रही हो ऐसी एक आवाज उसके कानों में दूर से आई ।

"जो ! जो ! तुम कहाँ हो ? इधर आओ । तुमको कुछ पता नहीं । यह तो जैसे एक परियों का देश है ।"

जो जीने में चढ़ गई किन्तु बड़बड़ाती गई। उसने मैडम को छत्त पर एक ईंट के खम्भे से झाँकते हुए देखा। जो घाटी की ओर देख रही थी जो दूर तक फैली हुई थी।

क्षितिज अत्यधिक फैला हुआ व भूरी मिट्टी से आच्छादित था जबकि एक तेज हवा, पानी की बूँदें ले आई। नाना ने अपना टोप चढ़ा लिया और उड़े नहीं इसके लिये दोनों हाथों से उसे पकड़ लिया। उसकी 'स्कर्ट' तो जैसे झंडे की तरह उड़ रही थी।

"कितना वाहियात मौसम है ? मैडम उड़ जायेंगी", जो बोली।

मैडम ने सुना नहीं। अपना सिर आगे झुका कर वह अपने नीचे की भूमि को देख रही थी। चहारदीवारी के अन्दर तीन या चार एकड़ भूमि होगी। रसोई के सामने के बगीचे का दृश्य उसे घेरे रहा। तब वह पुन: अन्दर घूम गई और सेविका के साथ जीने की ओर बढ़ते हुए बोली—

"वह पूरा तरकारियों से भरा हुआ है। तरकारियाँ भी ऐसी भारी-भारी ? चारों ओर सलाद, मूली, प्याज और सब कुछ भरा हुआ है। जल्दी आओ।"

वर्षा तीव्र हो गई थी। उसने अपना रेशमी टोप उतार लिया और पगडंडी पर दौड़ने लगी।

"मैडम बीमार हो जायेंगी", जो चिल्लाई और चुपचाप बरांडे में खड़ी रही।

किन्तु मैडम सब कुछ देखना चाहती थी। प्रत्येक नई चीज को देखकर नया सम्बोधन प्रकट होता था : "जो ! यहां वह सकरकंद है। आओ देखो ! ओह ! ये चुकन्दर जान पड़ते हैं ? ये कितने प्रिय लगते हैं ! इनमें फूल निकले हुए हैं। पता नहीं ये क्या हैं ? जो ! आओ देखो, तुम इन्हें जानती होगी।"

परन्तु नौकरानी हिली तक नहीं ! मैडम सचमुच पागल हो गई है। इस समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी। वह छोटा सा रेशमी सफेद छाता लिये थी जो काला दिखाई पड़ रहा था और मैडम को ढँकने में असमर्थ था तथा नाना की स्कर्ट भी तर हो गई थी। किन्तु उसकी उसे कोई चिन्ता न

थी। बरसात होते हुए भी उसने रसोई घर व फलों का बगीचा देखा—हर पेड़ के नीचे रुकते हुए और हर तरकारी-क्यारी पर झाँकते हुए। तब उसने भागकर कुंए में झाँकते हुए लकड़ी के चौखटे को हटाकर देखना चाहा कि अन्दर क्या है ? उस क्षण उसका केवल यही कार्य था कि वह प्रत्येक रास्ते पर जाय और प्रत्येक वस्तु का स्वतः निरीक्षण करे, क्योंकि वह उनके स्वप्न पेरिस की सड़कों पर जूतियाँ चटकाते हुए भी देखा करती थी।

पानी अब भी तेजी से बरस रहा था। रात्रि निकट है, इसकी चिन्ता के अतिरिक्त उसे कुछ भी ध्यान नहीं था। अब ठीक से सूझ नहीं पड़ता था अतः जहाँ वह स्वयं न देख पाती वहाँ टटोल कर देखने की चेष्टा करती।

अचानक, चाँदनी में उसने एक स्थान पर स्ट्राबेरीज की खोज कर ली। उस समय जैसे उसका बालपन लौट आया।

"स्ट्राबेरीज—स्ट्राबेरीज ! वहाँ कुछ हैं। जो ! एक प्लेट ! आओ और कुछ स्ट्राबेरीज इकट्ठा कर लो।"

तब एक दलदल के स्थान पर खड़े होने के कारण नाना का छाता गिर गया और उस पर पूरी तरह पानी पड़ने लगा। अपने भीगे हाथों से, उसने पत्तियों के बीच से, कुछ स्ट्राबेरीज इकट्ठी कीं। जो, फिर भी प्लेट नहीं लाई और वह नौजवान लड़की जब उठी तो जैसे उसे डर लगा। उसने सोचा, उसने कोई चीज हिलते-डुलते देखी है।

"कोई जानवर !" वह चिल्लाई, किन्तु उसे कितना आश्चर्य हुआ जब उसने मार्ग में एक आदमी देखा जिसे उसने पहिचान लिया।

"क्यों ? यह तो एक लड़का है ! बच्चे, तुम वहाँ क्या कर रहे थे ?"

"हाँ, मैं आया हूँ", जार्ज ने उत्तर दिया।

वह आश्चर्य में डूबी रही : "तब क्या तुमने मेरे आने की बात माली से सुनी थी ? ओह ! बच्चा। वह तर हो गया है।"

"आह ! मैं बताऊँ ! मेरे चलने के उपरान्त पानी बरसने लगा, तब मैंने 'गुमीरोज' की ओर से जाना उचित नहीं समझा और 'चाऊ' को पार करते समय मेरा पैर फिसल गया और मैं एक ऊटपटांग तालाब में गिर पड़ा।"

नाना, तुरन्त, स्ट्राबेरीज भूल गई। वह काँप रही थी और दयार्द्र हो उठी थी। वह गरीब जीजी पानी के तालाब में; और तब वह उसे घर की ओर खींच लाई। वह बहुत सी आग जलाने की बात कहने लगी।

"तुम जानती हो," वह बुदबुदाया और उसे अँधेरे में रोकते हुये बोला—"मैं केवल इस डर से छिपा हुआ था कि कहीं पेरिस की ही भाँति पुनः न झिड़क दिया जाऊँ जबकि मैं अनायास वहाँ पहुँच गया था।"

वह बिना कुछ उत्तर दिये हँसती रही और तब उसने उसका माथा चूम लिया। उस दिवस के पूर्व तक वह उसे लड़का ही समझती रही और उसके कथनों को उसने कभी भी गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया और यह सोचकर कि वह बेमतलब है उससे केवल ठिठोली करती रही। तब उसने बड़ी चिन्ता प्रकट की जिससे उसे किंचित सान्त्वना मिले। अपने सोने के कमरे में आग जलाने की बात वह कहती रही। वे वहाँ अधिक गरम व आराम से रहेंगे। चूंकि हर प्रकार की भेंटों की जो अभ्यस्त थी; अतः उसे जार्ज को देखकर विस्मय नहीं हुआ; किन्तु माली को जो कुछ लकड़ी लाया था उसे देखकर आश्चर्य अवश्य हुआ कि उसके पूर्व उस व्यक्ति को देखकर जो पानी में तरबतर था उसने उपेक्षा के भाव सहित द्वार तक नहीं खोला था। वहाँ से तब वह हटा दिया गया क्योंकि अब किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता न थी। एक लैम्प से कमरे में प्रकाश हो गया और आग में जोर की लपटें दिखाई देने लगीं।

"वह कभी नहीं सूखेगा। उसे सर्दी लग जावेगी," नाना ने जार्ज को कांपते देखकर कहा।

और दूसरा पाजामा भी नहीं था। वह माली को पुकारने वाली थी तभी उसके मस्तिष्क में एक युक्ति आ गई। जो, कपड़ों के कमरे में सन्दूक खाली कर रही थी और तब वह मैडम को बदलने के लिये कुछ धुले कपड़े ले आई जिनमें एक शेमीज—कुछ पेटीकोट और ड्रेसिंग-गाउन था।

"लेकिन यह बढ़िया रहेगा!" युवती ने कहा: "जीजी इन्हें पहन सकता है। हे: ! मेरी चीजें पहनने में तुम परेशान मत होओ। जब तुम्हारे अपने कपड़े सूख जायें तब उन्हें पहन लेना और शीघ्र ही घर लौट जाना"

जिससे तुम्हारी माँ तुम पर नाराज न हो। जल्दी करो। मैं भी जाती हूँ और अपने कपड़े कपड़ों के कमरे में बदलती हूँ।"

जब दस मिनट बाद ड्रेसिंग-गाउन में वह लौटी तो उसने अपने हाथ ताजगी के ध्यान में भींच लिये।

"ओह! कितना प्यारा! एक स्त्री की पोशाक में यह कितना अच्छा लगता है।"

उसने साधारण रूप से एक रात्रि की पोशाक पहन ली थी; एक गोट-दार गरारा पहना था तथा 'केमरिक' का लेस लगा हुआ ड्रेसिंग-गाउन। उन कपड़ों में वह लड़की जैसा लग रहा था और उसके सुन्दर हाथ नंगे दिख रहे थे तथा उसके पतले बाल, जो अभी भी गीले थे, उसकी गर्दन पर लटक रहे थे।

तब उसकी कमर में हाथ डालकर नाना बोली: "यह सचमुच मेरी ही भाँति कमसिन लग रहा है।" "ज़ो! यहाँ आकर देखो! ये इसमें कितने ठीक हैं। हः! ये ऐसे नहीं लगते जैसे इसी के लिये सिले हों? केवल वक्ष के स्थान को छोड़कर—जो बहुत फैला हुआ है। बेचारा ज़ीज़ी, उसका वह स्थान वैसा नहीं है जैसा मेरा।"

"निश्चित ही वहाँ थोड़ा अन्तर है," मुस्कराते हुये जार्ज बुदबुदाया।

वे तीनों अत्यधिक प्रसन्न हो रहे थे। नाना ने ड्रेसिंग-गाउन के आगे के सारे बटन बन्द कर दिये जिससे वह अच्छा दिखे। वह उसे एक गुड्डे की तरह घुमाती रही, थपथपाती रही; और उसकी स्कर्ट को पीछे से उभारने लगी। फिर वह उससे पूछती रही कि वह आराम से है और गरम भी? हां! वह बिल्कुल ठीक था। एक नारी की रात्रि-पोशाक से गरम और क्या हो सकता था; यदि उसको वैसी सुविधा मिले तो वह नित्य एक पहने! वह उसके अन्दर घुमेड़ें लेने लगा, लिनेन की मुलायमी पर हाथ फेरता रहा। उन ढीले-ढाले कपड़ों की सुगन्धि को भी पीता रहा। उसे लग रहा था जैसे वह नाना के शरीर की गरमाहट से भरा जा रहा हो। ज़ो, उसके गीले कपड़े रसोई में ले गई और आग के सामने जल्दी से जल्दी सूख जायें वैसी व्यवस्था करने लगी। तब, जार्ज एक आराम कुर्सी पर फैलकर कहने लगा—

"मैं कह रहा हूँ—आज रात आप कुछ खा-पी नहीं रही हैं। मैं भूख से तड़पड़ा रहा हूँ। मैंने रात्रि का भोजन नहीं किया है।"

नाना बड़ी नाराज़ थी। कितना बेहूदा लड़का है कि खाली पेट माँ के पास से भाग आया है। चलो, और तालाब में फांद पड़ो। यों उन्हें कुछ न-कुछ खाने को तो चाहिये ही। उनके पास जो कुछ अच्छे से अच्छा है, उसका प्रबन्ध होगा। तब आग के सामने मेज घसीट कर उन्होंने ऐसे मज़ाक का खाना खाया जो कभी न सुना गया होगा। जो माली तक दौड़ी हुई गई—यह ध्यान कर कि कहीं मैडम आरलीन्स में न आ पाई हों; उसने केबेज-रूम बना रक्खा था। क्या तैयार किया जायगा, मैडम अपने घर में यह व्यक्त करना भूल गई थीं। सौभाग्यवश, उस स्थान पर काफी सामान था। केबेज-सूप के साथ रोटी के टुकड़े खाये गये। तब नाना ने अपना झोला टटोला और एह-तियातन जो कुछ उसने रख लिया था निकालना प्रारम्भ किया—पेस्ट्री, मिठाई का पैकेट, कुछ सन्तरे। उन दोनों ने दानवों की भाँति भोजन किया; जैसी उनकी नौजवानों की सी भूख थी;—बिना किसी उत्सव या व्यावहारिकता के कामरेडों की भाँति।

नाना ने, यह सोचकर कि वह अधिक प्यारा व अपनेपन का नाम है; जार्ज को माई-डियर कहकर सम्बोधित किया। मिठाई के तौर पर वे मुरब्बे का एक भरा हुआ बर्तन खा गये जिसको उन्होंने कपबोर्ड के ऊपर रक्खा पा लिया था और जो को तंग न करें इस ध्यान से एक ही चम्मच से बारी-बारी से वे दोनों खाते रहे।

"आह! मेरे प्यारे!" नाना ने कहा और टेबिल को एक ओर सरकाते हुये बोली—"दस साल से मैंने इतना भरपेट खाना नहीं खाया था।"

देरी होती जा रही थी और उसे कोई उलझन न हो इस ध्यान से नाना, जार्ज को जल्दी घर भेज देना चाहती थी। किन्तु वह निरन्तर दोहराता रहा—"काफी समय है। अभी कपड़े नहीं सूखे हैं।"

जो ने कहा कि कपड़े अभी एक घंटे नहीं सूखेंगे; किन्तु यात्रा की थकान से प्रतिपल निद्रा का अनुभव करने के कारण उन्होंने उसको सोने भेज

दिया । तब उस निःशब्द मकान में वे अकेले रह गये । वह एक शान्त और सुहानी रात थी । आग धीमे-धीमे जल रही थी और गरमी उस बड़े कमरे में भरती जा रही थी जहाँ जो ने जाने से पहले ही बिस्तर ठीक कर दिया था। नाना ने अत्यधिक गरमाहट का अनुभव करने के कारण उठकर एक मिनट के लिये खिड़की खोली । यकायक उसने एक निःशब्द चीख मारी ।

"स्वर्गतुल्य ! कितना सुहाना है यह? देखो, मेरे प्यारे ।"

जार्ज भी वहाँ आ गया और चूंकि खिड़की की छड़ काफी बड़ी नहीं थीं अतः उसने अपना हाथ नाना की कमर में डाल दिया और अपना सिर नाना के कन्धे पर रख लिया । मौसम अचानक बदल गया । आकाश स्वच्छ हो रहा था तथा तारे छिटक रहे थे । चाँद अपनी सुनहली-रुपहली चादर सर्वत्र फैला रहा था । एक गम्भीर शान्ति सर्वत्र विराज रही थी । घाटी जो मैदान की ओर काफी फैली हुई थी खुशनुमा लग रही थी जहाँ वृक्षों की छाया ऐसी लगी मानों प्रकाश के स्थिर सागर में यत्र-तत्र फैले टापू । नाना में गहरी भावनायें सजग हो रही थीं । उसमें पुनः लड़कपन भर आया था । उसे ध्यान आया था वह केवल इतना ही था—यह फैला हुआ मैदान, इतनी सुगन्धियुक्त हरी घास, यह मकान, ये तरकारियां और वह सब कुछ उसे इतना उद्विग्न कर रहा था जैसे उसने बीस वर्ष पूर्व पेरिस छोड़ा हो । पिछले दिन की बात तो बहुत दूर थी । वह वैसा सोच रही थी जैसा उसने कभी नहीं सोचा था । इन समस्त क्षणों में, जार्ज धीरे-धीरे उसकी गर्दन चूमता जाता था जो नाना की वासना को जानून कर रहा था । एक झिझकते हाथ से नाना ने उसे वर्जित किया वैसे जैसे कोई बच्चा अधिक प्यार से थक कर मना करे और तब उसने पुनः दोहराया कि अभी समय है, वह घर चला जाय । उसने न नहीं कहा परन्तु वह धीरे-धीरे विदा लेना भूलता जा रहा था ।

तब एक चिड़िया ने गाना प्रारम्भ किया और रुक गई । खिड़की के नीचे की घनी झाड़ी में सम्भवतः वह राबिन थी ।

"एक क्षण रुको," जार्ज बुदबुदाया ।" लैम्प की रोशनी उसे डराती है, मैं उसे बुझा दूँ ।" और जब वह लौटा तथा अपना हाथ पुनः नाना की कमर से सटा लिया तो उसने जोड़ दिया—"हम उसे सीधे, फिर जला सकते हैं ।"

नाना ने जब राबिन को ध्यानपूर्वक सुनना चाहा तो लड़के ने उसे भींच लिया। नाना याद करती रही। हाँ, वह जो कुछ देख रही है वह सब उपन्यासों में रहता है। एक बार, उन दिवसों में जो बीत गये, वह अपना हृदय, इस प्रकार चाँदनी देख कर किसी को दे सकती थी; ऐसे राबिन को गाना सुन कर और एक साथी को निकटतम पाकर जो प्यार से भरपूर हो। हे भगवान ! वह चिल्ला उठेगी—वह उसे इतना प्यारा और मीठा लग रहा है। निश्चित ही उसका जन्म नैतिक जीवन व्यतीत करने के हेतु हुआ है। उसने जार्ज को पुन: रोका जो, अब तक भयंकर होता जा रहा था।

"नहीं, छोड़ दो। मैं नहीं। तुम्हारी इस आयु के लिये वह बहुत बुरा होगा। सुनो ! मैं तुम्हारी मामा की भाँति हूँ।"

वह बड़ी लजालु हो रही थी व उसका चेहरा आरक्त हो रहा था। लेकिन उसे देखने वाला कोई न था। उनके पीछे का भारी कमरा, रात्रि के अन्धकार से भरा हुआ था और सामने दूर तक जहाँ भी दृष्टि जा सकती थी, पूर्ण नीरवता का साम्राज्य था। उसके पूर्व उसने वैसी लाज का कभी अनुभव नहीं किया था। धीरे-धीरे, उसकी सारी शक्ति हर प्रकार की रोक-थाम व अन्तर्द्वन्द्व के रहते हुये भी समाप्त हो रही थी। वह छद्म-वेश, वह किसी नारी की रात्रि पोशाक और वह 'ड्रेसिंग-गाउन' उसे अभी भी हँसा रहा था। वह एक प्रकार से एक समवयस्क लड़की की छेड़छाड़ सरीखी बात थी।

"ओह ! यह गलत है, यह गलत है", वह बुदबुदाती रही—अपनी अन्तिम चेष्टा के उपरान्त; और तब वह अछूती कुमारी की भाँति एक बालक के हाथों पर झुक गई। उस समय सुहावनी रात्रि छाई हुई थी। सारा वातावरण सो रहा था।

दूसरे दिन, 'लेस फान्डेट' में जब मध्याह्न-भोजन की घंटी बजी तब खाने के कमरे में कोई बड़ी मेज नहीं लगाई गई। पहली सवारी, फाचरी व डागनेट को लाई और उनके बाद काउन्ट डि. वैन्डेव्रेस आये जो देर वाली गाड़ी से आये थे।

जार्ज ने, अपनी भरी आँखों व पीली आकृति सहित अन्तिम बार

देखा। प्रत्येक प्रश्न के जवाब में उसने केवल एक ही उत्तर दिया कि वह पहले से बहुत ठीक है ; वस्तुतः वह परिश्रम के भार से त्रस्त था। मैडम हगन ने, जो उसकी आकृति को निरन्तर उत्सुक मुस्कराहट में निहारती जाती थी, उसके बालों में हाथ फेरा जिन पर उस सुबह बुरी तरह कंघा किया हुआ था ; किन्तु वह दुलार से घबड़ाकर पीछे हट गया। भोजन के समय उसने वैन्डे-व्रेस को मीठी फटकार बताते हुए कहा कि पिछले पाँच वर्षों से वह उनकी प्रतीक्षा कर रही है।

"हाँ, तो तुम अन्त में यहाँ आगये लेकिन व्यवस्था कैसे की ?"

वैन्डेव्रेस ने बात को हँसी में ही लेना श्रेयस्कर समझा। उसने बताया कि पिछली संध्या को वह क्लब में काफी धन हार गया, इसलिये उसने इन क्षेत्रों में समय व्यतीत करने का निर्णय किया।

"हाँ ! निश्चित अब, अगर तुम मुझे अपने आस-पास अपनी उत्तरा-धिकारिणी बना सको। यहाँ कुछ अत्याकर्षक रमणियाँ अवश्य होंगी।"

वृद्धा महिला डागनेट व फाचरी के सम्बन्ध में उस क्षण सोच रही थी कि उन्होंने कृपा करके उसके पुत्र का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया जबकि उसे उस सुन्दर विस्मय पर भी आनन्द हो रहा था कि मारक्युस डि. चोरड ने तीसरी गाड़ी में आकर कमरे में प्रवेश किया।

"आह !" वह बोली : "आज सुबह यहाँ एक ग्राम-सभा होगी। तुम सब लोगों ने यहाँ इकट्ठा होने का निश्चय किया है। क्या हो गया है ? वर्षों बीत गये मेरी चेष्टा पर भी आप लोग नहीं आये और अब सब एक साथ आ पहुँचे। ओह ! लेकिन मैं कोई शिकायत नहीं कर रही हूँ।"

मेज पर और स्थान बढ़ाया गया। फाचरी ने अपने को काउन्टेस सेबीन के निकट बैठे पाया जिसने अपनी आभा से उसे जगमगा दिया जो उसे 'रूये मिरोमेसनिल' के भव्य ड्राइङ्ग-रूम से उदासीन देख रहा था। डागनेट इस्टेला के बाँयीं तरफ बैठा और उस सुस्त, उदासीन तथा लम्बी छरहरी लड़की के नैकट्य से ऊब रहा था जिसकी तीखी कोहनियाँ एक भय थीं। मुफट व डि. चोरड ने अपनी चालाक दृष्टियों का आदान-प्रदान किया। वैन्डेव्रेस अपने भावी विवाह के प्रति मजाक कर रहा था।

"सम्भ्रांत महिलाओ !" मैडम हुगन ने उसकी ओर कहते हुए समाप्त किया : "मेरा एक नया पड़ोसी आया है जिसे शायद आप सब लोग जानते हैं", और उसने नाना का जिक्र किया ।

वन्डेन्‍स ने अत्यधिक विस्मय प्रकट किया : "क्या ! नाना का ग्राम्य-गृह यहीं कहीं है ?"

फाचरी और डागनेट ने भी आश्चर्य-प्रदर्शन का बहाना किया । मारक्युस डि. चोरड ने कुछ निगलते हुए ऐसा दिखाया जैसे वे कुछ समझे ही नहीं । उनमें से एक भी व्यक्ति मुस्कराया नहीं ।

'बिना किसी संशय के", वृद्ध महिला ने कहा : "और अधिक क्या, वह गत रात्रि लॉ मिगनट में आ भी गई है, जैसी मैं आशा कर रही थी । मैंने वह सब आज प्रातः ही माली से सुना है ।"

इस सूचना को सुनकर एक भी भद्र-व्यक्ति अपने वास्तविक विस्मय को छुपा न सका । क्या ! नाना आ गई ? और वे लोग, उसके कल से पूर्व पहुँचने की आशा नहीं कर रहे थे । वे लोग सोच रहे थे, वे उसके पूर्व आगये हैं । जार्ज ने अकेले अपनी आँखें नहीं उठाई और अपने 'टेम्बलर' को थकी दृष्टि से देखता रहा । भोजन के प्रारम्भ से ही जैसे वह अपने नेत्र खोलकर सो रहा हो—ऐसा दिखाई पड़ रहा था और एक सशंक मुस्कराहट उसके ओठों पर खेल जाती थी ।

"क्या तुमको अब भी तकलीफ है, जीजी !" उसकी माँ ने प्रश्न किया जो कठिनाई से अपनी दृष्टि उससे हटा पाती थी ।

उसने प्रारम्भ किया और यह कहकर चुप हो गया कि वह ठीक है । किन्तु वह उस लड़की की कमनीय दृष्टियों को उस पल भी देख रहा था जिसने बेहद नृत्य किया था ।

"तुम्हारी गर्दन को क्या हुआ ?" अचानक मैडम हुगन ने भयातुर होकर प्रश्न किया : "यह सब लाल हो रही है ।"

वह अव्यवस्थित हो गया और उसे कुछ उत्तर न बन पड़ा । वह नहीं

जानता ; उसकी गर्दन से तो कोई वास्ता नहीं था। तब अपनी कमीज के कालर को उपर उठाकर वह बोला : "आह ! किसी मच्छर ने काट लिया है।"

मारक्युस डि. चोरड ने एक गहन दृष्टि उस लाल निशान पर डाली। मुफट ने भी जार्ज को देखा। लंच लगभग समाप्त हो रहा था और वे लोग पड़ौस में कुछ चर्चा करने की सोच रहे थे। फाचरी, काउन्टेस सेबीन के लावण्य पर अधिकाधिक मोहित होता चला जा रहा था। जब उसने फलों की प्लेट उसकी ओर बढ़ाई तो एक दूसरे के हाथ छू गये और तब उसने एक क्षण उसकी ओर इतनी गहराई से देखा तो उसे, उस स्मृति ने पुन: घेर लिया जब एक रात वह नशे में धुत् था। तब वह वैसी नहीं लग रही थी। तब वैसा कुछ था जो उसे अधिक व्यक्त कर रहा था। उसकी बादामी रङ्ग की रेशमी पोशाक कन्धों पर कुछ ढीली थी जो उसकी परिष्कृत रुचियों और कलात्मक प्रकृतियों को व्यक्त कर रही थी।

मेज छोड़कर, डागनेट फाचरी के पीछे हो रहा ताकि कुछ तीखे और भद्दे व्यंग्य वह इस्टेला के प्रति कर सके। "एक खुशनुमा हरी डाल जो किसी भले आदमी के हाथों में जबरदस्ती खोंस दी जाय।" परन्तु वह शांत हो रहा, जब पत्रकार ने बताया कि उसका दहेज है—चार लाख फ्रैंक।

"और माँ !" फाचरी ने प्रश्न किया : "वह एक अच्छी स्त्री होगी, क्या नहीं ?"

"ओह ! वह अच्छी सिद्ध हो सकती है। किन्तु मेरे दोस्त, कोई उम्मीद नहीं है।"

"वाह ! बिना प्रयत्न किये क्या पता लगे।"

उस दिन कोई बाहर नहीं जा रहा था क्योंकि फुहार पड़ रही थीं। जार्ज ने, जल्दी में जाकर, अपने को एक कमरे में बन्द कर लिया। सभी लोग एक दूसरे को कोई सफाई नहीं दे रहे थे क्योंकि प्रत्येक व्यक्तिगत रूप से यह जानता था कि उसके वहाँ आने का कारण क्या है। वैन्डेव्रेस ने, जो खेल में बहुत अधिक हार गया था, सचमुच यह बात पसन्द की थी कि वह अपना कुछ समय ग्राम्य-क्षेत्रों में किसी महिला-मित्र के संसर्ग का वह अनुभव करना

चाहता था जो उसे इस निर्वासन में संतोष दे सके। फाचरी जो अभी तक अत्यधिक व्यस्त था तथा जिसको 'रोज़' ने छुट्टियों की स्वीकृति दी थी अवकाश का लाभ उठाने के हेतु नाना के दूसरे लेख के लिये प्रयत्न करने की बात सोचता रहा कि वह अपने ग्राम्य-जीवन पर कुछ लिखे जहाँ उसने अपने हृदय के लोगों को जुटाया था। जब से स्टेनियर वहाँ दिखाई दिया था तब से डागनेट उदास हो गया था; फिर भी प्यार अनुराग के क्षणों की चिन्ता में लीन था। जहाँ तक मारक्युस डि. चोरड का प्रश्न था उन्होंने अपना समय भली प्रकार बिता रक्खा था। किन्तु इन सब लोगों में जो 'वीनस' की मंजिल की ओर थे केवल आधे ऐसे थे जो उसके बनाव व पेन्ट की चिन्ता में हों; मुफट तो सर्वाधिक जल रहा था जैसे नई चाहना से प्रतिफल आन्दोलित हो; भयत्रस्त था, रोषमय था जो सब कुछ उसके भुनते हुये मन-तन पर बैठा हुआ था। उसके साथ तो एक पृथक वादा किया गया था। नाना उसकी प्रतीक्षा में थी। तब उसने दो दिन पूर्व पेरिस को क्यों छोड़ दिया ? रात्रि-भोजन के पश्चात आज ही लॉं मिगनट जाने का निश्चय वह कर चुका था।

उस रात जैसे ही काउन्ट ने जगह छोड़ी, जार्ज ने उसका पीछा किया। गुमरीज की सड़क पर वह पृथक हो गया और चाऊ की ओर से पानी को काटता हुआ, एक साँस में नाना के यहां पहुँच गया। उसकी आँखें रोष के आंसुओं से जल रही थीं। आह ! वह समझा। वह अधेड़ आदमी जो मार्ग में था, नाना से मिलने के लिये समय निर्धारित किये हुये है। नाना, उनकी उस ईर्षा पर आश्चर्य करने लगी। परिस्थितियों का बहाव जिस ओर हो रहा था उससे वह चिन्तित भी थी अतः उसने अपनी भुजाओं से जार्ज को घेर लिया तथा जितनी सान्त्वना वह दे सकी देती रही। नहीं, उसकी भूल है। वह किसी के इन्तजार में नहीं है। अगर कोई व्यक्ति आरहा है तो उसमें उसका कोई दोष नहीं है। जीज़ी बड़ा मूर्ख है यदि वह व्यर्थ में ऐसी किसी बात में अपना मस्तिष्क विकृत कर रहा है। उसने अपने बच्चे की कसम खाकर कहा कि वह जार्ज के अतिरिक्त किसी को प्यार नहीं करती। तब उसने उसे चूमा और उसके आंसुओं को पोंछा।

"सुनो, तुम देखोगे कि सब चीजें केवल तुम्हारे लिये हैं", उसने कहा जब तक कि वह शान्त हो चुका था। "मेरे प्यारे! तुम जानते हो स्टेनियर आ गया है। वह ऊपर है किन्तु मैं उसे लौटा तो नहीं सकती।"

"हाँ, मैं जानता हूँ। मुझे उसकी चिन्ता नहीं है", नौजवान बुदबुदाया।

"हाँ, इस गलियारे के अन्त के एक कमर में मैंने उसे टिका दिया है और बहाना कर दिया है कि मेरी तबियत ठीक नहीं है। वह अपने सामान को निकाल रहा है। चूँकि तुमको आते हुये किसी ने देखा नहीं है अतः तुम भाग कर मेरे कमरे में छिप जाओ और वहीं मेरी प्रतीक्षा करना।'

जार्ज उछल पड़ा और उसने अपना हाथ उसकी कमर में डाल दिया। यह सही था कि तब वह उसे थोड़ा स्नेह करती थी। अतः बीते कल की पुनः सम्भावना थी। वे लैम्प को बुझा कर, सारी रात, दिन निकलने तक, अंधियारे में एक साथ रहेंगे। तब, घंटी की आवाज सुन कर वह चुपचाप ऊपर भाग गया। जीने से ऊपर पहुँच कर सोने के कमरे में उसने अपने जूते, बिना किसी आवाज किये, उतार दिये। तब उसने अपने को छिपाया। एक पर्दे के पीछे, भूमि पर वह लेट गया और अच्छे लड़के की भांति प्रतीक्षा करता रहा।

जब काउन्ट मुफट सामने आया, नाना को कुछ भद्दा सा लगा क्योंकि जार्ज से निबट कर वह व्यवस्थित भी न हो पाई थी। उसने उसको वचन दिया था, और वह चाहेगी कि अपना वचन-निर्वाह करे क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति दिखता था जिसके कुछ मतलब होते हैं, व्यवसाय। किन्तु, सचमुच, जो कुछ भी कल हो चुका उसकी पूर्व से किसने कल्पना की थी? यात्रा, यह मकान जिसको उसने पहले कभी नहीं जाना था, वह बच्चा जो भीगता पानी में आया था; और वह उसे कितना भला लगा था और कैसा अच्छा हो कि वैसा अनुभव वह निरन्तर करती रहे। किन्तु एक भद्र पुरुष के लिये वह कितना बुरा है? पिछले तीन महीनों से वह उसका खिलवाड़ बनाये हुये थी। वह एक भद्र नारी का सा अभिनय करती रही जिससे वह अधिक उत्तेजित हो। तब! उसे

कुछ और प्रतीक्षा करनी होगी । यदि वह उसे भला नहीं लगता तो उसकी मर्जी । वह सब कुछ कर सकती है किन्तु जार्ज के प्रति अविश्वासी वह कदापि नहीं बनेगी ।

गाँव के पड़ोसी की सी शान में काउन्ट घंटी बजा कर, बैठ गया था । केवल उसके हाथ, थोड़े २ हिल रहे थे । उसके शालीन व्यक्तित्व में जो अभी भी कुंआरापन झलक रहा था; तड़पती चाह जिसे नाना की चालों ने उभारा था अन्ततः भवावह उत्पात उत्पन्न कर रही थीं । वह गम्भीर व्यक्ति, वह अधिकारी जो 'ट्रलियर्स की पच्चीकारी, सोने व मीने के काम की हुई बग्घियों में शान से चढ़ता उतरता है; रात्रि में तकिये में मुँह भींचे पड़ा रहेगा या सिसकियाँ भरता होगा और अपनी बुद्धि की दयनीयता पर रुदन करता होगा किन्तु इस बार उसने अपनी कठिनाई को दूर करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था । उस नीरव चाँदनी में, मार्ग भर वह अपनी उद्विग्नता को सँभालता चला आया था; उन दोनों में पारस्परिक शब्दों का आदान प्रदान भी हुआ और उसने नाना को अपनी भुजाओं में लपेटने की चेष्टा भी की ।

"नहीं, नहीं, ध्यान करो ! तुम क्या कह रहे हो", उसने साधारणतः कहा । वस्तुतः उसके हृदय में रोप नहीं था और प्रति क्षण वह हँसती रही थी ।

अन्ततः उसने उसको दबोच लिया और उसके दाँत भिंच गये । जब उसने छटपटाहट में अपने को छुड़ाने की चेष्टा की तो वह भयानक होता गया तथा बताता रहा कि वह वहाँ क्यों आया है । नाना ने, अब भी हँसते हुये किन्तु एक घबड़ाहट में उसके हाथ थाम लिये । उसने उससे स्नेह भरे शब्दों में कहा ताकि उसका नक्कर अधिक कटु न प्रतीत हो ।

"आओ ! मेरे प्यारे, शान्त रहो । सच, ऐसा सम्भव नहीं है । स्टेनियर ऊपर है ।"

किन्तु वह पागल हो रहा था, उसने इसके पूर्व इस दशा में किसी व्यक्ति को नहीं देखा था । वह अब डर रही थी । उसने अपना हाथ उसके ओठों पर लगा दिया जिससे उसकी चीखें दबती रहें और तब नाना ने अपनी आवाज

धीमी करके प्रार्थना की कि वह उसे जाने दे। स्टेनियर सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था। इस क्षण नाना की स्थिति बड़ी हास्यास्पद हो रही थी। जब स्टेनियर ने कमरे में प्रवेश किया तो उसने नाना को देखा कि वह एक आराम कुर्सी पर लेटी हुई है और कह रही है :

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं इस प्रदेश को पसन्द नहीं करती हूँ।"

तब अपना सिर घुमाते हुये उसने अपने को सँभालते हुये व्यक्त किया 'प्यारे ! ये काउन्ट मुफट हैं जिन्होंने निकट से गुजरते हुये यहाँ की जलती रोशनी को देखकर अपने स्वागत से हमको अविभूत करना चाहा।"

दोनों व्यक्तियों ने एक दूसरे से हाथ मिलाये। मुफट का मुँह किंचित अंधेरे में था अतः वह बिना कुछ कहे मूर्तिवत खड़ा रहा। स्टेनियर भी गुम-सुम बना हुआ था। उन्होंने पेरिस की बातचीत प्रारम्भ की। व्यापार बड़ा मन्दा है। और 'बाडर्स' में कुछ बहुत भद्दी बातें भी हुई हैं। पन्दरह मिनट में ही मुफट ने विदा ली। जब युवती ने उसे द्वार तक पहुँचाया तो उसने अगली संध्या के लिये समय निर्धारित करने की प्रार्थना की। स्टेनियर तुरन्त अपने बिस्तर पर चला गया और नारी की यौन सम्बन्धी मनः विकृतियों के प्रति खिन्न होता रहा। अन्ततः दोनों अधेड़ व्यक्तियों से छुटकारा मिला। तब नाना किसी प्रकार जार्ज के पास पहुंच गई। उसने उसे देखा कि वह तब भी पर्दे के पीछे लेटे हुये उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। कमरे में अंधकार छाया हुआ था। उसने नाना को भूमि पर लिटा" लिया और तब वे खेलते रहे। लड़कों की भाँति पृथ्वी पर लुढ़कते रहे। वे थोड़ी थोड़ी देर में रुक जाते थे और अपने हास्य व चुम्बनों को रोक लेते थे जब कभी कभी उनके पैर किसी फर्नीचर से टकरा जाते थे।

वहाँ से थोड़ी दूर, गुनियर की सड़क पर काउन्ट मुफट धीरे-धीरे बढ़े जा रहे थे। वे अपने हाथ में अपना टोप लिये हुये थे और अपनी तनी भौहों को रात्रि की ताजी हवा में ठँडा करते जा रहे थे।

तब, आगे के दिनों में, उनका जीवन अत्यधिक मधुर बना रहा। उस छोकरे के सहवास में नाना ने पुनः अपने को पन्दरह वर्षीय बालिका का सा

अनुभव किया। उस छोकरे के प्यार–अनुराग में पुनः एक बार प्रणय सजग हो आया। इतने पर भी वह उस व्यक्ति की उपस्थिति के भार की भी अनुभूति कर रही थी जो वहाँ ठहरा हुआ था। उसने निरन्तर, अपने को आरक्त पाया। उसने एक ऐसी भावना का अनुभव किया जिससे वह काँप जाती थी। उसके अन्तरंग से कुछ ऐसा उठ रहा था कि वह चिल्ला उठे या अट्टहास करे। संक्षेप में मानो उद्विग्न कौमार्य अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं सहित उभर रहा था, जिससे वह लज्जित होती जाती थी। उसके पूर्व उसने वैसा अनुभव कभी नहीं किया। वातावरण ने उसमें समस्त कोमलता भर दी थी। जब वह लड़की थी, तब वह चाहा करती थी कि किसी झुरमुट में एक भेड़ के साथ वह रहे क्योंकि एक दिवस अपने घेरे में, ढलान पर उसने एक रस्सी में बंधी एक भेड़ देखी थी।

अब, यह सारी स्टेट, वह समस्त भूमि उसकी सम्पत्ति थी। इस समय वह भावनाओं से ओत-प्रोत हो रही थी। उसके वे वृहद् स्वप्न एक प्रकार से पूरे हो रहे थे। उसने पुनः एक बार बालकों की कल्पनाओं का अनुभव किया; और रात्रि के समय, दिवस की समस्त व्यस्तताओं से थक कर, वृक्षों और पुष्पों की सुगन्धि से पूर्णतः भरी हुई, वह, सीढ़ियों से ऊपर चढ़ी अपने जीजी से भेंट करने जो पर्दे के पीछे छिपा हुआ था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई स्कूल की लड़की आवेश में अपने किसी स्वजन से प्रेमालाप कर रही हो, जिससे उसका विवाह होने को हो। वह तनिक सी आहट से काँप जाती जैसे उसे अपने माता-पिता द्वारा पकड़े जाने का भय हो। वह उस सब सम्मोहन, उस सारी घबड़ाहट, प्रथम दोष के सारे भय का जैसे पूरी तरह अनुभव कर रही थी।

अस्तु, नाना, एक भावुक बालिका की सी मनःस्थिति का पूर्णरूपेण अनुभव कर रही थी। वह जैसे चाँदनी को घंटों बैठी देख सकती थी। एक रात्रि को उसने जार्ज के साथ, नीचे बाग से जाने की जिद्द की जबकि घर के सब लोग सो रहे थे। तब वे पेड़ों के नीचे घूमते रहे। उनके हाथ एक दूसरे की कमर में चिपटे हुए थे। तब वे घास पर लेट गये और ओस में पूरी तरह लिपट गये।

दूसरे अवसर पर, सोने के कमरे में, एक दीर्घ निश्वास के अनन्तर नाना उस छोकरे की गर्दन से लिपटकर सिसकियाँ भरती रही और बुदबुदाती रही कि उसकी मृत्यु हो जावेगी। बहुत बार, धीमे स्वर में, उसने मैडम लेराट का गीत गाया, जिसमें पुष्पों और पक्षियों का संवेदन था; जिसके प्रभाव से रुदन फट पड़ रहा था और तब उसने जार्ज को गम्भीर आलिंगन में आबद्ध कर लिया और ईश्वरीय-प्रेम को व्यक्त करने वाले विभिन्न वचनों को जार्ज द्वारा व्यक्त कराया। संक्षेप में, उसने स्वयं ही माना कि वह मूर्खों की भाँति आचरण करती रही। तब वे कामरेडों की भाँति बिस्तर की पाटियों पर बैठ जाते और सिगरेट उड़ाते जाते। उनकी एड़िया लकड़ी की नक्काशी को छूती रहतीं।

किन्तु जब नन्हा लुइस आ गया तो वह पूर्णतः पिघल गई। उसके पागलपन पर मातृ-स्नेह का प्रभाव पड़ा। वह अपने लड़के को धूप में ले गई और उसे खिलाती रही। उसको राजकुमारों जैसे कपड़े पहना कर वह उसके साथ घास पर लेटती रही। तब उसने जिद्द की कि वह उसके पास ही सोवे—निकटवर्ती कमरे में जहाँ गाँव से आई अत्यधिक खिन्न, मैडम लेराट लेटते ही खर्राटे भर रही थीं। किन्तु नन्हे लुइस ने जीजी के प्रति नाना के स्नेह-व्यवहार में किंचित भी बाधा उपस्थित नहीं की, अपितु उसके विपरीत हुआ। उसने कहा कि उसके दो बच्चे हैं। उसने अपने ममत्व में उन दोनों को बाँध रक्खा था। रात्रि में, कम-से-कम दस बार, उसने जीजी को यह देखने भेजा कि लुइस ठीक से सो रहा है। उसके लौटने पर नाना अपने जीजी को मातृवत्-स्नेह से सिंचित करती रही। वह ममी की भाँति उसके साथ व्यवहार करती जबकि वह शैतान छोकरा, उस बड़ी लड़की की गोद में जैसे और छोटा बनकर प्रसन्न होता रहा कि वह बच्चे की भाँति उसे दुलराती और सुलाती रही। यह सब इतना मधुर था कि उन दोनों ने निश्चित किया कि वे कभी भी उस स्थान को नहीं छोड़ेंगे। वह सब को भेज देंगे और केवल नाना, जीजी और नन्हा बच्चा ही अकेले वहाँ रहेंगे। इस प्रकार प्रातःकाल होते-होते वे सैकड़ों हवाई-किले बनाते। तब वे मैडम लेराट की आवाज को भी नहीं सुनते जो बड़े फूलों

गे ऊब चुकी थी और इतनी जोर-जोर से खर्राटे ले रही थी कि सारा घर जग जावे।

यह सुन्दर जीवन लगभग एक सप्ताह तक बना रहा। काउन्ट मुफट प्रत्येक रात्रि आये और अपनी भर्राई व सरोष मुद्रा में लौटते रहे। एक रात तो उनको घुसने भी नहीं दिया गया। स्टेनियर को कृपापूर्वक पेरिस भेज दिया गया। उससे कहा गया कि मैडम अत्यधिक रुग्ण है। प्रति दिन, नाना अपने मन में यह सोचकर विरोध कर उठती कि वह जार्ज के प्रति सच नहीं है जो इतना सरल और छोटा है, जिसने अपना सारा विश्वास समेट कर नाना पर केन्द्रित कर दिया है। उसने सोचा कि वह बहुत ही हीन स्त्री है। इन विचारों से वह अत्यधिक अस्त-व्यस्त थी। ज़ो, अपनी मालकिन की इस नई खोज पर खेद सहित सहयोग प्रदान कर रही थी व सोचती जाती थी कि मैडम का दिमाग खराब हो गया है।

अचानक, छठे दिन, इस तरंगित वातावरण में, आगन्तुकों का एक जत्था आ टपका। नाना ने, बहुत से लोगों को इस ख़्याल से निमन्त्रित कर दिया था कि कोई नहीं आवेगा। अतः वह अत्यधिक विस्मित व त्रस्त हुई जब इस प्रकार एक संध्या, लॉ मिगनन के लोहे के फाटक के समक्ष एक 'आम्नी-बस' भर कर स्त्रियाँ व पुरुष आ खड़े हुए।

"यहाँ हम लोग हैं", मिगनन चिल्लाया जो सवारी से उतरने वालों में प्रथम था जिससे उसने अपने लड़कों—हेनरी व चार्ल्स को उतारा।

लेबार्डेट दूसरा था जिसने नीचे उतरने वाली अनेक महिलाओं को सहायता दी—लूसी स्टेवर्ट, केरोलीन हेकेट, तातानेने, मेरिया ब्लान्ड इत्यादि। नाना ने सोचा कि आने वाले सब लोग समाप्त हो चुके, जब लॉ फेलो कूदा और उसने अपने काँपते हाथों में गागा व उसकी लड़की एमली को सँभाला। सब मिलाकर वे लोग ग्यारह थे। उन सब के लिये स्थान देना कठिन था। लॉ मिगनट में केवल पाँच अतिथि-शालायें थीं, जिनमें एक में पूर्व से ही मैडम लेराट व लुइस टिके हुए थे। सबसे बड़ा कमरा गागा और लॉ फेलो के परिवार को दे दिया गया और यह निश्चय हुआ कि एमली, निकटवर्ती ड्रेसिंग-रूम

में लगे पलंग पर सोवेगी। मिगनन व उनके दोनों बच्चों को तीसरा कमरा दिया गया और लेबार्डेट को चौथा। अब भी एक बचा था जो एक लम्बे सोने के कमरे के रूप में प्रयोग किया गया था जिसमें चार पलंगों पर लूसी, केरोलीन, ताता और मेरिया रहे। स्टेनियर को ड्राइंग-रूम के सोफे पर सोना पड़ा।

लगभग एक घण्टे बाद, जब सब व्यवस्थित हो गया, नाना, जो पहले अत्यधिक सरोष होगई थी; अब अपने ग्रामीण-प्रवास में उस महत्व का ध्यान कर, प्रसन्न हुई।

महिलाओं ने उस स्थान की प्रशंसा करते हुए कहा : "बड़ी सुहावनी जगह है, प्रिय !"

तब सप्ताह के विभिन्न समाचारों से ओत-प्रोत पेरिस की चर्चा छेड़ दी गई। वे सब जैसे एक साथ—कोई हँसते, कोई सम्बोधन करते और कोई एक दूसरे को धक्का देते हुए, बोलती रहीं।

बार्डनोव ने, उस संक्षिप्त अज्ञातवास के सम्बन्ध में क्या कहा था ?

उसने चिल्लाते हुए कहा था : वह नाना को, घोड़े पर वापिस ले जावेगा। और जब शाम हुई तो उसने नाना की कल्पना में जाना कि उस, नन्हीं किन्तु उद्दाम नाना ने, ब्लान्च वेनस में कितनी सफलता प्राप्त की थी।

इस पर नाना गम्भीर हो गई। चार बज रहे थे और प्रत्येक ने घूमने जाने की बात कही।

"तुम लोग जानती नहीं", नाना ने कहा : "मैं तो तुम्हारे लिये कुछ आलू लाने का प्रबन्ध कर रही थी।"

तब उन सबने जाकर आलू बीन लाने की इच्छा प्रकट की। वे कपड़े भी नहीं बदलना चाहती थीं। एक समूह जैसा बन गया। माली और दो लड़के, खेत पर पहले से ही थे। वे खेत के एक कोने में दीख रहे थे।

युवतियाँ भूमि की ओर झुक गई और अपनी अँगूठियों से भरी उंगलियों से भूमि टटोलने लगीं। प्रत्येक, जब किसी आकार का आलू बीन पाती, तो चिल्ला पड़ती। उनको बड़ा सुखद प्रतीत हो रहा था।

तातानेने बड़ी तत्परता में थी। उसने अपनी कच्ची उम्र में, वैसे बहुत से बीने थे और वह अपने अनुभवों का दूसरा ही लाभ देने की बात भुला रही थी अतः वह उनकी अनभिज्ञता पर हँस रही थी।

पुरुष वर्ग ने उस सबमें उदासी-भाव प्रकट किया। मिगनन, जो एक समर्थ पुरुष-सा प्रतीत हो रहा था क्योंकि वह अपने उस प्रवास में अपने पुत्रों की शिक्षा पूर्ण करने का लाभ ले रहा था। उसने 'परमेन्टियर' की बात उन्हें बताई जिसने फ्रांस में आलू सबसे पहले उपजाया था।

रात्रि में वृहत् भोजन हुआ। सब जैसे बड़े भूखे थे। नौकर से, जो आरलीन्स के बिशप के पास गया था, नाना झगड़ रही थी। महिलाओं ने कॉफी से अपने को गरम किया। खाने-पीने व बर्तनों के खड़खड़ की आवाज खिड़कियों के बाहर जा रही थी जो उस रात्रि की नीरवता में दूर जाकर विलीन हो जाती थी।

किसान खेतों की मेड़ों के बीच से, देर होने पर, उस मकान की ओर दृष्टि गड़ा कर रोशनी की चमक देख लेते थे।

"यह क्या पागलपन है कि आप सब परसों वापस जा रहे हैं", नाना ने कहा : "जब आप लोग यहाँ हैं तो हमें सैरें करनी चाहियें।"

अतएव यह निश्चित हो गया कि कल, रविवार को 'चेमन्ट' के प्राचीन गिरजा के ध्वस्त भाग को देखने वे लोग जावेंगे जो वहाँ से लगभग सात मील दूर स्थित था। मध्याह्न भोजनोपरान्त, आरलीन्स से आने वाली पांच सवारियाँ उन्हें ले जावेंगी और रात के भोजन तक लगभग सात बजे लौटा लावेंगी। वह बड़ा अच्छा रहेगा।

पूर्ववत्, उस रात्रि, काउन्ट मुफट, लोहे के फाटक पर घंटी बजाने के ध्यान में पहाड़ी पर चढ़ा। किन्तु खिड़कियों की रोशनी और अट्टहास ने उसे विस्मित कर दिया। मिगनन की आवाज को पहचानते हुये उसने वह सब समझने की चेष्टा की और नवीन अड़चन से रोषमय होकर अन्त तक की बात सोच गया और बल-प्रयोग का विचार करता रहा।

जार्ज उस छोटे द्वार से घुसा जिसकी उसके पास चाभी थी और

चुपचाप नाना के सोने वाले कमरे में चढ़ गया और दीवार से चिपक गया। उसे केवल अर्द्ध-रात्रि के उपरान्त तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। अन्त में नाना, नशे में धुत आई और पहले से अधिक ममता प्रदर्शित करती रही। जब वह पी लेती तो उसे वह सब उतना सुहाना लगता था कि अति हो जाती थी। तब उसने चेसन्ट के गिरजे तक, जार्ज को चलने का अनुरोध किया। किन्तु किसी के देखे जाने के भय से वह मना करता रहा। अगर जार्ज नाना की सवारी में साथ दिख जावेगा तो एक उत्पात खड़ा हो जावेगा। किन्तु वह रुदन करने लगी—किसी परित्यक्त स्त्री की वेदनासहित वह विलाप करने लगी तब जार्ज ने उसे सान्त्वना और निश्चित वचन दिया कि वह भी चलेगा।

"तब क्या तुम सचमुच मुझे प्यार करते हो", उसने दोहराया—"कहो कि तुम मुझे बहुत स्नेह करते हो। करो, मेरे प्रियतम। क्या मैं मर जाऊँगी तो तुम्हें बहुत दुःख होगा ?"

लेस फान्डेट में, नाना के पड़ौस के सारे घर में उपद्रव खड़ा कर दिया गया था। हर सुबह, दोपहर-भोजन के समय मैडम हुगन अनिच्छा होते हुये भी उस नारी के सम्बन्ध में वह सब कुछ कहती रहती जो उसका माली उनसे कहता और एक तड़कीली-भड़कीली औरत के उस आश्चर्यकर प्रभाव का अनुभव करती जो वह भली औरतों पर डालती है।

बहुधा वे सहन करतीं; कभी-कभी उद्विग्न हो उठतीं और घबड़ा जातीं। वे चौंकतीं कि जैसे उनके पड़ोस में एक ऐसा दुर्भाग्य, एक ऐसा जन्तु आगया है जो किसी पिंजड़े से छूटकर आया है। और वह अपने मेहमानों से झगड़ती और उन पर लॉ मिगनट के इर्द-गिर्द घूमने का आरोप लगाती।

काउन्ट डि. वेन्डेव्रेस को सड़क पर एक लम्बे घने बालों वाली महिला के साथ हँसते हुये देखा गया था किन्तु उन्होंने कसम खाई कि वह नाना नहीं थी अपितु लूसी थी जो उनके साथ यह कहने के लिये आई थी कि उसने अपने तीसरे राजकुमार को कैसे संभाला।

मारक्युस डि. चोरड भी लम्बी सैरों को जाते हैं किन्तु उन्होंने बताया कि वे अपने डाक्टर के यहाँ जाते हैं।

डागनेट और फाचरी के साथ मैडम हूगन ने बड़ा दुर्व्यवहार किया। प्रथम व्यक्ति तो लेम फान्डेट की भूमि के बाहर केवल इस ध्यान से ही नहीं गया कि उसे स्टेला के प्रति ईमानदार रहना है और नाना के अपने परिचय को दोहराना नहीं है। फाचरी भी मुफट की स्त्रियों के साथ हिलगा रहा। केवल एक बार वह मिगनन को एक गली में मिला जिसके हाथ फूलों से घिरे हुये थे और जो बागवानी का पाठ अपने पुत्रों को पढ़ा रहा था। दोनों व्यक्तियों ने हाथ मिलाये और रोज की चर्चा की। वह बहुत ठीक है; उसी प्रातःकाल दोनों को उसके पत्र मिले है जिनमें उसने लिखा है कि गाँव की खुली हवा का जितना अधिक से अधिक सुख वे ले सकें, लें। अपने सब अतिथियों में वह केवल काउन्ट मुफट और जार्ज को छोड़ सकी।

काउन्ट ने बहाना किया कि आरलीन्स में उसे अत्यावश्यक कार्य है और वह छोकरियों के पीछे नहीं भागता फिरता है। जहाँ तक जार्ज का प्रश्न था, वह बच्चा, मैडम हूगन की सर्वाधिक चिन्ता का कारण बना हुआ था क्योंकि हर संध्या उसे तीव्र मस्तक पीड़ा होती जिससे उसे अंधेरा होने के पहले ही बिस्तर पर चला जाना पड़ता।

फाचरी ने अपने को काउन्टेस सेबीन का रक्षक बना लिया था क्योंकि काउन्ट हर संध्या गायब हो जाता था। वे लोग जब भी खेतों में घूमने गये तभी फाचरी ने उनकी छतरी व कैम्पस्टूल संभाले। वह उन्हें अपने पत्रकारिता के चुटकुले सुनाता रहा और शीघ्र ही उनका निकटतम साथी बन गया। समर्पण के लिये काउन्टेस तुरन्त तत्पर होगई और इस नवयुवक से उसने भी अपने में पूर्ण यौवन की स्फूर्ति प्राप्त की किन्तु फाचरी के शोर-गुल करने तथा व्यंग्यात्मक वार्तालाप करने के स्वभाव के कारण कोई समझौता सम्भव न था। परन्तु जब कभी, किसी खेत की मेंढ़ पर वे अपने को एक क्षण के लिये पूर्ण एकान्तिक पाते तब एक दूसरे की दृष्टियाँ आपस में कुछ खोजतीं और वे किसी हँसी को रोक कर अथवा वार्तालाप में अनायास गम्भीर हो उठते। उस दृष्टि में वह तड़प होती जैसे लगता कि वे एक दूसरे को समझ रहे हैं एवं वह बड़ा नैसर्गिक है।

शुक्रवार को मध्याह्न-भोजन के समय किसी और स्थान का निश्चय किया गया। मोशियो थ्योफाइल वेनट अभी-अभी पधारे थे जिनके लिये मैडम हगन ने सोचा कि मुफट के यहाँ उन्होंने उन्हें पिछले जाड़ों में आमन्त्रित किया था। उसने अपनी गहन दृष्टि फेंकी और अपने प्रति प्राप्त उदासीन व्यवहार की किंचित भी चिन्ता किये बिना वे अपने को एक साधारण व्यक्ति मान कर टिके रहे। अपने को भुला डालने में सफलता प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने भोजन के पश्चात चीनी के टुकड़े चूसते हुये डागनेट को इस्टेला को कुछ स्ट्राबेरी देते हुये देखा। उसने फाचरी की बातचीत भी सुनी जिसकी एक कथा काउन्टेस को बड़ी प्रिय लग रही थी। जब उसकी ओर कोई देखता तो वह शान्तिपूर्वक मुस्करा देता।

मेज छोड़ते समय, मोशियो वेनट ने काउन्ट का हाथ अपने हाथ में लिया और खेतों तक ले गया। उसकी माँ की मृत्यु के अनन्तर यह कहा जाता था कि काउन्ट पर उसका अच्छा प्रभाव है। अनेक दंत-कथायें प्रचलित थीं कि भूतपूर्व वकील की उनके घर में कितनी पूछ है। फाचरी का सारा कार्यक्रम उसके आने से अस्त-व्यस्त हो गया था और उसने जार्ज व डागनेट को उसने सौभाग्य का मूल उद्गम बताना आरम्भ किया कि किस प्रकार एक कानूनी मुकदमे के कारण जिसको 'जेसूइट्स' ने इसे दिया था—इस छोटे आदमी ने जो अपनी प्रिय दृष्टियों के सहित बड़ा भयानक है, दफ्तर में प्रत्येक जगह इसकी पहुँच हो गई। दोनों नौजवानों ने हँसना प्रारम्भ किया क्योंकि वह कुछ बेहूदा-सा प्रतीत हो रहा था।

वह अपरिचित अथवा भारी-भरकम वेनट जो किसी धर्मात्मा के लिये कार्य कर रहा था, इनके लिये बड़ा मजाक दिखाई दे रहा था। किन्तु उन्होंने वार्तालाप बन्द कर दिया, जब उन्होंने देखा कि काउन्ट मुफट अब भी उस आदमी को अपनी बगल में लिये हुए लौट रहे हैं, जिनका चेहरा पीला पड़ा हुआ है, आँखें लाल हो रही हैं; लग रहा था जैसे वे रोये हों।

"यह निश्चित है कि वे लोग नर्क की बात कर रहे थे", फाचरी ने मसखरेपन से कहा।

काउन्टेस सेबीन ने जब वह बातें सुन ली तो धीरे से अपनी गर्दन घुमा ली, तब उनके नेत्र मिल गये; उनमें उतनी दीर्घकालीन तत्परता थी कि उससे उन दोनों के हृदय ध्वनित होते रहे इसके पूर्व कि वे कोई खतरा उठावें।

साधारणतः प्रत्येक ही भोजन के उपरान्त फूल के बगीचे के आगे की चहारदीवारी तक बढ़ जाता, जहाँ से मैदान दिखाई देते थे। रविवार की संध्या बड़ी सुहावनी थी। प्रातः दस बजे तक पानी बरसता रहा था किन्तु आकाश पूर्ण स्वच्छ न होते हुए भी दूधिया रंग की धूल सा दीख रहा था, एक प्रकार की चमकदार धूल जो धूप में सुनहली प्रतीत हो रही थी। तब मैडम हगन ने प्रस्ताव किया कि छोटे दरवाजे से सब लोग बाहर आवें और गुमरोज की सड़क पर, चाऊ तक घूमने चलें। अपनी साठ वर्ष की अवस्था में भी उनमें बड़ी स्फूर्ति थी। उन्हें घूमना प्रिय था। सभी ने कहा कि कोई सवारी तो मिलेगी नहीं। तब सभी कुटे-कुटे से पानी की धार में पड़े लकड़ी के पुल तक आये। मुफट—महिलाओं के साथ फाचरी व डागनेट आगे-आगे थे; काउन्ट और मारक्युस उनके पीछे थे जो मैडम हगन के दोनों ओर चल रहे थे। वैन्डेब्रेस बड़े ठाठ में, किन्तु इस लम्बी सड़क पर चलने के कारण अत्यधिक खिन्न-सा, सिगार जलाता हुआ, बीच में आया। मोशियो वेनट जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाता या धीमा पड़ता हुआ, मुस्करा कर कभी एक समूह के साथ चलता कभी दूसरे के, जिससे सब कुछ सुन सके—चल रहा था।

"और बेचारा जार्ज, आरलीन्स में है", मैडम हगन कह रही थीं—"वह पुराने डाक्टर ट्रावेनियर से सलाह लेना चाहता था, जो अब बाहर नहीं जाता था कि उसके सिर का दर्द किस प्रकार का है। हाँ, तब तक तुममें से कोई जगा भी नहीं था जब वह गया था क्योंकि वह प्रातः सात बजे के पहले ही चला गया था।" तब अपने आपको टोकते हुए वे बोलीं: "ये सब पुल पर क्यों खड़े हैं?"

सच तो यह था कि वे स्त्रियाँ, डागनेट तथा फाचरी पुल के दूसरे छोर पर इस प्रकार खड़े थे जैसे कोई विशेष बाधा उन्हें कठिनाई उत्पन्न कर

रही हो; और उन सब की दृष्टियों में एक उलझन प्रकट थी। अब वे किसी प्रकार मुक्त हो गये थे।

"सीधे !" काउन्ट चिल्लाया।

वे लोग हिले नहीं—जैसे किसी वस्तु को सामने आते देखकर रुक गये हों जिसे दूसरे नहीं देख पा रहे थे। सड़क पर एक घुमाव था जो कुछ फैला हुआ था और जिसके चारों ओर वृक्ष उगे हुये थे। जो हो, एक चरचराहट की आवाज, धीरे-धीरे बढ़ते हुये, सबके निकट आ गई; वह पहियों की आवाज थी जिसके साथ हास्यों का स्वर मिला हुआ था; चाबुक की लपलपाहट भी प्रकट हो रही थी। अचानक पांच गाड़ियाँ सामने आ गई। वे एक के पीछे एक चल रही थीं तथा जो मिलकर पेड़ों के तने तोड़ने में समर्थ थीं तथा जिन पर हल्के नीले और गुलाबी रंग की पोशाकें झलक रही थीं।

"वह सब क्या है ?" विस्मय सहित मैडम हुगन ने प्रश्न किया। तब उन्होंने अनुमान लगाया, जैसे उनमें कोई ईश्वरीय शक्ति हो और अपने मार्ग में इस प्रकार का हमला देखकर वे बुदबुदाई—'ओह ! वह औरत ! चलो, चलो। बहाना मत करो'''।"

किन्तु तब तक देर हो चुकी थी। वे पांचों गाड़ियाँ, जो नाना व उसके मेहमानों को चारमन्ट के ध्वंसावशेषों की ओर लिये जा रही थीं, लकड़ी के पुल के निकट पहुँच चुकी थीं। फाचरी, डागनेट तथा मुफट महिलाओं को पैर पीछे हटाने पड़े जबकि मैडम हुगन तथा अन्य लोगों को रुकना पड़ा। वह एक सुन्दर जुलूस था। गाड़ियों के अन्दर की हँसी रुक गई थी और कुछ चेहरे विस्मित से, बाहर झांक रहे थे। प्रत्येक पार्टी ने दूसरी को देखा। घोड़ों की टापों के अलावा वहाँ शान्ति थी। पहली गाड़ी में मेरिया ब्लान्ड तथा तातानेने थीं—जो देखने में राजपरिवार की महिलाओं सी प्रतीत हो रही थीं। उनके स्कर्ट उठकर पहियों को छू रहे थे और वे तिरस्कारपूर्वक पैदल चलने वाली सम्भ्रान्त महिलाओं को देखती जाती थीं। इसके आगे वाली में गागा थी जो एक प्रकार से लॉ फेलो को दाबे हुये लगभग पूरी सीट पर कब्जा किये हुये थी। तब केरो-लीन हेकेट, लेबार्डेट के साथ तथा लूसी स्टेवर्ट मिगनन व उसके लड़कों के साथ

और सबसे अन्त में स्टेनियर के साथ नाना थी जिसके सामने की छोटी जगह पर उसका दयनीय प्यार ज़ीज़ी के रूप में विराजमान था जिसके घुटने नाना के घुटनों से छू रहे थे।

"यह अन्तिम है, क्या नहीं है ?" काउन्टेस फाचरी ने नाना को जैसे बिना पहचाने धीमे से प्रश्न किया।

नाना की गाड़ी के पहिये बिलकुल उसके निकट से भिड़ते हुये निकल गये किन्तु वह एक इंच भी पीछे नहीं हटी। दोनों स्त्रियों ने एक दूसरे पर प्रश्नात्मक दृष्टिपात किया—दृष्टियां जो सूक्ष्मतम होते हुये भी निश्चित व पूर्ण समर्थ थीं।

जहाँ तक पुरुषों का प्रश्न था, उनके व्यवहार बड़े भले थे। फाचरी और डागनेट ने जो पूर्णतः गम्भीर थे किसी को नहीं पहचाना। मारक्यूस ने जो बड़ा उत्कंठित था तथा लड़कियों की ओर से किसी मजाक की सम्भावना कर रहा था, घास का एक टुकड़ा जिसे वह उँगलियों में चला रहा था, फेंक दिया। केवल वेन्डेब्रेस ने, जो अपेक्षाकृत अधिक दूर नहीं था, लूसी को पहचानते हुये अपनी पुतलियाँ चलाई जो निकट से निकलते हुये उसे देखकर हँसी।

"सावधान होओ।" मोशियो वेनट ने काउन्ट मुफट के निकट खड़े रह कर कहा।

काउन्ट मुफट, अत्यधिक क्रुद्ध होकर, नाना को दृष्टियों में झांक रहे थे जो उनके समक्ष ओझल हो रही थी। उनकी पत्नी घूमकर उनके निकट आई और उनकी गतिविधि निहारती रही। तब काउन्ट ने भूमि की ओर देखा जैसे कि वे कूदते घोड़ों की उन टापों के चिह्नों को भुलाना चाहते थे जो उनका हृदय तथा मांस छीने लिये जा रहे थे। उनकी वेदना उनको जोर से चीख़ पड़ने को विवश कर रही थी। नाना के स्कर्ट में छिपे जार्ज को देखकर वे बहुत कुछ समझ रहे थे ! एक छोकरा ! उनका हृदय यह ध्यान कर दो टूक हो रहा था कि उनके स्थान पर नाना ने एक लड़के को चुना। उन्हें स्टेनियर के प्रति खेद नहीं था, किन्तु एक छोकरा !

जो हो, मैडम हुगन ने प्रथम जार्ज को नहीं पहचाना ! पुल से गुज़रने पर, यदि नाना उसे अपने घुटनों में न दबोच लेती तो जार्ज निश्चित पानी में कूद पड़ता । बरफ की तरह ठंडा और सफेद वह निश्चल बैठा रहा और उसने किसी को नहीं देखा । यह ध्यान था कि उसे कोई नहीं देखेगा ।

"आह ! हे भगवान !" अचानक बूढ़ी स्त्री चिल्लाई—"वह उसके साथ जार्ज नहीं तो कौन है ?"

गाड़ियाँ, एक उलझन के बीच से निकल गईं क्योंकि वे उन व्यक्तियों के बीच से गई थीं जो एक दूसरे को पहचानते थे किन्तु झुकना नहीं चाहते थे । उस कोमल प्रसंग ने, जितनी तेजी और सचाई से पार हो गया, अपना प्रभाव देर तक बनाये रक्खा । और अब दूर वे गाड़ियां, उन लड़कियों से भरी हुई बर्फीले प्रदेश में चल रही थीं जहाँ की सर्द हवा उनके चेहरों पर लग रही थी ।

फीते उड़ रहे थे । हँसी का गुंजार पुनः प्रकट होने लगा । मजाक एक से दूसरे पर उछलने लगा और उनमें से कुछ ने पीछे घूम कर झांका--उन सम्भ्रान्त लोगों को जो सड़क के किनारे स्थिर खड़े थे । नाना ने उनकी हिचकिचाहट को देखा कि उनके पग स्थिर हो गये थे । मैडम हुगन, काउन्ट मुफट की बाहों पर झुक गई थीं—शान्त, और इतनी दुःखी कि उन्हें कोई सन्तोष देने का साहस नहीं कर रहा था ।

"मैं कहती हूँ," लूसी को सम्बोधित कर नाना चिल्लाई जो उसकी आगे वाली गाड़ी में बाहर झांक रही थी—"मेरी प्रिये ! फाचरी को तुमने देखा ? क्या वह एक गन्दा व्यक्ति नहीं दिख रहा था ? उसे उसका खेद होगा । और पाल भी, जिसके प्रति मैं इतनी सहृदय रही हूँ, चुप रहा । सचमुच वे बड़े विनम्र हैं ।"

तब स्टेनियर से उसका इस बात पर झगड़ा हो गया कि पुरुषों ने बहुत अच्छा व्यवहार किया । तो क्या वे हैट उठाने भर के मूल्य के भी न थे ? पहला काला चौकीदार, जो उन्हें मिला; सम्भव है उनका अपमान करता । धन्यवाद है कि वह भी एक भला आदमी था और वह था भी । कम से कम प्रत्येक को स्त्रियों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना चाहिये ।

"वह लम्बी वाली कौन थी," लूसी ने पहियों की चरमराहट के बीच पूछा।

"काउन्टेस मुफट," स्टेनियर ने उत्तर दिया।

"वही, मेरा भी वही ध्यान था," नाना बोली—"ठीक है, मेरे दोस्त ! एक काउन्टेस होते हुये भी वह वैसी जँचती नहीं थी। हाँ, हाँ—बिलकुल नहीं। तुम जानते हो, मुझमें वैसा जाँचने की एक निगाह है; मुझमें है। मैं जानती हूँ जैसे मैंने उसे तुम्हारी काउन्टेस बनाया हो। क्या तुम शर्त लगा सकते हो कि वह काला साँप फाचरी उसका प्रेमी नहीं है ? मैं कह सकती हूँ कि वह उसका प्रेमी है। स्त्रियों में, यह बात सरलता से देखी जा सकती है।"

स्टेनियर ने अपने कन्धे हिलाये ! विगत संध्या से ही उसका मिजाज गरम था। उसने कुछ पत्र पाये थे जिनके आधार पर उसे अगली सुबह जाना था। वह भी कोई बड़ी अच्छी बात नहीं थी कि उस देश में कोई केवल सोफे पर सोने के लिये आवे।

"और यह बेचारा छोकरा।" अचानक कोमल भावनाओं से ओत-प्रोत जार्ज को देखते हुये, जो सीधा बैठा था और पीला पड़ा हुआ था तथा कठिनाई से साँस ले पा रहा था, नाना ने प्रारम्भ किया।

"क्या तुम सोचती हो कि मामा ने मुझे पहचान लिया," लड़खड़ाते हुये उसने अन्त में प्रश्न किया।

"ओह ! निश्चित..." वह चिल्लाई—"किन्तु, इसमें सब मेरा कसूर है। वह आना नहीं चाहता था किन्तु मैंने विवश किया। इधर सुनो, जीजा; क्या मैं तुम्हारी मामा को लिखूँ ? वे बड़ी सरल स्त्री दिख रही थीं। मैं उनसे कहूँगी कि इसके पूर्व मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा था। यह स्टेनियर की कृपा थी कि वह आज पहली बार उसे वहाँ ले आया।"

"नहीं, नहीं—बिलकुल मत लिखना," घबड़ाते हुये जार्ज ने कहा—"मैं अपने आप सब ठीक कर लूँगा। और अगर वे ज्यादा तंग करेंगे तो मैं फिर यहाँ चला आऊँगा और कभी लौट कर नहीं जाऊँगा।"

किन्तु वह बड़ा निराश दिखता रहा और प्रतिच्छाया में खोया-खोया सा बना रहा तथा शाम को झूँठ बोलने की नाना प्रकार की बातें गढ़ता रहा। पाँचों गाड़ियाँ सीधी और ऊँची-नीची सड़क पर दौड़ती रहीं, जिनके

किनारे कुछ बड़े सुन्दर वृक्ष लगे हुए थे । आस-पास के मैदान जैसे रुपहले बादलों की उड़ान से भरे हुए थे । महिलायें एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी पर व्यंग्य-वार्ता करती जाती थीं, साथ ही कोचवान लोग भी उस विचित्र समूह को ले जाते हुए कौतूहल में प्रसन्न हो रहे थे । थोड़ी-थोड़ी देर में कोई न कोई स्त्री अच्छा दृश्य अवलोकनार्थ खड़ी हो जाती थी और यदि बहुत भला हुआ तो वह उसी अवस्था में अपनी साथिन के कन्धे पर टिक कर देर तक खड़ी रहती जब तक गाड़ी का कोई ऐसा झटका उसे न लगता कि वह अपनी जगह पर पुनः बैठ जाय । केरोलीन हेकेट, लेबार्डेट से कोई गम्भीर वार्तालाप कर रही थी । वे कह रहे थे कि तीन महीने के अन्दर ही नाना को अपना यह स्थान छोड़ने को विवश होना पड़ेगा और केरोलीन ने लेबार्डेट को निर्देश किया कि उन गुलाबों के बीच, यह सुहाना स्थान, वह उसके लिये ले लेवें जो साधारण व्यय पर मिल जायगा । उनके पीछे की गाड़ी में लॉ फेलो जो सरल व मूर्ख था—गागा की गर्दन तक नहीं पहुँच पा रहा था और उसके कपड़ों के उन स्थानों पर अपने चुम्बन इकट्ठा कर रहा था जो चुस्ती के कसाव से वहाँ फटने को थे और जो रीढ़ की हड्डी को दाबे हुए थे जबकि एमली—सामने की सीट पर अपनी रिक्त भुजाओं को लटकाये और अपनी माँ पर होने वाले चुम्बनों की बौछार को निहारते हुए—सीधी बैठी थी और पृथक् होने की वर्जना सी प्रतीत हो रही थी । दूसरी गाड़ी में—लूसी को चकित करने के ध्यान से, मिगनन ने अपने पुत्रों से लॉ फान्टेन की कहानियाँ सुनाने को कहा । विशेषतः हेनरी अधिक तेज था जो बिना किसी गलती के ठीक कह सकता था । किन्तु उस जुलूस के सबसे आगे—मेरिया ब्लान्ड अत्यधिक खीझ रही थी, विशेषतः उस मूर्ख तातानेने से मजाक करने पर जिसने उसके इस कहने पर विश्वास कर लिया था कि पेरिस के डेरी वाले गोंद और केसर से अपने अंडे बनाते हैं । वह बहुत दूर है, क्या वह कभी पहुँचेंगे ही नहीं ? वह प्रश्न एक गाड़ी से दूसरी में होता हुआ नाना तक पहुँचा । जो, अपने कोचवान से पूछकर खड़ी हो गई और दूसरों से बोली :

"लगभग पन्द्रह मिनट में । उन पेड़ों के झुरमुट में वह चर्च देख रहे हो······ ।"

तब कुछ रुक कर उसने प्रारम्भ किया : "तुम लोग नहीं जानते कि चेमन्ट के गिर्जे का मालिक प्रथम नेपोलियन के समय का है। और ओह ! इतना तेज कि जोसफ कह रहा था कि उसने पादरी की दूकान में सुना। वह ऐसा जीवन व्यतीत कर रही है जैसा कोई नहीं कर सकता। जो हो, वह भयंकर रूप से धर्मात्मा हो गई है।"

"उसका क्या नाम है ?" लूसी ने प्रश्न किया।

"मैडम डि. ऐंगलर्स !"

"इर्मा डि. ऐंगलर्स ! मैं उसे जानती हूँ", गागा चिल्लाई।

हर गाड़ी से एक विचित्र सी आवाज निकली जो घोड़ों की टापों में गुम हो गई। गागा को देखने के लिये गर्दनें बाहर निकल आईं। मेरिया ब्लान्ड और तातानेने घूमीं और घुटनों पर झुक गईं और गाड़ी के पीछे के बन्द हुड को पकड़े रहीं। प्रश्न होते रहे तथा विभिन्न प्रकार के विचार तथा मौन सराहना होती रही। गागा जान रही थी कि उसके उतने दूरस्थ जीवन-काल के प्रति सभी विनीत हो रहे हैं।

"तब मैं बहुत छोटी थी", गागा ने कहा : "साथ ही, मुझे ध्यान है कि मैं उसे जाते हुए देखा करती थी। ऐसा कहा जाता था कि उसके घर में कोई दुःख है किन्तु अपनी गाड़ी में वह बड़ी भव्य प्रतीत होती थी। तब कुछ अवांछनीय कहानियाँ प्रस्तुत हुई कि वैसी भली होकर कभी रही होंगी, इसमें संदेह था। इसमें मुझे किंचित् भी आश्चर्य नहीं हुआ कि उसके कोई विदेशी-ग्राम्य-निवास है। वह किसी भी व्यक्ति को ऐसे बाहर कर सकती थी जैसे अपनी सांस। आह ! इर्मा डि. ऐंगलर्स अभी भी जीवित है। हाँ, मेरी साथिनो ! वह नब्बे वर्ष की आयु की अवश्य होगी।"

यह सुनकर, सब महिलायें बड़ी गम्भीर होगईं। नब्बे वर्ष की ! जैसा लूसी ने कहा कि उनमें से किसी के भी उतनी आयु तक जीवित रहने का सुयोग नहीं है। वे सब केवल शोर करने वाले हैं। नाना ने स्वयं भी कहा कि वह अपनी हड्डियों को बूढ़ा नहीं करना चाहती। वैसा न होने में विशेष सुख है। अब वे लगभग अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच गये थे और उनकी बातचीत, थके

घोड़ों की कोचवानों द्वारा हाँकने की आवाज से रुक गई। उस चिल्लाहट के मध्य, लूसी ने दूसरे विषय पर आते हुये नाना से कहा कि औरों के साथ वह भी कल चली जावेगी। नुमायश वहाँ समाप्त होने को थी तथा सभी स्त्रियाँ पेरिस लौट जाने को उत्कंठित थीं जहाँ के वातावरण ने उनकी अत्यन्त बलवती कामनाओं से भी अधिक व्यक्त कर दिया था। किन्तु नाना जिद् किये हुये थी। उसे पेरिस के प्रति उदासीनता हो रही थी। वह बहुत समय तक वहाँ जाने की इच्छुक न थी।

"ऐह, डकी ! हम वहीं रुकेंगे जहाँ हैं", उसने जार्ज की जाँघों को गुदगुदाते हुये, बिना यह ध्यान दिये कि स्टेनियर भी निकट है, कह डाला।

गाड़ियाँ अचानक रुक गई और वह दल आश्चर्यचकित सा उस उजाड़-खंड के से प्रान्त में, जो पहाड़ी के छोर पर था, उतर पड़ा। एक कोचवान ने अपने चाबुक द्वारा संकेत कर कहा कि सामने पेड़ों के पीछे प्राचीन चेमन्ट गिर्जे के ध्वंसावशेष हैं। वह एक बड़ा भुलावा था। महिलाओं को बड़ी निराशा हुई। वे जो कुछ भी देख सकीं मिट्टी के कुछ ढेर लगे हुये थे, जिन पर झाड़-झंकड़ उग आये थे और एक आधी टूटी मीनार थी। निश्चित वह एक ऐसा तमाशा था कि उसको वहां तक देखने इतनी दूर आया गया। तब ड्राईवर ने उस निवास स्थान की ओर संकेत किया जिसका बगीचा गिर्जाघर से मिला हुआ था और कहा कि वे लोग दीवार के किनारे किनारे एक मार्ग से वहाँ तक पहुँच सकते हैं। वे लोग घूम-फिर सकते हैं तब गाड़ियाँ गाँव में खड़ी रहेंगी; इससे सभी प्रसन्न हुये।

"इर्मा भली प्रकार से होगी ?" गागा ने एक लोहे की रेलिंग के समक्ष खड़े होकर व्यक्त किया जो पार्क के कोने पर थी।

सब हरे-भरे पेड़ और झाड़ियों को देखकर जो रेलिंग के दूसरी ओर थे, बड़े मुदित हो रहे थे। तब वे सब पार्क की दीवार के किनारे-किनारे तंग रास्ते पर बढ़ते गये। अनेक बार सब अपने सिर उठा उठा कर वहाँ की हरीतिमा की प्रशंसा करते जाते थे। दो तीन मिनट चलने के बाद वे सब ऐसे स्थान पर पहुँचे जहां और रेलिंग दिखाई दीं तथा जहाँ से एक विशाल भवन स्पष्ट दिखाई दिया।

सराहना, तब शांति, तदुपरान्त प्रशंसा के शब्द प्रकट हुये।

वह इर्मा! कैसा आश्चर्य था! वैसी वस्तु जो एक नारी की विशालता को दिग्दर्शित कर रही थी। वृक्षों की बहुलता पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर हो रही थी। सर्वत्र क्यारियाँ और फूल फैले हुए थे। तो क्या इसका अन्त न होगा। महिलायें दीवाल से ऊब रही थीं। वे प्रत्येक बार उस दर्शनीय प्रवास को देखने की इच्छा करतीं और हर बार उन्हें किसी खुलाव पर पेड़-पत्तियाँ दीख जातीं।

"यह निश्चित ही बीमार बनाने वाला है"; अन्त में केरोलीन ने कहा।

तब नाना ने अपने कन्धे को हिलाकर उसे रोका। कुछ दूर तक वह बिना बोले चलती रही और गम्भीर बनी रही। अचानक दूसरे मोड़ पर वे गाँव के निकट पहुँच गये। दीवार समाप्त हो गई और मकान दिखाई देने लगा जिसके सामने एक भारी-सा बरामदा था। वे सब रुक गये और प्रवेश-द्वार की, भव्य सीढ़ियों को देखकर सबके मन प्रशंसा में भर गये। बीस खिड़कियाँ चमक रही थीं। भवन की ईंटों की दीवार पत्थर के चौखटों के बीच कसी हुई थी। हेनरी चतुर्थ उस ऐतिहासिक इमारत में रहा था, जहाँ उसका शयन-कक्ष अब भी था—जिसके भारी पलंग के आस-पास जेनेवा की मखमल लटक रही थी। नाना गहन भावनाओं में डूब गई और बालक की भाँति सांस खींचती रही।

"सुन्दर!" उसने अपने प्रति कोमलता से कहा।

एक उद्दात्त कल्पना में सब तैर गये। अचानक गागा ने कहा कि गिर्जे के बाहर स्वयं इर्मा खड़ी है। उसने उसे भली प्रकार पहचान लिया जो सदैव तनी रहती थी। अधिक आयु होते हुए भी नेत्रों में वही दीप्ति थी जो उस समय थी जब वह अपनी पूर्ण सम्पन्नता में थी। तड़क-भड़क समाप्त हो गई थी। मैडम कुछ देर बरामदे में खड़ी रही। मुरझाई पत्तियों के रंग की रेशमी पोशाक वह पहने थी और काफी लम्बी व सादी दिख रही थी जिनकी आकृति में किसी पुरानी राजमहिषी का सा तेज था जैसे वे संक्रान्ति के थपेड़ों से

से बच गई थीं। उनके दाहिने हाथ में एक भारी प्रार्थना-पुस्तक चमक रही थी। तब धीरे-धीरे खुला स्थान छोड़कर वे गिर्जे की ओर बढ़ गई। उनके सम्मान में पीछे कुछ दूर एक व्यक्ति पैदल चल रहा था। भीड़ एकत्र होती गई। प्रत्येक श्रद्धा से सिर झुका लेता था जब वे सामने पहुँचती थीं। एक वृद्ध ने उनका हाथ चूमा। एक स्त्री उनके समक्ष घुटनों के बल झुक गई। वे एक सशक्त महारानी थीं जिन पर वर्ष व सम्मान लदे हुये थे। वे अपने निवास में चढ़ कर ओझल हो गई।

"सब कुछ मिलता है यदि कोई सतर्क होकर चले", मिगनन ने सन्तोष के साथ कहा और अपने लड़कों की ओर देखा जैसे वह उन्हें पाठ पढ़ा रहा हो।

तब प्रत्येक ने कुछ कहा। लेबार्डेट ने उन्हें कमाल का सुरक्षित समझा। मेरिया ब्लान्ड ने उनसे कुछ अपशब्द भी कहा। लूसी बिगड़ रही थी संक्षेप में बुजुर्गों का सभी को सम्मान करना चाहिये। तब सभी ने यह माना कि यह निश्चित ही आश्चर्य की वस्तु है, और वे गाड़ियों में पहुँच गये।

नाना ने एक शब्द तक नहीं कहा। वह एक भव्य निवास कक्ष को देखने के लिये दो बार घूमी। पहियों की गड़गड़ाहट में उसने स्टेनियर का अनुभव नहीं किया; न ही उसने अपने सामने जार्ज को बैठे देखा। उस पूर्वाकाश से कोई वस्तु प्रकाशित हुई जहाँ मैडम अब भी धीरे-धीरे जा रही थी—उसी सशक्त राजमहिषी के साथ जिस पर वर्ष व सम्मान का बोझ लदा था।

उस संध्या जार्ज, लेस फान्डेट में रात्रि-भोजन के लिये ठीक समय पर पहुँच गया। नाना ने अधिकाधिक भूली-भूली सी और विचित्र सी गति में उसे माँ से क्षमा-याचना करने के लिये घर भेज दिया। अचानक पारवारिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुये वह कहती रही कि वैसा करना अनिवार्य है। उसने वचन ले लिया कि अब वह उस रात नहीं लौटेगा। वह थकी हुई है और यदि जार्ज नहीं आयेगा तो आज्ञापालक बनकर उसके प्रति कर्त्तव्य-पालन करेगा। इस नैतिक पाठ से जार्ज अत्यधिक दु:खी हो रहा था और मरे मन

और लटकी गर्दन-सहित वह अपनी माँ के समक्ष उपस्थित हुआ। उसके सौभाग्य से उसका भाई फिलिप आ पहुँचा था जो एक बड़ा फौजी और बड़ा सुन्दर व्यक्ति था। उसने उस तूफान को दबा दिया जो प्रकट होने को था। अपने अश्रुविगलित नेत्रों से मैडम हृगन ने जार्ज को देखकर ही सन्तोष कर लिया। जब फिलिप को यह सब बताया गया तो उसने कहा कि यदि जार्ज अब कभी दुबारा उस स्त्री के पास जायगा तो फिलिप उसे कान पकड़ कर वहाँ से ले जायेगा। जार्ज को बड़ा सन्तोष हुआ और वह एक नई युक्ति सोचने लगा कि वह अगली दोपहर को दो बजे तक खिसक जावेगा और नाना से मिल लेगा।

भोजन के समय, लेस फान्डेट के लोग एक भारी उदासी में भरे हुए थे। वैन्डेव्रेंस ने जाने की घोषणा की थी। वह लूसी को पेरिस लौटा ले जाना चाहता था और इस बात से स्वयं भी चकित था कि दस वर्ष से उस स्त्री को जानते हुए भी इससे पूर्व उसके प्रति, उसके मन में किंचित भी आकर्षण नहीं उत्पन्न हुआ। मारक्युस डि. चोरड की नाक एक प्लेट में दबी हुई थी और वह सोच रहा था कि गागा के साथ की युवती को निश्चित ही उसने खिलाया होगा। किन्तु बच्चे कितनी जल्दी बढ़ जाते हैं। वह सचमुच बड़ी मांसल होती जा रही थी। काउन्ट मुफट का चेहरा लाल हो रहा था। वे अपने में लीन थे और निरन्तर जार्ज को देखते जा रहे थे। भोजन समाप्त होने पर वे एक कमरे में जाकर यह कह कर अन्दर से बन्द करके सो गये कि उन्हें ज्वर हो आया है। मोशियो वेनट उनके पीछे लपके। सीढ़ियों के ऊपर उनके बीच एक दृश्य उपस्थित हो गया। काउन्ट ने अपने को पलंग पर पटक दिया और तकिये के ऊपर अपनी सिसकियाँ भरते रहे। मोशियो वेनट कोमल स्वर में उनको भाई कहते रहे और ईश्वर से दया की भिक्षा माँगते रहे। उसने कुछ सुना नहीं। उनके गले में भरभराहट हो रही थी। अचनक वे बिछौने से उछल पड़े और लड़खड़ा गये।

"मैं जा रहा हूँ! मैं रुक नहीं सकता।"

"बहुत ठीक है", दूसरे व्यक्ति ने कहा: "मै भी साथ चलूँगा।"

जब वे बाहर निकले तो दो परछाइयाँ बगल से गायब होती दिखाई दीं। प्रत्येक रात्रि को फाचरी और काउन्टेस सेवीन डागनेट को सहायता कर रही थीं कि वह स्टेला को चाय बनाने में मदद दे।

सड़क पर काउन्ट इतनी तेजी में चल रहे थे कि उनके साथी को दौड़ना पड़ा। हाँफते हुए वह साथी उस तर्क को बिना व्यक्त किये न रह सका कि काउन्ट को मांस का मोह त्यागना चाहिये। दूसरे ने अपना मुँह नहीं खोला और अन्धकार में बढ़ता रहा। जब वह लॉ मिगनट पहुँच गया तो बोला :

"मैं अब नहीं लड़ सकता—मुझे छोड़ दो।"

"सब ईश्वर का भरोसा है", मोशियो वेनट ने कहा : "वह (ईश्वर) अपनी विजय के प्रत्येक उपाय करता है और तुम्हारे ये पाप ही उसके अस्त्र बन जाते हैं।"

लॉ मिगनट में एक झगड़ा मचा हुआ था। नाना को बार्डेनोव का एक पत्र मिला था जिसमें उसने लिखा था कि उसे पूर्ण विश्राम करना चाहिये, किन्तु उसने इस प्रकार से लिखा था जैसे नाना की उसे लेशमात्र भी चिन्ता न हो।

जब मिगनन ने कहा कि वह भी सब के साथ कल चले तो नाना बिगड़ पड़ी और बोली कि उसे किसी की सलाह की आवश्यकता नहीं है। साथ ही, मेज पर भी वह अत्यधिक तीखेपन का व्यवहार करती रही। मैडम लेराट ने जब कुछ अरुचिकर शब्द कहे तो वह चिल्ला उठी : "सबको फाँसी लगाओ। वह किसी को भी, यहाँ तक कि अपनी चाची को भी, यह अनुमति न देगी कि कोई भी उसके समक्ष भद्दे शब्दों का प्रयोग करें। तब उसने प्रकट किया कि वह अपने लूसी को धार्मिक शिक्षा देगी और स्वयं को भी परिवर्तित करेगी।

तब वे सब हँसे; इस पर उसने कुछ गहरे शब्दों का प्रयोग किया और आत्म-संतोष-सहित अपनी गर्दन को किंचित् तेवर-सहित ऊपर उठाया और कहा कि सुव्यवस्था ही भाग्य प्रदान करती है और कि वह किसी घास के ढेर पर नहीं मरना चहती। अन्य महिलाओं ने उसकी इस बात का बुरा माना। क्या यह सम्भव था ? निश्चित् ही किसी ने नाना को बदल डाला है। किन्तु वह, अपने स्थान पर अविचल बैठी अपने कल्पना-लोक में डूबी रही। उसके नेत्र

भूमि पर टिके हुए थे और वह उस सौभाग्य-शालिनी तथा सम्पन्न नाना का स्वप्न देख रही थी।

जब मुफट पहुंचा तो वे सब सोने जा रहे थे। लेबार्डेट ने उसे बाग में देखा और उसका मन्तव्य समझ कर उसे नाना के कमरे के द्वार तक कर आने के लिये हाथ में हाथ डालकर अँधेरे मार्ग से गया तथा सेवा-भाव से अपने मार्ग के अवरोध स्टेनियर को भी पृथक कर देने का प्रबन्ध कर दिया। लेबार्डेट को इस प्रकार के सहयोग व अपने से किये कार्य से प्राप्त दूसरे की प्रसन्नता में बड़ा सुख मिलता।

नाना ने कोई आश्चर्य प्रकट नहीं किया किन्तु एक प्रकार से मुफट का पीछे पड़ना उसे अखर रहा था। जो भी हो, जीवन में प्रत्येक को व्यापार का भी ध्यान करना पड़ता है। किसी को प्यार करना एक मूर्खता है—उससे कुछ प्राप्त नहीं होता है। इसके अतिरिक्त वह जीजी के यौवन के प्रति सतर्क थी। उसने उसके साथ अनियमित व्यवहार किया था। जो हो, वह ठीक रास्ते पर आवेगी और बड़े आदमी के पास जावेगी।

"जो", उसने कहा, जो गाँव छोड़ने से अत्यधिक प्रसन्न थी : "ट्रङ्क सँभालो—कल प्रातःकाल हम लोग लौटकर पेरिस जा रहे हैं।"

उसने मुफट को रहने दिया और कोई आपत्ति नहीं की किन्तु उससे उसे कोई सुख प्राप्त नहीं हुआ।

७.

तीन महीने बाद, दिसम्बर की एक रात को, काउन्ट मुफट 'पैसेज डिस पेनोरेमा' के मार्ग पर टहल रहे थे। वह बड़ी सुहावनी संध्या थी। एक पानी की झड़ी ने लोगों की भीड़ को पैसेज की ओर खदेड़ दिया था। वह एक खासी भीड़ थी और उनके बीच से, दूकानों के सामने सुगमतापूर्वक नहीं निकला जा सकता था। काँच की छत्त के नीचे जो परछाई से चमक रही थी; तेज रोशनी थी जहाँ दूर तक प्रकाश की तहें फैली दिख रही थीं; सफेद ग्लोब थे, लाल और नीली बत्तियाँ थीं, दीप्तिमान गैस के हण्डे लगे हुए थे, बड़ी-बड़ी घड़ियाँ थीं और पंखे थे जो बिना किसी सहारे के प्रज्ज्वलित थे। विभिन्न रंगों के नाना रूप दूकानों की खिड़कियों में झलक रहे थे—जौहरियों के स्वर्णाभूषण, मिठाई--बिस्कुट वालों के कटावदार शीशे के बर्तन, पीली रेशम में ढकी सुन्दरता में काँच के अन्दर दमक रहे थे जिन पर रिफ्लेक्टर से झाँकते तीव्र प्रकार के चतुर्दिक गहरे रंगों के दूकानों के साइन-बोर्ड ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे रक्तवर्ण अपने मूल रूप में प्रकाशित हो रहा हो।

काउन्ट मुफट बाउलेवर्ड तक मन्द गति से घूमते रहे। उन्होंने फुटपाथ पर अपनी दृष्टि फेंकी तब अपने पैर थाम कर दूकानों पर गहराई से नेत्र फिराते रहे। कभी ठण्डी और कभी गरम हवा का झोंका उस तंग मार्ग को धुएं की भाँति घेरे हुए था। छातों की बूँदों से भीगा फुटपाथ, जूतों के शब्दों को प्रतिध्वनित कर रहा था किन्तु लोग चुपचाप चल रहे थे—निकट से निकलने वाले काउन्ट पर कोहनियों को प्रत्येक बार छुआते जाते और गहनतापूर्वक उस पर दृष्टिपात करते जो प्रकाश की चमक में सदैव से अधिक पीत दिखाई दे रहा था।

अतः उनकी उत्कंठा को दबाने के लिये वह एक स्टेशनरी की दूकान के सामने खड़ा हो गया जहाँ ऊपर से दिख रहा था कि वह प्रत्येक वस्तु को बहुत गहराई से देखता जा रहा है विशेषतः कांच के पेपरवेट जिन पर नाना प्रकार की रङ्ग-विरङ्गी फूल-पत्तियां बनी हुई थीं।

किन्तु, वास्तव में वह कुछ भी नहीं देख रहा था। वह केवल नाना का ध्यान कर रहा था। उसने उससे पुनः झूठ क्यों बोला? उस सुबह उसने काउन्ट को पत्र द्वारा सूचना दी थी कि काउन्ट संध्या समय उसके यहाँ न आवे क्योंकि नन्हा लुई बीमार है और वह सारी रात अपनी चाची के यहाँ रहेगी। किन्तु संदेहवश वह उसके घर गया तो ज्ञात हुआ कि मैडम अभी-अभी थियेटर गई है। इससे उसे विस्मय हुआ कि नये खेल में नाना की भूमिका तो थी नहीं। तब यह झूठ क्यों और वह उस संध्या वेराइटी थियेटर में क्या कर रही होगी?

तब एक व्यक्ति के धक्के से अनजाने में ही काउन्ट ने अपने को एक बिसातखाने की दूकान पर खड़े पाया क्योंकि तब तक वह पेपरवेट रख चुका था। वहाँ वह पाकेटबुक और सिगार-केसों को देखने में लीन हो गया जिन में एक कोने पर नीले रंग की समानता थी। नाना बदल गई है। प्रारम्भिक दिनों में जब वह गांव से लौट कर आई थी तब काउन्ट को उसके मुख व मूंछों पर चुम्बनों की बौछार करके एक प्रकार से पागल बना कर भेजती थी। वह बच्चों की भाँति उससे खिलवाड़ कर यह सिद्ध करती थी कि केवल वही उसका एकमात्र परमप्रिय है। अब काउन्ट को जार्ज की चिन्ता न थी क्योंकि उसकी माँ ने उसे लेस फान्डेट में रोक लिया था। अब केवल वह मोटा स्टेनियर रह गया था जिसके लिये काउन्ट सोचता था कि उसने उसका स्थान प्राप्त कर लिया है किन्तु उस प्रसंग पर कभी भी एक शब्द कहने का उसका साहस न था। काउन्ट जानता था कि इन दिनों स्टेनियर मुफलिस हो रहा है और बोर्स में एक प्रकार से वह पूर्णतः दिवालिया घोषित किया जाने वाला है किन्तु अब केवल एक ही बचाव था कि वह लेन्ड्स के नमक के कारखानों के शेयरों के भाव बढ़ने की आशा लगाये। अब वह जब कभी भी

नाना के यहाँ मिलता तो नाना सरलतापूर्वक कहती कि वह उसे कुत्ते की भाँति तो नहीं दुतकार सकती क्योंकि उसने उस पर बहुत अधिक धन खर्च किया। इसके अतिरिक्त इधर तीन मास से काउन्ट, केवल नाना को प्राप्त किये रहने के ध्यान में एक प्रकार से एक घेरे में फँसा हुआ था। मांसलता के प्रति उसकी इस विलम्ब चाहना में बालकों की सी भूख थी जहाँ ईर्षा अथवा खोखलेपन का कोई प्रश्न नहीं उठता। केवल तीव्र भावुकता से वह वशीभूत था; पूर्व की भाँति नाना उतनी अच्छी भी नहीं थी; अब वह उसकी दाढ़ी पर चूमती भी न थी। इससे उसमें कुछ उथल-पुथल मची हुई थी, और नारी की रीति-नीति से सर्वथा अनभिज्ञ, उसने अपने से प्रश्न किया कि वह उसे किस प्रकार शान्त करे। इस पर भी वह सोचता था कि वह नाना की प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करता रहता है और अब वह पुनः प्रातःकाल के उस सफेद-झूठ का ध्यान करता रहा कि जो केवल साधारण रूप से उस संध्या को थियेटर में बिताने के मंतव्य को व्यक्त करती थी। भीड़ की धक्का मुक्की से बचकर उसने पैसेज का मार्ग पार किया और अपने को एक जलपान गृह में ले चलने के लिये मस्तिष्क को खपा रहा था तभी उसके नेत्र एक खिड़की पर सजाई हुई एक मछली व चिड़िया पर अटक गये।

अन्त में उसने अपने को उस दृश्य से पृथक करने की चेष्टा थी। उसने अपने को व्यवस्थित किया और देखा तो घड़ी में नौ बज रहा था। नाना अब शीघ्र ही बाहर आती होगी और वह वास्तविकता जानने के लिये ज़िद करेगा। तब वह आगे बढ़ा और उसे उसके पूर्व की अनेक संध्यायें याद आने लगीं जब वह नाना के पास रंगमंच के निकट वाले द्वार पर आ खड़ा होता था। वह प्रत्येक दूकान को जानता था। वह उनकी सुगन्धि से भी परिचित था जो प्रकाशमय वातावरण में प्रकट हो रही थी। वह रूसी चमड़े की गहरी महक थी। कत्थई रंग के एक दूकानदार के यहां से वेनीला की सुगन्धि फूट रही थी। कस्तूरी की महक दूकानदार के खुले द्वार से बह रही थी और जानबूझ-कर वह (दूकानदार) स्त्रियों के समक्ष नहीं रुक रहा था जो उसकी परिचित थीं और जिनके चेहरे पीले पड़े हुये थे। एक क्षण के लिये उसने दूकानों के ऊपर

की खिड़कियों की पंक्तियों को देखा जो साइन-बोर्डों के ऊपर थीं और लग रहा था कि वह उन्हें प्रथम बार देख रहा है। तब वह बाउलेवर्ड तक गया और वहाँ एक पल रुका। अब वर्षा बड़ी मोहक बूंदों के साथ हो रही थी जिसका शीत अनुभव उसे शान्ति प्रदान कर रहा था। अब उसकी विचार-शृङ्खला अपनी पत्नी पर जा सकी जो उन दिनों मेकन में एक प्रवास-गृह में ठहरी हुई थी। वह अपनी एक मित्र मैडम डि. चेजलस के साथ थी जो इधर शरद-ऋतु से ही निरन्तर बीमार चल रही थी। बाउलेवर्ड की सवारियां एक प्रकार से धूल की नदी के ऊपर चल रही थीं। ऐसे मौसम में गाँव निश्चित ही कष्टप्रद होगा। तब इस चिन्ता से हटकर वह पुनः पैसेज की उष्णता में आ गई और तब वह विश्राम स्थान की ओर बढ़ गया। अब उसके मस्तिष्क में एक विचार आया कि यदि नाना को उसके आने का किंचित भी संदेह होगा तो वह गेलिरिया मान्टमार्ट्रे की ओर से निकल जायगी।

उस क्षण से स्टेज के द्वार पर काउन्ट ने स्वयं दृष्टि केन्द्रित की। उसने उस स्थान पर अपने पहचाने जाने के भय से खड़ा रहना अनुपयुक्त समझा। वह स्थान गैलेरियां डेस वेराइटीज तथा गैलरी सेन्ट मार्क के चौराहे पर था जो अधिक गन्दा था और जहाँ कुछ अस्त-व्यस्त सी दूकानें थीं, एक मोची की दूकान जिस पर कोई ग्राहक न था; सड़े हुये फर्नीचर से भरी दूकानें; और था धूलसे भरा एक वाचनालय जो ऊँघ आने की सी स्थिति में था जिसके रॉड और बत्तियाँ रात में हरा रङ्ग प्रकाशित करती थीं। यों इधर उधर शान-शौकत वाले भव्य व्यक्तित्व दिखाई पड़ सकते थे जो अच्छी पोशाक में गम्भीर मुद्रा में घूम रहे हों और जो स्टेज के द्वार को रोके हों जहाँ शराब पिये हुये नौकर दृश्य-परिवर्तन करते हों या ढीठ लड़कियां शृङ्गार बनाये गहरे रंगीन कपड़ों में घूम रही हों। एक गैस-बत्ती जिसके ऊपर का ग्लोब गन्दा था—प्रवेश मार्ग को प्रकाशित कर रहा था। एक बार मुफट को ध्यान आया कि मैडम ब्रान से पूछ ले किन्तु उसे डर लगा कि यदि नाना को विदित हो जावेगा कि वह वहाँ है तो वह बाउलेवर्ड के मार्ग से निकल जावेगी। उसने टहलना प्रारंभ किया और सोचाकि जब तक निकाला न जावे वह वहाँ से नहीं जावेगा क्योंकि चपरासी जब

फाटक बन्द करता तब तो वह हटता ही और वैसा उसके पूर्व दो बार हो भी चुका था।

यों अकेले लौटने के ध्यान मात्र से उसका हृदय व्यथा से भर जाता था। प्रत्येक बार जब कोई अच्छी पोशाक वाली लड़की या गन्दे कपड़े पहने कोई आदमी बाहर आता और उसे देखता तो वह जाकर वाचनालय के सामने खड़ा हो जाता जहाँ, खिड़की पर लगे कुछ पोस्टरों में वह घूम फिर कर एक ही दृश्य देखता—एक बुड्ढा आदमी, एक भारी मेज के सामने सीधा बैठा हुआ एक बत्ती की हरी रोशनी में, एक हरे रंग का समाचार-पत्र अपने हरे रङ्गीन हाथों से देखता हुआ। किन्तु दस बजने से कुछ मिनट पूर्व एक अन्य व्यक्ति—लम्बा तन्दुरुस्त आदमी, जो देखने में गोरा चिट्टा था तथा सुन्दर ग्लोब पहने हुये था, थियेटर के बाहर घूमने लगा। प्रत्येक बार वे एक दूसरे से मिले और कनखियों से संदेहात्मक दृष्टि निरन्तर डालते रहे। काउन्ट दोनों गैलरियों के कोने तक जाता और लौट आता। वहाँ एक दर्पण रक्खा हुआ था और उस पर अपनी आकृति का गहन प्रतिविम्ब देख कर तथा व्यवस्था आंक कर वह लज्जा और भय के मिले-जुले आक्रोश में भर गया।

दस का घंटा बजा! मुफट को अनायास ध्यान आया कि यदि नाना यहाँ हुई तो वहसुगमता से अपने ड्रैसिंग-रूम में मिल जावेगी। वह तीन सीढ़ियां चढ़ा और पीले पेन्ट से पुते छोटे हॉल की ओर से जाते हुये उस बरामदे तक पहुँचा, जहाँ एक ही द्वार बना हुआ था। उस समय वह तंग और सीला हुआ बरामदा जो एक कुँये की भाँति था और जिसके घेरे से दुर्गन्धि आ रही थी, काले धुँये से भर रहा था; जहाँ एक पाइप था, एक भट्टी थी और कुछ चौकीदार के लगाये हुये पौधे थे किन्तु दीवारों पर चमकती खिड़कियों से प्रकाश आ रहा था। उसके नीचे भंडार था तथा आग बुझाने का स्थान; उसके बायें, मैनेजर का कमरा था तथा दाहिनी ओर ऊपर ड्रैसिंग-रूम। कुँये के सदृश इस स्थान में कुछ द्वार और भी थे जो अँधेरे में खुलते थे। पहली मंजिल पर ड्रैसिंग-रूम में चमकते प्रकाश को काउन्ट ने तुरन्त देखा और सन्तोष व आनन्द का अनुभव कर, चिकनी कीचड़ के ऊपर जा खड़ा हुआ। उसने ऊपर देखा और

पेरिस के उस प्राचीन भवन में बदबूदार व फिसलन के स्थान पर टिका रहा। टूटे पाइप से पानी की बड़ी-बड़ी बूंदें टपक रही थीं। मैडम ब्रान की खिड़की से प्रकाश की एक रेखा कीचड़-भरे फुटपाथ पर पीले रङ्ग का प्रतिबिम्ब प्रकट कर रही थी जो दीवाल के उस कोने तक जाती थी जिसका निचला भाग पानी की सील से गल गया था; जिसके आगे गन्दगी का एक ढेर लगा हुआ था; जिस पर टूटे बर्तन, घड़ों के टुकड़े व टूटे तसले पड़े हुये थे। वहीं एक द्वार खुलने की आवाज आई। काउन्ट उस ओर शीघ्रता से बढ़ा।

नाना वहाँ सीधी चली आ रही होगी। वह वाचनालय की खिड़की पर लौट आया। उस गहरी परछाईं में, जो रात की रोशनी की भाँति थी वह बुड्ढा व्यक्ति अखबार पढ़ने में अब भी लीन दिखाई दे रहा था। तब काउन्ट पुनः टहलने लगा और कुछ आगे तक बढ़ गया। उसने मुख्य गैलरी को पार किया और गैलरी-फ्यूड्यू तक गैलरी-डेस-वेराइटीज पर बढ़ता चला गया, जहाँ सुन-सान था और थी सर्दी जो एक प्रकार से उदास अन्धकार में डूबी हुई थी। तब वह लौटा और थियेटर से गुजरते हुये, गैलरी सेन्टमार्क से गैलरी मान्टमेयर तक चलते चले जाने पर उसने एक मशीन एक हलवाई की दूकान पर देखी जो चीनी काट रही थी। तब तीसरी बार इस भय से कि नाना उसके पीछे से चली जायगी उसकी सारी आत्म-समृद्धि खो सी गई। वह गया और गोरे आदमी के निकट जा खड़ा हुआ जो स्टेज-द्वार के ठीक सामने खड़ा था और उन्होंने आपस में भ्रातृ व दैन्य की सी दृष्टियाँ फेंकीं जो संदेह से भरी हुई थीं और उनमें ईर्षा तथा अदावत दिख रही थी। कुछ दृश्य-परिवर्तन करने वाले बाहर आये और उन्होंने अपने पाइप सुलगाये। तीन बड़ी लड़कियाँ अपने उलझे बालों व गन्दे कपड़ों में, द्वार पर दिखाई दीं। वे सेब खा रही थीं और छूछ फेंकती जाती थीं। दो आदमियों ने अपनी गर्दनें झुकाईं और अपने अश्लील वाक्यों से उन आवारा लड़कियों की ठिठोली व मजाक तथा आपसी खिलवाड़ में आमन्त्रण का सा स्वाद पाया।

तभी नाना तीन सीढ़ियों से उतरी। वह मुफट को देखते ही एकदम पीली पड़ गई।

"ओह ! तुम हो," उसने लड़खड़ाते हुये कहा।

वे इठलाती लड़कियाँ डर से काँप गईं जब उन्होंने उसे पहिचाना। वे एक कतार में खड़ी होगईं—चुपचाप और सीधी जैसे कोई नौकर अपनी मालकिन के द्वारा उस समय पकड़ा जावे जब वह कोई गन्दा कार्य कर रही हो। वह लम्बा–मोटा व्यक्ति कुछ दूर जाकर स्थिरतापूर्वक खड़ा हो गया।

वे धीरे-धीरे बढ़ गये। काउन्ट—जिसने पहले से बहुत से प्रश्न सोच रक्खे थे, कुछ न कह सका। नाना ने—स्वयं ही, जल्दी-जल्दी एक लम्बी अनर्गल वार्तालाप छेड़ दी कि वह आठ बजे तक अपनी चाची के यहाँ रही और यह देखकर कि नन्हा लुई बहुत कुछ ठीक है, उसने सोचा कि वह थोड़े समय को थियेटर हो आवे।

"किसी विशेष कार्य से ?' उसने प्रश्न किया।

"हाँ, एक नई भूमिका के लिये", एक झिझक के साथ नाना ने उत्तर दिया : "वे मेरी राय जानना चाहते थे।"

वह जानता था कि वह झूँठ बोल रही है किन्तु उसके मुलायम हाथों की गरमाई ने—जो उस पर पूरी तरह झुक रहे थे, उसमें वह शक्ति नहीं छोड़ी कि वह एक शब्द भी कह सके। उसका क्रोध-रोष-आवेश कि उसने उसके लिये इतनी देर तक प्रतीक्षा की है—विलीन हो गया। अब उसको एक ही चिन्ता थी कि वह उसे अपने साथ रक्खे। अगले दिन, प्रातःकाल वह खोज करेगा कि नाना ड्रेसिंग-रूम में किसलिये थी। नाना, अपनी हिचकिचाहट में जो बाहर से एक प्रकार से अपनी अन्तरंग उद्विग्नता की शिकार बनी हुई थी, इस हेतु सचेष्ट थी कि वह आगे सोच सके कि क्या करे। गैलरी डेस वैराइटीज के कोने पर—एक पंखे बनाने वाले की खिड़की के पास आकर रुक गई।

"देखो, क्या यह सुन्दर नहीं है ?" वह बुदबुदाई : "मोती की सीप पर सजाया हुआ पंख !" तब लापरवाही-सहित उसने जोड़ दिया : "तो तुम मेरे साथ घर चल रहे हो ?"

"क्यों, अवश्य", मुफट ने विस्मय-सहित कहा : "क्योंकि तुम्हारा बच्चा तो ठीक है ?"

तब उसने एक लम्बी व्यथा-सहित खेद प्रकाश करना प्रारम्भ किया : सम्भव है, लुई को दुबारा प्रकोप हो गया हो और उसने बाटिगनौल्स जाने की चर्चा की किन्तु जब मुफट ने भी साथ जाने का प्रस्ताव किया तो उसने वह प्रसंग समाप्त कर दिया। एक पल को वह रोष में उबल उठी—एक स्त्री की भाँति जो पकड़ तो ली गई हो किन्तु जो अपने को परम सरल व सहृदय प्रदर्शित करना चाहती हो। जो हो, उसने वह बात भाग्य पर छोड़ दी और सोचने के लिये समय की प्रतीक्षा करती रही; अगर वह आधी रात तक भी काउन्ट से छुट्टी पा लेगी तो अपनी इच्छानुसार जैसा वह चाहती थी, सब ठीक हो जावेगा।

"आह ! हाँ, तो तुम आज रात 'कुँआरे' हो", उसने कहा : "तुम्हारी पत्नी कल प्रातःकाल तक नहीं आ रही है; क्या आ रही है ?"

"नहीं", काउन्ट ने किंचित रोष में नाना के उस चिरपरिचित वार्तालाप के व्यवहार को देखकर उत्तर दिया। किन्तु वह निरन्तर प्रश्न करती रही और पूछा कि गाड़ी के पहुंचने का क्या समय है और यह जानना चाहा कि क्या वह उसको लेने स्टेशन जाना चाहता है। उसने पुनः अपने पैर ढीले कर लिये जैसे वह दिखा रही हो कि दूकानों में उसकी बड़ी दिलचस्पी हो रही है।

"ओह ! उधर देखो !" वह एक जवाहरात की दूकान पर खड़ी होकर बोली : "कितना अच्छा ब्रैसलेट है ?"

वह पैसेज-डेस-पेनोरमा को बहुत पसन्द करती थी। अपने बाल्यकाल से ही उसमें पेरिस के आनन्दमयी वातावरण की वासना थी—उस नकली जवाहरात की, चमकदार ताँबे की और नकली चमड़े की भी। जब कभी भी वह वहाँ से गुजरती तो दूकानों से दूर नहीं हो सकती थी, उसी प्रकार जैसे सड़कों पर भागते हुए वह मिठाई वाले की दूकान पर कभी अटक जाती, कभी किसी बाजे की मधुर तान को सुनकर खड़ी हो जाती—विशेषतः गन्दी रुचियों को देखकर। किन्तु उस रात्रि वह बड़ी अधीर दिख रही थी जैसे बिना देखे ही वह सब कुछ देख रही हो। संध्या उसने अपने प्रकार से नहीं बिताई, इसकी

खिन्नता से वह भर रही थी और कुछ बेवकूफी करने की बात निरन्तर सोचती जाती थी। सम्पन्न लोगों का साहचर्य कितना मधुर होता है ? राजकुमार व स्टेनियर अभी उसके पास थे जो उसकी मायावी चंचलताओं में झूमते रहे थे और यह पता ही नहीं चला कि पैसा कहाँ चला गया ? बाउलेवर्ड हासमैन में उसका कमरा अभी भी ठीक से नहीं सजा था। केवल ड्राइङ्ग-रूम ही, जो लाल साटन से बड़ी पूर्णता से सजाया गया था, कुछ महत्त्व रखता था। लेनदार, उसे पहले से कम तंग नहीं कर रहे थे। वह तब की बात सोच रही थी जब उसके पास पैसा नहीं था ना ही कोई आय का साधन जिससे उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह मितव्ययता का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

एक महीने में, वह चोर स्टेनियर बड़ी कठिनाई से केवल एक हजार फ्रांक ला सका है, वह भी जब कि वह अनेक बार उसे ठोकर मारकर निकाल देने की धमकी दे चुकी है। जहाँ तक मुफट का प्रश्न था, वह मूर्ख था; उसको इसका अनुभव ही नहीं था कि वैसी स्त्री को वह क्या सौगात दे। अतः वह उसकी कृपणता पर यह लाँछन नहीं लगा रही थी।

आह ! वह उन सब के सबों को उल्टा लौटा सकती थी यदि वह समस्त दिन चतुर व स्थिर नीति से न सोचती। प्रत्येक को ठीक होना चाहिये। हाँ, सुबह जो उससे कहने की आदी थी और उसके अपने हृदय में भी पवित्रता की चेतना कभी जागरूक होती थी और चेतन की पावन स्मृति की वह भव्यता भी उसे चैतन्य व जागरूक किये रहती थी। यही कारण था कि दबे हुए रोष में भी, वह अपने मन से चल रही थी और काउन्ट के हाथ पर झुकी हुई थी तथा कम परिचित लोगों के मध्य एक दूकान से दूसरी दूकान पर जा रही थी। बाहर, फुटपाथ सूखता जा रहा था और ठंडी हवा का झोंका आ रहा था तथा पैसेज में चमकदार हण्डों, गैस-लैम्पों के जलते प्रकाश में गरमाहट भी उभर रही थी। एक जलपान-गृह का बैरा बत्तियाँ बदल रहा था तथा रिक्त तथा जगमगाती दूकानों की निश्चल स्त्रियाँ अपनी खुली आँखों में ऊँघती प्रतीत हो रही थीं।

"ओह ! कितना मीठा !" नाना ने अन्तिम खिड़की पर दृष्टिपात

फर तीव्रता से कहा और कुछ पग लौटकर तामचीनी के बने एक दौड़ के कुत्ते की प्रशंसा की जो अपना एक पग एक जाल के ऊपर उठाये हुए था, जो गुलाब के फूलों में छिपा था।

अन्ततः उन्होंने पैसेज छोड़ दिया और गाड़ी न लेने का निश्चय किया। घूमने में बाहर बड़ा सुहाना लग रहा था और कोई जल्दी भी न थी। पैदल घर पहुँचने में अच्छा लगेगा। तब, जब वे केफ-ऐंगलेस तक पहुँचे तो उसने (नाना ने) कुछ खाने की इच्छा व्यक्त की और कहा कि उसने प्रातःकाल से, लुई की रुग्णता के कारण, कुछ भी नहीं खाया है। मुफट के समक्ष उसे निराश करने का कोई प्रसंग न था। अभी तक, जन साधारण में लेकर उसको (नाना को) चलने का साहस मुफट ने नहीं किया था। अतः उसने एक एकान्त स्थान की माँग की और शीघ्रता से ड्योढ़ी को पार किया। नाना, धीरे-धीरे उसके पीछे गई जैसे वह उस स्थान के विषय में परिचित थी और ज्योंही वे एक एकन्त-स्थान, जिसके द्वार को सेवक ने तुरन्त खोला था, में प्रवेश करने वाले थे निकटवर्ती कमरे से एक व्यक्ति ने हँसी और पुकारों की चिल्लाहट के बीच आगे बढ़कर उन्हें रोका। वह डागनेट था।

"हल्लो ! नाना", वह चिल्लाया।

काउन्ट शीघ्र ही कमरे के अन्दर विलीन हो गया और द्वार को यों ही अधखुला छोड़ गया। किन्तु जैसे ही उसकी चौड़ी पीठ अदृश्य हुई, डागनेट ने आँख मारी और मजाक में कहा :

"ड्यूम—तुम पहुँच रही हो। अब तुम उनको टुलियरीज़ से पा सकती हो।"

नाना मुस्कराई। उसने अपनी उँगली ओठों पर लगाते हुए शांत रहने का संकेत किया। उसने देखा कि वह कुछ अधिक उत्तेजित था किन्तु उससे मिलकर उसे प्रसन्नता हुई क्योंकि उसके लिये उसके मन के एक कोने में अभी भी स्थान बना हुआ था—उसके उस घृणित व्यवहार के होते हुए भी जो उसने नाना के स्त्रियों के साथ होने पर उसे न पहचानते समय प्रदर्शित किया था।

"अब यहाँ क्या कर रहे हो", उसने बड़े अपनेपन से प्रश्न किया।

"मैं कुछ नवीनता ला रहा हूँ। सचमुच, मैं शादी करने के प्रश्न को गम्भीरतापूर्वक सोच रहा हूँ।"

दयनीयता प्रदर्शित करते हुए नाना ने अपने कन्धे हिला दिये। किन्तु उसने अपने मजाक की बात जारी रक्खी और कहा कि वह कोई जीवन नहीं है कि वह वार्स में इतनी आय करे कि अपनी स्त्री-मित्रों को उपहार दे सके ताकि वे उसे तुच्छ व्यक्ति न समझें। उसके तीन लाख फ्रांक केवल अट्ठारह महीने चल पाये। वह अधिक क्रियाशील होना चाहता है। वह एक लम्बा दहेज लेगा और अपने पिता की भाँति अच्छी मौत मरेगा। नाना निरन्तर अट्टहास करती रही। वह उस कमरे की ओर निरन्तर झाँकती रही जिससे वह निकला था।

"तुम किसके साथ हो ?"

"ओह ! एक पूरा दल है", नशे की झोंक में अपने आप को भुलाते हुए वह कह गया : "जरा सोचो ! ल्या अपनी ईजिप्ट-यात्रा का वर्णन कर रही थी। वह बड़ा मजेदार था ! वहीं एक स्नानागार की कथा थी...... ।"

और उसने वह कहानी कह डाली। नाना उसे सुनने के लिये ध्यानावस्थित हो खड़ी रही। वे एक दूसरे के समक्ष, ड्योढ़ी के सामने, दीवार के सहारे सटे खड़े थे। उस नीची छत्त से प्रकाश फैल रहा था। पर्दे के अन्दर से भोजन की सुगन्धि आ रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर में, वहाँ के बढ़ते शोरगुल में एक दूसरे की बात सुनने के लिये वे अपने मुँह निकट ले जाते। हर मिनट में, बैरा तश्तरियों से लदा, मार्ग को अवरुद्ध पाकर—उस जोड़े को तंग करने को विवश होता। किन्तु वे अपने में बिना किसी बाधा को माने, दीवार से चिपके रहे और चुपके-चुपके ग्राहकों के निरन्तर शोरगुल तथा नौकरों की व्यस्तता के बीच भी वार्तालाप करते रहे।

"उधर देखो", नौजवान ने फुसफुसाया और द्वार की ओर संकेत किया जहाँ मुफट घुस रहा था।

उन दोनों ने देखा। द्वार किंचित् हिला जैसे किसी हवा के झोंके से

हिल-डुल रहा हो, तब वह धीरे से बिना किसी शब्द के बन्द हो गया। वे दोनों एक दूसरे को देखकर मधुर २ मुस्कराये। काउन्ट वहाँ अकेला बैठा स्वयं एक अच्छा परिहास बन गया होगा।

"यों ही", उसने प्रश्न किया : "क्या तुमने फाचरी का वह लेख पढ़ा है जो मेरे प्रति लिखा गया है ?"

"हां, सोने की मक्खी", डागनेट ने उत्तर दिया : "मैं उस सम्बन्ध में कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि सम्भव है तुम्हें वह रुचिकर न प्रतीत हो।"

"पसन्द नहीं करूँ, क्यों ? वह तो एक लम्बा लेख है।"

फिगारो में लिखे जाने के कारण वह जैसे अपने प्रति चापलूसी का अनुभव कर रही थी। यदि उसका हेयर-ड्रेसर फ्रांसिस, उस अखबार को न लाता तो उसे पता ही न चलता कि उसकी प्रशंसा की गई है। डागनेट ने उसकी आकृति को, तिरस्कार के भाव-सहित कनखियों से देखा। ठीक है, जब वह स्वयं प्रसन्न है, तो सबको होना चाहिये।

"कृपा करके······!" एक बैरा, उनके बीच से होकर जाते हुए तथा अपने दोनों हाथों में शैम्पेन व बरफ लिये हुए, बोला।

नाना, जहाँ मुफट बैठा प्रतीक्षा कर रहा था, उस कमरे की ओर एक-दो पग बढ़ी।

"हाँ, नमस्कार", डागनेट बोला : "अपने उस लम्पट के पास जाओ।"

"तुम उसको लम्पट क्यों कहते हो ?" एक क्षण स्थिर होकर रुकते हुए उसने प्रश्न किया।

"क्योंकि वह वैसा है !"

अत्यधिक आकर्षित होते हुए, वह उसके पास, पहले की ही भाँति दीवार के सहारे झुकते हुए, पहुँची और सरलता से कह गई : "आह !"

"क्या, तुमको ज्ञान नहीं था ? प्रिय ! उसकी पत्नी तो फाचरी के फंदे में आगई है। सम्भवतः सर्व प्रथम यह तभी हुआ जब वे गाँव में ठहरे हुए थे। फाचरी तो अभी-अभी, जब मैं यहाँ आ रहा था, मेरे पास से गया है और अनुमान है आज रात उन्होंने अपना मिलन निश्चित किया है। उन्होंने कोई यात्रा सोच ली है, मेरा ख्याल है।"

कुछ क्षण नाना, विचारमग्न व स्तम्भित रह गई। 'मैं भी वैसा सोच रही थी', अपनी जाँघों पर थाप देते हुए वह अन्त में कह गई : "तुमको ध्यान होगा कि पहली बार ही, जब मैं उस गाँव की सड़क पर जा रही थी, तभी मैंने इसका अनुमान लगा लिया था। क्या यह सम्भव है कि एक भद्र महिला, इस प्रकार अपने पति को धोखा दे और वह भी उस कलुषित डागनैट के कारण। वह निश्चित ही उसे कुछ शिक्षा देगा।"

"ओह !" डागनेट घृणापूर्वक बोला : 'यह उसका कोई पहला अनुभव नहीं है। जितना वह जानता है उससे अधिक वह जानती है।"

"कृपा करके...... !" दूसरा बैरा अपने हाथों में शराब की अधिक बोतलें लिये हुए, निकट आते हुए बोला।

डागनेट, नाना के साथ उसके कमरे तक गया और उसे अपने हाथों में लिये रहा। तब उसने अपनी कटीली-सुरीली आवाज, जो एक हारमोनियम की तान की भाँति थी तथा जिससे उसकी परिचित स्त्रियों में उसके प्रति विशेष सम्मोहन, आकर्षण एवं सफलता प्राप्त थी, प्रारम्भ की।

"विदा, प्रिये ! तुम जानती हो मैं तुम्हें सदैव चाहता हूँ।"

नाना ने अपने को मुक्त किया और उस पर मुस्कराते हुए धीरे से बोली, किन्तु उसकी आवाज उस चिल्लाहट व हँसी में दब गई जो कमरे से निकलते हुए उस दल से मुखरित हुई थी।

"पागल न बनो ! वह सब समाप्त हो चुका है। किन्तु किसी दिन आकर मिलो। हम लोग गप-शप करेंगे।"

तब अति गम्भीर होते हुए, एक भद्र महिला के सदृश्य अत्यन्त घृणास्पद मुद्रा में उसने कहा : "आह ! वह एक लम्पट है। वह तो एक बड़ी गन्दी बात है। एक ऐसे व्यक्ति के प्रति तो मेरे मन में सदैव बड़ी बेचैनी रही है।"

अन्ततः जब वह कमरे में घुसी तो उसने मुफट को अत्यन्त पीला पड़ा हुआ तथा काँपते हाथों सहित देखा, जो एक तंग सोफे पर ग़मगीन बैठा था। उसने (मुफट ने) एक भी कटु शब्द नहीं कहा। नाना भयंकर रूप से उद्विग्न हो उठी थी। उसके नेत्रों से घृणा तथा दया एक साथ भर रही थीं—एक

दयनीय व्यक्ति जो बड़ी शर्म के साथ अपनी चालाक पत्नी द्वारा धोखे में रक्खा जा रहा था''''''उसकी इच्छा हुई कि उसके गले में बाहें डाल कर किसी भाँति उसे सान्त्वना दे। वह था तो सर्वथा अनुपयुक्त किन्तु वह एक ऐसा मूर्ख व शैतान था कि इस प्रकार उसको वैसा सबक मिलना ही चाहिये था। उसकी दया उमड़ आयी। भोजनोपरान्त उसने उसे रोके रखा। 'केफ-ऐंगलेस' में वे पन्दरह मिनट अधिक रुके रहे और तब वे अपने घर 'बाउलेवर्ड हासमैन' चले गये। इस समय ग्यारह बज रहे थे। आधी रात तक वह अवश्य कोई ऐसा मीठा बहाना ढूँढ़ निकालेगी जिससे उससे मुक्ति मिल सके।

जब वह एन्टीरूम में थी तब उसने 'जो' को कुछ निर्देश किये।

"तुम उसका ध्यान रखना और जब भी वह आवे उससे कह देना कि यदि मैं दूसरे के साथ होऊँ तो वह शोर न करे।"

"किन्तु, मैं उसे कहाँ रक्खूँगी, मैडम ?"

"उसको रसोई में रखना; वही सर्वाधिक सुरक्षित होगा।"

मुफट सोने के कमरे में अपना ओवरकोट उतार रहा था। अंगीठी में जोर की आग जल रही थी। यह वही कमरा था जिसमें आबनूश की लकड़ी का लाल फर्नीचर लगा हुआ था। उसके पर्द और कुसियों के खोल लाल रंग झलका रहे थे। उनके नीचे के भूरे फर्श पर नीले फूल चमक रहे थे। दो बार नाना ने उन्हें परिवर्तित करने की सोची। एक बार उसने उस सबको को काले मखमल का बनाने का सोचा और दुबारा सफेद साटन का जिसमें गुलाबी रंग के फीते टंके हों; किन्तु जब स्टेनियर ने स्वीकृति दे दी तो उसे उसके भुगतान के लिये जो धन उससे प्राप्त हुआ उसे उसने समाप्त कर दिया। उसने जो कुछ भी वृद्धि की वह थी केवल एक शेर की खाल की, जिसको उसने 'अग्निस्थान' के सामने लगाया था और एक चमकीला लैम्प जिसको उसने छत पर टांगा था।

जैसे ही उन्होंने द्वार बन्द किया नाना बोली—"मुझे किंचित भी नींद नहीं आ रही है और न मैं पलंग पर ही जाना चाहती हूँ।"

काउन्ट ने, जिसका किसी के द्वारा देखे जाने का भय अब विलीन हो गया था, आज्ञाकारी की भाँति स्वीकार कर लिया। उसकी केवल इतनी ही चिन्ता शेष थी कि नाना रुष्ट न हो।

"जिसमें तुम प्रसन्न हो", वह बोला।

आग के समक्ष बैठकर उसने अपने जूते उतार डाले। नाना को इसमें बड़ी प्रसन्नता होती थी कि वह बड़ी आलमारी के सामने लगे शीशे के समक्ष अपने कपड़े उतारे जिसमें वह अपनी पूरी लम्बाई देख सके। वह अपनी सब चीजें पृथक कर देती और आत्म-सन्तोष में डूब जाती। एक भावोद्रेक जो उसमें अपने व्यक्तित्व के प्रति था, एक प्रसन्न सराहना उसकी साटन की सी चिकनी देह के प्रति और उसकी वह लचक उसको वहाँ टिकाये रहती। तब वह गम्भीर और सतर्क होकर अपने प्रति उस प्यार में डूब जाती। हेयर-ड्रैसर ने उसे वैसे अनेक बार कमरे में घुसते हुए अवाक हो देखा जबकि नाना ने गर्दन तक नहीं घुमाई। काउन्ट मुफट यों वासना में चूर हो जावेगा यह देखकर नाना को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसमें वैसी क्या बात थी? वह वैसा केवल अपने लिये करती थी न कि दूसरों के लाभ के लिये।

उस रात उसने सारी बत्तियाँ जला दी थीं, और ज्योंही वह अपने कन्धों पर से अन्तिम वस्त्र उतारना चाहती थी, वह स्थिर होकर खड़ी होगई और उसके अन्तरङ्ग में एक प्रश्न उभर आया।

"क्या तुमने फिगारों में प्रकाशित लेख पढ़ा है? वह उस मेज पर रखा है।" तब उसके समक्ष डागनेट की वे तिरस्कार भरी मुद्रायें उभर आईं। वह भ्रम में पड़ गई थी। यदि फाचरी उसका मजाक बना रहा है तो वह उसका बदला लेगी। "लोग कहते हैं कि वह मेरे लिये लिखा गया है", उसने उदासीनता प्रकट करते हुये कहा - "प्रिय! तुम क्या सोचते हो?"

अब उसने धीरे से अपना 'सेमीज' पृथक कर दिया और तब तक उसी भाँति पूर्ण नग्न बनी रही जब तक मुफट ने पढ़ना समाप्त नहीं कर लिया। मुफट धीरे-धीरे पढ़ता रहा। फाचरी का वह लेख "सोने की मक्खी" एक ऐसी लड़की की कहानी थी जो शराबियों की चौथी या पाँचवीं पीढ़ी में जन्मी है, जिसका

रक्त कठिनाइयों व शराब में डूबा है जिसने उस भावना को उसके 'सेक्स' के नाश में बदल डाला है. वह पेरिस के एक फुटपाथ पर अंकुरित हुई है; और लम्बी; अतीव सुन्दरी अपनी चमकीली देह सहित उसने उन शैतानों और बदमाशों से बदला लिया है जिनके बीच से वह प्रकट हुई है। उसकी वह दुर्गन्धि जो पुरुषों में पनप रही है, कुलीनता को भड़का कर दूषित हुई है। वह अनचाहे ही, प्रकृति का एक खिलौना बनी हुई है; वह विनाश की एक भट्टी है जो पेरिस में कलुष व अस्त-व्यस्तता पनपा रही है। अन्त में उस लेख में उसको सूर्य के रंग की एक सुनहली मक्खी से मिलाया गया है जो किसी गन्दगी से उड़ आई है—एक मक्खी जो सड़क के किनारे पड़े मांस के लोथड़ों में लिपटी मृत्यु की विभीषिका फैलाती है और भनभनाहट उत्पन्न करती, नृत्य करती है और एक बहुमूल्य पत्थर की सी चमक प्रकाशित करती है जो मनुष्यों में विष भर देती है—उनके महलों की खिड़कियों में घुस कर उनके छूने मात्र से।

मुफट ने अपना सिर उठाया और अग्नि की ओर गहनतापूर्वक देखता रहा।

"तो, तुम इसके सम्बन्ध में क्या सोचते हो ?" नाना ने प्रश्न किया।

किन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह लेख को दुबारा पढ़ना चाहता हो। एक शीतल कंपकंपी उसके सिर से कंधों तक दौड़ गई। लेख अत्यन्त क्रूर व पैशाचिक ढंग से लिखा गया था जिसमें भड़कीले वाक्य तथा अप्रत्याशित शब्द थे और विचित्र साम्य दर्शित किये गये थे। जो हो, वह उससे बड़ा स्तम्भित हो रहा था। उसमें उसने उस भावना को जागृत किया जिसे वह महीनों से जानबूझकर दाबे रहना चाहता था।

तब उसने अपनी दृष्टि उठाई। नाना अपनी आत्म-श्लाघा में लीन थी। उसने अपनी गर्दन झुका ली थी और वह शीशे में केन्द्रित थी। उसके कक्ष में एक भूरा मस्सा था जिसको उसने अपनी उँगलियों से छुआ तथा किंचित पीछे झुक कर वह उसे उठाने की चेष्टा करती रही—निस्संदेह यह

सोचते हुये कि वह बड़ा सुन्दर है। तब वह अपनी देह के अन्य अंग-प्रत्यंगों को देखकर बालपन की चंचलता व उत्सुकता की भांति प्रसन्न होती रही। अपने आप को देखकर उसे बड़ा विस्मय होता रहा। वह एक नवयुवती की भांति चकित होती थी जिसने यौवन के प्रथम संकेत को पहचाना हो। तब अपनी भुजाओं को धीरे-धीरे फैलाते हुये तथा उस मॉडल 'वीनस' की भाँति अपनी देह-यष्टि को उभारते हुये उसने अपने को दायीं से बायीं ओर झूमते हुये, घुमाया। उसके घुटने फैले हुये थे। उसकी देह कूल्हों पर से पीछे मुड़ी हुई थी तथा उसमें निरन्तर वैसी थिरकन प्रकट हो रही थी जैसी पेट के नृत्य में प्रकट होती है।

मुकट ने उसे गौर से देखा। नाना उसे डरा रही थी। समाचारपत्र उसके हाथ से छूट कर भूमि पर गिर गया था। संकेत के स्पष्ट चिन्हों से उसने अपने आप को तुच्छ समझा। यह सत्य था। उन तीन महीनों में नाना ने उसके जीवन का पतन कर डाला था। वह अपने को अणु-अणु में घृणित मान रहा था जिसका उसने कभी स्वप्न में भी ध्यान नहीं किया था। उस क्षण उसके अन्दर कुत्सित मनोविकार उभर रहे थे। एक पल को वह पाप के प्रतिफल के प्रति जागरूक भी हुआ। उसने उस अस्त-व्यस्तता के भयानक कुफल का ध्यान भी किया। उसने अपने को विष दिया था। उसका परिवार नष्ट हुआ था। समाज का एक अंग टूट रहा था व ध्वंस हो रहा था। किन्तु अपनी उस दृष्टि को हटाने की सामर्थ्य न रखकर उसने नाना को गहराई से देखा। वह अपनी वेदना में और अधिक भर गया।

नाना में अब कोई गति नहीं थी। एक हाथ को गर्दन से लगाकर और दूसरा उसमें चिपका कर वह अपना सिर पीछे झुका रही थी जिससे उसकी कोहनियाँ पर्याप्त फैल रही थीं। उसने उसको अर्ध-निमीलित नेत्रों से कुटिलता पूर्वक देखा। उसका मुँह थोड़ा खुला हुआ था। उसकी आकृति मोहक हास्य-मुद्रा से भर रही थी। वीरांगना के सदृश उसके कठोर उरोज अपनी भरी माँसलता में साटन की भांति चमकते शरीर व त्वचा में प्रकंपित हो रहे थे। उसके पीछे उसके लटके पीले बाल उसकी पीठ पर ऐसे लग रहे थे जैसे कोई शेरनी दिख रही हो।

मुफट ने उस कोमल रूप-रेखा का अनुभव किया। उसका वह गुलाबी गात और उससे उभरते पर्त, जो सुनहली परछाई में विलीन हो रहे थे; वे लचकदार रेखायें—विद्युत के प्रकाश में रेशम की भाँति चमक रही थीं। उसमें उसके पुराने स्त्री सम्बन्धी भयावह विचार प्रकट हो आये, जो स्क्रिटचर की शैतान, जोंक अथवा खूँखार की भाँति हों।

नाना में, गात की सुषमा में जैसे लाल मखमल की सी चमक प्रकट हो रही थी जबकि उसके पार्श्व भाग और घोड़ी की तरह की उसकी जंघाओं से जिसके ठोस गोलाकारों में भरे मांस के झीने पर्दे के अन्दर से उसके सैक्स की उलाती परछाईं प्रकट हो रही थी, जो एक पशु की सी थी। वह एक सुनहला कीटाणु था जिसको अपने प्रभाव का पता न था किन्तु जो अपनी गन्ध-मात्र से संसार को नष्ट कर रहा था। मुफट अब भी निरन्तर देख रहा था और उस दृश्य में इतना लीन था कि एक पल को उसने अपने पलक ढांप लिये और दृष्टि फेर ली। तब उस अन्धकार में वह पशु फिर प्रकट हुआ—बढ़ा हुआ, भयानक और मुद्राओं के आधिक्य सहित। और वह उसके समक्ष, उसके नेत्रों में, उसके मांस में—पहले से भी अधिक प्रवेश करता रहा।

नाना अब घूमी। आकर्षण का कँपन उसकी रग-रग में भरता गया। अपनी भीगी आँखों से उसने अपने को छोटा बनाने की चेष्टा की, जिससे वह और भी सुहानी प्रतीत हो। तब उसने गर्दन के नीचे से अपने हाथ पृथक् किये और उनको धीरे-धीरे वक्ष-भाग से सरकाती गई जिसको उसने आतुरता में दाब लिया। और, पूर्ण सन्तोष में, अपनी देह की स्निग्धता से द्रवित होकर, उसने अपने गालों को मसल डाला, दाँये-बाँये अपने कन्धों के ऊपर। उसका शिकारी मुँह श्वासोच्छ्वास-सहित इच्छाओं में भर गया। उसने अपने ओंठ फुलाये और अपनी बगल को चूम लिया—मुस्कराते हुए, जैसे एक दूसरी नाना शीशे में उसे चूम रही है।

तब मुफट ने एक धीमी किन्तु लम्बी निःश्वास फेंकी। वह आत्म-संतोष उसे उत्तेजित कर रहा था। अब, हवा के झोंके की भाँति उसके सारे तर्क विलीन हो गये। उसने, नाना को कमर से पकड़ लिया; और उस नृशंस कामुकता में उसने नाना को कालीन पर गिरा लिया।

"मुझे भी ठीक होने दो", वह चिल्लाई : "तुमने मुझ पर चोट की है।"
काउन्ट अपनी हार के प्रति सचेत था। वह जानता था कि यह नाना बड़ी शैतान है, नीच और धोखेबाज; किन्तु हर हालत में वह उसे चाहता था—विषमयी ही वह क्यों न हो।

"ओह ! क्या मजाक है", जब उसने अपने पैर टिका लिये तो रोष में वह बोली।

जो हो, तब वह शांत हो गई। वह अब तुरन्त चला जायगा। तब, फीतेदार रात्रि-पोशाक को पहन कर वह अग्नि के सम्मुख एक कम्बल पर बैठ गई। वह उसकी प्रिय जगह थी। तब फाचरी के लेख पर उसने पुनः प्रश्न किया, और मुफट ने भ्रमात्मक उत्तर दिया और एक अवांछनीय दृश्य को बचाना चाहा। फिर वह दीर्घ शान्ति में विलीन हो गई और काउन्ट से छुटकारा पाने की युक्ति खोजती रही।

वह, उसको हँसी-खुशी से पूरा करना चाहती थी। वह एक अच्छे स्वभाव की लड़की थी। दूसरों को दुःख देने में उसे खेद होता था विशेषतः काउन्ट को, जोकि एक मूर्ख था—उस परिस्थिति में जिसने उसे उसके प्रति दयार्द्र बना दिया था।

"तो कल प्रातःकाल, तुम अपनी पत्नी की आशा कर रहे हो", अन्ततः उसने कहा।

मुफट एक आराम-कुर्सी पर फैल चुका था। वह आलस्य और थकान का अनुभव कर रहा था। उसने अपना सिर हिला दिया। नाना ने गम्भीरतापूर्वक उसका मनन किया। कम्बल पर बैठे हुए ही उसने अपने एक निःवस्त्र पैर को हाथ से दाब कर ठीक किया और इधर-उधर हिलाया-डुलाया।

"तुम्हारी शादी हुए कितने दिन हुए", उसने प्रश्न किया।

"उन्नीस वर्ष", काउन्ट ने उत्तर दिया।

"आह ! और तुम्हारी पत्नी, क्या वह अभी भी वैसी ही अच्छी है ? तुम लोग आपस में ठीक रहते हो ?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब एक व्याकुलता में उसने कहा :

"तुम जानती हो, मैंने तुमसे कहा है कि तुम वैसे प्रश्न मुझसे न किया करो।"

"सचमुच ! और क्यों, कृपा कर बताइये ?" वह आवेश में चिल्लाई : "मैं तुम्हारी पत्नी को खा नहीं जाऊँगी, यह निश्चित है । श्रीमान् जी ! सभी स्त्रियाँ समान है।"

यहाँ वह अधिक कह जाने के भय से रुक गई ! केवल उसमें अपने प्रति विशेषता का अनुभव हो रहा था क्योंकि वह अत्यधिक सरल थी। बेचारा गरीब ! इस पर किसी को इतना कठोर नहीं होना चाहिये। इसके अतिरिक्त उसमें तत्काल एक मजाक का ध्यान उभर आया। वह मुस्कराई और तीक्ष्णता-पूर्वक उसे निहारती रही। उसने प्रारम्भ किया :

"मैं कहती हूँ, मैंने वह सूचना तुम्हें नहीं दी कि तुम्हारे प्रति फाचरी ने क्या बात फैलाई है—वह एक हर समय का जहरीला साँप है। उसके प्रति मेरे मन में कोई बुरे भाव नहीं हैं क्योंकि सम्भवतः उसका लेख सही हो। किन्तु साथ ही विषाक्त है।"

तब जोर से हँसते हुए और अपने पैरों को पसारते हुए वह कम्बल पर सरक गई और उसने अपना वक्ष काउन्ट के घुटनों पर टिका दिया।

'क्या कल्पना है ? वह कसम खाता फिरता है कि जब तुमने अपनी पत्नी से शादी की तो तुम पूर्णतः अनभिज्ञ थे। तुम समझते हो, क्या यह ठीक है ?"

उसने उसके चेहरे पर सीधा देखा और अपनी भुजायें उसके कन्धों पर रखते हुए, उसने उसको कुछ कहने के लिये झुकाया।

"हाँ"; अन्ततः उसने गम्भीर स्वर में कहा।

तब वह हँसी की गूँज में लोट-पोट होती रही और उसके पैरों को थपथपाती रही।

"नहीं, यह सम्भव नहीं है। ऐसा अवसर केवल तुम्हारे साथ ही हो सकता है। तुम तो एक बहुत बड़ी कहानी या चमत्कार हो। किन्तु मेरे भोले खिलाड़ी, तुम मूर्ख लग रहे होगे। जब कोई आदमी कुछ नही जानता तो वह बड़ा तमाशा बनता है। सच ! मैं अवश्य चाहती कि वैसा अवसर मेरे समक्ष आता

और मैं सब ठीक कर देती। कहो! कहो! इधर आओ!"

उसने प्रश्नों की झड़ी लगादी और सब बात विस्तार में जाननी चाही। वह इतनी अधिक हँसी और क्षण-क्षण में अपनी रात्रि-पोशाक में लोट-पोट होती रही कि एक बार तो वह उसके कन्धों पर से उतर गई। दुबारा वह उसी के साथ लिपट गई और दीप्त अंग-शिखाओं के सम्मुख उसकी गुलाबी देह व त्वचा स्वर्ण के सदृश चमकती रही और काउन्ट धीरे-धीरे अपनी शादी की रात की कथा उसे सुनाता रहा। अब आगे उससे वह किसी अनिच्छा का अनुभव नहीं कर रहा था अपितु उसे सुनाने में उसे आनन्द आने लगा। उसने लज्जावश कुछ शब्द चुन लिये और कहता रहा। वह नौजवान स्त्री, अत्यधिक उत्तेजित होकर, काउन्टेस के सम्बन्ध में प्रश्न करती रही।

"वह बड़ी सुन्दरता से सजाई गई थी किन्तु एक बर्फ की चट्टान की भाँति थी वह।" काउन्ट ने बहाना किया।

"ओह! तुमको ईर्षा करने की कोई बात नहीं है", वह बुदबुदाया।

नाना ने अब हँसना बन्द कर दिया और अपने स्थान पर बैठ गई। उसकी पीठ आग की तरफ थी और उसकी ठोड़ी घुटनों पर रक्खी हुई थी, जिसको घेर कर उसने अपने दोनों हाथ बाँध रक्खे थे।

"श्रीमान् जी! यह एक सबसे भारी भूल है कि एक व्यक्ति प्रथम रात्रि को अपनी पत्नी के समक्ष बेवकूफ बनकर जाय", उसने घोषित किया और अपना स्वर गम्भीर करती गई।

"क्यों!" काउन्ट ने आश्चर्यसहित प्रश्न किया।

"क्योंकि", उसने एक प्रोफेसर की भाँति धीरे से प्रारम्भ किया।

वह भाषण कर रही थी और अपना सिर हिलाती जाती थी।

"तुम, देखो! मैं उस सम्बन्ध में सब कुछ जानती हूँ। हाँ, मेरे दोस्त! स्त्रियाँ मूर्ख को पसन्द नहीं करतीं। अपनी चारित्रिक-व्यवस्था में वे कुछ कहती नहीं हैं। तुम समझो, किन्तु उस सम्बन्ध में वे अत्यधिक सोचती हैं; और, पहले या बाद में, जब इन्हें वह सब कुछ प्राप्त नहीं होता जिसकी वे कामना करती हैं तो वह उसे अन्यत्र प्राप्त करती हैं। वहाँ मैं क्या करती हूँ—यह तो अब तुम जानते हो।"

उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था अतः वह और अधिक खोल कर कहती रही। वह ममत्व में, बड़ी पुचकार सहित उसको वह पाठ पढ़ाती रही। जब से उसने यह जाना था कि वह एक बड़ा मूर्ख है—नाना को उस परिस्थिति का ध्यान कर बड़ी चिन्ता व दया होने लगी थी। उस प्रसंग पर वह उससे तर्क-वितर्क करे, ऐसा उसके मन को घेरे रहा।

"हाँ, तो सचमुच में वह बातचीत कर रही हूँ जिससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं क्यों वैसा कह रही हूँ--केवल इसलिये कि प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न रहे। हम लोग एक साधारण हँसी कर रहे हैं, क्या नहीं ? आओ ! और सही-सही उत्तर दो।"

आग की तेजी के कारण उसने तब अपना आसन बदला।

"क्या गरमी नहीं है ? मेरी तो पीठ भुन गई ! अब एक पल रुको और मैं अपना पैर गरम कर लूँ।"

और जब उसने दोनों पैरों को एक दूसरे में लपेट कर अपने को घुमा लिया तो धीरे से बोली : "तुम्हारा व तुम्हारी पत्नी का एक ही कमरा तो नहीं है, क्या है ?"

"नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ", उत्तर न देने के भय से वह कह गया।

"और क्या तुम सोचते हो कि वह एक छड़ी मात्र है ?"

उसने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

"और क्या यही कारण है कि तुम मेरे पास आते हो ? जवाब दो। मुझे बुरा नहीं लगेगा।"

उसने पुनः सिर हिला दिया।

"ठीक है", उसने अन्त में कहा : "मैं उतना सोचती थी। आह ! भोले आदमी ! तुम मेरी चाची को जानते हो, मैडम लेराट को ? अगली बार वह आवेगी और तुमको अपनी सड़क पर रहने वाले पंसारी की कहानी सुनावेगी। वह देखो, आग बहुत तेज है और मैं अपने को बदल कर अब अपना बाँया अंग गरम करूँगी।"

और उसने ज्योंही अपना एक कूल्हा आग की ओर किया, उसके मस्तिष्क में एक और हँसी की बात ध्यान में आई और वह बड़ी प्रसन्नता में उसका आनन्द लेती रही। आग की परछाई के सामने वह कैसी गुलाबी व मांसल लग रही है—इसका ध्यान कर वह मुदित होती रही।

"मैं कहती हूँ! मैं एक बत्तख की भाँति हूँ! हाँ, वैसी ही एक बत्तख—भुनती हुई। मै घूमती हूँ, घूमती हूँ। सचमुच, मै अपने ही रस में पक रही हूँ।"

पुनः वह अट्टहास कर उठी जबकि वहाँ अचानक द्वार बन्द होने तथा बातचीत के शब्द सुनाई दिये। मुफट ने, विस्मित होकर, अपनी दृष्टि से प्रश्न किया। वह तुरन्त गम्भीर हो गई। तब उसकी आकृति में एक चिन्तायुक्त रेखा दौड़ गई। वह निःसंदेह जो की बिल्ली होगी—एक शैतान जानवर जो तमाम वस्तुओं को नष्ट करती है। साढ़े बारह बज गये। तब वह क्या कर रही थी, या सोच रही थी? केवल अपने उस लम्पट साथी की प्रसन्नता का सरंजाम बाँध रही थी। अब जबकि दूसरा आ पहुंचा है तो उससे (मुफट से) छुटकारा पाना चाहिये और तुरन्त ही।

"तुम क्या कर रही थीं?" काउन्ट ने उसे अत्यधिक प्रसन्न वह सन्तुष्ट देखकर कहा।

किन्तु उसको हटाने के विचार में उसका मजाक अनायास समाप्त हो गया। अब वह रुखी हो गई थी और उसके शब्दों में मिठास भी नहीं थी।

"हाँ! आह, वह पँसारी और उसकी पत्नी! वे दोनों कभी ठीक नहीं रहे, किंचित भी नहीं। वह, तुम जानते हो, प्रत्येक वस्तु की कामना करती रही किन्तु वह उसके लिये निरा मूर्ख था। और तब इस प्रकार समाप्ति हुई कि वह इधर-उधर गन्दी औरतों में खरीद-फरोख्त करता रहा और वह उन पुरुषों में लिप्त हो गई जो उस मूर्ख से अधिक तेज व अच्छे थे। जब आप एक दूसरे को नहीं पहचानते तो सदैव उसका अन्त वैसा ही होता है। मैं जानती हूँ—यह ठीक है।"

मुफट पीला पड़ गया। उसने संकेत को समझा और छुटकारा पाने को तत्पर हुआ। किन्तु वह कहता चला जाय इसके लिये उसने उसे विवश किया :

"नहीं, अपनी ईर्षा को दबाओ। यदि तुम सब मूर्ख नहीं हो तो तुम लोग अपनी पत्नियों से भी उतने ही अच्छे रहोगे जितने हम लोगों के साथ और यदि वे पत्नियाँ निरी बत्तखें नहीं हैं तो वही कष्ट वे उठावेंगी जो हिलगाने के लिये हम लोग करती हैं। लेकिन तुम सबको वैसा वातावरण बनाता होगा। वहाँ, उसी प्रकार उसे अपने पाइप में रक्खो और धूम्रपान का आनन्द लो।"

'भद्र महिलाओं की बातचीत मत करो", उसने कटुता सहित कहा—"तुम उसके बारे में कुछ नहीं जानतीं।"

यह सुनकर नाना घुटनों के बल खड़ी हो गई।

"हाँ, मैं उनके सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती। किन्तु तुम्हारी वे भद्र-महिलायें भी स्वच्छ नहीं हैं! नहीं, वे निश्चित ही निष्कलंक नहीं हैं। मैं इस बात की चुनौती देती हूँ कि तुम एक भी वैसी तलाश करके लाओ जो वैसा न करे जैसा मैं यहाँ करती हूँ। सचमुच! तुम मुझे हँसा रहे हो, अपनी उन भद्र-महिलाओं को लेकर। मुझे कटु मत बनाओ। मुझे इसके लिये विवश न करो कि मैं वह सब कुछ कह जाऊँ जिसके कहने के अनन्तर मुझे स्वयं ही खेद हो।"

प्रत्युत्तर में काउन्ट ने केवल एक भद्दा शब्द दोनों के बीच में कह डाला। नाना अपने लिये भयकरता से पीली पड़ गई। उसने, एक शब्द भी बिना बोले, उसकी ओर देखा। तब, स्पष्ट शब्दों में उसने प्रश्न किया :

"यदि तुम्हारी पत्नी तुम्हें धोका दे तो तुम क्या करोगे?"

उसने (मुफट ने) धमकाने की सी आकृति बनाली।

और हाँ! सोचो कि मैं तुम्हें धोका दे रही हूँ?"

"ओह! तुम", वह अपने कन्धों को हिलाता हुआ बुदबुदाया।

नाना कुछ घबड़ा नहीं रही थी। पहले शब्दोच्चारण पर ही वह अपनी उस बात को चाह कर भी रोक रही थी कि वह मुँह पर ही उसकी

लम्पटता की बात कह दे। वह सब कुछ सरलतापूर्वक कहना चाहती थी। किन्तु उसने नाना को उत्तेजित कर दिया; अब उसे समाप्त कर देना चाहिये।

"अतएव श्रीमान् !" उसने पुनः प्रारम्भ किया : "तुम शैतान, यहाँ क्या कर रहे हो, मैं नहीं समझती। तुमने कुछ नहीं किया है; दो घंटों से केवल मुझे तंग कर रहे हो और पीड़ा दे रहे हो। अतः जाओ और अपनी पत्नी के पास पहुँचो, जो अपने को, फाचरी के साथ सन्तुष्ट कर रही है। हाँ, मैं क्या कह रही हूँ, यह मैं जानती हूँ। वह 'रूये डि. प्रावेन्स' के कोने में 'रूये टैटब्राउट' में है। तुम देख रहे हो, मैं तुम्हें पत्र दे रही हूँ।"

तब, मुफट को पैरों पर खड़े लड़खड़ाते देखकर, जैसे उस पर कोई भारी आघात पड़ा हो—उसने विजयोल्लसित होते हुए कहा : "आह ! वे तुम्हारी भद्र-महिलायें ! वे सरलता से चल रही हैं। वे अब हमसे भी छेड़छाड़ करती हैं और हमारे चाहने वालों को हमसे छीनती हैं।"

किन्तु अब वह आगे कुछ भी व्यक्त करने में असमर्थ थी। अत्यधिक भावोद्रेक में उसने अपने को भूमि पर पूरी तरह फैला लिया और अपनी एड़ियाँ ऊपर उठाकर अपने को चुप करने के लिये वह अपना मुँह कुचलना चाहती थी। एक क्षण के लिये वह भयातुर हो उठी; किन्तु काउन्ट, जैसे अन्धा और पागल, उसे छोड़ गया और असहाय की भाँति कमरे में भागा। तब एक गहन नीरवता प्रकट हो आई। एक प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व ने उसके व्यक्तित्व को हिला दिया, जिससे नाना के नेत्रों में अश्रु छलक आये। वह खेद प्रकाश करना चाहती थी। अपने को आग के सामने घुमाते हुए, जिससे उसका दाहिना अंग गरम हो जाय उसने उसको सांत्वना देने की चेष्टा की।

"मुझे विश्वास था, प्रिय , कि तुम वह सब जानते हो अन्यथा मैं वह न कहती। तब, जो हो, यह सही नहीं है। मै किसी बात में निश्चित् नहीं हूँ। मैंने साधारणतः सुना भर है। लोग वैसा कहते है। किन्तु उससे क्या होता है, क्या कुछ होता है ? आह ! सचमुच, अब तुम बड़े पागल हो जो वह सब सोचते हो। यदि मैं पुरुष होती तो लेशमात्र भी किसी स्त्री की परवाह

न करनी । स्त्रियाँ, ऊँची या नीची—सब समान हैं। सब खुली हुई मछलियाँ। वह—एक के छः हैं और दूसरे के आधी दर्जन।"

तब वह समान रूप से नारी-मात्र के तिरस्कार पर जुट गई, जिससे वह चोर काउन्ट को हलकेपन से अनुभूत हो। किन्तु काउन्ट ने कुछ सुना नहीं। तब स्थिर होने पर उसने अपने जूते पहने और ओवर-कोट सँभाला। कुछ देर और वह कमरे में रहता रहा। तब अन्तिम आवेश में, जैसे उसे तुरन्त द्वार मिल गया हो, वह चला गया। नाना अत्यधिक खिन्न हो रही थी।

"हः, हा'''हा!" अकेले होते हुए भी वह जोर से चिल्लाई।

"वह विनम्र है, वह है; जब उससे बतराया जाय! और मैं उसे सँभालने की पुनः चेष्टा करती रही। जो हो, मैंने प्रथम प्रहार किया। मैं सोचती हूँ, मैंने क्षमा याचना भी कर ली। इस पर भी, मुझे नाराज करने के लिये उसे रुकना नहीं चाहिये था। तब वह अपने से रुष्ट बनी रही और अपने हाथों से अपने पैरों को खरोंचती रही।

अन्ततः उसने सन्तुष्ट होते हुए बुदबुदाया : "ओह! भाड़ में जाय। यदि वह मूर्ख है तो मै क्या करूँ?"

तब, सब ओर से गरमाहट पाकर वह अग्नि-स्थान से हट आई और अपने बिस्तर पर उछल कर कूद गई—'जो' को पुकारते हुए कि रसोई में प्रतीक्षा करने वाले दूसरे को भेज दे।

बाहर, मुफट लपक रहा था।। बूँदें अभी गिर चुकी थीं। चिकने फुटपाथ पर वह फिसल पड़ा। जब उसने ऊपर देखा तो आकाश में उमड़ते काले बादल चन्द्रमा को घेर रहे थे। उस समय बाउलेवर्ड हाशमैन निस्तब्ध हो रहा था। वह नये ओपेरा-हाउस के गलियारे से होकर जा रहा था। वह परछाई में डूबा हुआ था व स्फुट शब्दोच्चारण करता जाता था।

लड़की ने झूठ बोला है। उसने क्रूरतापूर्वतक मज़ाक की है, उसे गुस्सा दिखाने के लिये। जब वह उसके पैरों के नीचे थी, तब उसे उसका सिर कुचल देना था। वह बड़ा लज्जास्पद है। अब वह उसे न कभी छुयेगा न देखेगा; यदि वह वैसा करेगा तो निश्चित ही एक नीच होगा। और तब अपनी

दृढ़ता पर उसने सन्तोष की सांस ली। आह! वह शैतान नग्न दानवी, वस्त्र की भाँति झुलसती हुई, उस निम्नकोटि के प्रलोभन में घेर ले गई, जिसकी रक्षा उसने विगत चालीस वर्ष से की थी।

चन्द्रमा से, बादल हट गये थे और रिक्त सड़कों पर दूधिया प्रकाश पड़ रहा था। वह डर से घबड़ा रहा था और तब सिसकियों में फूट पड़ा।

"ओह, भगवान!" वह बोला: "सब नष्ट हो गया। कुछ भी शेष नहीं रहा।"

बाउलेवर्ड के निकट देर से जाते हुए कुछ लोग घर की ओर भागने की शीघ्रता कर रहे थे। काउन्ट ने अपने को स्थिर करने की चेष्टा की। छोकरी की कहानी, उसके मस्तिष्क में तीव्रता व अस्थिरता उत्पन्न कर रही थी। उसने शांतिपूर्वक सोचने की चेष्टा की। उसी सुबह, काउन्टेस, मैडम डि. चेजल्स के प्रवास से लौटकर आने को थी। विगत संध्या लौटने में उसे कोई वस्तु नहीं रोक सकती थी न ही उस व्यक्ति के साथ रात्रि व्यतीत करने में। तब उसने लेस फान्डेट में होने वाली कुछ घटनाओं का ध्यान किया। एक रात्रि, उसने पेड़ों के बीच सेबीन को टहलते देखा था और वह तब इतनी रोषपूर्ण होगई थी कि उसने देर तक उसकी किसी बात का उत्तर नहीं दिया। तब वह व्यक्ति वहाँ था। वह अब उसके साथ क्यों नहीं हो सकती? ज्यों-ज्यों वह सोचता जाता था त्यों-त्यों बात जमती जाती थी। उसने तब यह ध्यान कर सन्तोष किया कि वह सर्वथा स्वाभाविक है और किसी प्रकार रोकी नहीं जा सकती।

जब वह एक कामुक स्त्री के यहाँ अपना ओवर-कोट उतार रहा था उसकी पत्नी भी अपने प्रेमी के एकान्त कक्ष में, पलंग के निकट कपड़े उतार रही थी। इससे अधिक सरल और तर्क पूर्ण क्या हो सकता था?

और, जब उसने अपने मन को वैसा सन्तोष दे लिया तो वह शांत हो गया। उसने मांस की निरीह-मूर्खताओं पर एक फिसलन के उद्रेक का सा अनुभव किया, जो उस पर प्रभाव डालकर समस्त संसार को उसके निकट से दूर कर रही थी।

उसकी उद्विग्न कल्पना में वे दृश्य नाच गये। नग्न नाना, उत्तेजित की हुई सेबीन—वह भी नग्न।

इस प्रकाशमय मस्तिष्क के संतोष में दोनों नारियों का समान स्थान, समान विलासिता, लम्पटता एवं असह्य इच्छायें थीं—यह सोचकर काउन्ट जैसे ठोकर खाकर गिरने लगा। निकट से जाती एक गाड़ी ने उसे टक्कर दी; कुछ स्त्रियाँ थीं जो किसी कैफ से निकल कर आ रही थीं जो उससे टकराई और क्रूरतापूर्वक हँसती रहीं: तब पुन: आँसुओं की छलछलाहट में, जिन्हें वह प्रयत्न करके भी नहीं रोक पा रहा था और निकट चलने वालों के समक्ष जोर से सिसकी भी नहीं भरना चाहता था, काउन्ट ने 'राओ रोसनी' की अँधेरी व सूनी सड़क पर चलना प्रारम्भ किया, जहाँ नीरव मकानों के निकट वह बच्चों की भाँति चिल्ला उठा।

"सब समाप्त हो गया", खोखली आवाज में वह कहता गया: "अब कुछ नहीं रहा, कुछ नहीं रहा।"

उसके आँसू इतने भर गये कि वह एक द्वार से टकरा गया क्योंकि वह अपना गीला मुँह अपने हाथों से ढाँपे हुए था। किसी के पद-चापों के शब्द, उनका पीछा करते सुनाई पड़े। वह इतना लज्जामय व भयातुर हो उठा कि उसने सबसे बचकर भागना चाहा जैसे किसी रात्रि में, शिकार की खोज में ढूँढ़ने वाले व्यक्ति की सी उसकी गति हो! जब कभी, सड़क का कोई व्यक्ति उसके निकट से जाता, वह प्रयत्न करके गम्भीर हो जाता जैसे उसका इतिहास उसके पुट्ठों में पढ़ा जा सकता था।

उसने 'रुये डि. लाँ ग्रँग बेटेलियर' का मार्ग समाप्त कर दिया और 'फाबार्ग मान्टमार्टरे' तक पहुँच गया जहाँ की चमकदार रोशनी उसके पग-चिह्नों का पीछा कर रही थी और इस प्रकार लगभग एक घंटे तक वह अँधकार के बीच मँडराता रहा। उसके समक्ष एक ही लक्ष्य था—जिस ओर उसके पैर घुमावदार सड़क के बीच से पहुँच रहे थे, शान्तिपूर्वक। अन्त में एक सड़क के घुमाव पर उसने अपनी आँखें उठाई। वह पहुँच गया था। वह 'रुये टेटबाउट' और 'रुये डि. प्रावेन्स' का कोना था। अपनी उस वेदना-

मिश्रित अस्त-व्यस्तता एवं मानसिक यन्त्रणा में उसे वहाँ पहुँचने में एक घंटा लगा जबकि वह केवल पाँच मिनट में पहुंच सकता था।

एक सुबह, पिछले मास, वह फाचरी को इसलिये धन्यवाद देने गया कि उसने एक 'बॉल' की विज्ञप्ति में उसका नाम भी दिया था। उसका वह स्थान पहली मंजिल पर था जिसमें छोटी चौकोर खिड़कियां थीं जो दूकानों के साइन-बोर्डों से आधी ढकी हुई थीं। आखिरी खिड़की से प्रकाश निखर रहा था जो आधे ढके पर्दों के बीच में से आ रहा था। और तब, अपने नेत्र स्थिर कर उसने उस चमकते प्रकाश को देखा तथा वह अपने में डूबा हुआ, प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

नीले आकाश में चन्द्रमा विलीन हो रहा था, जहाँ से बर्फीली ठण्डी बूँदें टपक रही थीं। ट्रिनटी के गिर्जे में दो के घण्टे बजे। रूये डि. प्रावेन्स एवं रूये डि. टेटबाउट अपने चमकदार प्रकाश सहित पीले धुँए में जैसे दूर होते प्रतीत हुए। मुफट हिला तक नहीं। वही कमरा था। इसने उसे पहचान लिया जो लाली में घिरा हुआ था, जिसके पिछले भाग में लुई-तेरहवें का सोने का कमरा था। सम्भवतः लैम्प मैन्टलपीस के दाहिने था। निःसंदेह वे लोग बिस्तर पर थे क्योंकि स्थिर प्रकाश-रेखा के बीच एक भी परछाई हिल-डुल नहीं रही थी। और, उसने अब भी गौर करते हुए एक युक्ति सोच निकाली।

वह घण्टी देगा और चौकीदार के रहते भी जीने पर चढ़ जायगा और कमरे में फाँद पड़ेगा तथा उनके पलंग पर गिर पड़ेगा। तब वह उनको उतना समय भी न देगा कि वे अपनी भुजायें एक दूसरे से पृथक कर सकें। इस ख्याल ने कि उनके पास कोई शस्त्र नहीं है—उसे किंचित विचलित कर दिया। तब उसने ध्यान किया कि वह उन्हें फाँसी देगा। अब उसने अपनी युक्ति को कार्यान्वित करने का निश्चय कर लिया और निरन्तर किसी संकेत का ध्यान करता रहा। जरा भी किसी स्त्री की परछांई दीख पड़े तो वह घण्टी बजा देगा किन्तु उसका वह विचार अनुचित था, यह ध्यान कर वह सुस्त पड़ गया। वह क्या कह सकता है ? उसके संदेह लौट-आये ! उसकी पत्नी उस व्यक्ति

के साथ नहीं हो सकती । वह विचार बड़ा नाटकीय व असम्भव है। किन्तु फिर भी वह रुका रहा। वह वहाँ केन्द्रित था—अपने एक नितान्त विभ्रम सहित।

वर्षा बढ़ गई। दो पुलिस-अधिकारी निकट आये अतः उसे उस स्थान से हटना पड़ा जहाँ वह टिका हुआ था। जब वे रूये डि. प्रावेन्स के आगे बढ़ गये तो वह पुनः लौट आया। वह भीगा हुआ व कांप रहा था। प्रकाश खिड़की से अब भी आ रहा था। इस बार वह जाने को प्रस्तुत था तभी एक परछांई दिखाई दी। उसकी गति इतनी तीव्र थी कि उसने विचार किया वह भूल कर रहा है। किन्तु एक के बाद दूसरी अनेक परछाइयाँ निकल गई और तब लगा कि कमरे में अच्छी खासी भीड़ है। फुटपाथ के दूसरी ओर पहुंचने पर उसने अपने पेट में असह्य जलन का अनुभव किया। मूर्तियां, हाथ और पैर आये और जाते रहे। एक भारी हाथ, जो पानी का भरा वर्तन थामे हुये था, चमका। वह साफ तौर पर कुछ भी न देख सका। तब उसने ध्यान किया कि वह किसी नारी का सिर और बाल पहचान रहा है। अब उसने अपने मन में तर्क-वितर्क किया कि वह सेबीन के सिर की पोशाक ही है—केवल उसकी गर्दन की मोटाई उससे अधिक प्रतीत हो रही थी। किन्तु क्या निश्चय करे, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसका पेट इतना कष्ट दे रहा था कि उसने एक दरवाजा थाम लिया। किन्तु उस सबके होते हुये भी वह अपनी दृष्टि उस खिड़की से पृथक न कर सका। उसका रोष एक नैतिक पुरुष के रूप में विलीन होता गया। उसने अपने को एक अधिकारी के रूप में देखा।

जैसे वह अपने आफिस में बोल रहा हो, अनैतिकता की छानबीन कर रहा हो, पापाचार के कुफल व्यक्त कर रहा हो और उसने फाचरी के लेख 'जहरीली-मक्खी' के तर्कों को दोहराया और घोषित किया कि इस सेकेंड-इम्पायर में समाज, सभ्यता, रीति-रिवाज, चाल-चलन इस प्रकार नहीं टिक सकते। उसने उसका कुछ भला किया है। परछाइयाँ अब विलीन हो गई थीं। निःसंदेह वे पुनः पलंग पर चले गये हैं। निरन्तर ध्यानस्थ हो वह एकटक देखता रहा।

तीन का घंटा बजा और फिर चार का। वह अपने को वहाँ से हटा न

सका। जब भी पानी की झड़ी लगती वह छाया में जा खड़ा होता और उसके पैरों को उछलती बूंदें भिगोती रहतीं। अब तक कोई पास से नहीं गुजरा था। कभी-कभी प्रकाश की चकाचौंध से उसकी आँखें मुँद जातीं। दो बार फिर परछाइयां प्रकट हुई—उसी प्रकार जाते हुये और पानी का बरतन हाथ में लिये हुये; और प्रत्येक बार वैसे ही शान्ति हो जाती जब कि लैम्प निरन्तर प्रकाश फेंक रहा था। इन परछाइयों से उसमें संदेह बढ़ रहा था। तभी उसके मस्तिष्क में एक नया विचार आया। साधारण रूप में उसे केवल इतनी प्रतीक्षा करनी थी कि वह स्त्री बाहर आवे। वह सेबीन को सरलता से पहचान सकता है। इससे सुगम और क्या हो सकता है। तब वहाँ कोई अनीति भी न होगी, न उसमें संदेह ही शेष रह जावेगा। उसको तो केवल इतना करना था कि वह वहाँ खड़ा रहे।

इतने दीर्घ-कालीन मानसिक-उद्वेलन में वह केवल यही तो चाहता था कि उसे कुछ मालूम हो। अब जब कुछ करने को नहीं रह गया तो द्वार के सामने खड़े-खड़े वह ऊँघने लगा। अपने को जगाये रखने के लिये उसने समय की गणना प्रारम्भ की कि उसे कब तक प्रतीक्षा करनी होगी। सेबीन लगभग नौ बजे तक स्टेशन आवेगी। अभी लगभग साढ़े चार घंटे शेष थे। अभी उसमें पर्याप्त धैर्य था।

अचानक, सामने की बत्ती बुझ गई। केवल यही एक घटना उसमें रोष व उद्विग्नता बढ़ाने के लिये पर्याप्त थी। सम्भवतः अब उन्होंने लैम्प बुझा दिया और वे सोने जा रहे हैं। उस समय वही स्वाभाविक था। अब जब उस खिड़की पर अन्धकार छा गया तो उसका ध्यान भी उधर से हटने लगा; इसी कारण वह उद्विग्न भी होने लगा। उसने लगभग पन्द्रह मिनट और प्रतीक्षा की। तब थकान में उसने द्वार छोड़ दिया और कुछ पग चला। पांच बजे तक वह योंही टहलता रहा। बीच-बीच में वह अपनी दृष्टि ऊपर उठा लेता। खिड़की उसी भयावह स्थिति में थी। अब उसे अमित स्वप्न दीखने प्रारम्भ हो गये कि कहीं खिड़की के उन शीशों में परछाइयां तो इधर-उधर नहीं जा रही हैं। एक बड़ी निराशा उसके मन में जागृत हो रही थी। उस प्रसंग पर वह क्यों

खोपड़ी मार रहा था ? अब जबकि लोग सोने चले गये हैं, उसको तो यही करना चाहिये कि वह उन्हें शान्तिपूर्वक सोने देता और स्वयं वहाँ से जाता। उनके मामलों में वह अपने को क्यों ठूंस रहा था ? वहाँ बड़ा अन्धकार था अतः कोई यह नहीं जान सकता था कि वह वहाँ खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है।

अतएव उसका सम्पूर्ण अन्तर्द्वन्द्व शनैः शनैः क्षीण हो रहा था और वह कहीं अन्यत्र सान्त्वना प्राप्त करने के लिये उद्विग्न हो उठा था। सर्दी बढ़ रही थी व सड़क अब असह्य हो रही थी। कुछ इधर-उधर हिल-डुल कर अन्त में वह बाउलेवर्ड की ओर बढ़ गया और फिर नहीं लौटा।

वह शान्तिपूर्वक सड़क पर जा रहा था।

अन्त में दिन निकल आया। उस सर्दी की रात्रि के अनन्तर का प्रभात बहुत मंद था जो पेरिस के उस धूल-धूसरित फुटपाथों पर एक उदासी खोज रहा था। मुफट पुनः न्यू ओपेरा हाउस के इर्द-गिर्द वाली चौड़ी सड़क पर चल रहा था। वर्षा से भीगी हुई और भारी गाड़ियों से रौंदी हुई वह सफेद मिट्टी सड़क पर एक दलदल की झील जैसी दिख रही थी, और बिना यह ध्यान किये कि वह कहाँ चल रहा है, फिसलते हुये भी वह चलता चला जा रहा था।

पेरिस के उस जागरण में मेहतर व काम करने वाले मजदूर निकल आये थे जिन्होंने उसके मस्तिष्क में एक नई उलझन उत्पन्न कर दी थी कि दिन निकल आया है। उसने आश्चर्य से देखा कि उसके कपड़े धूल में भरे हुये हैं तथा उसका हैट पानी से भीग रहा है। थोड़ी देर वह एक स्थान पर टिका। अब केवल एक ही विचार उसके मस्तिष्क में था कि वह अत्यधिक व्यथित है।

अब उसे भगवान का स्मरण हो आया। ईश्वरीय सहायता का अनायास ध्यान जो मनुष्येतर सन्तोप था व जिसने उसे विस्मित कर दिया, बड़ा आश्चर्यजनक व अप्रत्याशित था। उसके मस्तिष्क में मोशियो वेनट का चित्र नाच गया। उसके स्थूल शरीर व गिरे हुये दाँत, उसे आकर्षित किये रहे। निश्चित ही महीनों से वह मोशियो वेनट के यहाँ नहीं आया है और इस समय यदि वह उसका द्वार खटखटायेगा और उसके वक्ष पर सिर रख कर रोयेगा तो वह अत्यधिक प्रसन्न होगा। अन्य अवसरों पर भगवान ने उस पर सदैव

ही कृपा की है। किंचित भी दुःख में अथवा जीवन की छोटी सी भी कठिनाई के समय वह सदैव एक गिर्जे में गया है और झुकने पर तथा उस अनादि शक्ति के सम्मुख विनम्र होने पर वह वहाँ से विजयी होकर लौटा है और उसने जीवन के माधुर्य को पाया है केवल एकमात्र चाहना सहित कि उसकी आत्मा उस परम तत्व में विलीन हो जावे किन्तु अब वह अस्थिर रूप में नर्क के भय सहित प्रार्थना कर रहा था। उसने एक भारी पाप को अपने अन्दर स्थान दे डाला था। नाना ने उसके कर्त्तव्यों को झकझोर डाला था और तब ईश्वर का स्मरण उसमें चमत्कार उत्पन्न कर रहा था। उसने सर्वप्रथम ही उस सर्वशक्तिमान का ध्यान क्यों नहीं किया, उस डरावने संघर्ष के समय जबकि उसकी मनुष्यता नष्ट हो रही थी।

तब कांपते पैरों, वह गिर्जाघर गया। उसे कुछ भी याद न था। सुबह के घंटे सड़कों में परिवर्तन ला रहे थे। ज्योंही वह रूये डि. ला. चेजी डि. एन्टीन के कोने पर घूमा उसने दूर उस कोहरे में ट्रिनटी के गिर्जे की गुम्बद देखी। वे धवल मूर्तियां उस खुले बगीचे में अनेक चमकते वीनस की सी प्रतीत हो रही थीं जो पार्क की गिरी हुई पीली पत्तियों के बीच दिखाई दे रही थी। बरामदे के नीचे उसने एक क्षण रुक कर सांस ली क्योंकि ऊँची सीढ़ियों पर चढ़कर वह थक सा रहा था। तब उसने प्रवेश किया। गिर्जा अत्यधिक ठंडा हो रहा था। उसकी ऊँची मीनारें कोहरे से ढकी हुई थीं जो शीशे की खिड़कियों के झरोखों से छन कर आ रहा था। नीचे के हिस्से में एक परछांई पड़ रही थी। उस गिर्जे के पदाधिकारी को छोड़कर वहाँ एक भी व्यक्ति नहीं था। वह भी उस हलके अँधेरे में अपने पैरों को; जागरण की उस तीक्ष्णता में, पत्थर पर टेक रहा था।

मुफट, अनेक कुर्सियों पर झांक आने के अनन्तर खोया-खोया सा, फूट पड़ने को भरा हृदय लिये, घुटनों के बल टिक गया। उसके सामने छोटे से पार्श्व-गिर्जे की रेलिंग थी जो पवित्र-जल के सामने थी। उसने अपने हाथ जोड़ लिये और वह कोई ऐसी प्रार्थना टटोलने लगा जिसमें वह अपनी समस्त आत्मा समर्पित कर सके किन्तु केवल उसके ओठ ही कुछ बुदबुदा सके। उसका

मस्तिष्क, बाहर कहीं अन्यत्र था जो सड़कों पर दौड़ रहा था, बिना रुके जैसे बड़ी भारी आवश्यक विवशता हो। तब वह दोहराता रहा—

"हे परमात्मा! मेरी रक्षा करो। अपने इस कीड़े को मत भूलो, जिसने तुम्हारे न्याय का त्याग कर दिया है। ओ दयावान् पिता! मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ। क्या तुम अपने शत्रुओं के हाथों मुझे पिस जाने दोगे?"

कहीं कोई उत्तर न था। एक परछांई और शीत उसके कन्धों पर लदा था। गिर्जे के पदाधिकारी के चलने की पगध्वनि दूर से आ रही थी जो उसे प्रार्थना करने में बाधा उत्पन्न कर रही थी। उसने शून्य का शब्द सुना किन्तु वह चिड़चिड़ाहट-भरी सांय-सांय उस एकान्त गिर्जे से नष्ट नहीं हुई थी। न ही प्रभात की अर्चना ही की गई थी। तब एक कुर्सी को पकड़कर उसने अपने को चटखते घुटनों के साथ उठाया। भगवान अभी आया नहीं है। वह मोशियो वेनट के वक्ष से लगकर क्यों रोवे? वह आदमी कुछ नहीं कर सकता।

तब वह यन्त्रवत नाना तक पहुँच गया। बाहर फिसलने पर उसके नेत्रों में अश्रु छलक आये—भाग्य के प्रति रोष में नहीं अपितु अपने को निर्बल और रुग्ण मानकर। वह सचमुच बहुत थक रहा था। वह वर्षा में बहुत समय तक रहा था और अत्यधिक शीत का अनुभव कर रहा था। रूये मिरोमेसनिल में अपने घर जाने के ध्यान मात्र से वह सुन्न हो रहा था। नाना के यहाँ को जाने वाले मार्ग का द्वार नहीं खुला था। जब तक कि भारवाहक न आवे उसे प्रतीक्षा करनी थी। जब वह ऊपर चढ़ा तो मुस्कराया और उस घोंसले को देखकर प्रसन्न होता रहा कि अन्त में वह पैर फैलाकर सो सकेगा।

उधर जब जो ने उस आगन्तुक को देखा तो उसने विस्मय व उलझन का अनुभव किया। मैडम तीव्र सिर-दर्द के कारण, समस्त रात्रि सोई नहीं हैं। जो हो, वह जावेगी और देखेगी कि वह सो तो नहीं गई है? तब वह सोने के कमरे में गई और आगन्तुक ड्राइङ्ग-रूम के एक सोफे पर पड़ रहा। किन्तु नाना तुरन्त प्रकट हुई। वह तुरन्त बिस्तर से कूदी और पेटीकोट पहनने में कम से कम समय लगाते हुये, नंगे पैरों उसने वहाँ प्रवेश किया।

उसके बाल उसके कन्धों पर झूम रहे थे। उसकी रात्रि-पोशाक रात्रि के प्यार की अस्त-व्यस्तता में दबी हुई थी व फट गई थी।

"क्या ! तुम यहाँ फिर !" भावोद्रेक में लाल होते हुये वह चीखी। रोप के आधिक्य में वह स्वयं उसे बाहर निकाल आना चाहती थी किन्तु उसे उसकी निरीहावस्था में देखकर वह एक बार फिर दयार्द्र हो गई।

"हाँ, मेरे दुर्बल साथी ! तुम सचमुच विचित्र उलझन में हो", उसने अधिक मधुर शब्दों में व्यक्त किया : 'तुमको क्या हुआ है ? आह ! तुम उनको देखते रहे हो। तुमने अच्छा समय व्यतीत किया होगा ?"

उसने कुछ नहीं कहा। वह जैसे एक सुप्त पड़ा हुआ साँड़ हो। किन्तु उसने (नाना ने) समझा कि उसके पास कोई प्रमाण नहीं जुट पाये हैं। अतः उसको व्यवस्थित करते हुये उसने जोड़ दिया—

"सुनो वह मेरी भूल थी। तुम्हारी पत्नी ठीक है। मेरे शब्दों में वह ठीक है। अब, मेरे बच्चे ! घर जाकर सोओ। तुमको नींद सता रही है।"

वह हिला नहीं।

"जाओ ! चलो, घर जाओ। मैं तुमको इस समय नहीं रोक सकती। मेरा ख्याल है, तुम भी दिन के समय नहीं रुकना चाहोगे।"

"हाँ, हमें सोना चाहिये", वह बुदबुदाया।

नाना ने भीषण प्रतिक्रिया को रोका। वह तीव्रता से धैर्य खोती जा रही थी। क्या वह पागल होगया है।

"जाओ !" नाना ने पुनः दोहराया।

"नहीं।"

तब पूर्णतः उत्तेजित होकर नाना विरोध कर उठी :

"किन्तु, यह अनुचित है ! मेरी बात समझ लो। मैं तुम्हारे प्रति पूर्णतः उदार हूँ। जाओ, और अपनी पत्नी की खोज करो जो तुम्हें मूर्ख बना रही है। हाँ, वह तुम्हारा परिहास कर रही है। मैं अब तुमसे कहती हूँ। वहाँ जो तुम चाहते थे, वह मिला ? अब तुम मुझे छोड़ोगे या नहीं ?"

मुफट के नेत्र आँसुओं में भर गये। उसने अपने हाथ भींच लिये।

नाना कठिनाई से सोच पाई कि वह क्या कर रही है क्योंकि उसमें निर्बल सिसकियाँ भर रही थीं । यह अत्यधिक था । क्या उन बातों से उसका कोई प्रयोजन है ? उसने उसको बताने में समस्त सावधानी से कार्य किया है, जिससे उसकी भावनाओं को चोट न पहुंचे; किन्तु अब उसे टूटे काँच का मूल्य चुकाना होगा ? ओह ! नहीं ! यदि तुम्हें प्रसन्नता हो तो ! वह भले स्वभाव की थी किन्तु किसी सीमा तक ।

"कुत्सित ! बहुत हो चुका !" उसने ललकारा और अपनी मुट्ठी से फर्नीचर पर चोट दी । आह ! देखो ! मैं, जिसने विश्वास की प्रत्येक चेष्टा की ! क्यों, मेरे भूले दोस्त ! मैं कल जितनी, चाँद जैसी, कभी नहीं हुई । मैं कल ही अमीर बन सकती हूँ'''यदि मैं केवल एक शब्द कह दूँ ।"

मुफट ने आश्चर्य में अपना सिर ऊपर उठाया । उसने पैसे के मामले में तो कभी सोचा ही न था । यदि वह वैसी इच्छा व्यक्त करे, तो मुफट उसे पल मात्र में पूरा कर सकता है । उसका समस्त सौभाग्य नाना का था ।

"नहीं, अब बहुत देर होगई", उसने तीव्र होकर उत्तर दिया : "मैं उन लोगों को पसन्द करती हूँ जो बिना कहे देते हैं । नहीं, यदि तुम एक आलिंगन का दस लाख भी देते तो मैं मना कर देती । वह अब बीत चुका है । उस स्थान पर मैं ऊँची हूँ । अब जाओ, अन्यथा मैं अपने आप को कुछ उत्तर न दूँगी । मैं कुछ भयानक कर बैठूँगी ।"

और नाना—मुफट की ओर धमकी देते हुए आगे बढ़ी । किन्तु एक कोमल हृदय वाली लड़की के सदृश उत्तेजना अपनी चरम स्थिति पर पहुँच गई और उसमें अपने स्वत्व एवं विशेषता-अनुभव के भाव उमड़ पड़े जो उन समर्थ पुरुषों के ऊपर आच्छादित थे जो उसको तंग करते थे । तभी अनायास द्वार खुला और स्टेनियर प्रकट हुआ । वह दूसरा भुक्खड़ था । तब नाना ने भयानक चीख मारी :

"हल्लो ! यहाँ; यह दूसरा आया ।"

नाना के शोर से स्टेनियर स्तम्भित होकर खड़ा रह गया । मुफट की अप्रत्याशित उपस्थिति से वह रुष्ट हो गया था क्योंकि उसे एक जवाबदेही का

भय था, जिससे पिछले तीन मास से वह अपने को पृथक किये हुए था। अपनी आँखें मिचका कर उसने रूप बदला और उलझन में, काउन्ट को बिना देखे कठिनाई से श्वांस घसीटता रहा। उसका चेहरा लाल हो रहा था और एक ऐसे व्यक्ति की बिगड़ी आकृति व्यक्त कर रहा था, जो गया तो हो कुछ अच्छे समाचार लेने किन्तु पेरिस में, किसी कठिनाई में फँस गया हो।

"तुम क्या चाहते हो—तुम, हाँ ?" नाना ने काउन्ट की उपस्थिति में बड़े अपनेपन से प्रश्न किया।

"मैं—मैं—", वह लड़खड़ाया : "मैं लाया हूँ—तुम जानती हो क्या ?"

"क्या है वह ?"

वह हिचकिचाया। दो दिन पूर्व नाना ने उससे कहा था कि अब एक हजार फ्रैंक बिना लिये वह उसके यहाँ शकल न दिखावे क्योंकि उसे एक बिल का भुगतान करना था। दो दिन तक वह रुपयों की तलाश करता रहा तब उस सुबह ही वह उस धन-राशि को प्राप्त करने में सफल हुआ था।

"एक हजार फ्रैंक", एक लिफाफे को जेब से निकालते हुए उसने कहा।

नाना वह सब भूल गई थी।

"एक हजार फ्रैंक", वह चिल्लाई : "क्या मैं कोई भीख माँग रही हूँ ? इधर देखो ! मैं तुम्हारे एक हजार फ्रैंक का क्या करती हूँ ?"

और लिफाफा लेकर उसने उसके मुँह पर दे मारा। एक बुद्धिमान 'ज्यू' की भाँति, उसने कष्ट-सहित लिफाफा उठा लिया। उसने उस स्त्री पर एक मूर्छित-सी दृष्टि केन्द्रित की। मुफट ने भी उसके साथ सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि का आदान-प्रदान किया जब कि नाना ने जोर से चिल्लाने की सी तत्परता में अपने हाथ कूल्हों पर टिका लिये।

"मैं कहती हूँ, मुझे तुम भलीभाँति अपमानित कर चुके या अभी कुछ और शेष है ? जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है, मेरे दोस्त ! मैं प्रसन्न हूँ कि तुम भी आगये। अब मैं तुम्हें सीधे २ निकाल सकती हूँ। अतः अब चले जाओ।"

किन्तु जब यह दिखाई दिया कि उन लोगों को जाने की कोई जल्दी

नहीं है और वे पक्षाघात की सी स्थिति में ज्यों के त्यों खड़े हैं तो वह कहती गई : "क्या ! तुम कहना चाहते हो कि मैं मूर्ख हूँ ? यह सम्भव है ! किन्तु तुमने मुझे बहुत सताया है और बहुत हो चुका। फैशनेबुल अस्तित्व का भी पर्याप्त आनन्द हो चुका। अब यदि मैं उफन पड़ूँ तो यह मेरी मर्जी है।"

"एक—दो—तुम जाने से मना करते हो ? ठीक है, तो इधर देखो। मेरा एक मित्र है।"

एक वेग के साथ उसने (नाना ने) अनायास सोने के कमरे का द्वार पूरा खोल दिया। तब दो आदमियों ने एक अस्त-व्यस्त बिस्तर पर फान्टन को देखा। फान्टन को अपने प्रदर्शन का वैसा ध्यान कदापि न था। किन्तु उसे कोई झिझक भी नहीं हुई क्योंकि वह रंगशाला के वैसे दृश्यों से परिचित था। जब पहला झटका समाप्त होगया तो जैसे युद्ध जीतने में सम्मानित हुए हों—वैसी भंगिमा उसने बना ली। जैसा वह कहता था—उसने चूहा बनकर दिखाया। उसने अपना मुँह खोल दिया, नाक घुमाता रहा और साथ ही अपने चेहरे के समस्त अङ्गों को चलाता रहा। उसका सिर—जो एक व्यभिचारी, सींगों वाली राक्षसी का सा था, प्रत्येक भाग से निम्नता प्रकट कर रहा था। वह फान्टन था जिसे नाना ने नारी-आसक्ति के पागलपन में असुन्दर-हास्य अभिनेता के उदास चेहरे-सहित ढूँढ़ा था और वह एक सप्ताह से नित्य रात्रि को वेराइटी थियेटर से आती थी।

"वहाँ !" उसकी ओर संकेत करते हुए बीभत्स आकृति में नाना चिल्लाई।

मुफट ने, जो किसी भी परिस्थिति के लिये तत्पर था, गहराई से उस तिरस्कार का विरोध किया।

"वेश्या !" वह चीखा।

किन्तु नाना, जो अब तक सोने के कमरे में जा चुकी थी, अन्तिम वाक्य कहने को लौट आई।

"वेश्या ! हाँ, सचमुच ! और तुम्हारी बीबी क्या है ?"

तब, अपनी एड़ियों पर मुड़ते हुए उसने अपने पीछे जोर से द्वार बन्द

कर लिया और चटखनी लगा ली । अब रह गये दोनों व्यक्ति, शान्त होकर एक दूसरे को देखते रहे । तब 'जो' ने कमरे में प्रवेश किया । उसने उनके साथ शीघ्रता नहीं की अपितु समझदारी से बात करती रही । एक बुद्धिमान की भाँति उसने सोचा कि मैडम ने बड़ी मूर्खता का व्यवहार किया है । जो हो, उसने अपना कार्य पूरा किया । उसकी स्वेच्छाचारिता की वह सनक अधिक देर नहीं रहेगी । उन्हें केवल इतना करना है कि उसके (नाना के) शान्त होने तक वे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करें ।

तब वे दोनों चले आये । उन दोनों ने एक शब्द भी नहीं कहा । बाहर फुटपाथ पर—अपनेपन की भावना सहित, उन दोनों ने शान्तिपूर्वक हाथ मिलाये और एक दूसरे के सामने अपनी-अपनी पीठ मोड़कर—पैर बढ़ाते हुए दोनों विपरीत दिशाओं को चले गये ।

जब मुफट—'रूये मिरोमेसनिल' में अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी तत्काल ही पहुंची थी । वे दोनों उस चौड़े जीने पर मिले जिसकी काली दीवालें बर्फीली सर्दी को चारों ओर से घेरे हुए थीं । अपने नेत्र ऊपर उठाकर दोनों ने एक दूसरे को देखा । काउन्ट अब भी अपने मैले कपड़ों में था और उसकी आकृति ऐसी डरावनी थी जैसे कोई मनुष्य पाप किये चला आ रहा हो । काउन्टेस धुँधली आँखों में, उलझे बालों में तथा रात्रि को ट्रेन में व्यतीत करने से प्राप्त थकान की पूर्णतः निर्बलता में, कठिनाई से जागते रहने की सामर्थ्य से रहित, प्रतीत हो रही थी ।

८.

वह रूये वेरन में मान्टमेट्रे पर था, जो एक छोटे मकान में चौथी मंजिल पर था। नाना तथा फान्टन ने अपनी बारहवीं-नाइट-केक के अवसर पर कुछ मित्रों को निमन्त्रित किया था। वे केवल तीन दिन पूर्व ही वहाँ टिके थे व मकान को व्यवस्थित करना चाहते थे।

सुहागरात की पहली झोंक में बड़ी शीघ्रता में वह सब इन्तजाम किया गया था क्योंकि दोनों का एक साथ रहने का वहाँ कोई इरादा नहीं था। उस अन्तिम उपद्रव के पश्चात् ही दूसरे दिन यह हुआ जब उसने काउन्ट को तथा बैंकर को विजयोन्माद-सहित खड़े-खड़े निकाल दिया था। नाना ने ध्यान किया कि वह एक अच्छे झंझट में फँस गई है। उसने अपनी स्थिति का अवलोकन किया। लेनदार उसके एन्टीरूम में भीड़ इकट्ठा करेंगे और उसके प्रेम-व्यवहारों में बाधा पहुँचायेंगे। यदि उसने उन्हें ठीक प्रकार से न सँभाला तो वे उसे बेच ही डालेंगे। निरन्तर झगड़े व चिन्ता बनी रहेगी—केवल उस थोड़े से फर्नीचर के लिये। सब चला जाय, उसने सोचा, यह अधिक उत्तम है। इसके अतिरिक्त बाउलेवर्ड हाशमैन, उसको किंचित् भी नहीं भा रहा था।

फान्टन के प्रति अपनी उत्तेजना में उसने अपने बालपन के लौट आने का सा अनुभव किया जबकि वह एक नकली फूल बनाने वाले के यहाँ सीखा करती थी और उस समय केवल एक अच्छे कमरे के अतिरिक्त कुछ भी इच्छा नहीं रखती थी, जिसमें लाल इबोनी की लकड़ी की एक बड़ी आल्मारी, काँच लगी हुई हो तथा एक पलंग हो, नीले महीन रंग के पर्दे टंगे हों। जो कुछ भी दो दिन में वह आसानी से बचाकर ला सकती थी, उसने वे सब

वस्तुएँ लाकर बेच दीं, जैसे छोटी-छोटी चीजें, जवाहरात इत्यादि। अपने मकान मालिक को बिना बताये या अपना एक भी चिह्न छोड़े बिना, वह लगलग दस हजार फ्रैंक लेकर गायब हो गई। अब उसके कपड़ों के पीछे भागने वाला तो कोई न था? फान्टन बड़ा सलोना था। उसने 'न' नहीं किया और उसने जो सुगमता से चाहा, करती रही। सचमुच उसने एक प्रकार से एक ठीक साथी का सा व्यवहार किया। उसके पास सात हजार फ्रैंक थे, जिन्हें उसने नाना के दस हजार के साथ मिला दिया जबकि यह प्रसिद्ध था कि वह बहुत कृपण है। एक अच्छी गृहस्थी चलाने के लिये उतना धन पर्याप्त था। उस मिले हुए धन से उसने रूये वेरन के दो कमरों को, जैसे भी ठीक समझा, सजाया। प्रारम्भ में इस प्रकार का जीवन बड़ा रुचिकर होता है।

बारहवीं रात को, मैडम लेराट पहली थी, जो आई। उनके साथ लुई था। चूँकि फान्टन तब तक नहीं आया था इसलिये उसने अपने अनुभव से सम्भावित भय, नाना को व्यक्त कर दिये क्योंकि वह अपनी भतीजी को बड़े ठाठ से देखना चाहती थी।

"ओह! चची! मैं उसे बहुत प्यार करती हूँ।" अपने हाथ वक्ष पर सुन्दरता से पसारते हुए नाना चिल्लाई।

इन शब्दों से मैडम लेराट पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उनकी आँखें भर आईं।

"वह ठीक है! सब बातों के पहले प्रेम", उन्होंने सन्तोप की मुद्रा में कहा।

और उसने कमरों की सुन्दरता की प्रशंसा की। नाना ने सोने का कमरा, खाने का तथा रसोईघर—सब कुछ उसे दिखाया। वे अधिक बड़े नहीं हैं फिर भी नये रंगे हुए हैं और उनमें नये कागज मढ़े गये हैं और वहाँ सूर्य बड़ी तेजी से चमकता है। तब मैडम लेराट ने उस नौजवान स्त्री को सोने के कमरे में रक्खा जबकि छोटा लुई रसोई में गया और उस नौकरानी को एक मुर्गी का बच्चा पकाते हुए देखता रहा।

'जो' की अपनी पृथक व्यवस्था थी। बाउलेवर्ड हाशमैन की समाप्ति के

समय उसने लेनदारों से मोर्चा लिया और ठाठ से निकल आई—वहाँ से सब चीजें निकालते हुए व प्रत्येक से, जो पूछता, यह कहते हुए कि मैडम कहीं यात्रा करने जा रही हैं। किसी को भी उसने उसका पता नहीं दिया और पीछा किये जाने के भय से वह मैडम के पास किसी बात को पूछने भी नहीं गई।

जो हो, उस दिन प्रातःकाल मस्तिष्क में एक नये विचार सहित वह मैडम लेराट के यहाँ गई। एक दिन पहले तमाम लेनदार—बिसाती, कोयले वाला, आटे वाला प्रत्येक वहाँ आये और उन्होंने मैडम को समय देने की बात कही। यहाँ तक कि वे उल्टा बहुत सा रुपया मैडम को उधार दे सकते हैं यदि वह अपने पुराने मकान में चली जाय और समझ से काम ले। चाची ने 'जो' के ही शब्दों में नाना को बता दिया। यह निश्चित था कि उस सब के पीछे कोई न कोई व्यक्ति अवश्य था।

"कभी नहीं।" नाना ने बिगड़ते हुये कहा—"वे सब बड़े नीच हैं। वे व्यापारी ! क्या वे समझते हैं कि मैं केवल इसलिये उनके हाथों बिक सकती हूँ कि मेरे बिलों का भुगतान हो जावेगा ? सुनो, मैं फान्टन को धोका देने की अपेक्षा अब भूख से मर जाना अधिक अच्छा समझूँगी।"

"यही मैंने भी जवाब दिया", मैडम लेराट बोली : "मैंने उससे कहा कि क्या तुम व तुम्हारा मन जो कुछ कहे वैसा नहीं करोगी ?"

जो हो, नाना को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि लॉ मिगनट बिक गया है और लेबार्डेट ने केरोलीन हेकेट के लिये वह बहुत कम मूल्य में खरीद लिया है। इस जालसाजी से उसमें क्रोध भर आया। सड़क पर टहलने वालों से अधिक वे और हैं क्या—हाँ हवाबाजी बहुत है। आह ! हाँ ! लेकिन उस सारे दल से तो वह अकेली ही कुछ अच्छी है।"

"वे हँसेंगे", उसने कहा—"पैसे से किसी को वास्तविक आनन्द नहीं मिलता है। और चची, मैं सच कहती हूँ, मैं यह भी नहीं जानती कि इन लोगों का अस्तित्व ही क्या है ? मैं उन्हें कुछ समझाऊँ इससे मुझे बड़ा सुख मिलेगा।"

तब मैडम मैलोर अपने उस भारी टोपसहित आईं जिसके बनाने का विज्ञान उनका अपना ही था। वह बड़ी सुखद भेंट थी। मैडम मैलोर ने कहा कि वह बड़ा अच्छा है और बिजिक खेलने अब वे कभी-कभी आ सकती हैं। दो बार वे उस मकान में गईं और उस नौकरानी के सामने ही नाना ने कहा कि घर का काम वह स्वयं करेगी क्योंकि नौकर न रखने से अच्छी बचत हो सकती है। वहीं नन्हा लुई बैठा मुर्गी के बच्चे को पकते देख रहा था। तभी वहाँ कुछ शब्द सुनाई दिये। यह फान्टन था जिसके साथ में बास्क व प्रुलियर थे।

खाना तुरन्त परोसा जा सकता था जबकि सूप मेज पर पहुँच चुका था और नाना ने तीसरी बार अपने अतिथियों को मकान दिखाया।

"आह! बच्चो! कितने आराम से रहोगे तुम लोग यहाँ?" बास्क कहता रहा—केवल भोजन पर आये अतिथियों को प्रसन्न करने के लिये। यों वह उसे एक घोंसला ही बताता रहता था। सोने के कमरे को देखकर तारीफ के शब्द वह कठिनाई से ढूँढ़ सका। वैसे वह स्त्रियों को पशुओं से अधिक नहीं समझता था और यह कि उस प्रकार की गन्दी औरतों को लेकर कोई भी केवल कष्ट ही मोल लेगा किंतु वह एक ऐसा नशा है कि उससे सारा संसार घिरा हुआ है।

"आह! सौभाग्यशाली!" कहते हुए उसने अपनी आँख मिचका ली: "सब ठीक है! बहुत सुन्दर है! हम लोग हमेशा आवेंगे।"

किन्तु जैसे ही नन्हा लुई एक ब्रुस के हैण्डल पर चढ़े हुए, कमरे में उछला तो प्रलियर बोल पड़ा: "क्या? इतना बड़ा बच्चा तुम्हारे पहले से ही है?"

उन्होंने वह सब बड़ा सुखद समझा। मैडम लेराट तथा मैडम मैलोर तो हँसने में गिरते-गिरते बचीं। नाना ने उनका बुरा नहीं माना और हँसी में कहती रहीं कि दुर्भाग्यवश वैसा नहीं है। वह तो उन नन्हों व अपने लिये वैसा चाह सकती है किन्तु वे सब एक से ही होंगे। फान्टन ने सहृदय व्यक्ति की भाँति नन्हे लुई को हाथों में उठा लिया और उससे खेलते हुए बोला:

"सब ठीक है। तुम अपने पापा को प्यार करते हो न? मुझे पापा कहो, छोटे बन्दर!"

"पापा –पापा", छोटा बच्चा तुतलाता रहा।

प्रत्येक ने उसे प्यार किया और दुलराया। बारुत ने सर्वाधिक अरुचि दिखाते हुए कहा कि अब भोजन प्रारम्भ होना चाहिये क्योंकि उसी के लिये हम सब जीवित हैं। खाना बड़ा रुचिकर था। बास्क को बड़ी कठिनाई हो रही थी क्योंकि छोटा बच्चा उसके निकट ही बैठा था और तब उसके हमले से उसे अपनी प्लेटें बचानी पड़ती थीं।

नाना बड़ी प्रसन्न थी और प्यार में भर रही थी। वह कौमार्य के गुलाब सी खिल रही थी। उसमें मीठी मुस्कानें व आकर्षक दृष्टियाँ उभर रही थीं। उसके नेत्र फान्टन पर स्थिर थे और वह उसे हर प्रकार के मीठे नामों से पुकारती थी—डकी, डार्लिंग, चेरब और जब कभी वह उसे कोई चीज देता—पानी या नमक, तो वह आगे बढ़कर उसे चूम लेती—उसी स्थान पर जो उसके ओठों के सामने आ जाता—आँख, नाक या कान। यदि यह औरों को अप्रीतिकर अनुभव होता तो वह चुपचाप अपने स्थान पर उस बिल्ली की भाँति दुबक कर बैठ जाती जो अभी-अभी भगाई गई हो। मेज के नीचे फान्टन का हाथ लेकर वह दुलराती रही। वह उसके शरीर का कोई न कोई भाग अवश्य छूती रही।

फान्टन अत्यधिक गर्व-सहित बैठा रहा। उसकी बड़ी नाक कामवासना की सिहरन-सहित काँपती रही। उसकी बकरी की सी आकृति—राक्षसी व बदसूरत, उस सुन्दर, श्वेत और मांसल लड़की की रुचि और प्रशंसा को व्यक्त कर रही थी। अनेक बार वह उसके चुम्बनों का उत्तर देता।

"इधर देखो! तुम दोनों असह्य हो रहे हो। यदि ऐसा ही करना है तो कहीं अलग चले जाओ", प्रुलियर ने अन्त में कहा।

और उसने फान्टन को उसके स्थान से हटा दिया; साथ ही उसके प्लेट व गिलास भी बदल कर वह नाना के निकट आ बैठा। इससे न जाने कितनी हँसी हुई, कैसे-कैसे सम्बोधन प्रकट हुए और कुछ तो भद्दे शब्द भी व्यवहृत हुए। फान्टन ने जैसे बड़े दुःख का बहाना किया और अपनी मसखरे की सी मुद्रा बनाकर वीनस की चाह में वल्कन जैसा बन गया। प्रुलियर तुरन्त गम्भीर

हो गया और नाना ने मेज के नीचे उसे एक ठोकर दी तब वह सीधा हो गया क्योंकि उसने उसके पैर को दबाना चाहा था। नहीं, उसके साथ उसे निश्चित कुछ नहीं करना है। एक महीने पहले, उसके भारी सिर के कारण नाना का कुछ आकर्षण हुआ था किन्तु अब वह समाप्त हो गया था। अब यदि 'नेपकीन' उठाने के बहाने फिर उसने उसको छेड़ा तो वह पानी का भरा गिलास उसके मुँह पर दे मारेगी।

सब ठीक चलता रहा। वे सब वैराइटी थियेटर की बातचीत करते रहे। वह शैतान बार्डनोब, मालूम होता है, कभी नहीं मरेगा। उसकी गन्दी बीमारियाँ फिर फैल रही हैं। वह एक ऐसी स्थिति में है कि शायद ही कोई उसे भला कहे। एक दिन पहले—सारे रिहर्सल, वह साइमन को तंग करता रहा; कोई भी तो उसे सम्मानित नहीं करता है। नाना ने कहा कि यदि अब आगे उसे वह कोई भूमिका देगा तो वह उसे शैतान के यहाँ भेज देगी। इसके अतिरिक्त उसने कहा कि वह अब आगे स्टेज पर जाने की सोच भी नहीं रही है। थियेटर से तो वह घर पर रहना अधिक पसन्द करेगी। फान्टन का भी उस चलने वाले खेल में कोई काम नहीं था अतः उसने भी कहा कि वह स्वतन्त्रता का सुख लेगा और अपनी सुहावनी संध्या, प्रतिदिन अपनी डार्लिंग के साथ व्यतीत करेगा और यह कहते हुए अग्नि के सामने उसने अपने पैर फैला दिये। औरों ने उसके सौभाग्य पर ईर्षा करने का सा अभिनय किया।

तब उन्होंने बारहवीं नाइट-केक काटी। टुकड़े मैडम लेराट पर गिरे, जिसे उसने तुरन्त बास्क के गिलास में डाल दिया। तब वे सब चिल्लाये: "बादशाह पीता है—बादशाह पीता है··· !" नाना ने उस आनन्द के स्रोत में अवसर पाकर फान्टन के गले में हाथ डालकर उसे चूम लिया और उसके कान में कुछ कहा। किन्तु प्रुलियर ने जब देखा कि उसकी अच्छी सूरत और मुस्कराहट की कोई प्रशंसा नहीं कर रहा है तो वह चिल्लाया कि वह सब ठीक नहीं है। नन्हा लुई दो कुर्सियों पर सुला दिया गया। पार्टी एक बजे तक चलती रही और तब 'शुभ-रात्रि' कहकर सब सीढ़ियों से उतर गये।

और तीन सप्ताह तक उन प्रेमियों का जीवन बड़ा सुखद बीता।

नाना ने पुनः एक बार अपने जीवन की यथार्थता का अनुभव किया और अपनी पहली रेशमी पोशाक पर बहुत प्रसन्न हुई। वह थोड़े समय के लिये शान्ति और एकान्त में चली गई। एक दिन प्रातः काल जब वह कुछ मछलियाँ खरीदने 'रोचेफाउकाल्ड' के बाजार में गई तो आमने-सामने उसका हेयर-ड्रैसर फ्रान्सिस उसे मिल गया। वह बहुत अच्छी पोशाक में था, साफ धुली हुई लिनेन और सुन्दर ओवरकोट। उसको देखकर नाना अत्यधिक लज्जित हुई, इस प्रकार सुबह सड़क पर उसके द्वारा देखे जाने के कारण, वह भी एक गन्दे सुबह के गाउन में, बाल उलझे हुये और पैरों में पुराने जूते धारण किये हुये। किन्तु उसमें विनम्र बनने का एक विशेष गुण था। उसने एक भी प्रश्न नहीं किया और यह बहाना किया मानो वह समझता हो कि मैडम कहीं समुद्र पार विदेश गई हुई हैं। आह! चले जाकर तो मैडम ने न जाने कितने हृदयों को चूर-चूर कर दिया। वह तो सारे संसार की एक बड़ी हानि थी। वह नौजवान स्त्री, एक कौतूहल में घिर गई और उसके पूर्व की झिझक समाप्त हो जाने पर वह प्रश्न किये बिना न रह सकी। चूँकि भीड़ उनको धक्का-मुक्की करके चल रही थी अतः उसने उसे एक द्वार के सहारे ला खड़ा किया और उसके सामने अपनी छोटी डलिया हाथ में लिये हुये, नाना खड़ी हो गई। उसके उस अल्पकालीन अज्ञातवास के प्रति लोग क्या कहते थे? हाँ, सचमुच, वह जिन स्त्रियों के यहाँ भी गया, उन्होंने तरह-तरह की बातें कीं। संक्षेप में, एक बड़ा तमाशा रहा वह सब, और सचमुच वह बड़ी सफलता थी। और स्टेनियर? मो० स्टेनियर की बहुत सोचनीय दशा है। उसका अन्त बड़ा दुःखद होगा यदि सट्टे में उसे पुनः कुछ प्राप्त न हुआ। और डागनेट? ओह! वह ठीक चल रहा है। मोशियो डागनेट अब जाना चाहते हैं। नाना पुरानी स्मृतियों से उत्तेजित हो रही थी और नये प्रश्न करने ही वाली थी कि मुफट का नाम लेने में जैसे उसे एक झिझक हुई। तब फ्राँसिस ने मुस्कराते हुये प्रकारान्तर से उसका उल्लेख किया। और काउन्ट? उसको देखकर जैसे एक आघात लगता है। मैडम के चले जाने पर उसने बहुत कुछ सहा है--अत्यधिक। जब वह उन स्थानों पर घूमता है जहाँ मैडम सदैव जाया करती थी तो जैसे वह किसी न दफनाई हुई लाश का भूत सा प्रतीत होता है। जो

हो, मोशियो मिगनन प्रयत्न करके उसे घर ले गये हैं इस सूचना ने नाना को सीमित रूप में हँसा दिया।

"आह ! तो वह अब रोज़ के साथ है", नाना ने कहा—"हाँ तुम जानते हो फ्राँसिस ? मैं किंचित भी परवाह नहीं करती हूँ। वह बूढ़ा पाखण्डी ! उसको उस प्रकार की आदत पड़ी हुई है। वह उन सबके बिना कुछ दिन भी नहीं ठहर सकता। और वह कसम खाता है कि मेरे अतिरिक्त उसे किसी स्त्री से कोई प्रयोजन नहीं है।"

ऊपर से शान्ति दिखाते हुये भी नाना अन्तरंग में अत्यधिक क्रुद्ध थी। "वह मेरी झूठन है", उसने कहा—"रोज़ ने अपने को एक मछली की भाँति प्रदर्शित किया है। ओह ! मैं वह सब देखूँगी। वह मुझसे उस पुराने जानवर स्टेनियर को उससे छीन लेने का बदला चुकाना चाहती है। जिसको मैंने निकाल दिया उसे अपने घर में रखने का काम उसने बड़ी फुर्ती से किया है।

'मोशियो मिगनन एक दूसरी कहानी बताते हैं" हेयर ड्रैसर बोला—"उसके अनुसार, काउन्ट ने मैडम को निकाल दिया। और हाँ, बड़े अप्रिय ढंग से—वह भी पीछे से एक लात मारते हुये।"

यह सुनकर नाना पीली पड़ कर सन्न रह गई।

"ह: क्या ?" उसने प्रश्न किया—"पीछे एक ठोकर देकर ! हाँ, यह बहुत है, वह ! क्यों, मेरे परिचित ! वह मैं ही थी जिसने उसे जीने के नीचे खदेड़ दिया। वह लम्पट ! क्योंकि वह एक बड़ा पाजी है। जैसा कि मैं अधिकार-पूर्वक कहती हूँ, तुम जानते हो; उसकी पत्नी के प्रेमियों की कोई गिनती नहीं है यहाँ तक कि वह गंदा फाचरी, और वह मिगनन जो अपनी बन्दरिया की सी शक्ल वाली बीबी के लिये सड़कों पर मारा-मारा घूमता है जिसको कोई छूता भी नहीं क्योंकि वह वैसी लम्बी डाँग है, कैसा भयानक संसार है ! कैसा भयानक !" उसका गला रुँध रहा था मानो उसने साँस लेना बन्द कर दिया।

आह ! तो वे यह कहते हैं ? ठीक है, फ्राँसिस । मैं अभी जाऊँगी और उन्हें खोजूँगी । क्या हम लोग अभी चलेंगे ? हाँ, मैं जाऊँगी, और हम लोग देखेंगे कि क्या उनमें वह सूरत है कि बात कर सकें, उन पीछे से दी गई ठोकरों की । ठोकरें ! मैंने किसी के द्वारा ठोकरें खाने के लिये अपने को कभी नहीं झुकाया । और, मैं किसी से पिट भी नहीं सकती । मैं उस आदमी को जान से मार दूँगी जो मुझ से एक उँगली भी छुआवे ।"

फिर वह धीरे से शान्त हो गई । अन्ततः वे जो चाहें कह सकते हैं । अपने जूतों पर लगी मिट्टी के समान उसने उन्हें कोई महत्त्व नहीं दिया । वह उसकी तौहीन होगी यदि वह ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में ध्यान दे । उसके आत्मा है और वह उसके लिये पर्याप्त है । और फ्राँसिस तब अधिक आत्मीय बनता गया । उसको उसके गन्दे गाउन में इस प्रकार अपनी अन्तरंग भावनाओं को प्रकट करते देखकर उसने उसे कुछ सलाह देने का साहस भी किया । एक साधारण मोह के लिये सब कुछ त्याग कर उसने बड़ी मूर्खता की है, ये मोह ही जीवन का नाश कर देते हैं । अपना सिर थाम कर उसने उसकी बात सुनी जबकि वह बड़े उदास शब्दों में बातचीत कर रहा था जो उस सलौनी लड़की को यों दूर से देखकर बड़ा दुःखी हो और उसको सान्त्वना देना चाहता हो ।

"वह मेरा काम है" यह कह कर उसने अन्त किया—"किन्तु उसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ, मेरे पुराने साथी ।"

नाना ने अपना हाथ निकाल कर दाबा जो उसके उतने बनाव शृंगार के अनन्तर भी गीला बना रहता था और तब वह उसे छोड़कर मछलियां खरीदने बढ़ गई । वह ठोकर मारने वाली कहानी उसको दिन भर घेरे रही । उसने वह बात फान्टन तक से कह डाली—एक कठोर मस्तिष्क वाली स्त्री की भाँति जो किसी भी अपमान के समक्ष नहीं झुक सकती । फान्टन ने अपने को ऊँचा मानते हुये कह डाला कि वे सब भद्र पुरुष बहुत बड़े बदमाश हैं और उनका तिरस्कार ही करना चाहिये । उस क्षण के बाद नाना ने उनके प्रति अत्यधिक घृणा का अनुभव किया ।

ऐसा हुआ कि उस संध्या वे दोनों बाक्स थियेटर गये—एक महिला से मिलने जिसको फान्टन जानता था और जो अपनी एक दस लाइन की भूमिका में पहिली बार काम कर रही थी। उस समय दोपहर का एक बज रहा था जब वे पैदल मान्टमार्ट्र लौटे।

'रूये डि. लॉ चासी में वे एक रोटी व एक 'मोका' खरीदने रुक गये, जिसे उन्होंने सोते समय खाया क्योंकि सर्दी तेज थी व आग जलाने का अवसर भी न था। बिस्तर पर बराबर-बराबर बैठकर, कपड़े ऊपर तक लपेट कर और तकियों को पीछे लगाकर खाते हुए वे उस स्त्री के सम्बन्ध में बातें करते रहे। नाना ने उसको बदसूरत व गतिहीन बताया, जिसमें कोई जिन्दादिली नहीं थी। फान्टन, जो बिस्तर के बाहर सो रहा था, केक के स्लाइस आगे बढ़ाता गया जो मेज पर दियासलाई व मोमबत्ती के बीच में रक्खे थे। अन्त में वे झगड़ पड़े।

"क्या ऐसी बातचीत करना सम्भव है?" नाना चीखी। उसकी आँखें बर्मे के छेद की तरह थीं और उसके बाल जैसे सन के रंगे थे।

"चुप रहो!" फान्टन ने उत्तर दिया: "उसके बाल बड़े सुन्दर थे और नेत्रों से जैसे अग्नि प्रकट हो रही थी। यह अच्छा मजाक रहता है कि तुम औरतें एक दूसरे को इतना गिराती हो।" जैसे वह बहुत रोष में हो: "इतना बहुत है।" उसने अपनी रूखी आवाज में अन्त में कहा: "मुझे बहस करना पसन्द नही है। हमें सो जाना चाहिये अन्यथा व्यर्थ ही झगड़ा हो जावेगा।"

"क्या परवाह! क्या तुमने घूमना-फिरना बन्द कर दिया है?" उसने बैठकर उछलते हुए अनायास प्रश्न किया।

"यदि बिस्तर पर रोटी के टुकड़े पड़े हों तो इसमें मेरा क्या दोष?" उसने तीक्ष्णता में कहा।

और सचमुच बिस्तरों पर टुकड़े थे। उसने अपने पैरों के नीचे भी अनुभव किया। वे उसके चारों ओर थे। छोटा टुकड़ा तो उसे कष्ट देता रहा

और यहाँ तक कि उसके मांस में खून तक निकल आया। जब बिस्तर पर कोई चीज खाई जावे तो बाद में उसे झाड़ देना चाहिये। फान्टन ने, क्रोध की चरम सीमा में, मोमबत्ती जला दी। वे दोनों उठ खड़े हुए और अपनी रात्रि-पोशाक में, नंगे पैर खड़े होकर उन्होंने अपना बिस्तर झाड़ा। फान्टन, जो हर समय कोमल बना रहा, तुरन्त बिस्तर पर पहुँच गया और नाना से बोला कि तुम शैतान के पास जाओ क्योंकि नाना ने उससे कहा था कि वह पैरों को साफ कर ले। तब वह अपने बिस्तर पर चली गई किन्तु वह कठिनाई से लेट पाई होगी कि उसने जैसे नाचना प्रारम्भ कर दिया। बिस्तर पर अब भी कुछ टुकड़े चुभ रहे थे।

"हाँ, मुझे मालूम है", उसने कहा : "तुम अपने पैरों में उन्हें फिर ले आये। मैं कहती हूँ, मैं ऐसे नहीं सो सकती, कभी नहीं।"

वह बिस्तर पर उठ गई जैसे उस पर पैर रख रही हो। तब फान्टन ने अधिक सहन न करते हुए—सोने के ख्याल से—अपना हाथ निकाला और उसके (नाना के) थप्पड़ लगा दिया। वह चोट इतनी तेज थी कि नाना पुनः बिस्तर पर लेट गई और उसका सिर तकिये में दब गया। वह सुन्न रह गई।

"ओह !" उसने बालकों की भाँति केवल इतना ही कहा।

उसने दूसरे थप्पड़ की धमकी दी—यदि नाना किंचित् भी हिली तो। तब बत्ती बुझाकर वह पीठ मोड़कर लेट रहा और शीघ्र ही खर्राटे भरने लगा। अपनी सिसकियों को दबाने के लिए नाना ने अपना सिर तकिये में दबा लिया। अपनी कमजोरी का लाभ न उठाना तो बड़ी दुर्बलता है। किन्तु वह बहुत डर गई थी। फान्टन का सदा का मसखरा चेहरा उस समय भयानक लग रहा था। किन्तु उसका रोष समाप्त हो गया जैसे उस थप्पड़ ने उसे सन्तोष दिया हो। वह उसका मान करती थी अतः वह फान्टन को सारा स्थान देकर दीवाल से चिपट गई। गालों में रोमांच तथा नेत्रों में आँसू भरे हुए वह एक मीठे-विरोध और निरीहता की स्थिति में सो गई।

प्रातःकाल जब वह उठी तो उसका हाथ फान्टन को कसकर पकड़े हुए था। वह वैसा कभी नहीं करेगा, क्या करेगा ? वह (नाना) उसे बहुत प्यार करती है। उसके द्वारा पिटने में भी उसे भला लगेगा।

उस रात के बाद उनका जीवन बिल्कुल ही बदल गया। 'हाँ' या 'न' अब फान्टन उस पर थप्पड़ जड़ देता। उसकी आदी हो जाने पर वह उसे स्वीकार करती गई। बहुत बार चीख कर उसने उसे धमकाया भी किन्तु तब उसने नाना को दीवाल की ओर दाब दिया और झगड़ा करने की धमकी देता रहा इससे वह झुक जाती। बहुत बार वह कुर्सी पर गिर पड़ती और देर तक सिसकियाँ भरती रहती। तब वह सब भूल जाती और बहुत आल्हादित हो जाती; नाचते-गाते और हँसते वह कमरे भर में चक्कर काटती रहती। सब से बुरा यह था कि फान्टन दिन भर गायब हो जाता और आधी रात के पहले न लौटता। अपने मित्रों से मिलने वह बहुत बार जलपान-गृहों के चक्कर काटता रहता। नाना भय से काँपते हुए—इस विचार से कि वह उसे फिर नहीं देख पावेगी, वह उसका दुलार करती रही और उसकी प्रत्येक बात स्वीकार करती गई। किन्तु किसी दिन मैडम मेलोर या उसकी चाची नन्हे लुई को लाकर उसका समय न व्यतीत करातीं तो वह बड़ी दयनीय हो जाती।

तब एक दिन रविवार को जब वह 'रोचेफाउकाल्ड' के बाजार में कुछ कबूतर खरीदने गई, तो सेटीन को वहाँ देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुई जो मूली की एक गड्डी खरीद रही थी। उस संध्या के बाद जब शहजादे ने फान्टन के साथ शराब पी थी—उन्होंने एक दूसरे को नहीं देखा था।

"क्या ! तुम ? तुम यहीं कहीं पड़ोस में रहती हो ?" सैटीन ने पूछा जो नाना को दिन में स्लीपर पहने बाहर देख रही थी। "आह ! मेरी गरीब लड़की ! निश्चित् तुम्हें दुर्भाग्य ने घेर लिया है।" तभी सैटीन ने मूली की गड्डी के पैसे देते हुए एक नौजवान को—जो कोई क्लर्क मालूम देता था तथा जिसे जाने में देर हो गई थी—पास से गुजरते व कहते हुए सुना : "गुड मार्निंग, डार्लिंग।"

वह तुरन्त एक महारानी के अपमान की उत्तेजना के सदृश गर्दन उठाकर बोली :

"इस सुअर को क्या हो गया है ?"

तब उसने समझा कि वह उसे जानती है। तीन दिन पूर्व ही, जब वह बाउलेवर्ड से आधी रात के समय लौट रही थी—उसने रूये लेबरूयरे के कोने में लगभग आध घण्टे तक उससे बातें की थीं—इसके पहले कि वह कुछ निश्चित करता। उस स्मृति से सैटीन को और भी रोष हुआ।

"ये आदमी भी कितने मूर्ख होते हैं कि दिन के समय ऐसी बातें कहते हैं", उसने कहा : "जब कोई किसी अपने व्यक्तिगत काम से जाता है तो उस समय तो उसका सम्मान होना ही चाहिये।"

नाना ने अन्त में कबूतर खरीद लिये। तब सैटीन ने उसे (नाना को) अपना स्थान, जहाँ वह रहती थी, दिखाने की इच्छा प्रकट की। वह रूये रोचे फाउकाल्ड से मिला हुआ था। तब जैसे ही वे दोनों अकेली हुईं, नाना ने फान्टन के साथ अपने प्रेम की कहानी सुनाई। वह जब अपने द्वार पर पहुँची तो वह ठिगनी मूलियों को अपने हाथ में लेकर खड़ी हो गई और नाना की बातचीत में आनन्द लेती हुई सुनती रही कि उसने काउन्ट मुफट को अपनी जगह से निकाल बाहर किया और ऊपर से एक लात दी।

"ओह ! खूब···खूब !" सैटीन बोली : "पीछे से एक लात भी—ओह ! बहुत बढ़िया ! और वह एक शब्द भी कहने का साहस न कर सका, क्या उसने कुछ कहा ? आदमी इतने ही डरपोक होते हैं। मैं वहाँ होती तो उस मूर्ख की शकल जरूर देखती। प्रिय ! तुमने ठीक किया ! भाड़ में जाय उसका धन। मैं, जब मुझमें उसकी चाह होगी तो, उसके लिये मरूँगी। तो तुम आकर मिलोगी ! वह बाँई ओर द्वार है। तीन बार खटखटाना क्योंकि बहुत से लोग आकर मुझे सताते हैं।"

उस दिन के बाद नाना जब भी दुःखी हुई—सैटीन के यहाँ चली गई। वह हमेशा घर पर मिलेगी इसका उसे विश्वास रहता था क्योंकि वह बोली,

छः बजे शाम से पहले कभी घर से नहीं निकलती थी। सैटीन के यहाँ दो कमरे थे जिनको एक दवा बेचने वाले ने सजवा दिया था जिससे वह पुलिस की दृष्टि से सुरक्षित रहे। किन्तु तेरह महीने से पूर्व ही, उसने फर्नीचर तोड़ डाला, कुर्सियों की गद्दियाँ तोड़ डालीं, पर्दे तेल में तर कर दिये, और प्रत्येक वस्तु को इस ढंग का बना दिया और उन कमरों में इतनी गन्दगी तथा अस्त-व्यस्तता फैल गई कि लगने लगा जैसे वहाँ पागल बिल्लियों का एक समूह रहता हो। सफाई से तंग आकर उसने सफाई करना ही छोड़ दिया और एक प्रकार से अपने घर की देखभाल करना भी त्याग बैठी।

रात की रोशनी में शीशेदार बड़ी आलमारी, घड़ी और बचे-खुचे पर्दे, उन आदमियों को अच्छे लगते जो उससे मिलने आया करते थे।

नाना उसे सदैव सोते हुये पाती। नाना को वहाँ बड़ा सुख मिलता और वह अपना व्यक्तिगत वार्तालाप करती रहती। उन दोनों स्त्रियों के वार्तालाप में पुरुषवर्ग की घिनौनी बातों का जिक्र होता। फान्टन नाना के लिये असह्य हो रहा था। वह उससे बिना इधर-उधर किये दस शब्द भी नहीं बोल सकती थी। उसके सम्बन्ध में सदैव वार्तालाप करने के विचार से नाना वे सब बातें याद करती—वे चोटें भी जो फान्टन देता था। पिछले हफ्ते उसने उसकी आँखें काली कर दी थी और एक दिन पूर्व संध्या समय जब वह उसके स्लीपर नहीं ढूँढ़ पाई तो उसने नाना को इस जोर का धक्का दिया कि वह मेज के लैम्प पर गिरते-गिरते बची। उसको उसकी कोई परवाह न थी और वह आराम से सिगरेट का धुँआ उड़ाता रहा और केवल नाना को बोलने से रोकता रहा कि वह सदा ही लापरवाही दिखाती है।

उस सब बातचीत में भी जैसे वे दोनों प्रसन्न होतीं। फान्टन की मार का जिक्र कर नाना उसके विभिन्न क्रिया-कलापों को कह कर खुश होती। वह किस प्रकार जूते उतारता है, कैसे बोलता है इत्यादि और यह सब कहते ही नाना सैटीन के पास सट आती जो उसे सान्त्वना देती रहती।

इसके उत्तर में सैटीन अपनी कहानियाँ सुनाती कि कैसे एक पेस्ट्री बनाने वाला उसे अधमरा करके भूमि पर छोड़ जाता और तब भी वह उससे

निरन्तर प्यार करती रहती। तब वे दिन भी आये जब नाना ने कहा कि अब नहीं चल सकता। सैटीन उसके साथ उसके द्वार तक जाती और बाहर सड़क पर एक २ घंटे खड़ी रहती कि कहीं फान्टन उसे मार तो नहीं रहा और तब दूसरे दिन वे दोनों स्त्रियाँ और अधिक प्रसन्न होतीं और फिर कैसे समझौता हुआ और कैसे उसके फलस्वरूप उनमें कामोत्तेजना और भी प्रबलता से जागृत होती रही।

वे अभिन्न थीं, फिर भी सैटीन नाना के यहाँ नहीं गई क्योंकि फान्टन ने घोषणा की थी कि एक भी गन्दी स्त्री उसके घर नहीं आ सकती। वे साथ घूमतीं और तब एक दिन सैटीन नाना को एक महिला, मैडम राबर्ट के यहाँ ले गई क्योंकि नाना उसके प्रति श्रद्धा रखती थी—इस कारण कि उसने नाना के यहाँ भोजन पर आने के लिये असमर्थता प्रकट की थी। मैडम राबर्ट रूये मासनीयर में रहती थी जो प्लेस डि. ल. यूरोप के निकट नई सड़क पर था जहाँ एक भी दूकान नहीं थी और जहाँ छोटे-छोटे अच्छे फ्लैट बने हुये थे जिनमें केवल स्त्रियाँ ही रहती थीं।

इस समय पाँच बज रहा था। शान्त-पथ की उच्च-वर्गीय निराकुलता में श्वेत-भव्य-भवनों के सम्मुख सट्टे के दलालों एवं व्यवसाइयों की गाड़ियाँ प्रतीक्षा में खड़ी थीं। पथिक फुटपाथ पर तीव्रतापूर्वक चल रहे थे और अपने नेत्रों को ऊपर उठाये हुये थे जहाँ स्त्रियाँ अपने ड्रेसिंग-गाउन में उनकी प्रतीक्षा में प्रतीत होती थीं। नाना ने यह कहकर ऊपर जाना उपयुक्त नहीं समझा कि वह उस स्त्री से परिचित नहीं है किन्तु सैटीन ने जोर दिया। एक व्यक्ति अपने साथ अपना मित्र ले ही जा सकता है। वह केवल शिष्टता की भेंट के लिये ही जा रही है। मैडम राबर्ट ने, जो एक दिन पूर्व ही एक जलपान-गृह में उससे मिली, बड़ी आत्मीयता का व्यवहार किया था तथा घर आने के लिये आमन्त्रित भी किया था।

तब, अन्त में नाना भी चली गई। जो हो, उसने उन्हें ड्राइङ्ग-रूम में बैठा दिया।

"देखो ! कैसा मोहक है ?" सैटीन बुदबुदाई।

कमरा मध्यम-वर्ग के ढंग का सजा हुआ था। उसके पर्दे मलिन आभा व्यक्त कर रहे थे। वे शिष्टाचार के दिग्दर्शन में वैसे ही थे जैसे पेरिस के व्यवसाइयों के जो भाग्याधीन होकर व्यवसाय से पृथक हो गये थे।

नाना ने वह सब देखते हुये कुछ टिप्पणियाँ कीं। किन्तु सैटीन सरोप हो गई और उसने मैडम राबर्ट की कुछ विशेषतायें व्यक्त कीं। वह सदैव ही गम्भीर और ऊँचे भद्र-पुरुषों के साथ हाथ में हाथ डालकर घूमते या टहलते देखी गई हैं। इस समय उनके पास एक अवकाश-प्राप्त चाकलेट का निर्माता है जिसमें एक अति-गम्भीर मानसिक-परिवर्तन देखा गया है। वह उस स्थान की कुलीन व्यवस्था को देखकर इतना प्रभावित हुआ है कि नौकरों को उसने आदेश दिया तथा स्वयं भी मैडम राबर्ट को अपना बच्चा कह कर सम्बोधित किया।

'और देखो ! वह वह है," सैटीन बोली और घड़ी के सामने लगी एक तस्वीर की ओर संकेत करने लगी।

नाना ने चित्र को कुछ देर देखा। वह एक बहुत ही काली स्त्री का चित्र प्रतीत होता था जिसका चेहरा लम्बा था और जिसके ओठ संयमित रूप में मुस्करा रहे थे। कोई भी देखकर कह सकता कि यह महिला शान-शौकत वाली है किन्तु है संयमी।

"प्रसन्नता की बात है। मैंने इस आकृति को अवश्य कहीं देखा है। कहाँ, मुझे ध्यान नहीं किन्तु वह कोई अच्छी जगह नहीं थी। ओह, निश्चित यह किसी सम्मानित स्थान पर नहीं थी" और नाना ने अपनी मित्र की ओर घूमकर जोड़ दिया : "तो उसने तुमसे आने का वचन करा लिया। वह तुमसे क्या चाहती है ?"

"वह मुझसे क्या चाहेगी ? क्यों ? केवल मिलने-जुलने के लिये, निःसंदेह, थोड़े समय साथ रहने के लिये। यह तो साधारण शिष्टता है।"

नाना ने सैटीन की आकृति में सीधे देखा और अपनी जिह्वा को किंचित चटकार दी। ठीक है, किन्तु उससे क्या सम्बन्ध ? जो हो, चूंकि

महिन्ना को आने में अधिक देर लग रही थी अतः नाना ने कहा कि वह अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकती और वे दोनों चली गईं।

दूसरे दिन, फान्टन के यह कहने पर कि वह भोजन करने नहीं आवेगा, नाना सैटीन को ढूँढ़ने जल्दी चल दी कि वे किसी जलपान-गृह में दावत खायेंगे। जलपान-गृह का चुनाव एक गम्भीर विषय था। सैटीन ने अनेक स्थान सुझाये किन्तु नाना ने प्रत्येक को घिनौना बताया। अन्त में उसने लारीज पर राजी कर लिया। वह रूये डेस मारटायर्स में था और था एक साधारण सा जहाँ भोजन का मूल्य तीन फ्रैंक प्रति व्यक्ति था। प्रारम्भ होने की प्रतीक्षा से थक कर और सड़कों पर अपने को व्यस्त न कर सकने के कारण वे लारीज में बीस मिनट पहले पहुँच गईं। तब तीन कमरे रिक्त थे। वे एक कमरे की उस मेज पर जा बैठीं जहाँ लारी पीडेफर एक ऊँचे काउन्टर पर आसन जमाये बैठी थी। लारी पचास वर्ष की आयु की तथा भारी-भरकम थी, और तंग कसे हुये फीतों और कमरबन्दों से बंधी थी। शीघ्र ही, बहुत सी स्त्रियाँ आईं और अँगूठों पर खड़ी होकर तथा शकर से भरी तश्तरियों पर झुकते हुये उन्होंने कोमल परिचय सहित लारी का चुम्बन लिया जबकि मोटी शैतान अपनी गीली आँखों से, ईर्षा के कारण को हटाने के विचार से अपना ध्यान परिवर्तित करती रही।

सेविका, जो अतिथियों की सेवा कर रही थी, अपनी स्वामिनी के विपरीत लम्बी व पतली थी तथा दुर्बल नेत्रों से इधर उधर देखती जाती थी। उसकी काली पुतलियों में अग्नि की सी लाल चमक झलकती थी।

तीनों कमरे तुरन्त भर गये। वहाँ लगभग सौ ग्राहक होंगे। मेजों की व्यवस्थानुसार वे सब इधर उधर बैठ गये। अधिकांश उनमें चालीस की आयु के होंगे—भारी भरकम, मांस से लदे, जिनकी आकृतियां कुकृत्यों से फूल रही थीं। इनकी भारी व भरी छातियों तथा पेटों से मिली कुछ शर्मीली-लजीली, सुन्दर लड़कियाँ भी साथ बैठी थीं—अपनी ढीठ आकृतियों में जो अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में थी और किन्हीं निम्न श्रेणी के नृत्यालय से जिन्हें कोई ग्राहक लारीज में लाया था जहाँ बड़ी और थलथल स्त्रियां

अपने यौवन में इधर-उधर फड़फड़ा रही थीं और एक दूसरे से ठिठोली कर रही थीं तथा इच्छुक पुराने लोगों की भाँति उन्हें चारों ओर से घेरे थीं जैसे उन्हें सब प्रकार की सुरुचि से सन्तुष्ट कर रही हों।

पुरुष उनमें कम थे—अधिक से अधिक दस या पन्द्रह और वे उस स्कर्टों की भीड़ में बड़े विनम्र दिखाई दे रहे थे, केवल चार को छोड़कर जो उस तमाशे को देखने ही आये थे और जो अपने अनुसार उन सब का बड़ा मजाक बना रहे थे।

"उनका यह तालाब तो बड़ा सुन्दर है", सेटीन बोली।

नाना ने सन्तोष में अपना सिर हिला दिया। वह एक ठोस रात्रि-भोजन था जैसा गाँवों के होटलों में दिया जाता है—बड़े बड़े समोसे, उबली चीजें और चावल, शोरबे के साथ सेम की फलियाँ, बरफ की वेनीला-क्रीम। स्त्रियाँ अधिकतर शोरबे और चावल पर जुटी थीं।

पहले तो नाना अपने किसी पूर्व परिचित से मिल जाने के भय से डरी क्योंकि वह व्यर्थ ही ऊटपटाँग प्रश्न करता किन्तु उसे सन्तोष हुआ जब उसने उस भीड़ में किसी भी परिचित को न पाया जहाँ मुरझाये और उदास रंग की पोशाकें व मौसम से नष्ट हुए टोप भी थे और पापाचरण की सीमाओं में डूबी गहरी व रंगीन पोशाकें भी।

एक पल के लिये छोटे घुँघराले बालों व निर्लज्ज आकृति वाले एक युवक की ओर नाना आकृष्ट हुई जो औरतों की एक पूरी मेज पर डटा था तथा अपनी प्रत्येक आकांक्षा की पूर्ति के लिये आतुर था। उस युवक के हँसने पर उसके उरोज उभर आये।

"क्यों? यह औरत है!" दम घोटने वाली चीख सहित नाना ने प्रकट किया।

सेटीन ने, जो भोजन में व्यस्त थी अपना सिर उठाया और तब बोली—

"आह! मैं उसे जानती हूँ। वह अत्यधिक मिलनसार है। वे सब उसके पीछे हैं।"

नाना घृणा से फूल गई। वह कुछ समझ नहीं पाई। फिर भी उसने तर्कपूर्ण ढंग से कहा कि रुचियों और रंग के विषय में बहस करना व्यर्थ है क्योंकि कोई नहीं कह सकता कि कब किसको क्या प्रिय लगने लगेगा। तब उसने दार्शनिक की भाँति अपनी आइस-क्रीम खाई—उस उत्तेजना को जानते हुये जो सेटीन निकट की मेजों पर अपनी नीली, बड़ी कौमार्या की सी आँखों से उभार रही थी। उसने एक लम्बी, अच्छे बालों वाली स्त्री को विशेषतः देखा जो उसके अधिक निकट थी एवं ऐसी दृष्टियों तथा नैकट्य से देख रही थी कि नाना उसको रोकना चाहती थी।

किन्तु तत्काल ही एक स्त्री ने वहां प्रवेश किया जिससे उसे बड़ा विस्मय हुआ। उसने मैडम राबर्ट को पहचान लिया। एक छोटे भूरे चूहे की भाँति सुन्दर दृष्टियों सहित उसने उस लम्बी अगली सेविका के परिचय सहित सिर हिलाया तथा लारी के काउन्टर के निकट जाकर झुक गई और वे देर तक एक दूसरे को चूमती रहीं।

नाना ने इस दुलार में कुछ विचित्रता का अनुभव किया—विशेषतः उस स्त्री के प्रति जो एक सम्भ्रान्त महिलाओं की सी चेष्टाओं में थी जैसे मैडम राबर्ट जिनके नेत्रों में नैतिकता का अभाव प्रदर्शित हो रहा था। धीमे शब्दों में बात करते हुये उसने कमरे पर एक दृष्टि दौड़ाई। लारी अभी-अभी पुनः उस आसन पर जमकर बठी थी जो पापाचरण की मूर्ति सी स्थापित थी जिसका चेहरा थकन और चुम्बनों की चमक से दमक रहा था और अपनी भोजन की तश्तरियों के ऊपर से झाँक कर वह उन मोटी स्त्रियों की भीड़ पर राज्य करती हुई उस भाग्य का उपभोग कर रही थी जो चालीस वर्ष के परिश्रम का प्रतिफल था।

मडम राबर्ट ने अन्ततः सेटीन को देख लिया। तब लारी को छोड़कर वह शीघ्रता से उस ओर बढ़ी और बड़े अपनेपन के भाव व्यक्त करते हुये बोली कि उसे अत्यधिक खेद है कि वह विगत दिवस बाहर गई हुई थी। जब सेटीन ने स्थान देते हुये उससे अनुरोध किया तो उसने कहा कि वह भोजन कर चुकी है। वह केवल देखने आई है। बातें करते हुये अपनी उस नव-परि-

चिता के कन्धों पर वह झुकी हुई थी तथा मुस्कराहट एवं चापलूसी-भरे शब्दों में कहती गई—

"हाँ, अब कब तुमसे भेंट होगी ? क्या तुम खाली हो ।"

दुर्भाग्यवश, नाना अधिक न सुन सकी। वार्तालाप ने उसे रुष्ट कर दिया और वह अपने मस्तिष्क की प्रतिक्रिया का उदाहरण उस भद्र प्रतीत होने वाली महिला को देना चाहती थी किन्तु व्यक्तियों के एक समूह को देखकर जिसने अभी-अभी प्रवेश किया था उसकी पक्षाघात की सी अवस्था हो गई। उसमें कुछ अधिक शान वाली स्त्रियाँ भी थीं जो बहुमूल्य पोशाकें व हीरे धारण किये हुए थीं। हजारों फ्रैंक के मूल्य के जवाहरात अपने शरीर पर धारण किये हुए वे लारी की पार्टी में आई थीं जिनको वे बड़े अपनेपन से पहचानती थीं और तीन फ्रैंक प्रति व्यक्ति के हिसाब से मूल्य चुकाना चाहती थीं; जो, लगता था, पुराने अड्डे को देखने की आन्तरिक इच्छा रखती थीं, जिनको अन्य गरीब व धूल में सनी औरतें ईर्पा-सहित देख रही थीं। जब वे अपनी ऊँची आवाज तथा खिलखिलाहट के साथ अन्दर आईं तो लगा जैसे बाहर से कोई प्रकाश-रेखा साथ लेती आई हों, किन्तु उनमें लूसी स्टेवर्ट तथा मेरिया ब्लाड को देखकर नाना ने सिर घुमा लिया और सरोप मुद्रा में बैठ गई। पाँच मिनट तक सब स्त्रियाँ लारी से खड़ी २ बात करती रहीं और जब तक वे दूसरे कमरे में नहीं चली गईं नाना ऐसे झुकी रही जैसे उसके कपड़ों पर कोई वस्तु गिर गई हो। तब जब उसने सिर ऊपर उठाकर सामने देखा तो वह हतप्रभ रह गई—सैटीन अपनी कुर्सी पर नहीं थी।

"उसको क्या हुआ ?" जैसे अनजाने ही उसने जोर से कह डाला।

यह बड़े अच्छे बालों वाली स्त्री, जो अब सैटीन के साथ अधिक व्यस्त थी, उपेक्षा सहित हँसी। किन्तु जब नाना को वह परिहास बुरा लगा तो उसने उस पर वक्र दृष्टि सहित देखा। उसने चापलूसी भरी विनम्र भाषा में कहा : "वह निश्चित ही मैं नहीं हूँ जो उसके साथ भाग गई हो; वह कोई और होगी।"

यह ख्याल कर कि नाना परिहास का कारण बन जायगी, उसने

अपनी जिह्वा सँभाल ली। तब वह अपने रोप को व्यक्त न होने देने के ख्याल से कुछ अधिक देर तक बैठी रही। दूसरे कमरे से वह सरलतापूर्वक लूसी स्टेवर्ट की आवाज सुन रही थी जो उन लड़कियों की मेज के निकट खड़ी आनन्द ले रही थी तथा जो मान्टमार्टेन तथा लॉचेपील के नृत्य-गृहों से आ रही थी।

वहाँ बड़ी गरमी थी। सेविका गन्दी तश्तरियों को इकट्ठा करके उठा रही थी और भोजन की गन्ध लेती जाती थी जबकि वे चारों व्यक्ति, कोई गहरी शराब लिये स्त्रियों के अलग-अलग समूहों में, उनको शराब पिलाने के उद्देश्य से गये जिससे वे कुछ अश्लील बातें सुनकर प्रसन्न हों।

नाना को जो कुछ उत्तेजना हो रही थी, वह थी सैटीन के खाने का भुगतान करना। वह अच्छी रही कि बढ़िया से बढ़िया खा गई और जो पहले मिला उसके साथ चल दी तथा 'धन्यवाद' कहने का भी कष्ट नहीं उठाया। यह सही था कि वे केवल तीन फ़ैंक ही थे किन्तु उसने उन्हें अधिक समझा। यह तो बड़ी गन्दी चालाकी थी। अन्ततः उसने लारी के समक्ष छै फ़ैंक दिये—यह देखते हुए और इस तिरस्कार-सहित कि वह एक गली की गन्दी मिट्टी से अधिक नहीं है।

रूये डेस मार्टीयर्स में नाना की कडुवाहट और बढ़ गई। वह निश्चित ही सैटीन के पीछे कदापि नहीं जावेगी—वह उस तुच्छ पशु के पास कभी नहीं जावेगी। किन्तु उसकी संध्या तो बरबाद हो ही गई थी और तब वह मैडम रावर्ट के प्रति अत्यधिक क्रोध सहित मान्टमार्ट्रे की ओर गई। वह निश्चित ही अपने को भद्र घोषित करने वाली अशिष्ट व गन्दी बहानेबाज औरत है। वह किसी कूड़ेघर के लिये ही सम्भ्रांत है। अब उसे ठीक से याद आया—उसने उसे रूये डेस प्वाइनियर्स में एक निम्न कोटि की नृत्य-शाला 'तितली' में देखा था, जहाँ वह अपने को केवल तीस सॉस में बेचा करती थी। तब वह अपने कुशल क्रिया-कलापों के द्वारा अधिकारी वर्ग में प्रवेश पा गई और अब भोजन का निमन्त्रण इस अहमन्यता में तिरस्कृत कर देती है कि वह एक भद्र महिला है। आह! उसमें भी कुछ विशिष्टता होनी चाहिये जो वह उसे दे सके। ये वैसे ही पाखण्ड हैं जिनको

वह धारण किये हुए है और अपने में भयानक बीमारियाँ साथ लिये हुए है जो उसके नीच छिद्रों में भरी हुई हैं और जिन्हें कोई नहीं देख पाता ।

अन्त में वह सब सोचते हुए, नाना अपने घर रूये-वेरन जा पहुँची। खिड़की में प्रकाश देखकर वह अत्यधिक विस्मित हुई। फान्टन खाना खाने के अनन्तर अपने मित्र से छुटकारा पाकर सीधा घर लौट आया था। तब उसने शुष्कतापूर्वक उन सफाइयों को सुना जिन्हें नाना शीघ्रता में दे रही थी—इस भय से कि वह अभी ही चोट खाने वाली है। उसका वह डर था, उस क्षण उसे (फान्टन को) वहाँ देखना, जबकि वह उसकी रात्रि में एक बजे के पूर्व कभी भी आशा नहीं करती थी। वह झूँठ बोली कि वह मैडम मेलोर के यहाँ गई थी किन्तु यह भी स्वीकार किया कि उसने छै फ्रैंक खर्च किये हैं।

फान्टन अपनी प्रतिष्ठा में डूबा रहा। उसने नाना की ओर एक पत्र बढ़ा दिया जिसको उसने अनियमित रूप से खोल लिया था क्योंकि उस पर नाना का नाम था। वह जार्ज का पत्र था जो अभी भी लेस फान्डेट्स में था और अपनी भावनाओं को, कई-कई पृष्ठ के पत्रों की भाषा में, प्रति सप्ताह व्यक्त करता था। नाना अत्यधिक प्रसन्न होती थी जब कोई उसे पत्र लिखता था विशेषतः उस पत्र को पाकर जो प्यार की कसमों से भरा हुआ हो। तब वह उसे सबको सुनाती। फान्टन जार्ज के तरीके को जानता था और उसकी सराहना करता था। किन्तु उस रात उसे झगड़े का भय इतना अधिक सताता रहा कि वह अत्यधिक उदासीनता व्यक्त करती रही; उसने बड़ी उपेक्षा सहित पत्र पर दृष्टि डाली और उसे एक ओर फेंक दिया।

फान्टन खिड़की के द्वार का तबला बजा रहा था और अभी इतनी जल्दी सोने नहीं जाना चाहता था। वह यह भी नहीं समझ पा रहा था कि संध्या कैसे व्यतीत करे। तब वह अनायास घूम पड़ा।

"सोचो, यदि उस छोकरे को हम तुरन्त पत्र लिखें", उसने कहा।

यह केवल वह था जो पत्र लिखता था। उसका ढँग बड़ा सुन्दर था और वह नाना को उच्च स्वर में पढ़कर तथा सुना-सुनाकर प्रसन्न होता था जबकि वह उसके पत्र की अत्यधिक सराहना करती थी। वह कहती कि केवल

उसी के पास वैसी अच्छी बातें हैं जिन्हें वह कह सकता है। तब वे एक दूसरे की प्रशंसा कर उत्तेजित होते।

"जैसा तुम पसन्द करो," नाना ने उत्तर दिया—"मैं चाय बनाती हूँ, उसके पश्चात् हम सोने जायेंगे।"

तब फान्टन मेज पर आराम से बैठ गया और कलम, कागज व स्याही का अच्छा सा प्रदर्शन करता रहा। उसने अपने हाथ घुमा लिये और अपनी ठोढ़ी निकाल ली।

"मेरे हृदय!" उसने जोर से पढ़ना प्रारम्भ किया।

अब वह एक घंटे तक जुटा रहा और किसी वाक्य को कभी-कभी दोहराता रहा। उसका सिर हाथों पर टिका हुआ था। जब किसी अंश को वह अधिक कोमल समझता तो स्वयं पढ़ कर हँसता जाता। नाना, उस शान्ति में दो कप चाय पी गई। अन्त में, अनेक भाव-भंगिमायें प्रकट करते हुये, जैसी वे स्टेज पर प्रदर्शित करते हैं, उसने वह पत्र पढ़ डाला। उसने कागज के पांच ओर लिखा था कि "वे प्यारे दिन, जो ला मिगनन में व्यतीत हुये हैं, कोमल-सुगंधि की भाँति स्मृतियों में समाये रहेंगे।" आगे उसने कसम खाई—"उस आन्तरिक सत्यता की जो उस अमर-प्रेम में जागृत हुई थी" और इस प्रकार उसने अन्त किया कि "उसकी एकमात्र आकांक्षा है कि यह आनन्द सदैव बना रहे, और यदि प्राप्त हो सके तो पुनर्जन्म में भी प्राप्त हो।"

"तुम जानती हो," उसने समझाया, "मैं वह सब केवल विनम्रतावश कहता हूँ क्योंकि वह केवल हँसी के लिये है—मैं सोचता हूँ, इतना पर्याप्त है।"

वह स्वयं में मगन था। किन्तु, नाना ने उत्पात से भयातुर हो अब भी अधिक मूर्खता का परिचय दिया कि प्रशंसा में न तो उसने फान्टन के गले में हाथ डाले न ही कुछ मीठे शब्द कहे। उसने सोचा कि पत्र का अच्छा प्रभाव होगा लेकिन वह बहुत था। तब वह बहुत अस्त-व्यस्त हुआ। अगर उसके पत्र ने उसे प्रसन्नता नहीं दी है तो वह स्वयं दूसरा लिख सकती है। और सदा की भाँति एक दूसरे को प्यार की मीठी वर्जनाओं सहित आलिंगन-पाश में आबद्ध

न करके वे मेज के दोनों सिरों पर सुन्न से बैठ रहे। नाना ने केवल एक कप चाय उसके प्याले में भर दी।

"क्या बेहूदगी है !" जैसे ही उसने चाय से अपने ओठ गीले किये वैसे ही फान्टन चिल्लाया : "तुमने इसमें नमक डाल दिया है।" दुर्भाग्यवश नाना ने अपने कन्धे हिला लिये। तब वह और भी तीव्र हो गया। "आह ! आज इस संध्या को सब ऊट-पटांग हो रहा है।"

और यहाँ से झगड़ा प्रारम्भ हो गया। उस समय घड़ी में केवल दस बजा था अत: समय व्यतीत करने का वह भी अच्छा साधन था। वह उस पर बिगड़ता रहा। उस पर नाना प्रकार के दोषारोपण करता रहा, जिनमें अपमान भरा हुआ था। वह नाना को उत्तर देने का समय भी नहीं दे रहा था।

वह गन्दी है ! वह बेहूदी है ! उसने बढ़िया जिन्दगी व्यतीत की है। फिर वह पैसों के लिये बकता रहा। क्या पहिले कभी उसने बाहर भोजन करने में छ फ्रैंक व्यय किये थे ? उसने सदैव अपने खाने का बिल दूसरों से दिलवाया है अन्यथा घर पर बैठा प्याले चाटता रहा है। और वह सब केवल उस पुरानी कुटनी मेलोर के लिये। वह बुढ़िया डाइन···अब फिर कभी आने का साहस करेगी तो वह उसे जीने के नीचे ढकेल देगा। आह ! इस प्रकार छै फ्रैंक प्रति दिन सड़क पर इस ढङ्ग से व्यय करेंगे तो, वे न जाने कहाँ पहुँच जायेंगे।

"सबसे पहले," वह चीखा "मैं तुम्हारा हिसाब देखूंगा। लाओ, मुझे सब रुपये दो; मैं देखूं क्या स्थिति है।"

उसमें कृपणता की सारी भावनायें जाग पड़ीं। नाना, आधीनता में भय-सहित मेज़ के खाने से जो कुछ बचा था सब लाने, शीघ्रता में गई और उसके सामने पटक दीं। इसके पहले सदा चाभी ताले में लगी रहती थी और स्वेच्छानुसार जब जो चाहता उसमें से धन निकालता रहता था।

तब गिनने के बाद वह बोला—"क्या ? सत्रह हजार में केवल कठिनाई से सात हजार फ्रैंक रह गये ! जबकि हमें साथ रहते केवल तीन महीने हुये हैं। यह सम्भव नहीं है।"

तब वह अपने स्थान से उठा और लैम्प के प्रकाश में ड्राअर खखोलता रहा। किन्तु वहाँ केवल छै हजार आठ सौ कुछ फ्रैंक शेष थे। अब वह झगड़ा अच्छा खासा तूफान बन गया।

"दस हजार फ्रैंक तीन महीने में।" वह गरजा—"सत्यानाश! उनका तुमने क्या किया? हाँ, जवाब दो! वह सब तुम्हारी उसी पुरानी डायन चाची के यहाँ चला गया, हाँ! या इसके अतिरिक्त भी तुम उससे कुछ करती रहीं, बिलकुल स्पष्ट है। तुरन्त उत्तर दो।"

"आह! तुम तो फौरन गरम हो जाते हो," नाना बोली: "हिसाब बताना तो बहुत सरल है। समस्त फर्नीचर तुम भूल गये। मैंने बहुत सा लिनेन खरीदा। जब सब कुछ खरीदने को होता है तो पैसा फौरन निकलता चला जाता है।"

यों उसने सफाई तो मांगी किन्तु उसे सुनने को तैयार न था।

"हाँ, इतना अधिक, इतनी जल्दी चला जाता है," उसने अपने स्वर को शान्त करते हुये कहा, "और देखो! नौजवान औरत! यह साझे का व्यापार बहुत हो चुका। तुम जानती हो, ये सात हजार फ्रैंक मेरे हैं। हाँ, अब मुझे वे मिल गये। मैं उनको रखना चाहता हूँ। तुम जब इतनी बर्बाद करने वाली हो, तो मैं स्वयं उसकी संभाल करूँगा ताकि मैं बर्बाद न हो जाऊँ। प्रत्येक को अपनी वस्तु का अधिकार है।" और उसने बड़ी शान से वह धन अपनी जेब में रख लिया जबकि नाना ने बड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

तब उसने शिकायत करते हुये प्रारम्भ किया "तुम समझती हो, मैं ऐसा मूर्ख हूँ कि उन चाचियों और बच्चों को पालूँ तथा रक्खूँ जो मेरे नहीं हैं। उससे तुम्हें आनन्द हुआ और तुमने अपना धन खर्च किया। वह तुम्हारा ही काम था। किन्तु मेरा पैसा पवित्र है। जब तुम भोजन बनाओगी तो मैं आधा दे दूँगा। प्रत्येक रात्रि को हम लोग तय कर लिया करेंगे।"

यह सुनकर नाना उबल पड़ी। वह अपनी चीख नहीं रोक सकी—"मैं कहती हूँ। यह बहुत घृणित है। तुमने मेरे दस हजार फ्रैंक में से अपना भी हिस्सा ले लिया।"

किन्तु वह बहस में अधिक समय नष्ट नहीं करना चाहता था। टेबिल पर झुककर उसने एक ज़ोर का तमाचा अपनी पूरी ताकत भर उसके मुँह पर दिया और बोला : 'यह फिर से कहो तो।"

नाना ने थप्पड़ के पश्चात् भी फिर कहा और तब वह उस पर थप्पड़ों और ठोकरों सहित टूट पड़ा। यहाँ तक कि उसने उसको ऐसी स्थिति में कर दिया कि सदा की भाँति वह अपने कपड़े उतार कर सिसकते हुये बिस्तर पर चली गई। वह सिगरेट पीता रहा और घूँसे लगाता रहा और स्वयं भी बिस्तर पर जाने को तैयार हुआ तभी उसने जार्ज को लिखा हुआ वह पत्र मेज पर देखा।

उसने उसे संभाल कर बन्द कर दिया और बिस्तर की ओर झुकते हुये धमका कर बोला—

"पत्र सब ठीक कर देगा। मैं इसे स्वयं डाक में डालूँगा क्योंकि मैं इसमें किसी परिवर्तन के लिये नहीं रखना चाहता। और मैं कोई तकलीफ भी नहीं उठाना चाहता क्योंकि यह मुझे रोष दिलाता है।"

नाना, जो बुरी तरह रो रही थी, सांस रोक गई। जब फान्टन बिस्तर पर पहुँचा तो नाना ने जैसे घुटन का सा अनुभव किया और अपने आपको फान्टन के वक्ष पर गिराते हुये वह जोर से सिसक पड़ी। उनके युद्ध इसी प्रकार समाप्त होते थे। उससे विलग होने के ध्यान मात्र से वह कांप जाती थी। इस सबके होते हुये, नाना में उसके प्रति एक निम्नकोटि की चाहना थी। उसने नाना को क्रोधित हो आवेग सहित दो बार ढकेला किन्तु उस आकर्षक-नारी के आलिंगन की गरमाहट, और उसकी वे नीर-भरी बड़ी-बड़ी आँखों जो किसी स्वामिभक्त पशु की सी प्रतीत हो रही थीं, उसके अन्तरङ्ग में चाहना की ज्वाला को भड़का दिया था। और तब उसने एक शहज़ादे का सा अभिनय किया—इस पर भी बिना झुके हुये। तब नाना ने उसे दुलराया। फान्टन सोचता रहा कि तात्कालिक क्षमा-दान देकर विजय प्राप्त करना परम श्रेयस्कर है। अनायास उसके मन में एक नई चिन्ता ने प्रवेश किया। वह डरा कि नाना कदाचित किसी सुखान्त नाटक की रचना कर

रही हो, केवल उस धन को प्राप्त करने की जिज्ञासा में ! तब उसने मोमबत्ती जलाई और यह समझा कि पुनः उसे अपने अधिकार की मान्यता व्यक्त कर देनी चाहिये।

"लड़की ! तुम जानती हो ! मेरा वही आशय है जो मैंने व्यक्त किया है। मैं उस पैसे को अपने पास ही रखना चाहता हूँ।"

नाना ने, जो अपनी भुजाओं को उसके गले में डाल कर नींद लेने को प्रस्तुत थी, प्रौढ़ता और गर्वपूर्वक कहा—"हाँ, डरो मत। मैं काम करूँगी।"

किन्तु, उस रात्रि के पश्चात् उनका साथ-साथ जीवन, पहले से भी अधिक असहनीय हो गया। सप्ताह के पहले दिन से अन्तिम दिन तक थप्पड़ों का स्वर कभी भी सुना जा सकता था—किसी घड़ी के पेन्डुलम की टिक-टिक की भाँति जो अपने अस्तित्व को निर्धारित करती रहती है। पिटते-पिटते नाना इतनी विनम्र हो गई जैसे सुन्दर लिलन कपड़ा और उसने उसकी त्वचा इतनी कोमल बना दी कि छूने में अत्यधिक मुलायम; उसका रंग पीला और श्वेत हो गया—नेत्रों को इतना प्रिय कि वह पूर्व से भी अधिक सुन्दर हो गई। यही कारण था कि प्रुलियर अनेक बार उसकी स्कर्ट के पीछे पीछे घूमता रहा—इस ध्यान में वहाँ जाकर कि फान्टन वहाँ नहीं होगा। वह नाना को कोनों से ढकेल ले जाता और उसका चुम्बन लेने का प्रयत्न करता; किन्तु वह तुरन्त क्रोधावेश में आ जाती, झगड़ती और लज्जा में भर जाती। उसने विचार किया कि प्रुलियर को अपने मित्र को धोखा देना अत्यधिक लज्जास्पद है। तब प्रुलियर तिरस्कार-सहित दुःख में भर जाता।

सचमुच, वह एक मूल्यवान मूर्ख बनती जा रही थी। वह उस बन्दर पर कैसे आश्रित है ? फान्टन निश्चित एक बन्दर था, अपनी ऊँची नाक सहित जो प्रति क्षण हिलती-डुलती थी—एक घृणास्पद सुअर और एक साथी जो उसे हर समय मारता रहता है।

"यह हो सकता है; किन्तु वह जैसा है, मैं उसे प्यार करती हूँ",

एक दिन नाना ने उत्तर दिया—एक शान्त स्त्री की भाँति जो विरोध की परम जागृत भावना लिये हुये हो।

बास्क ने अधिक से अधिक अवसरों पर नाना के यहाँ भोजन किया। वह सदैव प्रुलियर के पीछे खड़ा, कन्धे मटकाता रहता था जो था तो एक सुन्दर व्यक्ति किन्तु कभी भी गम्भीर नहीं रहता था। उसने घर की लड़ाइयों में बहुत बार सहायता की। खाने के समय जब भी फान्टन ने नाना को मारा पीटा वह निरन्तर भोजन में जुटा रहा—यह ध्यान कर कि वह संसार में बड़ी स्वाभाविक बात है। यों ही, जब कभी उससे खाने के पैसे देने की बात आती तो उनकी प्रसन्नता में हर्षित होने का बहाना कर वह बात टाल देता। उसने अपने को एक दार्शनिक घोषित कर रखा था। उसने प्रत्येक वस्तु, यहाँ तक वैभव तक, का त्याग कर दिया था।

प्रुलियर और फान्टन मेज साफ हो जाने के पश्चात भी विभ्रम में खड़े के खड़े रह जाते और रात को दो बजे तक स्टेज की आवाज व आकृतियों की अपनी सफलता के सम्बन्ध में वार्तालाप करते रहते। जबकि, वह विचारों में डूबा कभी-कभी घृणा की आकृति प्रकट करता व शान्तिपूर्वक ब्रान्डी की बोतल समाप्त कर जाता। तातमा का क्या बचा? कुछ नहीं। तब वे कभी-कभी द्वार बन्द कर लेते और स्वयं मूर्ख न बनने का विचार कर द्वार न खोलते।

एक रात्रि उसने नाना को आँसुओं से भरा हुआ पाया। उसने तुरन्त अपनी बाडिस उतार कर पीठ और बाहों की खरोचें दिखलाईं। उसने त्वचा को देखा—बिना उस स्थिति से लाभ उठाने के प्रलोभन में फँसे हुये जैसा कि यदि वह धूर्त प्रुलियर होता तो कभी न छोड़ता। उसने सूत्र रूप में कहा :

"मेरी बच्ची! जहाँ कहीं भी स्त्रियाँ हैं वहीं तमाचे मिलते हैं—मेरा ध्यान है नेपोलियन ने यह कहा था। तुम नमक के पानी से स्नान करो। नमक का पानी इन झगड़ों के लिये बड़ा उपयुक्त है। मेरी बात गाँठ बाँध लो। तुम्हें यदि इससे भी अधिक कष्ट हो तब भी तब तक शिकायत मत करो जब तक

कि कुछ टूट न जाय। तुम जानती हो मैं अपने आप को तुम्हारे यहाँ भोजन के लिये निमंत्रित करता हूँ। मैंने बड़ा सुस्वादु भोजन देखा है।"

किन्तु मैडम लेराट के पास वैसी दार्शनिकता नहीं थी। प्रत्येक बार जब भी नाना ने अपनी श्वेत त्वचा पर ताजा खरोंच दिखलाया तभी उसने उच्च स्वर में विरोध किया। उसकी भतीजी मार डाली जा रही है। वैसा चल नहीं सकता। सत्यता यह थी कि फान्टन ने मैडम लेराट को निकाल बाहर किया और कहा था कि कभी वह उसे अपने स्थान पर नहीं देखेगा। तबसे फान्टन के घर लौटते समय जब कभी वह वहाँ रुक गई तो बड़े अपमान सहित उसे रसोई की तरफ आना पड़ा था। अतः उसने उस उद्दण्ड व्यक्ति को गालियाँ दिये बिना कभी नहीं छोड़ा। एक भली प्रकार से पली हुई स्त्री के मान सहित वे सोचतीं कि नम्रता की शिक्षा के सम्बन्ध में उन्हें कोई अधिक नहीं समझा सकता। तब वह नाना से बिगड़ती कि वह बहुत बुरी स्थिति में पल रही है।

"ओह! कोई भी उसे एक दृष्टि में देख सकता है", वह नाना से कहती: "उसको (फान्टन को) स्वामित्व का किंचित भी ज्ञान नहीं है। उसकी माँ निश्चित ही कोई तुच्छ स्त्री होगी। उसको मना मत करो। वह इसको बहुत स्पष्टतः व्यक्त कर रहा है। यह मैं अपने कारण नहीं कह रही हूँ यों मेरी आयु की स्त्री को कुछ सम्मान देना अनिवार्य है; किन्तु तुम सचमुच अब, कैसे उसके ऐसे बुरे बर्ताव को सहन कर लेती हो? क्योंकि मैं, अपने प्रति किंचित भी प्रशंसा लिये बिना कह सकती हूँ कि मैंने सदैव तुम्हें यह शिक्षा दी है कि तुम अपने प्रति कैसा बर्ताव करो। तुमने अपने घर में ही अच्छी से अच्छी सलाह प्राप्त की है। हम सभी अपने परिवार में बहुत अधिक सम्मानित थे, क्या नहीं थे?"

नाना ने कोई विरोध नहीं किया और उसने अपना सिर झुकाये रक्खा।

"तब", उसकी चाची कहती रही: "तुम अब तक केवल अमीर लोगों से ही मिलती जुलती रही हो। हम लोग यह बात विगत रात्रि 'जो' से करते

रहे। वह यह नहीं समझ पा रही है कि तुमने अपने को इस सब में कैसे घेर रक्खा है। "कैसे", उसने कहा : "मैडम ने जैसा चाहा काउन्ट के साथ बर्ताव किया—यह अपने ही तक है कि तुमने उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसे वह कोई गधा हो—मैडम कैसे उस कुरूप व असभ्य व्यक्ति के द्वारा अपनी हत्या सहन कर रही हैं ?" मैंने कहा कि ये थप्पड़ भले ही तैयार रहते हों किन्तु मैं कदापि उस मान के पाने के लिये झुक नहीं सकती। संक्षेप में वह किंचित भी उसके पक्ष में नहीं है। मैं तो किसी भी मूल्य पर उसका चित्र अपने कमरे में नहीं टाँग सकती। और तुम उस निकृष्ट जीव के लिए अपना जीवन नाश कर रही हो। मेरी प्रिय ! तुम प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति के लिये बाहर जा सकती हो; जब और बहुत से हैं—कहीं अधिक धनवान और भद्र पुरुष, गवर्नमेंट से सम्बन्धित। किन्तु इतना बहुत है। मुझे यह सब तुमसे नहीं कहना चाहिये। जो हो, यदि मैं तुम्हारी स्थिति में होती तो अगले ही अवसर पर यदि उसने दुर्व्यवहार किया होता तो मैं तत्क्षण ही उसे छोड़ कर चल देती और उसी अकड़ में कहती—"श्रीमान ! मुझे किसलिये लाये थे ? जिससे उसे पता चलता कि वह तुम्हें मूर्ख बनाने नहीं लाया था।"

तब नाना आँसुओं में फूट पड़ी और सिसकियाँ भर कर बोली—'ओह ! चाची ? मैं उसे प्रेम करती हूँ।"

सत्यता यह थी कि मैडम लेराट बड़ी चिन्ता में थी कि बड़ी कठिनाई से उसकी भतीजी ने केवल बीस साउस दीर्घ-अवकाश में दिये थे—अपने नन्हें लुई के खर्च के लिये। फिर भी वह, अपने आप सब कुछ करेगी। वह अपने बच्चे को रक्खेगी और अच्छे समय की प्रतीक्षा करेगी। उसका विचार था कि उस सब की जड़ में फान्टन है जिससे वे बच्चा तथा उसकी माँ, कष्ट में हैं जिससे वह इतना क्रुद्ध थी कि उस बीच वह प्रेम के अस्तित्व का कोई स्थान नहीं मान रही थी। अतः उसने तीव्र शब्दों में कहा :

"सुनो ! एक दिन जब वह तुम्हारी जिन्दा खाल खींच लेगा तब तुम आकर मेरा द्वार खटखटाओगी और मैं तुम्हें तब भी रक्खूँगी।"

धन की आवश्यकता से नाना अत्यधिक चिन्तित थी। वे सात हजार

फ्रैंक जो फान्टन ने ले लिये थे, बिलकुल गायब हो गये। निःसन्देह उसने उन्हें किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया होगा और नाना में उससे पूछने का साहस न था क्योंकि वह उस तुच्छ व्यक्ति के प्रति, जैसा उसकी चाची ने कहा था, अत्यधिक डरपोक हो गई थी। उसने गृहस्थी के खर्च के लिये कुछ न कुछ देने का वादा किया था अतः उसने प्रतिदिन प्रातःकल तीन फ्रैंक देना प्रारम्भ किया किन्तु अपने पैसे के एवज में वह प्रत्येक वस्तु की आशा करता था। इन तीन फ्रैंक के बदले वह सब चीजें चाहता था—मक्खन, गोश्त, सुबह के फल तथा सब्जी और यदि वह जानबूझ कर खतरा मोल लेती या कहती कि इन बीस साउस से तो बाजार में वह सब चीज नहीं पा सकती तो वह उफन जाता। व्यर्थ में वह उसे बुरा-भला कहता—'एक खर्चीली निम्नश्रेणी की स्त्री, एक शैतान, मूर्ख जिसको बाजार वाले लूटते हैं' और तब दूसरी जगह खाना खाने की धमकी देकर उसको चोट पहुँचाता।

एक मास समाप्त होने पर, किसी सुबह जब वह तीन फ्रैंक मेज की ड्राअर के ऊपर रखना भूल जाता और वह डरते-डरते घुमा-फिरा कर उससे पूछने का साहस करती तो उससे ऐसे उपद्रव खड़े हो जाते कि उससे नाना का जीवन ही व्यथित हो जाता। किसी भी बहाने वह उस पर टूट पड़ता जिससे उसने उससे पूछ-ताछ न करना ही श्रेयस्कर समझा। जब कभी वह पैसे न छोड़ जाता और तब भी अच्छा भोजन तैयार पाता तो वह लार्क की तरह खुश हो जाता—अत्यधिक विनयशील, नाना को आलिंगन करता और कमरे में पड़ी कुर्सियों पर संगीत का अलाप बजाता। और इससे नाना इतनी प्रसन्न होती कि वह ड्राअर के ऊपर कुछ भी न पाने की इच्छा करने लगती—उस कठिनाई के रहते हुए भी जिसे वह दोनों ओर से पा रही थी। एक दिन तो उसने उसके तीन फ्रैंक एक लम्बी असम्बद्ध वार्ता-सहित लौटा दिये कि उसके पास पिछले दिन के कुछ पैसे रह गये हैं। जब दो दिन तक उसने एक भी पैसा नहीं दिया तो वह कुछ सुनने का विचार कर हिचकता रहा। किन्तु नाना उसको अपने उमड़ते नेत्रों के प्यार-सहित निहारती रही। वह अपने शरीर को पूरी तरह समर्पित कर उसका आलिंगन करती रही और तब उसने

वह धन अपनी जेब में रख लिया—उस कृपण की भाँति जिसने किसी डूबे हुए धन को प्राप्त किया हो।

उस दिन के पश्चात् उसने अपने को कष्ट देना समाप्त कर दिया और यह भी ज्ञात करने की चेष्टा नहीं की कि आखिर पैसा आता कहाँ से है। जब कभी, केवल आलू बने होते तो वह भुनकर खा ही जाता, तो कभी अच्छे खाद्य पदार्थ देखकर नाना की प्रशंसा करता और भाँति-भाँति के सुझाव देता जैसे उसे सिखा रहा हो।

तब प्रत्येक वस्तु उपलब्ध करने के लिये नाना ने मार्ग निकाल लिया। कभी-कभी तो घर में भोजन की जगमगाहट उभर आती। बास्क सप्ताह में दो बार इतना अधिक भोजन करता कि उसे अपच हो गया। एक सन्ध्या, जब मैडम लेराट जाने को प्रस्तुत थीं, आग के समक्ष एक अच्छा भोजन पड़े हुए देखकर पूछती रहीं कि यों बरबाद करने के लिये कौन धन दे रहा है? नाना, अचानक आश्चर्य में सोचती रही कि चाची क्या कहना चाहती है और जैसे चीखने को उद्यत हुई।

"ठीक है! अब व्यवस्था ठीक है", चाची ने कहा जो बात को समझ चुकी थी।

नाना ने घर की शान्ति व व्यवस्था के लिये अपने को पीछे हटाया। उसमें कुछ दोष उस पुराने ट्राइकन का भी था जिसे वह रूये डि. लावल में मिली थी—जब एक दिन फान्टन क्रोधावेश में चला गया था क्योंकि घर में खाने के लिये केवल नमकीन मछली थी। अतः उसने उस पुराने ट्राइकन से 'हाँ' कह दिया जो एक कष्ट में था। उसके पश्चात् चूँकि फान्टन छै बजे शाम से पहले कभी घर पर नहीं आता अतः नाना को अपनी संध्या व्यतीत करने का सुयोग था। अब वह चालीस से साठ फ्रैंक तक लेकर लौटती और कभी २ अधिक भी। यदि वह पूर्णतः स्वच्छन्द होती तो दस से पन्द्रह लुई तक प्राप्त कर सकती थी किन्तु इस पर भी वह पर्याप्त प्रसन्न थी कि वह सब ठीक से चला सकने में समर्थ है।

तब अपने स्नेही की प्रशंसा में तथा परम आसक्ति में वह (नाना) अपने पिछले दिनों के दुरवरण की ओर पुनः उन्मुख हो गई। जैसा वह पहले कहती थी और पाँच फ्रैंक के एक टुकड़े के लिये सड़कों पर घूमा करती थी उसी भाँति उसने पुनः प्रारम्भ किया। एक रविवार को, राचेफाउकाड के बाजार में उसने सेटीन से पुनः दोस्ती कर ली।

वह अनेक बार, जब फान्टन खाना खाकर चला गया, लारीज गई। वहाँ की प्रेम-कथाओं को सुनकर वह प्रसन्न हुआ करती; स्नेहियों की ईर्षा से अन्य ग्राहकों को भी आकर्षण मिलता। किन्तु वह उस सब में सम्मिलित नहीं हुई। बलिष्ठ लारी ने, अपने ममत्व सहित नाना को अनेक बार अपने निवास, एसनियर्स विला में, आमन्त्रित किया जो एक गाँव में था और जहाँ सात स्त्रियों के रहने का स्थान था। पहले तो उसने मना किया किन्तु जब सेटीन ने उससे कहा कि वह गलती पर है; वहाँ पेरिस के भले लोग उनके चतुर्दिक चक्कर मारेंगे, उनके साथ बगीचे में तरह-तरह के खेल खेलगे तो नाना ने बाद में—जब वह अवकाश पायेगी—आने का वचन दे दिया।

उन दिनों नाना पैसे के लिये बड़ी चिन्ता में थी और आनन्द-उत्सव के लिये तत्पर न थी। उसे तुरन्त धन की आवश्यकता थी। उस ट्राइकन के पास उसे देने को कुछ नहीं था और ऐसा अनेक बार हुआ तब उसने सोचा कि कहाँ जावे और वह सेटीन के साथ समस्त पेरिस में घूमती—उस निम्न-स्तर के पापाचरण के हेतु जो गन्दी सड़कों पर मन्द प्रकाश में होता रहता है। पूर्व की भाँति, जब वह अपनी गन्दी स्कर्ट में नाचना सीख रही थी, वह निम्न कोटि के नृत्य-गृहों में भी गई।

उसने एक बार फिर बाउलेवर्ड के कोने पकड़े जहाँ, पहले जब वह केवल पन्दरह वर्ष की थी, लोग उसका चुम्बन ले लिया करते थे जबकि उसका बाप उसके लिये एकान्त ढूँढ़ता फिरता था। वे प्रत्येक बॉल (नृत्य-गृह) व जलपान गृह में उस स्थान में घूमते थे, जीनों पर चढ़ा करते थे जहाँ गन्दा पानी व बियर बहा करती थी या वे धीरे-धीरे पीछा करते हुये एक से दूसरी सड़क पर जाते और थोड़ी-थोड़ी देर में दरवाजों पर रुक जाते थे;

सैटीन, जो पहले क्वार्टियर लेटिन में प्रकट हुई थी, नाना को बुलियर्स ले गई, तत्पश्चात् बाउलेवर्ड-सैन्ट-मिचला के जलपान-गृहों में। किन्तु उन दिनों छुट्टियाँ थीं और क्वार्टर खाली थे, अतः वे मुख्य बाउलेवर्ड में लौट आईं। माउन्ट मार्टरे की ऊँचाई से लेकर प्लेट्यू तक जहाँ आब्जरवेटरी थी वे इस प्रकार समस्त नगर में चक्कर काटती रहीं। वर्षा की रातों में जब उनके जूते एड़ियों में चिपक जाते, गर्मी की रातों में जब उनके कपड़े उनकी त्वचा से सट जाते, अनन्त प्रतीक्षा और अस्थिर सैरों सहित कभी ठिठोली करते, कभी झगड़ते और किसी पथिक की भद्दी मजाक सुनकर, जो किसी एकान्त स्थान की ओर खिंच आता और गन्दी सीढ़ियों के नीचे कपड़े खाता हुआ लौट जाता, वे चक्कर काटती रहीं।

नाना और सैटीन गिर्जे के निकट से निकलतीं और सदैव रूये ले पेले-टियर से होकर जातीं तब कैफ रिचे से लगभग सौ गज दूर कसरत के मैदान में वे अपने वस्त्रों को ढीला कर देतीं और धीमे-धीमे चलकर वहाँ तक आतीं जहाँ किसी जलपानगृह के प्रकाश की धूप फैली होती।

तब अपने सिर उठाये हुये, जोर से हँसते हुये और उन पुरुषों की ओर घूमकर देखते हुये जो उन पर दृष्टि डालते—वे अपनी अच्छी मनःस्थिति में होतीं। उनके सफेद चेहरे, जिन पर उनके लाल ओठों तथा काली नेत्र-पुतलियों की चमक थी, किन्हीं नकली वस्तुओं के ईस्टर्नबाजार में घूमतीं। बारह बजे तक भीड़-भाड़ की ठिठोली में, वे प्रसन्न रहतीं; कभी २ केवल कह देतीं 'शैतान, मूर्ख।"

तब ओपेरा से जिमनेज थियेटर तक वे दस बार चक्कर मारतीं और जब देखतीं कि लोग उनसे बचना चाहते हैं तो नाना और सैटीन रूये डी फाबर्ग-मान्टमार्ट्रे पहुँचतीं। वहाँ रात्रि को दो बजे तक जलपानगृहों और शराब की दूकानों आदि में प्रकाश दिखाई पड़ता। जबकि केफ के द्वार पर औरतों की भीड़ एकत्र रहती। वह पेरिस का अन्तिम चमकदार व उत्साहवर्धक रात्रि-स्थान था—अन्तिम खुला हुआ बाजार जहाँ किसी सार्वजनिक स्थान के बड़े हॉल की भाँति ही, एक कोने से लेकर दूसरे तक खुले व्यवसायिक आदान-

प्रदान और रात के कन्ट्रैक्ट निश्चित होते थे। जब वे असफलतापूर्वक किसी रात्रि को घर लौटतीं तो नाना और सैटीन आपस में झगड़तीं।

परन्तु कभी-कभी उन पर अच्छे दैवयोग का प्रभाव होता तो कोई सुसज्जित वेशभूषा वाले भद्रपुरुष उन्हें लुई देते और साथ चलते हुये उनके सजाव-शृङ्गार की वस्तुएँ उनकी जेब में रख देते। सैटीन विशेषत: दूर से ही सूँघ लेती। उन गीली रातों को आर्द्र पेरिस जब किसी पतनाले की साफ की हुई गन्दी दुर्गन्धि छोड़ता था, तो वह जानती थी कि वातावरण की नमी व निम्न स्थानों की दुर्गन्धि पुरुषों को उत्तेजित करती है। उनमें जो सर्वाधिक सम्पन्न होते उनको वह उनकी पीली आँखों में पहचान लेती और उन्हीं को चुनती। यह ठीक था कि कभी-कभी वह सोचती थी कि बहुत साफ सुथरे कपड़े पहनने वाले और भद्र दिखाई देने वाले पुरुष अधिकतर बड़े गन्दे व विकारी मस्तिष्क के होते हैं। उनमें सब चमक नष्ट होकर अन्दर का शैतान प्रकट हो आता है जो अपने जंगली स्वाद में अपनी विकृति को अच्छे ढङ्ग से छिपा कर रखते हैं। अत: सैटीन को गाड़ियों में जाने वाले लोगों के प्रति जानबूझकर उतना आकर्षण नहीं था जितना उनके हांकने वालों के प्रति। वह कहती कि उनसे वे कहीं भले हैं। वे स्त्रियों को सद्व्यवहार सहित रखते हैं। वे अपनी स्त्रियों को नाटकीय ढङ्ग पर अधमरा नहीं कर देते।

अन्तत: सम्भ्रान्त पुरुषों की वह गिरावट और पापाचरण की आस्था की वह मदहोशी ध्यान कर, नाना कभी-कभी आश्चर्य में पड़ जाती। उसमें उस सब के प्रति अन्तरङ्ग में भयानक विद्रोह था जिसे सैटीन शान्त करने की चेष्टा करती थी। जब वह गम्भीरतापूर्वक उस विषय पर विचार-विमर्श करती तो वह प्रश्न करती—तब क्या कहीं अच्छाई, सत्यता अथवा पुण्य है ही नहीं ? ऊंचे से ऊंचे से लेकर नीच से नीच तक सब दुराचारी हैं ?

हाँ, तो पेरिस में, नौ बजे रात से तीन बजे सुबह तक कुछ बहुत सुन्दर कार्य होते हैं। तब नाना जोर से हँसती और कहती यदि कोई भी केवल इतना कर सके कि प्रत्येक कमरे को झांक सके तो वह कुछ बड़ी अद्भुत वस्तुयें देख सकता है। निम्नवर्गीय तो वैसे होंगे ही—उच्च श्रेणी के लोग उस पशु-

प्रवृत्ति और उन पाशविक कार्यों में किसी से कम न होंगे। वह इस प्रकार अपनी शिक्षा पूरी कर रही थी।

एक रात सैटीन के यहाँ जाने पर जीने से उतरते हुये नाना ने मारक्युस डि. चोरड को पहचाना जो भारी-भारी सा, खम्भे पर झुका हुआ था, जिसके पैर उसके नीचे लड़खड़ा रहे थे और जिसकी आकृति भूत सी पीली थी। नाना ने अपनी नाक साफ करने के बहाने अपना रूमाल निकाला। और जब उसे सैटीन दिखाई दी तो उसने देखा कि वह उसी चिरपरिचित गन्दगी में भरी हुई है—कमरा एक सप्ताह से छुआ नहीं गया है, बर्तन भांडे सब ओर छितरे पड़े है, बिछौना सबसे गन्दा हो रहा है। तब नाना ने आश्चर्य प्रकट किया कि क्या वह मारक्युस से परिचित है। आह! हां, वह उसे जानती है। वस्तुत: उसने कहा कि जब वह व उसका पेस्ट्री बनाने वाला साथ रहा करते थे तब तो वह एक भयानक सिरदर्द था। अब, वह अक्सर आता है। किन्तु वह उसे बहुत तंग करता है। वह गन्दी से गन्दी जगह यहाँ तक कि उसकी चप्पलें भी ाप ले तो सूंघ डाले।

"हाँ, प्रिय, मेरी चप्पल भी। वह गन्दा पशु है। वह सदैव चीजें चाहता है"

नाना को इन दुराचारों की निष्कपटता का सर्वाधिक दुःख था। तब उसे ध्यान आया अपनी आनन्द की घड़ियों का जब उसका जीवन तेजी पर था और जब उसने उन लड़कियों को भी देखा था जिन्होंने दिन प्रति दिन अपना स्वास्थ्य नष्ट किया था।

तब सैटीन ने उसे पुलिस का भय दिखाया। उसके पास न जाने वैसी कितनी कहानियाँ थीं। एक अवसर पर उसका परिचय एक इंस्पेक्टर से था जो सार्वजनिक-नैतिक-सुरक्षा का व्यवस्थापक था; वह भी इस कारण कि उसे कठिनाइयों से छुटकारा रहेगा। उन्होंने दो बार उसका नाम अपने रजिस्टरों में लिखने से बचाया किन्तु अब तीसरी बार के लिये वह भयभीत थी। नाना इस सबसे बहुत डर रही थी। पुलिस जितनी औरतों को चाहे पकड़ ले, जिससे उन्हें घूस मिले और यदि तुम हल्ला मचाओ तो वे मुँह पर थप्पड़ दें और चुप

कर दें क्योंकि इससे उन्हें उच्च पद प्राप्त होते हैं—चाहे उनकी उस पकड़ में भले घर की लड़कियाँ ही क्यों न हों। गर्मियों में वे दस या बारह जने साथ लेकर चलते और बाउलेवर्ड का चक्कर काटते जब तक कि उनके घेरे में बीस-तीस औरतें न हो जांय। यों, सैटीन उनके जाने-पहचाने स्थान जानती थी। जैसे ही वह किसी पुलिस वाले को देखती, दरवाजे बन्द कर लेती।

वहाँ कानून का एक भय रहता था। 'प्रिफेक्चर-ग्राफ-पुलिस' का आतंक इतना भारी था कि बहुत सी तो जलपान-गृह के द्वार पर उसे देखकर ऐसे खड़ी रह जाती जैसे उनको लकवा लग गया हो। सैटीन ने बताया कि उसको उस पेस्ट्री बनाने वाले ने भी जब उससे झगड़ा हो गया—उसे बहुत धमकाया कि वह उसकी रिपोर्ट कर देगा। हाँ, कुछ पुरुष स्त्रियों पर इस प्रकार की धमकी-सहित भी अधिकार जमाये रहते हैं। बहुत सी स्त्रियाँ—यदि तुम उनसे अधिक सुन्दर हो तो, वैसी हीन मनोवृत्ति का परिचय देंगी।

नाना ने वे सब कथायें सुनीं और डरती रही। कानून और व्यवस्था के नाम पर नाना थर-थर काँपती रही—वह अदृश्य शक्ति, वह पुरुषों की बदला लेने की मनोवृत्ति, जो उसको पीस सकती है और संसार में उसकी रक्षा करने वाला तब कोई न होगा। सेन्ट लजारे की जेल उसे ऊँची मीनार की भाँति दिखाई देने लगी; एक भारी काल-कोठरी जहाँ औरतें जिन्दा दफना दी जाती हैं—उनके बाल काट देने के पश्चात्। तब उसने मन में सोचा कि अपने रक्षार्थियों की वृद्धि के लिये उसे फान्टन को तिलाञ्जलि देनी होगी। और सैटीन उसे आगे सौ बार बताती रही कि स्त्रियों की एक लम्बी सूची है—फोटोग्राफ सहित; जिसको पुलिस वाले मिलाते हैं और भली स्त्रियों के साथ छेड़छाड़ नहीं करते हैं। अब नाना यह सोच कर अत्यधिक भयभीत बनी रही कि कल ही पुलिस वाले उसे धकेलेंगे और पकड़ कर ले जायेंगे विशेषतया इंस्पेक्शन का ख्याल कर वह व्यथा तथा लज्जा से काँपती रही। उसने तो अनेक बार अपना सेमीज मकान की छत्त पर छोड़ दिया था।

एक दिन ऐसा हुआ कि सितम्बर के अन्त की एक संध्या को जब वह सैटीन के साथ बाउलेवर्ड प्वाइनेर में टहल रही थी तो सैटीन पूरी तेजी से

भागी और जब नाना ने प्रश्न किया कि वह ऐसा क्यों कर रही है तो उसने उत्तर दिया : "पुलिस ! जल्दी करो, जल्दी करो।"

वहाँ एक भारी भीड़ थी। उस भाग-दौड़ में उनके स्कर्ट फट गये—वहाँ धक्का-मुक्की हुई और चिल्लाहट भी। एक स्त्री भूमि पर गिर गई। भीड़ ने हँसते हुए पुलिस के उस निर्मम व्यवहार को सामने होते देखा जिसने शीघ्र उनके समूह को घेर लिया। नाना ने देखा कि सैटीन गायब हो गई है। उसे आभास हुआ कि उसके पैर लड़खड़ा रहे हैं। वह तत्क्षण ही पकड़ जाने वाली थी कि तभी एक आदमी—उसकी बाँह अपने हाथ में लेकर, पुलिस के क्रोध के बीच, उसे आगे ले गया। वह प्रुलियर था, जिसने उसे तत्काल पहचान लिया था। बिना कुछ कहे वह उसे रूये-रागमैन्ट, जो एक प्रकार से निर्जन था, की ओर उसे ले गया जहाँ नाना ने सांस ली। किन्तु वह जब मूर्छित जैसी होने लगी तो प्रुलियर ने उसे सहारा दिया। वह उसे धन्यवाद भी न दे सकी।

"हाँ", उसने अन्त में कहा : "तुम मेरे यहाँ चलो और कुछ देर विश्राम करो।"

वह निकट ही, रूये-बर्गरी में रहता था। वहाँ वह उसे साथ ही घसीटता ले गया।

"नहीं, मैं नहीं··· ।"

"किन्तु सब करते हैं, तुम क्यों नहीं ?" उसने कर्कश शब्दों में कहा।

"क्योंकि··· ।"

अपने मस्तिष्क में उसने सब कुछ कह लिया। वह फान्टन को अत्यधिक स्नेह करती थी व नहीं चाहती थी कि उसे एक मित्र के द्वारा धोखा दिया जाय। और लोग उस पर ध्यान नहीं देते किन्तु वह सोचती थी कि वह आनन्द नहीं अपितु आवश्यकता है जो उसे उस गणना में रख देती है। तब उस शरारत भरी जिद्द में प्रुलियर ने एक स्वस्थ व्यक्ति का सा कठोर व्यवहार किया जो अपने अहं से त्रस्त था।

"हाँ, अपने को प्रसन्न करो", उसने कहा : "कोई तुम्हारे मार्ग में तो मैं जा नहीं रहा हूँ, प्रिये ! किन्तु स्वयं ही उस नारकीय जीवन से मुक्ति पा लो।"

तब वह चला गया। उसका समस्त भय पुनः घिर आया। वह बड़े घुमाव-फिराव के मार्ग से मान्टमार्टरे पहुँची, दूकानों के पास-पास चलते हुए। प्रत्येक बार जब कोई व्यक्ति उसके निकट आता तो वह पीली पड़ जाती।

दूसरे दिन, नाना, गत रात्रि के भय का निरन्तर स्मरण करती, एक तंग सड़क पर जिसका नाम वेटिगनोल्स था, लेबार्डेट के सामने पड़ गई। वह अपनी चाची के यहाँ जा रही थी। पहले दोनों ही बड़े घबराये से प्रतीत हुए। वह सदैव ही अत्यधिक विनयशील व अपने किसी भी लाभ के लिये प्रस्तुत रहता था। जो हो, पहले उसी ने अपने को व्यवस्थित किया और उस भेंट पर अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की। सचमुच, तब तक प्रत्येक, नाना के उस पूर्णतया लोप हो जाने पर अत्यधिक चकित था। उसको हर स्थान पर खोजा गया और उसके पुराने मित्र तब भी निरन्तर अभाव का अनुभव कर रहे थे। पितृवत, उसने उसे एक एक मन्त्र जैसा उपदेश दे डाला।

"अब, स्पष्टतः प्रिय ! यह केवल हमारे बीच तक ही है कि तुम अपने आप मूर्ख बन रही हो। कोई भी अपनी आसक्ति की भावना में लीन हो सकता है किन्तु उतना नहीं जितना कि तुम—केवल ठोकरें और थप्पड़ खाती रहने को। क्या तुम अपनी सचाई और नैतिकता का इनाम पाना चाहती हो।

उसने एक घबड़ाहट में वह सब सुना। किन्तु जब उसने उसके समक्ष रोज़ का नाम लिया और कहा कि काउन्ट मुफट को पाकर वह विजयोन्मत्त है, तो उसकी आँखें चमक उठीं।

"ओह ! और यदि मैं भी चुन लूँ ··।"

उसने तुरन्त अपनी सहायता करने की तत्परता में सहयोग देने की बात कही। किन्तु उसने मना कर दिया। तब उसने उस पर दूसरे विषय को लेकर आक्रमण किया। उसने उसे बताया कि बोर्डनोव फाचरी के एक नये खेल को बना रहा है जिसमें एक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है जो उसके लिये (नाना के लिये) पूर्णतया उपयुक्त होगी।

"क्या ! एक नया खेल जिसकी भूमिका मेरे लिये उपयुक्त होगी !"

उसने विस्मय सहित व्यक्त किया : "किन्तु वह (फान्टन) उसमें होगा, उसने मुझे कभी नहीं बताया।"

नाना ने फान्टन का नाम नहीं लिया। इसके अतिरिक्त वह शान्त हो गई। वह अब रंगमंच पर कभी नहीं जावेगी। निःसन्देह लेबार्डेट को सन्तोष नहीं हुआ और वह मुस्कराहट सहित उससे अनुरोध करता रहा।

"तुम जानती हो, तुमको मुझसे भय खाने का कोई प्रश्न नहीं है। मैं मुफट को राजी कर लूँगा। तुम स्टेज पर जाओगी और तब मैं उसे एक भेड़ की भाँति तुम्हारे पास ले आऊँगा।"

"नहीं !" उसने तत्परता में उत्तर दिया।

और उसने उसे वहीं छोड़ दिया। उसकी वीरता उसके भाग्य पर रुदन कर रही थी। एक तुच्छ व्यक्ति इतना आत्म-बलिदान नहीं कर सकता जब तक कि सर्वत्र उसका डंका न बजाया जावे। किन्तु एक बात उसके मन में समा गई--लेबार्डेट ने भी पूर्णतः वही सलाह दी है जो फ्राँसिस ने दी थी।

उस संध्या, जब फान्टन घर लौटा तो उसने फाचरी के खेल के सम्बन्ध में प्रश्न किया। वह वैराइटी थियेटर में दो महीने से जा रहा है, फिर उसने उस भूमिका के विषय में उसको क्यों नहीं बताया।

"कौन सी भूमिका ?" उसने बात काटते हुए कहा : "तुम्हारा आशय है उस 'भव्य महिला' की भूमिका ? सचमुच, क्या तुम अपने में अब कोई विशेष महत्व मानती हो ? किन्तु तुम उस भूमिका को एक मक्खी से अधिक नहीं कर सकतीं। मेरे ही शब्दों में, तुम मुझे हँसा रही हो।"

नाना की आन्तरिक भावना पर यह एक बड़ी चोट थी। समस्त रात्रि फान्टन, नाना की मखौल उड़ाता रहा और 'मैडेमोइसले मार्स' कह कर सम्बोधित करता रहा। और जितनी वह उसकी हँसी करता रहा, उतनी ही वह अपने प्रति दृढ़ होती गई और एक विचित्र आनन्द का अनुभव करती रही—अपनी सनक की, शान्ति व सन्तोष के हेतु, जो उसकी अपनी दृष्टि में उसे अत्यधिक विशाल व स्नेहमयी प्रतिभासित करती है। जब-जब वह भोजन

प्राप्ति के हेतु अन्य लोगों से मिलती रही, तब तब फान्टन के प्रति स्नेह की भावना उसके हृदय में अधिकाधिक बढ़ती गई—उस सब अपमान, अमर्यादा व अनिच्छा के रहते भी, जिसे वह अपने अस्तित्व को बनाये रखने में अनुभव कर रही है। वह (फान्टन) उसका दूषण बन गया था जिसके लिये वह मूल्य चुका रही थी और उन थप्पड़ों और मारपीट-सहित भी उसे वह पृथक नहीं कर सकती थी। और वह (फान्टन) उसको इतना स्नेही और स्वामिभक्त पशु मानकर अपने स्वामित्व की आस्था को नष्ट कर रहा था। नाना उसके तन्तुओं में रोष भर देती थी। वह घृणा की चरम सीमा तक इस प्रकार पहुँच गया था कि अपने अधिकार भी खो बैठा था। जब भी बास्क ने उस सम्बन्ध में प्रकाश डाला तो वह अनजाने ही उत्तेजित होकर कहता कि वह उसकी व उसके अच्छे भोजन की किंचित भी परवाह नहीं करता है और वह किसी भी क्षण उसको निकाल बाहर कर सकता है—केवल इसी विचार से कि वह अपने सात हजार फ्रैंक किसी अन्य स्त्री पर व्यय करेगा।

एक रात, लगभग ग्यारह बजे, जब नाना घर लौटी तो उसने द्वार अन्दर से बन्द पाया। उसने पहली बार खटखटाया, कोई उत्तर नहीं; दुबारा खटखटाया, तब भी कोई उत्तर नहीं। इस प्रकार भी वह अन्दर प्रकाश देख रही थी। वहाँ फान्टन टहल रहा था। वह बिना रुके, निरन्तर द्वार खटखटाती रही और उसको बिगड़ते हुए बुलाती रही।

अन्त में फान्टन ने धीमी और भर्राई आवाज में कहा :

"उस शैतान के पास जाओ !"

तब उसने अपनी दोनों मुट्ठियों से द्वार थपथपाया।

"उस शैतान के पास जाओ !"

उसने अत्यधिक जोर से खटखटाया कि द्वार का शीशा टूटते २ बचा।

"उस शैतान के पास जाओ !"

और तब लगभग पन्द्रह मिनट तक उत्तर में वे ही शब्द आते रहे जैसे उसके द्वारा द्वार पर दिये गये अघातों की वे प्रतिध्वनि हों।

तब, यह देखकर कि वह थकी नहीं, फान्टन ने अनायास

द्वार खोल दिया; और सीढ़ियों पर खड़े होकर तथा दोनों हाथों को बाँधे हुए उसने उसी कठोर स्वर में कहा :

"निर्लज्ज ! सब तो कर चुकी ? अब और क्या चाहिये ? अच्छा हो कि तू हमको सोने दे । तू भली प्रकार देख सकती है कि मैं अकेला नहीं हूँ ।"

और सच, वह अकेला नहीं था । तब नाना ने उस बाक्स थियेटर की ठिगनी औरत को झांक कर देखा जो पहिले से ही अपनी रात्रि-पोशाक में थी, जिसके घुँघराले बाल सन जैसे थे और जिसकी आँखें मानो बर्मे के छेद हों और जो उस फर्नीचर के बीच में आनन्द ले रही थी, जिसका भुगतान स्वयं नाना ने ही किया था ।

तब फान्टन चौरस जगह पर खड़े होकर, भयानक सा दिखता हुआ तथा अपनी बड़ी उँगलियों को पसारता हुआ बोला :

"चली जाओ ! नहीं मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा ।"

अब नाना सिसकियों में भर गई । वह डर कर भाग आई । इस बार, वह थी जो निकाल बाहर की गई । अपने रोष में उसे मुफट का स्मरण हो आया और यह कि उसके साथ उसने कैसा व्यवहार किया था । किन्तु उसका बदला फान्टन ले, ऐसी क्या बात थी ?

बाहर, सबसे पहले उसने ध्यान किया कि यदि सैटीन के पास कोई न हो तो वह उसके पास जाकर सो जाय । वह उसे मकान के बाहर मिली क्योंकि उसको भी बाहर खदेड़ दिया गया था—उसके मकान-मालिक द्वारा जिसने उसके द्वार पर मोटा ताला बन्द कर दिया था, यह सब समस्त कानूनी अधिकारों के खिलाफ में क्योंकि फर्नीचर सैटीन का था । सैटीन ने उसे कोसा और गालियाँ दीं और उसको पुलिस की कमिश्नरी के समक्ष लाने की बात कहती रही । जो हो, आधीरात के घण्टे बज रहे थे अतः पहली जरूरत तो यह थी कि कहीं एक बिस्तर की व्यवस्था की जाय । तब सैटीन, यही सबसे ठीक मानकर कि पुलिस वालों को उसकी स्थिति का आभास न हो, नाना को एक महिला के यहाँ रूये डि. लावल में ले गई जो एक लाइसेंस प्राप्त रहने

का स्थान चला रही थी। उन्होंने पहली मंजिल में पीछे की ओर, बरामदे के सामने का एक छोटा कमरा लिया।

"मैं, मैडम रावर्ट के यहाँ जा सकती थी क्योंकि मेरे लिये वहाँ हर समय स्थान है किन्तु मैं तुम्हें नहीं ले जा सकती। वह अत्यधिक ईर्षालु होती जा रही है। एक रात उसने मुझे पीट दिया" सैटीन बोली।

तब, जब उन दोनों ने, अन्दर से द्वार बन्द कर लिया तो नाना, जिसने अभी तक अपने वक्ष से हाथ नहीं हटाया था, आँसुओं में फूट पड़ी। तब उसने बारम्बार उस कहानी को दोहराया जिसके अनुसार फान्टन ने उसके साथ गन्दी चाल खेली थी। सैटीन ने वह सब सावधानी से सुना और नाना को सन्तोष देती रही। वह नाना से भी अधिक तिरस्कार में भरती गई और पुरुष-मात्र को हृदय से कोसती रही।

"ओह, वे सुअर! ओह, वे सुअर! तुमको अब उनके साथ नहीं रहना चाहिये।"

तब कपड़े उतारने में उसने नाना को सहायता दी। वह विनम्र व सहायक स्त्री की भाँति उसके चारों ओर घूमती रही और चापलूसी के साथ कहती रही:

"हमको तुरन्त बिस्तर पर पहुँच जाना चाहिये। वहाँ हम अधिक सुख-शांति का अनुभव करेंगे। ओह! तुम भी कितनी मूर्ख हो कि परेशान होती हो। मैं कहती हूँ कि वे सब नीच हैं! उनके सम्बन्ध में आगे कुछ मत सोचो। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें अधिक स्नेह करती हूँ। अब चिल्लाना छोड़ो, केवल अपनी प्रिय सैटीन के लिये।"

बिस्तर पर तुरन्त नाना को उसने सान्त्वना देते हुए अपनी बाँहों में लपेट लिया ताकि फान्टन का नाम अब वह दुबारा न सुने। जब भी उसकी सखी के मुख पर उसका नाम आता, उसके ओठों पर चुम्बन जड़ कर वह रोक देती—विनम्र रोष-सहित। उसके बाल सब लटक रहे थे और वह बालकों की भाँति सुन्दर व कोमल दिख रही थी।

तब, शनैः शनैः इन सुखद आलिंगनों में नाना ने नपने अश्रु सुखा लिये।

सैटीन उसके साथ छेड़छाड़ करती रही और नाना उसका प्रत्युत्तर देती रही। दो के घण्टे बज गये और तब तक वे बत्ती जलाये रहीं। दोनों धीरे-धीरे हँस रही थीं और प्यार-भरी बातें करती जाती थीं।

तभी मकान में बड़ा शोरगुल सुनाई दिया। सैटीन—अर्ध नग्न, बिस्तर पर से कूद पड़ी और सुनने लगी।

"पुलिस !" डर से पीली पड़कर वह बोली : "आह ! अत्यानाश जाय ! सुख हमारे सौभाग्य में है ही नहीं। अब हम समाप्त हुए।"

तब उसने बताया कि कैसे बीस २ बार पुलिस वाले होटलों और निवास-स्थानों में तलाशी लेते रहते हैं। जब वे दोनों रूये डि. लावल में गई थीं तो उन्होंने उस ओर ध्यान ही नहीं दिया था। पुलिस के शब्द मात्र से नाना की सारी खिलखिलाहट विलीन हो गई और वह बिस्तर पर से कूद पड़ी। उसने कमरे में भागकर खिड़की खोल दी—पागल की भाँति आँखें फैलाकर, जो कूद पड़ने को तत्पर हो। किन्तु भाग्यवश—बरामदा बन्द था तथा काँच से ढका हुआ था और उस पर खिड़की की ऊँचाई तक तार का जाल खिंचा हुआ था। वह झिझकी नहीं और देहलीज पर पग बढ़ाते हुए अँधकार में विलीन हो गई। उसका सेमीज नीचे लटक रहा था और उसके नंगे पैर रात की तीखी हवा की चोट सी दे रहे थे।

"यहाँ रुको", भयातुर सैटीन चिल्लाई : "तुम अपने को मार डालोगी।"

तब, जब वे एक द्वार खटखटा रहे थे, उसने स्नेह-वश खिड़की बन्द कर ली और अपनी सहेली के कपड़े भोजन की आलमारी के नीचे डाल दिये। अब वह पूर्णतः भाग्याधीन होकर कहती रही—यदि वह उनकी सूची में होगी तो अच्छा होगा, आगे उस भय का अवसर ही न रहेगा। अब वह खूब गहरे सोने का बहाना कर पड़ रही। वह जम्हाई लेती रही तथा वार्तालाप करती रही। अन्त में एक भारी आदमी के लिये उसे द्वार खोलना पड़ा जिसके गन्दी दाढ़ी थी; वह बोला :

"अपने हाथ दिखाओ ! तुम्हारे सुइयों के कोई निशान नहीं हैं। तुम काम नहीं करतीं। आओ ! कपड़े पहनो।"

"किन्तु मैं सिलाई वाली औरत नहीं हूँ, मैं तो पालिश करने वाली हूँ", सैटीन ने निर्भीकतापूर्वक कहा।

किन्तु साथ ही उसने धीरे से कपड़े पहन लिये क्योंकि वह जानती थी कि बहस से कोई लाभ न होगा। मकान में इधर-उधर से चीख-पुकार आ रही थीं। एक लड़की दरवाजे पर अड़ी थी और हिलने का नाम नहीं ले रही थी। दूसरी—जो अपने प्रेमी के साथ थी, जिसके लिये वह जमानती बना—एक सम्भ्रांत महिला का अत्यधिक अपमान का सा अभिनय करती रही और प्रिफेक्ट-आफ-पुलिस के यहाँ कार्यवाही करने की धमकी देती रही। लगभग एक घण्टे तक वहाँ सीढ़ियों पर भारी जूतों की आवाजें आती रहीं; दरवाजों की जो जूतों की ठोकरों से काँप रहे थे; चीखों की जो बाद में सिसकियों में बदल गईं थीं और स्त्रियों के स्कर्टों की जो दीवाल से फट गये थे। वह था अचानक जागरण और औरतों के झुण्ड का त्रास-सहित गमन जिसको तीन पुलिस वाले बुरी तरह पकड़े थे। वे सब एक ठिगने, अच्छे बालों वाले और अत्यन्त विनम्र कमिश्नरी-आफ-पुलिस के नेतृत्व में थे। तब एक भयानक मौन समस्त मकान में छा गया।

उसके साथ किसी ने धोखा नहीं किया। नाना बच गई। वह पुनः कमरे में रेंग गई—काँपते हुए और एक प्रकार से भय से भरी हुई। उसके नंगे पैर तार के खरोचों के कारण रक्त-स्राव कर रहे थे। देर तक वह पलंग की पाटी पर बैठी चुपचाप सुनती रही। सुबह होते-होते वह सोगई तब आठ बजे के लगभग वह उठी और तुरन्त उस मकान को छोड़कर अपनी चाची की ओर भागी।

जब मैडम लेराट ने—जो अभी-अभी 'जो' के साथ नाश्ता कर रही थी—नाना को, उसके गन्दे कपड़ों में, और चिन्तित मुद्रा में इतने सवेरे देखा तो वह तुरन्त समझ गई।

"आह! तो वही हुआ, हुआ न?" उसने कहा: "मैंने कहा था कि वह तुम्हारी खाल तक खींच लेना चाहता है। ठीक है! अन्दर आओ। यहाँ तुम्हारा सदैव स्वागत है।"

'जो' उठ खड़ी हुई और श्रद्धा तथा अपनत्व में बुदबुदा गई : "अन्त में मैडम हमें मिल गईं। मैं मैडम की प्रतीक्षा कर रही थी।"

किन्तु मैडम लेराट ने इच्छा प्रकट की कि नाना, नन्हे लुई को तुरन्त प्यार करे क्योंकि, उसने कहा, बच्चे का आनन्द उसकी माँ के अच्छे व्यवहार में है। नन्हा लुई अभी भी सो रहा था जैसे वह रक्तहीन व बीमार हो। तब जब नाना उसके श्वेत व कण्ठमाला सदृश मुख पर झुकी तो उसके पिछले कुछ महीनों के सारे दुःख-दर्द उसके अन्तरंग को घेर लाये और जैसे उसके गले में रुँध गये, उसका गला घोटने को।

"ओह! मेरा गरीब नन्हा! मेरा गरीब नन्हा", उसने अपनी अन्तिम सिसकियों की चीख में पुकारा।

९.

वैराइटी थियेटर में वे लिटिल-डच का रिहर्सल कर रहे थे। प्रथम अंक अभी-अभी पूरा हो चुका था और वे दूसरा प्रारम्भ करने वाले थे। फुट-लाइट के निकट पड़ी दो पुरानी आराम कुर्सियों पर फाचरी व बार्डनोव आपस में बहस कर रहे थे, जब कि संकेत देने वाला पुराना कासर्ड, वह छोटा कुबड़ा, सरकने वाली कुर्सी पर बैठा था। उसके ओठों में एक पेंसिल लगी थी और वह पाण्डुलिपि के पृष्ठ उलटता जाता था।

"हाँ, तुम लोग किस प्रतीक्षा में हो ?" अचानक बार्डनोव बोला। वह अपनी भारी छड़ी लिये तख्तों को पीटता जाता था। "बेरीलोट, तुम प्रारम्भ क्यों नहीं करते।"

"मोशियो बास्क गायब है" बेरीलोट ने उत्तर दिया जो असिस्टेंट-स्टेज मैनेजर का कार्य कर रहा था।

अब वहाँ चिल्लाहट का एक तूफान उठ खड़ा हुआ। हरेक बास्क को पुकार रहा था। बार्डनोव उसको कोसने व गाली देने लगा।

"सब भाड़ में जाय। सदा इसी प्रकार होता है। कोई भी घंटी देता रहे या पुकारा करे, वे वहाँ होंगे जहाँ नहीं होना चाहिये और तब यदि चार बजे के बाद उन्हें रोका जाय तो वे बड़बड़ायेंगे।"

जो हो, बास्क गम्भीर, शान्ति सहित आया।

"हः, क्या, मुझे कौन चाहता है ? आह ! क्या यह मेरे प्रवेश का अवसर है। तो तुम वैसा बताते क्यों नहीं। ठीक, साइमन, मुझे मेरी चोटी दो। हाँ

उधर अतिथि आ रहे हैं, मैं प्रवेश करता हूं। मुझे कैसे प्रवेश करना चाहिये ?"

"क्यों ? द्वार से और क्या ?" मस्तिष्क का संतुलन बिगाड़ते हुये फाम्बरी चीखा।

'हां, किन्तु द्वार किधर है ?"

इस समय बार्डनोव ने बेरीलोट पर आक्रमण किया—पुनर्वार गालियां देते हुये और तख्तों पर जोर-जोर से अपना डंडा पटकते हुये जैसे वे टूट जायेंगे।

"सब नष्ट ! मैंने कहा था कि द्वार स्पष्ट करने के लिये वहाँ एक कुर्सी रक्खी जायगी।। हर रोज मुझे वही बात दोहरानी पड़ती है, बेरीलोट ! कहाँ है बेरीलोट ! अब दूसरा ! वे सब बन्द करके भाग जाते हैं।"

बेरीलोट, तभी तूफान में झुका हुआ सा आया और बिना एक शब्द बोले कुर्सी रख दी। तब रिहर्सल प्रारम्भ हो गया।

साइमम; अपना टोप चढ़ाये और अपने रोंयेदार चोगा पहने, एक सेविका के रूप में प्रकट हो रही थी जो फर्नीचर सँभाल रही हो। उसने रोकते हुये कहा—

"तुम जानते हो कि मुझ में अधिक गरमी नहीं है अतः मैं अपने हाथ दस्तानों में ही रक्खूंगी।" तब अपना स्वर परिवर्तित करते हुये उसने एक हल्की चीख सहित बास्क की प्रशंसा करते हुये कहा : "क्यों, वह काउन्ट है। आपका नम्बर पहला है, सर और मैडम अत्यधिक प्रसन्न होंगी।"

बास्क एक कीचड़ भरे हुये पायजामे में था और एक भारी ओवरकोट पहने और एक बड़ा सा गुलूबन्द गर्दन में लपेटे हुये था। अपने हाथ जेब में डाले तथा एक भारी टोप सिर पर लगाये उसने डूबती आवाज में कहा—उस समय वह अभिनय नहीं कर रहा किन्तु केवल आगे बढ़ता जा रहा था :

"अपनी मिस्ट्रेस, ऐमाबेला को तंग मत करो, मैं उसे विस्मित करना चाहता हूँ।"

रिहर्सल होता रहा। बार्डनोव अपनी भृकुटियाँ ताने, आराम कुर्सी पर डूबा हुआ बैठा था और उस सबको एक निराशा में सुन रहा था।

फाचरी, अधीर और निरन्तर अपनी स्थिति को बदलते हुये, प्रतिक्षण टोकने की चाहना में अपने आपको रोके रहा। किन्तु उसने अपने पीछे अंधकार तथा रिक्त मकान में कुछ फुसफुसाहट सुनी।

"क्या वह अन्दर है ?" बार्डनोव पर झुकते हुये उसने प्रश्न किया।

बार्डनोव ने सिर हिला दिया ! गिरेल्डीन की भूमिका स्वीकार करने के पूर्व, जो उसने प्रस्तावित की थी, नाना ने खेल देख लेने की इच्छा व्यक्त की थी, क्योंकि वह किसी प्रफुल्लित स्त्री की भूमिका करने में हिचक रही थी। वह चाहती थी कि वह स्टेज पर एक लेडी बनकर आवे। वह लेबार्डेट के साथ एक सन्दूक की परछांई में छिपी खड़ी थी जो बार्डनोव से उसके लिये सिफारिश कर रहा था। फाचरी ने एक बार उसकी ओर देखा फिर रिहर्सल में व्यस्त हो गया।

स्टेज का अग्रिम-भाग ही प्रकाशमान था। एक पाइप से लगी हुई एक बड़ी गैस बत्ती, फुटलाइट के जोड़ पर लगी प्रकाश दे रही थी जिसका प्रकाश एक रिफ्लेक्टर से द्विगुणित हो रहा था जो लगता था मानो निर्जनता में एक चमकती आँख वहाँ उस संदिग्ध उदासी में जगमगा रही हो। उस पतले गैस पाइप के विपरीत था कासर्ड जो पाण्डुलिपि को प्रकाश के निकट लिये खड़ा था और जो अपने असन्तोष को किंचित प्रकट कर रहा था। तब अधिक परछांई में बार्डनोव तथा फाचरी खड़े हो गये। उस भारी ढांचे के बीच, वह बत्ती, जो केवल कुछ गज की दूरी पर ही जल रही थी, किसी रेलवे-स्टेशन के खम्भे पर लगी लालटेन सी प्रतीत हो रही थी तथा अभिनेता बहुत सी परछांइयों जैसे लग रहे थे जो उनके समक्ष नृत्य कर रही थीं।

बचा हुआ स्टेज, जो एक प्रकार की सुन्दर धूल से भरा हुआ सा दिख रहा था—धूल जो गिराये गये मकानों के बीच उठी सी लग रही थी, एक भारी गिर्जे सा व्यस्त हो रहा था जिसमें मरम्मत लगी हुई हो। वहाँ सीढ़ियाँ, उसका ढांचा, उसके पार्श्व-दृश्य, धूमिल पेन्ट, सब कूड़े के ढेर सा लग रहा था और ड्राप-सीन ऊँचा २ उठा लग रहा था जैसे किसी भारी चीथड़े के गोदाम की शहतीर से लटकता हुआ फटा पर्दा हो जबकि सूर्य की एक प्रकाशकिरण ने जो

किसी खिड़की से घुस आई थी अँधकार को वेध रही थी और सोने की छड़ सी प्रतीत होती थी।

स्टेज के पिछले भाग में कुछ अभिनेता अपने संकेत की प्रतीक्षा में बैठे, वार्तालाप कर रहे थे। शनैः शनैः उनके स्वर तीव्र होते गये।

"मैं कहता हूँ, उधर! क्या तुम चुप नहीं बैठोगे?" बार्डनोव अपनी कुर्सी पर से क्रोधावेश में चिल्लाया।

"मैं एक शब्द नहीं सुन सकता! यदि तुम बातचीत करना चाहते हो तो बाहर जाओ। हम लोग काम कर रहे हैं। बेरीलोट! यदि अब कोई बात करेगा तो मैं सबको आग लगा दूंगा।"

थोड़ी देर के लिये उन्होंने अपनी जिह्वा दाब ली। उन्होंने एक छोटा समूह बना लिया था। वे एक बेंच व टूटी कुर्सियों पर बैठे थे जैसे किसी बगीचे में, वह संध्या का प्रथम दृश्य था, जो फिट करने के लिये वहाँ रख दिया गया था। फान्टन तथा प्रुलियर रोज़ मिगनन को सुन रहे थे जिसने फालीज-ड्रामेटिक्स थियेटर के मैनेजर से अभी एक बड़ा आकर्षक प्रस्ताव प्राप्त किया था। किन्तु एक आवाज उभरी।

"डचेज़! सेन्ट फर्मिन!" तब फिर, "डचेज़ तथा सेन्ट फर्मिन।"

प्रुलियर को दूसरी आवाज तक स्मरण नहीं रहा कि वह सेन्ट फर्मिन है! रोज़; जो डचेज हेलेन की भूमिका कर रही थी, उनके प्रवेश की प्रतीक्षा में थी। धीरे-धीरे अपने पैरों को रिक्त एवं गूँजते हुये तख्तों पर घसीटते हुये बूढ़ा बास्क लौटा और बैठ गया। तब क्लारिस ने उसे आधी बेंच बैठने को दे दी।

"वह इतना क्यों चीख रहा है!" बार्डनोव के सम्बन्ध में उसने प्रश्न किया। "यह शीघ्र ही असह्य हो जावेगा। वह अब कोई भी नया खेल तब तक तैयार नहीं कर सकता जब तक कि अपनी अन्तरङ्ग भावनायें इस रूप में निकाल न ले।"

बास्क ने अपने कन्धे फरफरा लिये। वह इन सब झगड़े-बखेड़ों से दूर था।

फान्टन फुसफुसाया :

"वह एक असफलता सूँघ रहा है। मैं सोचता हूँ यह सर्वाधिक भ्रष्ट खेल है।" तब रोज की कहानी पर लौटते हुये; उसने क्लारिस से कहा : "क्या तुम विश्वास करती हो, ऐह ! तीन सौ फ्रैंक प्रति रात्रि में सौ प्रदर्शनों का सौदा। इस सौदे में एक गाँव का मकान क्यों नहीं ? यदि उसकी पत्नी को तीन सौ फ्राँक का आफर मिला है, तो मिगनन बार्डनोव को बिना सूचना दिये ही त्याग देता।"

क्लारिस को उस आफर की सत्यता पर विश्वास था। फान्टन सदैव अपने परिचितों को गिरा हुआ देखना चाहता है। किन्तु साइमन ने उनको बीच में ही टोका। वह काँप रही थी। उसने अपने सब बटन बन्द कर रखे थे और अपनी गर्दन पर एक स्कार्फ लपेट लिया था और सूर्य की उस किरण की ओर झाँक रही थी जो उस स्टेज की उदास सर्दी में दिखाई दे रही थी। उसके बाहर नवम्बर के आकाश की सुन्न कर देने वाली सर्दी फैली हुई थी।

"और ग्रीन-रूम में आग तक नहीं है", साइमन बोली : "यह बड़ा दुःखदाई है। वह एक पशु की भाँति कंजूस होता जा रहा है। मैं तो घर जाने की सोच रही हूँ, मैं बीमार नहीं होना चाहती।"

"उधर शान्त हो जाओ !" बार्डनोव कड़कती आवाज में चिल्लाया।

तब कुछ समय तक अभिनेताओं की फुसफुसाहट के अतिरिक्त वहाँ शान्ति हो गई। उनकी भाव-भंगिमा भी अस्पष्ट थी और अपनी थकान कम करने के उद्देश्य से वे धीमे बोल रहे थे। तब भी, जब उन्हें एक विशेष प्रसंग ढूँढ़ने की चेष्टा थी तो उन्होने सभा-मंडप की ओर देखा। वह उन्होंने एक बड़ी गुफा सा प्रतीत हुआ जिसमें एक अस्पष्ट परछाई तैर रही थी जो एक साफ धूल की सी प्रतीत हो रही थी जैसे किसी बिना खिड़की के बड़े मकान में भरी हो।

हाउस पूर्णतः अन्धकार में था। केवल स्टेज से आती हुई मन्द प्रकाश रेखा मानो उदास निद्रा भर रही थी। छत की पेन्टिङ्ग

अंधकार में छिपी हुई थी। स्टेज-बाक्सों में ऊपर से नीचे तक दांयें और बांयें, पर्दों को बचाने के लिये मोटा व भूरा लिनेन दूर तक फैला हुआ था। उसी कपड़े की पतली पट्टियां खम्भों की मखमल पर लटकी हुई थीं तथा बालकनी को दोहरे लपेटवां टुकड़े में बांधे हुई थीं और अपनी पीली उदासी का सा आभास दे रही थीं। एक साधारण रंग में वहाँ केवल बाक्सों के गहरे काले स्थान भर दिख रहे थे जिनसे अलग-अलग मजिलों का पता लगता था और घुमाव कुर्सियों से प्रकट हो रहे थे जिनसे लाल रंग का मखमल काला सा दिखाई दे रहा था। वह भव्य चमकदार शैंसेलियर ,जो पूर्णतः भूमि तक गिरा दिया गया था, अपने लटकाव से स्टालों को भर रहा था जो प्रथक्करण को प्रतिभासित कर रहा था अथवा जनता के उस प्रस्थान को उस यात्रा के हेतु जिसस लौटने का कोई प्रश्न सम्भव नहीं था।

रोज, छोटी डचेज की भूमिका में किसी चलती औरत के मकान में खो गई तभी वह फुटलाइट की ओर बढ़ गई। उसने अपनी भुजायें ऊपर उठाई; वह उदासीनता में फूल रही थी--उस रिक्त हाउस के अन्धकार की ओर जो मृत्यु की विडम्बना में जैसे डूबा हुआ हो।

"हे भगवान ! कैसे चमत्कारी लोग हैं," उसने ऐसे कहा जैसे उसी प्रकार उसे भूमिका में ठीक प्रकार से बोलना था।

उस बाक्स की पीठ पर, जहाँ नाना बैठी थी, बड़े दुशाले में लिपटी हुई वह --जैसे रोज को निगल जाने की भावना में देख रही हो, लेबार्डेट की ओर घूमी और मन्द स्वर में प्रश्न करने लगी--

"तुम्हें विश्वास है कि वह आ रहा है ?"

"पूर्णतः निश्चित। निःसंदेह वह मिगनन के साथ आवेगा, एक बहाने के साथ। वह जैसे ही आवे तुम मेथिल्डे के ड्रैसिंग-रूम में चली जाना और मैं उसे वहाँ ले आऊँगा।"

वे काउन्ट मुफट के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे थे। वह एक भेंट थी जिसको लेबार्डेट ने निष्पक्ष स्थिति में आयोजित किया था। उसने बार्डेनोव

से अति गम्भीर वार्तालाप किया जिसे निरन्तर दो बार की असफलता ने बहुत किनारे पहुँचा दिया था। बार्डनोव ने शीघ्रता में अपना थियेटर काम में लाने की स्वीकृति दे दी थी तथा नाना को एक भूमिका भी प्रस्तावित करने का वचन दिया था क्योंकि कुछ रुपया उधार लेने के विचार में वह काउन्ट से अपने अच्छे सम्बन्ध बनाना चाहता था।

"और वह गेराल्डीन की भूमिका? उसके सम्बन्ध में क्या सोचती हो?" लेबार्डेट ने प्रारम्भ किया।

किन्तु नाना ने स्थिरतापूर्वक कोई उत्तर नहीं दिया। पहले अंक के अनन्तर, जिसमें लेखक ने ड्यूक डि बेवरिज द्वारा अपनी पत्नी सुन्दर गेराल्डीन को, जो एक ओपेरा की तारिका थी, धोखा देने की कथा प्रस्तुत की थी। दूसरा अंक प्रारम्भ हुआ जिसमें डचेज हेलेन, अवगुण्ठन सहित नृत्य होने वाली रात्रि को तारिका के यहाँ जाती है--उस अलौकिक-शक्ति का पता लगाने जिससे अच्छी स्त्रियों के पति रूपी जन्तु विजित किये जाते हैं और चंगुल में रक्खे जाते हैं। वह एक चचेरा भाई था—सुन्दर, आस्कर डि. सेण्ट फर्मिन जिसने उसे फुसलाने के ख्याल से वहाँ परिचित कराया था। और उसके नितान्त विस्मय में, अपने पहले पाठ के रूप में, उसने गेराल्डीन के द्वारा ड्यूक को मजदूरों को डाटने की सी भाषा में बुरी तरह फटकारते हुये सुना। इस पर भी ड्यूक बड़ा प्रसन्न दिख रहा था। इस दृश्य ने उसमें, इस भावना सहित. एक चीख उत्पन्न की—"आह, ठीक है, इसी प्रकार पुरुषों की खबर लेनी चाहिये।"

वह केवल इतना ही दृश्य था जिसमें गेराल्डीन की उस अंक में भूमिका थी।

जहाँ तक डचेज का प्रश्न था, उसे अपनी उस उत्कंठा के प्रतिफल शीघ्र ही सजा मिली।

एक बूढ़ा छैला—बेरन डि. टार्डिव्यू, एक सुन्दर-स्त्री के स्वरूप में उसे पकड़ ले जाता है और उस पर तीव्रता से आक्रमण करता है जबकि दूसरी ओर ब्यूरिवेज गेराल्डीन से समझौता कर लेता है जो एक आरामकुर्सी पर लेटी हुई है और वह उसका चुम्बन ले लेता है। चूंकि गेराल्डीन की भूमिका अभी

रिक्त थी अतः पुराना कासर्ड खड़ा हुआ और अपने स्थान पर गैराल्डीन की भूमिका के कुछ अंश उसी स्वर में बोलते हुए वह बास्क की बाहुओं पर सँभला रहा और अभिनय करता रहा।

वे इस दृश्य तक आगये थे। रिहर्सल परिश्रम के साथ चल रहा था, तभी अचानक फाचरी अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। इस समय तक उसने अपने को रोके रक्खा था किन्तु अब उसका धैर्य नष्ट हो गया। वह बोला :

"इस प्रकार नही।"

अभिनेता जम्हाइयाँ ले रहे थे, उनके हाथ आस-पास झूल रहे थे। फान्टन ने अपनी नाक फुलाते हुए तिरस्कारपूर्वक पूछा :

'क्या ? वैसा क्या नहीं है ?"

"तुम सब गलत हो। उस प्रकार नहीं; उस प्रकार नहीं", फाचरी ने, स्टेज पर अभिनय की चेष्टायें प्रदर्शित करते हुए, आगे बढ़कर कहा : "इधर देखो, फान्टन ! तुमको तारडिब्यू की उत्तेजना को भली प्रकार समझ लेना चाहिये। तुम इस प्रकार सामने झुको; इस भाव सहित इचेज को पकड़ते हुए। और तुम (रोज) इसके पश्चात् आगे बढ़ोगी। शीघ्र, इस प्रकार किन्तु बहुत तेजी से नहीं --तब तक नहीं जब तक कि चुम्बन का स्वर न सुन लो' तब उसने अपने को रोका और कासर्ड को पुकारा—तेजी में समझाते हुए : "गैराल्डीन ! चुम्बन दो—जोर से, ऐसे कि अच्छी प्रकार सुन पड़े।"

पुराना कासर्ड, बास्क की ओर घूमा और उसने अपने ओठ दृढ़ होकर चिपका दिये।

"ठीक ! ऐसा चुम्बन", फाचरी ने खिलखिलाते हुए कहा : "चुम्बन, एक बार फिर दो। हाँ, तुम देख रही हो, रोज ! मैं समय बिता रहा हूँ और अब मैं एक धीमी चीख निकालूँगा : 'आह ! उसने उसको चूम लिया।' किन्तु उसके लिये, तारडिब्यू स्टेज के पीछे तक तुम्हारा पीछा करेगा। फान्टन, तुम सुन रहे हो ? तुम स्टेज के पीछे तक उसका पीछा करोगे। अब पुनः चेष्टा करो, सब के साथ।"

अभिनेता उस दृश्य के लिये दुबारा प्रदर्शन करते रहे, किन्तु फान्टन ने

ऐसी अनिच्छा से अपना अभिनय किया कि वह पहले से भी अधिक भद्दा रहा। दो बार फिर फाचरी ने निर्देश दिये। उन सबने जैसे बड़ी उदासी में उसको सुना। उन्होंने एक दूसरे को ऐसे देखा जैसे फाचरी उनसे सिर के बल चलने को कह रहा हो।

"नहीं! यह मेरे लिये अत्यधिक है। मैं नहीं समझ सकूँगा," फान्टन ने अशिष्ट शब्दों में कहा।

इतनी देर तक बार्डनोव ने अपना मुँह नहीं खोला था। वह अपनी आराम-कुर्सी की गहराई में डूबा हुआ था जिसका आँखों तक आया हुआ हैट तथा मोटा पेट दीख रहा था जिसके आगे उसकी छड़ी रक्खी थी, उसके पैरों के बीच में। लग रहा था मानो वह सो रहा है तभी वह अचानक उठ बैठा।

"मेरे नौजवान दोस्त! यह वाहियात है।" उसने फाचरी से मीठी आवाज में कहा।

"कैसे वाहियात है?" लेखक ने जैसे पीले पड़कर कहा: "तुम स्वयं वाहियात हो।"

बार्डनोव तुरन्त उत्तेजित हो गया। उसने वाहियात शब्द को पुनः दोहराया और उससे भी कठोर शब्द को जैसे खोजता रहा। फिर अशक्त, निरर्थक, तुच्छ आदि शब्दों को दोहराता रहा। वह बड़ा अप्रिय हो जायगा; वे कभी अंक समाप्त ही न कर पायेंगे। फाचरी उत्तेजित होते हुये भी उन बातों का बुरा नहीं मान रहा था क्योंकि इस प्रकार की झिड़कियां—जब भी वे दोनों मिल कर किसी नये खेल के लिये काम करते थे तभी, होती रहती थीं और तब घुमा फिराकर उसने उसे जंगली कह डाला।

बार्डनोव अपने समस्त धैर्य को खो बैठा। उसने अपनी छड़ी अपने हाथ में थाम ली और पागल बैल की तरह हाँफता हुआ बोला:

'भ्रष्ट! शैतान के पास जाओ। इस गँवारपन में···हां गँवारपन में और पन्द्रह मिनट नष्ट हो गये। बुद्धि का तो किंचित अंश है ही नहीं। और कितना सरल है यह। तुम, फान्टन! तुमको खिसकने की जरूरत नहीं है। तुम, रोज! तुम थोड़ा इस प्रकार से हिलो, तुम समझीं, किन्तु अधिक नहीं,

और तब तुम सामने आओ। अब सब लोग दुबारा कोशिश करो। कासर्ड, चुम्बन दो।"

दृश्य कोई अच्छा नहीं बन पड़ा। शंकायें और बढ़ गई। तब बार्डेनोव ने हाथी की सी नकल करना प्रारम्भ कर दिया। जबकि फाचरी, तिरस्कार में तथा अपने कन्धों को हिलाते हुये, दयनीय स्थिति में खड़ा रहा। तब फान्टन भी उसमें घुसा और बास्क भी अपने सुझाव देने का साहस करने लगा। रोज़, थक कर, उस कुर्सी पर से, जो द्वार के संकेत के लिये रक्खी गई थी, उठ खड़ी हुई। इस शंकालु स्थिति को और बिगाड़ते हुये साइमन ने अपने संकेत को सुन लेने की सी शीघ्रता में प्रवेश किया—उसी अस्त-व्यस्तता में वह अन्दर चली आई। बार्डेनोव इससे इतना रुष्ट हुआ कि अपनी छड़ी को विचित्र भयानकता से चारों ओर घुमाता रहा जिसने साइमन को बहुत अधिक डरा दिया। वह बहुत बार उन स्त्रियों पर, जो उसकी परिचित होती थीं, रिहर्सल के समय मारपीट कर देता था।

"घर जाओ! भाड़ में झोंको उस सबको! यदि मुझे इस प्रकार तंग किया जायगा तो मैं खेल बन्द कर दूँगा।"

फाचरी ने उसका टोप उसके सिर कर और दाब दिया और थियेटर से चले जाने का सा अभिनय करने लगा किन्तु वह स्टेज के पिछले भाग में खड़ा रहा और बार्डेनोव को अपनी कुर्सी पर हाँफकर पसीना पोंछते हुये बैठते देखकर पुनः लौट आया। वह अपनी कुर्सी पर जा बैठा। वे दोनों कुछ देर तक बराबर-बराबर बैठे रहे, बिना हिले-डुले। एक प्रकार से सारे हाउस में निस्तब्धता छाई रही। अभिनेता लगभग दो मिनट तक मौन प्रतीक्षा करते रहे। वे एक प्रकार से अत्यधिक निराशा व अशान्ति की स्थिति में थे जैसे वे किसी बड़े थका देने वाले कार्य को करके बैठे हों।

"हाँ, प्रारम्भ करो," पूर्णतः शान्त और अपनी साधारण आवाज में बार्डेनोव बोला।

"हाँ, प्रारम्भ करो"; फाचरी ने दोहराया : "दृश्य हम लोग कल व्यवस्थित कर लेंगे।"

तब वे फैलकर बैठ गये और रिहर्सल का जैसे सर्वाधिक थका देने वाला कार्य अरुचि-सहित प्रारम्भ हो गया। मैनेजर तथा लेखक के बीच हुए झंझट के समय फान्टन तथा अन्य लोगों ने अपना समय बड़े आनन्द में व्यतीत किया। वे बेंच व टूटी कुर्सियों पर बैठे थे तथा नाना प्रकार के मजाक व व्यंग्य करते जाते थे। किन्तु जब साइमन अपने पीछे एक धमाका साथ लिये सिस-कियां भरते हुए सामने आई तो वे सब अधिक खिन्न हुए और कहते रहे कि उस बूढ़े सुअर को फाँसी लगाई जाय। वह अपनी आँखें पोंछती रही और सिर हिलाती रही। वह सब समाप्त हो चुका है। वह उसे छोड़ देगी क्योंकि स्टेनियर ने एक दिन पूर्व ही उससे समझौता करना चाहा था। क्लारिस अत्यधिक विस्मित थी—बैंकर के कोई लड़का नहीं था किन्तु प्रुलियर हँसता रहा और उसे याद दिलाता रहा कि उस गिरे हुए ज्यू ने किस प्रकार 'रोज' के द्वारा अपना प्रचार कराया था—उस समय जब वह लेन्ड्स के नमक के कारखाने के शेयरों का काम करता था। साइमन बड़े आकर्षण-सहित वह सब सुनती रही।

क्लारिस गत एक सप्ताह से अत्यधिक रुष्ट थी। पन्तु लॉ फेलो को, जिसको उसने गागा की भुजाओं में लिपटे हुए देखा था—अभी-अभी एक अमीर चाचा का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ था। उसके कोई भाग्य नहीं है। वह सदैव ही अभागी किरायेदार के लिये मकान गरम करती है। और उस पर भी उस दुष्ट बार्डनोव ने उसे केवल पाचास पंक्तियों की एक भूमिका दी है जब कि वह सुगमता से गिराल्डीन की भूमिका करने की क्षमता रखती है। वह उस भूमिका की आशायें लगाये हुए थी कि नाना यह कार्य करने से इन्कार कर देगी।

"हाँ! और मैं?" प्रुलियर ने तिरस्कार-सहित कहा: "मुझको दो सौ पंक्तियाँ भी नहीं मिलीं। मैं तो उस भूमिका को मना करना चाहता हूँ। सेन्ट फर्मिन की भूमिका करने के लिये मुझसे कहना मेरा अपमान करना है, वह इतना भद्दा है जैसे किसी आलमारी में पीस देना। और खेल क्या है, मेरे दोस्त! तुम जानलो कि वह निश्चित् असफल होगा।"

तत्काल ही वहाँ साइमन, जो अब तक वैरीलोट से वार्तालाप कर रही थी, आई और साँस खींचते हुए बोली : "मैं कहती हूँ, नाना यहाँ है।"

"कहाँ ?" अपने स्थान से तुरन्त उठकर देखने के ख्याल से, क्लारिस ने प्रश्न किया।

यह सूचना, पल भर में एक से दूसरे तक पहुँच गई। प्रत्येक देखने के लिये, आगे झुका। एक पल के लिये रिहर्सल ठप्प हो गया किन्तु बार्डनोव अचानक बिगड़कर चिल्लाते हुए बोला :

"हां, क्या मामला है ? अंक समाप्त कर लो, क्या नहीं कर सकते ? और वहाँ चुपचाप बैठो। यह आपस की झक-झक असह्य है।"

नाना अब भी छैन को अपने बाक्स में बैठी देख रही थी। लेबार्डेट ने उसे दो बार सम्बोधित किया किन्तु उसने अनिच्छापूर्वक अपनी कोहनी से उसे अपने से छुड़ाते हुये, हटा दिया। दूसरा अंक अभी समाप्त होने ही को था कि स्टेज के पिछले भाग में दो मूर्तियाँ दीख पड़ीं। वे ज्योंही आगे की ओर बढ़े—कोई आवाज न हो इसके विचार से, वे पंजों के बल धीरे-धीरे चले आये। नाना ने मिगनन को काउन्ट मुफट के साथ पहचान लिया जिन्होंने उस खामोशी में बार्डनोव की अभ्यर्थना की।

"आह ! वे आ गये", नाना ने सन्तोष की सास लेते हुए कहा।

रोज मिगनन ने अपने अन्तिम वाक्य कह डाले। तब बार्डनोव ने कहा कि वे दूसरा अंक पुनः दोहरावें तब तीसरा प्रारम्भ करें। तब रिहर्सल को छोड़कर उसने अधिक शिष्टता तथा विनम्रतापूर्वक काउन्ट का सत्कार किया जबकि फाचरी ने अपने आस-पास घिरे अभिनेताओं में अपनी व्यस्तता का विशेष बहाना किया। मिगनन अपने हाथ पीछे किये, सीटी बजाता रहा और सरलतापूर्वक अपनी पत्नी की ओर देखता रहा जो अत्यधिक घबड़ाई सी दिख रही थी।

"हाँ, तो हम लोग ऊपर चलें ?" लेबार्डेट ने नाना से प्रश्न किया : "मैं तुमको एक कमरे में आराम से बैठा दूँगा तब उसके लिये लौट आऊँगा।"

नाना ने तुरन्त बाक्स छोड़ दिया। उससे बाक्सों और स्टालों की ओर जाने वाले मार्ग को देखना था। तब बार्डनोव ने अनुमान लगा लिया कि वह वहाँ है और जब वह अँधकार में तेजी से आगे बढ़ रही थी, उसने स्टेज के पीछे के कारीडोर के अन्त में जाकर उसे पकड़ लिया। वह एक तंग जगह थी, जहाँ एक गैस-लैम्प रात-दिन जलता रहता था। वहाँ, सारे मामले को तुरन्त निपटाने के विचार से उसने उस पर गेराल्डीन की भूमिका के सम्बन्ध में चर्चा छेड़ दी।

"आह! क्या भूमिका है! उसमें कैसा सुन्दर प्रकरण है! वह पूर्णतः तुम्हारे उपयुक्त है। कल रिहर्सल में आओ।"

नाना पूर्णतः खुश हो रही थी। उसने तीसरा अंक देखने की इच्छा प्रकट की।

"ओह! तीसरा अंक अति-सुन्दर है। डचेज अपने मकान में ही एक तेज औरत का अभिनय करती है जो ब्यूरीवेज को परेशान करती है और एक सबक देती है। और तब उसमें एक बड़ा मनोरंजक पेंच है। टारडीव्यू पहुँचता है और सोचता है कि जैसे वह किसी नर्तकी के यहाँ आ गया है...।"

"और उस सब में गेराल्डीन क्या करती है", नाना ने टोकते हुए प्रश्न किया।

"गेराल्डीन?" बार्डनोव ने किंचित सहमते हुए दोहराया : "उसका एक दृश्य है। लम्बा तो नहीं किन्तु सर्वोच्च है। वह पार्ट तुम्हारे लिये बड़ा सुन्दर और उपयुक्त है। मैं कहता हूँ—आओ और एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर कर दो।

एक पल के लिये नाना ने उसके चेहरे पर सीधे दृष्टि डालकर देखा और तब बोली : "हम लोग धीरे-धीरे उस पर बात कर लेंगे।"

तब वह लेबार्डेट के निकट जा पहुँची जो सीढ़ियों पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। थियेटर में उपस्थित प्रत्येक ने उसे पहिचान लिया। वे आपस में फुसफुसाते रहे। उसका लौटना प्रुलियर को एक तूफान दिख रहा था। क्लारिस बड़ी चिन्तित थी—अपनी उस भूमिका के प्रति जिसकी वह कामना कर रही थी।

फान्टन ने पूर्णतः उदासीनता प्रदर्शित करने का बहाना किया। उसके लिये यह उचित नहीं था कि वह उस स्त्री को बुरा-भला कहे जिसको उसने कभी भी प्यार किया हो। उसके हृदय में उसकी उस पुरानी आसक्ति में, जो अब घृणा में परिवर्तित हो गई थी—उसके प्रति तीव्र ईर्ष्या की भावना भरी हुई थी; नाना की उसके प्रति अत्यधिक निष्ठा के कारण, उसके सौन्दर्य के कारण, और अपनी उस दुरभि-पाशविक-प्रकृति के आन्तरिक द्वन्द्व के कारण जिसमे उसने विकार सहित सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था।

जो हो, जब लेबार्डेट लौटा और काउन्ट के निकट पहुँचा तो उसने देखा कि नाना की उपस्थिति से सतर्क रोज़ मिगनन पूर्व से ही उस पर पहरा जमाये हुए है और वहाँ जो कुछ भी सम्भावित था उसको तत्काल समझ गई। मुफट से वह तंग थी किन्तु इस प्रकार अपनी स्थिति को पलटता देखना ही उसके लिये बहुत कुछ था। वैसे प्रसंगों पर जैसी चुप्पी वह अपने पति की ओर से साध लेती थी उसको अनायास भंग करते हुये उसने स्पष्टतः कह डाला :

"तुम देख रहे हो क्या चल रहा है ? देखो, मैं कहे देती हूँ कि उसने यदि पुनः यह प्रयत्न किया कि स्टेनियर का सा पुनः धोखा हो तो मैं उसकी (नाना की) आँखें बाहर निकाल लूँगी।"

मिगनन ने शान्त और गम्भीर होकर, जैसे सब कुछ देख रहा हो, अपने कन्धे हिला लिये।

"शान्त रहो, रहोगी ?" वह बुदबुदाया : "केवल अपनी जिह्वा को रोकने की मुझ पर कृपा करो।"

वह जानता था कि वह किसलिये था। वह, जो कुछ भी सम्भव था, मुफट से पा चुका था। वह सोचता था कि नाना के एक संकेत पर वह लेट जायेगा और नाना के पैर का स्टूल बन जायगा। उसकी आसक्ति के स्वरूप से मोर्चा लेना सम्भव नहीं था। और यह भली प्रकार से समझते हुये कि पुरुष क्या है उसका केवल यही ध्यान था कि इस स्थिति में जितना अधिक से अधिक वह पा सके, पाये। परिस्थितियों को वह देखे व समझेगा। और उसने प्रतीक्षा की।

"रोज, यह तुम्हारा दृश्य है !" बार्डनोव चिल्लाया : "दूसरा अंक ...दुबारा ।"

"जाओ !" मिगनन बोला : 'इसे मुझे सँभालने को छोड़ दो ।

तब अपने मसखरे स्वभाव सहित वह फाचरी की, उसके खेल की प्रशंसा करते हुये, सराहना करता रहा और स्वयं आनन्दित होता रहा । वह एक सर्वोच्च खेल था तभी उसकी वह ग्रान्ड लेडी उतनी सम्भ्रान्त थी । वह स्वाभाविक तो नहीं है । तब उसने खिलखिलाते हुये पूछा कि ड्यूक डि. ब्यूरीवेज का मूल नायक कौन है—वह मूर्ख जिसके साथ गेराल्डीन ने जैसा चाहा किया । फाचरी, रोष से रहित—मुस्कराने लगा । किन्तु बार्डनोव ने मुफट की ओर देखते हुए समझा कि वह बिगड़ा हुआ है और उसने मिगनन को भी गम्भीर बना दिया जो विचारों में डूब गया ।

"सब अट्ट ! क्या हम इसे कभी प्रारम्भ भी करेंगे", मैनेजर किट-किटाया : "बेरीलोट ! बास्क वहाँ नहीं है ? क्या वह सोचता है कि अब आगे भी वह मुझे मूर्ख बनाता रहेगा ।"

किन्तु तत्काल ही बास्क प्रकट हुआ और चुपचाप यथास्थान जा बैठा । जैसे ही लेबार्डेट काउन्ट के साथ उठकर गया—रिहर्सल प्रारम्भ हो गया । नाना को पुन: देखने के विचार-मात्र से काउन्ट काँप रहा था । उनके झगड़े के बाद उसने अपने को संसार में अकेला समझ लिया था । तभी 'रोज' के द्वारा अधिकृत होकर उसने अपने आप को ढीला कर लिया था । वह यह नहीं समझ पा रहा था कि अपने समय को कहाँ व्यतीत करे । वह केवल इतना ख्याल कर रहा था कि यह सब कुछ उसकी रुचियों एवं आदतों का परिवर्तन मात्र है । इसके अतिरिक्त अपनी उस अचेतावस्था में, वह प्रत्येक वस्तु से मोह त्यागना चाहता था । वह नाना से मिलने को भी रोकता रहा और काउन्टेस से किसी प्रकार के स्पष्टीकरण को भी बचाता रहा । वह सोचता था कि उसकी वह विस्मृति, उसकी मर्यादा के अनुरूप है । किन्तु उस सबसे पृथक एक अदृश्य शक्ति भी निरन्तर कार्य कर रही थी । और तब नाना ने अपनी

स्मृतियों के आन्दोलन में उसे विजित कर लिया। उसकी मांसलता की जिज्ञासु दुर्बलता सहित वह नवीन भावनाओं, नवीन कल्पनाओं में भर गया जो सर्वथा कोमल व परम्परानुकूल थीं। वह धूमिल हृदय जिसमें वह कर्मशील था, भुलाया जा चुका था। उसे फान्टन का कोई ध्यान नहीं था। तब उसने नाना को उसे बाहर निकालने का आदेश देते जैसे सुना ही नहीं। न ही अपनी पत्नी के कुत्सित-कर्मों के प्रति व्यक्त कोई बात ही उसे ध्यान थी। वे केवल शब्द थे, जो जैसे ही कहे गये, चुपचाप निकल गये और तब उसके अन्तस्तल में एक पीड़ा थी जिसकी कसक उसे भींच रही थी। कभी-कभी उसके विचार बालकों के से हो जाते। वह अपने को दोष देता। वह कल्पना करता कि यदि उसने नाना को वास्तविक प्रेम किया होता तो विश्वासघात न होता। तब उसकी वेदना असह्य हो जाती और वह सर्वाधिक दुःखी हो जाता। वह उस पुराने घाव की एक चुभन थी—वैसी अन्धी व उद्विग्न चाहना नहीं, जो कुछ मोह करे। वह तो उस स्त्री के प्रति एक ईर्षालु प्रेम था जो चाहता था उसे एकान्तिक, उसे ही नहीं उसके सुललित केश, उसकी सुमधुर आकृति, उसका अंग-सौष्ठव को, जो उसमें उत्तेजना भर रहा था। जब कभी भी वह नाना की आवाज की प्रतिध्वनि की कल्पना करता तो उसके अंग-अंग में एक स्फुरण एवं कंपन भर जाता। वह एक कृपण की आवश्यकताओं की भाँति तथा असीम कोमलता सहित उसकी इच्छा करता था। और तब उसके उस मोह ने उसकी अन्तर्वेदना सहित उसको ऐसा जकड़ा था कि लेबार्डेट के पहले वाक्य पर कि एक भेंट के द्वारा उसका सम्मान सम्भावित है उसने अपने को लेबार्डेट की बाहों में विचित्र प्रकार से डाल दिया, जिस पर वह बाद में लज्जा का अनुभव करता रहा कि उसकी सी मर्यादा के व्यक्ति को अपने अन्तर्भावों को इस प्रकार प्रकट नहीं करना चाहिये। किन्तु लेबार्डेट जानता था कि कैसे 'देखो और भूल जाओ'। उसने काउन्ट को सीढ़ियों पर रोक कर एक अन्य चालाकी का परिचय दिया और इन साधारण शब्दों में कहता गया—

"दूसरी मंजिल पर दाहिने घूम जाना। द्वार को केवल धक्का देना है।"

भवन के उस एकान्त कोने में मुफट ने अपने को अकेला पाया। वह सीढ़ियों पर धीरे-धीरे चढ़ा और हँफनी न आ जाय इसके लिये अपने को सँभाले रहा। उसका हृदय उसके वक्षस्थल के नीचे जैसे कस बांध दिया गया था। वह यह भी घबड़ा रहा था कि कहीं नाना के सामने जाकर बच्चों की भाँति रोने और सिसकियाँ न भरने लगे। जब वह पहले मोड़ पर पहुँचा तो दीवाल की ओर झांका। उसका यह विश्वास था कि उसे कोई देख नहीं रहा है, और अपना रूमाल अपने मुँह में दाब कर वह उन घुमावदार सीढ़ियों पर देखता रहा जहाँ लोहे की रेलिंग निरन्तर प्रयोग के कारण अधिक चमक रही थी तथा वहाँ की वे नमी पाई दीवालें सब मिलाकर कुछ ऐसा वातावरण उपस्थित कर रही थीं जैसे वह कोई चकला—हो, अपनी पूर्ण नग्नता का दिग्दर्शन करता हुआ उस काहिली के क्षणों में जब कि चारों ओर लड़कियां सो रहीं हों। जब वह दूसरे घुमाव पर पहुँचा तो उसने उस कछुए की सी आकृति वाली बिल्ली को देखा जो सबसे ऊपरी सीढ़ी पर एक कोने में गुड़मुड़ी बांध सो रही थी। वह बिल्ली अपनी आँखें आधी मूंदे हुए उस समस्त भवन में अकेले ही सब कुछ देख रही थी और सदैव प्रत्येक रात्रि को स्त्रियों द्वारा छोड़ी हुई भारी गन्ध को अपनी निद्रा सहित सूँघती रहती थी।

दाहिनी ओर जैसा लेबार्डेट ने कहा था—ड्रेसिंग-रूम के द्वार को उसने थोड़ा धक्का दिया। नाना वहाँ प्रतीक्षा कर रही थी। उस फूहड़ मेथील्डे ने उसके ड्रेसिंग-रूम को अव्यवस्था में डाल रक्खा था। टूटे बर्तन इधर-उधर छितरे पड़े थे, एक गन्दा हाथ धोने का बर्तन दिख रहा था और एक कुर्सी जिस पर लाल रंग के पाउडर के धब्बे लगे हुये थे ऐसी लग रही थी जैसे उस चलती कुर्सी पर किसी के रक्त-स्राव हो रहा था। कागज, जो दीवालों व छत पर लगा हुआ था साबुन के पानी से चिकना व भीगा हो रहा था। वहाँ ऐसी दुर्गन्धि थी कि लिवेंडर की सुगन्धि भी सड़ गई थी अतः नाना ने द्वार खोल दिया। वह एक मिनट के लिये वहाँ खड़ी हो गई और स्वच्छ वायु को खींचने लगी। मैडम ब्रोन भी झुक कर एक झलक देखने को आतुर हो उठी जिसको उसने उस तंग बरामदे के आगे के छायादार स्थान के हरियाली

वाले फ्लैगस्टोन को तेजी से साफ करते हुए सुना था। बाउलेवर्ड या निकट की सड़कों पर किसी भी गाड़ी के चलने का शब्द नहीं सुनाई दे रहा था। गाँव की ही भाँति वहाँ भी सर्वत्र शान्ति थी। कभी-कभी सूर्य की किरणें अन्दर घुस आती थीं। अपनी आँखें उठाने पर नाना ने सामने चमकते मकानों और उनकी चमकती काँच की छत्तों को देखा जो पैसेज की गैलरी में दीख पड़ रही थीं। तब बहुत दूर, उसके समक्ष रूये विवेना की उच्च अट्टालिका थी, जिसमें कोई चहल-पहल नहीं दिख रही थी—लग रहा था जैसे वह खाली हो! एक छत पर एक फोटोग्राफर ने नीले शीशों का एक बड़ा सा पिंजड़ा बना रक्खा था जो बड़ा सुन्दर दिख रहा था। नाना उस दृश्यावलोकन में डूबी हुई थी तभी उसे प्रतीत हुआ कि कोई द्वार खटखटा रहा है। वह घूमी और बोल पड़ी :

"अन्दर आओ!"

काउन्ट को अन्दर आता देख उसने खिड़की बन्द कर दी। उस समय सर्दी थी और यह अहितकर था कि मैडम ब्लान उनकी बातचीत सुने। उन्होंने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक एक दूसरे पर दृष्टिपात किया। तब उसे स्थिर और मौन देखकर, नाना हँसी और बोली : "तो तुम हो, एक महान् मन्द-बुद्धि।"

उसके आवेग से प्रतीत हो रहा था जैसे वह सुन्न हो गया है। उसने उसे मैडम कहा और यह कि उसे पुनः देखकर वह अत्यधिक प्रसन्न है। अतः अपनी इच्छानुसार जैसे वह मामले को ठीक करना चाहती थी वह अपनत्व में डूबती गई और बोली—

"अब अपनी मर्यादा पर अधिक मत टिको! जैसा तुम चाहते थे कि हम एक दूसरे को चीनी कुत्तों के जोड़ों की भाँति देखते रहे—वह हमारे लिये उचित नहीं था। हम दोनों ही गलत थे।। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ।"

और यह निश्चित हो गया कि वे उस सम्बन्ध में अब कभी कोई वार्तालाप नहीं करेंगे। उसने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया। वह काउन्ट शान्त होता जा रहा था किन्तु अति प्रसन्नता में उभरे हुए उसके शब्द ओठों में ही बन्द थे। उसकी शान्ति पर विस्मित होते हुये उसने अपनी तुरप को स्तैमाल किया।

"ठीक है, अब तुम समझदार हो," उसने थोड़ा मुस्कराकर कहा। "जब हमने अपनी शान्ति स्थापित कर ली है, हमको एक दूसरे से हाथ मिलाना चाहिये और भविष्य में अच्छे मित्र बनना चाहिये।"

"अच्छे मित्र ?" अनायास उद्विग्न होकर काउन्ट बुदबुदाया।

"हाँ, मेरे लिये यह कहना अवाञ्छनीय है किन्तु मैं तुम्हारे मान की कामना करती हूँ। इस समय हमने मामले का स्पष्टीकरण कर लिया है। यदि आगे हम एक दूसरे को कभी भी कहीं मिलें तो ऐसा प्रतीत न होना चाहिये कि मेरा तुम्हारा एक मूर्खों का जोड़ा है।"

वह बीच में टोकने ही वाला था, तभी वह बोली :

"मुझे पहले कह लेने दो। कोई आदमी···तुम सुन रहे हो ? कोई आदमी मुझ पर कभी आँख नहीं उठाता। किन्तु तुम्हारे साथ लगता है जैसे मुझे बड़ा खेद होता है। हमारा भी कोई अपना महत्व है, मेरे परिचित दोस्त !"

"किन्तु वह वैसा नहीं है," तीव्र होकर काउन्ट बोला : "बैठ जाओ, और सुनो।"

और जैसे वह डरता रहा कि कहीं वह चली न जाय, काउन्ट ने नाना को वहाँ पड़ी अकेली कुर्सी की ओर ढकेल दिया। वह टहलता रहा और उसकी उद्विग्नता बढ़ती गई। वह निकट का ड्रैसिंग-रूम छोटा व सूर्य के प्रकाश से भरा हुआ था। वहाँ का वातावरण भी बड़ा मधुर था और एक भी शब्द बाहर नहीं सुनाई पड़ रहा था।

नाना के समक्ष खड़े होते हुये वह बोला : "सुनो ! मैं तुम्हें वापस लेने आया हूँ। हाँ, मैं चाहता हूँ कि तुम पुनः मेरे साथ रहो। तुम उसको भली प्रकार जानती हो फिर इस प्रकार की बातें क्यों करती हो ? कहो, स्वीकृति दो ?"

उसने अपना मस्तक थाम लिया और अपनी उस रक्त-वर्ण सरकने वाली कुर्सी को नाखूनों से खुरचती रही। तब काउन्ट को इतना उद्विग्न देखकर नाना ने धैर्य से काम लेने का विचार किया।

अन्त में उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया। वह गम्भीर हो गई और आकृति में उदासी की झलक लाने में सफल भी।

"ओह! असम्भव, ओछे आदमी! मैं तुम्हारे साथ पुन: कभी नहीं रह सकती।"

"क्यों?" और जैसे महान वेदना की लहर उसके चेहरे पर दौड़ गई।

"क्यों? ह: ह:—इसलिये कि वह असम्भव है। यह सब कुछ है। मैं वैसी कामना नहीं करती।"

वह उसकी ओर देर तक अपलक निहारता रहा; फिर अपने पैर मोड़ता हुए भूमि पर झुक गया। वह रुष्ट होती रही और यह कहकर सन्तुष्ट हो गई।

"ओह! निरे बालक मत बनो!"

किन्तु वह वैसी ही क्रिया कर रहा था। उसके (नाना के) पैरों पर गिर कर, उसने नाना को कमर से पकड़ लिया और कठोरतापूर्वक दावे रहा। उसका चेहरा नाना के घुटनों पर था, जिसे वह अपने वक्षस्थल में दाब रहा था। जब उसने नाना को इस प्रकार समेट लिया और पुन: उसकी मांसलता की मखमली गुदगुदाहट को तथा भीने वस्त्रों के अन्दर दबे अंग-प्रत्यंगों का अनुभव किया तो उसका शरीर रोमांच से काँपता रहा। तब ज्वर के कंपन सदृश्य वह विचलित होता रहा तथा नाना को और कठोर होकर भींचता रहा जैसे वह उसी का एक अंग बन जाना चाहता हो। वह पुरानी कुर्सी चरमरा गई। चाह की सिसकियाँ उस नीची छत्त के नीचे घुटती रहीं—उस वातावरण में जिसकी सड़ी-गन्ध ने वहाँ दुर्गन्धि भर दी थी।

"हाँ, तब आगे और क्या?" नाना बोली, और काउन्ट को वह सब करने की मौन स्वीकृति देती रही जो कुछ वह चाहता था।

"यह सब तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं कहती हूँ कि यह सम्भव नहीं है। प्यारे; तुम मेरे कैसे युवक हो?"

अब वह शांत हो गया किन्तु भूमि पर ही बैठा रहा। वह नाना को छोड़ नहीं सकता था और तब उभरती सिसकियों में बोला:

"कम से कम, मैं तुम पर क्या समर्पित करने आया हूँ, यह तो सुनो। पार्क मांश्यू के निकट मैंने एक बड़ी हवेली देखी है। मैं तुम्हारी सब इच्छाओं का अनुभव करूँगा। तुम्हें केवल मात्र अपने हेतु प्राप्त करने के लिये मैं अपना भाग्य तुम पर न्यौछावर कर दूँगा। हाँ—केवलमात्र शर्त होगी—केवलमात्र अपने लिये, तुम समझती हो न! और तुम केवल मेरी होने की स्वीकृति दे दो तो, आह! मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी सर्वत्र प्रशंसा हो; गाड़ियाँ हों, हीरे-जवाहरात, वस्त्र··· ।"

नाना ने प्रत्येक प्रस्ताव पर सम्मानसहित सिर झुका लिया। जब वह कहता ही रहा, जब वह धन-सम्पत्ति उस पर समर्पित करने की बात कहता रहा—यह न जानते हुए कि वह वास्तव में और क्या चाहती है, तो प्रतीत हुआ कि जैसे वह धैर्य खो रही है।

"जाओ! मुझे तंग कर चुके? मैं सरल हृदय की हूँ। मैं एक पल के लिये तुम्हारी बात मान भी लूँ क्योंकि तुम बहुत परेशान दिख रहे हो किन्तु उतना पर्याप्त है, क्या नहीं? मुझे उठने दो। तुम मुझे थका रहे हो।"

उसने उसे पृथक किया। जब वह उठी तो बोली: "नहीं–नहीं–नहीं। मैं कभी नहीं···।"

तब उसने अपने पैर दर्द-सहित सँभाल लिये। उनमें कोई शक्ति शेष नहीं थी और तब कुर्सी पर गिरते हुए उसकी पीठ पर झुक कर उसने अपना सिर, हाथ में थाम लिया। नाना, टहलती रही। एक पल के लिये उसने उस दगीली–दीवार के कागज को देखा; चिकनी मेज को देखा और वह समस्त गन्दा छिद्र, पीली-सफेद धूप से नहा गया। तब काउन्ट के समक्ष खड़े होकर वह बिना किसी भावना सहित बोली:

"यह क्या मजाक है कि अमीर लोग सोचते हैं कि वे सब कुछ पैसे से प्राप्त कर सकते हैं। तब, यदि मैं न चाहूँ? मैं तुम्हारे उपहारों की एक सुई की भी इच्छा नहीं करती। तुम मुझे चाहे समस्त पेरिस दे दो तब भी 'न' कहूँगी; और सदैव 'न' कहूँगी। तुम जैसा देख रहे हो—यहाँ कुछ विशेष

निर्मलता नहीं है। हाँ, यदि तुम्हारे साथ यहाँ रहने में मुझे अच्छा लगे तो वह मुझे बड़ा मधुर प्रतीत होगा, जबकि एक, तुम्हारे महलों में भी यन्त्रणा सहती रहेगी यदि उसका हृदय वहाँ नहीं है। आह ! सम्पत्ति–धन ! मेरे गरीब दोस्त ! कुछ मेरे पास भी कहीं है। किन्तु मैं बताऊँ कि मैं पैसे पर ही नृत्य करती हूँ। अधिक, उसी पर थूकती भी हूँ।"

और वह (नाना) घृणा की आवृत्ति में भर गई। तब वह भावनाओं को भर लाई और उसने खेद-सहित व्यक्त किया :

"मैं यह जानती हूँ कि धन-सम्पित्त से भी बढ़कर महान् कोई वस्तु है। आह ! यदि वह मुझे कोई दे सकता, जैसा मैं चाहती हूँ।"

काउन्ट ने तब धीरे से अपना सिर उठाया। उसके नेत्र आशा से जैसे चमक उठे।

"ओह ! तुम नहीं दे सकते", नाना ने पुनः कहा। वह तुम्हारी शक्ति में नहीं है और तभी मैं वैसा तुमसे कह रही हूँ। ठीक है ! देखो, यह केवल मेरे तुम्हारे बीच में है—उनके उस नये खेल में मैं 'ग्रान्ड-लेडी' की भूमिका चाहती हूँ।

"ग्रान्ड-लेडी क्या है ?" काउन्ट विस्मय-सहित बुदबुदाया।

"उनकी डचेज हेलेन, सचमुच ! यदि वे सोचते हैं कि मैं गेराल्डीन की भूमिका करूँगी, तो यह उनकी बड़ी भूल है। वह भूमिका महत्वहीन, केवल एक दृश्य की और उसमें भी कुछ नहीं है ? सदा प्रफुल्लित स्त्री··· प्रत्येक सोचेगा कि मुझमें एक हँसमुख-औरत के अतिरिक्त है ही क्या। आगे चल कर वह रोष प्रकट करता है क्योंकि मैं स्पष्ट देखती हूँ कि वे सोचते हैं कि मैं निम्न परिवार की हूँ। आह ! हाँ, मेरे मित्र ! वे थोड़ी गलती करते हैं। जब ग्रान्ड-लेडी का चुनाव करती हूँ तो समझना चाहिये कि मैं उतना ही अच्छा अभिनय कर सकती हूँ जितना कोई अन्य। किंचित इस पर ध्यान दो।"

तब वह खिड़की की ओर बढ़ गई और अपना मस्तक ऊपर उठाकर और अपने पगचापों को एक मोटी मुर्गी के चलने की सी ठसक में—उनको

गन्दा न करने के विचार से—पैरों को नाप-नाप कर रख रही थी। काउन्ट ने देखा कि नाना के नेत्रों में अश्रु उमड़ रहे है।

वह अपना समस्त चरित्र-प्रदर्शन एक हास्यास्पदढंग से व्यक्त कर रही थी। वह कोमलता से पलक मारकर तथा स्कर्ट उठा-उठा कर चलती रही थी और तब काउन्ट के समक्ष खड़ी होकर वह बोली :

"हाँ, मैं सोचती हूँ वह काफी अच्छा है, क्या नहीं है ?"

"ओह ! निश्चित", वह रुँधे गले से अपनी नेत्र-ज्योति किंचित् मन्द पाकर, लड़खड़ाते हुए बोला।

"मैंने कहा कि मैं 'ग्रान्ड-लेडी' का भली प्रकार अभिनय कर सकती हूँ। मैंने उसकी घर पर कोशिश की थी। मुझमें अचेज की मर्यादा पूर्णतः प्रकट होनी है जो पुरुषों की किंचित भी चिन्ता नहीं करती है। तुमने देखा था कि जब मैं तुम्हारे सामने से अभी-अभी निकली तो तुम्हारा कैसे उपहास कर रही थी ? वह तेजी केवल रक्त में आती है। और अब मैं एक सम्भ्रांत महिला की भूमिका सम्पन्न करना चाहती हूँ। वह मेरा स्वप्न रहा है, वह मुझे दुःखी बना रहा है। मुझे वह पार्ट अवश्य चाहिये, तुम सुन रहे हो ? मुझे अवश्य चाहिये।"

वह तीखी आवाज में बोल रही थी और अब गम्भीर होती जा रही थी। अपनी तीव्र इच्छा में वह जैसे व्यथा की तीव्र वेदना का अनुभव कर रही थी। मुफट, बिना कुछ समझे, प्रतीक्षा में उसके नकारात्मक उत्तर से अब भी दग्ध था। वहाँ अल्पकाल की नीरवता व्याप्त होगई।

"तुम जानते हो", उसने प्रारम्भ किया बिना किसी न-नुच को स्वीकार किये :

"तुमको देखना होगा कि वह भूमिका मुझे प्राप्त हो।"

वह विस्मित हो रहा था। तब निराशा की सी भंगिमा में उसने कहा : "किन्तु यह सम्भव नहीं है। तुमने अभी स्वयं ही कहा था कि तुममें उसके लिये सामर्थ्य नहीं है।"

उसने (नाना ने) अपने कन्धे हिला कर मुफट को टोका।

"तुमको केवल सीढ़ियों से नीचे जाकर बार्डनोव से कहना है कि तुम्हें

वह पार्ट चाहिये। परमात्मा के लिये इतने अबोध न बनो। बार्डनोव को इस समय धन की आवश्यकता है। हाँ, तुम उसको कुछ उधार दे सकते हो क्योंकि तुम्हारे पास बहुत सा खिड़की के बाहर फेंकने को है।"

और जब वह निरन्तर बहस करता रहा तो वह सरोष मुद्रा में बोली : "बहुत ठीक! मैं समझ रही हूँ। तुम डर रहे हो कि 'रोज' वह कभी पसन्द नहीं करेगी। तुम जब भूमि पर बैठे सिसकियाँ भर रहे थे तब मैंने तो उसका प्रसंग नहीं उठाया था। जब, एक पुरुष किसी स्त्री के समक्ष सौगन्ध खाता है कि वह उसे आजीवन स्नेह करेगा तब उसे अगले दिन जाकर जो सर्वप्रथम मिल जाय उससे सम्पर्क स्थापित नहीं करना चाहिये। ओह! वह घाव कहाँ है। मैं उसे भूल नहीं सकती। इसके अतिरिक्त, मेरे दोस्त! और अब यह कुछ बहुत आनन्ददायक भी नहीं कि मिगनन की झूठन छुई जाय। इसके पूर्व कि तुम भूमि पर झुक कर मुझे मूर्ख बनाते तुमको चाहिये था कि उस गन्दे वातावरण व सम्पर्क को पहले तिलाञ्जलि देकर आते।"

काउन्ट, निरन्तर विरोध करता रहा। तब वह अन्त में कुछ शब्द कह सका : "किन्तु मैं 'रोज़' की किंचित भी परवाह नहीं करता हूँ। मैं उसे तत्काल पृथक् कर दूँगा।"

इस पर नाना को कुछ सन्तोष हुआ। उसने प्रारम्भ किया : "तब वह क्या बात है जो तुम्हें परेशान कर रही है। बार्डनोव मालिक है? तब तुम कहोगे बार्डनोव के अतिरिक्त फाचरी है।"

अब वह धीमे बोल रही थी। वह सारे मामले के सर्वाधिक-कोमल प्रसंग पर पहुँच गई थी। अपने नेत्रों को भूमि पर स्थिर किये हुये; मुफट निर्वाक बैठा रहा। वह फाचरी के काउन्टेस के साथ अवैध सम्बन्धों के प्रति जानबूझ कर उदासीनता व्यक्त करते हुये तथा उन सब में अपने सम्मान का ध्यान कर तथा यह आशा करते हुये कि उस रात्रि को जब उसने रुये टेट-बाउट में अपना समय व्यतीत किया था—वह गलती पर था। किन्तु वह उस व्यक्ति के प्रति कुछ ईर्षा व मौन रोष रक्खे हुये था।

"हाँ! क्या? फाचरी कोई शैतान नहीं है।" नाना, इस बात का

अन्तरङ्ग आभास पाते हुये कि पति और प्रेमी में कैसे सम्बन्ध चल रहे हैं, अपनी विजय की पूर्ण आशायें दोहराती रही। फाचरी को ठीक करना बहुत सरल है। हृदय से वह बहुत अच्छा आदमी है, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ। हाँ, तो यह तय हुआ कि तुम यह उससे कहोगे कि वह मेरे लिये है।

समझौते की इन शर्तों के विचारमात्र से काउन्ट विरोध में भर गया।

"नहीं, नहीं, कभी नहीं!" वह चीखा।

वह प्रतीक्षा करती रही। यह वाक्य उसके ओठों पर आकर रुक गया : "फाचरी तुम्हें कुछ भी मना नहीं कर सकता।" किन्तु उसने विचार किया कि यह तर्क आवश्यकता से अधिक हो जावेगा। केवल वह हँसी और उसकी उस मुस्कराहट ने जो विभिन्न प्रकार की थी—जैसे सब कुछ कह दिया। मुफट ने नाना के चेहरे पर कुछ पढ़ा, अपनी दृष्टि पुनः नीची कर ली, और परेशान व पीला होगया।

"तुम किंचित भी कृतज्ञता प्रदान नहीं कर सकते", अन्त में नाना बुदबुदाई।

"मैं नहीं!" काउन्ट ने व्यथित-स्वर में कहा : "जो भी तुम चाहो किन्तु वह नहीं, मेरी प्रिय, ओह! मैं प्रार्थना करता हूँ।"

अतः उसने तर्क-वितर्क में विशेष समय नष्ट नहीं करना चाहा। अपने छोटे छोटे हाथों से उसका सिर पीछे थाम लिया और आगे बढ़कर उसने अपने ओठ उसके ओठों में भींच दिये और उसके दीर्घ आलिंगन में आबद्ध हो गई। काउन्ट के अंग-प्रत्यगों में एक कंपकंपी दौड़ गई। उसने उस सिहरन का प्रादुर्भाव प्रारम्भ कर दिया उसने अपने नेत्र बन्द कर लिये। उसके समस्त तर्क विलीन हो गये और उसने उसे अपने स्थान से उठा लिया।

"जाओ।" उसने सरलतापूर्वक कहा।

वह चला और द्वार की ओर बढ़ा। तब वह ज्यों ही कमरे से बाहर जा रहा था नाना ने एक बार फिर उसे बाहों में भर लिया। उसकी ओर विनम्रतापूर्वक एक चापलूसी से देखते हुये नाना अपनी बिल्ली की सी पतली ठोढ़ी उसकी वास्केट से मसलती रही।

"वह अट्टालिका कहाँ है ?" उसने बड़े धीमे स्वर में प्रश्न किया ऐसी अवस्था तथा मुस्कराहट में जैसे कोई बालक अपनी इच्छित वस्तु पा ले।

"एवेन्यू डि. विलियर्स में।"

"और वहाँ सवारियाँ भी हैं ?"

"हाँ।"

"और वस्त्राभूषण—हीरे ?"

"वे भी।"

"ओह ! डकी, तुम कितने अच्छे हो। तुमने अभी जाना है; इसी कारण मैं ईर्षालु थी। और इस बार मैं सौगन्ध खाती हूँ। पूर्व की भांति न होगा। और अब तुम भी समझ चुके हो कि एक नारी को क्या चाहना है ? तुम मुझे सब कुछ दोगे, क्या नहीं ? तब मुझे किसी अन्य से कोई प्रयोजन न होगा। इधर देखो ! अब ये केवल तुम्हारे लिये हैं। यह, और यह, और यह।"

उसे भली प्रकार चेहरे और बाहों पर चुम्बनों की वर्षा से सन्तुष्ट किया तब उसने उसे (काउन्ट को) बाहर ढकेल दिया फिर वह एक पल को खड़ी हो गई और साँस ली।

हे भगवान ! उस फूहड़ मेयिन्डे के ड्रेसिङ्ग रूम में कितनी उत्तेजना थी। वह गरम था जैसे दक्षिणी फ्रांस के किसी मकान में सूर्य की चमक से भरा हो। किन्तु वहाँ दुर्गन्धि-युक्त सड़े लेवेंडर के पानी ने बैठना कठिन कर रक्खा था; अन्य वस्तुयें भी अधिक स्वच्छ नहीं थीं। नाना ने खिड़की खोल दी। तब अपना समय व्यतीत करने के लिये उसने पैसेज के कोच को देखा और पूर्व की भाँति बाहर झाँकती रही।

कानों के निकट एक भनभनाहट का अनुभव कर मुफट सीढ़ियों से नीचे उतरता गया। उसे क्या कहना है ? वह उस मामले में कैसे हाथ डालेगा ? उसका वह कोई व्यापार तो नहीं है ? जब वह स्टेज पर पहुँचा तो उसने झगड़े की आवाजें सुनीं। वे लोग द्वितीय अंक समाप्त कर रहे थे। प्रुलियर रोष में था क्योंकि फाचरी उसके सम्वाद का कुछ अंश काटना चाहता था।

"तब सब काट दो", वह चिल्लाया : "मेरे पास दो सौ पंक्तियाँ भी नहीं हैं और उनमें से भी कुछ ली जाने वाली हैं। नहीं, बहुत हो गया। मैं अपना पार्ट लौटाता हूँ,"

उसने अपनी जेब से कुछ कागज निकाले और अपने काँपते हाथों से जैसे वह कासर्ड के पैरों में फेंकने वाला था। वह (प्रुलियर) जो जनता की सराहना व पूजा है—दो सौ लाइन की भूमिका करेगा ?"

"क्यों न मैं अपने सम्वाद एक तश्तरी में रखकर प्रस्तुत करूँ ?" उसने तीक्ष्णतापूर्वक कहा।

"आओ, प्रुलियर, जैसा रुचिकर हो करो", बार्डनोव ने कहा जो बाक्सों में बैठी जनता पर उसके प्रभाव की सराहना कर रहा था : "अब दुबारा शिकायत मत करना। हम तुमको कुछ ऐसे अंश देंगे। ओ, फाचरी ! तुम तीसरे अंक में उसके लिये कुछ अंश जोड़ दो। तीसरे अङ्क में—हम कुछ दृश्य बढ़ा भी सकते हैं।"

तब अभिनेता ने कहा : "मुझे यह विश्वास चाहिये ! मुझे तुमसे वह पाना है।"

फाचरी के मौन ने जैसे स्वीकृति प्रदान की और एक विरोध एवं उत्तेजनासहित उसने अपना संवाद पुनः जेब में रख लिया। बास्क व फान्टन ने उस बहस में पूर्णतः उदास भाव रक्खा। उससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। तब सब अभिनेताओं ने प्रश्न करते हुए तथा अपने प्रति प्रशंसा सुनने की इच्छा में फाचरी को घेर लिया। मिगनन, प्रुलियर की अन्तिम शिकायत सुनता रहा और तुरन्त काउन्ट मुफट को देख गया जिसकी वह बड़ी प्रतीक्षा में था।

स्टेज के पीछे—काउन्ट परछाई में खड़ा था और उस झगड़े के बीच में घुसने में हिचक रहा था किन्तु बार्डनोव ने उसे देख लिया और वह तुरन्त उधर ही गया, जहाँ वह खड़ा था।

"क्या यह घुर्राने वालों की एक भीड़ नहीं है ?" वह बुदबुदाया : "काउन्ट ! आपको कोई कल्पना नहीं होगी कि इन लोगों के साथ मुझे कितनी

कठिनाई होती है। वे सब एक दूसरे से अधिक बेकार हैं और बड़े उद्दण्ड तथा निर्देश न मानने वाले। वे अन्य लोगों पर आक्षेप करना जानते हैं। वे तब बड़े प्रसन्न होंगे जब मैं परेशान हो जाऊँगा और उनको कार्यरत करूँगा। किन्तु क्षमा करिये ! मैं अपना मस्तिष्क बिकृत कर रहा हूँ।"

वह रुक गया अब उनके बीच निस्तब्धता फैल गई। मुफट ऐसा उपाय सोच रहा था जिससे वह उस प्रसंग पर वार्तालाप कर सके जो उसके मस्तिष्क में भरा हुआ था। किन्तु अपने प्रयत्न में अपने को विफल होते देख उसने जल्दी में कह डाला जिससे वह तुरन्त विषय पर पहुँच जाय :

"नाना डचेज की भूमिका करना चाहती है।"

बार्डनोव ने तुरन्त बिगड़कर कहा : "वाह ! कितनी बड़ी मूर्खता है।" तब काउन्ट की ओर उसने देखा। वह रोष-सहित पीला पड़ा हुआ था। वह अपने को शीघ्र व्यवस्थित करते हुए बोला : "वह दुष्ट !"

तब उनके बीच पुनः एक शान्ति फैल गई। जहाँ तक उसका प्रश्न है, वह किंचित् भी चिन्ता नहीं करता है। उस मोटी नाना को डचेज की भूमिका में पाकर तो एक भला सा मजाक रहेगा ही। साथ ही मुफट पर भी एक गहरा प्रभाव पड़ेगा। अतः उसने तुरन्त निर्णय कर लिया। वह घूम गया और चिल्लाया :

"फाचरी ।"

काउन्ट ने उसको रोकने का सा प्रयत्न किया। फाचरी ने सुना नहीं फान्टन उसे रंगमच के आगे के भाग की दीवाल के निकट ले गया था और उसे तारदिव्यू की भूमिका के कुछ अंशों के सम्बन्ध में बता रहा था। अभिनेता विचार रहा था कि वह मार्सेलीज का रूपक बाँधे और दक्षिणी स्वरों के आधार पर, जिनकी नकल वह करता रहा है, बोले। वह अपनी वक्तृता उसी प्रकार प्रकट करता रहा। क्या वही उस भूमिका के अनुरूप था। वह केवल अपनी ही बात कह रहा था क्योंकि उसके प्रति उसके मन में स्वयं ही शंका थी। किन्तु फाचरी ने अनेक दोष प्रकट कर दिये जिससे फान्टन बिगड़ भी

गया। भूमिका के वास्तविक स्वरूप में उसका अपना अस्तित्व विलीन होता प्रतीत हो रहा था अतः उसने विचार किया, वह पार्ट न करे यही उत्तम है।

"फाचरी !" बार्डनोव ने दुबारा पुकारा।

तब वह नवयुवक, अभिनेता से शीघ्र मुक्ति पाने की प्रसन्नता में उस ओर बढ़ गया।

"हमको यहाँ मत खड़ा रहने दो। इधर आओ", बार्डनोव बोला।

धीरे बोलने की अपेक्षा वह उन्हें स्टेज के पीछे के भंडार वाले कमरे में ले गया। मिगनन ने उनको यों जाते देख आश्चर्य का अनुभव किया। कुछ सीढ़ियाँ उतर कर, वह एक चौकोर कमरा था और उसमें कुछ खिड़कियाँ थीं जो बरामदे की ओर खुलती थीं। छत्त वहाँ की नीची थी और खिड़कियों के गन्दे शीशे धीमा प्रकाश पा रहे थे।

"इधर आओ", बार्डनोव बोला : "हम कम से कम साथ हो जावेंगे।"

काउंट अत्यधिक उलझन में, कुछ पग बढ़ा—जिससे मैनेजर उस सबकी व्यवस्था स्वतः ही कर ले। फाचरी कुछ भी प्रकट न कर पाया था।

"है क्या ?" उसने प्रश्न किया।

"हाँ, ऐसा है कि", बार्डनोव ने अन्त में कहा : "एक विचार हम लोगों में आया है—हाँ, कूदो मत। वह एक गम्भीर प्रसंग है। यदि नाना डचेज की भूमिका करे तो इस सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है ?"

प्रथम तो, लेखक जैसे चौंक पड़ा। तब वह फूट पड़ा : "ओह ! नहीं। तुम ऐसा आशय व्यक्त नहीं कर सकते। यह केवल एक मजाक होगा।"

"हाँ, यह अवश्य लोगों को हँसावेगा। इस पर विचार करो, मेरे दोस्त ! काउन्ट को इस विषय में विशेष उद्विग्नता है।"

मुफट ने अपनी व्यग्रता को दबाने के ख्याल से, धूल में से एक वस्तु उठा ली और कहता रहा—वह उसे पहिचान नहीं रहा है। वह एक ऐग-कप था जो प्लास्टर से बना हुआ था। वह उसे अपने हाथ में लिये रहा बिना यह सोचे कि उसके हाथ में कोई वस्तु है और उन दोनों की ओर बुद-बुदाता हुआ बढ़ गया :

"हाँ, हाँ, यह श्रेष्ठ होगा।"

व्यग्रता सहित फाचरी उसकी ओर घूम पड़ा। काउन्ट को उसके खेल से क्या प्रजोजन था; और तब फाचरी ने मानो निश्चयात्मक रूप से अपनी बात प्रकट की :

"कभी नहीं! नाना, एक हँसमुख स्त्री के रूप में जहाँ तक आप चाहें ठीक है किन्तु वह एक ग्रैन्ड-लेडी, सम्भ्रांत स्त्री, मैं समझता हूँ, कदापि नहीं।"

"तुम उसे ठीक से नहीं समझ रहे हो। मैं विश्वास दिलाता हूँ," मुफट ने स्थिरतापूर्वक प्रारम्भ किया। "अभी-अभी वह मुझे दिखला रही थी कि वह ग्रैन्ड लेडी की भूमिका कितनी अच्छी तरह कर सकती है।"

"कहाँ?" फाचरी ने प्रश्न किया। उसका आश्चर्य बढ़ता जाता था।

"ऊपर एक ड्रैसिंग-रूम में। हाँ, उसने वह बहुत बढ़िया किया था। ओह! इतनी विशेषता! वह ऐसे हाव-भाव व्यक्त कर सकती है, वह भी, तुम जानते हो, इस प्रकार चलकर।"

और एग-कप अपने हाथ लिये हुये, उसने नाना की नकल करते हुये तथा उन दो व्यक्तियों को सन्तोष देते हुये अपने आप को भुला दिया। फाचरी विस्मयसहित उसे देखता रहा। उसने समझा और उसका रोष विलीन हो गया। काउन्ट ने अपनी दृष्टि का स्वयं अवलोकन किया जो उपहास व दयार्द्रता दोनों से भरी हुई थी। तब वह लजाते हुये रुक गया।

"हाँ, ऐसा सम्भव है," लेखक कृतज्ञता-सहित बुदबुदाया। 'यह ठीक ही होगा कि वह उस भूमिका को भली प्रकार कर सके किन्तु वह पार्ट पहले से ही दिया जा चुका है। अब हम उसे रोज़ से वापस नहीं ले सकते।"

"ओह! यदि इतना ही है तो उसकी व्यवस्था मैं स्वयं कर लूंगा," बार्डनोव बोला।

किन्तु जब उसने दोनों को अपने विरुद्ध पाया तथा यह विचार किया कि उसमें बार्डनोव का कुछ अव्यक्त ध्येय अन्तर्निहित है तो वह नौजवान, अधिक दृढ़तापूर्वक बिना आगे तर्क-वितर्क को स्थान दिये अपराजित सा हो, बोल उठा—

"नहीं, मैं कहता हूँ! और नहीं, और नहीं! चाहे वह भूमिका न भी

दी जा चुकी होती तब भी मैं वह उसे न देता । यह बात आप के लिये पर्याप्त रूप से स्पष्ट कर रहा हूँ । अब मैं अपने खेल का नाश नहीं करना चाहता ।"

इसके अनन्तर वहाँ एक भयानक शान्ति छा गई । बार्डनोव ने अपने को मार्ग से प्रथक कर लिया । काउन्ट, सिर झुकाये खड़ा रहा । तब उसने एक, प्रयत्न सहित उसे उठाया और लड़खड़ाती आवाज में बोला—

"मेरे प्रिय ! यदि मैं अपने प्रति एक विशेष उपकार के रूप में तुमसे वैसी कामना करूँ ?"

"मैं, कभी नहीं, मैं, कभी नहीं," जैसे फाचरी द्वन्द्व सहित दोहराता रहा ।

मुफट का स्वर तीव्रतर होगया :

"मैं तुमसे भीख मांगता हूँ; मैं उसे चाहता हूँ ।"

तब उसने उसके नेत्रों में सीधा देखा । उसकी कालिमा-मिश्रित दृष्टि में उसने एक धमकी का अनुभव किया और तब वह नौजवान घबड़ाहट में लड़-खड़ाते हुये कह गया—

"हाँ, अन्त में जैसा ठीक समझिये कीजिये । मुझे उसकी चिन्ता नहीं । आह, किन्तु आप अनुचित हैं । तुम देखोगे, तुम देखोगे ।"

वह व्यग्रता तब और बढ़ गई । फाचरी किन्हीं आल्मारियों पर झुक गया । उसके पैर जैसे भूमि पर अधिक गहराई से चिपकते जाते थे । मुफट— ऐग-कप को, एकाग्र हो देख रहा था । वह उसे अपनी उँगलियों में घुमाता जाता था ।"

"यह एक एग-कप है," बार्डनोव कृतज्ञता-ज्ञापन के स्वर में बोला ।

"क्यों ?" "हाँ यह एग-कप है," काउन्ट ने दोहराया ।

"क्षमा कीजिये, आप लोग सब धूल में भर रहे हैं," उस कप को आल्मारी में रखते हुये मैनेजर ने प्रकट किया—"आप देखिये कि यहाँ प्रतिदिन सफाई करना तो सम्भव नहीं है । कोई न कोई इसमें फँसा रहेगा । फल यह होगा कि फिर भी यह स्वच्छ न होगा । कैसी खिचड़ी है यहाँ; क्या नहीं है ?

हाँ, मेरा विश्वास कीजिये, इस सब में बड़ा धन व्यय हुआ है। इधर···उधर देखिये।"

बरामदे से आती हुई हरी रोशनी में वह मुफट को उधर ले गया और अपनी आलमारियों के सामने विभिन्न वस्तुओं के नाम बकता रहा और गूदड़े-वाले की दूकान में—जैसा मैनेजर उसे कहता था—वह काउन्ट को व्यस्त करने की चेष्टा करता रहा। तब घूम कर पुनः उस स्थान पर लौटते हुए जहाँ फाचरी खड़ा था, वह सरल भाव से बोला—

"सुनो! अब जब हमने वह बात मान ली है तब हम इस मामले को तुरन्त निश्चित कर देंगे। आह! वह रहा मिगनन!"

कुछ देर पहले से मिगनन—पैसेज में इधर-उधर टहल रहा था। बार्डनोव के प्रथम वाक्य पर ही तथा अपने एग्रीमेंट में परिवर्तन की बात सुन-कर वह रोष सहित बिगड़ उठा। वह बड़ा अपमानजनक है। वे उसकी पत्नी की उन्नति का नाश करना चाहते हैं। उसके लिये वह कानूनी कार्यवाही करेगा। बार्डनोव, यों, पूर्णतः शान्त बना रहा। वह उससे तर्क-वितर्क करता रहा। वह भूमिका रोज़ के लिये उपयुक्त नहीं है। वह उसे किसी ओपरेटा के लिये संचित रखना चाहता है जो लिटिल डचेज़ के उपरान्त आवेगा किन्तु जब पति निरन्तर विरोध करता रहा तब उसने (मैनेजर ने) एग्रीमेंट रद्द करने की बात व्यक्त कर दी। साथ ही उन अन्य प्रस्तावों की बावत भी कहता रहा जो फालीज़ ड्रैमेटिक्स थियेटर के मैनेजमेंट से उनके हो रहे थे। तब कुछ देर के लिये मिगनन निम्नता पर उतर आया और धन के प्रति घृणा व्यक्त करता रहा। साथ ही उसने उन सम्बन्धित अन्य प्रस्तावों की बात को काटा भी नहीं! उन्होंने उसकी पत्नी को डचेज हेलेन की भूमिका करने के लिये रखा है और वह उसे करेगी चाहे उसका सर्वस्व नष्ट हो जाय। वह सम्मान का प्रश्न है, प्रतिष्ठा का! इस पृष्ठ-भूमि पर एक बार चुनाव होने के उपरान्त बहस का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मैनेजर इस तर्क को निरन्तर काट रहा था। चूंकि फालीज-ड्रैमेटिक्स के लोगों ने रोज़ को तीन सौ फ्रैंक प्रति रात्रि देने की घोषणा की है, और एक सौ प्रदर्शन निश्चित हुए हैं, और वह केवल उससे डेढ़

सो पाती है तो उसको छुटकारा दे देने के माने हैं पन्द्रह हजार फ्रैंक का स्पष्ट लाभ ! पति अपनी ओर से कला का पक्ष लेकर अपने स्थान से नहीं हट रहा था। यदि वह पार्ट उसकी पत्नी से ले लिया जायगा तो लोग क्या कहेंगे ? यही कि वह उसके योग्य न थी और वह भार दूसरे को दिया गया। इससे उसे बड़ी चोट पहुँचेगी और उसकी कलात्मक अभिव्यंजना के स्तर पर बड़ी ठेस लगेगी। नहीं, नहीं, कभी नहीं ! धन के पहले यश-कीर्ति ! तभी अचानक उसने एक समझौते की ओर संकेत किया। उस एग्रीमेंट के अनुसार यदि रोज़ उसको तिलाञ्जलि देती है तो उसे दस हजार फ्रैंक की हानि होती है अतः यदि उसे वह धन प्राप्त हो जाय तो वह फालीज-ड्रैमेटिक्स-थियेटर चली जावेगी। बार्डनोव को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था जब कि मिगनन, निरन्तर काउन्ट की ओर शान्तिपूर्वक दृष्टि गढ़ाये बैठा था।

"तब यह सब तय होता है," मुफ़ढ ने जैसे सन्तोष की सांस लेते हुये कहा : "हम सब तैयार हैं।"

"आह, नहीं, यह बड़ी मूर्खता होगी," बार्डनोव ने अपनी व्यापारिक कुशाग्रता सहित कहा : "रोज़ से छुटकारा पाने के लिये दस हजार फ्रैंक ! क्या तुम मुझे बेवकूफ समझते हो ?"

किन्तु काउन्ट, उस बात को मान लेने के लिये संकेत करता रहा। वह अब भी झिझक रहा था। अन्त में, गुर्राते हुये और दस हजार फ्रैंक के प्रति दुःख प्रकट करते हुये, हालांकि वह उसकी जेब से नहीं जा रहे थे, उसने तेजी से कहा—

"जो हो, मैं तैयार हूँ। कम से कम तुमसे छुटकारा तो मिलेगा।"

लगभग पन्द्रह मिनट से फान्टन आँगन में खड़ा सब कुछ सुन रहा था। क्या हो रहा है, यह जानने की तीव्र उत्कंठा में उसने अपने को वहाँ चिपका दिया। और जो कुछ वह जानना चाहता था उसे सुनकर वह अन्दर आया और सर्वप्रथम उसने उसकी सूचना रोज़ को दी। आह, हां, वे उसके सम्बन्ध में अच्छी वार्ता कर रहे हैं, उसे निकाल बाहर किया गया है। रोज़, भंडार के

कमरे की ओर लपकी। वे सब मौन रहे। रोज़ ने उन चारों व्यक्तियों की ओर देखा। मुफट अपना सिर झुकाये बैठा था। फाचरी ने रोज़ की प्रश्नात्मक मुद्रा के उत्तर में अपने निराश कन्धे हिला दिये। जहाँ तक मिगनन का प्रश्न था वह बार्डनोव से एग्रीमेंट की शर्तें तय कर रहा था।

"क्या चल रहा है ?" रोज़ ने तीखी आवाज में प्रश्न किया।

"कुछ नहीं," उसके पति ने उत्तर दिया। "बार्डनोव तुम्हारे पार्ट को लौटाने के मूल्यस्वरूप दस हज़ार फ्रैंक दे रहे हैं।"

अपनी बँधी मुट्ठियों में वह एकदम पीली पड़ गई थी तथा काँप रही थी। एक क्षण के लिये, अपने समस्त विरोध सहित उसने पति के पूर्ण अस्तित्व का अवलोकन किया और उसके नेत्रों में तीक्ष्णतासहित सीधा देख गई। साधारणतः वह उसके प्रत्येक व्यावसायिक मामले में स्वीकृति देती थी, अपने मैनेजरों व प्रेमियों से एग्रीमेंट करने के प्रसंगों पर भी। वह केवल कहने को इतने शब्द ही जुटा पाई, जिन्होंने एक बेंत की भाँति उसके मुँह पर चोट की—

"आह ! सचमुच तुम बड़े कायर हो !"

और तब वह उन्हें छोड़कर चली गई ! मिगनन, अत्यधिक चौकन्ना होकर, उसके पीछे भागा। क्या मामला है ? क्या वह पागल हो गई है ? उसने उसे समझाया कि दस हजार फ्रैंक एक ओर से व पन्द्रह हजार फ्रैंक दूसरी ओर से मिलकर पच्चीस हजार फ्रैंक होते हैं। व्यापार की कैसी जोरदार सफलता है ! जो हो, यह निश्चित था कि मुफट अब उन्हें छोड़ने जा रहा था, अतः उन्हें अपने को बधाई देनी चाहिये कि चलते-चलाते उसके पंखों से वह अंतिम पंख भी उन्होंने झाड़ लिया। तब मिगनन ने उसे स्त्रियोचित चिढ़ावत के तिरस्कार में वहीं छोड़ा और बार्डनोव के निकट जाकर बोला—जो फाचरी व मुफट के साथ स्टेज की ओर लौट रहा था :

"हम लोग कल प्रातःकाल एग्रीमैन्ट पर हस्ताक्षर कर देंगे। रुपये तैयार रखना।"

लेबार्डेट के द्वारा सूचित किये जाने पर गर्वोन्नत-नाना सामने आई। उसने एक सम्भ्रान्त नारी की भंगिमा व्यक्त की; अपनी बड़ी ठसक में जिससे वह उन सबमें एक विस्मय की भावना भर रही थी और कहना चाहती थी कि मूर्खों के उस समूह में वह जैसा तथा जब चाहे सो प्राप्त कर सकती है—बिना उनके विरोध के। किन्तु उसने अपने आप को जैसे सर्वथा भुला दिया। रोज ने जैसे ही उसे देखा, उसकी ओर लपक कर लड़खड़ाती व भर्राई आवाज में कहा: "आह! मैं तुम्हें फिर देखूंगी। इसको हम निकालेंगे ही, सुनती है।"

नाना ने इस आक्रमण से अपने को सतर्क करते हुये चाहा कि रोज के कूल्हों पर घूंसे जमा दे और भली प्रकार से उसकी प्रताड़ना करे, किन्तु उसने अपने को रोका और अपनी संगीतमय आवाज को और सुरीली करते हुये तथा एक मारक्योनेस की भव्य भंगिमा में, जैसे नारंगी के छिलके पर पैर टिकाते हुये कहा—

"ह:, क्या! मेरी प्रिय, तुम पागल हो गई हो।"

नाना उसी भाँति तेवर में डटी रही और तब रोज मिगनन के पीछे २ चला जिसने कठिनाई से उसे जान पाया था। अपने अत्यधिक हर्ष में क्लारिस ने गेराल्डीन की भूमिका तत्काल ही बार्डनोव से प्राप्त थी। फाचरी व्यस्तता में इधर-उधर टहलता रहा। वह यह निर्धारित न कर पा रहा था कि वह थियेटर छोड़े अथवा नहीं। उसका खेल सत्यानाश हो जायगा। उसे ताज्जुब हो रहा था कि वह उसे कैसे बचा सकता है। किन्तु नाना ने—उसकी कलाई पकड़ कर एक ओर घसीटा और पूछती रही कि क्या वह बड़ी डरावनी है। वह उसके खेल का सर्वनाश नहीं करेगी और उसने उसे हँसा दिया और यह भी विश्वास दिलाया कि मुफट के सहयोग में वह उसके लिये विशेष लाभप्रद सिद्ध होगी। यदि उसकी स्मरणशक्ति ने धोखा भी दिया तो प्राम्पटर की सहायता लेकर वह हॉल को भरा देखेगी। इसके अतिरिक्त वह गलती पर भी है। नाना, वह सब अपने सामने ठीक करने में समर्थ होगी। तब यह निश्चित हो गया कि लेखक डचेज की भूमिका में कुछ परिवर्तन कर थोड़ा भाग प्रुलियर को भी देगा। इससे प्रुलियर अत्यधिक प्रसन्न था। उस सर्वव्यापी आनन्द में

जो नाना अपने साथ लाई थी, केवल फान्टन ही उस ओर से उदासीन था। अपनी बकरी की सी गर्दन सहित वह उस तीव्र प्रकाश में सीधा खड़ा था। नाना, शान्तिपूर्वक उसके निकट गई और अपने हाथ को बाहर निकाल कर बोली :—

"क्या तुम बिलकुल ठीक हो ?"

"हाँ, बिलकुल ठीक। और तुम ?"

"मैं, अत्यधिक। धन्यवाद !"

वह सब कुछ था। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे एक रात्रि पूर्व ही केवल उन्होंने एक दूसरे को थियेटर के द्वार के बाहर छोड़ा था। अभिनेता इस समस्त काल तक प्रतीक्षा में बैठे रहे किन्तु बार्डनोव ने कहा कि अब वे तीसरे अंक का रिहर्सल उस दिन नहीं करेंगे। ठीक विस्मय में घिरा, बास्क बड़-बड़ाता रहा—वे उसे बेकाम रोके रहते हैं। उन्होंने उसकी समस्त संध्या व्यर्थ कर दी। प्रत्येक चला गया। नीचे, फुटपाथ पर आने पर प्रत्येक ने एक दूसरे के समक्ष आँख मारी। जैसे उस तीव्र दिवस के प्रकाश से वे अन्धे हो रहे थे क्योंकि वे तीन घंटे से निरन्तर उस अँधेरी गुफा में झक-झक कर रहे थे तथा अपने तन्तुओं को श्रम से थका रहे थे। काउन्ट थका-थका सा, एक गाड़ी में नाना के साथ बैठ गया और लेबार्डेट, फाचरी को सान्त्वना देता हुआ निकल गया।

एक मास पश्चात्—लिटिल डचेज का प्रथम प्रदर्शन, नाना के लिये एक महा-भयंकर नाश था। वह उसमें बुरी तरह विफल हुई थी। उस हास्य से जिसने सारे हॉल को आनन्दातिरेक में भर दिया था—नाना को बचाव मिला। कोई फुसफुसाया नहीं वरन् खिलखिलाता रहा। रोज मिगनन ने, अपनी प्रतिद्वन्द्वी की प्रत्येक आकृति व आगमन का एक स्टेज बाक्स में बैठकर अपने अट्टहास से स्वागत किया। इस प्रकार वह समस्त हॉल को उसी परिहास से भरती रही। यह उसका पहला बदला था। और तब, रात्रि में, जब नाना ने अपने को काउन्ट के साथ एकान्त में पाया—जो बुरी तरह कटा २ बैठा था—नाना ने तीक्ष्णता से कहा :

'कैसा मरा हुआ सैट दिया है इन लोगों ने मेरे विरोध में। यह सब ईर्षा है। आह! यदि वे जानते कि मैं उनकी लेशमात्र भी चिन्ता नहीं करती। मैं उनके बिना सब कुछ कर सकती हूँ। मैं सौ लुई की बाजी लगा सकती हूँ कि मैं उन हँसने वालों को अपने पैरों के नीचे ला सकती हूँ। हाँ, मैं तुम्हारे पेरिस को शिक्षा दूँगी कि ग्रैन्ड-लेडी होना क्या है?"

१०.

तब नाना फैशन-की-देवी बन गई तथा सड़क की मारक्योनेस की भव्यता में—जो सर्वोपरि दम के घेरे में रहती थी पुरुष वर्ग के सेक्स की शैता-नियों और आकाँक्षाओं में डूब गई। वह एक अचानक किन्तु जीवन-क्रम का निश्चित परिवर्तन था जो प्रारम्भ हुआ था। उसमें विजयोन्माद सहित उत्थान की तीव्र गति थी। उसमें धन-सम्पति की कमजोरियों का पूर्ण प्रकाश था तथा सौन्दर्य के विकृत रूप का स्पष्टीकरण। उसका फोटो दुकानों की प्रत्येक खिड़की में लगा हुआ था। जो सर्वाधिक मूल्यवान था वह उस पर साम्राज्य कर रही थी। जब वह बाउलेवर्ड की सड़क से गाड़ी में निकलती तो भीड़ उसकी ओर घूमकर देखती रहती और उस भावोद्रेक में उसका नाम लेते जैसे उसकी सत्ता के प्रति नमस्कार कर रहे हों जबकि वह पूर्णत शान्त मुद्राओं में अपने उभरे वस्त्रों में सरल भाव से बैठी रहती और अपने नन्हें सुनहली गेसुओं के नीचे के नीले घेरों के बीच अपनी चमकती आँखों तथा ओठों की लालिमा सहित प्रसन्न होकर मुस्कराती रहती।

मजा यह था कि वह बड़ी लड़की, जो स्टेज पर इस प्रकार भद्दी थी और एक संभ्रान्त महिला की भूमिका करते समय अत्यधिक हास्यास्पद प्रतीत होती थी नगर में बिना किसी प्रयत्न के सबको आकर्षित किये हुए थी। वह एक कला थी जिसके द्वारा नाना उस गन्दगी से परिपूर्ण होकर भी सुन्दर व सजीली दिखाई देती थी जो साँप के जहर सी तेज थी। उसमें उस बिल्ली की सी घातक प्रवृत्ति थी जो भली प्रकार से बढ़-पनप रही हो। साथ ही उसमें अना-चारों की तीव्रता के साथ की तीक्ष्णता व विद्रोहाग्नि का प्रज्वलन भी यथेष्ट

था जो समस्त पेरिस को अपने पैरों तले रौंद रही थी । एक शक्तिशालिनी नारी के आचरणों का वह एक उदाहरण था ।

नाना नये फैशन निकालती जिसका अनुसरण ऊँची स्त्रियाँ करती थीं ।

नाना का भवन एवन्यू डि. विलियर्स में था जो रूये कार्डिनेट के कोने पर स्थित था जहाँ विलासिता तथा वैभव का चतुर्दिक साम्राज्य था । वह भवन एक युवा पेन्टर द्वारा निर्मित किया गया था जो अपनी सफलता के जोश में ओत प्रोत हो रहा था तथा जिसे विवश होकर उसे तभी बेच देना पड़ा जब कि उस विशाल-भवन का प्लास्टर भी न सूख पाया था। वह नवीन जागृति के स्वरूप में बनाया गया था और एक राजमहल सा प्रतीत होता था। उसमें कुछ ऐसी आन्तरिक व्यवस्थायें थीं जो लगती थीं कि सनकपन में बनाई गई हैं और मौलिकता के प्रदर्शन में उस स्थान की कमी में भी आधुनिकता को प्रकट करती थीं ।

काउन्ट मुफट ने वह स्थान सब सामान से सुसज्जित खरीदा था। उसमें बड़े सुन्दर प्रकार के पूर्वीय पर्दे चारों ओर टँगे हुए थे तथा लुई तेरहवें के समय की एक आराम-कुर्सी भी साथ थी । इस प्रकार नाना ने शताब्दियों का चुना हुआ कलात्मक फर्नीचर प्रयोग में लाना प्रारम्भ किया। किन्तु स्टुडियो के, जो भवन के मध्य में था—नाना ने, किसी प्रयोग में न लाने के कारण, कई विभाग कर दिये । नीचे की मंजिल में एक स्थान पर हरियाली लगा दी । एक स्थान ड्राइंग-रूम व एक भोजन के कमरे के रूप में प्रयोग में आने लगा । वहीं उसके सोने के कमरे व भोजन के कमरे से मिला हुआ एक बरामदा था । बनाने वाला चकित रह गया जब नाना ने अपनी आवश्यकता से उसे अवगत कराया, जिससे ज्ञात हुआ कि वह पेरिस की किसी बाजारू लड़की की भाँति विलासिता एवं सम्पन्नता के साथ-साथ सुरुचि तथा सौन्दर्य की पारखी है । संक्षेप में उसने उस भवन को बरबाद नहीं किया अपितु उसकी व्यवस्था में चार चाँद लगाये । कहीं-कहीं उसने अपनी पुरानी नकली फूल बनाने वाली की रुचि के अनुसार मूर्खता का दिग्दर्शन भी किया ।

उस भव्य बरामदे के नीचे के आंगन में सीढ़ियों पर कालीन बिछवाया गया। ड्योढ़ी से कमल की भीनी-भीनी सुगन्धि प्रकट होती थी और वहाँ लम्बे-लम्बे पर्दों के अन्दर गरमाहट भरी हुई थी। एक पीली व गुलाबी रंग की खिड़की, जो मांस के पीलेपन जैसी प्रतीत होती थी, सीढ़ियों पर प्रकाश फेंक रही थी। उसके नीचे एक नीग्रो की काष्ठ-प्रतिमा लगी हुई थी जो हाथ में एक चांदी की तश्तरी लिये हुए थी, जो विजटिंग कार्डों से भरी हुई थी। चार स्त्रियाँ, श्वेत संगमरमर की बनी हुई थीं जिनके वक्ष भाग खुले हुये थे और जिनमें सुन्दर लैम्प प्रकाशमान थे। साथ ही कांसे व तामचीनी के बर्तनों में गुल-दस्ते लगे हुये थे। सोफों पर प्राचीन पर्शियन कपड़े के खोल चढ़े हुये थे और आराम-कुर्सियों पर पुरानी टेपेस्ट्री चढ़ी हुई थी जो दालान में रक्खी हुई थी। वे सीढ़ियों के मोड़ पर भी सज्जित थीं और पहली मंजिल को एक प्रकार के पार्श्व-कमरे के रूप में प्रदर्शित कर रही थीं। उन पर पुरुषों के कोट या हैट सदैव लटके दिखाई देते थे। उन कालीनों ने जैसे सम्पूर्ण आवाज को पी लिया था। वहाँ ऐसी शान्ति विराज रही थी जैसे किसी गिरजाघर के पवित्र स्थान में नीरवता व्याप्त हो, जिसमें बन्द दरवाजों के अन्दर का रहस्य उस मौन में छिपा हुआ हो।

नाना ड्राइङ्ग-रूम को, जो लुई चौदहवें के ढङ्ग का सजा हुआ था, तभी खोलती जब कोई विशिष्ट रात्रि होती या वह टुलिरीज के किसी मेहमान अथवा किसी विदेशी का सत्कार करती होती। अधिकतर भोजन के समय नाना नीचे रहा करती थी और कभी-कभी वह अपने आप को भूल जाती जब उसे उस विशाल डाइनिंग-रूम में अकेले भोजन करना पड़ता था जो गोबेलीन टेपेस्ट्री से सजा हुआ था जहां एक ऊँची खाने की मेज रक्खी थी तथा तामचीनी व चांदी के पात्र स्थान-स्थान पर रखे हुये थे। जैसे ही भोजन समाप्त होता नाना ऊपर चली आती। वस्तुतः वह नीचे के तीन कमरों में रहती थी—सोने के कमरे में, ड्रैसिंग-रूम में तथा बरामदे में। उसने सोने के कमरे की सजावट को दो बार बदल दिया था। पहली बार उसने चमकीले गुलाबी रंग के साटन से उसे सज्जित किया था तथा दूसरी बार नीली रेशम पर सफेद रङ्ग के फीतों से।

इस पर भी उसे सन्तोष न हुआ। वह सदैव सोचती थी कि वह बड़ी नीरस है। कुछ न कुछ विशेषता लाने का विचार वह निरन्तर करती रहती थी किन्तु सफल न हो सकी। मोटे गद्देदार पलंग पर, जो कि सोफे की नीचाई के बराबर था, बीस हजार फ्रैंक के मूल्य की वेनेरियन की झालरें लगी हुई थीं। समस्त फर्नीचर नीली व सफेद वार्निश से चमचमा रहा था तथा चांदी के तार स्थान-स्थान पर खिंचे हुये थे। स्थान-स्थान पर सफेद शेर की खाल इस प्रकार बहुतायत में फैली हुई थी कि उसने कालीन को पूर्णतः ढक दिया था। नाना का यह स्वभाव था कि वह भूमि पर बैठ कर अपने कपड़े उतारा करती थी।

सोने के कमरे के आगे बरामदे में सजावट का अत्यधिक कलात्मक सामान भरा पड़ा था। पीत-गुलाबी रंग के पर्दों के आगे एक मुरझाया हुआ टर्की का गुलाब रक्खा था जो सोने के तार से बँधा हुआ था। साथ ही उसमें अनेक देशों के स्वरूप व प्रकार की वस्तुयें रक्खी हुई थीं। इटैलियन आलमारियाँ थीं, स्पेन व पुर्तगाल की लोहे की आलमारियाँ थी, चीन के पैगोडा और जापान के बहुमूल्य प्रकार के पर्दे दिखाई दे रहे थे। तामचीनी व कांसे का सामान किनारे लगी रेशम, सुन्दर-श्रेष्ठ टेपेस्ट्री सब ओर दिखाई देती थी। आराम-कुर्सियां पलंग की भाँति बड़ी दिखाई देती थीं। सोफे आलों की तरह गहरे थे और सर्वत्र शान्त तथा निद्रित हरम की सी शान्ति बिखरी हुई थी।

वहाँ चीनी मिट्टी की बनी दो नारी-प्रतिमायें भी थीं—एक अपने सेमीज़ में थी तथा अपने अंगों को पकड़े हुये थी; दूसरी पूर्णतः नग्न थी व अपने हाथों पर चलती प्रतीत होती थी और उसके पैर ऊपर की ओर थे। केवल यह मूर्ति ही उस स्थान को भद्दा बनाने में तथा दूषित मनोवृत्ति को प्रकट करने में पर्याप्त थी। एक द्वार से, जो सदैव खुला रहता था, कोई भी ड्रैसिंग-रूम को भली प्रकार देख सकता था। वह सम्पूर्णतः संगमरमर व शीशों से जगमगाता था जिसकी स्वच्छता के लिये श्वेत-पात्र रखा दिखाई देता था, जिसमें रुपहले प्याले व चाँदी की सुराहियाँ रक्खी हुई थीं। वहाँ का सारा फर्नीचर कटावदार, चमकीला व हाथी-दाँत का बना हुआ था। बन्द पर्दा, धीमे प्रकाश को प्रकट

करता एव कमरे में नींद की खुमारी भरना था। नाना की प्रिय सुगन्धि वायलेट से सारा कमरा उत्तेजित हो रहा था जिससे केवल बरामदा ही नहीं सारा मकान सुगंधिमय हो रहा था।

सबसे बड़ी समस्या थी उस मकान को व्यवस्थित रखने के लिये नौकरों का चुनाव। नाना के पास अब भी जो थी जो नाना के सौभाग्य के प्रति निरन्तर आशान्वित थी और जीवन के उस नवीन परिवर्तन के प्रति शान्तिपूर्वक प्रतीक्षा करती रही थी। जो अब विजयिनी की भाँति समस्त भवन की स्वामिनी बनी हुई थी तथा अपना स्वयं का जाल चारों ओर फैलाकर अपनी मालकिन की भलाई के प्रति सदैव सचेष्ट थी। किन्तु एक संभ्रान्त महिला के लिये एक नौकरानी ही तो पर्याप्त न थी। एक सुरा-सेवक, एक कोचवान, एक भारवाहक, एक रसोइया सभी चाहिये थे। इनके अतिरिक्त अस्तबल को व्यवस्थित करना भी आवश्यक था। काउन्ट की किसी भी कठिनाई का निराकरण करने में लेबार्डेट ने विशेष सहयोग प्रदान किया था। उसने घोड़ों का सौदा किया, गद्दियाँ बनाने वालों के यहाँ गया, और उस नौजवान स्त्री को भी स्थान स्थान पर ले जाकर सामान खरीदने व चीजों का चुनाव करने में सहायता देता रहा। लेबार्डेट ने नौकर भी रक्खे। एक लम्बा चार्ल्स था जो गाड़ी हांकता था। वह ड्यूक डि. कारवेरूस के यहाँ काम कर चुका था; जुलियन था जिस पर सदैव मुस्कराहट खेलती थी तथा जिसके बाल घुंघराले थे। एक विवाहित दम्पति को भी उसने रक्खा जिसमें पत्नी विक्टोरीन, खाना बनाती थी तथा पति फ्रैन्कोइस, फुटकर काम व जूते इत्यादि सँभालता था।

वहाँ की सारी व्यवस्था राजमहलों की सी थी।

दूसरे महीने तक वहाँ सब कुछ भली प्रकार चलता रहा। वहाँ का वार्षिक खर्च लगभग तीन लाख फ्रैंक था। अस्तबल में आठ घोड़े थे और बग्घीखाने में पाँच गाड़ियाँ। एक विशेष प्रकार की लेंडो गाड़ी थी जिस पर चांदी का काम था जो कुछ समय तक समस्त पेरिस का आकर्षण रही थी। और नाना अपने इस सौभाग्य में ओत-प्रोत, धीरे से स्थिर हो गई। उसने थियेटर

छोड़ दिया और 'लिटिल डचेज' के केवल दो प्रदर्शनों में भाग लिया। काउन्ट के पैसे के रहते हुए भी उस कशमकश में बार्डनोव की स्थिति दिवालिया की भी हो गई। उसने उसमें सर्वाधिक असफलता का अनुभव किया। फान्टन ने उसे जो सबक दिया था उसमें यह एक और जुड़ गया—एक गन्दी चालाकी जिसके लिये वह प्रत्येक पुरुष को दोषी ठहराती थी। अब वह अपनी समस्त निर्बलताओं, हीनताओं एवं मोह के प्रति अनासक्त थी। किन्तु बदला लेने की भावना उसके चंचल मस्तिष्क में अधिक नहीं ठहरती था। जो हो, वहाँ जो कुछ रहता था, वह था अपने रोष के क्षणों के अतिरिक्त किसी भी प्रकार धन को बरबाद करना; तथा उस व्यक्ति के प्रति स्वाभाविक घृणा जो उसे वह देता था, सब कुछ दबोचने व नष्ट करने की सतत चाहना, और अपने प्रेमियों के नाश में सन्तोष तथा गर्व की भावना।

काउन्ट को सन्तोषप्रद व्यवस्था में रखकर नाना ने एक नवीन अध्याय का प्रारम्भ किया। उसने अपने पारस्परिक सम्बन्धों का एक कार्यक्रम निश्चित किया। काउन्ट उसे बारह हजार फ्रैंक प्रति मास देता था जिसमें उपहार व भेंटों की कोई गणना न थी उसके प्रत्युत्तर में वह नाना से चाहता था केवल-मात्र पूर्ण-निष्ठा, ईमानदारी, एक-पुरुष-व्रत। उसने (नाना ने काउन्ट के प्रति ईमानदार रहने की कसम खाई थी किन्तु साथ ही इस बात पर भी वह अड़ी रही कि उसका घर में भली प्रकार सम्मान किया जावे तथा उसकी प्रत्येक बात घर की पूर्ण स्वतन्त्र-स्वामिनी की भाँति स्वागत पावे। उदाहरणार्थ वह अपने मित्रों व परिचितों से प्रतिदिन मिलेगी व उनका सत्कार करेगी। वह काउन्ट निश्चित घंटों में आवेगा। संक्षेप में काउन्ट उस पर सब प्रकार से विश्वास करेगा। जब कभी वह हिचकता अथवा ईर्षा में भर जाता तो नाना गर्वोन्नत हो उठती और उसकी प्रत्येक वस्तु लौटालने की धमकी देती रहती अथवा अपनी पवित्रता अथवा सच्चाई का प्रमाण अपने छोटे लुई के सिर पर हाथ रखकर दे देती। उतना पर्याप्त होना चाहिये था। जहाँ सम्मान नहीं है वहाँ प्यार सम्भव नहीं है। प्रथम मास के अन्त तक मुफट उसकी इज्जत करता रहा।

किन्तु उसने उससे अधिक चाहा और प्राप्त भी किया। शीघ्र ही उसने सरल रूप से उस पर प्रभाव डाला। जब कभी भी काउन्ट अपने मस्तिष्क की प्रसन्न स्थिति में आता तब नाना उसमें उत्साह भर देती, उसको परामर्श देती और उससे बहुत कुछ प्रकट करती। धीरे-धीरे नाना काउन्ट के परिवार की चिन्ता में व्यस्त हो गई—उसकी पत्नी, उसकी पुत्री और काउन्ट से सम्बन्धित प्रत्येक विषय को लेकर उसके हृदय और धन, सभी के प्रति। और नाना वह सब बड़े अच्छे ढंग से करती—पूर्णत: न्याय व सत्यता सहित केवल एक प्रसंग पर वह उत्तेजना में भर गई जब काउन्ट ने उस पर यह प्रकट किया कि डागनेट उसकी लड़की के साथ शादी करने की इच्छा प्रकट करता है। जब से काउन्ट ने नाना को खुले तौर पर सहायता देना प्रारम्भ किया था तभी से डागनेट ने वह एक चतुराई का कार्य समझा था कि नाना से हर प्रकार के सम्बन्ध तुड़वा दिये जांय और उसको एक गन्दी और आवारा औरत सिद्ध किया जाय जिससे उसका भावी श्वसुर उसके (नाना के) पाशविक पंजे से छुटकारा पावे। अत: नाना ने अपने पुराने मित्र मीमीं की कटु भर्त्सना की : वह एक चरित्र-हीन व अपव्ययी है जिसने अपना सब कुछ गन्दी औरतों में नष्ट कर दिया है। और जब काउन्ट ने उन कमजोरियों पर विशेष महत्व न देने की बात कही तो नाना ने तेजी में कह डाला कि वह डागनेट की पहिले कभी रखेल रही थी और तब उसने उसके दुराचरण की कुछ बातें बताई। मुफट तब एकदम पीला पड़ गया और फिर कभी उस नौजवान के सम्बन्ध में उसने चर्चा नहीं की। यह बात उसको बड़ा अविश्वासी प्रकट करेगी।

वह विशाल भवन बड़ी कठिनाई से सज्जित हो पाया था। नाना—एक रात, बड़ी तत्परता से मुफट के समक्ष अपनी पवित्रता व सत्यता की सौगन्ध खा रही थी और दूसरी ओर काउन्ट एक्सेवियर डि. वैन्डेव्रेस को वहीं रक्खे हुए थी जो पिछले पन्द्रह दिनों से बड़े परिश्रम व सतर्कतापूर्वक नाना को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था तथा अपने उपहारों, फूलों, तथा भेटों से लाद रहा था। उस पर नाना ने अपने को झुका लिया—किसी

आसक्ति में नहीं अपितु केवल यह प्रदर्शित करने के लिये कि स्वेच्छा से कुछ भी करने को वह पूर्णतः स्वच्छन्द है। आकर्षण का उद्देश्य बाद में प्रकट हुआ, जब वेन्डेवर्स ने दूसरे दिन नाना की इस बात में सहायता की कि वह दूसरे से कुछ न कहेगा। नाना, उससे महीने में आठ से दस हजार फ्रैंक तक झटक लेगी जो उसके जेब खर्च के लिये बड़ी सहायक धन-राशि होगी। वह उस ज्वर की तीव्रता में अपना सब कुछ नष्ट कर रहा था। उसके घोड़े तथा लूसी के क्रय में तीन बड़े खेत समाप्त हो गये थे। साथ ही नाना, उसका अन्तिम देहात का मकान—जो एमीन्स के निकट था, एक ही ग्रास में निगल जाना चाहती थी। जैसे सब कुछ समाप्त करने को वह बड़ी शीघ्रता में था। यहाँ तक कि एक प्राचीन दुर्ग को – जिसे किसी वेन्डेव्रेस ने फिलिप–आगस्टस के राज्य-काल में बनाया था—सत्यानाश करने की पागल-भूख में समाप्त कर रहा था—यह सोचकर कि वह एक बड़ा सुखद प्रसंग है कि अपने पारिवारिक सम्मान के अन्तिम चिह्न सोने की मोहरें भी वह उस लड़की को समर्पित कर देवे जिसे समस्त पेरिस चाहता है। उसने नाना की समस्त शर्तें भी मान लीं : पूर्ण स्वतन्त्रता व निश्चित घंटों में प्यार, बिना उद्विग्नता अथवा कसमों की कामना के।

मुफट को कोई भी संदेह नहीं था। जहाँ तक वेन्डेव्रेस का सम्बन्ध था वह भली प्रकार सब जानता था जो चल रहा था, किंतु उसने तनिक भी आवेश प्रकट नहीं किया। उसने एक शरारती मुस्कान सहित उस संदेह करने वाले व्यक्ति की भाँति अनभिज्ञता प्रकट की जो समझता है कि उस विशिष्ट नगर में कुछ भी असम्भव नहीं है। किन्तु उसे उस समय तक सन्तोष था जब तक उसके घंटे निर्धारित थे। इस बात को समस्त पेरिस जानता था।

और अब नाना की समस्त व्यवस्था पूर्ण थी तथा उसका भवन पूर्णतः सज्जित था। अस्तबल, रसोई अथवा सोने के कमरे में किसी वस्तु की आवश्यकता शेष न थी। 'जो' ने, जो उस सब की जनरल मैनेजर थी, किसी भी कठिन परिस्थिति में बचाव के उपाय निकाल रक्खे थे। वहाँ भी थियेटर की भाँति व्यवस्था थी जैसे एक मशीन की। किसी भी सरकारी दफ्तर की भाँति

यहाँ सब कुछ सुनिश्चित व व्यवस्थित था। कुछ महीनों तक वहाँ सब कुछ इतनी भली प्रकार से चलता रहा कि कहीं कोई अड़चन न आई। केवल मैडम ने 'ज़ो' को बहुत तंग किया—अपने अविवेक, धुन तथा अपनी मूर्खतापूर्ण शेखियों के कारण। इससे नौकरानी और भी लापरवाह होती चली गई क्योंकि उसमें उसका लाभ था। जब कभी अपनी नई उद्दण्डता में नाना कुछ गलती कर जाती तो उसको पुन: ठीक करने में 'ज़ो' को लाभ प्राप्त होता था। वहाँ उपहारों की वर्षा होने लगी।

एक सुबह, जबकि मुफट बिस्तर पर ही था, 'ज़ो' ने एक भद्र-पुरुष को जो एक प्रकार से काँप रहा था—ड्रेसिंगरूम में जहाँ नाना अपने अन्डरवीयर बदल रही थी, प्रवेश कराया।

"क्यों? जीज़ी!" विस्मय में उस नवयुवती (नाना) ने कहा।

वह सचमुच जार्ज था। किन्तु नाना को उसका सेमीज पहनते हुए तथा उसके सुनहले केश उसकी नग्न गर्दन पर लटकते देखकर, उसने उसे पकड़ लिया। जार्ज ने अपने हाथ नाना की कमर में डाल दिये और चुम्बनों से उसे पीस डाला। वह अपने को इस संघर्षमय स्थिति से छुड़ाती रही। नाना बहुत डर रही थी। वह अपनी अशक्त आवाज में बोली: "छोड़ो, दूर हटो, हटो। वह अन्दर है। यह तुम्हारी बहुत बुरी बात है। और तुम 'ज़ो', तुम क्या पागल हो गई हो? इसको बाहर ले जाओ। उसे नीचे ले जाओ; मैं प्रयत्न करके वहीं आऊँगी।"

तब उसे 'ज़ो' ने नाना के समक्ष बाहर ढकेला। नीचे भोजन के कमरे में जब नाना उसके निकट पहुँची तो उसने दोनों को डाँटा। 'ज़ो' ने अपना ओठ काट लिया और बड़ी सन्तप्तता में बोली कि उसने सोचा था कि इससे मैडम प्रसन्न होंगी। नाना को पुनर्वार देखकर जार्ज इतना पुलकित हुआ कि उसके सुन्दर नेत्रों में आँसू छलछला आये। अब बुरे दिन चले गये थे। उसकी माँ ने सोचा था कि जार्ज के हृदय से नाना का बुखार उतर गया है तभी उसने उसे लेस फान्डेट छोड़ने की अनुमति दी थी। किन्तु पेरिस टर्मिनस पर पहुँचते ही वह अपनी डार्लिङ्ग का चुम्बन लेने एक गाड़ी में भागा जिससे वह अपनी

प्रेयसि तक शीघ्र से शीघ्र पहुँच सके। वह जिस प्रकार पहले देहात में रहना आया था उसी प्रकार आगे नाना के साथ रहने की बात करता रहा और उन स्मृतियों में डूब गया जब अपने नंगे पैरों वह लॉ मिगनेट में सोने के कमरे में प्रतीक्षा करता रहता था। अपनी कहानी को कहते-कहते उसने अपनी एक उँगली बाहर निकाल कर नाना का स्पर्श करने की इच्छा से आगे बढ़ा दी जैसे उन लम्बे वर्षों के कठोर विरह से वह घबड़ा गया हो। उसने नाना की बाहुओं को पकड़ लिया और उसके ड्रेसिङ्ग-गाउन की बाहों को छू कर जैसे अतिरेक में भरता गया।

"तुम अपने बेबी को अब भी प्यार करती हो?" उसने अपनी बच्चों जैसी आवाज में प्रश्न किया।

"हाँ, मैं सचमुच करती हूँ", नाना ने उत्तर दिया और अनायास ही अपने को छुड़ाते हुए बोली: "किन्तु तुम बिना किसी सूचना के चले आये। तुम जानते हो, मेरे बच्चे! मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ। तुम अवश्य ठीक होगे।"

जार्ज, गाड़ी से उतरते ही अपनी उस दीर्घकालीन चाहना के सन्तोष में इतना भर गया कि जिस स्थान में उसने प्रवेश किया था उस पर एक दृष्टि-पात भी वह न कर सका। किन्तु अब वह अपने चतुर्दिक उस बड़े परिवर्तन को देख रहा था। उसने उस कीमती भोजन के कमरे का निरीक्षण किया—उसकी चमकदार छत, उसकी गाबलीन टेपेस्ट्री और उसकी किनारे की आलमारियाँ जिनमें चाँदी का सामान भरा हुआ था।

"आह! हाँ" उसने उदास होकर कहा।

तब नाना ने उसे समझाया कि भविष्य में वह सुबह के समय कभी न आवे—यदि वह चाहे तो दोपहर बाद, चार से छै बजे से बीच। उस समय वह मित्रों से मिलती है। और जब जार्ज ने अपनी चंचल दृष्टियों में प्रश्नात्मक रूप से नाना को देखा और कुछ भी न पूछ सका तो नाना ने जार्ज के मस्तक को चूम लिया—बड़ी कोमलता और मिठास सहित।

"अति प्रसन्न रहो और मैं भी यथाशक्ति करूँगी", नाना बुदबुदायी।

किन्तु सत्यता यह थी कि अब उसके हृदय में वैसी भावनायें नहीं थीं। उसे जार्ज बहुत सुन्दर लगता था किन्तु उसके साथ मैत्री-भाव के अतिरिक्त उसके मन में कुछ न था। जो हो, किन्तु जब वह नित्य चार बजे आने लगा तो उसे अधिक खिन्न देखकर नाना को दया आई और उसने उसे आलमारी के पीछे छिपने इत्यादि की अनुमति दे दी, जिससे जार्ज निरन्तर नाना के सौन्दर्य का पान करता रहे। नियत समय पर उसने शायद ही कभी मकान छोड़ा। वहाँ वह इतना हिल-मिल गया था जितना वहाँ का छोटा कुत्ता बिजोय। दोनों ही नाना की स्कर्ट में घुसे रहते और उसका कुछ संसर्ग पा जाते, भले ही वह उस समय किसी अन्य के साथ होती।

निःसंदेह जब मैडम हुगन ने पुनः अपने लड़के के, उस शक्तिशालिनी गंदी औरत (नाना) के समक्ष गिरने की नवीन कथा सुनी तो वह पेरिस की ओर लपकी गई तथा अपने दूसरे लड़के की सहायता प्राप्त की जिसका नाम लेफ्टिनेन्ट फिलिप था और जो विन्सेनेस के गैरीजन में उन दिनों था। जार्ज, जो बड़े भाई से छिपता फिर रहा था; इस घबड़ाहट से दुःखी था कि उस पर बल-प्रयोग किया जावेगा। वह अपने मन में कुछ भी न छिपा सका तथा अपने हृदय की कोमलता की भावना में वह अनेक बार नाना से अपने बड़े भाई के सम्बन्ध में कहता रहा कि वह कुछ भी साहस कर सकता है।

"तुम देखो", उसने समझाया : "माँ यहाँ कभी नहीं आवेगी किन्तु वह मेरे भाई को भेजेगी। मुझे विश्वास है, मुझे लेने के लिये वह फिलिप को ही भेजेगी।"

पहली बार जब उसने यह कहा तो नाना को बहुत बुरा लगा। उसने तीखे शब्दों में कहा :

"मैं भी चाहूँगी कि वह वैसा करे! चाहे वह लेफ्टिनेन्ट ही क्यों न हो, फ्रांकोइस एक क्षण में उसे सीधा वापिस करेगा।"

तब वह छोकरा (जार्ज) निरन्तर अपने भाई के सम्बन्ध में प्रकारान्तर से उल्लेख करता रहा और फिर धीरे-धीरे उसके सम्बन्ध में अधिक ध्यान देना भी बन्द कर दिया। लगभग एक सप्ताह समाप्त होने तक नाना ने उसके सिर

से चोटी तक का विस्तृत विवरण जान लिया—एक बहुत लम्बा आदमी, बहुत मजबूत, सुन्दर किन्तु खुरदरा; इसके अतिरिक्त भी कुछ जानकारी की कि उसके हाथों में बाल हैं व उसके कन्धे पर एक मस्सा है। और इस प्रकार उस व्यक्ति की पूरी तस्वीर सामने उतर आई जिसके आने पर वह जल्दी ही लौटा-लना चाहती थी। तभी उसने कहा :

"मैं कहती हूँ, जीज़ी, तुम्हारा भाई आता नहीं दिखाई देता। वह बड़ा कायर प्रतीत होता है।"

दूसरे दिन, जब जार्ज नाना के पास अकेला था, फ्रांकोइस ने आकर पूछा कि क्या मैडम, लेफ्टिनेन्ट फिलिप हगन से भेंट करना पसन्द करेंगी? सुनते ही जार्ज पीला पड़ गया और बुदबुदाया :

"मैं उसका ध्यान कर ही रहा था। माँ ने आज सुबह ही कहा था।"

तब जार्ज ने उस नौजवान स्त्री पर जोर दिया कि वह कहला देवे कि वह व्यस्त है। किन्तु वह इसके पूर्व ही उठ बैठी और अत्यधिक उत्तेजित होकर बोली :

"क्यों, खुशामद क्यों? वह सोचेगा कि मैं डर गई। आह, ठीक है! हम लोगों में अच्छा मजाक रहेगा। फ्रांकोइस! उस भद्र-पुरुष को लगभग पन्द्रह मिनट ड्राइंग-रूम में प्रतीक्षा करने दो, तब मेरे पास ले आना।"

अब वह फिर नहीं बैठी और कमरे में इधर से उधर उत्तेजना में टहलती रही और दर्पण से मैन्टलपीस और वहाँ से वेनेरियन शीशे तक; जो एक बड़ी इटैलियन कास्केट पर टिका हुआ था, घूमती रही। प्रत्येक बार वह कनखियों से निहारती और मुस्कराहट फेंकती जबकि जार्ज सोफे पर पड़ा, शक्तिहीन सा, उस होने वाले दृश्य की कल्पना से काँप रहा था। नाना जब टहल रही थी तब छोटे-छोटे वाक्य कहती जाती थी :

"पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा करने से वह शांत हो जावेगा, और जब सोचेगा कि वह किसी अपरिचिता के यहाँ आया है तो केवल ड्राइंग-रूम देखकर ही चकित रह जावेगा। हाँ, हाँ, प्रत्येक वस्तु को ठीक से देखो। वह सब सही है। वह सब अपनी स्वामिन के प्रति तुम्हें श्रद्धा करना सिखावेगा।

यही केवल वह वस्तु है जिसे व्यक्ति समझ सकता है—श्रद्धा! क्या पन्द्रह मिनट हो गये ? नहीं, कठिनाई से दस मिनट। ओह! हमारे पास बहुत समय है।"

वह स्थिर न रह सकी। जब पन्द्रह मिनट हो गये तो उसने जार्ज को रवाना किया—सौगन्ध दिलाकर कि वह द्वार पर कुछ सुनेगा नहीं क्योंकि नौकर यदि वैसा देखेंगे तो बड़ा भद्दा लगेगा। जब वह सोने के कमरे में जाने लगा तो जीजी ने भर्राये गले से कहा :

"तुम जानती हो, वह मेरा भाई है'''।"

"घबड़ाओ नहीं", उसने तेवर में कहा : "यदि वह विनम्र रहेगा तो मैं भी नम्रता अपनाऊँगी।"

फ्रांकोइस ने फिलिप हगन को प्रवेश कराया वह ओवरकोट पहने हुए था। पहले तो जार्ज सोने के कमरे में अपने पैर के अँगूठों के बल एक ओर से दूसरी ओर न सुनने के ख्याल में गया जैसा कि नवयुवती ने कहा था। किन्तु बातचीत के स्वर सुनकर वह रुक गया - कुछ झिझकते हुए। वह मानसिक व्यथा से इतना संतप्त था कि उसके पैरों ने जवाब दे दिया। वह हर प्रकार की बात सोच रहा था—विपत्ति, थप्पड़ या कोई ऐसी अप्रिय घटना जिससे उसका नाना से सदैव के लिये सम्बन्ध-विच्छेद हो जावे। यहाँ तब कि वह अपने पद-चिह्नों पर पुनः लौट आया और द्वार के छेद से कान लगा कर सुनता रहा। वह बहुत कम सुन पा रहा था क्योंकि पर्दो की मोटाई में आवाज दबी जा रही थी, इस पर भी वह फिलिप द्वारा कहे गये कुछ शब्द सुन सका जो बड़े तीखे स्वर में थे : "बच्चा, परिवार'''सम्मान।"

इस चिन्ता में, कि उसकी डार्लिंग क्या उत्तर देती है, उसका हृदय उत्तेजना से धक्-धक् करने लगा जैसे वह मुन्न पड़ा जा रहा हो। निःसंदेह वह इसी प्रकार जवाब देगी : "एक उद्दण्ड-मूर्ख" "भाड़ में जाओ" 'मैं अपने मकान में हूँ।" किन्तु उसे कुछ भी स्पष्ट न हुआ—यहाँ तक कि श्वास लेने का स्वर भी नहीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे नाना वहाँ मर गई है। तुरन्त ही, उसके भाई की आवाज भी मन्द पड़ गई। वह आगे कुछ भी न

समझ सका जबकि एक अद्भुत् आवाज ने उसे विस्मयावह बना दिया। नाना सिसकियाँ भर रही थी। जार्ज में एक पल को अन्तर्द्वन्द्व उभर आया। वह आवेश में भागने को उद्दत हुआ — फिलिप पर टूट पड़ने को। किन्तु तत्काल ही 'जो' ने सोने के कमरे में प्रवेश किया; तब वह पकड़े जाने से लज्जा का अनुभव कर द्वार से हट गया।

'जो' ने शान्तिपूर्वक एक आलमारी से कपड़ा हटाया। जार्ज स्थिर और गूँगे की भाँति, अनिश्चितता का शिकार बना हुआ, अपने मस्तक को एक खिड़की के शीशे में दाबे खड़ा रहा। एक क्षणिक मौन के उपरान्त 'जो' ने प्रश्न किया :

"मैडम के साथ जो व्यक्ति है वह तुम्हारा भाई है ?"

"हाँ", भर्राई आवाज में जार्ज ने उत्तर दिया।

"और क्या, मान्सियर जार्ज, उससे आपको कोई परेशानी है !" दूसरी निस्तब्धता के उपरान्त उसने पुन: प्रश्न किया।

"हाँ", उसने पुन: एक वेदना-मिश्रित कठिनाई में उत्तर दिया।

'जो' ने अब कुछ शीघ्रता नहीं की। उसने कोई फीता लपेटा और तब धीरे से बोली :

"तुम्हें ऐसा नहीं घबड़ाना चाहिये। मैडम सब ठीक कर देंगी।"

और अब सब समाप्त हो चुका था। वे फिर नहीं बोले किंतु 'जो' ने कमरा नहीं छोड़ा। पन्द्रह मिनट तक वह इधर-उधर टहलती रही—उस युवक की घबड़ाहट का ख्याल किये बिना जो अपने को रोकने तथा संदेह दोनों से पीला पड़ रहा था। ड्राइंग-रूम की ओर उसने कनखियों से अनेक बार देखा। उतने तमाम समय तक वे लोग क्या करते रहे होंगे ? सम्भवत: नाना अभी भी चीख रही है। उस बदमाश ने जरूर उसे पीटा होगा। तब, जब 'जो' अन्त में चली गई तो वह पुन: द्वार की ओर भागा और अपने कानों को छेद में टिका लिया। वह एकदम परेशान हो रहा था। उसका मस्तिष्क चक्कर खा रहा था क्योंकि उसने अनायास प्रसन्नता की खिलखिलाहट सुनी, फुसफुसाहट के कोमल स्वर

सुने और एक स्त्री की वैसी चीखें व हँसी सुनी जो छेड़-छाड़ कर उत्तेजित की जा रही हो। और तब तुरन्त ही नाना ने फिलिप को सीढ़ियों की ओर बढ़ाया और बड़े अपनत्व तथा कोमल व्यवहार से उसे मुखरित करती रही। तब अन्त में, जब जार्ज ने बरामदे में आने का साहस किया तो नवयुवती एक दर्पण के सम्मुख खड़े होकर अपने आप को देख रही थी।

"हाँ ?" जैसे बड़ी कठिनाई से शब्द प्रकट करते हुए उसने प्रश्न किया।

"हाँ, क्या ?" बिना घूमे हुए ही वह बोली। और बड़ी लापरवाही से नाना ने जोड़ दिया : "तुम क्या कह रहे थे ? वह, तुम्हारा भाई, बहुत सुन्दर व्यक्ति है।"

"क्या, सब तय हो गया ?"

"हाँ, निश्चय ही, सब तय हो गया। सचमुच, तुम्हारा मामला था ही क्या ? क्या तुम सोचते थे कि हम लोग लड़ने जा रहे है ?"

किन्तु जार्ज अब भी कुछ न समझा। "मैने सोचा, मैं सुन रहा हूँ", वह लड़खड़ाते हुए बोला : "क्या तुम चीख नहीं रही थीं ?"

"चीख रही थी ? मैं ?" उसने प्रश्न किया—जार्ज के चेहरे की ओर सीधे देखते हुए : "तुम स्वप्न देख रहे होगे ! तुम क्या सोच रहे थे, मैं चिल्लाती।"

तब वह छोकरा और अधिक चक्कर में पड़ गया जब नाना उस पर इस बात पर बिगड़ी कि उसने उसका निर्देश नहीं माना और उस पर संदेह करके छेद से उसकी बातें सुनता रहा। और जब नाना ने उससे प्रश्न करने प्रारम्भ किये तो वह बहुत सरल भाव से दबाते हुआ बोला :

"और मेरा भाई ?"

"तुम्हारे भाई ने तुरन्त समझ लिया कि वह कहाँ है। तुम देखो, यदि मैं कोई बिल्कुल तुच्छ व साधारण स्त्री होती तो वह तुम्हारी आयु तथा पारिवारिक सम्मान के लिये अवश्य कुछ रोकथाम करता।' ओह ! मैं उन भावनाओं को समझती हूँ। किन्तु एक ही चितवन उसके लिये पर्याप्त थी। उसने एक सांसारिक व्यक्ति का सा व्यवहार किया। अत: परेशान मत होओ—वह सब

निबट गया। वह तुम्हारी माँ के मस्तिष्क को ठंडा कर देगा।" और वह एक हँसी के साथ कहती गई : "इसके अतिरिक्त तुम अपने भाई को यहाँ भी देखना। मैंने उसे निमन्त्रित किया है और वह आवेगा।"

"आह ! वह फिर आ रहा है", छोकरे ने कहा जो पीला पड़ रहा था।

उसने फिर कुछ नहीं कहा और उन्होंने आगे फिलिप के सम्बन्ध में कोई बात नहीं की। नाना बाहर जाने के लिये कपड़े पहन रही थी। जार्ज अपनी बेहद उदास आँखों से उसे देखता रहा। निःसंदेह इससे वह प्रसन्न था कि मामला सब ठीक हो गया क्योंकि नाना को फिर न देख सकने की अपेक्षा वह मृत्यु श्रेयस्कर समझता था। किन्तु उसके हृदय में एक मौन-व्यथा छिपी हुई थी, एक गहरी वेदना जिसका इसके पूर्व उसने कभी अनुभव नहीं किया था और जिसको व्यक्त करने का साहस भी उसमें न था। उसको यह कभी भी ज्ञात न हुआ कि कैसे फिलिप ने माँ की चिन्ता को दूर किया क्योंकि तीन दिन बाद, पूर्ण सन्तोष में, वह लेस फान्डेट लौट गई।

उसी रात्रि, जब वह नाना के यहाँ था तभी फ्रांकोइस ने सूचना दी कि लेफ्टिनेन्ट ने प्रसन्नता में उसकी मखौल उड़ाई और ऐसा व्यवहार प्रदर्शित किया जैसे वह एक लड़के के प्रति कर रहा हो कि उसकी उस उड़ान की वह निगरानी कर रहा है जिसका कोई लाभ उसके लिये नहीं है। अन्तरंग में दुःखी– जार्ज ने हिलने-डुलने का साहस तक न किया और एक लड़की की भाँति शर्माया सा मौन बैठा रहा।

वह फिलिप के साथ बहुत थोड़े समय रहा था क्योंकि वह उससे दस वर्ष बड़ा था। वह एक ऐसे मित्र की भाँति उससे डरता था, जिससे कोई अपने स्त्रियों के साथ के नवीन अनुभवों एवं अनुसंधानों को छिपाता है। तथा वह बड़ी कष्टप्रद लज्जा का अनुभव कर रहा था जब उसने अपने भाई को नाना के साथ बड़ी स्वच्छन्दता से व्यवहार करते देखा, अट्टहास करते सुना, जैसे वह पूरे जोश में हो और पूरा आनन्द प्राप्त कर रहा हो। जो हो, शीघ्र ही जब उसका भाई नित्य वहाँ आने लगा तो जार्ज उसकी उपस्थिति का जैसे आदी हो गया। नाना प्रसन्नता में चमक रही थी। एक वेश्या के जीवन में वह उसके प्रवास के

अन्तिम परिवर्तन की चरम सीमा थी—एक मकान की गरमाहट जो एक भवन में प्रदीप्त हो रही थी—मनुष्यों व फर्नीचर से उफन-उफन कर।

एक दिन अपराह्न में जब कि दोनों हगन वहाँ थे, काउन्ट मुफट ने अपने निश्चित समय में आकर बाहर पुकारा किन्तु जो के यह सूचित करने पर कि मैडम अपने कुछ मित्रों के साथ है—वह नाना से बिना मिले, एक भद्रपुरुष की सी भव्यता में पुनः लौट गया। किन्तु जब वह संध्या समय फिर आया तो नाना ने अत्यधिक रूखे ढङ्ग से उससे भेंट की और किसी अपमानित स्त्री के से रोप में भर कर उसने कहा—

"श्रीमान्! अपने को अपमानित कराने का मैंने आपको कोई अवसर नहीं दिया है। यह समझ लीजिये कि जब मैं घर पर होऊँ तो औरों की भाँति ही आपको भी अन्दर आ जाना चाहिये।"

काउन्ट, अपना मुँह फैलाये खड़ा रह गया। "किन्तु, माई डियर···," उसने समझाने का प्रयत्न किया।

"क्योंकि शायद मेरे पास कुछ आगन्तुक थे। हाँ, यहाँ कुछ आदमी थे। और क्या, भगवान् के लिये बताइये; मैं उनके साथ क्या कर रही थी? वृथा एक स्त्री के सम्बन्ध में लोग कानाफूसी करते हैं जिसमे एक सम्मानित प्रेमी अथवा प्रेमिका की प्रतिष्ठा पर धक्का लगता है। मैं अपने प्रति कानाफूसी सहन नहीं कर सकती।"

क्षमा प्राप्त करने में मुफट को बड़ी कठिनाई हो रही थी। मन में वह प्रसन्न था। इस प्रकार के प्रसंगों पर ही वह उसे आज्ञाकारी के रूप में देखती थी और अपनी ईमानदारी के प्रति सन्तोष देती थी। कुछ समय से उसने जार्ज की उपस्थिति के लिये उसे राजी कर लिया था कि वह एक छोकरा है जो उसे आनन्द देता है, वह कहती थी। उसमे फिलिप के साथ काउन्ट को भोजन भी करा दिया। इस पर काउन्ट पूर्णतः व्यवहारिक बना रहा। खाने की मेज छोड़ने पर वह उस नवयुवक को एक ओर ले गया और उसकी मां के सम्बन्ध में समाचार जानने चाहे। उस समय के बाद से दोनों हगन-बंधु, वैन्डेव्रे स व मुफट खुले तौर पर उस स्थान के व्यक्ति हो गये जहाँ वे आपस में निकटतम मित्र

की भाँति मिलते थे। यह और भी आसान हो गया। मुफट ने स्वयं ही अपने आने का समय कठोर कर दिया, और बार-बार आने को बचाने लगा जिससे अपने प्रति एक अपरिचित के से तकल्लुफ-भरे स्वागत को वह बचा सके। रात्रि में; जब नाना मृगछाला पर भूमि पर बैठी होती और अपने कपड़े उतारे होती तो मुफट सरल भाव से अन्य मित्रों के सम्बन्ध में वार्तालाप करता —विशेषतः फिलिप के सम्बन्ध में जो स्वयं एक सत्य प्रतीत होता था।

"यह सही है, वे सब बड़े भले लोग हैं," नाना कहती, भूमि पर बैठे ही बैठे और अपने सेमीज को बदलते हुये। "केवल तुम जानते हो, वे देखते है कि मैं क्या हूँ। यदि एक पल को भी वे अपने सम्बन्ध में भूल जायें तो मैं तत्काल उन्हें घर से बाहर निकाल दूं।"

तब भी, उस विलासिता में, उस कामलिप्सा में नाना को मृत्यु की सी विभीषिका का अनुभव होता था। रात्रि के प्रत्येक क्षण के लिये उसके पास आदमी रहते थे, सर्वत्र धन ही धन था—यहाँ तक कि उसकी शृङ्गार मेज की दराजों में, कंघों और ब्रुश में भी। किंतु उससे उसे तृप्ति न थी। कहीं कोई अभाव था, एक खोखलापन जो उसे अखरता था। उसका जीवन नीरसता में घुमेड़ें ले रहा था। प्रतिदिन वही उदासी की घटायें घिरती थीं। आने वाला कल जैसे उसके लिये था ही नहीं। वह एक निरीह पक्षी की भाँति थी जो निश्चित ही किसी का भोजन था और किसी भी डाल पर बैठने को तत्पर था। यह ऊब की निश्चितता उसमें समस्त दिवस फैली रहती। बिना किसी प्रयत्न के वह उस काहिली में सोती रहती जैसे उस वेश्यावृत्ति के अपने जीवन व व्यवसाय में निरीहतावश घिरी हो। केवल गाड़ी में घूमते समय वह अपने पैरों को किंचित आराम दे पाती थी। वह अपने बाल-जीवन की सुखानुभूतियों में डूब जाती, सुबह से रात तक अपने बिजोव कुत्ते को चूमती रहती। और उन आदमियों के गन्दे से गन्दे मनोरञ्जन में समय नष्ट करती। वह पुरुष के प्रति एक विचित्र जिज्ञासा थी। उनके प्रति शिष्ट व्यवहार को निभाने के लिये वह किसी प्रकार आर्द्रता सहित व्यवस्था बनाये रखती और अपनी उस मिटन-घुटन में उसमें केवल एक ही चिन्ता थी, अपने सौन्दर्य को अक्षुण्य बनाये रखने की चेष्टा। वह निरन्तर

अपने निरीक्षण में, नहाने धोने में, सुगन्धि से अपने को ओत-प्रोत रखने में तथा किसी के समक्ष, किसी भी समय, किसी भी अवस्था में बिना लज्जा अथवा संकोच के नग्न होकर प्रकट होने में उसे कोई झिझक न होती थी।

नाना प्रतिदिन सुबह दस बजे उठती थी। बिजोय, उसका स्काटलैंड का कुत्ता, उसके मुँह को चाट २ कर उसे जगाता। वह उसके साथ पाँच मिनट तक खेलती और वह उसकी भुजाओं तथा पैरों पर कूदता फाँदता और काउन्ट पर भी। बिजोय सर्वप्रथम था जिस पर काउन्ट को ईर्षा थी। यह ठीक नहीं था कि एक जानवर उस प्रकार बिस्तरों में अपनी नाक घुसेड़े। संध्या के केशों की व्यवस्था के हेतु ग्यारह बजे तक फ्रान्सिस आकर उसके बालों को ठीक करता। मध्याह्न-भोजन के समय, अकेले भोजन करने की स्वाभाविक अरुचि में, वह मैडम मेलोर को बुला लेती जो प्रातः ही आ जातीं। इसका किसी को पता न था कि अपने विचित्र टोपों में वे कहाँ से आती हैं और कहाँ रात को लौटतीं हैं—अपने जीवन के सारे रहस्यों सहित जिनके प्रति चिन्ता करने की किसी को आवश्यकता न थी।

किन्तु सबसे भद्दा समय होता दोपहर के भोजन के पश्चात से संध्या के शृङ्गार के समय तक दो-तीन घंटों का। साधारणतः तब वह अपने किसी न किसी मित्र के साथ बिजिक खेलती। कभी-कभी फिगारो पढ़ती—उन थियेटर व फैशन के समाचारों को जिनमें उसका आकर्षण होता। कभी-कभी वह कोई किताब खोलती, अपनी साहित्यिक अभिरुचि के गर्व सहित। उसे निबटने-नहाने-धोने में पाँच बज जाते। तब लगता जैसे वह अपनी दीर्घकालीन उदासी को त्याग कर जग गई हो। कभी वह बाहर घूमने जाती और कभी आदमियों की भीड़ का घर में ही स्वागत करती; कभी रात्रि भोजन बाहर करती और बिस्तर पर बहुत देर को जाती और दूसरी सुबह उसी उदासी की घटा में जागती और नया ताजा दिन उसी प्रकार समाप्त करती।

उसका सबसे बड़ा मानसिक परिवर्तन होता बेटिग्नोल्स जाकर अपनी चाची के यहाँ नन्हे लुई को देखना। इधर लगभग पन्द्रह दिन तक वह उसे

पूरी तरह भूल गई थी। तब वह आवेश में भर जाती और उसे देखने के लिये पैदल चल देती, एक कोमल और ईमानदार माँ की भाँति। वह उसके लिये नाना प्रकार के उपहार ले जाती; चाची के लिये नकसुंघनी, बच्चे के लिये सन्तरे तथा मिठाइयाँ। बोइस से लौटते समय वह अपनी लैन्डो में बड़ी भव्य पोशाक में जाती जिसे देखकर सड़क पर चलने वाले भी परेशान होते। जब से उनकी भतीजी इतनी बड़ी स्त्री बन गई थी तब से मैडम लेराट मिथ्याभिमान में मगन हो रही थी। वह कभी-कभी एवेन्यू. डि. विलियर्स जाती और बहाना किया करती कि वह स्थान उसके लिये नहीं है किन्तु वह अपने मोहाल में ही गर्व का प्रकाशन करती जब वह नवयुवती, चार या पाँच हजार फ्रैंक के मूल्य के कपड़े पहन कर उसके यहाँ आती। तब अगले दिन वह नाना द्वारा प्राप्त उपहारों को लोगों को दिखाने में व्यस्त रहती और अपने पड़ोसियों पर नाना की भव्यता का प्रदर्शन कर उन्हें विस्मित करती। साधारणतः रविवार का दिन नाना ने अपने परिवार के लिये निश्चित कर रक्खा था। यदि मुफट उस दिन उससे कहीं चलने के लिये कहता तो वह एक नौजवान-गृहस्थिन की तरह मुस्कराकर मना कर देती: 'यह सम्भव नहीं है क्योंकि वह अपने पुत्र को देखने व चाची के साथ भोजन करने जा रही है। इसके साथ यह भी कि नन्हा लुई सदैव रोगी बना रहता है। वह केवल तीन वर्ष का है किन्तु बहुत बड़ा होता जा रहा है। उसकी गर्दन पर एक्जिमा हो गया है और उसका कान बहता है जिससे प्रतीत होता है कि उसकी खोपड़ी की हड्डी सड़ कर बह रही है।' जब वह उसको उतना पीला देखती और रक्त की कमी पाती और उसका मुलायम मांस स्थान-स्थान पर पीले धब्बे प्रकट करता दिखाई पड़ता तो वह अति गम्भीर हो जाती; उसे सर्वाधिक आश्चर्य होता। न जाने वह क्यों बीमार रहता है? उसकी माँ तो सदा हट्टी-कट्टी रहती है।

यदि किसी दिन उसका बच्चा उसे आकर्षित न करता तो वह अपने अस्तित्व के प्रति चीखती, उदासी का अनुभव करती, बोइस जाती, थियेटर के प्रथम प्रदर्शन को देखती, मेसन डोरी अथवा केफ एन्गेलेस जाकर भोजन करती; सार्वजनिक स्थानों में जाती जहाँ पुरुषों की भीड़ एकत्र होती जैसे

में शील; आलोचनात्मक निरीक्षण करती घूमती अथवा रेस में जाती। किंतु तब भी वह उस उदासी और नीरसता की गन्दगी का अनुभव करती, जो उसमें अन्तर्वेदना भर देती। उस आसक्ति के उपरान्त भी जिसमें वह प्रति-पल घिरी रहती वह एकांतिक क्षणों में अपनी बाहें फैलाकर गहन निराशा का अनुभव करती। एकांत उसे सदैव व्यथित बनाता क्योंकि तब वह उस खोखलेपन की सत्यता से भर जाती और अपनी ही सोसाइटी के प्रति थकन व ऊब का अनुभव करती। अपने व्यवसाय व स्वभाव दोनों ही से अत्यधिक प्रफुल्लित होने पर भी तब वह शोक-संतप्त हो जाती और निरन्तर जम्हाइयाँ लेकर उस चीख में पुकारती :

"ओह ! पुरुष मुझे कितना व्यथित करता है।"

एक संध्या जब वह किसी क्लब से लौट रही थी, नाना ने एक स्त्री को रूये मान्टमार्ट्र से निकलते हुए देखा जिसके जूते एड़ियों से टूटे हुए थे, गन्दी स्कर्ट और एक टोप पहने हुए थी, जो लगता था, बहुत बार वर्षा में भीगा है। अचानक उसने उसे पहचाना और बोली :

"चार्ल्स, रुको !" उसने अपने कोचबान से कहा और तब पुकारती रही : "सैटीन ! सैटीन !"

आने-जाने वालों ने उस ओर घूम कर देखा जैसे पूरी सड़क उधर झाँक रही हो। सैटीन निकट आगई। वह गाड़ी के पहियों से अब और अधिक गन्दी हो गई।

"अन्दर आओ···" नाना ने, बिना यह सोचे कि लोग क्या कहेंगे, उसे पुकारा।

इस प्रकार उसने उसे गाड़ी में बैठाया और चल दी। उस नीली लैण्डों में तथा नाना की उस मोतिया रंग की बादामी-रेशमी-पोशाक जिसमें चेन्टिली के फीते टँगे हुए थे, के निकट बैठी वह अत्यधिक गन्दी दिख रही थी। सभी लोग, कोचवान की कीमती पोशाक तथा उसके तेवर को देखकर, मुस्करा रहे थे।

उस समय से नाना को उसके प्रति विचित्र आसक्ति हो गई। सैटीन

उसकी सहकारिणी बन गई। एवेन्यू डि. विलियर्स के उस विशाल भवन में, स्वच्छ होकर बहुमूल्य वस्त्राभूषण से विभूषित हो, उसने तीन दिन तक अपने सेन्ट लज़ारे के अनुभव बताये—वे सारे कष्ट व अनुभव जो उसने सन्यासियों एवं पुलिस वालों के बीच उठाये थे। नाना को उससे बड़ी घृणा हुई। उसने उसे सान्त्वना दी और यह वचन दिया कि वह उसे उस आफत से निकालेगी चाहे उसे मिनिस्टर-आफ-पुलिस से स्वयं ही क्यों न मिलना पड़े। तत्काल ही तो कोई शीघ्रता थी नहीं क्योंकि कम से कम उसके यहाँ आकर तो वे उसकी तलाश करेंगे नहीं। और अब अनेक संध्यायें उन दोनों स्त्रियों के बीच, बड़ी कोमल व आकर्षक बन गई। प्यार मनुहार व दबी-दबी खिलखिलाहट हर समय सुनाई पड़ती। वह एक छोटा सा खिलवाड़ था, जो रूये डि. लावल में पुलिस वालों के झंझट से प्रारम्भ हुआ था और जो अब एक अच्छा मजाक बन रहा था। किन्तु एक दिन वह गम्भीर बन गया। लारीज के प्रति जो नाना में एक विशेष क्षोभ था वह अब प्रकट हो रहा था। वह अत्यधिक परेशान व क्रोधित थी तथा वह और भी बढ़ गई जब चौथे दिन सुबह सैटीन अनायास गायब हो गई। किसी ने उसे जाते नहीं देखा। वह अपनी नई पोशाक में भिंची सी जा रही थी तथा खुली हवा एवं अपने चिर-परिचित फुटपाथों की लालसा से वह चंचल हो उठी थी।

उस दिन मकान में इतना तूफान मचा कि सभी नौकर बिना एक शब्द बोलने का साहस किये व बिना गर्दन लटकाये काम करते रहे। दरवाजे पर खड़े न रहने के लिये नाना ने फ्रांकोइस को तो पीट ही दिया। किसी प्रकार उसने अपने को रोका और सैटीन को एक गन्दी औरत कह कर सन्तोष की सांस ली। यह उसको एक सबक हो गया कि अब फिर वह ऐसी गन्दगी को नाले से निकाल कर कभी न लावेगी। उस संध्या मैडम ने अपने को कमरे में बन्द कर लिया और 'ज़ो' उसकी सिसकियों की आवाज सुनती रही। तब शाम को उसने अचानक अपनी गाड़ी लाने का आदेश दिया और लारीज की ओर चल दी। उसे ख्याल आया कि रूये डेस मार्टायर्स की खाने में मेज पर सैटीन जरूर बैठी मिलेगी। उसको दुबारा नहीं लाना था किन्तु उसके मुँह पर

थप्पड़ लगाने की बात थी। हुआ भी वही, सैटीन मैडम राबर्ट के साथ एक छोटी सी मेज पर भोजन कर रही थी। नाना को देखकर, वह हँसी। हृदय पर आघात का अनुभव होने पर भी नाना ने कोई तूफान नहीं उठाया। इसके विपरीत वह अत्यधिक शान्त व विनीत होकर बैठ गई। उसने शैम्पेन पी तथा अनेक औरतों को नशे में डुबा दिया। जैसे ही मैडम राबर्ट कुछ देर को कमरे से बाहर गई वह सैटीन को लेकर चल दी। जब नाना ने उसे गाड़ी में बैठाल लिया तो उसे बड़ी जोर से काटा खाय और कहा कि यदि आगे कभी वह भागेगी तो वह उसे जान से मार डालेगी।

और फिर वह घटना बार-बार होती रही। किन्तु उस भव्य विलास-गृह के आराम से ऊब कर एक धुन में वह चल देती और नाना—एक धोखा खाई हुई स्त्री की तरह, आवेश में उस नीच स्त्री के पीछे, हर बार भागती। तब वह मैडम राबर्ट को मुँह पर पीटने की बात कहती और एक दिन उसने द्वन्द्व-युद्ध की बात भी सोच डाली।

अब जब कभी भी वह लारीज में भोजन करने जाती तो अपने हीरे पहनती। कभी-कभी वह लुइज वायोलेन, मेरिया ब्लान्ड अथवा तातानेने के साथ रहती जो देखने में बड़ी भव्य दिखाई देतीं। उस पीले गैस के प्रकाश के नीचे तथा भोज्य-सामग्री की सुगन्धि के मध्य, जो तीनों कमरों में व्याप्त रहती, ये स्त्रियाँ अपने दिव्य-प्रदर्शन में निकटवर्ती लड़कियों को चकित करतीं और उन्हें भोजन के बाद साथ ले जातीं। उन दिनों लारी अपने ग्राहकों पर पूर्व से अधिक अपनत्व के साथ प्यार-मनुहार करती थी। और सैटीन, उन सब के बीच अपनी शान्ति बनाये रखती। उसकी आँखें नीली व आकृति कुमारी की सी व्यक्त होती थी। उन दो स्त्रियों की मारपीट, काटना, गिराना —इस सब के लिये वह कहती कि वह बड़ा प्रिय मजाक होता है। वह यह भी कहा करती कि अच्छा हो कि वे दोनों आपस में किसी प्रकार का समझौता कर लें। उसको पीटने से कोई लाभ नहीं। प्रत्येक को प्रसन्न करने की इच्छा रखते हुए भी वह एक में से दो तो बन नहीं सकती। तब नाना जीतती। वह सैटीन पर अधिक स्नेह प्रकट करती तथा उपहार देती

और बदला लेने की भावना में मैडम राबर्ट उसे गुमनाम पत्र लिखा करती।

इधर कुछ समय से काउंट मुफट बड़े अस्त-व्यस्त प्रतीत हो रहे थे। एक सुबह, बड़े आवेश में, उन्होंने नाना के सम्मुख एक इसी प्रकार का गुमनाम-पत्र रक्खा जिसमें नाना ने देखा कि प्रारम्भिक चार–छै पंक्तियों में ही लिखा था कि वह (नाना) वैन्डेव्रेस तथा दोनों हगन बंधुओं के कारण काउंट के प्रति विश्वासघातिनी है।

"यह गलत है…यह गलत है!" वह तीव्रतापूर्वक चिल्लाई और उसने एक विशेष प्रकार की सत्यता प्रदर्शित करने की चेष्टा की।

"तुम कसम खाती हो?" उसने जैसे पूर्णतः सन्तुष्ट होते हुए प्रश्न किया।

"ओह, क्या चाहते हो…मैं अपने लड़के के सिर की सौगन्ध खाती हूँ।"

वह पत्र बड़ा लम्बा था; उसमें सैटीन के प्रति नाना के निम्न सम्बन्धों की चर्चा थी। जब नाना ने अन्तिम भाग पढ़ा तो वह मुस्कराई।

"अब मैं जानती हूँ कि यह पत्र कहाँ से आया है", उसने साधारण रूप में व्यक्त किया।

और जब मुफट ने अन्तिम भाग के प्रति नकारात्मक अभिव्यक्ति प्रकट की तो नाना ने रूखेपन से कहा: "मेरे प्रिय, मैं समझती हूँ कि यह ऐसी बात है जिसका तुम पर कोई प्रभाव नहीं है। उससे तुम्हारा सम्बन्ध अथवा हानि ही क्या है?"

नाना ने उस बात को काटा नहीं; किन्तु काउंट के शब्दों में एक तिरस्कार प्रकट हो रहा था। तब नाना ने अपने कन्धे हिला दिये। वह कहाँ से चला आया है? इस प्रकार की बातें सब जगह पाई जाती हैं और उस प्रसंग पर उसने अपने मित्रों के उदाहरण दिये और दृढ़तापूर्वक यह व्यक्त किया कि अच्छी से अच्छी स्थिति की स्त्रियाँ ऐसी स्थिति में किसी विस्मय का अनुभव नहीं करतीं। संक्षेप में, नाना के कथन से प्रकट हो रहा था कि इससे अधिक साधारण बात हो ही क्या सकती है। जो सही नहीं हैं,

वह सही नहीं है। उसने थोड़ी देर पहले अभी देखा था कि वैन्डेव्रे स व दोनों ह्गन बंधुओं के प्रसंग पर नाना ने कितना तिरस्कार प्रकट किया था। आह! यदि वह सत्य होता तो काउन्ट नाना को फांसी भी लटका देता और यह अनुचित भी न होता। अब नाना दोहराती रही :

"चलो खत्म करो, तुमको उससे क्या उलझन है ?"

किन्तु जब काउन्ट निरन्तर शिकायत करता रहा तो वह बोली : 'मेरे दोस्त ! तुम्हारे पास बड़ा सरल उपाय है। सारे द्वार खुले हुये हैं। मैं जैसी हूँ, या तो मुझे उसी प्रकार स्वीकार करो या मुझे अकेली छोड़ दो।"

काउन्ट ने अपना सिर झुका लिया। उस नौजवान स्त्री के विरोधों से वह अन्दर ही अन्दर प्रसन्न हो रहा था। नाना अपनी शक्ति को देखकर, वैसा व्यवहार करने में पीछे नहीं रही और उस समय से सैटीन सदैव के लिये उस व्यवस्था का एक भाग बन गई—उसी स्तर पर जिस स्तर पर अन्य लोग थे। उस गुमनाम पत्र के प्रति वैन्डेव्रे स के हृदय में कोई उलझन नहीं थी। उसने उसकी मजाक बनाई तथा सैटीन से ईर्षा की सी लड़ाई भी लड़ी। जबकि फिलिप व जार्ज ने उसे जैसे एक कामरेड माना और उससे कुछ व्यंग्यात्मक वाक्य कहे।

नाना ने कोई एक नया सा प्रयोग किया था। एक रात जब वह छोकरी गायब हो गई तो बिना उसके सामने आये नाना रूये डेस. मार्टायर्स में भोजन करने गई। जब वह अकेली बैठी खा रही थी, उसी समय उसके निकट डागनेट आया। वैसे तो उसका जीवन-क्रम व्यवस्थित हो चुका था फिर भी यह सोच कर कि पेरिस के उस अन्धकारमय एकान्तिक घृणास्पद स्थान में उसका परिचित कोई न मिल सकेगा, वह कभी-कभी अपने पूर्व दुराचरणों की गंध में वहाँ आता रहता था। फलतः उस समय, नाना की उपस्थिति मे वह बड़ा परेशान हुआ। किन्तु वह भागने वाला व्यक्ति न था अतः मुस्कराते हुये आगे बढ़ा। उसने प्रश्न किया कि क्या मैडम उसे अपनी मेज पर भोजन करने की स्वीकृति देंगी। मजाक करने पर तुले हुये डागनेट को देखकर नाना ने बेरुखाई किन्तु तीव्रता से उत्तर दिया—

"श्रीमान्, जहाँ सुविधा हो बैठिये। हम लोग एक सार्वजनिक स्थान पर हैं।"

इस प्रकार प्रारम्भ हुई वार्ता एक भले से मजाक में बदल गई किन्तु जब डेसर्ट प्रस्तुत किया गया तो नाना ने ऊबते हुये किन्तु गर्वोन्नत मुद्रा में अपनी कोहनियाँ मेज पर टिका दीं और तब अपने चिर परिचित वार्तालाप में प्रारम्भ किया—

"हाँ, किन्तु तुम्हारी शादी ? कैसा, क्या चल रहा है ?"

"बहुत अच्छा नहीं," डागनेट ने स्वीकार किया।

सत्यता यह थी कि जब उसने उस महिला को अपने लिये माँगने का साहस किया था तब काउन्ट ने आवश्यकता से अधिक उदासीनता का प्रदर्शन किया इससे डागनेट ने आगे विचार ही एक प्रकार से स्थगित कर दिया और उसे भी प्रतीत हुआ कि उस मामले में जान नहीं है।

ठोढ़ी को अपनी हथेलियों पर रखे हुये नाना ने अपनी चमकदार आँखों से उसकी ओर गौर से देखकर तथा ओठों पर व्यंग्यात्मक मुस्कराहट सहित प्रारम्भ किया।

"आह ! हां तो मैं एक दुराचारिणी हूँ।" उसने धीरे-धीरे कहा—"तो तुम अपने भावी श्वसुर को मेरे पंजों से मुक्त करना चाहते हो। हां, सच-मुच, किसी समझदार आदमी के लिये तुम निरे मूर्ख हो ! क्या ? तुम वहाँ जाते हो और उस आदमी से मेरे बारे में गंदी बातें कहते हो जो मेरा प्रशंसक है और जो सब बातें मुझे बता देता है। सुनो ! मैं चाहूँ तो तुम्हारी शादी की बात एक पल में समाप्त हो सकती है, मेरे बच्चे !"

कुछ क्षणों के लिये तो डागनेट भी जैसे उसी विचार का बन गया, मानो आत्म-समर्पण की भावना में वह पूर्णतः भर गया हो। किन्तु, प्रसंग गम्भीरता न पकड़ ले अतः वह उसे मजाक में ही लेता रहा। फिर अपने दस्तानों को चढ़ाते हुये उसने अत्यधिक विनयसहित नाना से मैडम एस्टेला डि. ब्यूविले को अपने लिये मांगा।

जैसे रोमांचित होते हुये नाना ने हँस कर कहा—"ओह ! वह लड़की । उससे क्रोधित होना असम्भव है ।"

स्त्रियों में डागनेट की सर्वाधिक सफलता का कारण था उसकी आवाज जो बड़ी ही कोमल थी । उसमें संगीत की सी पवित्रता व लचक थी जिससे अल्हड़ युवतियों में वह 'मखमली गले वाला' उपनाम से प्रसिद्ध हो गया था । अपने सुरीले वाक्यों से वह उन्हें दुलारता और मोहित कर वश में करता । वह अपनी शक्ति को जानता था अतः उसने उसे (नाना को) शब्दों से विमोहित किया । वह वार्तालाप का फव्वारा छोड़ता रहा—बहुत सी ऊट-पटांग बातें करता रहा । जब उन लोगों ने मेज छोड़ी तो नाना गुलाबी नशे में थी तथा विजित सी उसके हाथों में काँप रही थी । चूंकि दिन बड़ा सुहाना था अतः नाना ने अपनी गाड़ी वापस कर दी और उसके साथ उसके घर तक पैदल ही गई, स्वभावतः वह अन्दर भी गई । दो घण्टे बाद, अपनी सब चीजें पुनः धारण करते हुए वह बोली :

'तो मीमी ! तुम चाहते हो कि यह शादी पूरी हो जाय ?"

"हाँ", वह बुदबुदाया : "यही सब कुछ है जो मैं कर सकता हूँ । तुम जानती हो । वैसे मैं पूर्णतः हार चुका हूँ ।"

थोड़ी देर मौन रहने के उपरांत वह बोली : 'ठीक है, मैं तैयार हूँ ! मैं तुम्हारी सहायता करूँगी । तुम जानते हो वह सूखी लकड़ी की तरह नीरस है । किन्तु चिन्ता मत करो; तुम सब तो राजी हो ही । ओह ! मैं स्वयं अनुग्रहीत हूँ, मैं तुम्हारे लिये वह ठीक कराऊँगी ।" फिर खिलखिला कर हँसते हुए उसने कहा : "किन्तु तब मुझे क्या भेंट करोगे ?" उसका वक्ष तब तक नग्न था ।

डागनेट ने उसे रुक कर पकड़ लिया और कृतज्ञता-प्रकाश में जैसे वह उसके कन्धों को चूमता रहा ।

अत्यधिक मुदित होते हुए तथा कंपन व सिरहन में डूबकर उसने अपने को छुड़ाने का बहाना किया और स्वयं को पीछे ढकेल लिया ।

"आह, मैं जानती हूँ", इस खिलवाड़ से रोमांचित होते हुए नाना ने

कहा : "सुनो ! यही मैं अपनी दलाली में चाहूँगी । अपने विवाह के दिन तुम मुझे अपनी अबोधता का प्रारम्भिक उपहार लाकर देना, समझे !"

"अवश्य ! अवश्य !" उसने कहा और नाना भी अधिक जोर से हँसी । उस सौदे से वे दोनों ही प्रसन्न थे । उन्हें वह पसन्द था ।

ऐसा हुआ कि दूसरे दिन नाना के यहाँ एक रात्रि-भोजन का आयोजन था । बृहस्पतिवार को पूर्ववत सम्मेलन था जिसमें मुफट, वैन्डेव्रे स, दोनों हुगन तथा सेटीन सम्मिलित होने को थे । काउन्ट उस दिन जल्दी आ गया था । वह उन दिनों अस्सी हजार फ्रैंक की चिन्ता में था क्योंकि वह उस नवयुवती के दो-तीन बिलों का भुगतान कर उससे मुक्ति चाहता था । वह नाना को नीलम का एक सैट भी उपहार में देना चाहता था क्योंकि उसकी चाहना वह अत्यधिक कर रही थी । वह किसी 'रुपया उधार देने वाले' की खोज में था और अपनी स्टेट का कोई भी भाग बेचना नहीं चाहता था क्योंकि उधर दुर्भाग्य ने उसे अच्छी तरह दबोचा था । अतः नाना के सुझाव पर उसने लेबार्डेट से कहा किन्तु अपने लिये वह मामला बहुत भारी जानकर उसने हेयर-ड्रेसर से कहने की बात कही । फ्रांसिस सदैव ही अपने ग्राहकों के काम आने में प्रसन्न होता था । काउन्ट ने अपने को उन भद्र पुरुषों के सुपुर्द कर दिया—केवल इतना कहकर कि उसका नाम कहीं नहीं आना चाहिये । उन दोनों ने एक लाख फ्रैंक अपने पास रखने की स्वीकृति उससे ले ली क्योंकि शेष बीस हजार फ्रैंक ब्याज के रूप में उन्हें रखने थे । उनका कहना था कि ऐसे ठग-सूदखोरों से उन्हें सहायता लेनी ही पड़ेगी । जब मुफट अन्दर आया तभी फ्रांसिस ने नाना के सिर की सजावट पूर्ण की थी । लेबार्डेट जैसे किसी मतलब का दोस्त न हो, ड्रेसिंग-रूम में टहल रहा था । काउन्ट को देखते ही उसने पाउडर और पोमेड के डब्बों पर नोटों के बन्डल फेंकने प्रारम्भ किये । स्वीकृत बिल, ड्रेसिंग-टेबिल के कोने में संगमरमर पर रक्खा था । नाना ने इच्छा प्रकट की कि लेबार्डेट खाने के समय तक वहाँ रहे किन्तु उसने इसलिये मना कर दिया कि वह किसी धनवान विदेशी को पेरिस दिखला रहा था । मुफट ने उसे एक ओर ले जाकर अनुरोध किया कि वह 'बेकर्स' जौहरी के यहाँ से नीलम का एक सैट ला दे

जिसे, वह चाहता था कि, उसी रात एक विस्मय के साथ उसे नाना को प्रदान करे। लेवाडेंट ने सहर्ष वह कार्य करना स्वीकार कर लिया। आध घण्टे बाद ही, जुलियन ने जवाहरात का डब्बा छिपाकर काउंट को दिया।

भोजन के समय नाना बड़ी घबड़ाई हुई थी। अस्सी हजार फ्रैंक सामने देखकर वह जैसे उद्विग्न होगई थी। यह सोचकर कि उतनी बड़ी धन-राशि केवल पेशेवर-लोगों को दी जा रही है—नाना नाराज थी। जैसे ही भोजन के कमरे में सूप परोसा गया, नाना, वहाँ की चाँदी की प्लेटों और कटग्लास के बर्तनों को चमकते प्रकाश की तीव्र प्रतिच्छाया के नीचे देखकर, जैसे बड़ी भावुक हो रही थी। तभी उसने गरीबी के गुणगान प्रारम्भ कर दिये। सभी लोग शाम की पोशाक में थे। उसने स्वयं भी फीतेदार सफेद साटन की पोशाक पहन रखी थी जबकि सैटीन अधिक गम्भीर होकर और काले रेशम की पोशाक पहने पास में 'सुनहला-हृदय' लिये हुए थी—वह उपहार जिसे उसके परम प्रिय मित्र ने गले में डाल दिया था। अतिथियों के पीछे जुलियन और फ्रांकोइस खाना परोस रहे थे। उनको 'जो' सहयोग दे रही थी और तीनों ही बहुत भव्य प्रतीत हो रहे थे।

"जब मेरे पास एक भी सॉस नहीं था तब मुझे कहीं अधिक आनन्द प्राप्त होता था", नाना दोहराती रही।

उसके दाँये मुफट व बाँये वैन्डेव्रेस बैठे थे किन्तु वह कठिनाई से उन्हें देख पा रही थी क्योंकि वह फिलिप और जार्ज के बीच बैठी सैटीन में पूर्णतः तल्लीन थी।

"हे! मेरे स्नेह!" प्रत्येक वाक्य में वह जोड़ती जाती थी : "हम जब रूये पोलोन्क्यू में बूढ़ी माँ 'जोसे' के स्कूल जाया करते थे तो क्या उस समय नहीं हँसा करते थे?"

उस समय वे टोस्ट वितरित कर रही थीं। दोनों नवयुवतियाँ अपने पुराने दिनों की याद करती रहीं। थोड़ी-थोड़ी देर में जैसे गप-शप करने की उमंग उनमें उठ रही थी तथा वे चाहती थीं कि उनके यौवन की सारी

धूल उभर आये—विशेषतः उस समय जब कि पुरुष-वर्ग वहाँ एकत्र था जिससे वह जान ले कि उनकी गन्दगी किस हद तक थी। सभी भद्र पुरुष पीले पड़ रहे थे और उलझन में इधर-उधर झाँक रहे थे। दोनों हगन-बंधुओं ने हँसने की चेष्टा की जब कि वैन्डेव्रेस घबरा कर दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था और मुफट पहले से अधिक गम्भीर प्रतीत हो रहा था।

"तुम्हें विक्टर की याद है?" नाना ने प्रश्न किया: "वह एक भ्रष्ट छोकरा था। वह छोटी लड़कियों को तंग जगहों में ले जाता था।"

"मुझे याद है", सैटीन ने उत्तर दिया: "और मुझे तुम्हारे यहाँ का वह बड़ा बरामदा भी याद है। वहाँ एक जमादारिन थी जो झाड़ू लिये रहती थी।"

"माता बॉच, वह मर चुकी है।"

"और मैं अब भी तुम्हारी दूकान देख सकती हूँ। तुम्हारी माँ कैसी तन्दुरुस्त थी! एक रात जब हम लोग खेल रहे थे तब तुम्हारे पिता आये थे —शराब पीये हुए, ओह! इतने नशे में···।"

उस क्षण वैन्डेव्रेस ने वार्तालाप को परिवर्तित करने के ख्याल से स्त्रियों के संस्मरणों को हठात् रोकते हुए कहा:

"मैं कहता हूँ, मैं कुछ और ट्रफल्स (मिठाई) लूँगा, वे बहुत अच्छे हैं। ड्यूक डि. फारव्रूस के यहाँ मैंने कल कुछ खाये थे किन्तु वे इतने अच्छे नहीं थे।"

"जुलियन, ट्रफल्स ला दो!" नाना ने लापरवाही से कहा और उसने पुनः प्रारम्भ किया: "ओह! हाँ! पापा बहुत बेवकूफ था। कैसा गिरा हुआ! आह! काश तुमने वह स्थिति देखी होती। कैसी कष्टप्रद थी? मैं कह सकती हूँ कि मैंने हर प्रकार का स्वाद चखा है और यह एक आश्चर्य है कि पापा व माँ की भाँति मैंने अपना ढाँचा वहाँ नहीं छोड़ा। इस समय मुफट ने, जो बड़ी दयनीय स्थिति में चाकू को घुमा-फिरा रहा था, कहने का साहस किया:

"यह कोई बहुत मनोरंजक प्रसंग नहीं है जिसे तुम लोग कह रहे हो।"

"हः? क्या? मनोरंजक नहीं है?" अपनी दृष्टि में उसे पीसते हुए वह बोली: "मैं सोचती थी कि यह मनोरंजक है। तब तुमको कुछ रोटियाँ

हमें भेज देनी चाहिये थीं । ओह ! जैसा तुम समझते हो मैं बहुत स्वच्छ हृदय की लड़की हूँ; मैं वही करती हूँ जो सोचती हूँ । माँ एक धोबिन थी व पापा नशा करते थे और उसी में वे मर गये । वह, यदि तुम्हें पसन्द नहीं है, यदि तुम्हें मेरे परिवार का ध्यान कर शर्म आती है तो······ ।"

उन सबने विरोध किया । वह क्या सोचती है ? वे सब उसके परिवार का सम्मान करते हैं । किन्तु वह कहती ही गई :

"यदि आप लोगों को मेरे परिवार वालों से घृणा है तो मुझे छोड़ दीजिये क्योंकि मैं उन स्त्रियों में नहीं हूँ जो अपने माँ-बाप को भुला देती हैं । तुम सुन रहे हो, मेरे लिये उन्हें भी तुम्हें साथ लेना होगा ।"

उन्होंने उसे लिया, उसके माँ-बाप को स्वीकार किया और वह सब कुछ जो उसने चाहा । टेबल-क्लाथ पर आँखें टेके उन सब ने अपने को छोटा बना लिया और नाना ने उन चारों को अपने पैर के गन्दे जूतों में दाबा और तब उसने अपनी समस्त शक्तिशालिनी उत्तेजना सहित वह सब स्वीकार कराया । वह अपना मस्तक झुकाने में सुस्त थी । वे उसे न जाने कितना सौभाग्य ला सकते थे, न जाने कितने महल बनवा सकते थे किन्तु वह तब भी उन दिनों को नहीं भुलावेगी जब वह छिलके सहित सेब खाया करती थी ।

वह एक धोखा है, यह धूर्त माया-धन । यह केवल पेशेवर लोगों के लिये बनाया गया है । उसकी भावना का उद्रेक यह कह कर सन्तोष करता रहा था कि सादगी से रहने की उसकी कितनी अभिलाषा है जबकि प्रत्येक का हृदय अपने हाथ में हो और समस्त विश्व की शान्ति व परोपकार से भरा हुआ हो ।

तभी उसने जुलियन को देखा जिसके हाथ नीचे की ओर ही लटक रहे थे और जो कुछ न कर रहा था ।

"हाँ, क्या ? शराब ढालो", उसने कहा । "एक मूर्ख की भाँति मेरी ओर क्या देख रहे हो ?"

उस झंझट में नौकर बिना मुस्कराये मौन खड़े थे । लग रहा था, जैसे-जैसे मैडम अपने आप में लीन हो रही थी वैसे ही वैसे, वे अधिक रोबीले

होते जा रहे थे। जुलियन ने बिना मुँह घुमाये शराब ढाल दी। दुर्भाग्यवश, फ्रांकोइस के हाथ से वह प्लेट जिसमें वह फल लिये हुये था एक ओर को अधिक झुक गई और सेब, अंगूर, नासपाती सब मेज पर लुढ़क कर फैल गये।

"गधा!" नाना चीखी।

उस नौकर ने यह समझाने की गलती की कि वह बताने लगा कि फल ठीक प्रकार से नहीं रक्खे थे। कुछ सन्तरे निकालने में जो ने उन्हें अस्त-व्यस्त कर दिया था।

"तब," नाना ने कहा: "जो मूर्खा है।"

"किन्तु मैडम,"—अत्यधिक मर्माहत होकर नौकरानी ने कहा।

इस पर मैडम उठी और अधिकार के पूर्णावेश में किटकिटाते हुये बोली: "बहुत हो चुका, मैं सोचती हूँ, तुम सब कमरा छोड़ दो। हम तुमको अधिक नहीं चाहते।"

इस तीक्ष्णता-प्रदर्शन के उपरान्त वह जैसे शान्त हो गई। डेसर्ट भली प्रकार से वितरित हो गया और सभी ने अपनी-अपनी सहायता कर प्रसन्नता का अनुभव किया। किन्तु सैटीन ने एक नासपाती ले ली जिसे कुतरती हुई वह अपनी स्नेहमयी के निकट पहुंच गई और उसके कन्धों पर झुक कर कुछ बातें कान में बुदबुदाती रही। और वे दोनों ही मिलकर हँसती रहीं। फिर उसने अपनी नासपाती का अन्तिम टुकड़ा लेने की इच्छा की। अपने दांतों में भींचकर उसने उसे नाना के आगे बढ़ा दिया। इस प्रकार उन्होंने फल का वह टुकड़ा समाप्त कर दिया। साथ ही उनके ओंठ एक दूसरे से छूते हुये चुम्बन लेते रहे। इस दृश्य का पुरुषों ने प्रसन्नता सहित विरोध प्रकट किया। फिलिप ने कहा कि वे लोग न खड़े हों। वैन्डेव्रेस ने कहा कि अच्छा हो कि वे कमरे को छोड़ कर अन्यत्र चली जांय। जार्ज उठा और सैटीन की कमर में हाथ डाल कर ले आया और उसकी कुर्सी पर बैठाल दिया।

"तुम लोग कितने पागल हो।" नाना ने कहा: "तुम लोग मेरी नन्ही सी प्रियतमा को शर्माते हो। प्रिय! चिन्ता मत करो। उनको देखो ही मत। यह

हमारा काम है," और मुफट की ओर घूमकर, जो शालीन मुद्रा में वह सब देख रहा था, उसने जोड़ दिया—"प्यारे! क्या ऐसा नहीं है?"

"हां, निश्चित," धीरे से अपना सिर हिला कर वह बुदबुदाया।

अब आगे कोई विरोध न था। इन पुरुषों के मध्य, उन बड़े नामों को साथ लेकर, वे पुरानी स्मृतियाँ लिये हुये, दोनों स्त्रियां एक दूसरे के समक्ष बैठी रहीं और कोमल दृष्टि-विनिमय में डूबती रहीं जैसे अपने में लीन होकर वे अपने सैक्स की शक्ति के आधार पर अधिकार जमा रही हों और पुरुषों का तिरस्कार करने की जैसे कसम खाये हुये हों। इस प्रकार वे प्रसन्न होती रहीं।

ऊपर बड़े कमरे में काफी परोसी गई। अपनी उसी प्राचीन भव्यता में उस स्थान पर उन गुलाबी रङ्ग के पर्दों में घिरे दो प्रकाश-दीप हल्के-हल्के जल रहे थे। रात को उस समय, उन डालियों के बीच तांबे व चांनी के बर्तन उस प्रकाश में ऐसे चमक रहे थे और सोने व संगमरमर की उन वस्तुओं को झलका रहे थे कि वे कटावदार लकड़ी के किसी डंडे पर रक्खे चिकने व चमकदार प्रतीत होते थे। जैसे प्रकाश की उस तह को रेशमी लकलकाहट में तैरा रहे थे। मध्यानान्तर की अग्नि धीमी जल रही थी और वहाँ काफी गर्मी थी। साथ ही शक्ति की एक नाशवान गर्माहट उन पर्दों के बीच घिरी हुई थी। और इस कमरे में, नाना के वैयक्तिक जीवन का सब कुछ भरा पड़ा था, यहाँ उसके दस्ताने, एक रूमाल, एक खुली हुई पुस्तक इधर-उधर फैले रक्खे थे। वहाँ बिना किसी दिखावे के उससे मिला जाता था। यहाँ वायलेट की उसकी गन्ध परिपूर्ण रहती थी और जैसे बड़ी प्रसन्न व अल्हड़ लड़की की अस्तव्यस्तता सर्वत्र फैली रहती हो जो उस समस्त वैभव व सम्पत्ति में एक विशेष आकर्षण बनाये हुये थी। वहाँ की आराम-कुसियाँ एक पलंग के बराबर पड़ी थीं तथा गद्देदार कुर्सियां ऐसी गहरी थीं जैसी एक मेहराब। वे नींद को नियन्त्रित करती थीं और समय की तेजी को भुलाती थीं और उन शब्दों को मीठा करती थीं जो इधर-उधर कोनों से प्रकट होते थे।

अग्निस्थान के निकट एक सोफे पर जाकर सैटीन फैलते हुये लेट गई। उसने एक सिगरेट जलाई तभी वैन्डेव्रेस ने उसके प्रति जलन व ईर्षा का

प्रदर्शन व अभिनय करते हुये उसे छेड़ना प्रारम्भ किया और उसे धमकाया भी कि यदि आगे फिर कभी वह नाना को अपने कर्त्तव्यों से विमुख करेगी तो वह उसे ठीक कर देगा । फिलिप व जार्ज ने उसको बुरी तरह चिढ़ाना प्रारम्भ किया और इस बुरी तरह भींचा कि वह चीख पड़ी ।

"डार्लिङ्ग, डार्लिङ्ग ! इन लोगों को यहाँ से हटाओ । वे मुझे पुनः उत्तेजित कर रहे हैं ।"

"इधर आओ । उसे वहाँ छोड़ दो जी," नाना ने गम्भीर होकर कहा : "तुम जानते हो कि मै उसे ऐसे तंग होते नहीं देख सकती; और तुम प्रिय ! यह जानते हुये कि वे लोग इतने शैतान हैं उनके पास क्यों जाती हो ?"

सैटीन आरक्त चेहरा लिये और अपनी जीभ बाहर निकाले ड्रैसिंग-रूम में घुस गई, जो एक पीले संगमरमर की सी आभा व्यक्त कर रहा था और जहाँ एक गैस का हंडा जगमगा रहा था जिस पर दूधिया ग्लोब चढ़ा हुआ था ।

तब नाना उन चारों व्यक्तियों से वार्तालाप करती रही जैसे घर की मालकिन की विशदता में हो । दिन भर वह एक उपन्यास पढ़ती रही थी जो एक वेश्या की कहानी थी । जिसने उसमें एक तीव्र उत्तेजना भर दी थी साथ ही उसमें तिरस्कार भी उभरा हुआ था । उसने कहा कि वह सब झूँठ है । जैसे उसने उस प्रकार के गन्दे साहित्य के प्रति एक तीव्र रोष प्रकट किया । यह बड़ा स्वाभाविक कहलाने का बहाना था जैसे कोई भी सब कुछ व्यक्त कर सकता है जैसे कोई उपन्यास ऐसा नहीं लिखा जाना चाहिये जो एक सुखद समय को बरबाद करे । पुस्तकों और नाटकों के सम्बन्ध में नाना की एक सीमित विचारधारा थी । वह कोमल व ऊँचे साहित्य की कामना करती थी, वैसी वस्तुयें जो उसे विचारशील बनावें व उसकी आत्मा को ऊँचा उठायें । तब वार्तालाप पेरिस में उत्पन्न तात्कालिक घटनाओं पर अटक गया जिनसे नगर में उथल-पुथल मची हुई थी—उन लेखों पर जो समाचार पत्रों द्वारा आग भड़का रहे थे और प्रत्येक रात्रि को होने वाली सभाओं की बातों को लेकर जिनमें दंगा करने व हथियारों से सुसज्जित होने

का प्रचार किया जा रहा था। नाना ने अपना रोष रिपब्लिकनों पर प्रकट किया। पता नहीं वे गन्दे लोग जो स्वयं अपने को कभी स्वच्छ नहीं करते, क्या चाहते हैं? क्या प्रत्येक प्रसन्न नहीं है? क्या बादशाह ने सब की भलाई के काम नहीं किये हैं? ये लोग पक्के बदमाश हैं! वह उन्हें जानती है। उनके सम्बन्ध में कह सकती है—यह भुलाते हुये कि अभी थोड़ी देर पूर्व ही खाने की मेज पर उसने अपने रूये. डि. ला. गाउटे के जीवन के प्रति कितनी श्रद्धा प्रकट की थी और तब वह बीते दिनों के अपने परिचितों व मित्रों के सम्बन्ध में कहती रही, अपने सम्पूर्ण तिरस्कार सहित जो एक नारी में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने पर अतीत के कष्टों के प्रति प्रकट होते हैं। ऐसा हुआ कि उसी मध्याह्न उसने बड़े हास्यास्पद रूप में फिगारो में प्रकाशित एक आम-सभा का विवरण पढ़ा था। उसका ध्यान कर वह उस क्षण भी हँस रही थी, क्योंकि उसमें व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया था और एक घृणास्पद नशेबाज का विवरण था, जो बाद में वहाँ से निकाल बाहर किया गया था।

"ओह! ऐसे नशेबाज!" उसने बड़े घृणास्पद ढङ्ग से कहा: "नहीं, सचमुच उनकी रिपब्लिक प्रत्येक के लिये एक बड़ा दुर्भाग्य होगी। ओह! भगवान दीर्घकाल तक बादशाह को सलामत रक्खे।"

"प्रिय! भगवान तुम्हारी सुनेगा," गम्भीर होकर मुफट ने कहा: "किन्तु डरो मत, बादशाह अत्यधिक शक्तिशाली है।"

उसमें वैसी ही भावनायें बनी रहें—ऐसी कामना वह करती है। राजनीति में दोनों की विचारधाराओं में साम्य था। वैन्डेव्रेस तथा लेफ्टिनेन्ट हुगन भी उन बदमाशों की मजाक बनाते रहे—जैसे रेंकने वाले गधे जो बन्दूकों को देखकर छिप जाते हैं। उस रात जार्ज गुमसुम व मुरझाया हुआ बैठा रहा।

"बच्चे! तुम्हें क्या हुआ?" उसको मौन देखकर नाना ने प्रश्न किया।

"कुछ नहीं! मैं केवल सुन रहा हूँ," वह बुदबुदाया।

किन्तु वह दुःखी था क्योंकि भोजन के कमरे से निकलते हुए उसने उस नौजवान स्त्री के साथ फिलिप को मजाक करते सुना था और अब भी

उसके (जार्ज के) स्थान पर फिलिप ही नाना के निकट बैठा था। उसके हृदय में आहें भर रही थीं जो फूट पड़ना चाहती थीं किन्तु क्यों—उसे वह स्वयं भी नहीं जानता था। वह उन दोनों को एक साथ देखना असह्य समझ रहा था। उसमें, ऐसे शैतानी के विचार उभर रहे थे जैसे उसके गले में कोई वस्तु रुँध गई हो, और अपनी वेदना में वह लज्जा का अनुभव कर रहा था। वह, जो सैटीन पर हँस रहा था तथा जिसने स्टेनियर, मुफट व अन्य लोगों को सहन किया था, अब विद्रोह कर उठा था तथा इस ख्याल से आवेश में था कि फिलिप किसी दिन उस स्त्री का प्रेमी बन जावेगा।

"लो, बिजोय को लो", उस छोटे से कुत्ते को जो उसकी गोद में सो रहा था, नाना ने जार्ज की ओर उसे सन्तोष देने के विचार से, आगे बढ़ा दिया। और जार्ज पुनः इस विचार से, कि वह नाना की किसी वस्तु को छू रहा है, उस पशु को जो नाना की जांघों की गरमाहट से भरा हुआ था, प्रसन्न हो गया।

तब वार्तालाप वैन्डेव्रे स के उस दुर्भाग्य पर स्थिर हो गया जिसके द्वारा वह विगत रात्रि सर्कल इम्पीरियल में हारा था। मुफट ने जो स्वयं कोई खिलाड़ी नहीं था, आश्चर्य प्रकट किया। किन्तु वैन्डेव्रे स ने अपने आगामी दुर्भाग्य की बात को मुस्कराकर टाल दिया, जिसके सम्बन्ध में पेरिस में चर्चा प्रारम्भ हो गई थी। यह कोई विशेष महत्व का प्रसंग नहीं होता कि अन्त कैसे प्रस्तुत हुआ, किन्तु विशेषता यह होनी चाहिये कि अन्त सुन्दर हो। कुछ समय से नाना यह देख रही थी कि वह किंचित् परेशान था। उसके मुँह के कोनों पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं तथा उसके नेत्रों में अस्थिरता एवं चिन्ता झलकती थी। उसने अपने में बुर्जुआपन की तेजी बनाये रक्खी थी साथ ही अपनी कुलीनता की समृद्धि तथा सुरुचि को स्थिर रक्खा था। अभी तक, समय-समय पर थोड़ा चक्कर आता था—उस खोपड़ी के अन्दर जो नारी और खेल से खोखली हो रही थी। एक रात, जो उसने नाना के साथ व्यतीत की थी, उसको अपने क्रूर विचारों से भयभीत कर दिया। वह जैसे सोच रहा था कि वह अपने आपको अपने घोड़ों के साथ अस्तबल में बन्द कर लेगा व उसमें

आग लगा लेगा इसके पूर्व कि वह सब ओर से जकड़ जाय। उस समय केवल उसमें अपने एक घोड़े, जिसका नाम लुसिगनन था; के प्रति आशा शेष थी जो पेरिस के ग्रान्ड-प्राइज के लिये सिखाया जा रहा था। वह केवल उस घोड़े पर जीवित था जो उसके कर्ज में दबा हुआ था। हर समय जब भी नाना ने उससे धन माँगा उसने जून माह तक के लिये, जबकि लुसिगनन जीतेगा, बात टाल दी।

"वाह !" नाना ने मजाक में कहा : "वह हार भी सकता है। जैसे वह सबको रेस से बाहर निकालने वाला हो !"

वह केवल संदिग्ध मुस्कराहट में धीरे से कह पाया : "जो हो, अभी तो मैंने अपने को एक आवारा मान ही लिया है, एक वयस्थ—तुम्हारे समक्ष। नाना, नाना, अभी तो ठीक से कह लेता हूँ। तुम नाराज तो नहीं हो ?"

"नाराज···क्यों ?" सचमुच बहुत प्रसन्न होते हुए नाना ने उत्तर दिया।

वार्तालाप चलता रहा। वे एक मुकदमे की बात कर रहे थे जो शीघ्र ही प्रारम्भ होने को था और जिसे वह नौजवान स्त्री देखना चाहती थी। तभी सैटीन, ड्रेसिंग-रूम के द्वार पर झांकी और चपलता में नाना को पुकारने लगी। नाना तुरन्त उठी, उसने उस भद्र पुरुष को वहीं छोड़ दिया जबकि वे दोनों बड़े आराम से बातचीत करते हुए, सिगार के धुँए उड़ा रहे थे और एक गम्भीर प्रश्न पर विचार कर रहे थे कि अपनी नशे की तीव्रता से उत्पन्न मस्तिष्क की विकृति में कोई हत्यारा अपने कृत्यों के प्रति कहाँ तक उत्तरदायी है। ड्रेसिंग-रूम में 'जो' एक कुर्सी पर बैठी थी और जोर-जोर से चिल्ला रही थी और सैटीन उसे निरर्थक रूप से सान्त्वना देने की चेष्टा कर रही थी।

"क्या मामला है ?" विस्मय सहित नाना ने प्रश्न किया।

"ओह, डार्लिंग ! इसको समझाओ", सैटीन बोली : "बीस मिनट से मैं उसे तर्कपूर्वक समझा रही हूँ किन्तु यह इस बात पर चीख रही है कि तुमने उसे मूर्खा कह दिया है।"

"हां मैडम, यह बड़ा कठोर है'''बहुत कठोर है," सिसकियों में जैसे रुंधते हुये ज़ो ने प्रकट किया।

इस दृश्य से वह नवयुवती प्रभावित हो उठी और उसने कुछ मीठे शब्द कहे। किन्तु फिर भी वह शान्त न हुई तो वह उसके समक्ष बैठ गई और अपना हाथ उसकी कमर में डाल लिया जैसे बड़े अपनत्व में भर गई हो।

"किंतु तुम बड़ी पागल हो। मैंने यदि मूर्खा कहा तो भी उसी भाँति जैसे मैं और कुछ कहती हूं ! मेरा आशय तो वह नहीं था। यों मैं एक आवेश में थी। और मैं गलत भी थी। लेकिन अब तो चिल्लाना छोड़ो।"

"मैं मैडम को अत्यधिक स्नेह करती हूँ", ज़ो बुदबुदायी : "मैंने जो कुछ भी किया सब मैडम के लिये।"

तब नाना ने नौकरानी को चूम लिया, और यह प्रदर्शित करने के लिये कि वह उससे रुष्ट नहीं है उसने उसे एक पोशाक दी जो नाना ने कठि-नाई से तीन बार पहनी थी। झगड़े उपहारों में ही समाप्त होते हैं। ज़ो ने अपनी आँखें रूमाल से पोंछ लीं और कपड़ों को हाथ में ले जाने के पूर्व उसने बताया कि वे सब रसोई में बड़े उदास बैठे हैं क्योंकि उन्होंने भोजन नहीं किया है; जैसे मैडम के रोष ने उनकी भूख ही नष्ट कर दी है। तब मैडम ने उनको शान्त करने के लिये समझौते की प्रतीक एक लुई भेज दी। नाना किसी को दु:खी नहीं देख सकती थी।

नाना अत्यधिक प्रसन्न हो ड्राइङ्ग-रूम में लौटी क्योंकि उसने उस झंझट को शांत कर दिया था अन्यथा वह अगले दिन के लिये भी कष्ट बन जाता। तभी सैटीन उसके कान में धीरे से कुछ बुदबुदायी। उसने शिकायत की और जाने की धमकी दी यदि वे लोग इस तरह उसे तंग करेंगे। उसने अपनी डार्लिङ्ग से अनुरोध किया कि वह उस रात उन सब को विदा कर दे। यह उनके लिये एक सबक होगा। और तब दोनों के अकेले रह जाने में कितना मज़ा रहेगा। अतः नाना चिन्तित होते हुये बोली कि वैसा सम्भव नहीं है। तब एक बालक की भाँति अपनी बात मनवाने के लिये वह अधिक तीव्रता से ज़िद करती रही।

"मैं उस पर जिद कर रही हूँ, सुनते हो ? सब को भेजो या मैं स्वयं जाती हूँ।" और तब वह ड्राइङ्ग-रूम में लौट आकर एक सोफे पर पड़ रही, सब से दूर, एक खिड़की के पास। वहाँ वह पूर्णतः शान्त बनी रही जैसे मर गई हो और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें प्रतीक्षा में नाना पर टिकाये रही।

पुरुष-वर्ग जाब्ता-फौजदारी पर लिखी गयी लेखकों की नवीन विचारधारा पर निर्णय दे रहे थे विशेषतः किन्हीं विशिष्ट पैथोलौजी सम्बन्धी मुक़दमों के प्रति अनुत्तरदायित्व के विषय को लेकर जिससे भय था कि भविष्य में अपाहिजों के अतिरिक्त कोई भी अपराधी न रह जावेगा। नवयुवती निरन्तर सिर हिला कर सहमति देती रही; साथ ही किसी प्रकार काउन्ट को विदा करने की युक्ति भी सोचती रही। और सब तो शीघ्र ही चले जावेंगे किंतु यह निश्चित था कि वह रुक जावेगा। और वही हुआ। जैसे ही फिलिप ने जाने की चेष्टा की जार्ज भी उसके पीछे हो लिया। उसकी केवल चिन्ता इतनी थी कि वह अपने भाई को पीछे न छोड़े। वैन्डेव्रे स कुछ मिनट और रहा। उसने वातावरण का मनन किया। वह प्रतीक्षा करता रहा कि दैवात् कोई ऐसी बात सम्भव बन जावे जिससे मुफट चला जाय। किन्तु जब उसने देखा कि शेष रात्रि के लिये वह और अधिक आराम से संभल कर बैठ रहा है तो उसने जिद नहीं की और एक चतुर व्यक्ति की भाँति चुपचाप चला गया। किन्तु जैसे ही वह द्वार की ओर बढ़ा उसने सैटीन को अपलक नेत्रों से घूरते हुये देखा और किसी भी भ्रम की आशंका न पाकर वह आगे बढ़ा और उससे हाथ मिलाया।

"क्यों, हम लोग नाराज नहीं है, क्या हैं ?" वैन्डेव्रे स ने प्रश्न किया—"मुझे क्षमा करो। जो भी हो, हम सब में तो तुम्हीं अच्छी हो।"

सैटीन ने उत्तर देना हेय समझा और वह निरन्तर नाना व मुफट पर दृष्टि गढ़ाये बैठी रही जो अकेले रह गये थे। अब किसी रुकावट के अभाव में मुफट नाना के निकट जा बैठा था और उसकी उंगलियाँ अपने हाथ में लेकर चूम रहा था। तब, उसने प्रसंग को परिवर्तित करने के विचार से प्रश्न किया कि क्या ऐस्टेला ठीक है। विगत रात्रि मुफट ने कहा था कि बच्ची बड़ी उदास है। मुफट अपने ही घर में एक दिन भी सुखी नहीं रहता; उसकी पत्नी

सदैव बाहर रहती है और लड़की बर्फ की सी उदासी में लिपटी पड़ी रहती है। इन घरेलू मामलों में नाना सदैव अच्छी सलाह देती थी। अब मुफट मन व शरीर की विकृति में पुनः अपनी व्यथा व्यक्त करने लगा।

"तब तुम उसकी शादी क्यों नहीं कर देते," नाना ने अपने बचन को याद कर कहा।

और उसने तुरन्त डागनेट के सम्बन्ध में कहने का साहस कर डाला। किन्तु उस नाम के आने पर काउन्ट ने अपना तिरस्कार प्रदर्शित किया। कभी नहीं, विशेषतः नाना ने जो कुछ कहा था उसके उपरान्त। नाना ने जैसे विस्मय का सा अभिनय किया और तब अट्टहास कर उठी और अपनी भुजायें काउन्ट के गले में डाल कर बोली—

"ओह ! तुम इतने ईर्षालु क्यों हो ? कुछ समझदार बनो। जब वह मेरे विरोध में कह रहा था तब मैं आवेश में थी। आज, सचमुच उसके लिये मुझे खेद है।"

किन्तु मुफट के कन्धों के पीछे से नाना ने सैटीन की आँखें अपनी ओर स्थिर देखीं। उलझन मानकर उसने उसे शीघ्र विदा करने का उपक्रम किया और गम्भीर होकर बोली: "मेरे मित्र ! यह विवाह अवश्य होगा। मैं तुम्हारी पुत्री की प्रसन्नता को नहीं रोक सकती। वह सचमुच बहुत अच्छा आदमी है। तुम वैसा और नहीं पाओगे।"

और तब वह अनवरत धारा की भाँति डागनेट की प्रशंसा करती रहा। काउन्ट ने पुनः नाना की भुजाओं को थाम लिया। वह आगे 'न' नहीं कह सका। उसने कहा कि वे उस सम्बन्ध में फिर बातें करेंगे। अब जब काउन्ट ने बिस्तर पर जाने का प्रस्ताव किया तो नाना ने धीमे स्वर में विरोध प्रकट किया। वह सम्भव नहीं है। आज वह स्वस्थ नहीं है। यदि वह उसे किंचित भी स्नेह करता है तो जिद नहीं करेगा। जो हो, वह निरन्तर अनुरोध करता रहा कि वह छोड़ेगा नहीं और जब नाना कुछ २ नरम हुई तो उसने पुनः सैटीन के गम्भीर नेत्रों की ओर देखा। इस पर नाना पुनः कठोर हो गई। नहीं, यह सम्भव नहीं है। काउन्ट अत्यधिक प्रभावित होकर और अन्यमनस्क सा

दूर देखते हुये उठ खड़ा हुआ और अपना टोप ढूँढ़ने लगा। किन्तु द्वार पर उसने नीलम के सैट का ध्यान किया जो उसकी जेब में पड़ा हुआ था। वह सोच रहा था कि वह उसे बिस्तर के नीचे छिपा देगा। और जैसे ही नाना उस पर चढ़ेगी वह उसके पैरों से टकरायेगा वह उसका एक बच्चे की भाँति बड़ा विस्मय होगा जिसके लिये वह भोजन के समय से ही विचार रहा था। तब, उस अस्त-व्यस्तता में, इस प्रकार खदेड़े जाने की वेदना सहित काउन्ट ने यों ही अनायास वह जवाहरात नाना को थमा दिये।

"यह क्या है ?" नाना ने प्रश्न किया। "क्या, नीलम ? आह ! हाँ, वह सेट जिसे हमने देखा था। तुम कितने सहृदय हो। किन्तु मैं कहती हूँ, प्रिय, तुम सोचते हो कि क्या यह वही है ? आलमारी में वह अधिक सुन्दर लग रहा था।"

उसने अनेकानेक धन्यवाद दिये। और नाना ने उसे जाने दिया। तुरन्त ही सोफे पर प्रतीक्षा में पड़ी सैटीन को काउन्ट ने देखा। तब उसने दोनों स्त्रियों को देखा और आगे बिना जिद किये वह चुपचाप चला गया। मकान का द्वार कठिनाई से बन्द हो पाया होगा कि सैटीन ने नाना की कमर पकड़ ली और गाने-नाचने लगी। तब खिड़की की ओर दौड़ कर वह बोली :

"चलो हम देखें कि बाहर वह मूर्ख कैसा दिखाई देता है।"

पर्दों की परछाईं में दोनों स्त्रियों ने लोहे की रेलिंग पर झाँक कर बाहर देखा। एक का घंटा बज उठा। एवेन्यू डि. विलियर्स इस समय सुन-सान पड़ा हुआ था जिसके किनारे गैस लैम्पों की दोहरी पंक्तियाँ थीं। मार्च महीने के उस गहन अन्धकार में तेज हवा के झोंके वर्षा सहित उठ रहे थे। रिक्त मैदान परछाइयाँ जैसे प्रतीत हो रहे थे।

और दोनों ही लड़कियाँ पागलों की सी हँसी की गूँज में खिलखिला उठीं ज्यों ही उन्होंने मुफट की गोलाकार पीठ को देखा जो गीले फुटपाथ पर चल रहा था जिसकी परछाईं रुदन की सी छाया प्रकट कर रही थी जो उस

बर्फीले, नवीन व निर्जन पेरिस पर पड़ रही थी। किन्तु नाना ने सैटीन को अलग हटा दिया।

"सावधान हो, पुलिस!"

ज्योंही उन्होंने सामने के एवेन्यू में दो काली मूर्तियों को साथ चल कर अन्दर जाते हुये देखा वैसे ही अपनी हंसी रोक ली।

नाना में, अपनी समस्त विलासिता-सहित, उस शाही नारी की भाँति जिसका प्रत्येक व्यक्ति आज्ञाकारी है, पुलिस के प्रति एक भय विद्यमान था और वह मृत्यु सदृश भयातुर होकर पुलिस के सम्बन्ध में किसी से कोई वार्ता सुनने को प्रस्तुत न होती थी। जब कभी भी कोई पुलिस वाला उसके निवास की ओर देखता तभी वह अस्त-व्यस्त हो जाती थी। ऐसे लोगों से क्या सम्भावित है, कुछ पता नहीं। वे उन दोनों को साधारण श्रेणी की स्त्रियाँ कह कर ही साथ ले जा सकते हैं, कि वे उतनी रात को यों हँस रही हैं। सैटीन काँपते हुये नाना से चिपट गई। इस पर भी वे वहीं खड़ी रहीं और एक प्रकाश-किरण को, देखकर आकर्षित हो गईं जो फुटपाथ की धूल पर पड़ते हुये थिरक रही थी। वह एक चीथड़े बीनने वाली औरत की लालटेन थी, जो नालियों में कुछ खोज रही थी। सैटीन ने उसे पहचान लिया।

"क्यों?" उसने कहा: "वह महारानी पोमेर है जो काश्मीर की डलिया लिये हुये है।"

और जब वर्षा की फुहार उनके चेहरों पर थपेड़े देने लगीं तब उसने प्रिय महारानी पोमेर का इतिहास कहना प्रारम्भ किया। ओह! वह एक अप्रतिम नारी थी और किसी समय समस्त पेरिस को अपने सौन्दर्य से मोहित किये हुये थी। उसकी वैसी चाल-ढाल थी, वैसे मोहक कपोल थे तथा पुरुषों से पशुओं की भाँति व्यवहार करती थी और अनेक बार बहुत बड़े व्यक्तित्व उसकी सीढ़ियों पर रोते देखे गये थे। और अब वह खूब शराब पीती है। पास पड़ोस की स्त्रियाँ उसे गन्दे शब्द कह कर आपस में प्रसन्न होती हैं और सड़कों पर पागल उसके पीछे भागते हैं, उस पर पत्थर फेंकते हैं। संक्षेप में पूर्ण विनाशके साथ एक महारानी कीचड़में गिरगई है। बहुत संतप्त होकर नाना ने सब सुना।

"तुम अभी देखोगी", मैंटीन ने जोड़ दिया।

उसने पुरुषों की भांति सीटी बजायी। उस चीथड़ा इकट्ठा करने वाली ने अपना सिर ऊपर उठाया जिससे लालटेन के प्रकाश में उसका चेहरा दिखाई दिया। उन चीथड़ों की गठरी के नीचे फटे हुए बड़े रूमाल में बँधा झुर्रियों पड़ा नीला चेहरा, बिना दांतों का पोपला मुँह और जलते हुए गड्ढों में दबी आँखें। और तब नाना ने उस अँधकार में चेमन्ट का ध्यान किया—वह इर्मा एन्गलर्स, डरावनी व दीर्घायु में घिरी तथा शराब में डूबी वेश्या, वह अनुभव तथा सम्मान से भरी हुई नारी जो उसके भवन की सीढ़ियों पर चढ़ रही थी व गाँव वालों की भीड़ से घिरी हुई थी। तब जब सैटीन ने कुलबुलाते हुए उस बुढ़िया को देखकर, जो उसे नहीं देख पा रही थी, पुनः सीटी बजाई—तभी दूसरी आवाज में वह बुदबुदाई।

"दूर हटो, फिर पुलिस! अब हम लोगों को शीघ्र हट जाना चाहिये।"

पगचापों के स्वर पुनः सुनाई दिये। उन दोनों ने खिड़की बन्द कर दी। काँपते हुए तथा अपने गीले बालों सहित, नाना घूमी और तब कमरे को देखकर आश्चर्य में डूबी रही कि जैसे उसने उस स्थान को पहली बार देखा हो और किसी अपरिचित स्थान पर आ पहुँची हो। उसने वातावरण को इतना गरम व इतना सुगन्धिमय पाया कि उससे वह अधिक सुख का अनुभव करती रही। उस प्राचीन फर्नीचर पर चारों ओर धन-वैभव भरा हुआ था। स्वर्ण, रेशमी सामान, हाथी दाँत, ताँबे के बर्तन, सभी कुछ प्रकाश की उस गुलाब धूप में चमक रहे थे। और अब तात्कालिक अनाचारों से घिरे मकान में विलासिता की उत्तेजना उभर रही थी—उस भव्य ड्राइंग-रूम की शालीनता, उस आरामदेह डाइनिंग-रूम की झलक, उस भारी जीने की शान्ति जो गद्दियों व कालीनों को कोमलता से भरे पड़े थे। वह मानो अचानक उसके व्यक्तित्व का फैलाव हो, उसके अधिकार व आनन्द की चाहना हो, ऐसी कामना जिसमें सब कुछ प्राप्त करके नष्ट कर देना हो। इसके पूर्व कभी भी उसने अपने सेक्स की शान्ति का अनुभव इतनी तीव्रता से नहीं किया था। उसने गम्भीरतापूर्वक अपने चतुर्दिक दृष्टिपात किया और बड़ी दार्शनिकता में कह गई :

"हाँ, ठीक है, जब कोई यौवन के आनन्द में हो तो उसे प्रत्येक अवसर का उपभोग करना चाहिये।"

किन्तु सैटीन शेर की खालों पर टहलते हुए शयन-गृह से पुकार रही थी।

"जल्दी आओ ! जल्दी आओ !"

नाना ने ड्रेसिंग-रूम में अपने कपड़े उतारे। तुरन्त तैयार होने के लिये उसने अपने गहरे व हल्के रंग के केशों को दोनों हाथों में ले लिया और चांदी की तश्तरी में उन्हें झुकाया। उससे हेयर-पिनों की बरसात सी होने लगी। उस चमकदार बर्तन में खनखन की आवाज प्रकट होती रही।

११.

जून की प्रारम्भिक गर्मियों में, मेघाच्छन्न आकाश के नीचे, रविवार को पेरिस के ग्रान्ड-प्राइज़ के लिये घुड़दौड़ बालोन के मैदान में होने को थी। उषाकाल में सूर्य अपनी रक्तवर्ण धूल लिये आकाश में प्रकट हुआ था, किन्तु ग्यारह बजते-बजते जब कि लाँगचैम्प रेस-कोर्स में पहली गाड़ी पहुँची दक्षिण की एक हवा ने लाकर बादलों को घेर दिया। भूरे रंग के बादलों के घेरे धीरे-धीरे चक्कर काटने लगे जबकि गहरे नीले रंग के आसमान के टुकड़े, क्षितिज में एक ओर से दूसरी ओर फैल रहे थे। और तब बादलों को छेद कर जो धूप छिटकी तो अचानक सब वस्तुयें चमकने लगीं। दर्शक कुछ पैदल चल-कर व कुछ सवारियों में, आने लगे।

दौड़ का मैदान अभी रिक्त था तथा निर्णायक का स्थान भी सूना पड़ा हुआ था। जीतने की जगह, प्रारम्भ होने का स्थान और उसकी दूसरी ओर घेरे के बीच में एकसे, पाँचों स्टैन्ड भी रिक्त दीख रहे थे।

नाना, ऐसे उत्तेजित होते हुए जैसे ग्रान्ड-प्राइज़ की घुड़दौड़ उसके भाग्य का निर्णय करने वाली हो—जीत के स्थान के निकटतम बैठने की कामना करती रही। बहुत पहले आने वालों में से एक, नाना—अपनी चाँदी से मढ़ी लैन्डो पर बैठकर, जिसमें चार शानदार घोड़े जुते हुए थे और जो काउन्ट मुफट की अपूर्व भेंट थी—वहाँ पहुँची। जब वह प्रकट हुई तो दो सईस निकटवर्ती घोड़ों के साथ थे और दो सईस बग्घी पर पीछे चुपचाप बैठे थे। वहाँ भीड़ भी अत्यधिक थी। वह वैन्डेव्रेस के अस्तबल ढंग की पोशाक पहने हुए थी जो नीली व सफेद रंग की थी। ऊपर की बॉडी व छोटा आवरण

पीली रेशम का था जो तंग कसा हुआ था, जिसके पीछे रोएँदार पफ ऊँचा उठा हुआ था जो आगे के तनाव-कसाव को अधिक महत्व दे रहा था । स्कर्ट व बाहें सफेद साटन की थीं और एक पट्टी कन्धों के ऊपर फैली हुई थी तथा वह सब चाँदी के तारों से बंधी थी व धूप में और भी तीव्रता से चमक रही थी । एक घुड़सवार की रूपरेखा में अपने को प्रकट करने के उद्देश्य से उसने एक नीली टोपी पहन रखी थी जिस पर एक पंख खुँसा हुआ था । उसके जूड़े के ऊपर से उसके सुनहरी बालों का एक बड़ा गुच्छा उभर रहा था जो उसकी पीठ के अर्ध-भाग तक एक पीली पूँछ की भाँति केशों को लटकाये हुए था ।

बारह का घंटा बोला । ग्रान्ड-प्राइज की घुड़दौड़ होने में अभी भी तीन घंटे प्रतीक्षा करनी थी । ज्यों ही लैन्डो किनारे लग गई नाना भी व्यवस्थित होगई और ऐसा अनुभव करने लगी जैसे घर पर ही हो । अपनी प्रसन्नता के लिये वह बिजोय कुत्ते और नन्हे लुई को साथ लाई थी । उसकी स्कर्ट पर सोते हुए तथा धूप में भी कुत्ता काँप रहा था जबकि बच्चा जो रिबन व लेस में लिपटा हुआ था गूँगे की भाँति गुमसुम बैठा था और ठंड से इतना सुस्त पड़ा हुआ था जैसे मोम का बच्चा । अपने पड़ोसियों से बिना परेशान हुए वह नौजवान स्त्री फिलिप व जार्ज हूगन से बड़ी जोर-जोर से बातें कर रही थी जो उसकी दूसरी ओर बैठे थे तथा जहाँ पीले गुलदस्तों, सफेद गुलाब व नीले फारगेट-मी-नाट फूलों से स्थान भरा पड़ा था जिससे वे कन्धों के नीचे दीख पड़ने में असमर्थ थे ।

अतः नाना कह रही थी, "चूँकि यह असह्य हो रहा था इसलिये मैंने उसे द्वार दिखला दिया । और दो दिन से वह मेरे पास नहीं आया है ।"

नाना मुफट के सम्बन्ध में कह रही थी किन्तु उन दोनों नवयुवकों को उस झगड़े का वास्तविक कारण नहीं बता रही थी । एक रात उसने उसके कमरे में किसी आदमी का हैट पाया था । वह उसकी केवल शैतान चेतना मात्र थी, एक कल्पना । अपने को सजग रखने के हेतु उसने किसी अदृश्य को चित्रित मात्र किया था ।

"तुम्हें पता नहीं वह कैसा विचित्र होता जा रहा है", नाना कहती रही

और जो वृत्तान्त वह प्रकट कर रही थी उस पर स्वयं प्रसन्न होती रही। "अब वह एक कट्टर धर्मात्मा हो गया है। उदाहरणार्थ, प्रत्येक रात्रि में वह अब पूजा करता है। ओह! यह पूर्णतः सत्य है। वह सोचता है कि मैं कुछ देखती नहीं हूँ क्योंकि मैं बिस्तर पर पहले चली जाती हूँ किन्तु मैं उस पर दृष्टि रखती हूँ। वह बुदबुदाता है तथा मेरे निकट बिस्तर पर आने के पूर्व घूमकर क्रॉस का चिन्ह हाथों से बनाता है।"

"कैसा कलापूर्ण है!" फिलिप बुदबुदाया: "वह पहले और बाद में भी वही करता है।"

"हाँ, वही, पहले और बाद में। जब मेरी नींद टूटती है तो मैं उसे बुदबुदाते हुए देखती हूँ। सर्वाधिक जो मुझे रोष आता है वह इस बात पर कि हमारी कोई भी कलह बिना पादरियों का नाम लिये या उनका प्रसंग छेड़े समाप्त नहीं होती है। अब मैं भी सदैव धार्मिक बनी रहती हूँ। हँसो, जितना हँस सको। मुझे धर्म पर विश्वास है। मेरे इस विश्वास को कोई नहीं तोड़ सकता। केवल बहुत बुरा यह है कि वह रोता है और विषादमय वार्तालाप करता है। उदाहरणार्थ, परसों हमारी कलह के उपरान्त उसको दौरा आ गया। मैं बहुत घबड़ाई, तब नाना ने अपने को कुछ रोकते हुए पुनः प्रारम्भ किया: "देखो, उधर दोनों मिगनन हैं वे अपने बच्चों को लाये हैं। वे बच्चे क्या सजे हुए नहीं हैं?"

मिगनन बड़े सादे रंग की लैन्डो-गाड़ी पर थे और उस प्रकार की भव्यता में जिससे प्रकट होता था कि उन्होंने अच्छा धन बना लिया है। रोज़ बादामी रेशम की पोशाक में थी। जब लैंडो किनारे लग गई तो उसने नाना को बड़ी शान से अपने गुलदस्तों के बीच देखा। उसके चारों घोड़ों, बग्घी व साज-सामान को देखकर रोज़ ने अपना ओठ काट लिया और सीधे बैठते हुए उसने गर्दन घुमा ली। इसके विपरीत मिगनन ने अपना हाथ हिलाया क्योंकि उसका सिद्धान्त था कि वह स्त्रियों के झगड़ों से दूर रहता था।

"योंही; क्या तुम जानते हो कि वह ठिगना आदमी, जो देखने में बड़ा

चुस्त दिखाई देता है और जिसके दाँत बड़े भद्दे हैं, कौन है ? मान्सियर वेनट। वह आज प्रातःकाल ही मेरे यहाँ आया था," नाना ने कहा।

"मान्सियर वेनट !" जार्ज ने विस्मय में दोहराया। "यह सम्भव नहीं है। वह तो एक ईसाई है।"

"निश्चित, मैंने तुरन्त पता लगा लिया। ओह ! तुम कल्पना नहीं कर सकते कि हमने क्या बातें कीं ? वह बड़ा मजेदार था। उसने काउन्ट के विषय में कहा और उसके विच्छिन्न परिवार के सम्बन्ध में, जिसकी प्रसन्नता मैं प्राप्त करा सकती हूँ। यह उसने घुमा-फिरा कर कहा। तब मैंने कहा कि जैसा वह चाहता है वैसा करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। मैंने यह भी वचन दिया कि वह प्रयत्न करके काउन्ट को उनकी पत्नी के पास वापिस कर देगी। वह बड़ा विनम्र था तथा निरन्तर मुस्कराता रहा। तुम समझो, यह कोई हँसी नहीं है। मुझे प्रसन्नता होगी कि वे सब सुखी हों। इसके अतिरिक्त मुझे कुछ आराम भी मिलेगा क्योंकि कभी-कभी वह एक बड़ा सिर दर्द होता है।"

पिछले कुछ महीनों की उसकी थकान व ऊब जैसे उसके अन्तरतम से प्रकट हो रही थी। इस सब के साथ ही पैसे के मामले में काउन्ट बड़ा परेशान था। वह बहुत चिन्तित रहता था। जो हुंडी उसने लेबार्डेट को दी थी उसकी अवधि समाप्त हो रही थी और उसे उससे मुक्ति का कोई मार्ग नहीं दिख रहा था।

"क्यों, वहाँ काउन्टेस है," जार्ज ने, जो स्टैंड की ओर झांक रहा था, कहा।

"कहाँ", नाना ने सम्बोधित किया : 'इस छोकरे की भी क्या आँखें हैं ? फिलिप ! मेरा टोप तो पकड़ो।"

किन्तु, जार्ज ने तत्क्षणिक तत्परता में अपने भाई से पहले ही उस नीले रेशमी टोप, को जिस पर रुपहला काम था, बड़ी खुशी से ले लिया। नाना ने दूरबीन से देखा।

"ओह ! हाँ, मैं देख रही हूँ। उसके साथ उसकी लड़की है। वह डाग-नेट उसके निकट जा रहा है।"

तब फिलिप डागनेट की उस छरहरी इस्टेला के साथ निकट भविष्य में होने वाली शादी की चर्चा करता रहा। यह निश्चित हो चुका था और वे विवाह के पूर्व की घोषणा प्रकाशित कर रहे हैं। काउन्टेस पहले तो विरोध करती रही किन्तु कहा जाता है कि काउन्ट ने ज़िद की। नाना मुस्कराती रही।

'मैं जानती हूँ, मैं जानती हूँ", नाना कहती रही : "वह ठीक है! वह एक अन्धा आदमी है। वह उसके उपयुक्त है", और नन्हे लुई की ओर झुकते हुए वह बोली : "क्या तुम प्रसन्न हो रहे हो। देखो, बच्चा कितना गम्भीर बैठा है।"

बच्चा, बिना हँसे, अपनी निकटस्थ भीड़ को जैसे बड़े उदास मन से देख रहा था। कुत्ता, स्कर्ट से हट कर, घूम-फिर कर, लुई के निकट आ बैठा था।

चारों ओर स्थान भरता चला जा रहा था। हर प्रकार की गाड़ियाँ निरन्तर आ रही थीं। सब तरफ चिल्लाहट, भीड़ की चीख पुकार, कोड़ों की लपलपाहट सुनाई दे रही थी।

लेबार्डेट एक खुली गाड़ी से उतर रहा था जिसमें गागा, क्लारिस तथा शिवरी ने उसके लिये एक स्थान सुरक्षित किया था। ज्योंही वह मैदान को पार कर कठघरे की ओर बढ़ रहा था, नाना ने जार्ज को उसे पुकारने को कहा और जब वह आया तो नाना ने हँस कर कहा : "मेरा क्या भाव है?"

वह नाना के सम्बन्ध में बात कर रही थी—वह सुन्दर (नाना), जो डियाना प्राइज़ की दौड़ में हार गई थी और वह पिछले अप्रैल-मई में डेस कार्स-प्राइज की रेस में, रेसों में शामिल तक न हुई। दोनों ही वैन्डेव्रेस के अस्तबल के दूसरे घोड़ों—लुसिगनन—ने जीती थीं। लुसिगनन शीघ्र ही सब की प्रिय हो गई थी और बाद में निःसंकोच दो, पर एक के भाव में थी।

"अभी भी—पचास पर", लेबार्डेट ने उत्तर दिया।

"शैतान! तो मेरा भाव अभी अधिक नहीं है", उस मजाक़ का आनन्द लेते हुए नाना ने प्रारम्भ किया : "तब मैं अपने आप को प्रोत्साहित नहीं करूँगी। नहीं, मैं वैसा करूँगी तो मुझे फाँसी लग जायगी। मैं उस पर एक लुई भी नहीं लगाऊँगी।"

लेबार्डेट जो बहुत शीघ्रता में था पुन: चलने को उद्यत हुआ, किन्तु नाना ने उसे बुला लिया। वह उससे कुछ राय लेना चाहती थी। वह बहुत से सिखाने वालों व जाकी* को पहचानता था और विभिन्न अस्तबलों की भली प्रकार जानकारी रखता था। कम से कम बीस बार उसके दाँव पूरे उतरे थे। वह 'खेल के देवदूतों का राजा' नाम से सम्बोधित था।

"हाँ, बोलो, कौन से घोड़े पर लगाऊँ ? नौजवान स्त्री ने प्रश्न किया। वह 'इंगलिश' किस भाव का है ?"

"बहुत अच्छा। तीन—एक पर। वेलेरियो द्वितीय भी तीन—एक पर है। तब दूसरे—कासीनस पच्चीस पर, बोक–तीस पर, पिचनेट–पैंतीस पर–हेसार्ड चालीस पर, फ्रैंगपेन दस पर।"

"नहीं, मैं 'इंगलिश' घोड़े पर नहीं लगाऊँगी। मैं देशभक्त हूँ। हाँ, क्या कहते हो ? क्या वेलेरियो द्वितीय पर लगाऊँ ? ड्यूक डि. वारब्रूस तो बिलकुल चमक रही है। नहीं, लेकिन नहीं। पचास, लुई लुसिगनन पर–तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

लेबार्डेट ने बड़ी विचित्र दृष्टि से नाना को देखा। तब नाना ने आगे झुक कर धीरे से उससे पूछा कि वैन्डेब्रेस ने निर्देश किया है कि वह 'बुक-मेकर' के यहाँ उस पर लगावें जिससे अपने दाँव में अधिक सुरक्षित हो सकें। यदि उसे कुछ पता हो तो वह उसे बतावे। किन्तु लेबार्डेट ने बिना कारण बताये कहा कि वह उसके निर्देश का पालन करे। जैसा वह सर्वोत्तम समझे उसी के अनुसार वह अपने पचास लुई लगा दे और उस पर खेद न करे।

"सब घोड़ों पर जो तुम्हें पसन्द हैं"; उसने खिलखिलाते हुये कहा : "किन्तु नाना पर नहीं—वह एक दम निकम्मी है।"

लेबार्डेट प्रयत्न करके भी न जा सका। वह शान्त होकर ज्यों ही चलने लगा कि रोज मिगनन ने उसे कुछ निर्देश दिये। तब क्लारिस तथा गागा ने उसे बुलाया। वे सब वेलेरियो द्वितीय पर दाँव न लगा कर लुसिगनन पर लगाना चाहती थीं।

---

*घुड़दौड़ के घोड़े दौड़ाने वाला।

"यह तो बड़ी मूर्खता है कि कोई यह भी न जान सके कि जिस घोड़े पर दाँव लगा रहा है वह है कौन सा !" नाना कह रही थी : "मैं कुछ लुई लगाने का साहस करूँगी ।"

तब उसने गर्दन उठाकर बुकी को ऐसे खोजने का प्रयत्न किया जिससे वह पहचान सके । तभी उसने परिचितों का एक समूह अपने चारों ओर देखा । दोनों मिगनन, गागा, क्लारिस तथा ब्लान्च के अतिरिक्त तातानेने, मेरिया-ब्लान्ड अपनी विक्टोरिया में तथा बेरोलीन हेकेट अपनी माँ एवं दो अन्य पुरुषों के साथ दिखाई दिये । वहाँ कुछ नौजवानों की भीड़ थी जो बहुत शोर कर रहे थे । सर्वाधिक विस्मय नाना को स्टेनियर को देखकर हुआ जो साइमन को लिये हुए चला आ रहा था ।

"अच्छा !" नाना बोली : "वह उचक्का स्टेनियर बोर्स में अवश्य कुछ पा गया प्रतीत होता है ? तभी साइमन इतनी चमक रही है ।" किन्तु इसके साथ ही उसने दूर से ही उन्हें देखकर अपने को झुकाया । वह अपना हाथ हिलाती रही, मुस्कराती रही और यों घूम-घूम कर देखती रही जैसे उसके आसपास उसके अतिरिक्त और कोई बैठा ही न हो । तभी वह बातचीत करती रही :

"जिस लड़के को लूसी साथ लिये जा रही है वह उसका लड़का दिखाई देता है । वह अपनी पोशाक में बड़ा सुन्दर दिख रहा है ।"

तभी नाना ने बातचीत बन्द कर दी । उसने अभी-अभी ट्राइकन को देखा । वे सभी उसे देखकर मुस्करा रहे थे किन्तु अपने को सर्वोपरि मानते हुए उसने जैसे किसी को पहचाना ही नहीं । वह वहाँ कुछ करने नहीं आई है; वरन् घुड़दौड़ देखने व मनोरंजन के लिये आई है । वह वस्तुतः एक जुआरी है और घोड़ों के लिए पागल भी ।

"देखो, वह सामने पाजी लॉ फेलो है", जार्ज ने अचानक कहा ।

उसे देखकर सभी चकित हुए । नाना ने जैसे अपने लॉ फेलो को पहचाना ही नहीं । जबसे उसने अपने चाचा की सम्पत्ति का स्वप्न देखा था तब से वह एक विशेष फैशन वाला आदमी बन गया था । सामने की ओर अपने थोड़े झुके हुए कालर के सहित वह हलके रंग का सूट पहने हुए था जो

उसकी उठी हड्डियों में कन्धे पर चुस्ती से कसा हुआ था और अपने घुँघराले बालों में था। वह अपनी कोमल आवाज में बड़ी तेजी से बोलता था और रुकने का किंचित भी कष्ट सहन करना नहीं चाहता था ।

"वह बहुत तरोताजा दिखाई देता है।" नाना ने घोषित किया।

गागा और क्लारिस ने लॉ फेलो को बुलाया, और कहने को जैसे उसके सिर पर सवार हो गई तथा उसको अटकाये रक्खा किन्तु वह तुरन्त हा बड़ी दयनीय स्थिति में तथा तिरस्कृत-सा भाग खड़ा हुआ। नाना ने उसे आकर्षित किया तो उसकी ओर बढ़ने की शीघ्रता में वह बग्घी के पायदान पर खड़ा होगया और जब नाना ने उससे गागा को लेकर मखौल उड़ाया तो वह बोला :

"ओह ! नहीं ! उस खूसट से आगे अब कुछ नहीं। वहाँ प्रयत्न करना मूर्खता है। इसके अतिरिक्त तुम जानती हो अब तुम मेरी जुलियट हो···"

उसने अपना हाथ अपने हृदय पर रक्खा। नाना खूब जोर से हँसी और उस अप्रत्याशित कथन की तेजी में, जो सबके सम्मुख हुआ था, वह बोली :

"हाँ, वह ठीक है। मुझे तुम यह भुलाना चाहते हो कि मैं दाँव लगाने आई हूँ। जार्ज ! तुम उस बुकी को वहाँ देख रहे हो—वह घुँघराले बालों वाला तथा लाल रंग का मोटा। वह एक तुच्छ शैतान है जो मेरा प्रशंसक है । तुम वहाँ जाकर उससे पैसा लगाने की बात करो कि मैं किस पर दाँव लगाऊँ ?"

"मैं देशभक्त नहीं हूँ । ओह ! बिलकुल नहीं।" लॉ फेलो बोला : "मेरा सारा धन उस अंगरेजी घोड़े पर लगा हुआ है । यदि मैं जीतूँगा तो कैसी सुन्दर बात होगी। फ्राँस में सब पागल हो जायेंगे।"

नाना ने उसकी भाषा को घृणापूर्वक सुना । तब उन्होंने अलग-अलग घोड़ों के गुणों पर विचार किया। लॉ फेलो ने सब पर यह दर्शाना चाहा कि वह घोड़ों की खाल को भली प्रकार जानता है और कहा कि उनमें से सभी जानवर बड़े ढ़ीले हैं। बेरन वर्डियर का फ्रैंगीपेन घोड़ा सत्यतापूर्वक लेनोर सेबाहर

आया है और ट्रेनिङ्ग में यदि वह लंगड़ा न हो गया होगा तो उसकी अच्छी आशा हो सकती है। कारबेरस अस्तबल के वेलेरियो द्वितीय के सम्बन्ध में यह है कि वह ठीक हालत में नहीं है क्योंकि अप्रैल में वह चोट खा गया था किन्तु वे लोग इस बात को अन्धकार में रख रहे हैं। वह दावे से कह सकता है कि उसका कथन सत्य है। और तब मेखेन अस्तबल के हसार्ड घोड़े की उसने अन्त में सिफारिश की जो उन सबमें खराब जानवर है और जिस पर किसी की दृष्टि नहीं है। वह शैतान! हसार्ड ने अच्छी चेष्टा व सुन्दर ढंग दिखाया है। वही एक घोड़ा है जो सबको चकित कर देगा।

"नहीं", नाना ने कहा, "मैं दस लुई लुसिगनन पर लगाऊँगी और पाँच बोम पर।"

यह सुनते ही लॉ फेलो उफन पड़ा।

"किन्तु, प्रिय! बोम व्यर्थ है। उस पर मत लगाओ। यहाँ तक कि गैस्क—उसका मालिक, भी उस पर नहीं लगावेगा। और लुसिगनन—वह इसमें है ही नहीं। सब बकवास है।"

वह एक प्रकार से भड़भड़ा रहा था। फिलिप ने ध्यान किया कि उस सबके होते हुए भी लुसिगनन ने 'डेस कार्स प्राइज' तथा 'ग्रैन्ड पावल डेस प्रोड्यूट्स' प्राप्त किया था। कुछ भी हो उसके प्रति उनको सतर्क रहना चाहिये। इसके अतिरिक्त ग्रेशम, लुसिगनन को दौड़ाने वाला था जो इतना भाग्यहीन था कि कभी जीत ही न सका। अतः बहस करने से क्या लाभ था?

और तब वाद विवाद, जो नाना की लैण्डो से प्रारम्भ हुआ था, दौड़ के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ता रहा। चीखें उठती रहीं। जुआ खेलने का वेग सर्वत्र छाया हुआ था। उससे आकृतियों में उत्तेजना तथा परिवर्तन प्रकट होता था जिससे भ्रम पैदा हो रहा था। साथ ही बुकी लोग इनामों की घोषणा करते जाते थे तथा जो भी दाँव लगे थे उन्हें बोर्ड मे टाँगते जाते थे। दाँव की केवल छोटी रकमें उस प्रकार प्रकट हो रही थीं; वैसे बड़े दाँव एन्क्लोजर में ही लग रहे थे। वह छोटे जुआड़ियों की तृष्णा थी कि अपने पाँच फ्राँक से कुछ लुई जीतने की उनकी अभिलाषा सजग हो रही थी। संक्षेप में, मुख्य लड़ाई,

स्पिरिट और लुसिगनन में सम्भावित थी। कुछ अंगरेजों के चेहरे जो अपनीआकृतियों के कारण सुगमता से पहचाने जा रहे थे और पृथक-पृथक समूहों में इधर-उधर टहल रहे थे, तमतमा रहे थे तथा वे जीत की खुशी में थे।

अमाह लार्ड रीडिंग के घोड़े ने, पिछले वर्ष ग्रान्ड-प्राइज जीता था। वह हार ऐसी थी जिससे सभी फ्राँस-वासियों के हृदय दुःख से रक्त बहा रहे थे। इस वर्ष भी यदि फ्राँस हार गया तो वह स्थायी सर्वनाश बन जावेगा अतः राष्ट्रीय अभिमान से प्रत्येक स्त्री उत्तेजित हो रही थी। वैन्डेव्रे स का अस्तबल फ्राँस के गौरव की रक्षा कर रहा था। वे सब लुसिगनन को बढ़ावा दे रहे थे और आकाश को गुँजाने वाले नारे लगा रहे थे। गागा, ब्लान्च, केरोलीन और अन्य सभी ने उस पर अपना धन लगाया था। चूँकि उसका लड़का उसके साथ था अतः लूसी ने रुपया नहीं लगाया। यह सुना गया कि रोज मिगनन ने लेबार्डेट के द्वारा अपने दो सौ लुई उस पर लगाये थे। केवल बूढ़े ट्राईकन ने जो अपने ड्राइवर के पीछे बैठा था अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा की थी। उस चिल्लाहट व कान फोड़ने वाले शोर के बीच वह बड़े धैर्यपूर्वक बैठा था जहाँ पेरिस वालों के विभिन्न स्वरों में अलग-अलग घोड़ों के नाम पुकारे जा रहे थे तथा अंगरेजों के गन्दे सम्बोधन प्रकट हो रहे थे। उसने उन्हें शाही ढङ्ग में सुना।

"और नाना ?" जार्ज ने कहा : "क्या उसको कोई भी बढ़ावा नहीं दे रहा है ?"

नहीं, उसे कोई भी बढ़ावा नहीं दे रहा था। कोई उसका नाम भी न ले रहा था। वैन्डेव्रे स के अस्तबल के बाहर के लोग लुसिगनन के प्रचार के कारण डूबे जा रहे थे। किन्तु लॉ फेलो ने अपने हाथ उठाये और सम्बोधित किया :

"एक आन्तरिक चेतना ! मैं नाना पर एक लुई लगाऊँगा।"

"खूब ! शाबास ! मैं दो लगाऊँगा", जार्ज बोला।

"और मैं तीन", फिलिप ने जोड़ दिया।

वे अपना धन बढ़ाते गये तथा स्वेच्छा से अपनी जमानत का पैसा देते

गये तथा पुकार चिल्लाते रहे जैसे वे नाना को नीलाम पर चढ़ा रहे हों। लॉ फेलो ने उसे सोने में मढ़ने की बातचीत कर डाली। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक को उस पर कुछ न कुछ लगाना चाहिये। वे इधर-उधर जाकर उन लोगों को प्रोत्साहित करेंगे जो रेस में धन लगा रहे हैं। और ज्यों ही वे तीनों नवयुवक अपने विचार को कार्यान्वित करने बढ़ने वाले थे तभी नाना ने उनके निकट आकर कहा :

"ध्यान रक्खो, मुझे उससे कोई प्रयोजन नहीं है। किसी भी भाव ! जार्ज ! लुसिगनन पर दस लुई तथा वेलेरियो द्वितीय पर पाँच।"

वे शीघ्रता में बढ़ गये। नाना अत्यधिक प्रसन्न होती रही और उन्हें पहियों के बीच में चमकते देखती रही। जब भी किसी परिचित को गाड़ी में देखते, वे उसके निकट तेजी में बढ़ जाते तथा उनके समक्ष उस घोड़ी को आवेश में ऊपर उठा लेते। तब भीड़ में बारम्बार हँसी के फब्बारे फूटते रहे और वे निरन्तर विजयोन्मत्त से अपने लगाये धन को उँगलियों के द्वारा प्रकट करते कि उन्होंने कितने लुई दाँव पर लगाये हैं। नाना, वह नौजवान लड़की, अपना टोप हिलाते हुए अपने स्थान पर खड़ी रही। जो हो; उन लोगों को विशेष सफलता प्राप्त न हुई और बहुत कम लोग उस दिशा में प्रोत्साहित किये जा सके।

उदाहरणार्थ स्टेनियर ने, नाना की उपस्थिति से चंचल होकर, अपने तीन लुई दाँव पर लगा दिये किन्तु स्त्रियों ने स्पष्टतः मना कर दिया। धन्यवाद ! वे निश्चित् हानि नहीं उठाना चाहतीं। साथ ही वे उस शीघ्रता में भी नहीं हैं कि उस लड़की के नाम के जानवर की सफलता को बढ़ावा दें जो अपने चार सफेद घोड़ों के साथ उसे बाँधती है; और उसके वे सईस तथा सबको निगल जाने की उसकी वह प्रवृत्ति। गागा और क्लारिस ने लॉ फेलो से निश्चित् प्रश्न किया कि क्या वह उनको मूर्खों का एक समूह मानता है ? जब जार्ज ने निर्भीकतापूर्वक मिगनन की गाड़ी की ओर बढ़कर वह प्रस्ताव किया तो अत्यधिक क्रुद्ध होकर उसने बिना कुछ उत्तर दिये अपनी गर्दन दूसरी ओर घुमा ली। वह बहुत ही गन्दी प्रवृत्ति है कि कोई अपना नाम किसी

घोड़े को दे। उसके विपरीत, मिगनन ने, बहुत प्रसन्न होकर, यह कहा कि स्त्रियाँ सदैव भाग्य लाती हैं। और उसने युवकों का साथ दिया।

"हाँ, क्या ?" नाना ने; उन लोगों से जो देर तक बुकी-लोगों के पास घूमकर लौटे थे, प्रश्न किया।

"तुम चालीस पर हो", लॉ फेलो ने कहा।

"कैसे, चालीस पर ?" नाना ने विस्मय में चीख कर कहा : 'मैं पचास पर थी। क्या हो गया ?"

तभी लेबार्डेट लौटा। वे मैदान को खाली कर रहे थे पहली दौड़ की घंटी बजने को थी। उस समय जो शोर उठ रहा था उसके बीच नाना ने उससे पूछा कि अचानक नाना का भाव कैसे बढ़ गया किन्तु उसने उड़ता २ उत्तर दिया। निश्चित् ही उस घोड़े के सम्बन्ध में कुछ पूछ-ताछ हुई है। उससे नाना को कुछ सन्तोष हुआ। साथ ही, अपने मस्तिष्क में कुछ लेकर लेबार्डेट प्रकट हुआ था तभी उसने नाना से कहा कि यदि वह कुछ समय के लिये जावे तो वैन्डेव्रेस वहाँ आना चाहता है।

तभी दौड़, जैसे बिना देखे ही किसी बड़ी घटना की प्रतीक्षा में, समाप्त हो गई और सारे मैदान में एक बादल घिर आया। कुछ देर को सूर्य विलीन हो गया और एक अँधेरे ने भीड़ को घेर लिया। अब तेज हवा के झोंके आये, पहले बड़ी-बड़ी बूँदें और फिर जोर की वर्षा होने लगी। चतुर्दिक एक विभ्रम फैल गया और भाँति-भाँति के स्वर प्रकट होने लगे।

"ओह ! मेरे मासूम लुई !" नाना ने कहा : "क्या तुम बहुत भीग गये, मेरे छोकरे !"

बच्चे ने, एक शब्द भी कहे बिना नाना को अपने रूमाल से हाथ पोंछने दिये। तब उसने बिजोय को पोंछा जो काँप रहा था। उसकी अपनी पोशाक में कुछ नहीं था, केवल सफेद साटन पर यत्र-तत्र कुछ बूँदें पड़ी थीं जिनकी उसने किंचित् भी चिन्ता न की। फूलदान बर्फ की भाँति चमकने लगे और नाना ने, अत्यधिक मुदित होकर, एक को सूँघा और ओस की भाँति उसमें अपने ओठों को भिगोया।

पानी की उस झड़ी में नाना ने दूरबीन से देखा कि सब स्टैन्ड आदमियों से भिचकर जैसे भरे हुए ठोस पदार्थ बन गये हैं।

तभी एक फुसफुसाहट भीड़ में फैल गई। महारानी बीच के खेमे में से जो एक स्विस झोंपड़ी जैसा दिख रहा था और लाल रंग की आराम-कुर्सियों से सज्जित था, आ रही है।

"क्यों, वह वहाँ है ?" जार्ज ने कहा। "मैं नहीं कह सकता कि इस सप्ताह वह ड्यूटी पर है।"

काउन्ट मुफट की कठोर और गम्भीर आकृति महारानी के पीछे दिखाई दी। तब नवयुवक मजाक करने लगे कि अफसोस ; सैटीन वहाँ नहीं है अन्यथा उसके पेट को गुदगुदाती। किन्तु नाना ने अपनी दूरबीन में स्काट-लैंड के राजकुमार को शाही स्टैंड में देखा।

"देखो, वहाँ चार्ल्स है !" वह चिल्लाई। वह सोचती थी कि वह मोटा होगा। अट्ठारह महीनों में, लगता है, वह चौड़ा हो गया है और उसने उसका कुछ विवरण दिया। ओह ! वह शैतान कैसा मजबूत आदमी है।

उसके चारों ओर अन्य स्त्रियाँ फुसफुसा रही थीं कि काउंट ने नाना को छोड़ दिया है। वह एक बड़ी कहानी है। उसके साथ खुले रूप में घूमने के प्रसंग को लेकर टुलियर्स, चेम्बरलेन के उस व्यवहार से सरोष हो रहे थे, अतः अपनी मर्यादा को बनाये रखने के लिये उसने नाना से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। लॉ फेलो ने उस कथा को अशिष्टतापूर्वक नवयुवती के समक्ष दोहराया और पुनः अपने को प्रस्तावित करते हुए उसे उसने अपनी जुलियट सम्बोधित किया।

किन्तु उसने अट्टहास कर कहा :

"यह बकवास है ! तुम उसे नहीं जानते। मुझे केवल सीटी बजानी होगी और वह अपना सब कुछ मेरे लिये फेंक कर आ जावेगा।"

कुछ मिनट तक वह काउन्टेस सैबीन को देखती रही तथा एस्टेला को भी। डागनेट अब भी उनके साथ था। फाचरी ने, जो अभी-अभी पहुँचा

था, प्रत्येक को उस स्थान पर पहुँचने के लिये अस्त-व्यस्त कर दिया और वह भी वहाँ मुस्कराता हुआ खड़ा रहा।

तब तिरस्कारसहित, स्टैंड देखकर नाना कहती रही :

"जो हो, तुम जानते हो, ये सब लोग मुझे अब चकित नहीं करते हैं। मैं उन्हें भली प्रकार जानती हूँ। तुम्हें उनको शीशे हटाकर देखना चाहिये। कोई सम्मान नहीं! जैसे प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया गया है। नीचे कलुष, ऊपर कलुष—गन्दगी सर्वत्र व गन्दगी सदैव और साथ २। अतः मैं किसी भी बदतमीज़ के साथ नहीं रहूँगी।"

"शाबास, नाना! वह बहुत अच्छी है; नाना!" लॉ फेलो तीव्रता में चिल्लाया।

घंटी का स्वर हवा में विलीन हो गया। दौड़ होती रही। इसफहान के इनाम की दौड़ अभी-अभी बलिंगटन ने जीती थी जो मेकेन अस्तबल का घोड़ा था। नाना ने लेबार्डेट को बुलाया और अपने तीस लुई के सम्बन्ध में जानना चाहा। वह हँसा पर उसने यह नहीं बताया कि किस घोड़े पर वह लगा रहा है जिससे सौभाग्य बदले नहीं। नाना का धन, जैसा वह धीरे-धीरे देखेगी, ठीक प्रकार से लगाया गया है। और जब उसने अपने दाँवों के सम्बन्ध में बताया कि दस लुई उसने लुसिगनन पर और पाँच वेलेरिया द्वितीय पर लगाये हैं तो उसने अपने कन्धे हिला दिये जैसे वह कह रहा हो कि सब कुछ होते हुए भी औरतें अपने आप मूर्ख बनती हैं।

इस क्षण सर्वत्र उत्साह भर गया। ग्रैन्ड-प्राइज़ की रेस प्रारम्भ होने के पूर्व, खुले में, सर्वत्र खाना वितरित होगया और लोग मौज में खाते-पीते रहे। कोई घास पर बैठे थे, कोई अपने स्टेज-कोच की ऊँची गद्दी पर, कोई विक्टोरिया या लैंडो गाड़ियों पर। शैम्पेन खुली, जिसे नौकर लोग गाड़ी की गद्दी के नीचे से निकाल-निकाल कर रखते रहे। बोतलों के कार्क आवाज के साथ खुलकर उड़ते रहे। खिलखिलाहट उभरती रही।

तभी सब लोग नाना की लैंडो की ओर बढ़ गये। जो लोग उससे हाथ मिलाने आये उन्हें वह शराब के गिलास भर २ कर बढ़ाती रही। नौकर,

फ्रांकोइस बोतल लिये खड़ा रहा। लॉ फेलो विदूषक की हँसी हँसकर लोगों से कहता रहा :

"आइये ! भाइयो, इधर आइये ! यह सब, कहीं कुछ नहीं है। कुछ ऐसे हैं जो सबके लिये हैं।"

"जरा शान्त रहिये, महाशय", नाना ने कहा : "हम लोग मसखरों का एक समूह दीख रहे हैं।"

नाना को वह सब अत्यधिक प्रसन्नता देता रहा। एक बार उसने सोचा कि एक गिलास भर कर जार्ज के द्वारा वह रोज़ मिगनन को भेज दे जो शराब न पीने का बहाना किये बैठी थी। हेनरी व चार्ल्स बहुत ऊबे हुए बैठे थे। बच्चे सम्भवत: थोड़ी शैम्पेन लेते किन्तु जार्ज झगड़े के डर से सब की सब स्वयं ही चढ़ा गया। तब नाना को नन्हे लुई का ध्यान आया, जिसे वह अपने पीछे छोड़ आई थी। सम्भवत: वह प्यासा हो अत: उसने शराब की कुछ बूँदें उसे दीं।

"चलिये···चलिये, भाइयो", लॉ फेलो दोहराता रहा। इसमें दो साउ भी व्यय नहीं हो रहे हैं, इसमें एक साउ भी व्यय नहीं हो रहा है। हम लोग बिना मूल्य के ही बाँट रहे हैं।"

किन्तु नाना ने बीच में टोकते हुए कहा : "ओह ! वह देखो बार्डनोव। जाओ, दौड़कर उसे पकड़ लाओ।"

वह निश्चित् ही बार्डनोव था जो अपने हाथ पीछे बाँधे चल रहा था, जिसका हैट धूप में धूल-धूसरित दीख रहा था और जो चिकना-लम्बा कोट पहने था। उसकी आकृति से दिवालियापन टपक रहा था, फिर भी वह उस फैशन के संसार में तीव्रता प्रदर्शित कर रहा था और लग रहा था कि किसी भी क्षण वह भाग्य को कुचल सकता है।

"वह शैतान किस अकड़ में है।" वह बोला। नाना ने हाथ हिला-कर उसे बुला लिया। और जब शैम्पेन का एक गिलास चढ़ा गया तो उसने एक व्यंग्य उछाल दिया : "काश ! मैं औरत होता। क्या तुम स्टेज पर फिर काम करोगी ? मुझे एक ख्याल है। मैं गेटी थियेटर लेने वाला हूँ, तब मैं

समस्त पेरिस को तूफान की भाँति वहाँ घसीट लाऊँगा। तुम क्या कहती हो? उतना ऋण मेरा तुम पर है।"

तब वह खड़ा-खड़ा बुदबुदाता रहा तथा नाना को पुन: देखकर प्रसन्न होता रहा। क्योंकि उसने जो कुछ कहा था वह नाना को अरुचिकर प्रतीत हुआ किन्तु उसके अपने मन को वह मरहम का काम कर रहा था जैसे वह उसी के सामने जीवित रहना चाहता हो। वह उसकी लड़की थी—उसी का रक्त।

अब वह घेरा बढ़ता गया। लॉ फैलो तो धीरे से सरक गया किन्तु जार्ज और फिलिप अन्य मित्रों की खोज में आगे बढ़ते रहे। धीरे-धीरे सभी उस ओर आकृष्ट हुए। प्रत्येक के लिये नाना में एक मुस्कराहट थी और एक खिलखिलाता हुआ व्यंग्य। पीने वालों के प्रथक् दल आते रहे और शराब उनमें बँटती रही। उस भीड़ व शोर में जैसे वह सभी पर राज्य कर रही थी। उसके पीले बाल हवा में उड़ रहे थे। उसका बर्फीला-सा चमकदार चेहरा धूप में स्नान कर रहा था। तब सब का मुकुट धारण कर वह अपनी विजय से अन्य स्त्रियों में ईर्षा उत्पन्न कर रही थी। प्रतीत हो रहा था जैसे वह पिछले वीनस स्वरूप के विजयोन्माद में हो।

तभी उसने ध्यान किया कि उसकी पीठ कोई छू रहा है। उसने घूमकर विस्मयसहित देखा, वह मिगनन था। कुछ देर को वह विलीन हो गई और उसके साथ बगल में बैठ गई क्योंकि मिगनन को उससे कुछ आवश्यक वार्तालाप करना था। मिगनन सब तरफ कहता फिरता था कि उसकी पत्नी, नाना के प्रति बड़ी ईर्षा रखती है। वह उसे मूर्खता व व्यर्थता की बात मानता था।

"प्रिये! यही वह मामला है", वह बोला : "रोज! अधिक उग्र न हो, इसका ध्यान रखो। समझती हो, मेरा सुझाव है कि तुम सतर्क रहो। हाँ, उसके पास एक अस्त्र है और उस 'लिटिल डचेज' के मामले में अभी तुम्हें उसने क्षमा नहीं किया है···।"

'एक अस्त्र ?" नाना ने बीच में टोकते हुए कहा : "किन्तु मैं उस शैतान की क्या परवाह करती हूँ ?"

"सुनो, उसके पास एक पत्र है जिसे उसने फाचरी की जेब से निकाला होगा—वह पत्र जो काउन्टेस सैबीन के द्वारा उसे लिखा गया है। उसमें सब कुछ लिखा है। रोज़ तुमसे व उससे बदला लेने के लिये उसे काउन्ट के पास भेजना चाहती है।"

"मैं उसकी क्या चिन्ता करती हूँ ?" नाना ने दोहराया : "कैसा भयंकर मज़ाक है। तब, फाचरी के सम्बन्ध में सब सत्य है। वैसा है तो ठीक। उसने मुझे बहुत रुष्ट किया है। वह कैसा खेल बनेगा ?"

"किन्तु मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो", जल्दी से मिगनन ने उत्तर दिया : "वह एक उत्पात उत्पन्न करेगा। साथ ही, उससे हमारा कोई भला भी न होगा···।"

वह, अधिक न कह जाय इस भय से, चुप हो गया। नाना कहती रही कि वह नहीं चाहती कि एक प्रतिष्ठित महिला पर कोई आक्षेप हो किन्तु जब मिगनन ज़िद्द करता रहा तो नाना ने उसके चेहरे को गौर से देखा। निःसंदेह वह फाचरी को, काउन्टेस की बात खुल जाने पर—पुनः अपने परिवार में देखने से डरता था। यही रोज़ चाहती थी कि उस पत्रकार के प्रति कोमल भावनाएँ रखते हुए वह भली प्रकार से बदला ले सके। तब नाना चिन्तित हो गई। वह मोशियो वेनेट का ध्यान करती रही तथा कुछ युक्ति सोचती रही और मिगनन उसे सन्तुष्ट करने की चेष्टा करता रहा।

"ज़रा सोचो रोज ! यदि वह पत्र भेज देती है तो एक बड़ा तूफान उठ खड़ा होगा, क्या नहीं होगा ? तुम भी उसमें सम्मिलित की जाओगी और प्रत्येक कहेगा कि दोष तुम्हारा है। तब काउंट तुरन्त अपनी पत्नी से प्रथक् हो जावेगा···।"

'ऐसा ही क्यों ?" नाना ने प्रश्न किया : "इसके विपरीत···।"

किन्तु अपने आप को उसने टोका। उसने विचार किया कि इस प्रकार विचारों को प्रकट करने से क्या लाभ है। अन्त में, उसने मिगनन की बात का

समर्थन करने का ही बहाना बनाया, जिससे उससे छुटकारा पा सके। तब उसने उसे सलाह दी कि वह रोज को भी कुछ दे। उदाहरणार्थ, सबके समक्ष, यहीं वह उससे भेंट कर ले। नाना ने उत्तर दिया कि वह उस सम्बन्ध में सोचेगी।

एक शोर ने उसे उठाकर खड़ा कर दिया। उसने देखा मैदान में बिजली की चमक की भाँति कुछ घोड़े निकाले जा रहे हैं। वह 'सिटी आफ पेरिस प्राइज़' की दौड़ थी जो कार्नम्यूस ने जीती थी। अब ग्रैंड-प्राइज के लिये दौड़ होने वाली थी। दौड़ का बुखार बढ़ने लगा, भीड़ में शंकायें बढ़ने लगीं। इससे समय जल्द-जल्दी बीतता गया और अन्तिम क्षणों में लोग स्तम्भित रह गये जब उन्होंने अचानक नाना का भाव बढ़ा हुआ देखा जो वैन्डेव्रेस के अस्तबल के लिये बाहरी थी। भले लोग प्रत्येक बार एक नया रूप लेकर आते कि हर मिनट नाना का भाव बढ़ रहा है—अब तीस है—नाना पच्चीस है—नाना बीस पर है और अब पन्द्रह पर। किसी को पता नहीं कि उसका भेद क्या था। वह घोड़ी जो हर घुड़दौड़ के मैदान में हारी थी; वही घोड़ी जिसको सुबह पचास पर भी कोई लगाने वाला न था! अचानक, इस पागलपन का कारण क्या था? कुछ हँसे और मजाक करते रहे कि जो भी इस गधेपन में फँस रहे हैं, उन पर साफ झाड़ लग जावेगी। किन्तु कुछ निश्चित् एवं गम्भीर होकर विचार कर रहे थे कि अवश्य भाव बढ़ा है। रेस में होने वाली लूट और डकैती की अनेक दन्त-कथायें फैलने लगीं किन्तु इस बार वैन्डेव्रेस ने उन समस्त शिकायतों को दाँव रखा था तथा उन पर शंकायें स्पष्ट प्रकट हो रही थीं, जो यह विश्वास कर रहे थे कि नाना अच्छे नम्बर पर आवेगी।

"नाना पर कौन चढ़ रहा है", लॉ फेलो ने प्रश्न किया।

तभी असली नाना वहाँ प्रकट हो गई। और वह अधिक हंसी में भर कर ऊटपटाँग अर्थ बताने लगा। नाना सुनकर लजा गई।

"वह प्रइस है"; नाना बोली।

बहस पुनः प्रारम्भ हो गई। प्रइस एक अंग्रेजी प्रतिष्ठा थी जिसे फ्रांस

में कोई जानता तक न था। वैन्डेव्रेस ने इस जाकी को क्यों रक्खा है जब ग्रेशम साधारणतः नाना को दौड़ाता है ? साथ ही सभी को आश्चर्य है कि ग्रेशम को लुसिगनन दिया गया है जिसके लिये लॉ फेलो का ध्यान था कि वह कभी प्रथम नहीं आया है। किन्तु ये सब आलोचनायें, हँसी-मजाक और प्रत्युत्तर में दब गयीं। सभी के पृथक-पृथक मत थे। समय व्यतीत करने के लिये लोगों ने पुनः शैम्पेन पीना प्रारम्भ कर दिया। तभी एक फुसफुसाहट वहाँ घूम गई और लोगों ने मार्ग बना दिया। अब वैन्डेव्रेस वहाँ प्रकट हो गया। नाना ने शिकायत का सा मुँह बनाया।

"हां, तुम अच्छे हो कि अभी तक नहीं आये। और मैं एन्क्लोजर देखने की इच्छा कर रही थी।"

"तब आओ न, अभी समय है। तुम अभी घूमकर देख सकती हो। मेरे पास स्त्रियों का भी एक टिकट है।"

अब वैन्डेव्रेस नाना को अपने हाथ का सहारा देकर ले गया। लूसी, केरोलीन तथा अन्य स्त्रियों ने ईर्षालु दृष्टियों से नाना को देखा। उसे देखकर नाना बहुत मुदित होती रही। दोनों हगन व लॉ फेलो लैण्डों में बैठे-बैठे ही नाना की शैम्पेन का सम्मान करते रहे। नाना ने उनसे कहा कि वह तुरन्त आती है।

किन्तु वैन्डेव्रेस ने लेबार्डेट को देखा। वह उस ओर बढ़ गया और एक संक्षिप्त वार्ता की।

"क्या तुमने सब चीजें उठा लीं ?"

"हाँ।"

"कितने में ?"

"पन्दरह सौ लुईस में थोड़ा-थोड़ा सब जगह।"

जैसे नाना बड़ी उत्कंठा में वह सब सुन रही थी—उन्होंने कुछ नहीं कहा। वैन्डेव्रेस बड़ा घबड़ाया हुआ था; उसकी स्वच्छ आँखें जैसे आग की चिन-गारियों में जल रही थीं—उसी प्रकार जिस प्रकार उसने नाना को उस रात्रि यह कह कर डराया था कि वह अपने अस्तबल में घोड़ों के साथ जल जावेगा। ज्योंही उन्होंने मैदान पार किया नाना ने धीमी आवाज करके कहा :

"मैं कहती हूँ, मुझे बताओ। तुम्हारी उस घोड़ी के भाव कसे ऊँचे हो गये हैं? वह तो एक आतंक उत्पन्न कर रहा है।"

तब उसने प्रारम्भ किया: "आह! तो प्रत्येक उसके सम्बन्ध में चर्चा कर रहा है। ये दांव लगाने वाले भी कैसे लोग है? जब मेरा कोई अपना प्रिय चुनाव होता है तो सभी उस पर लपकते हैं। मेरे लिये कुछ भी नहीं बचा है। और जब कोई बाहरी उसकी पूछ-ताछ करता है तो वे ऐसे चिल्लाते है जैसे वे लुटे जा रहे हैं।"

"और हाँ, तुम जानते हो मैं भी पैसा लगा रही हूँ। मुझे ठीक बात समझाओ। क्या उसकी कोई आशा है?" नाना ने पूछा।

अचानक, एक आवेश में बिना किसी बाह्य कारण के वैन्डेव्रेस भर गया। "ह: इतनी कृपा करो कि मुझे चिढ़ाया मत करो। हाँ, घोड़ों का चान्स होता है। भाव इसलिये बढ़ गया है कि कुछ लोग उसको बढ़ावा दे रहे हैं। कौन! यह मैं नहीं जानता। यदि तुमने मुझसे इसी तरह के बेहूदे प्रश्न किये तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।"

इस प्रकार की बातचीत, उसके साधारण व्यवहार तथा स्वभाव से सर्वथा भिन्न थी। नाना को बुरा मानने से अधिक आश्चर्य हुआ। उसने स्वयं ही लज्जा का अनुभव किया। जब नाना ने कहा कि उसे अधिक विनम्र वार्ता करनी चाहिये तो उसने क्षमा माँग ली। अभी थोड़ी ही देर से वह इसी प्रकार की मानसिक विकृति के थपेड़ों से पिट रहा था। उस महान् पेरिस का कोई भी व्यक्ति इस बात को गलत नहीं कह सकता कि उसदिन वह अपना आखिरी दाँव लगा रहा था। यदि उसके घोड़े नहीं जीतते हैं अथवा वह उस हद तक हार जाता है जितना धन उसने लगाया था तो वह उसका विनाश ही नहीं अपितु उसका अन्त हो जावेगा। उसका कर्ज, उसका वह बाहरी दिखावे का अस्तित्व—जो अब तक कर्ज व अस्त व्यस्तता से उलट-पुलट होकर भी टिका हुआ था, समाप्त हो जावेगा और समाप्ति की चीख विदेशों तक में फैल जावेगी।

और नाना ने, जिसको प्रत्येक जानता था कि वह व्यक्ति को खा जाती है, ही उसको समाप्त किया था। वह अन्तिम थी जिसने उसके बिगड़े भाग्य पर और चोट दी थी तथा जो कुछ बचा था उसे भी साफ कर गई थी।

आसक्ति के चरम पागलपन में जो कुछ सम्भव था, वह सब कुछ प्रकाशित होता रहा। सोना जैसे हवा में उड़ाया गया। बेडन की एक क्रीड़ा-यात्रा में नाना ने उसके पास इतना पैसा भी न छोड़ा कि वह होटल का बिल भी चुका सके। शराब के नशे की उत्तेजना में मुट्ठी भर कर हीरे आग में झोंक दिये गये, केवल यह देखने के लिये कि क्या वे कोयले की भाँति जल सकते हैं। शनैः शनैः अपने उन उठे हुए अङ्ग-प्रत्यंगों और शैतानी के उच्च अट्टहास में—नाना ने प्राचीन कुलीनता के उस उत्तराधिकारी का सब कुछ हथिया लिया जबकि वह इतना चालाक और धन-हीन था।

और उस क्षण वह अपना सब कुछ दाँव पर लगा चुका था। क्योंकि वह, जो कुछ भी गन्दा और कलुषमय था—उसके चाव में डूब चुका था और उसमें यह विचार-शक्ति शेष न रह गई थी कि वह सोच सके कि भला-बुरा क्या है? केवल आठ दिन पूर्व—नाना ने उससे वचन लिया था कि हेकेट तथा ट्राविले के बीच नारमैंडी के किनारे वह एक भवन उसके लिये खरीद देगा। उसने अपने वचन की रक्षा करने का बीड़ा उठा लिया था। वह उसके भावना-तन्तुओं को खसोट रही थी और वैन्डेव्रेस उसको इतना शैतान मान चुका था कि उसका नाना को पीटने का मन हो रहा था।

दरबान ने उन दोनों को एनक्लोजर में प्रवेश करने की अनुमति दी। और किसी काउंट की बाँहों में लिपटी स्त्री को भी रोकने का साहस नहीं किया। और नाना ने उस स्थान पर गर्व से पग टेका जहाँ जाने में रोक लगी हुई थी। तब नाना अपने विभिन्न हाव-भावों का स्वयं निरीक्षण करती गई; और उन स्त्रियों के सामने, बड़े गर्व से धीरे-धीरे पैर बढ़ाते आगे चली, जो स्टैंड में नीचे की ओर बैठी थीं।

कुर्सियों की दस पंक्तियों के बीच रंग-बिरंगी व ललित पोशाकें भरी

पड़ी थीं, जो अपने आकर्षक रङ्गों को हवा में उड़ा रही थीं। कुसियाँ घुमा ली गई थीं और मित्र-मण्डली, एक दूसरे से जैसे मिलती गई, समूहों में विभक्त हो गई थी जैसा किसी बगीचे में होता है जहाँ बच्चे भी चारों ओर खेलते-कूदते हैं। वहाँ बेंचों व स्टैंडों के बन्धन उन्मुक्त हो रहे थे। साथ ही घेरे का कमजोर काम हल्के रङ्ग के कपड़ों पर छाया फेंक रहा था। नाना ने स्त्रियों को कौतुक से देखा। विशेषतः काउन्टेस सैबीन को उसने अधिक गौर से देखा। तब, जैसे ही वह शाही खेमे के सामने से बढ़ी, उसने काउंट मुफट को महारानी के निकट खड़े देखा जो अपनी मार्यादानुकूल सजाव में था, जिसे देखकर नाना मुस्करायी।

"ओह! कैसा पाजी दिखाई देता है", नाना ने उच्च स्वर में वैन्डेव्रेस से कहा।

उसने सब चीजें देखने की इच्छा प्रकट की। यह एक पार्क के प्रकार का स्थान, जहाँ छोटे-छोटे लॉन तथा मिले-जुले वृक्ष थे, उसे अधिक आकृष्ट न कर सका। जलपान के एक ठेकेदार ने रेलिंग के निकट शराब की एक बड़ी दूकान लगा रक्खी थी। उसके नीचे घिरी हुई गोलाकार छत पर आदमियों की भीड़ ठेलमठेल व शोर कर रही थी। वह बेरिंग-रिंग थी। इसके बराबर ही कुछ घोड़ों के रिक्त बॉक्स थे। तब उसने निराशा सहित केवल घुड़सवार सैनिक का एक घोड़ा देखा। वहाँ एक छोटा मैदान भी था—लगभग सौ गज गोल, जहाँ अस्तबल का एक लड़का 'बिलेरियो द्वितीय' को टहला रहा था जो पूरी तरह ढका हुआ था। वही सब कुछ था, केवल उतना छोड़कर जहाँ कुछ व्यक्ति कंकरीले मार्ग में पीले-रंग के टिकट अपने बटन-होल में लगाये हुए थे तथा कुछ लोगों का थिरकता, गाता हुआ जुलूस जो स्टैंड की खुली गैलरी में घूम रहा था। यह सब देखकर वह प्रसन्न होती रही।

डागनेट तथा फाचरी ने, जो उसके सामने से निकले, उनको सिर झुकाया। उसने उन्हें संकेत दिया अतः वे उसके निकट आकर रुक गये और तब उसने एनक्लोजर की बुराइयाँ करना प्रारम्भ कर दिया। अब अपने को रोकते हुए नाना बोली :

"हलो ! वह है मारक्युस डि. चोरड ! वह अब कितना बूढ़ा दीखने लगा है। वह पुराना गुण्डा, अपने लिये जुटा हुआ है । क्या वह अब भी उसी प्रकार का उद्दंड व्यक्ति है ?"

तब डागनेट ने उस बुड्ढे का अन्तिम दुष्कर्म कह सुनाया—एक दिन पूर्व की ही एक कहानी जो अभी तक समाप्त भी न हुई थी। महीनों पीछे चक्कर काटने के उपरांत, उसने अभी-अभी गागा को, जैसा कहा जाता है, उसकी लड़की एमेली के लिये तीस हजार फ्रैंक दिये हैं।

"ओह ! यह घृणापूर्ण है !" नाना ने तिरस्कारसहित सम्बोधित किया : "लड़कियों का होना अच्छा है ! किन्तु अब मैं सोचती हूँ, जिसको मैंने एक महिला के साथ गाड़ी में देखा था वह निश्चित ही लिली होगी। मैंने सोचा था मैं चेहरा पहिचानती हूँ । उस बुड्ढे ने अवश्य उसे बाहर निकाला होगा।"

वैन्डेव्रेस सुन नहीं रहा था किन्तु नाना से छुटकारा पाने के लिये अधीरता से चिन्तित था। जो हो, फाचरी ने कहा कि यदि उसने बुकी-लोगों को नहीं देखा तो उसने कुछ नहीं देखा है। तब काउन्ट उसे कृपापूर्वक वहाँ ले गया, यों वह उसके लिये मना करता रहा । इस बार वह संतुष्ट थी; यह निश्चित ही बड़ा कौतूहलपूर्ण था।

एक खुले स्थान पर जहाँ घास के छोटे २ घेरे मिले हुए थे, जो अखरोट के छोटे २ पौधों से घिरे हुए थे और हरी-कोमल पत्तियों से छाये हुए थे, वहीं बुकी लोगों की भीड़ लाइन में लगी हुई थी। वे एक बड़ा घेरा बनाये हुए थे जैसे कोई मेला लगा हो और वे पैसा लुटाने वालों की प्रतीक्षा कर रहे हों। भीड़ को देखने के लिये वे लकड़ी की बेंचों पर खड़े हुए थे। उन्होंने दाँव लगाने वालों की सूची पेड़ों पर टाँग रक्खी थी और वे सदैव अपने नेत्र घड़ी पर टिकाये रखकर बिना किसी कष्ट के जल्दी २ वह सब कुछ लिखते जाते थे जो पैसा लगाने वाले बताते थे, यहाँ तक कि कुछ दर्शक अनिमेष उनकी ओर देखते कि वे क्या करते जाते हैं। तब विस्मय में उनके मुँह खुले रह जाते, बिना कुछ जाने-समझे। सब अस्त-व्यस्तता में पड़ा हुआ था। ऊटपटांग नारे लगते थे तथा

भाव की घटा-बढ़ी में नाना प्रकार के संकेत सम्बोधन प्रकट होते थे। थोड़ी-थोड़ी देर में भीड़ के बढ़ने पर स्वयंसेवक पूरी तेजी भागते और वहाँ पहुंच कर अपनी पूरी शक्ति भर चिल्लाते कि दौड़ प्रारम्भ हो रही है अथवा समाप्त, जिससे दीर्घ बुदबुदाहट प्रकट हो जाती और वह चमकते हुए सूर्य के नीचे जुआरियों में आतंक उत्पन्न कर देती।

"वे कैसे मजेदार हैं", नाना बुदबुदाई : "उनके चेहरे ऐसे लग रहे हैं जैसे अपना सब कुछ बाहर निकाले दे रहे हों। तुम उस भारी-भरकम आदमी को वहाँ देख रहे हो—पेड़ों के बीच में ? मैं उससे मिलने की किंचित भी इच्छा नहीं कर रही हूँ।"

किन्तु वैन्डेव्रेस ने एक बुकी की ओर सकेत किया जो एक दर्जी की दूकान में सहायक था, जिसने दो साल में तीस लाख रुपया पैदा किया था। पतला-दुबला, सफेद रंग का, वह विनम्र व्यक्ति प्रत्येक की श्रद्धा प्राप्त करता था। उससे लोग मुस्कराकर बात करते थे और उसे देखने के लिये किनारे खड़े हो जाते थे।

वे लोग अब जाने वाले थे। तभी वैन्डेव्रेस दूसरे बुकी की ओर झुका, जिसने साहस करके उसे पुकारा था। वह उसका एक पुराना कोचवान था—एक मोटा-तगड़ा व्यक्ति जिसके कन्धे भैंसे की तरह के थे और चेहरा अधिक लाल। अब वह अपने भाग्य को घुड़दौड़ के मैदान में टटोल रहा था किन्तु उसकी धन की स्थिति संदेहजनक थी, जिसके कारण काउंट ने उस पर सहायता का हाथ रक्खा था और गुप्त दाँव लगाने की अपनी योजनाओं को उस पर प्रकट करके उसने उसे वह सब कुछ बताया था जैसे कोई भी अपने नौकर से कुछ भी नहीं छिपाता है। इस बचाव के रहते भी—उसने एक के बाद दूसरे लम्बे धन की हानि उठाई थी और वह भी अपना आखिरी दाँव उस दिन लगा रहा था। उसकी आँखें खून की भाँति रक्तवर्ण थीं और वह स्वयं भी बेहोशी की सी अवस्था में किनारे लगा हुआ था।

"हाँ, मारेचल ?" वैन्डेव्रेस ने धीमे से प्रश्न किया : "तुमने कितना निकाला है ?"

"पाँच हजार लुई, श्रीमान्", बहुत धीरे से बुकी ने प्रत्युत्तर दिया : "वह ठीक है न ? मैं स्वीकार करूँगा कि मैंने भाव गिराया है। मैंने तीन पर एक की स्थिति ला दी है।"

वैन्डेव्रे स अत्यधिक क्रुद्ध प्रतीत हुआ : "नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। दो पर एक तुरन्त करो। मारेचल, मैं तुम्हें आगे, कभी अपनी कोई बात नहीं बताऊँगा।"

"किन्तु अब आप पर उसका इस समय क्या प्रभाव पड़ेगा, श्रीमान्!" उसने प्रारम्भ किया और सहयोगी की सी विनम्र मुस्कान में कहता गया : "मुझे लोगों को आकर्षित करना था जिससे कि मैं आपके दो हजार लुई ला सकूँ।"

तब वैन्डेव्रे स ने उसे छोड़ने को कहा किन्तु जब वहाँ से वह चला गया तो मारेचल कुछ याद करके खेद प्रकट करता रहा कि उसने उसकी घोड़ी के भाव की अनायास वृद्धि के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं पूछा। यदि घोड़ी जीतती है तो वह बड़ी परेशानी में पड़ जायगा क्योंकि उसने पचास पर एक के विरुद्ध, उस पर दो सौ लुई ले रक्खे थे।

काउन्ट की बातचीत की फुसफुसाहट से नाना कुछ भी न समझ पाई किन्तु उसे कुछ पूछने का साहस भी न हुआ। वह पहले कभी भी इतना परेशान नहीं दिखाई दिया था और तभी उसने नाना को लेबार्डेट की देख-रेख में छोड़ दिया, जिससे उन्होंने तोल के स्थान पर घुसते ही प्रतीक्षा करते देखा था।

"तुम इसको वापस ले जाओ", उसने कहा : "मुझे कुछ बातें देखनी हैं। नमस्कार!"

और वह अन्दर चला गया। वह एक तंग गली थी जिसकी छत नीची और एक भारी तोलने वाली मशीन से घिरी हुई थी। वह एक ऐसा स्थान था जैसे छोटे गाँव के किसी स्टेशन पर सामान तोला जाता हो। नाना पुन: अत्यधिक निराश हुई। उसने वह बड़ी भारी मशीन देखी जो घोड़ों के तोलने के काम में आती थी। क्या! वे केवल जाकी लोगों को

तौलते हैं ? तब उसके सम्बन्ध में सोचने की कोई आवश्यकता नहीं है। मशीन पर बैठा हुआ एक जाकी जैसे एक बड़ा मूर्ख दीख रहा था, जिसकी जीन व पैरदान उसके घुटनों पर रक्खे थे। वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक एक तन्दुरुस्त आदमी ने, जो ओवरकोट पहने था, उसे तोल न लिया। तभी अस्तबल का एक लड़का द्वार पर घोड़ा लिये खड़ा हुआ, वह कासीनस था, जिसके चारों ओर भीड़ जमा थी, जो मौन और विचारमग्न थी।

वे मैदान रिक्त कर रहे थे। लेबार्डेट—नाना को लेकर तेजी से आगे बढ़ा। किन्तु वे लोग कुछ पग पीछे लौटे क्योंकि उसने औरों से अलग वैन्डेवेस को एक ठिगने आदमी से गुप्त-वार्ता करते हुए दिखलाया।

"देखो, वही प्राइम है", लेबार्डेट ने संकेत किया।

"आह ! हाँ, वह मुझ पर चढ़ता है", एक हँसी के साथ नाना बुदबुदाई।

उसने उसे बड़ी भद्दी सूरत का देखा। निःसंदेह उसके समक्ष, जैसा नाना कहती रही—सभी जाकी बड़े बेवकूफ प्रतीत होते हैं क्योंकि वे बढ़ने नहीं दिये जाते हैं। वह, चालीस साल का आदमी, एक बूढ़े की सी आकृति का सा प्रतीत हो रहा था, जैसे सूखा हुआ बच्चा—लम्बा व पतला चेहरा लिये, कठोर, मृत्यु सदृश दिखाई देने वाला व जिसके झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। उसका बदन गठीला था और इतना घटाया हुआ कि लग रहा था जैसे सफेद बाँहों की नीली वास्कट किसी लकड़ी के टुकड़े को पहना दी गई हो।

"नहीं", जब वे आगे बढ़े तो नाना बोली : "तुम जानते हो, मैं उसका ध्यान नहीं करती हूँ।"

भीड़-भाड़ के साथ वहाँ कुछ भले आदमी अपने रेस के टिकटों पर निशान लगा रहे थे। अपने मालिक के द्वारा खरोंच खाया हुआ मिचेनट उलझन बना हुआ था। नाना—लेबार्डेट के हाथ का सहारा लेकर साधारण रूप में आगे बढ़ गई। मैदान खाली करने के लिये घंटी बराबर बज रही थी।

"आह ! मेरे दोस्तो", अपनी बग्घी पर पुनः पहुंचते हुए नाना चिल्लाई : "उनका वह एन्क्लोजर सब बकवास है।"

उसके पास के सब लोगों ने उसके लौटने पर तालियाँ बजायीं : "शाबास ! नाना ! नाना हमें फिर मिल गई।" वे कितने मूर्ख थे। क्या वे सोचते थे कि वह उन्हें चकमा दे गई ? वह ठीक समय पर लौट आयी। सावधान ! अब दौड़ प्रारम्भ होने को है। शैम्पेन भुला दी गयी। प्रत्येक ने पीना छोड़ दिया। किन्तु नाना अपनी बग्घी पर गागा को विजोय व नन्हे लुई के साथ देखकर अत्यधिक विस्मित हुई जिन्हें वह अपने घुटनों पर बिठाले थी। गागा यहां केवल लॉ फेलो के निकट आने को आयी थी किन्तु वह बहाना यह कर रही थी कि वह, विलम्ब से, बच्चे को चूमना चाहती थी। वह बच्चों से बड़ी प्रसन्न होती है।

"आह ! ठीक है, और लिली ?" नाना ने प्रश्न किया। "उस बूढ़े की गाड़ी में क्या वही है; है न ? मुझसे अभी किसी ने कुछ कहा था कि··· वह तो बड़ा प्रशंसनीय है।"

गागा ने वेदना सहित आकृति को परिवर्तित कर लिया।

"माई डियर ! उसने मुझे बीमार कर दिया है", उसने व्यथा सहित कहा। "कल मैं सारे दिन चिल्लाती रही और बिस्तर पर पड़ी रही तथा आज प्रातः भी। मैं तो डर रही थी कि इस समय आ ही न पाऊंगी। हाँ, तुम मेरे विचारों को तो जानती ही हो। जैसा उसने किया है वैसा मैं कदापि नहीं चाहती थी। मैंने उसे कान्वेन्ट में पढ़ाया था और कहीं अच्छी जगह शादी करना चाहती थी। उसने सदा ही अच्छी सलाह प्राप्त की और निरन्तर उसकी ठीक देखभाल की गई। किन्तु, ठीक है, वह अपना मार्ग आप निर्धारित करेगी। ओह ! हमने वह दृश्य देखा—कितने अश्रु, असह्य शब्द, उस समय तक जब तक मैंने उसके चेहरे पर तमाचे नहीं लगाये ! वह कितनी ढीली-ढाली दिख रही थी और परिवर्तन चाहती थी। तब जब उसने अपने मस्तिष्क में वह सब रख लिया तो बोली : "जैसा भी हो तुम मुझे रोकने वाली कोई नहीं हो।"

तब मैंने कहा : "तू एक धूर्त है और हमारा असम्मान कर रही है। यहाँ

से निकल जा । तब वह चली गई किन्तु जितना सम्भव था हमने उसकी उचित व्यवस्था की । जो हो, उसके साथ ही मेरी अन्तिम आशा चली गई । आह ! लेकिन मैं कैसी-कैसी ऊँची बातें सोच रही थी ?"

झगड़े की आवाज से वे दोनों उठ खड़ी हुईं । वह जार्ज था जो ऊट-पटाँग अफवाहों का, जो एक समूह से दूसरे समूह में फैल रही थीं, खण्डन कर रहा था और वैन्डेव्रेस का पक्ष ले रहा था ।

"यह कितना गलत है कि वह अपने घोड़ों पर विश्वास नहीं करता है", नौजवान कह रहा था । "कल ही क्लब में उसने एक हजार लुई तक लुसिगनन का समर्थन किया था ।"

"हाँ, मैं वहाँ था", फिलिप ने जोड़ दिया । "उसने नाना को एक लुई के लिये भी बढ़ावा नहीं दिया । यदि नाना अब दस पर एक के भाव में है तो वह उसके कारण कदापि नहीं । व्यक्तियों की ऐसी गणना को प्रोत्साहन देना मूर्खता है और इस प्रकार करने से उसका सम्बन्ध ही क्या ?"

लेबार्डेट ने शान्तिपूर्वक सुना और अपने कन्धे हिलाते हुए कहा :

"जो वे चाहते हैं उन्हें कहने दो । उन्हें कुछ बात तो कहनी ही है । काउन्ट ने अभी पाँच सौ लुई लुसिगनन पर और लगाये हैं और यदि उसने नाना पर एक सौ लगा भी दिये तो केवल इसलिये कि एक मालिक को अपने घोड़े पर कुछ विश्वास तो करना ही चाहिये ।"

"उस शैतान से हमारा क्या सम्बन्ध ?" लॉ फेलो ने अपना हाथ हिलाते हुए चीख कर कहा : "स्पिरिट जीतेगा । फ्रांस कहीं नहीं है । शाबास इंग्लैण्ड ।"

धीरे-धीरे भीड़ में एक तूफान फैल गया । तभी तुरन्त बजती हुई नई घंटी ने घोड़ों के आरम्भ-स्थल पर आने की सूचना दी । तब नाना और भली प्रकार देखने के विचार से, अपनी लैण्डौ की एक गद्दी पर खड़ी हो गई । और फारगेट-मी-नाट तथा गुलाब के फूलों को कुचलती रही । चारों ओर एक दृष्टि फेंक कर उसके सामने क्षितिज पर दृष्टि केन्द्रित कर ली । इस अन्तिम क्षण में जबकि उत्तेजना बुखार की सी गर्मी पर थी—उसने सर्वप्रथम

दौड़ के मैदान को देखा जो अपने पूरे घेरे में बन्द था और जहाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर पुलिस वाले खड़े थे। उसके समक्ष धूल-भरी घास का ढेर और अधिक हरा-भरा दिख रहा था जो एक हरे कालीन के रूप में प्रतीत होता गया। तब, जब उसने अपनी दृष्टि नीची की और अपने अधिक समीप देखा तो वह देख पायी कि भीड़ के लोग पंजों पर खड़े होकर झाँक रहे हैं। जलपान के खेमे हवा में थर्रा रहे थे।

तभी सब लोगों में प्रसन्नता की रेखा खिच गई। सूर्य जो पिछले पन्द्रह मिनट से विलीन हो गया था अचानक चमक आया और धूप फैल गई, जिससे चतुर्दिक समस्त वातावरण चमक उठा। स्त्रियों के टोप ऐसे लग रहे थे जैसे भीड़ के ऊपर छाये हुए सोने के टुकड़े। सभी ने सूर्य को देखकर प्रसन्नता प्रकट की; हँसी के फव्वारों ने उसको नमस्कार किया।

तत्काल ही, पुलिस का एक अधिकारी प्रकट हुआ जो अब उस निर्जन मैदान में बीचोंबीच चल रहा था। बाँयीं ओर, ऊँचाई पर एक व्यक्ति हाथ में लाल झंडा लेकर खड़ा हुआ दिखाई दिया।

"बेरन डि. मारियकस वह प्रारम्भ करने वाला है", नाना के एक प्रश्न पर लेघार्डेट ने उत्तर दिया।

उन स्त्रियों के चतुर्दिक भीड़ में शोर निरन्तर उठता रहा और भाँति-भाँति के सम्बोधन प्रकट होते रहे। फिलिप, जार्ज, बार्डनोव, लॉ फेलो कोई भी शान्त न रह सके।

"धक्का मत दो!" "मुझे भी देखने दो!"—"आह! जज अपने बाक्स में प्रवेश कर रहा है।"—"क्या, तुमने कहा था कि वह मोशियो डि. सावनी है?"—"मैं कहता हूँ कि उसकी ऐसी दृष्टि है कि वह अति निकट की प्रतिद्वन्द्विता पर भी, उस स्थान से देखकर निर्णय दे सकता है।"—"चुप रहिये, वे झंडा हिला रहे हैं।"—"वे यहाँ आ गये, देखो!"—"पहला कासीनस है।"

आरम्भ होने के स्थान से ऊँचे पर लाल व पीले रंग के झंडे हवा में हिल रहे थे। घोड़े एक-एक करके सामने आये जिन्हें अस्तबल के लड़के

थामे हुए थे और जाकी अपनी-अपनी जीनों पर थे। उनके हाथ लटक रहे थे और सूर्य के तीव्र प्रकाश में वे छोटे चिन्ह से दीख रहे थे। कासीनस के बाद हूसार्ड और बोनन दिखाई दिये। तब एक फुसफुसाहट ने स्पिरिट का अभिवादन किया। वह एक लम्बा व सुन्दर नौजवान था जिसके गहरे रंग—पीले व काले—ब्रिटानिया की उदासी झलका रहे थे। वेलेरियो द्वितीय का महान् स्वागत हुआ। वह आकर्षक छोटा जानवर था, जिसका रंग पीला-हरा था और किनारे गुलाबी रङ्ग के थे। वैन्डेव्रेस के दो घोड़े देर से अपना प्रदर्शन कर रहे थे। अन्त में नीले-सफेद रङ्ग प्रकट हुए जिनके बाद फ्रैंगीपैन था। किन्तु लुसिगनन, बड़े गहरे रङ्ग का व हृष्ट-पुष्ट, नाना के प्रकट होने पर, भुला दिया गया। इसके पूर्व किसी ने उसको उस प्रकार नहीं देखा था। उस अखरोट के रङ्ग की घोड़ी के सुनहले चमकदार बाल एक सुन्दर केश वाली लड़की के से दिख रहे थे। सूर्य के प्रकाश में वह एक नये लुई सिक्के की भाँति चमक रही थी—उसकी भरी हुई छाती, उसका सुन्दर सिर, गर्दन और कन्धे तथा उसकी लम्बी, कमजोर व कोमल पीठ थी।

"क्यों, उसके बालों का रङ्ग तो ऐसा है जैसा मेरा!" नाना ने अत्यधिक प्रसन्न होकर कहा: "उसको देखकर तो मुझे भी गर्व होता है।"

वे सब लैंडो पर चढ़ गये। बार्डनोव ने तो नन्हे लुई पर, जिसे उसकी माँ ने भुला दिया था, पैर ही रख दिया। उसने उसे उठा लिया और पितृवत बड़बड़ करते हुए उसने उसे कन्धों से पकड़ लिया और बोला:

"बेचारा छोटा मुन्ना! इसको भी देखना चाहिये। एक मिनट रुको, तब मैं तुम्हारी माँ को दिखाऊँगा। वहाँ! वहाँ! उधर घोड़े को देखो··· गी···गी।"

चूंकि बिजोय अपने पंजे फड़फड़ा रहा था अतः लेबार्डेट ने उसे भी उठा लिया। नाना अपने ही नाम के जानवर को देखकर अत्यधिक खिल रही थी और अन्य स्त्रियों पर दृष्टिपात कर उसने देखा वे उग्रता से ईर्षा प्रकट कर रही थीं।

लॉ फेलो असह्य झंझट उत्पन्न कर रहा था। फ्रैंगीपेन से वह पूर्णतः

प्रभावित था। "मुझे एक प्रेरणा प्राप्त हो रही है", वह चिल्लाया : "फ्रेंगीपेन को तनिक देखो तो। देखो, उसमें कैसी तीव्रता है! मैं फ्रेंगीपेन को आठ—एक पर ले सकता हूँ। कौन दाँव लगाता है?"

"खामोश रहो", लेबार्डेट ने कहा : "धीरे-धीरे तुम सब अफसोस करोगे।"

"फ्रेंगीपेन निकम्मा है", फिलिप ने घोषित किया : "वह अभी से पसीने में तर हो रहा है। देखो! वे सब धीमे हो रहे हैं।"

घोड़े दाहिने घूम गये थे और उन्होंने अपनी प्रारम्भिक धीमी चाल ले ली थी और बड़े स्टैंड के सामने भीड़ बना कर बढ़ रहे थे। तभी उत्तेजित आलोचनायें प्रकट हुईं। सभी बोल पड़े :

"लुसिगनन अच्छी हालत में है किन्तु उसकी पीठ बहुत लम्बी है।"

"तुम जानते हो, वेलेरियो द्वितीय पर एक फार्दिग भी नहीं। वह घबड़ा रहा है। वह अपना सिर बहुत ऊँचा उठा रहा है—यह खराब चिह्न है।"—"हलो! वह वर्न है जो स्पिरिट को दौड़ा रहा है।"—"मैं कहता हूँ उसके पुट्ठे ही नहीं हैं। एक अच्छे पुट्ठे के अभिप्राय हैं—सब कुछ।" "नहीं, स्पिरिट निश्चय बहुत शान्त है।" "सुनो! मैंने ग्रैंड पाल डेस. प्रोड्यूट्स के पश्चात् अब नाना को देखा है। वह अपने कोट को सुखा रही थी जैसे मर गई हो और जैसे फट पड़ने की भाँति साँस ले रही थी। बीस खुई को भी वह नम्बर पर नहीं रक्खी गई।"...."बहुत हो चुका! बहुत! फ्रेंगीपैन के साथ वह कितना बड़ा बवाल है। अब बहुत देर हो गई। वे प्रारम्भ करने वाले हैं।"

लाँ फेलो, चिल्लाते हुए एक बुकी की खोज में, कूदता-फाँदता भागा। दूसरे उससे तर्क कर रहे थे। सभी गर्दनें ऊपर उठी हुई थीं। किन्तु पहला स्टार्ट बहुत अच्छा नहीं था। प्रारम्भ करने वाला जो बहुत दूर है, पतली काली लकड़ी सा प्रतीत होता है। अभी अपना लाल झंडा नीचा नहीं किया है। थोड़ी सी कूद काद के पश्चात सब घोड़े दौड़-स्थल पर आ गये थे। तब वहाँ दो और

भूँठे स्टार्ट हुए । अन्त में जब उसने घोड़ों को, साथ में व ठीक-ठीक पाया तब ऐसी चतुराई से उसने सब को दौड़ा दिया कि सब ओर से सराहना प्रकट होती रही ।

"सुन्दर स्टार्ट !" ··· "नहीं, यह अवसर की बात है !" ··· "चिन्ता मत करो, अब वे सब दूर हैं ।"

प्रत्येक हृदय में जो चिन्ता भरी हुई थी उसमें यहाँ की चिल्लाहट शांत हो गई । अब, दाँव लगना बन्द हो गये थे और खेल दौड़ के भारी मैदान पर हो रहा था । अन्त में पूर्ण शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो गया जैसे सब की श्वाँस चलना बन्द हो गई हो । श्वेत और काँपते हुए चेहरे ऊपर उठे हुए थे। प्रारम्भ में कासीनस तथा हेसार्ड ने सब को पीछे छोड़कर दौड़ लगाई । वेलेरियो द्वित्तीय ठीक पीछे दौड़ रहा था । शेष ऊटपटाँग गति से इकट्ठे दौड़ रहे थे । जब वे स्टैंड के निकट से धरती हिलाते हुए निकले और उनकी दौड़ की तीव्रता से जो वायु का झोंका उभरा तो समूह पूरे चालीस की गति पर था । फ्रैंगीपेन अन्तिम था । नाना, लुसिगनन व स्पिपिट के थोड़ा पीछे थी ।

"वह शैतान !" लेबार्डेट बुदबुदाया : "वह 'इंगलिश' उन सब के बीच अच्छी जगह बना रहा है ।"

लैंडो पर प्रत्येक कुछ न कुछ कह रहा था—कोई केवल सम्बोधन प्रकट करता था । सभी अँगूठों के बल खड़े थे और जाकियों की पोशाक के रङ्गों को देख रहे थे जो धूप में चमक रहे थे । ज्योंही उन्होंने घुमाव पार किया वेलेरियो द्वित्तीय ने नेतृत्व लिया । कासीनस व हेसार्ड ने मैदान छोड़ा । जबकि लुसि-गनन व स्पिरिट गर्दन से गर्दन मिलाकर बहुत निकट से नाना द्वारा पीछा किये जा रहे थे ।

"सर्वनाश ! 'इंगलिश' घोड़े ने विजय प्राप्त कर ली यह सर्वथा स्पष्ट है", बार्डनोव बोला : "लुसिगनन थक रहा है और वेलेरियो द्वित्तीय टिक नहीं सकता ।"

"ठीक है, यदि 'इंगलिश' घोड़ा जीतता है तो यह बहुत ही अपमान-जनक है !" फिलिप ने देश-प्रेम की झोंक में दुःखी होकर प्रकट किया ।

व्यथा के प्रवाह ने उस भीड़ के लोगों को अशान्त कर दिया। दूसरी हार···और तब एक विशेष प्रकार की कामना—एक प्रकार से प्रार्थना ही—लुसिगनन की विजय के लिये प्रत्येक के अन्तरङ्ग में व्याप्त हो गई। तभी सब, स्पिरिट एवं उसके शत्रु समान प्रतीत होने वाले जाकी को बुरा-भला कहने लगे। अब भीड़, घास पर फैल गई और पूर्ण शक्ति से दौड़ते हुए समूहों में विभाजित हो गई। घुड़सवार तीव्रता से मैदान पर दौड़ पड़े। और नाना ने, धीरे से घूमकर अपने पैरों के नीचे मनुष्यों व जानवरों की भीड़ को देखा जैसे चारों ओर सिरों का समुद्र उमड़ रहा हो।

तब, चक्कर की सीमा में बहुत दूर उसने किनारे की ओर घोड़ों को बहुत छोटा-छोटा देखा जो बोयम की हरियाली के पीछे छिपते हुए प्रतीत हो रहे थे। तभी वे अचानक पेड़ों के झुरमुट में छिप गये।

"निराश मत हो ओ !" जार्ज चिलाया, जो अब भी समस्त आशाओं से परिपूर्ण था : "अभी समाप्त नहीं हुआ है। इंगलिश' घोड़ा पकड़ गया है।"

किन्तु लॉ फेलो, राष्ट्रीय विचारों की उग्रता पर विजय प्राप्त कर स्पिरिट की प्रशंसा में पागल हो रहा था। शाबास ! तुमने ठीक किया ! फ्रांस को सबक मिलना ही चाहिये। स्पिरिट प्रथम और फ्रंगीपैन द्वितीय ! वह अपने पितृ-स्थान के मान को बढ़ावेंगे। लेबार्डट ने, जिसको उसने पूर्णतः क्रोधित कर दिया था, उसको गाड़ी से नीचे फेंक देने की धमकी दी।

"ठीक है, देखो कितना समय वे लेते हैं", शान्तिपूर्वक बार्डनोव ने व्यक्त किया—जो नन्हे लुई को कन्धों पर लिये हुए घड़ी देख रहा था।

एक-एक करके घोड़े वृक्षों के बीच से निकल आये। तब भीड़ ने आश्चर्य का तीव्र प्रतिघोष किया। वेलेरियो द्वित्तीय अब भी सबसे आगे था किन्तु स्पिरिट उसको दाबे आ रहा था और लुसिगनन ने, जो उसके बाद था, रास्ता दे दिया था और उसके स्थान पर दूसरा घोड़ा आ गया था। दर्शक, पहले कुछ भी न समझ सके—उनके रंग मिल गये थे। तभी सब ओर से शोर उठने लगा।

. "किन्तु वह नाना है।" ··· "नाना ? बकवास ! मैं कहता हूँ लुसिगनन अब भी अपना स्थान लिये हुए है।"···"हाँ, यह ठीक है किन्तु वह नाना है। उसके सुनहले बालों से वह सरलता से पहचानी जा सकती है।" ··· "वह ! देखो, उसे अब देखो ! वह अग्नि की भाँति तीव्रता में है।" ··· "शाबाश ! नाना ! वह तुम्हारे लिये एक कलात्मक ढीठ व जवान लड़की है।" ... "वाह ! वह कुछ नहीं है। वह केवल लुसिगनन के लिये दौड़ने का रास्ता दे रही है।"

कुछ सेकंड तक वहाँ सभी की यही धारणा बनी रही। किन्तु वह अपने अथक प्रयास से निरन्तर स्थान ले रही थी। पीछे के घोड़ों में से कोई भी किसी में आकर्षण नहीं पैदा कर रहे थे। अन्तिम प्रतिद्वन्द्विता स्पिरिट, नाना, लुसिगनन तथा वेलेरियो द्वितीय में प्रारम्भ हो गई। प्रत्येक के ओठों पर उन्हीं के नाम थे। उनकी विजय अथवा पराजय स्फुट वाक्यों में प्रत्येक व्यक्त कर रहा था और नाना जो कोचवान की सीट पर चढ़ गई थी जैसे किसी अदृश्य शक्ति के द्वारा ऊँचे उठा दी गई हो, पीली पड़ रही थी व काँप रही थी और इतनी अधिक प्रभावित थी कि एक शब्द भी न बोल पा रही थी। लेबार्डेट, ठीक उसके पीछे, एक बार फिर मुस्करा रहा था।

"हाँ, वह अंगरेजी घोड़ा अब परेशानी में है", फिलिप ने प्रसन्न होकर कहा। "अब वह ठीक नहीं जा रहा है।"

"जो हो, लुसिगनन तो समाप्त कर दिया गया", लाँ फेन्वो चीखा। "वेलेरियो द्वितीय आगे जा रहा है। देखो वहाँ वे हैं। वे चारों एक साथ बिल्कुल बराबर से दौड़ रहे हैं।"

यही शब्द प्रत्येक गले से बाहर निकल रहे थे। "वे किस रफ्तार से दौड़ रहे हैं। ओह ! बड़ी भयानक रफ्तार होगी।"

नाना ने अपने आस पास उस भीड़ को देखा जो बिजली की चमक की भाँति उस ओर बढ़ती चली आ रही थी। भीड़ इस तरह चीख रही थी जैसे सागर किनारे तोड़ कर तीव्र घोष कर रहा हो।

वह उस उग्र उत्तेजना का अन्तिम प्रदर्शन था जो महान् साहस से प्रकट

हुआ था और जो हजारों दर्शकों के निश्चित मत थे जो भाग्य के पीछे एक ही प्रकार की प्रदीप्ति का अनुभव कर रहे थे और जिनकी आँखें इन जानवरों के पैरों पर टिकी हुई थीं जो उनके लिये लाखों लाते थे।

"ये आये ! ··· ये आये ! ··· यहाँ ये आये !"

किन्तु नाना निरन्तर स्थान प्राप्त कर रही थी। अब वेलेरियो द्वितीय दूर था और उसे दो या तीन घोड़ों से स्पिरिट पीछे किये हुए था। तूफान की सी तीव्रता का शोर उभरता रहा। जैसे ही वे सामने आये बढ़ावा देने का जैसे चक्करदार-तूफान लैण्डों पर से उभरता रहा।

'गी···गी···लुसिगनन ! तुम डरपोक···दुःखी जानवर !" ··· "उस अंगरेजी घोड़े की ओर देखो। क्या वह भव्य नहीं है ? भगाओ, बूढ़े उसे भगाओ !" ··· "और वह वेलेरियो, वह अत्यधिक निराशापूर्ण है।" ··· "आह ! वह जानवर की लाश ! मेरे दस लुई अब कहीं के न रहे !" ··· "वहाँ केवल नाना है। शाबास ! नाना शाबास ! नन्हीं नाना !"

और नाना—उस कोचवान की सीट पर अपने कूल्हे और जाँघें मटका रही थी—बिना यह अनुभव किये कि वह वैसा कर रही है जैसे वह स्वयं ही दौड़ लगा रही है। वह निरन्तर अपने शरीर को थिरकाती रही इस ध्यान में कि उससे उस घोड़ी को सहायता प्राप्त होगी। और प्रत्येक बार जब वह वैसा करती तभी थकान से साँस भरती और बहुत धीमे से, कष्टमय स्वर में कहती :

"भागो···तुम भागो···तुम भागो।"

तब एक महान् दृश्य उपस्थित हुआ। प्रइस लगाम में सीधा होगया; उसका चाबुक ऊपर उठ गया और उसने नाना को जैसे लोहे के हाथों से बढ़ा दिया। वह पुराना, सूखा हुआ बच्चा, वह लम्बा, जो सदैव कठोर व मृत्यु सदृश्य दिखता था—अग्नि की तीव्र भागती चिनगारी सा प्रतीत हुआ और तीव्र गति से तथा विजय की कामना से उसने अपनी कुछ विशेष शक्ति उस घोड़ी में भर दी। उसने उसे ऊपर उठाया। वह उसे साथ ले गया। वह झाग से ढक रहा था और उसकी आँखें लाल हो रही थीं। घोड़ों का वह समूह

बिजली की कौंध सा निकल गया—हवा को उड़ाता और उन सब की स्वांस-गति साथ ले जाता जो उन्हें देख रहे थे। जज (निर्णायक) शांतिपूर्वक देखता हुआ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। तब वहाँ महान् हर्ष प्रकट हो गया। अपने अन्तिम प्रयत्न के द्वारा प्राइस ने नाना को पोस्ट तक पहुंचा दिया और स्पिरिट को एक हाथ पीछे पछाड़ दिया।

अब चिल्लाहट का वह शोर उभरती लहरों का उद्घोष सा लग रहा था। "नाना ! नाना ! नाना !" चिल्लाहट तूफान की तीव्रता की भाँति सर्वत्र घूम गई और धीरे-धीरे हवा में भरती गई जो बोयस के बीच से माउन्ट वेलेरीन तक लांगचैम्प की झाड़ियों से बालोन के मैदान तक समा गई। नाना की लैंडो के चतुर्दिक उत्साह का पागलपन घिर आया। "नाना अमर रहे, फ्रांस चिरंजीवी हो ! इङ्गलैंड का पतन हो।"

स्त्रियों ने अपने टोप हिलाये। मैदान की दूसरी ओर एनक्लोजरों में लोगों ने उनके प्रत्युत्तर दिये। वह उत्तेजना, वह उत्साह शाही खेमे में भी उभरा—जहाँ महारानी ने हर्षोद्गार प्रकट किये : "नाना ! नाना ! नाना !" वह प्रथम सूर्य की चमक के नीचे, भीड़ के पागलपन पर, स्वर्ण वर्षा सी कर रही थी।

तब नाना, लैंडो की बाक्स-सीट पर खड़े होकर अपनी पूरी लम्बाई तक उभर आई और सोचने लगी जैसे वह सराहना उसी के प्रति व्यक्त की जा रही है। कुछ देर तक, अपनी विजय के विस्मय में वह निश्चल सी खड़ी रही और उस मैदान को देखती रही जो भीड़ से भर गया था ; जैसे काले टोपों का सागर हो—ऐसा भिचा हुआ जिसके कारण हरी घास भी नहीं दीख रही थी। जब मैदान को जाने वाले तंग रास्ते को छोड़कर भीड़ एकत्रित हो गई और प्राइस के साथ आती हुई नाना को देखकर प्रसन्नता में चिल्लाने लगी, जो देखने में चूर-चूर हो रही थी जैसे निर्जीव और खाली खाली, तो उस नौजवान स्त्री ने भयंकरता से उसके पुट्ठों को थपथपा दिया।

"आह ! सब भाड़ में जाँय ! वह मैं हूँ। आह ! कैसा सौभाग्य है ?"

और यह बिना जाने कि कैसी प्रसन्नता उसके मन में बैठती जा रही है। नाना ने नन्हे लुई को उठा लिया और चूम लिया जिसको उसने अभी-अभी बार्डनोव के कन्धों पर देखा था।

"तीन मिनट चौदह सेकेंड", अपनी घड़ी को जेब में रखते हुए बार्डनोव बोला।

नाना ने पुनः अपने नाम को सुना जो चारों ओर से प्रतिध्वनित हो रहा था। वे उसके आदमी थे जो उसकी सराहना कर रहे थे जबकि सूर्य की सीधी रेखा में वह उन पर साम्राज्य कर रही थी। उसके बाल सितारे की भाँति चमक रहे थे और उसकी नीली तथा सफेद पोशाक आसमान का रंग प्रकाशित कर रही थी। लेबार्डेट ने जाने के पूर्व उसे बताया कि वह दो हजार लुई जीती है और यह कि उसने अपने पचास लुई नाना पर; चालीस-एक के भाव में लगाये थे। किन्तु धन की अपेक्षा वह उस अप्रत्याशित विजय से अधिक प्रभावित थी जिसकी भव्यता ने उसे समस्त पेरिस की सम्राज्ञी बना दिया था। अन्य सभी स्त्रियाँ, न जाने कहाँ चली गईं। रोषावेश में रोज़ मिगनन ने अपना टोप तोड़ डाला और कैरोलीन हेकेट, क्लारिस, साइमन और यहाँ तक कि लूसी स्टेवर्ट—उस लड़के की उपस्थिति में भी उस बड़ी लड़की के सौभाग्य पर टीका-टिप्पणी करती रहीं।

लैंडो के चारों ओर पुरुषों की भीड़ बढ़ती गई। समूह चीत्कार कर उठा था। जार्ज, एक प्रकार से भिंच कर टूटती आवाज में अपने आप चिल्लाता रहा। चूँकि शैम्पेन कम पड़ गई थी, अतः फिलिप अपने साथ दो नौकरों को लेकर जलपान के खेमे की ओर लपका। 'नाना' का घेरा बढ़ता ही गया। उसकी विजय ने काहिलों को एक पाठ पढ़ाया था। सम्राज्ञी वीनस अपने विक्षिप्त प्रजा-जनों पर राज्य कर रही थीं। उनके पीछे—बार्डनोव पिता की-सी कोमल भावनाओं में बड़बड़ा रहा था। जब शैम्पेन आई तो नाना ने अपनी गर्दन, शराब का गिलास भर कर, ऊपर उठाई। उस समय हर्षध्वनि इतनी तीव्र थी और "नाना! नाना! नाना!" के स्वर इतने उच्च होकर उभर रहे थे कि वे कान फोड़ने वाले थे। विस्मयातुर भीड़

घूम-घूम कर उस घोड़ी को देखने के लिये उतावली हो रही थी और कोई यह नहीं जान पा रहा था कि वह कोई जानवर है या स्त्री जो पुरुषों के हृदय में भरी हुई है।

रोज़ की डरावनी आँखों को देखते हुए भी मिगनन शीघ्रता में नाना की ओर बढ़ आया। भीड़ से घिरी हुई लड़की ने उसे अपने निकट बैठाल लिया। वह उसे अवश्य आलिंगन करेगा। तब जब उसने नाना के दोनों गालों को चूम लिया तो उसने अत्यधिक ममत्व में कहा :

"मुझे जो उलझन हो रही है वह यह कि अब रोज़ निश्चित ही पत्र भेज देगी। वह इतने रोष में है।"

"तब बहुत अच्छा है ! यही मैं चाहती हूँ।" अपने को भुलाते हुए नाना ने कहा। किन्तु अपने शब्दों से विस्मित होते देखकर उसने शीघ्रता से जोड़ दिया : "नहीं···नहीं, मैं क्या कह रही हूँ ? सच, मुझे पता नहीं, मैं क्या कह रही हूँ ? मै नशे में हूँ।"

और निश्चित ही वह प्रसन्नता के नशे में थी। तब अपनी दूर-बीन को ऊपर उठाकर—उस धूप की चकाचौंध में, उसने अपने आप की सराहना की।

घुड़दौड़ समाप्त हो रही थी। वे अब वाबलैंक प्राइज के लिये दौड़ रहे थे। गाड़ियाँ धीरे-धीरे लौट रही थीं। झगड़ों में वेन्डेव्रेस का नाम निरन्तर लिया जा रहा था। अब वह स्पष्ट था। पिछले दो वर्ष से वह इस शैतानी की तैयारी कर रहा था और सदैव ग्रेशम को यह निर्देश देता था कि वह 'नाना' को गिरावे। लुसिगनन को उसने केवल इसलिये प्रस्तुत किया था कि वह उस घोड़ी की दौड़ को प्रोत्साहित करे। हारने वाले बिगड़ रहे थे और जीतने वाले अपने कन्धे हिला रहे थे। इसके आगे क्या था ? वह सब ठीक था। किसी भी अस्तबल का मालिक, अपनी व्यवस्थानुसार कार्य कर सकता है। इससे भी विचित्र बातें होती रहती हैं। अधिकांश लोग कह रहे थे कि वैन्डेव्रेस बड़ा चतुर है। अपने मित्रों से, जितना सम्भव हो सकता था, उसने 'नाना' के नाम पर पैसा खींचा। यही बात उसके भाव की अचानक

बढ़ती का प्रमाण है। उन्होंने दो हजार लुई की बातें तीस-एक के हिसाब से कीं जिसका मतलब था बारह लाख फ्रैंक की जीत। यह इतनी लम्बी धन-राशि थी जो बड़ा सम्मान प्राप्त कर सकती थी और हर बात को क्षमा प्रदान कर सकती थी।

किन्तु दूसरी अफवाहें—जो अधिक गम्भीर थीं व जिनकी चर्चा थी, एन्क्लोजर से बाहर आईं। जो पुरुष वहाँ से लौटे उन्होंने विस्तृत विवरण दिया। आवाजें तीव्र हो जाती थीं जब वह उस भयंकर जालसाजी को प्रकट करती थी—वह बेचारा गरीब वैंन्डेव्रेस मिटा दिया गया था। उसने अपना वह महत्वपूर्ण कार्य अपनी मूर्खता से नष्ट कर दिया। यह एक उद्दण्डतापूर्ण डकैती थी कि बुकी मेरेचील से वह संदेहात्मक कार्य ले, जिसके रंग-ढंग बड़े विचित्र थे। उसके नाम में लुसिगनन के विरुद्ध दो हजार फ्रैंक लगाना, जिससे वह अपने एक हजार फ्रैंक और कुछ लुई प्राप्त करले जो उसने प्रकट रूप में घोड़े पर लगाये थे, व्यर्थ था। वही पहिले से ही बिगड़ते हुए भाग्य के लिये और भी नाश का कारण बन गया।

बुकी ने आगाह किया कि उसका इच्छित घोड़ा नहीं जीतेगा। उस घोड़े ने साठ हजार फ्रैंक बनाये थे। केवल लेबार्डेट निश्चित व विस्तृत निर्देश न पाने पर गया और उसके साथ नाना पर दो सौ लुई लगा आया जिन्हें वह अनजाने में कि क्या होने जा रहा है चालीस-एक के भाव पर लगा गया था। उस घोड़ी के द्वारा एक लाख के सौदे के अनन्तर जो उसे स्पष्ट चालीस हजार का नुकसान था मेरेचील ने अनुभव किया कि उसका सब कुछ जा रहा है। तब रेस के बाद काउन्ट तथा लेबार्डेट को तोल के स्थान के निकट वार्तालाप करते देख कर वह सब कुछ समझ गया था और पुराने कोचवान की उग्रता तथा उस व्यक्ति के रूखेपन को लेकर जो बुरी तरह लुट गया हो, उसने सबके सामने भयंकर उत्पात मचाना प्रारम्भ किया और उस कथा को अधिक भद्दे ढंग से व्यक्त करना प्रारम्भ किया और अपने चारों ओर भीड़ इकट्ठी करली। यह भी जोड़ा गया कि स्टेवार्ड उस मामले की छानबीन करेंगे।

नाना को जार्ज व फिलिप चुपचाप सब कुछ बता रहे थे; वह

निरन्तर हँसने व पीने में लीन थी। यह बहुत सम्भव था कि उसने कुछ बातों पर विचार किया हो, और यह कि मेरेचील बड़ा भद्दा आदमी है। किन्तु उसे अभी भी संदेह हो रहा था तभी लेबार्डेट प्रकट हुआ जो पीला पड़ रहा था।

"क्या है ?" नाना ने धीमी आवाज में प्रश्न किया।

"उसका सब कुछ नष्ट हो गया !" उसने साधारण उत्तर दे दिया। उसने अपने कन्धे हिला लिये और बच्चों जैसी भंगिमा व्यक्त की, 'वह वैन्डे॰ व्रेस !' नाना ने ऊबने का सा अनुभव किया।

उस रात्रि, मेबाइल में नाना को साहसपूर्ण सफलता प्राप्त हुई। लगभग दस बजे जब वह वहाँ पहुँची तो वहाँ की चीख पुकार तीव्र थी। मूर्खता व्यक्त करने की वह रात्रि, राजधानी के उन समस्त नवयुवकों के चारों ओर घिर आयी थी और उन सब कुलीन लोगों के बीच जो घोड़ों के खेलों में भाग लेते थे और जो एक प्रकार से सईसों में प्रचलित गन्दगियों से परिपूर्ण थे। उन चमकदार बिजली की रोशन झालरों के नीचे विभिन्न प्रकार की पोशाकें, कीमती सूट व अपने नग्न कन्धों में स्त्रियाँ इधर-उधर घूम रही थीं और चीत्कार कर रही थीं। वे घनघोर रूप से शराब पीने में लीन थीं। तीस कदम पर बजता हुआ पीतल का आरकेस्ट्रा ठीक से सुनाई नहीं दे रहा था। कोई भी नृत्य नहीं कर रहा था। भद्दे व्यंग्य सब तरफ प्रकट हो रहे थे। क्लोक-रूम में बन्द सात लड़कियाँ बाहर निकलने को चीख रही थीं। एक गुलदस्ता उठाया गया और दो लुई में नीलाम कर दिया गया। तभी नाना प्रकट हुई जो अभी भी उसी पोशाक में थी जिसको उसने रेस में पहना था। वह गुलदस्ता चीख-पुकार के तूफान में उसे समर्पित किया गया। उसके कूदफाँद करने पर भी उन सबने उसे पकड़ लिया और तीन पुरुषों ने सफलता पाते हुए उसे बाग की ओर घसीट लिया जहाँ बगीचे नष्ट हो गये थे और फूलों के बिस्तर व झाड़ियाँ भी बिगड़ गई थीं। आरकेस्ट्रा बज रहा था। उन लोगों ने ऊधम मचाना प्रारम्भ किया और कुर्सियाँ व मेजें तोड़ने लगे जैसे पुलिस नकली दंगे का रिहर्सल कर रही हो।

मंगलवार तक नाना अपनी जीत के नशे से छुटकारा न पा सकी।

वह मैडम लेराट से प्रातःकाल ही वार्तालाप कर रही थी जो उसे यह सूचना देने आयी थी कि नन्हा लुई उसके उस दिन बाहर जाने के बाद से ही बीमार है। समस्त पेरिस में उस घुड़दौड़ की चर्चा के विषय को लेकर, वह अत्यधिक आकर्षित थी। वैन्डेव्रेस को प्रत्येक रेस-कोर्स से निर्देश मिले थे और उसका नाम सर्किल इम्पीरियलों की सूची से काट दिया गया था। अगले दिन उसने अपने अस्तबल में आग लगा दी और स्वयं भी जल मरा।

"उसने कहा था कि वह ऐसा ही करेगा", नवयुवती कहती गई : "आह ! वह जैसे निरन्तर पागल हो रहा था। विगत रात्रि जब मैंने सुना तो मैं बहुत डरी। उसको अपने घोड़े के सम्बन्ध में मुझे नहीं बताना चाहिये था ? मुझे अपना सौभाग्य अपने आप बनाना चाहिये था। वह लेबार्डेट से कह रहा था कि यदि उसे वह गुप्त भेद बता दिया जायगा तो वह (नाना) तुरन्त अपने नाई व अन्य लोगों से बता देगी ! वह बड़ा विनम्र था। आह, किन्तु नहीं, मैं उसके लिये अधिक क्षोभ नहीं कर सकती।"

सब मामला समाप्त हुआ जानकर वह एक प्रकार से उग्र हो गई थी। तभी लेबार्डेट ने कमरे में प्रवेश किया। वह उसकी जीत का धन एकत्र कर रहा था। उसने उसको लगभग चालीस हजार फ्रैंक लाकर दिये। उनको नाना ने अधिक प्रसन्नता से नहीं लिया। उसे कम से कम दस लाख जीतना चाहिये था। लेबार्डेट ने, जो पूर्णतः अनभिज्ञ बनने का अभिनय कर रहा था, वैन्डेव्रेस के नाम पर सिर झुका लिया। वे पुराने परिवार सभी नष्ट हो गये। वे सभी हास्यास्पद दुःख में घिरे हुए थे।

"ओह, नहीं", नाना ने कहा : "यदि कोई अपने अस्तबल में आग लगा ले तो इसमें हास्यास्पद क्या है ? मैं सोचती हूँ, उसने शान से अपना अन्त कर डाला। ओह ! मैं उसके व मेरेचील के मामले का बचाव नहीं कर रही हूँ। अब वह हास्यास्पद है। यह मैं अब सोचती हूँ जब कि ब्लांच ने यह कहने का बहाना किया कि मैं ही उस सब का कारण हूँ !" तो मैंने उसे उत्तर दिया था : "क्या मैंने उससे चोरी करने को कहा था ?" कोई भी यह सोचकर किसी व्यक्ति से पैसा माँग सकता है कि वह कोई अपराध तो

नहीं ही करेगा। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकती हूँ।" मैं यही जोड़ सकती थी : "तब ठीक है, हमें अलग हो जाना चाहिये।" और वही उसका सुन्दर अन्त होता।

"निस्संदेह", उसकी चाची ने गम्भीर होकर कहा : "जब पुरुष जिद्द पकड़ लेते हैं तो बहुत दुःख होता है।"

"किन्तु जहाँ तक अन्तिम दृश्य का सम्बन्ध है—ओह ! सचमुच वह बड़ा शानदार होगा !" नाना ने कहा : "ऐसा लगता है कि वह बड़ा वीभत्स होगा। यह सोचकर ही मैं चीख पड़ती हूँ। उसने प्रत्येक को बाहर निकाल दिया और अपने को अन्दर से बन्द कर लिया तथा पैट्रोल हाथ में ले लिया और वह जल उठा। आह ! वह कैसा दृश्य होगा। किंचित् ध्यान तो करो—उतने बड़े स्थान का जो चारों ओर लकड़ियों और घास-फूस से घिरा हुआ था। जैसा वे लोग कहते हैं कि गिर्जे की ऊँचाई की भाँति आग की लपटें उठती रहीं। सर्वाधिक भयंकर तो वह घोड़ों का स्थान था। वे नहीं जलना चाहते थे। वे द्वार की ओर आ-आकर ठोकर दे रहे थे और चिल्ला रहे थे। उनकी आँखें ऐसी करुण थीं जैसे किसी पुरुष की। कुछ लोग जो वहाँ थे—केवल भय से ही मृतप्रायः हो गये थे।"

लेबार्डेट ने अविश्वास की धीमी सीटी बजाई। वह वैन्डेव्रेस की मृत्यु पर विश्वास नहीं कर रहा था। एक व्यक्ति कसम खा रहा था कि उसने उसे एक खिड़की से बाहर भागते देखा था। उसने—पागलपन की उत्तेजना में अपने अस्तबल को आग लगा दी थी किन्तु जैसे ही वह गरम होने लगा तो उसको पुनः बुद्धि आ गई। एक पुरुष जो स्त्रियों से ऐसी ओछी कामुकता का व्यवहार करता था तथा जो ऐसे रिक्त-मस्तिष्क का था, ऐसी शान से नहीं मर सकता।

नाना के समस्त आवेश, उसकी यह बात सुनकर विलीन हो गये। उसने केवल इतना ही कहा :

"ओह ! गरीब ! उसका शानदार अन्त हुआ।"

१२.

उस समय, दोपहर का लगभग एक बज रहा था। नाना तथा काउंट उस बड़े पलंग पर, जिसमें वेनेरियन के फीते लगे हुए थे, अभी तक सोये न थे। तीन दिन तक कुपित रहने के पश्चात् वह उसी संध्या वहाँ आया था। एक लैम्प के मन्द-प्रकाश के बीच, कमरे में पूर्ण नीरवता छायी हुई थी और स्नेह की गर्मी व सुगन्धि का अनुभव कर रहा था। साथ ही सफेद व लाल फर्नीचर जो रुपहली लाइनों में चमक रहा था, धुँधला दीख रहा था। एक खिचा हुआ पर्दा, परछाई की पर्त के बीच पलंग को आधा ढके हुए था।

वहाँ एक उदास उच्छ्वास उभरी; तब चुम्बन की सीत्कार ने कमरे की मौन नीरवता को भंग किया। फिर कपड़ों के बीच छमछमाती नाना पलंग की पाटी पर, किसी कारण-वश, अपने नंगे पैरों को निकाल कर, बैठी रही।

काउन्ट का सिर पीछे तकिये पर लुढ़क गया और वह परछाईं के मध्य कुछ न कुछ कहता रहा।

"डार्लिंग! क्या तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो?" नाना ने, कुछ देर मन्द-प्रकाश में रहने के पश्चात्, नेत्रों व आकृति में गम्भीरता व्यक्त करके तथा अपने प्रेमी की भुजायें पृथक् कर के धार्मिक-भय सहित प्रश्न किया।

प्रातःकाल से ही वह उलझन में थी और सब प्रकार के ऊटपटांग विचार, जैसा वह उन्हें कहती थी तथा मृत्यु और नरक का भय, उसे मौन होकर, सता रहे थे। कभी-कभी रात्रि में, बालकों का सा भय और अनेक डरावनी

कल्पनायें उसको घेरती थीं और वह पलक खोले सोचती रहती थी। तभी उसने प्रारम्भ किया :

"क्या तुम सोचते हो कि मैं स्वर्ग में जाऊँगी ?"

और नाना काँपती रही जबकि काउंट, ऐसे समय में ऊटपटांग प्रश्न सुनकर धार्मिकता के प्रति अपनी उदासीनता और विरोध में उद्विग्न हो उठा। किन्तु नाना की रात्रि-पोशाक उसके कन्धों पर से खिसक गई; उसके सुनहरी बाल इधर-उधर फैले रहे और वह, काउंट के वक्ष पर गिरकर सिसकती व उसे झकझोरती हुई, बोली।

"मैं मृत्यु से डर रही हूँ···मैं मरने से डरती हूँ।"

वह स्वयं भी उससे दूर हो जाने के लिये संसार में एक महान् कठिनाई का अनुभव कर रहा था। वह स्वयं भी उस उन्माद और पागलपन के प्रकोप में डूब जाने का भय खा रहा था, जिसके द्वारा वह नारी भी व्यथित थी और उसके शरीर को उस अदृश्य के छुतहे डर से दाब रही थी। तब उसने नाना से तर्क किया। वह अपनी बड़ी अच्छी व स्वस्थ काया में है। उसे जो कुछ करना है वह केवल इतना कि अपने आचरण ठीक रक्खे, और आज के बाद से अपने लिये भगवान से क्षमा-याचना करे। किन्तु नाना ने अपना सिर झुका लिया। निस्संदेह उसने किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई है। यही नहीं, वह सदैव 'वर्जिन क्वांटेयन' का तमगा पहने रहती है जिसको उसने निकाल कर काउन्ट को दिखाया जो एक लाल फीते में बँधा उसकी छातियों के बीचोंबीच लटक रहा था। यह पहिले से ही निश्चित कर दिया गया था कि वे समस्त स्त्रियाँ, जो शादी से पहले पुरुष के साथ कुछ भी करती हैं, नरक में जाती हैं। प्रश्नोत्तर करके कुछ जानने मात्र की लालसा उसके मन में जाग्रत हुई थी। काश ! यदि कोई निश्चित् जान लेता, किन्तु वहाँ तो कोई कुछ जानता ही नहीं है। वहाँ से कोई समाचार लेकर भी नहीं लौटा है और सचमुच, यदि ये धार्मिक पादरी या पंडित केवल बकवास करते हैं तो कोई उससे बाहर निकल जाय, यह भी कितनी बड़ी मूर्खता है।

फिर भी, नाना ने पूर्ण आस्था सहित अपने मैडल को चूम लिया जो उसके शरीरांगों से रगड़ खाकर व छूते रहने से गरम हो रहा था, जो मृत्यु के विरुद्ध एक मन्त्र था, जिसकी कल्पना मात्र से वह भयाक्रांत हो, बर्फ की भाँति ठंडी पड़ जाती थी।

मुफट को उसके साथ ड्रेसिंग-रूम में जाना था। एक पल को भी अकेली रहने में वह डर रही थी क्योंकि द्वार खुला हुआ था, जिससे वह भय खाती थी। जब मुफट पुन: बिस्तर पर लौट आया तब नाना कमरे भर में घूमती फिरी और एक-एक कोना झाँक आई। वह किंचित् सी ध्वनि पर चौंक जाती। फिर वह एक दर्पण के सामने ठहर गई और अपनी नग्नावस्था के मोह में डूब गई। किन्तु उस दृश्य ने भय को और भी बढ़ा दिया। तब उसने अपने चेहरे की हड्डियों को धीरे से, दोनों हाथों से टटोला और शान्त हो गई।

"जब कोई मर जाता है तो कैसा डरावना लगता है!" उसने धीरे से कहा।

तब उसने अपने गालों को दबाया, अपनी आँखें चौड़ी करके देखीं और अपने जबड़ों को गिराया, यह देखने कि वह कैसी लगेगी। फिर अपनी आकृति को इस प्रकार डरावना मानकर वह काउंट की ओर बढ़ी और बोली:

"देखो, मेरा सिर इतना छोटा हो जायगा।"

काउंट बिगड़ पड़ा: "तुम पागल हो गई हो। पलंग पर आओ।"

अब काउंट ने नाना के नष्ट हुए शरीर की कल्पना सौ वर्ष बाद एक कब्र में की। उसने अपने दोनों हाथ मिलाकर कोई प्रार्थना बुदबुदाई। इधर कुछ समय से उसके मन में धार्मिकता पुन: जाग्रत हुई थी। प्रतिदिन ही विश्वास के दौरे उसमें मूर्च्छा जैसी स्थिति ला देते थे और उसे शक्तिहीन करके छोड़ जाते थे।

उसकी उँगलियाँ चटखने लगतीं और वह निरन्तर ये शब्द दोहराता: "मेरे भगवान्! ... मेरे भगवान्! ... मेरे भगवान्!" वह उसकी निस्तेज कराह होतीं, उसके पापों की चीख, जिनका विरोध करने की उसमें शक्ति न

थी; इतना सोचते हुए भी कि वह कितना कलुषित है। जब नाना बिस्तर पर लौटी तो उसने उसे वस्त्रों में लेटे देखा। उसकी आकृति से दैन्य टपक रहा था। उसके नाखून उसके वक्ष को खरोंच रहे थे और उसके नेत्र ऊपर की ओर अनिमेष टिके हुए थे, जैसे वह ईश्वर को देख रहा हो। तब वह (नाना) चीत्कार में पुनः फूट पड़ी। उन्होंने एक दूसरे को आलिंगन में आबद्ध कर लिया। उनकी अज्ञानता में उनके दाँत कटकटाते रहे, जैसे दोनों ही रात्रि के डरावने स्वप्न से भयभीत हो रहे हों। इसके पूर्व भी उन्होंने एक रात्रि इसी प्रकार व्यतीत की थी, किन्तु इस बार वे अधिक घबड़ाये हुए थे—जैसा नाना ने, अपने भय से मुक्त होने के उपरांत स्वीकार भी किया। तभी उसने संदेह में भर कर चतुराई से काउन्ट से पूछा कि क्या रोज मिगनन ने उसे वह प्रसिद्ध-पत्र भेजा है? किंतु वह बात नहीं थी। वह केवल उसका भावातिरेक था, उससे अधिक कुछ नहीं, क्योंकि वह अब भी अपने दुराचरण के प्रमाणों से अभाव-ग्रस्त था।

दो दिन बाद, अपनी नवीन अज्ञातावस्था के अनन्तर, मुफट एक दिन प्रातःकाल आया जबकि वह ऐसे समय कभी नहीं आता था। वह काला पड़ रहा था। उसके नेत्र रक्तवर्ण थे व रो रहे थे। साथ ही उसका सारा ढाँचा, समस्त शरीर जैसे किसी भयंकर आन्तरिक द्वन्द्व से काँप रहा था। किन्तु 'जो' एकदम आतंकित होकर और उसके आवेश को बिना देखे उसकी ओर लपकी और चिल्लाई :

"ओह, सर! शीघ्रता करो। मैडम गत रात्रि मरते-मरते बचीं।"

और जब उसने विवरण पूछा तो उसने जोड़ दिया "ओह! असम्भव घटना, श्रीमान्! गर्भपात!"

नाना के तीन माह का गर्भ था। बहुत दिनों से वह विचार कर रही थी वह केवल अस्वस्थ है। डाक्टर बाउट्रेल को स्वयं ही संदेह था। जब वह कुछ निश्चित् बताने की स्थिति में हुआ तो वह इतनी लज्जालु थी कि उसने अपनी दशा को छिपाने के समस्त प्रयत्न किये। उसे वह एक अशोभनीय प्रसंग प्रतीत हुआ; कुछ ऐसा जो उसे अपनी ही दृष्टि में गिरा

रहा था और ऐसा जिसके लिये सभी उसे लज्जित करते। कैसी लज्जास्पद स्थिति ! उसके कोई भाग्य नहीं, सच ! वह उसका दुर्भाग्य ही था कि वह तब पकड़ी गयी जब वह सोचती थी कि वह पूर्णतः सुरक्षित है। और उसने आश्चर्य का अनुभव किया जैसे उसका सैक्स अस्तव्यस्त हो गया हो । जब कोई चाहता नहीं तब उसे सन्तान प्राप्त होती है खासकर जबकि उसका उद्देश्य कुछ और ही हो । प्रकृति ने उसे झकझोर डाला—वह गम्भीर मातृत्व उसके आनन्द, उपभोग के बीच में उभर आया। वह नवीन जीवन शीघ्रता कर रहा था जब वह अपने चतुर्दिक न जाने कितनी मृत्युओं का बीजारोपण कर रही थी। कोई भी यह नहीं चाहता कि उसके क्रियाकलाप प्रकट हों और उनकी चर्चा की जावे। तब किसने उस अनधिकृत बच्चे का सूत्रपात किया ? वह किंचित भी नहीं बता सकती थी। किसी ने उसकी इच्छा भी नहीं की थी। यों वह प्रत्येक से संभव था और यह निश्चित था कि वह किसी के भी जीवन का आनन्द नहीं हो सकता था।

'ज़ो' ने उस आपत्ति की कहानी कह सुनाई।

"लगभग चार बजे मैडम को दर्द प्रारम्भ हो गये। बहुत देर तक जब मैंने उन्हें नहीं देखा तो मैं ड्रेसिङ्ग रूम में गई। वहाँ मैंने उन्हें भूमि पर मूर्च्छित पाया—जी हाँ, भूमि पर, रक्त से लथपथ—ऐसे जैसे किसी ने उनकी हत्या कर दी हो। तब, तुम जानते हो, मैं समझ गई कि क्या घटना हो गई है। मैं बहुत आवेश में थी। मैडम को कम से कम मुझसे उस आपत्ति को बताना चाहिये था। मोशियो जार्ज— दैवात् वहाँ थे। मैडम को उठाने में उन्होंने सहायता की किन्तु जब मैंने उन्हें बताया कि वह गर्भपात हुआ है तो वे भी व्यथित हो गये। सच ! कल से मैं बड़ी भयानक उलझन में हूँ।

और सचमुच मकान पूर्णतः अस्त-व्यस्त दिख रहा था। सब नौकर निरन्तर जीने में ऊपर-नीचे और कमरों में इधर-उधर भाग रहे थे। जार्ज ने, वह रात्रि, ड्राइङ्ग-रूम की एक कुर्सी पर व्यतीत की थी। उन्होंने ही मैडम के मित्रों को संध्या समय, जैसे वे यथावत् आते थे, सब कुछ सूचित किया। वे एकदम पीले पड़े हुए थे और बड़े आश्चर्य व भावुकता में लोगों को सब कुछ

बताते थे। स्टेनियर, लॉ फेनो, फिलिप व कुछ अन्य लोग आये थे। उनके पहले वाक्य पर लोग चौंक जाते थे। ऐसा नहीं हो सकता, वह एक मजाक होगा। वे सभी बहुत गम्भीर हो गये, जब उन्होंने सोने के कमरे के द्वार की ओर झांका। वे बड़े उदास दिख रहे थे और अपने सिर हिला कर सोचते जाते थे कि यह हास्य का प्रसंग नहीं है। आधी रात तक लगभग एक दर्जन आदमी फायर-प्लेस के सामने धीमी आवाजों में बातें करते रहे और प्रत्येक अपने को उसका पिता मानकर विस्मित होता रहा। ऐसा प्रतीत होता था कि वे सब एक दूसरे से, जैसे किसी लज्जास्पद स्थिति में, क्षमा याचना करते थे। तब वे फिर गर्व व मान में उठ जाते। उस सब से उनका क्या प्रयोजन? वह सब पूर्णतः उसका (नाना का) दोष है। वह नाना! वह एक झुलसा देने वाली औरत है। कोई भी उससे इस प्रकार के मजाक की आशा नहीं करता। और तब वे सब एक-एक करके चले गये, अपने पंजों के बल धीरे-धीरे चलकर उसी प्रकार जैसे किसी मृत्यु के कमरे से बाहर जा रहे हों, जहाँ किसी को हँसना नहीं चाहिये।

"किन्तु, श्रीमान्! अच्छा हो कि अब आप ऊपर जायें", 'जो' ने झुँझला कर कहा: "मैडम अब बहुत स्वस्थ हैं। वे आपसे भेंट करेंगी। हम डाक्टर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसने आज सुबह आने का वायदा किया है।"

तब नौकरानी ने जार्ज को समझाया कि वह घर जाकर थोड़ा सो ले। ऊपर, ड्राइङ्ग-रूम में केवल सैटीन थी जो सोफे पर लेटी हुई थी और सिगरेट सुलगा रही थी तथा छत्त पर ग़ौर से देख रही थी। उस घटना के पश्चात् और उस घर की मालकिन की व्याकुलता के अनन्तर उसने मौन-क्रोध प्रकट किया था और अपने कन्धे हिला-हिला कर तीक्ष्ण शब्द कहे थे। तभी 'जो' उसके सामने से निकली और उसने झुँझला कर अपनी मालकिन की भयंकर बीमारी की बात कही।

"यह ठीक हुआ। यह उनको एक सबक होगा।" 'जो' ने उग्र होकर कह डाला।

वे दोनों विस्मय से घूम पड़े। सैटीन निश्चल बैठी रही। उसकी आँखें अब भी छत पर टिकी हुई थीं। उसकी सिगरेट उसके ओठों में लगी हुई थी।

"क्यों; तुम पर विशेष प्रभाव नहीं हुआ है, नहीं हुआ है?" 'ज़ो' बोली।

किन्तु कोच पर बैठे हुए सैटीन ने काउन्ट को बड़े तीखे नेत्रों से देखा और अपने पूर्व व्यक्त किये हुए शब्द उसके चेहरे पर जैसे फेंक कर दे मारे :

"उसने ठीक किया है। वह उसके लिये एक सबक होगा।"

अब वह पुनः झुक गई और धीरे-धीरे सिगरेट पीते हुए ऐसे बैठी रही जैसे वह किसी भी बात में कोई भाग न लेगी। कभी नहीं, वह अत्यधिक गन्दा है।

'ज़ो' ने काउन्ट को सोने के कमरे में प्रवेश कराया। उस मौन उदासी में ईथर की गन्ध सर्वत्र फैल रही थी। नाना, तकिये पर बिलकुल सफेद दीख रही थी और जाग रही थी। उसके नेत्र अधिक फैले हुए थे और वह विचार-मग्न थी। वह मुस्कराई पर मुफट को देखकर हिली-डुली नहीं।

"आह! प्रियतम!" उसने धीमे से कहा : "मैंने सोचा था, मैं तुम्हें कभी नहीं देख पाऊँगी।"

तब जब वह उसके बालों को चूमने को झुका तो वह हिली और बच्चे के सम्बन्ध में सत्यतापूर्वक कहती रही जैसे वही उसका पिता था।

"मुझे तुमसे कहने का साहस नहीं हुआ। मुझे इतनी प्रसन्नता थी। ओह! मैं नाना प्रकार के स्वप्न देख रही थी—मैं उसको तुम्हारी प्रतिष्ठा के अनुरूप चाहती थी। और अब, सब समाप्त हो गया है। ठीक है, यही अच्छा हुआ। मैं तुम्हें किसी बोझ से दबाना नहीं चाहती।

वह उस पितृ-भावना पर आश्चर्य करने लगा और लड़खड़ाते हुए कुछ वाक्य कह गया। उसने एक कुर्सी घसीट ली और पलंग के पास बैठ गया तथा अपना हाथ कपड़ों पर टेक दिया। तब उस नवयुवती ने देखी उसकी सरोष मुद्रा, उसके रक्तवर्ण नेत्र, और ओठों पर ज्वर की सी कंपकंपी।

"तुम्हें क्या हुआ ?" नाना ने प्रश्न किया : "क्या तुम भी बीमार हो ?"

"नहीं", वेदनासहित उसने उत्तर दिया ।

तब उसने उस पर गहरी दृष्टि फेंकी और एक संकेत से 'ज़ो' को विदा कर दिया जो दवाइयों की शीशियाँ इस बहाने से ठीक कर रही थी कि कमरे में बनी रहे । और जब वे अकेले रह गये तो नाना ने उसको अपने पास खींचते हुए कहा :

"डार्लिंग ! क्या बात है ? तुम्हारे नेत्र आँसुओं से भर रहे हैं । मैं उन्हें देख रही हूँ । आओ, बोलो, तुम मुझसे कुछ कहने ही यहाँ आये हो ।"

"नहीं''नहीं, मैं कसम खाता हूँ", उसने व्यक्त किया ।

किन्तु वेदना में भरे गले से वह उस रोग के कमरे में और अधिक भावातिरेक में भर गया और वहाँ इस प्रकार अपने को अचानक पाकर सिसिकियों में फूट पड़ा । उसने अपना चेहरा पलंग की चादर में दाब लिया जिससे उसकी व्यथा की चीत्कार दब जाय । नाना समझ गई । रोज़ ने निश्चय ही पत्र भेज कर समाप्ति की है । तब नाना थोड़ी देर उसे योंही चिल्लाता देखती रही । उस उद्वेग की कंपकंपी ने, जिसमें वह इतनी तीक्ष्णता से भर रहा था, नाना को भी बिस्तर पर हिला दिया । अन्त में अत्यधिक ममत्वता से नाना ने कहा :

"तो, घर पर कुछ उलझन हो गई है ?"

काउंट ने अपना सिर हिला दिया । उसने (नाना ने) एक जम्हाई ली और धीरे से बोली : "तो तुम सब जानते हो ।"

उसने दूसरी बार सिर हिला दिया । मौन पुनः व्याप्त हो गया । उस वेदनामय कमरे में वह मौन भयावह लग रहा था । महारानी की एक पार्टी से लौटने पर—एक रात पूर्व, काउंट ने सैबीन का वह पत्र पाया जो उसने अपने प्रेमी को लिखा था । उस भयानक रात्रि के व्यतीत होने के उपरान्त, जिसमें वह निरन्तर बदला लेने की बात सोचता रहा; वह बहुत सुबह बाहर निकल गया—उस क्रोध को बचाने के लिये कि वह अपनी पत्नी की हत्या कर दे ।

बाहर खुली हवा में, जून के प्रभात के उस मनोरम वातावरण में वह अपने विक्षिप्त विचारों को न जोड़ सका और सीधा नाना की ओर चला आया वैसे ही जैसे वह कठिनाइयों में सदैव चला आता था। केवल वहीं—सान्त्वना प्राप्ति के उस कायर आनन्द में वह अपनी व्यथा भुला पाता था।

"आओ! शान्त हो जाओ", उस नवयुवती ने स्नेहपूर्वक कहा: "मुझे यह बहुत पहले ही ज्ञात था; किन्तु मैंने तुम्हारी आंखें कभी नहीं खोलीं। तुम याद करो, गत वर्ष तुम्हें सन्देह था। अब, मेरी बुद्धिमत्ता को धन्यवाद दो कि पुनः सब व्यवस्थित हो गया। संक्षेप में तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं था। हाँ! आज, यदि तुम्हारे पास कुछ है तो वह निश्चित् ही कठोर है— जैसा मैं सोचती हूँ। फिर भी तुम्हें समझ से काम लेना चाहिये। उससे कोई व्यक्ति अपमानित नहीं होता है।"

आगे काउन्ट रोया नहीं। वैसे वह अपने दाम्पत्य जीवन की पिछली बहुत सी बातें बहुत गहराई से बताता रहा किन्तु लज्जा से वह मरा जा रहा था। नाना ने उसे प्रोत्साहित किया। आओ, वह एक नारी थी, वह सब कुछ सुन सकती थी। किन्तु काउन्ट बड़ी खोखली सी आवाज में बुदबुदाया:

"तुम बीमार हो। मुझे तुम्हें थकाना नहीं चाहिये। यहाँ आना मेरी मूर्खता था। मैं जा रहा हूँ।"

"लेकिन नहीं", नाना ने शीघ्रता में कहा: "रुको! मैं तुम्हें कुछ अच्छी सलाह दे सकूँगी। केवल मुझे अधिक मत बोलने दो। डाक्टर ने मुझे ऐसा करने को मना किया है।"

काउन्ट ने अपनी कुर्सी छोड़ दी और कमरे में इधर-उधर टहलता रहा। तब नाना ने उससे प्रश्न किया:

"अब तुम क्या करोगे?"

"निश्चित, मैं उस आदमी को पीट कर निकाल दूँगा।"

नाना ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा: "यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। और तुम्हारी पत्नी?"

"मैं तलाक का मुकद्दमा चलाऊँगा। मेरे पास प्रमाण हैं।"

"मेरे परम मित्र! यह तो और भी भद्दा होगा, बड़ा अशोभनीय! तुम जानते हो मैं तुम्हें ऐसी कोई बात नहीं करने दूँगी।"

और तब अपनी कोमल आवाज में नाना ने किसी भी द्वन्द्व अथवा कानूनी मुकद्दमे की निरर्थकता को गम्भीरतापूर्वक व्यक्त किया। एक सप्ताह तक सब समाचार पत्रों में वह एक विशेष चर्चा का विषय बना रहेगा। वह अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से ही खिलवाड़ करेगा—अपने मस्तिष्क की शान्ति से, राज्य-सभा में अपनी ऊँची मर्यादा से, अपने मान और सम्मान से। इस प्रकार वह अपने ऊपर लोगों को हँसने का अवसर देगा।

"उससे क्या अन्तर पड़ता है", काउन्ट चिल्लाया : "मैं बदला लूँगा।"

"प्रियतम", नाना बोली : "जब कोई पुरुष तुरंत बदला नहीं ले सकता तो वह कभी भी बदला नहीं ले पाता है।"

काउन्ट जो शब्दोच्चारण करना चाहता था वह उसके ओठों में ही दब कर रह गये। निश्चित ही वह कोई डरपोक तो है नहीं किन्तु उसने विचार किया कि नाना ठीक कह रही है। एक विचित्र उलझन उसके अन्तःरङ्ग में पुनः बैठ गई—ऐसी कोई बात जो शक्तिहीन तथा लज्जापूर्ण और क्रोधावेश में उसे अमानुष बना रही थी। इसके अतिरिक्त नाना ने एक और स्पष्ट चोट दी जिसने सभी कुछ समाप्त कर दिया :

"तुम सचमुच यह जानना चाहते हो कि सर्वाधिक कौन सी बात तुम्हें दुःखी कर रही है। वह यह कि तुमने स्वयं अपनी पत्नी को धोखा दिया है। हः, तुम समस्त रात्रि ईश्वर की प्रार्थना करते रहे हो। तुम्हारी पत्नी को उसका स्पष्ट कारण जानना ही चाहिये था। अब तुम उससे किस बात पर बदला लोगे? वह कहेगी कि 'तुम्हीं ने तो यह उदाहरण रक्खा था' और वह तुम्हारा मुँह बन्द कर देगी। और प्रिय इसीलिये, बजाय उन दोनों की वहाँ हत्या करने के तुम यहाँ टहल रहे हो।"

उसकी उस निष्ठुर भाषा से काउन्ट मुफत एक कुर्सी पर गिर पड़ा।

नाना एक मिनट तक शान्त रही और सांस लेती रही तब उसने बहुत धीमी आवाज में पुनः असमर्थता सहित कहना प्रारम्भ किया—

"ओह ! मैं तो थक गयी हूँ । थोड़ा उठने में मेरी सहायता करो । मैं नीचे सरकती जा रही हूँ, मेरा सिर बहुत नीचा हो रहा है ।"

जब काउन्ट ने उसकी सहायता की तो उसने सन्तोष की साँस ली और पहले से अधिक सुख का अनुभव किया । अब उसने उस कानूनी-तलाक के मुकदमे का भव्य दृश्य समक्ष उपस्थित किया । तब क्या वह काउन्टेस के वकील को समस्त पेरिस में नाना की चर्चा करने से रोक सकेगा ? हर बात कही जावेगी—वेराइटी थियेटर में उसकी असफलता, उसकी कोठी, उसका जीवन । आह ! नहीं, वह इस प्रकार के गन्दे प्रचार से डरती नहीं है । कुछ गन्दी औरतें सम्भवतः उसे वैसी सलाह दें, जिससे वे उसके पैसे का कुछ बेहूदा लाभ उठावें, किन्तु वह काउंट की प्रसन्नता को सबसे पहले चाहती है । और नाना ने उसे अपनी ओर खींच लिया । अब उसने उसे पकड़े रक्खा और उसका सिर अपने बराबर तकिये पर रख लिया तथा अपना हाथ उसके गले में डाल दिया । आगे वह कोमल होकर फुसफुसाती रही—

"सुनो, प्रिय ! तुमको अपनी पत्नी से समझौता कर लेना चाहिये ।"

वह घृणा में भर रहा था । कभी नहीं ! उसका हृदय चूर-चूर हो रहा था । वह शर्म बहुत भारी थी । किन्तु, नाना ने मुलायमी से उसे समझाया ।

"तुमको अपनी पत्नी से समझौता करना ही होगा । सुनो ! तुम यह नहीं चाहोगे कि प्रत्येक यह कहे कि मैंने तुम्हें तुम्हारे परिवार से विलग कर दिया है । यह मेरे लिये कैसी बदनामी का कारण बनेगा ? केवल सौगन्ध खाओ कि तुम मुझे सदैव स्नेह करोगे : क्योंकि, अब तुम दूसरे के होने जा रहे हो ।"

नाना की सिसकियों से उसका गला रुँध गया । तब काउन्ट ने अपने चुम्बनों द्वारा उसे रोका और कहा—

"तुम पागल हो गई हो, यह असम्भव है !"

"हाँ, हाँ," नाना बोली : "तुम वैसा करो । वही सर्वोत्तम है । और

कुछ भी हो वह तुम्हारी पत्नी है। वह ऐसा नहीं होगा कि तुम मुझे, उस स्त्री के कारण जिससे तुम प्रथम-स्नेह करते हो, धोखा दे रहे हो।"

और इस प्रकार नाना उसे अच्छी सलाह देती रही। उसने परमात्मा का नाम भी लिया। तब काउन्ट को लगा जैसे मोशियो वेनट कुछ मन्त्रोच्चारण करके उसे पाप और कठिनाइयों से बचा रहा है। जो हो, नाना ने संबंध तोड़ने की कोई सलाह नहीं दी। उसने शिष्टता का उपदेश दिया—उसकी पत्नी, उसकी अधिकारिणी द्वारा उसको पाने की बात, किसी के लिये भी बिना किसी उलझन के एक शान्त जीवन और जीवन के उन निश्चित दुःखों में सुख-सन्तोष की किंचित साँस। इससे उन दोनों के अस्तित्व में कोई अन्तर न पड़ेगा। वह तब भी उसका सर्वाधिक-स्नेह-प्राप्त प्रियतम रहेगा, केवल वह इस प्रकार बारम्बार यहाँ नहीं आवेगा और उन दिनों को काउन्टेस को समर्पित करेगा, जिन्हें वह अब तक नहीं करता था। अब नाना की शक्ति क्षीण हो रही थी और उसने एक फुसफुसाहट के सहित समाप्त किया—

"इस प्रकार, तब मैं समझूंगी कि मैंने कोई भला कार्य किया है। तब तुम मुझे और अधिक स्नेह करोगे।"

अब वहाँ निस्तब्धता छा गयी। नाना ने अपने नेत्र मूँद लिये और तकिये पर पहले से अधिक क्षीण दिखाई देने लगी। काउन्ट ने उसकी बात सुनी और यह बहाना करता रहा कि वह उसे थकाना नहीं चाहता है। कुछ देर बाद अन्त में, नाना ने नेत्र खोले और बुदबुदाई—

"और धन भी ? यदि लड़ोगे तो धन कहाँ से पाओगे ? कल लेबार्डेट अपने बिल के लिये आया था, मुझे स्वयं बहुत सी चीजों की आवश्यकयता है। मेरे पास कोई ऐसी वस्तु भी नहीं कि काम चल सके।"

तब, नाना के पुनः नेत्र मूँदने पर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी मृत्यु हो गई हो। काउन्ट की आकृति में भयंकर वेदना के चिन्ह प्रकट हो गये। वह चोट जो उस पर पड़ी थी उसे वह एक रात्रि पूर्व ही भुला बैठा था कि वह आगे धनाभाव की कठिनाइयों से कैसे मुक्ति पावे। अपने निश्चित वायदों के उपरांत भी एक बार हुंडी पलटने के बाद भी वह एक लाख फ्रैंक लेबार्डेट को

नहीं चुका पाया था और जो अब चक्कर खा रहा था। लेबार्डेट अधिक उद्विग्नता में कह रहा था कि वह दोष फ्रांसिस का है। आगे वह कहता रहा कि कभी भी वह किसी बेपढ़े लिखे आदमी से व्यवहार नहीं करेगा। वह कर्ज दिया तो जावेगा ही। काउन्ट कभी नहीं चाहेगा कि उसकी हुंडी पर दावा किया जाय। नाना की अनगिन माँगों के अलावा उसके अपने ही घर में व्यर्थ का व्यय था। लेस फान्डेट्स से लौटने के पश्चात् उसकी पत्नी को अनायास ऐयाशी का चस्का लग गया है व सांसारिक आनन्द उपभोग की भूख बढ़ गयी है जो शीघ्रता से उनके सुख-सौभाग्य को नष्ट कर रही है। लोग उसकी सर्वनाशी आसक्ति की चर्चा करने लगे हैं। घर पूरी तरह बदल चुका है। पाँच लाख फ्रैंक केवल रूये मिरोमेसनिल के पुराने मकान की सजावट को बदलने में समाप्त हो गये और मूल्यवान पोशाकें, और धन की लम्बी राशि विलीन हो गयी या पिघल गयी अथवा दे दी गयी और वह भी हिसाब देने का किंचित भी कष्ट किये बिना। दो बार मुफट ने जानने की चेष्टा भी की किन्तु उसकी पत्नी ने उस प्रकार की व्यंग्यात्मक मुस्कराहट प्रकट थी कि काउन्ट ने स्पष्ट प्रत्युत्तर पाने के भय से कोई प्रश्न ही नहीं किया। नाना के कहने पर जो उसने डागनेट को अपना दामाद माना था वह भी केवल इसीलिये कि वह एस्टेला का दहेज दो लाख फ्रैंक कम कर देगा और शेष के लिये उस लड़के से कोई समझौता कर लेगा। वह भी वैसी अप्रत्याशित अच्छी शादी पाकर प्रसन्न हो जावेगा।

जो हो, यह ध्यान कर कि हुंडी के लिये एक लाख फ्रैंक तुरन्त चाहिये विगत सप्ताह से काउन्ट को एक ही बात ध्यान में आती थी, जिससे वह किंचित शान्त था। वह थी एक विशाल स्टेट लेस बोर्ड्स को बेचना जो लगभग पांच लाख रुपये के आंकी जाती थी और जो काउन्टेस ने अभी अपने किसी चाचा से प्राप्त की थी।

केवल उसमें काउन्ट को पत्नी की स्वीकृति की आवश्यकता थी और वह स्वयं भी, अपने विवाह के लिखित बन्धनों के आधार पर, बिना काउन्ट की अनुमति के उसे नहीं बेच सकती थी। एक रात्रि पूर्व काउन्ट ने यह विचार स्थिर किया था कि वह पत्नी से उसकी स्वीकृति लेगा किन्तु अब उसकी

समस्त योजनायें गड़बड़ हो गयीं। निश्चित रूप से यह जानते हुए कि उसने क्या किया है, वह इस प्रकार का समझौता कदापि नहीं करेगा। अब इस विचार ने उसकी उस चोट को और भी कठोर बना दिया था। वह समझ गया कि वह क्या है जिसे नाना चाहती है और नाना के उस सब 'चाहिये' में क्या अन्तर्निहित है उसको समझते हुए वह अपनी बात को देर तक रोके रहा और तब उसने उस बात की शिकायत की कि वह उस कठिनाई में कैसा घिरा हुआ है। उसने उससे कहा भी कि काउन्टेस की स्वीकृति के लिये वह कितना आतुर था।

जो हो, नाना भी ज़िद करती प्रतीत नहीं हुई। उसने अपने नेत्र नहीं खोले। उसको इतना क्षीण देखकर, काउन्ट डरता रहा और उससे थोड़ा ईथर लेने का अनुरोध किया। तब उसने गहरी सांस ली और काउन्ट से, बिना डागनेट का नाम लिये, प्रश्न किया,

"शादी कब हो रही है ?"

"कन्ट्रैक्ट पर मंगलवार को हस्ताक्षर हो जावेंगे—आज से पाँच दिन बाद," उसने उत्तर दिया।

अपने नेत्र अब भी मूँदे हुए, जैसे वह अपने विचारों की निद्रा में कह रही हो, उसने जोड़ दिया : "प्रियतम ! जो ठीक हो वही सोचो और करो। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं प्रत्येक को प्रसन्न देखना चाहती हूँ।"

काउन्ट ने नाना का हाथ अपने हाथ में लेकर शान्त करना चाहा। हां, वह उस सम्बन्ध में सोचेगा। मुख्य बात है उसकी स्वीकृति। तब उसकी घृणा ने उसका साथ छोड़ दिया। वह रोग का कमरा, उतना गरम और नीरव, ईथर की सुगन्धि से ओत-प्रोत, दैवी शान्ति प्रदान कर उसे थपथपाता रहा। उसका समस्त पुरुषत्व, जो उस चोट से उभरा था, उस विस्तर के संसर्ग से विलीन हो गया—उस रुग्ण नारी के निकट जिसको उसने उसके ज्वरातिरेक की तीव्रता तथा अपने ऐन्द्रिय-सुखानुभूतियों की स्मृति से मुदित किया था।

वह उस पर झुका। उसने उसको आलिंगन में दाब लिया। नाना ने अपना सिर हिलाया-डुलाया नहीं। नाना के ओठों पर विजयोन्माद की गहरी हँसी थिरक रही थी। तत्क्षण ही डा० बाउट्रेल ने उस कमरे में प्रवेश किया।

"हाँ, यह प्यारा बच्चा कैसा है ?" उसने अपने मन में मुफट से पूछा जिसको वह उसके पति के रूप में मानता था। "यह शैतान ! वह तो बातें कर रहा है।"

डाक्टर एक सुन्दर व्यक्ति था, जो अभी भी युवक था। सेना में भी उसका अच्छा मान था। वह बहुत खुला हुआ और स्त्रियों से मिलकर सदैव कामरेड की तरह हँसता हुआ किन्तु अपने व्यवसायिक कर्त्तव्यों से एक क्षण को भी विमुख न होकर वह बड़ी भयंकर फीस लेता था जो बड़ी तत्परता से व पूरी पूरी चुकानी पड़ती थी। वह मामूली बीमारी के लिए भी अपने को कष्ट देकर चला आता था। नाना सदैव ही, सप्ताह में दो या तीन बार मृत्यु के भय से त्रस्त होकर, उसे बुलाती थी और अत्यधिक चिन्तत होकर अपनी मामूली सी पीड़ा व तकलीफ उसे बताया करती थी जिसे वह अपनी मनोरंञ्जक कहानियों, चुटकुलों व वार्तालाप से ठीक कर देता था। सभी स्त्रियाँ उसकी प्रशंसा किया करती थीं। किन्तु इस बार बीमारी गम्भीर थी।

मुफट ने अत्यधिक प्रवाहित होकर अपने को रोका। सहानुभूति के अतिरिक्त उसके हृदय में, नाना को इतना कृशकाय देखकर, और कोई भाव थे ही नहीं। जब वह कमरे से जाने लगा तो नाना ने उसे लौटने को पुकारा और अपना मस्तक चूमने को आगे बढ़ा दिया। तब मन्द स्वर में चतुराई से धमकाते हुए वह बोली :

"तुम जानते हो मैंने तुमसे क्या करने को कहा है। अपनी पत्नी से समझौता करो अन्यथा मैं रुष्ट हो जाऊँगी।"

× × ×

काउन्टेस सैबीन ने अपनी पुत्री के विवाह के कन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर करने का दिन मंगलवार इसलिये चुना था कि उस दिन वह अपने कस्बे के मकान की प्राप्ति की प्रसन्नता में एक बड़ी दावत करके उसका भी मुहूर्त करना चाहती थी क्योंकि उसमें हुआ रंग रोगन अभी सूखा तक नहीं था। लगभग पाँच सौ निमन्त्रण-पत्र इधर-उधर प्रत्येक समूह में भेजे जा चुके थे। उसी

दिन सुबह को पर्दे टाँगने वाले कुछ पर्दे टाँग रहे थे और बत्तियों के झाड़ों को जलाते समय लगभग नौ बजे--देखभाल करने वाला इंजीनियर काउन्टेस के साथ जो अत्यधिक प्रफुल्लित थी, वहाँ जाकर अपने अन्तिम निर्देश दे रहा था।

वह एक बड़ी लुभावनी बसन्त-कालीन दावत थी। ड्राइङ्ग-रूम के दो दरवाजों को जून की उस सुहावनी शाम को पूरा खोल दिया गया था और नृत्य बगीचे की कंकरीली-पगडंडियों में आयोजित् किया गया था।

काउन्ट व काउन्टेस ने जब प्रथम अतिथियों का द्वार पर स्वागत किया तो वे वहाँ की भव्यता देखकर चोंधिया गये। उस कमरे के अतीत को कठिनाई से स्मरण किया जा सकता था जबकि काउन्टेस मुफट अपनी बर्फीली उदास स्मृथियों में घिरी रहा करती थी—वह स्थान जो धर्मनिष्ठा की गम्भीरता से ओत प्रोत रहता था, जहाँ का फर्नीचर ठोस महोगनी लकड़ी का राज-प्रासाद के प्रकार का बना था जिसके चारों ओर पीले मखमल के पर्दे टँगे हुए थे और छत हरे रंग से पुती थी जो सीलन से गन्दी हो रही थी।

और, प्रवेश की सीढ़ियाँ, सुनहले रंग को झलकातीं, मुजैक की, बनी थीं जिनके ऊपर बड़ा सा प्रकाश-स्तम्भ शोभायमान था। साथ ही संगमर-मर के जीने में बड़े ही कलात्मक कटावदार खम्मे दूर से दिखाई देते थे। ड्राइङ्ग रूम जेनेवा के मखमल के पर्दों से लकालक हो रहा था और बाउचर की आकर्षक पेंटिंग छत को झलका रही थी जिसको भवन-निर्माण विशेषज्ञ ने डेम्पीयर के चेट्यू के नीलाम से एक लाख फ्रैंक में खरीदी थी।

झलकते मोमबत्ती के झाड़ और प्रकाश-स्तम्भ से फैलते हुए दूधिया प्रकाश में दर्पताप बहुमूल्य फर्नीचर दमक उठा था। कोई भी कह सकता था कि सैबीन की आराम कुर्सी जो लाल रंग की रेशम से मढ़ी हुई थी और जिसकी कोमलता एक प्रकार से असामयिक सी लग रही थी—और वह इतनी फैल गई थी कि समस्त भवन का विलासमय-आलस्य, अथाह सुख-उपभोग, केन्द्रित हो गया था और उस लालिमा में अन्तर की गूढ़ ज्वलन भयंकरता से प्रगट हो रही थी।

नृत्य प्रारम्भ हो गया था। एक खुली खिड़की के सामने बगीचे में आरकेष्ट्रा एक स्थान पर व्यवस्थित किया गया था जो एक वाल्ट्ज बजा रहा था जिसकी बसन्त-कालीन मधुर ध्वनियाँ वायु में प्रखर होकर कोमल भावनाओं को उद्दीप्त कर रही थीं। वेनेरियन के लैम्पों से प्रकाशित बगीचे में झिलमिलाती परछाइयाँ पारदर्शी सी प्रतीत होती थीं। वहीं लॉन के एक किनारे जलपान का एक खेमा बैंजनी रंग में चमक रहा था।

वह वाल्ट्ज—ब्लान्ड-वीनस का सा मनोमुग्धकारी वाल्ट्ज—ऐसा लग रहा था जैसे मसखरों के अधिक स्वच्छन्द हास उभर रहे हों। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सड़क पर कहीं दूर से मछलियों की गन्ध आ रही हो जो उस गरम स्थान को, मुफट के कुल के इतिहास को, उन छतों के नीचे भरी हुई शताब्दियों की प्रतिष्ठा व मर्यादा को दाब रही थी।

पूजा-वेदी के निकट काउन्ट की माँ के पुराने परिचित अपनी चिर-परिचित कुर्सियों पर बैठे हुए गद्‌गद् हो रहे थे और वहाँ बढ़ती हुई भीड़ में अपना एक पृथक समूह बनाये हुए थे। मैडम डि. जोंकू ने उस स्थान को पहचान ही न पाया और भोजन के कमरे में घुस गयीं। मैडम चेन्टेक बगीचे को विस्मयसहित देखती रहीं जो उस समय उन्हें बड़ा मोहक लग रहा था।

"सैबीन पागल हो रही है", मैडम जोंकू ने कहा। "क्या तुमने उसे द्वार पर देखा था? देखो, तुम उसे यहाँ से देख सकती हो। उसने अपने समस्त हीरे पहन रक्खे हैं।"

वे सब दूर खड़े काउन्ट व काउन्टेस को देखने के लिये उठ खड़े हुए। सैबीन अपनी सफेद पोशाक में थी जिस पर किसी विशेष प्रकार के इंगलिश फीते लगे हुए थे। वह सौन्दर्य के उन्माद में उल्लसित हो रही थी—नौजवान, सुन्दर और हल्के से नशे में अपनी चिरपरिचित व निरन्तर की मुस्कान में उभर रही थी। मुफट उसकी बगल में, बूढ़ा व क्षीण दिखाई दे रहा था और वह भी अपनी शान्त व मर्यादित मुस्कान झलका रहा था।

"और सोचो तो वह उस सबका स्वामी है", मैडम चेन्टेरू ने कहा : "उसकी बिना अनुमति यहां एक भी स्थान नहीं बना होगा । आह, ठीक है, उसने वह सब परिवर्तित कर दिया है। अब वह उसकी आज्ञा का पालन करता है। तुम्हें वह दिन याद है जब सैबीन ड्राइङ्ग-रूम में एक छोटी सी वस्तु भी नहीं बदलती थी। और अब तो सारा मकान ही बदल गया है।

ज्यों ही मैडम डि. चेजिल्स ने प्रवेश किया, उनकी वार्ता बन्द हो गई। उनके साथ नौजवानों का एक अच्छा समूह था। वे सभी प्रफुल्लित थे और अपनी प्रसन्नता को स्फुट सम्बोधनों में प्रकट करते जाते थे।

"ओह ! मधुर ! अद्वितीय ! कलात्मक !"

तब दोनों वृद्धा स्त्रियाँ पुनः बैठ गईं और अपनी आवाज को धीमा करके उस विवाह के सम्बन्ध में वार्तालाप करने लगीं जिसने बहुत से लोगों को विस्मय में डाल दिया है। पतली और भौंड़ी इस्टेला अपनी गुलाबी रंग की पोशाक में अभी-अभी पास से निकल गई जिसका चेहरा देखने में क्वारा सा और भावनाओं से शून्य था। उसने डागनेट को शान्तिपूर्वक स्वीकार किया था। उसने न अप्रसन्नता प्रकट की न दुःख और उसी प्रकार सुन्न बनी रही, वैसी ही क्षीण जैसी जाड़ों की रात में अग्निस्थान में लकड़ी के टुकड़े लाकर डालते समय। यह सब आतिथ्य-सत्कार, यह प्रकाश के पुष्प, यह संगीत सब कुछ उसे वैसे ही सुन्न बनाये रहा।

"एक साहसी !" मैडम चेन्टेरू ने कहा।

मैडम हगन को देखकर डागनेट उनकी ओर लपका।

जो हो, बगीचे में; बाहर, बेनेरियन के लैम्पों की गुलाबी रोशनी में जोड़े इधर-उधर घूम रहे थे जो ड्राइङ्ग रूम के तंग वातावरण से निकल आये थे। पोशाकों की प्रतिच्छाया लॉन पर पड़ रही थी और क्वाडरील का संगीत दूर पेड़ों के पीछे प्रतिध्वनित हो रहा था।

स्टेनियर ने अभी-अभी फोकामेंट तथा लॉ फेलो को जलपान के खेमे में शैम्पेन ढालते देखा था।

उसी बैंजनी रंग के खेमे को देखकर लॉ फेलो बोला "बहुत भीड़-भाड़ है जैसे जिन्जर ब्रेडे मेले की याद आ रही हो।"

अब वह प्रत्येक वस्तु की मजाक करता जा रहा था और ऐसा प्रदर्शित कर रहा था जैसे कोई नौजवान संसार से दुःखी हो और जिसे कहीं भी कोई वस्तु उपयुक्त न दिख रही हो।

"बेचारा गरीब वैन्डेव्रेस यदि पुनः यहाँ लौट आवे तो क्या आश्चर्य न मानेगा", फोकामेंट बुदबुदाया : "क्या तुम्हें याद नहीं है कि वह वहाँ अग्नि-स्थान के पास कितना ऊबा करता था ?" तब भी कोई हँसा नहीं।

"वैन्डेव्रेस ! उसका नाम मत लो, वह तो समाप्त होगया।" तिरस्कारपूर्वक लॉ फेलो ने कहा। "वह कितना मूर्ख था यदि उसने यह सोचा कि अपने जाले से वह हमें विस्मित करेगा। अब उसके सम्बन्ध में कोई बात भी नहीं करता है। अब व्यर्थ है। वह समाप्त हो गया। वैन्डेव्रेस नहीं, किसी दूसरे की बात करो।"

तब स्टेनियर के हाथ मिलाने पर वह कहता गया : "तुमने देखा, नाना अभी-अभी आई है। ओह ! वैसा प्रवेश, दोस्त ! कुछ कौतुकपूर्ण ! सर्वप्रथम उसने काउन्टेस का आलिंगन किया; तब जब बच्चे निकट आये तो उसने शुभ-कामनायें व्यक्त कीं और डागनेट से बोली : "सुनो, पाल ! यदि तुम उसे धोखा दोगे तो समझना मैं तुम्हारे पीछे पड़ूँगी। तुमने देखा नहीं ? ओह ! वह कितनी नेक थी ! ऐसी सफलता।"

अन्य दोनों ने अपने मुँह खोलकर वह सुना। अन्त में वे हँसी में फूट पड़े। वह प्रसन्न हुआ और अपने को विचित्र सा सोचता रहा।

"हः तुमने विश्वास कर लिया ? हाँ, क्यों नहीं ? नाना ने ही इस विवाह को निश्चित कराया है। साथ ही अब वह भी इस परिवार की सदस्या है।"

दोनों हुगन बन्धु निकट से निकले। फिलिप ने उनका विरोध किया। तब, पुरुषों की भाँति वे शादी के सम्बन्ध में वार्तालाप करते रहे। जार्ज

लॉ फेलो के प्रति, जिसने वह कथा सुनाई थी, अत्यधिक उत्तेजित हो रहा था। निश्चिन नाना ने अपने एक पुराने प्रेमी को देकर मुफट का दामाद बनाने में सहायता की है। केवल इतना ही गलत था कि पिछली रात डागनेट उससे मिलने गया था। फोक्रामेंट ने अविश्वास के साथ कन्धे हिला दिये। क्या कभी कोई जान सकता है कि नाना रात्रि में कब किससे मिलती है ? किन्तु जार्ज ने रोष में उत्तर दिया : "हाँ, श्रीमान् ! मैं जानता हूँ !" इसको सुनकर सभी खिल-खिलाकर हँस दिये। जो हो, स्टेनियर कहता रहा कि वह बड़ी ही विचित्र स्थिति है।

धीरे-धीरे जलपान के खेमे में भीड़ बढ़ती गई। वे सब साथ २ वहाँ से हट आये। लॉ फेलो स्त्रियों को घूरकर देखता रहा जैसे वह मेबील में हो। मार्ग के अन्त में मोशियो वेनट को डागनेट से बातचीत करते देखकर सभी को कौतूहल हुआ। तब बड़े हल्के मजाक उन्हें प्रसन्न करते रहे। "वह उससे सब कुछ प्रकट कर रहा है।" ··· "वह उसे पहली रात्रि की शिक्षा दे रहा है।" तब वे लोग ड्राइङ्ग-रूम की ओर बढ़े जहाँ कुछ जोड़े, पोलका-नृत्य कर रहे थे।

तब उन लोगों ने एकान्त में खड़े मारक्यूस डि. चोरड को देखा। उसका व्यक्तित्व अत्यधिक रोषमय दिखाई दे रहा था तथा वह गम्भीर होकर अपने मस्तक की सफेद अलकों को ठीक करता जाता था। काउन्ट मुफट के चरित्र से रुष्ट होकर उसने प्रकट रूप में उससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था और उसके घर न जाने का निश्चय भी किया था। वह केवल अपनी प्रपौत्री के विवाह में सम्मिलित होने आया था, जिसको उसने पसन्द नहीं किया था और तिरस्कारपूर्ण शब्दों में उसने समाज के उच्च-वर्ग की काम-प्रवृत्ति और लज्जास्पद क्रिया-कलापों को झकझोरा था।

"आह ! अब अन्त निकट है", मैडम डु. जोन्कू कहती गई : "उस बदचलन लड़की ने उस सरल व्यक्ति को दबोच लिया है। हम जानते हैं वह कितना धर्मात्मा था—कितना सच्चरित्र।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने को नष्ट कर रहा है", मैडम

चेन्टेरू ने कहा : "मेरे पति यह जानते हैं। वे एवेन्यू डि. विलियर्स के भवन के निकट ही रहते हैं। उनके सम्बन्ध में समस्त पेरिस में चर्चा है। निश्चित् ही, हम सैबीन को भी क्षमा नहीं कर सकते। वस्तुतः यह भी हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि मुफट उसे शिकायत के अनेक अवसर देता है। और ठीक है यदि वह भी धन को खिड़की के बाहर फेंके··· ।"

"वह केवल धन ही खिड़की के बाहर नहीं फेंकती", दूसरी ने कहा : "हाँ, जब कि दोनों ही अपने २ काम में लगे हैं तो वे शीघ्र ही अन्त के निकट पहुँच जावेंगे।"

तभी एक कोमल स्वर ने उन्हें टोका। वह मोशियो वेनट था। वह वहाँ आकर उनके पीछे बैठ गया और सब से प्रथक होकर उनकी ओर झुकते हुए बोला :

"निराशा क्यों ? जब सब समाप्त दीखता है तो परमात्मा अपना कार्य करता है।"

उस मकान की अवनति में वह शान्तिपूर्वक सहायता कर रहा था, जिस पर वह कभी स्वयं अधिकार जमाये हुए था। लेस फान्डेट में अपने प्रवास के पश्चात्; जो कुछ छिपकर चल रहा था, उसे उसने चुपचाप चलने दिया। वह भली प्रकार यह समझता रहा कि उसमें कुछ भी कर सकने में वह कितना असमर्थ है। उसने सब कुछ स्वीकार किया था— काउन्ट की नाना के प्रति विक्षिप्त आसक्ति, फाचरी का काउन्ट से निकट सम्पर्क और अब डागनेट के साथ इस्टेला का विवाह। उन बातों से क्या बनता है ? और उसने अपने को और अधिक सरल तथा रहस्यमय बनाया था—यह जानते हुए कि अधिक अस्त-व्यस्तता, अधिक श्रद्धा को प्रकट करती है। भाग्य अपना काम करेगा ही।

"मेरा मित्र", उसने धीमे स्वर में कहा : "अब भी सर्वोच्च धार्मिक भावनाओं में भरा हुआ है। उसने, मुझे उसके मीठे प्रमाण दिये हैं।"

"तब, सर्वप्रथम उसे अपनी पत्नी से मिलाप करना चाहिये", मैडम जोन्कू ने कहा।

"निस्संदेह, अभी-अभी मुझे यह आशा हुई है कि अति शीघ्र उनमें मेल होगा।"

तब दोनों महिलाओं ने उससे प्रश्न किया किन्तु वह अधिक विनम्र हो गया। भगवान् को अपने आप सब कुछ करने दो। उसकी, काउन्ट व काउन्टेस को मिलाने की कामना इतनी ही थी कि उसका समाज में तमाशा न बने। धर्म बहुत सी कमियों को क्षमा कर देता है।

"किसी भी प्रकार", मैडम जोन्क्रू ने कहा: "तुम्हें इस धूर्त के साथ इस शादी को रोकना चाहिये था।"

"तुम गलती पर हो", मोशियो डागनेट बड़ा उपयुक्त नवयुवक है। मैं उसके विचारों को जानता हूँ। वह चाहता है कि उसके यौवन की भूलें भुला दी जावें। स्टेला उसको उचित मार्ग पर ले आवेगी, विश्वास रक्खो।"

"ओह, स्टेला!" मैडम चेन्टेरू ने व्यथापूर्वक कहा: "मेरा ख्याल है, बेचारी बच्ची की अपनी कोई इच्छा नहीं है। वह अत्यधिक उदासीन भी है।"

मैडम हगन ने उन बातों को उचटते हुए सुना। अब वह वहाँ सम्मिलित हो गई थी। उसने अपने आपसे सम्बोधन कर मारक्युस चोरड को देखकर, जो उसको अभिवादन करने आया था, कहा:

"तुम स्त्रियाँ बड़ी कठोर हो। अस्तित्व की स्थिरता कितनी कठिन है। हः! मेरी सखियो! जब हम अपने लिये क्षमा की कामना करते हैं तो हमको औरों की आलोचनाओं से भी दूर रहना चाहिये।"

मारक्युस एक क्षण के लिये इसे अपने ही प्रति कोई व्यंग्य मानकर मौन खड़ा रहा। किन्तु तभी उस भली स्त्री ने एक विषादपूर्ण हास प्रकट किया; जिससे अपने आपको व्यवस्थित कर मारक्युस बोला:

"नहीं, कुछ ऐसे दोष हैं जिनको क्षमा नहीं करना चाहिये। इसी प्रकार के उद्रेक को शान्त करने की कुचेष्टा में समाज की नीवें लड़खड़ाती हैं।"

नृत्य पहले से अधिक जोश में भर रहा था। दूसरे क्वाडरील में ड्राइङ्ग-रूम ने मनोहर ध्वनियाँ प्रकट की थीं और ऐसा लग रहा था कि आनन्दोत्सव में वह प्राचीन कोठी हिल रही हो।

मैडम डि. जौन्कू कहती गयीं कि काउन्ट और काउन्टेस की बुद्धि ठिकाने नहीं है। उस कमरे में पाँच सौ आदमी ठूँस देना जहाँ दो सौ भी नहीं आ सकते, निरी मूर्खता है। क्यों न कन्ट्रैक्ट पर तुरन्त प्लेस करूसल में हस्ताक्षर किया जावे। "यह नये रीति-रिवाजों का परिणाम है", मैडम चेन्टेरू ने कहा। उनके बाल्यकाल में इस प्रकार के शुभावसर परिवार में ही सम्पन्न हो जाते थे; अब प्रत्येक को भीड़ चाहिये—जैसे सारी सड़क बेरोक-टोक घुसी चली आई हो। यदि इतनी कशमकश न हो तो उत्सव उदास और बेकार समझा जावेगा। प्रत्येक अपनी विलासिता और अपने वैभव का प्रचार करना चाहता है। प्रत्येक, समस्त पेरिस की तलछट अपने स्थान में भर लेता है। दोनों स्त्रियाँ यह शिकायत कर रही थीं कि इतनी भीड़ में वे पचास से अधिक लोगों को जानती ही नहीं। ऐसा क्यों है?

नौजवान लड़कियाँ, नीचे गले की पोशाकें पहन कर अपने नंगे कंधों को प्रदर्शित कर रही थीं।

"काउन्टेस सुन्न हो रही है", बगीचे के द्वार पर लॉ फैलो ने कहा: "वह अपनी लड़की की अपेक्षा दस वर्ष जवान दिख रही है। हाँ, फोक्रामेंट, तुम हमें कुछ सूचना दो। वैन्डेवरेस सदा दाँव बदा करता था कि काउंटेस की ऐसी अच्छी जांघें नहीं हैं, जिनके सम्बन्ध में कुछ चर्चा की जा सके।"

वह सनकपूर्ण विचार अन्य पुरुषों को कष्ट दे रहा था। फोक्रामेंट ने यह कह कर सन्तोष किया:

"अपने भाई से पूछ लो। वह अभी इधर ही आ रहा है।"

"हाँ, अच्छा ख्याल है", लॉ फैलो चिल्लाया: "मैं दस लुई की शर्त लगाता हूँ कि उसकी जाँघें अच्छी हैं।"

फाचरी, सचमुच अभी २ पहुँच रहा था। उस कोठी का गहरा मित्र होने के कारण वह भोजन के कमरे से गुजरा, जिससे वह द्वार की भीड़भाड़ से बच सके। शीत-ऋतु प्रारम्भ होने के पूर्व ही वह 'रोज़' के द्वारा पकड़ लिया गया था। अब वह उस गायिका व काउन्टेस के बीच में बँटा हुआ था और बड़ा ही व्यथित दीख रहा था कि उन दो में से किसी एक से कैसे

छुटकारा पावे। सैबीन ने अपना सारा सौन्दर्य फैला दिया था जबकि रोज़ उसे प्रसन्न अधिक करती थी। रोज़ ने अपना सच्चा स्नेह भी उस पर भली प्रकार उडेल रक्खा था—अपने कोमल प्रणय की भक्ति भावना सहित जिससे मिगनन अत्यधिक व्याप्त था।

"सुनो! हमें कुछ सूचना चाहिये," लॉ फैलो ने अपने चचेरे भाई के हाथ को हिलाकर कहा: "तुम उस सफेद रेशमी वस्त्रों वाली स्त्री को देख रहे हो?"

"हां, वह स्त्री जो अपने चारों ओर बहुत सा फीता लपेटे हुए है।"

पत्रकार बिना कुछ समझे अपने अंगूठों के बल खड़ा हो गया। "काउन्टेस?" वह यकायक बोल उठा।

"वही, भाई! मैंने दस लुई की शर्त बदी है। क्या उसकी जाँघें अच्छी हैं?"

वह अट्टहास कर उठा और उस सफलता प्राप्ति पर अत्यधिक प्रसन्न हुआ कि उस व्यक्ति ने एक बार उस प्रश्न के उत्तर में उसे विस्मय में डाल दिया कि क्या काउन्टेस के कोई प्रेमी भी है? किन्तु फाचरी ने किंचित भी विस्मय प्रकट किये बिना उसके चेहरे को गम्भीरतापूर्वक देखा।

"ए शैतान!" अपने कन्धों को हिलाकर उसने अन्त में कहा।

तब उसने अन्य लोगों से हाथ मिलाया। वे आपस में बातचीत करते हुए पास ही खड़े रहे। घुड़दौड़ के बाद, बैंकर व फोक्रामेंट ने उन सबसे एवेन्यू विलियर्स में भेंट की थी। नाना तब तक बहुत ठीक हो चुकी थी। काउन्ट प्रत्येक संध्या यह देखने आता था कि उसका स्वास्थ्य कैसा सुधर रहा है। जो हो, फाचरी ने केवल सुनभर लिया क्योंकि वह कुछ परेशान सा दिख रहा था। उसी सुबह, एक झगड़े में रोज ने जान बूझकर यह बता दिया था कि उसने पत्र भेज दिया है। हां, वह जाकर अपनी प्रिय-महिला से मिल सकता है। वहाँ उसका अच्छा स्वागत होगा। बहुत देर तक झिझकते रहने के अनन्तर उसने निश्चय किया कि उसे आना चाहिये। किन्तु लॉ फैलो के बेहूदे मजाक ने उसे परेशान कर डाला था क्योंकि ऊपर से वह गम्भीर बना हुआ था।

"क्या मामला है ?" फिलिप ने प्रश्न किया। "तुम अच्छे नहीं दिखाई देते।"

"मैं ? ओह ! मैं बिलकुल ठीक हूँ। मैं काम करवा रहा था इसी से इतनी देर हो गई।" तब पूर्ण शान्ति में, उस अदृश्य साहस के साथ जो जीवन के दु:खों को सुलझा डालता है उसने जोड़ दिया, "साथ ही, मैंने अभी तक आगन्तुक को अभिवादन भी नहीं किया है। प्रत्येक को विनम्र होना चाहिये।"

तब उसने मजाक करने का साहस भी किया और लाँ फेज़ो की ओर घूमते हुए बोला : "क्या मैं ठीक नहीं कह रहा हूँ, शैतान।"

और तब उसने भीड़ के बीच से अपने लिये मार्ग बनाया। काउन्ट व काउन्टेस अभी भी द्वार के निकट ही थे और कुछ तत्काल आयी गई स्त्रियों से बातचीत कर रहे थे। अन्त में वह, जहाँ वे खड़े थे, पहुंच गया। वे सभी व्यक्ति जिन्हें वह अभी-अभी बगीचे में छोड़ आया था उस दृश्य को देखने के लिए अपने अँगूठों पर उचक रहे थे। नाना, निश्चित ही गपशप कर रही होगी।

"काउन्ट ने उसे नहीं देखा है," जार्ज बुदबुदाया। "सीधे खड़े होओ। वह मुड़ रहा है। वहाँ, अब वे उस पर हैं।"

आरकेस्ट्रा पुन: ब्लान्ड वीनस की ध्वनियां प्रकट कर रहा था। सर्व प्रथम—फाचरी, काउन्टेस के समक्ष झुका जो निरन्तर मुस्कराती रही और देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुई। तब वह काउंट की पीठ के पीछे एक पल को शान्त होकर प्रतीक्षा करते हुए निश्चल खड़ा रहा। काउंट ने उस दिन अपनी उच्च मर्यादा व अधिकार की गम्भीर मुद्रा बना रक्खी थी। अन्त में जब उसने पत्रकार के सम्मुख अपने नेत्र झुकाये तो उसने अपनी उस गम्भीर मुद्रा को और भी अधिक कठोर कर लिया। कुछ सेकेंड तक दोनों ने एक दूसरे को देखा और तब फाचरी ने पहले हाथ बढ़ाया। मुफट ने उसे थाम लिया। उनके हाथ एक दूसरे में बँधे रहे। काउन्टेस सैबीन उन दोनों के समक्ष मुस्करायी किन्तु उसके नेत्र भूमि पर टिके रहे। वाल्ट्ज़ मनोहर ध्वनियाँ प्रवाहित करता रहा।

"मजेदार चल रहा है ?" स्टेनियर बोला ।

"क्या उनके हाथ गोंद से चिपक गये हैं ?" इतनी देर तक हाथों को मिला हुआ देखकर विस्मय में फोक्रामेंट ने कहा ।

एक अदृश्य स्मृति ने फाचरी के पीले गालों पर लज्जा की गुलाबी लालिमा प्रकट कर दी । उसने पुन: भंडार के कमरे का विचार किया जहाँ हरी बत्ती जल रही थी और सामान ऊटपटांग ढंग से धूल-धूसरित होकर भरा हुआ था । मुफट वहाँ हाथ में ऐग-कप लिए हुए था, और उसके संदेह का लाभ उठा रहा था । अब मुफट में कोई संदेह शेष न थे । वह सम्मान का अन्तिम प्रमाण था जो चूर-चूर हो रहा था । फाचरी को अपने भय से मुक्ति मिली और काउन्टेस की प्रकट प्रसन्नता को देखकर उसका मन हँसने को हो रहा था ।

"आह ! इस बार निश्चित नहीं है ।" मजाक के ख्याल से लॉ फेलो ने कहा : "वह रही नाना । देखो ! वह कमरे में आ रही है ।"

"चुप रहो, शैतान !" फिलिप बुदबुदाया ।

"मैं कहता हूँ, वही है । वे उसी का वाल्ट्ज बजा रहे हैं । वह आयी, वह आई । इस पुनर्मिलन में उसका भी तो हाथ है । चलो छोड़ो ! क्या तुम उसे नहीं देख रहे हो ? वह अपने हृदय से उन सबको पीस रही है—मेरा चचेरा भाई, मेरी चचेरी बहन, और उसका पति या पत्नी—और उनको अपना नन्हा प्रिय प्रियतम कहना । ये पारिवारिक दृश्य मुझे बहुत बुरे लगते हैं ।"

स्टेला निकट आई । फाचरी ने शुभ-कामनायें प्रकट कीं जबकि उसने उसको विस्मय की दृष्टि से देखा—एक अबोध बालक की भाँति और तब अपने पिता व माँ को भी । डागनेट ने भी पत्रकार से गहराई से हाथ मिलाया । वह एक मुस्कराहट का समूह था और मोशियो वेनट पीछे से चमक रहा था और बड़ी कोमलता में उन लोगों को अपनी कमजोर धार्मिक आस्थाओं सहित देख रहा था वह इन अंतिम त्रुटियों को देखकर मुदित हो रहा था जो भाग्य का मार्ग प्रशस्त कर रही थीं ।

वाल्ट्ज अपनी कामुक स्वर लहरियाँ प्रकट करता रहा । सर्वत्र उत्साह

भर रहा था। उसके बीच में उन दीवालों की खड़खड़ाहट और रक्तवर्ण तीक्ष्ण बादल जैसे अंत का विस्फोट था जिसमें प्राचीन परिवार की प्रतिष्ठा टुकड़े-टुकड़े हो रही थी और भवन के चारों कोनों पर धू-धू कर जल रही थी।

वह प्रारम्भ था जब उन साहसहीन सुखानुभूतियों के स्वरों को फाचरी ने अप्रैल की एक संध्या को काँच के टूटने के स्वर के साथ सुना था और तब धीरे-धीरे वे साहसिक व पागल हो गयीं, और सत्कार-सुख में चमक उठीं। अब वह दरार बढ़ गयी। उसने निवास पर आक्रमण किया और सम्भावित नाश की घोषणा थी।

उस कलुष और गन्दगी के नशे को पीने वालों के बीच, वह भयंकर कालिमामय विनाश है—खाने की आलमारी बिना रोटी के; उस शराब की चीत्कार जो हड्डी के अन्तिम छोर को भी खा रही हो इस प्रकार के चरित्र-हीन परिवार का वैसा ही अन्त होता है। अमीरों के अवनति में गिरने पर वे झपट्टा मार कर अपने लिये सामान एकत्र कर विध्वंसकारी आग लगा लेते हैं।

वाल्ट्ज एक प्राचीन कुल के सर्वनाश को प्रतिध्वनित कर रहा था। नाना, अदृश्य किन्तु नृत्य पर मँडराती हुयी, अपने लचकते अंगों में उन सब पुरुषों को दूषित कर रही थी अपनी मनोहर गन्ध से वह उन्हें वेध रही थी और उस ज्वलन की उत्तेजक गरम हवा में संगीत की स्वर लहरियों सहित उनमें समायी रही।

× × ×

गिर्जे में शादी के पश्चात की उस रात्रि को काउंट अपनी पत्नी के सोने के कमरे में प्रकट हुआ जहाँ वह दो वर्ष से नहीं गया था। काउंटेस अत्यधिक चकित होकर पहले तो पीछे हट गयी किन्तु तब उसने अपनी नशीली मुस्कराहट को स्थिर रक्खा जो उससे अब तक दूर नहीं हुयी थी। काउंट अत्यधिक परेशान सा, लड़खड़ाते हुये केवल कुछ वाक्य, बोल सका। तब काउंटेस ने एक छोटा सा लैक्चर दिया। किन्तु उनमें से कोई भी पूर्ण स्पष्टीकरण का साहस न कर सका।

वह केवल धर्म था जो पारस्परिक क्षमादान को चाहता था। और वह चुपचाप निश्चित होगया कि उन्हें अपनी-अपनी स्वतन्त्रता का निर्वाह करना चाहिये। बिस्तर पर जाने के पूर्व, जिसके लिये काउन्टेस निरन्तर झिझक रही थी, उन्होंने व्यापार सम्बन्धी वार्तालाप किया। काउन्ट ने प्रथम लेस बोर्ड्स को बेचने की बात की। उसने तुरन्त स्वीकृति दे दी। उन दोनों को धन की महान आवश्यकता थी। वे दोनों उसको बाँट लेंगे। उसने पुनर्मिलन को पूर्ण कर दिया। अपनी व्यथा में भी मुफट ने सन्तोष की साँस ली।

उस दिन भी जब लगभग रात्रि में दो बजे नाना सो रही थी, 'जो' ने सीने के कमरे का द्वार खटखटाने का साहस किया। पर्दे खींच दिये गये। उस मंद प्रकाश से ताजी और गरम हवा का एक झोंका खिड़की की राह घुस आया। नवयुवती तब तक कुछ उठ गयी थी किन्तु अब भी कुछ निर्बलता का अनुभव कर रही थी। उसने अपने नेत्र खोले और पूछा :

"कौन है ?"

'जो' उत्तर देने ही वाली थी कि डागनेट ने आगे बढ़कर अपने आप को प्रकट किया। उसको देखकर, वह तकिये पर झुक गयी और नौकरानी को बाहर भेजकर बोली :

"अरे, तुम हो ! अपनी शादी की रात ! क्या मामला है ?

वह, स्पष्ट न देखते हुए कमरे के बीचोंबीच खड़ा रहा। जो हो, शीघ्र ही वह उस अन्धकार से परिचित हो गया और आगे बढ़ा। उसने अच्छी पोशाक पहन रक्खी थी और सफेद टाई व ग्लोव लगा रक्खे थे। वह कहता गया :

"हाँ, मैं हूँ। क्या तुम्हें स्मरण नहीं ?"

नहीं, उसे कुछ भी याद नहीं था। तब बड़ी कठिनाई से उसकी स्मृति को उसे मजाक करते हुए जगाना पड़ा।

"क्यों, तुम्हारा कमीशन। मैं तुम्हारे पास अपनी अबोधता का उपहार लाया हूँ।"

जब वह पलंग के निकट पहुँचा तो उसने (नाना ने) अपने नंगे हाथों से उसे पकड़ लिया और हँसी से इठलाती रही जैसे रो रही हो क्योंकि वह उसे बड़ा प्रिय लग रहा था।

"आह, मेरा मीमी ! वह कितना सुहावना है। वह उसे भूला नहीं है। और मुझे याद तक नहीं। तो तुमने उन लोगों को चकमा दिया ? तुम सीधे गिर्जाघर से आ रहे हो ? यह सत्य हैं कि तुममें अपने प्रति उत्तेजना है। किन्तु मुझे प्यार करो। ओह ! इससे भी अधिक, मेरे मीमी ! सम्भव है यह अन्तिम समय हो।

उनकी कोमल हँसी उस अंधेरे कमरे में दब गई जहाँ ईथर की सुगन्धि अब भी आ रही थी, तब उन्होंने समयाभाव में भी आनन्द मनाया। डागनेट को, शादी के जलपान के तुरन्त पश्चात्, अपनी पत्नी के साथ जाना था।

१३.

सितम्बर के अन्त में—उस दिन काउन्ट मुफट को रात्रि में नाना के यहाँ भोजन करना था किन्तु वह संध्या समय आया और उसने उस आदेश की सूचना दी जिसके अनुसार उसे ट्रलरीज़ पहुँचना आवश्यक था। कोठी में अभी प्रकाश नहीं किया गया था और नौकर रसोई में खिलखिला रहे थे। वह धीरे से जीने में चढ़ा। ऊपर जब उसने बैठक का द्वार चुपचाप खोला तब कोई आवाज नहीं हुई। गुलाबी रंग का दिवा-प्रकाश कमरे की छत्त से विलीन हो रहा था। लाल पर्दे, भारी सोफे, रङ्गीन फर्नीचर और वह मिला-जुला सामान, ताँबे और चीनी के बर्तन सब कुछ अँधकार की फैलती गहराई में विलीन हो रहे थे, जो कमरे के कोनों में बैठ रही थी। साथ ही हाथी दाँत तथा सोने की चमक छिप रही थी। और वहाँ, उस अँधकार में—केवल उसके हल्के रंग की पोशाक की सहायता से काउन्ट ने नाना को जार्ज की भुजाओं में लिपटा हुआ देखा। उसको किसी प्रकार का भी इन्कार असम्भव था। काउन्ट के गले से एक दबी हुई चीख सी उभरी; वह खोया-सा खड़ा रह गया।

नाना अपने पैरों पर खड़ी हो गई और उस छोकरे को सोने के कमरे की ओर भगा दिया जिससे उस को निकल भागने का समय मिल सके।

"यहाँ, अन्दर आओ", अचानक, बिना यह समझे कि वह क्या कह रही है, कह गई : "मैं स्पष्ट करूँगी।"

इस प्रकार पकड़े जाने पर नाना की शक्ति विलीन हो रही थी। घर में उसने उस प्रकार का कभी अवसर ही नहीं दिया था—विशेषतः

उस बैठक का द्वार बन्द किये बिना। बहुत सी बातें थीं जिनके कारण परिस्थिति वैसी बन गई थी। जार्ज से झगड़ा—जो अपने भाई फिलिप के प्रति अत्यधिक ईर्षालु था। वह (जार्ज) उसकी गर्दन से लग कर बुरी तरह रोता रहा, जिसको वह सोचती रही कि कैसे रोके और शान्त करे। वह अपने हृदय में उसके प्रति दयार्द्र हो उठी। उस अवसर पर वह इतनी मूर्ख बन गई कि इस प्रकार अपने आप को ही भुला बैठी, विशेषत: एक अल्लड़ छोकरे के साथ जो अपनी माँ के डर से उसके लिये फूलों का एक गुच्छा भी नहीं ला सकता था क्योंकि उसने कठिन प्रतिबन्ध लगा रक्खा था। तभी, काउन्ट को अवश्य आना था और उन्हें पकड़ना था। सचमुच, वह बड़ी भाग्यहीना है। एक भले स्वभाव की लड़की को यही सब तो मिलता है।

वह अन्धकार—जो सोने के कमरे में फैला हुआ था तथा जहाँ उसने काउन्ट को धक्का देकर बैठाला था—इतना अधिक था कि नाना ने कठिनाई से अपना रास्ता निकाला और एक लैम्प लाने के लिये भागी। जो हो, वह सब जुलियन का दोष था। यदि बैठक में लैम्प होता तो वह कुछ भी घटना न होती। वह गन्दा अँधियारा, जो घिर आया था, उसी ने वह सब कर दिखाया।

"मैं क्षमा माँगती हूँ, प्रिय! समझ से काम लो", जब 'ज़ो' बत्ती लाई तो नाना ने कहा।

तब काउंट ने, बैठते हुए व अपने हाथ घुटनों पर रखते हुए, भूमि पर देखा। उसने जो कुछ अभी देखा था उससे वह त्रस्त था। रोष का एक शब्द भी वह प्रकट न कर पाया। जैसे किसी भयानक डर से सुन्न पड़ता चला जा रहा हो, इस प्रकार वह काँप रहा था। इस मौन-वेदना ने उस नौजवान स्त्री को अधिक प्रभावित किया। उसने उसे सन्तोष देने की चेष्टा की।

"हाँ! ठीक है, मैं बहुत गलत थी। मेरे लिये वह अत्यधिक लज्जा-जनक है, बहुत धूर्त्तता की बात है। तुम देखो, मैं अपने अपराध के लिये दु:खी हूँ। मैं बहुत व्यथित हूँ क्योंकि इससे तुमको इतना रोष हुआ। आओ, तुम भी अच्छे बनो, मुझे माफ कर दो।"

नाना उसके पैरों पर जा बैठी और समझौते की कोमल-भावना की प्रतीक्षा में, वह काउंट की दृष्टि को टटोलती रही कि वह यह देखे कि क्या काउंट उससे अधिक रुष्ट है। तब, एक गहरी साँस लेकर काउंट ने अपने को व्यवस्थित किया। नाना और भी अधिक खुशामद करती रही।

काउंट, नाना की चापलूसी के समक्ष झुक गया। जार्ज हटा दिया जावे, वह केवल इतनी ही जिद्द करता रहा। किन्तु समस्त उत्साह विलीन हो गया था। अब नाना की सच्चाई और एक-पुरुष-व्रत की सब कसमें व्यर्थ थीं। कल नाना फिर उसे धोखा देगी, और वह—केवल नाना को अपने पास रक्खे, इससे अधिक उस निरीह व्यथा की अवस्था में बना रहा। वह कितनी बड़ी कायरता थी। वह इस विचार से डरता था कि नाना उससे विलग हो जावेगी।

वह उसके अस्तित्व का एक स्वर्ण-युग था, जबकि नाना ने समस्त पेरिस को अपनी चकाचौंध से झुकाया था। कलुष और व्यभिचार के क्षितिज में वह अधिकाधिक कार्यरत थी। उसने अपने वैभव-विलास के निर्लज्ज प्रदर्शन से उस नगर पर आधिपत्य स्थापित किया था। धन के प्रति तिरस्कार सहित, जिसके द्वारा उसने खुले तौर पर समाज के सामने सौभाग्यों को पिघलाया था। उसके उस विशाल भवन में जैसे एक बड़ी जलती हुई भट्टी की सी चमक थी। उसकी अशान्त इच्छायें उस भट्टी को भोजन देकर उसे जलाती थीं। उसके ओठों से निकली अन्तिम साँसें, चमकते सोने को काली राख बना देती थीं जिसको विनाशी हवा का झोंका सदैव उड़ा ले जाता था। ऐसा प्रतीत होता था कि मकान किसी नरक-कुण्ड के ऊपर बना हुआ था, जिसमें पुरुष अपनी धन-सम्पत्ति, अपने शरीर, यहाँ तक कि अपने नाम को अधःपतन में डुबाते थे और धूल का एक कण भी अवशेष न छोड़ते थे। खर्च की ऐसी सनक इससे पहले कभी नहीं देखी गई थी।

यह लड़की तोते की सी अपनी रुचियों में मूली और जले-भुने बादामों पर चोंच मारती थी, अपने गोश्त का खिलवाड़ करती थी, और अपनी मेज पर पाँच हजार फ्रैंक प्रति माह खर्च के बिल रखने का शौक रखती

थी। नौकरों के कमरों में सामान बिगड़ रहा था, बह रहा था। वे शराब के बर्तन के बर्तन रिक्त कर रहे थे। तीन या चार हाथों से घूमते हुए आने वाले बिल बढ़ते जा रहे थे। विक्टोरीन और फ्रान्कोइस चौके में स्वच्छन्द साम्राज्य स्थापित किये हुए थे। वहाँ वे अपने मित्रों को निमंत्रित करते थे तथा भाइयों व भतीजों को भोजन कराते थे और उन्हें ठंठी चीजें और शोरवा पिलाते थे। प्रत्येक व्यापारी से जुलियन अपना कमीशन ऐंठती थी। खिड़कियों में शीशे लगाने वाला तीस साऊ में एक शीशा थोड़े ही लगाता था वरन् नौकर उसमें बीस अपने जोड़ देता था। अस्तबल में चार्ल्स घोड़ों का दाना निगल रहा था और आवश्यकता से दूनी वस्तुयें मगाने का आर्डर करता था। जो सामने के द्वार से आता था उसे वह पीछे के द्वार से बेचता था। इस सब संसार व्यापी सर्वनाश और उस नगर की तहस-नहस, जो उन चोटों से रो रहा था, के बीच 'जो' बड़ी चतुराई से, आगन्तुकों के चेहरों को छिपाने में सफलता प्राप्त करती रहती थी और अपने साथ अन्य लोगों की चोरियों को सफाई से छिपाती थी। परन्तु जो नष्ट हो रहा था वह उससे भी भयानक था—बीते दिन का भोजन नालियों में फेंक दिया जाता था। खाद्यान्न एक बोझ थे जिन पर नौकर नाक सिकोड़ कर घूँमते थे। गिलासों में शक्कर जम रही थी, गैस की बत्तियाँ जल रही हैं तो जलती ही जा रही हैं और निर्दयतापूर्वक बिगाड़ी जा रही हैं। उनको इतना तेज जलाया जा रहा है मानो उस स्थान को ही जला डालना है और लापरवाहीपूर्ण घटनायें, बरबादी—वह सब कुछ जो उस विनाशकारी अन्त को शीघ्र बुला दे और उस कोठी की समस्त व्यवस्था को निगल जाय, जिसे निगलने को अनेक मुँह फाड़े हुए थे।

ऊपर मैडम के कमरे में तो वह विनाश, इससे भी अधिक तीव्रता में था। दस हजार फ्रैंक के मूल्य की पोशाकें, केवल दो बार पहनी हुयी, 'जो' के द्वारा बिक जाती थीं; बहुमूल्य जवाहरात अचानक गायब हो जाते थे जैसे मेज की ड्राअर में से अपने आप कहीं रेंग गये हों। उद्दण्ड और निर्दय खरीदारियाँ, वे चीजें जो उस दिन की विशेषतायें हों, अगले दिन किसी कोने में डाल कर भुला दी जातीं और सड़क पर पहुंच जाती थीं। अपनी अनिच्छा में नाना कीमती से

कीमती वस्तुओंको छूना क्या देखना तक पसंद न करती थी। इस प्रकार वह अपने चतुर्दिक उपहार के फूलों और बहुमूल्य वस्तुओं को निरतर नष्ट करती रहती थी। उनके दाम देने से अधिक वह उस विनाश में प्रसन्न होती थी। कोई वस्तु उसके हाथ में ठीक नहीं रह सकती थी। वह प्रत्येक वस्तु तोड़ डालती थी; या स्वयं गायब हो जाती थी या उसकी छोटी सफेद उँगलियों के द्वारा चिकनी हो जाती थी। अज्ञात बची हुयी वस्तुयें बिखर रही थीं। मगर तब इस सबके बीच ही भारी-भारी सौदे भी हो रहे थे जो उस जेब-खर्च की रक़म में फूँके जा रहे थे। बीस हजार फ्रैंक टोप बनाने वाले को देने थे, तीस हजार फ्रैंक लिनेन के दर्जी को, बीस हजार फ्रैंक जूते बनाने वाले को; उसके अस्तबल ने पचास हजार निगल लिये थे और छै महीने में कपड़े सीने वाले का बिल लगभग एक लाख का हो गया था। इसमें घर का खर्च जुड़ा नहीं था जिसको पहले लेबार्डेट ने जोड़ा था तो चार लाख फ्रैंक सालानाथा, वह उस साल दस लाख पर पहुँच गया था। वह उन आँकड़ों को देखकर स्वयं आश्चर्यचकित थी और यह कह सकने में असमर्थ थी कि वह सब धन गया कहाँ? पुरुष एक पर एक भर रहे थे; सोना जैसे ठेलों में भर कर खाली हो रहा था। यह सब उस स्रोत को पूरा करने में असमर्थ था जो सदैव उसके मकान की नीवों के नीचे और गहराई से खुलता जा रहा था और जो उसके वैभव विलास को समाप्त कर रहा था।

नाना ने अन्ततः एक चाहना का अनुभव किया। अपने सोने के कमरे को दुबारा सजाने के विचार से वह पागल हो रही थी और सोच रही थी कि अन्त में उसने अपनी रुचि की चीज पा ली है। कमरे में चाय की लाली के रंग के मखमल के पर्दे लटक रहे थे जो चुन्नटदार थे और छत को छू रहे थे जैसे एक खेमा बना हो और जिनमें छोटे-छोटे चाँदी के बटन टँके हुये थे तथा सोने के फीते व डोरे बँधे हुए थे। नाना को ऐसा लग रहा था कि वे कीमती भी लगेंगे और कोमल भी; तथा जो उसकी श्वेत-त्वचा और दूधिया देह के लिये उपयुक्त पार्श्व-भूमि थे। परन्तु कमरा, जो पलंग का एक ऊपरी ढाँचा मात्र था, चमचमाते प्रकाश का कौतुक-पूर्ण उदाहरण था।

नाना ने एक ऐसे पलंग का स्वप्न देखा था जो पहले कभी न देखा गया हो—एक राज-सिंहासन, एक वेदी जहाँ उसकी दिव्य नग्नता की समस्त पेरिस आकर प्रशंसा करे। वह पूर्णतः सोने और चाँदी का होना चाहिये, जैसे एक भारी जवाहराती वस्तु। चाँदी के घुमाव-फिराव पर सोने के गुलाब टंके हों। सिरहाने फूलों के बीच में बहुत सी अप्सरायें नीचे झाँक रही हों जिनके चेहरों पर हँसी उभर रही हो और जो पर्दों की परछाइयों के बीच कामोत्तेजना व आनन्द देखती जावें। उसने लेबार्डेट से सलाह ली जो उसके मिलाने के लिये दो सुनारों को लाया। उन्होंने पलंग का नमूना बनाना प्रारम्भ कर दिया था। पलंग लगभग पचास हजार फ्रैंक की लागत का होगा और मुफट उसको नव-वर्ष उपहार के रूप में उसे समर्पित करने को था।

उस नौजवान स्त्री को सर्वाधिक आश्चर्य इस बात पर था कि सोने-चाँदी से निरन्तर प्रवाहित उस नदी में रहने पर भी उसके पास धन नहीं है। किसी दिन बहुत थोड़े पैसों—मजाक के लिये कुछ लुई, के लिये वह सोचती कि क्या करे? तब उसे 'जो' से उधार लेने पड़ते या किसी प्रकार जैसे भी सम्भव होता उस धन की व्यवस्था करती। किंतु वह कुछ और करे उसके पहले अपने मित्रों की जेबें टटोलती और उनके पास जो कुछ होता वह निकालती, यहाँ तक कि इठलाते हुए मजाक की तरह कुछ सास (पैसे) ही निकाल लेती। पिछले तीन महीनों से वह इसी प्रकार फिलिप की जेब खाली कर रही थी। अब वह वहाँ ऐसे कभी नहीं आया जब जाते समय कठिनाई देखकर अपना पर्स न छोड़ गया हो। शीघ्र ही—अधिक साहस करके नाना ने उससे उधार लेने की बात कही—दो सौ फ्रैंक, तीन सौ फ्रैंक इससे अधिक नहीं—उन बिलों के लिये जो देने थे, या कर्ज जो अधिक समय तक नहीं टाले जा सकते थे—और फिलिप जो कैप्टेन बना दिया गया था और अपनी रेजीमेंट की तनख्वाह बाँटने वाला था, कहता कि वह अगले दिन ला देगा—इस बचाव में कि वह कोई मालदार तो है नहीं क्योंकि अब मैडम हगन अपने लड़कों के प्रति एक सी सख्ती का व्यवहार कर रही थीं। तीन महीने के अन्त में ये कर्ज बार-बार लेने के कारण बढ़कर दस हजार फ्रैंक हो गये। कैप्टेन अब भी अपने अन्तर की गहराइयों सहित

बड़े मीठेपन से, भरपूर हँसता, फिर भी वह दुबला पड़ता जा रहा था और कभी-कभी मस्तिष्क में अस्त-व्यस्तता का अनुभव करता। उसकी वह वेदना आकृति पर उभर आती किन्तु नाना की एक दृष्टि उसमें कामोत्तेजना का खुमार भरकर ठीक कर देती। वह उसके साथ बहुत इठलाती थी और दरवाजों के पीछे होकर अपने चुम्बनों से उसे जैसे नशे में भर देती थी और अपने सम्मोहन का ऐसा जादू करती थी कि अपनी ड्यूटी से छूटकर वह पूरे समय उसके पेटीकोट में बँधा रहता था।

एक रात्रि, नाना ने बताया कि उसका नाम थेरेसा भी है और उसका पवित्र दिन १५ अक्टूबर है तो सभी लोगों ने उसे उपहार भेजे। कैप्टेन फिलिप अपना सैक्सन (चीनी की मिठाइयों) का सन्दूक लाया जिस पर सोने का काम हो रहा था। उसने नाना को ड्रेसिंग-रूम में अकेला पाया जो स्नान करके तुरन्त आयी थी। वह केवल ढीले-ढाले लाल व सफेद फ्लैनेल का ड्रैसिङ्ग-गाउन पहने हुए थी। जो उपहार मेज पर रक्खे थे उनको देखने में वह बड़ी व्यस्त हो रही थी। उसने सेन्ट की एक शीशी, जो कटाकदार काँच की थी, उसकी काँच की डाट निकालने में अभी-अभी तोड़ डाली थी।

"ओह! तुम कितने अच्छे हो", नाना बोली। "यह क्या है? मुझे दिखाओ। तुम कैसे लड़कपन के काम करते हो जो अपने धन को इस प्रकार की चीजों में व्यय करते हो।"

नाना उस पर बिगड़ती रही क्योंकि वह धनी नहीं था; यों वह इस बात से अधिक प्रसन्न थी कि उसके पास जो कुछ होता है वह सब खर्च कर देती—प्रेम-प्रदर्शन का केवल मात्र प्रमाण जिससे वह प्रभावित होती थी। जो हो, फिलिप ने उसे मिठाई का बक्स दे दिया। वह यह चाहता रहा कि नाना उसे देखे कि वह खोलने व बन्द करने के लिये किस प्रकार का बना हुआ है।

"ध्यान रखा" वह बोला, "यह अधिक मजबूत नहीं है।"

किन्तु नाना ने अपने कन्धे हिला दिये। क्या वह सोचता है कि उसके हाथ किसी रेलवे-कुली के हैं? और अचानक सन्दूक उसके साथ में रह गया

व ढक्कन भूमि पर गिर कर चूर-चूर हो गया। वह विस्मय में अवाक् खड़ी रह गई और भूमि पर पड़े टुकड़ों को देखती रही।

"ओह! यह छूट गया!" नाना बोली।

और फिर वह हँसने लगी। भूमि पर पड़े टुकड़े उसे अच्छे लग रहे थे। वह एक सिसकती मुस्कान थी। नाना में उस बालक की सी उद्दण्ड और निर्दय हँसी थी, जो विनाश में प्रसन्न होता है। कुछ पल तक फिलिप के हृदय में ग्लानि के भाव भरते रहे। शैतान औरत यह नहीं जानती कि उस हानि ने उसको कितनी चोट दी है। जब नाना ने उसको इतना परेशान देखा तो उसने अपने आप को रोकने की चेष्टा की।

"जो हो, यह मेरा दोष नहीं था, वह चटका हुआ था। ये पुरानी वस्तुएँ कभी ठीक नहीं रहतीं। वह ढक्कन था! तुमने देखा, किस बेहूदे ढङ्ग से वह नीचे गिर गया?"

और वह पुनः हँसी में फूट पड़ी। किन्तु जब उस नवयुवक की आँखें आँसुओं में डबडबा आई—अपने आपको रोकते हुए भी—तो नाना ने प्यार भर कर अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं।

"तुम जितनी अल्हड़ हो, उतना ही मैं तुम्हें प्यार भी करता हूँ। यदि ऐसे कुछ टूटे नहीं तो दूकानदारों का कुछ बिके ही नहीं। सब टूटने के लिये ही बनता है। इस पंखे को देखो, यह जुड़ा ही नहीं है।"

नाना ने एक पंखे को हाथ में लिया और क्रूरतापूर्वक उसे खोला। उसका रेशम फट गया। उससे नाना उत्तेजित हो उठी—यह दिखाने के लिये कि वह किसी अन्य उपहार की भी परवाह नहीं करती है, क्योंकि उसने उसकी चीजें तोड़ डाली हैं। नाना ने सब तरफ तोड़-फोड़ प्रारम्भ कर दी, बहुत सी वस्तुएँ इधर-उधर गिरा दीं, यह प्रदर्शित करने के लिये कि उसने सब को नष्ट कर दिया है। उनमें एक भी ऐसी नहीं थी जो ठोस हो। उसके नेत्रों में एक चमक उभरी; उसके ओठों का क्षीण कटाव झलका और उसके दाँत प्रकट हो गये। जब सब चीजें टूक-टूक हो गईं तो उसने अपने हाथों से मेज को

लुढ़का दिया। उसका चेहरा लाल हो रहा था और वह बड़े जोर से पागलों की सी हँसी हँसते हुए, बालकों की भाँति, कह उठी :

"सब समाप्त ! कुछ नहीं ! आगे कुछ नहीं !"

तब फिलिप ने उसकी इस मादकता पर उसे शाबासी दी और उसको भींचते हुए उसने उसकी गर्दन और वक्षस्थल को चूम लिया। उसने, फिलिप के ऊपर, अपने आप को ढीला कर दिया तथा उसके कन्धों पर झूल गई और इतनी प्रसन्न हुई कि सम्भवत: अपने जीवन में इससे पूर्व उसे कभी भी इतना आनन्द नहीं मिला। उसको जाने की अनुमति न देते हुए नाना ने दुलार भर कर कहा :

"मैं कहती हूँ, प्रियतम ! तुम व्यवस्था करके कल मुझे दस लुई ला दो। कितना भद्दा है---एक बेकर का बिल देना है जो मुझे तंग कर रहा है।"

वह एकदम पीला पड़ा गया और नाना को अन्तिम बार मस्तक पर चुम्बन में दाब कर, उसने केवल इतना ही कहा :

"मैं भरसक चेष्टा करूँगा।"

तब नाना ने एक अँगड़ाई ली। वह कपड़े पहन रही थी। फिलिप नाना के चेहरे को खिड़की के एक काँच पर दाब रहा था। एक मिनट के पश्चात वह वहाँ आ गया जहाँ नाना अब तक खड़ी थी और तब वह धीरे से बोला :

"नाना ! तुमको मुझसे शादी करनी चाहिये थी।"

उस नौजवान स्त्री को यह बात इतनी हँसी की प्रतीत हुई कि वह अपने पेटीकोट का इजारबन्द भी न बाँध पायी।

"लेकिन, मेरे गरीब दोस्त ! तुम कुछ अस्वस्थ हो। यह इसलिये कि मैंने तुमसे कल दस लुई लाने को कह दिया है और तभी तुम मेरे साथ शादी करने के लिये अपना हाथ बढ़ा रहे हो ? कभी नहीं, मैं उसके लिये तुम्हें अत्यधिक प्यार करती हूँ। तुम्हारे मस्तिष्क में भी क्या बेहूदा विचार आया है।"

और जैसे ही 'जो' ने मैडम को जूते पहनाने के लिये कमरे में प्रवेश किया, उन्होंने उस विषय की वार्ता बन्द कर दी। नौकरानी ने उन टूटी हुई उपहार-वस्तुओं के अवशेष, जो मेज पर पड़े थे, एक दृष्टि में देख लिये। उसने पूछा कि क्या वह कहीं दूसरे स्थान पर रक्खे जावेंगे, तो मैडम ने कहा कि उन्हें बाहर फेंक दिया जावे। इस पर 'जो' ने उन सब को अपने कपड़े में समेट लिया। रसोई में मैडम की बची हुई वस्तुओं को बाँटते समय नौकर आपस में लड़ते रहे।

उस दिन, नाना के मना कर देने पर भी, जार्ज चुपचाप घर में घुस आया। फ्रैंकोइस ने उसको स्पष्टतः अन्दर आते देखा, किन्तु अब नौकर अपनी मालकिन की घबराहट में केवल हँस देते थे। वह बैठक में रेंग गया क्योंकि उसको, उसके भाई की आवाज ने आगे बढ़ने से रोक लिया था और छेद पर कान लगाकर, वहाँ जो कुछ हुआ—उसने सब सुन लिया—चुम्बन, शादी का प्रस्ताव आदि। भय की उत्तेजना से वह सुन्न हो रहा था। वह कुड़कुड़ाता हुआ तथा अपने मस्तिष्क में खोखलेपन की उत्तेजना लिये लौट गया। रूये रिचेल्यू में अपनी माँ के घर पहुँच कर ही केवल उसके हृदय ने, भयङ्कर सिसकियों सहित, सन्तोष पाया। इस बार, संदेह सम्भव था। एक घृणित दृश्य उसके नेत्रों के सम्मुख नाचता रहा—नाना, फिलिप की भुजाओं में और वह उसे एक समागम सा प्रतीत हुआ। जब उसने अपने को शान्त पाया और उसकी स्मृति व्यवस्थित हुई तो नवीन ईर्षा के भयङ्कर रोष में उसने अपने आप को बिस्तर पर दे पटका—पलंग की चादर दाँतों से काटते हुए और भयङ्कर शब्दों को प्रकट करते हुए जिसने उसकी उत्तेजना को और बढ़ा दिया। बाद में समस्त दिन इसी प्रकार. बीत गया। उसने सिर-दर्द का बहाना किया, जिससे कमरे में रह सके। किन्तु रात्रि इससे भी भयानक थी। उसके भयङ्कर स्वप्नों में जैसे मृत्यु सदृश बुखार चढ़ रहा था, जिसने उसके सारे शरीर को हिला दिया। यदि उसका भाई उस मकान में रहेगा तो वह वहाँ जाकर उसके चाकू भोंक देगा। जब सुबह हुई तो उसने अपने को समझाने की चेष्टा की। अच्छा हो कि वह मर जाय। जैसे

ही कोई बस निकलेगी वह खिड़की से कूद पड़ेगा। जो हो, लगभग दो बजे वह बाहर निकला। वह पेरिस की सड़कों पर चक्कर मारता रहा, पुलों पर टहलता रहा और तब एक अदृश्य कामना से भर गया कि वह नाना को देखे। सम्भवतः एक शब्द से वह उसे बचा लेगी। और जब वह एवेन्यू विलियर्स की कोठी में घुसा तो तीन का घण्टा बज रहा था।

दोपहर तक कुछ उत्तेजक समाचारों ने मैडम हुगन को घबड़ा दिया। विगत रात्रि से फिलिप जेलखाने में है क्योंकि उसने रेजीमेंट की तिजोरी से बारह हजार रुपये चुरा लिये थे। पिछले तीन महिनों से वह छोटी-छोटी धन-राशियों की गड़बड़ कर रहा था—इस आशा में कि वह उन्हें पूरा कर देगा। जाली हिसाब-किताब से वह उस कमी को छिपा रहा था और यह जालसाजी सफल होती रही—मैनेजिंग-कौंसिल की लापरवाही को धन्यवाद देते हुए। उस वृद्ध महिला ने अपने लड़के के अपराध से पिस कर रोष की जो पहली चीख मारी वह नाना के विरुद्ध थी। वह उस नौजवान स्त्री के साथ फिलिप की घनिष्ठता को जानती थी। उसका दुःख इस दुर्भाग्य से भी प्रकट हो गया जिसके कारण वह इन दिनों पेरिस में किसी भी आपत्ति की आशंका से रह रही थी—किन्तु इस प्रकार के अपमान का भय उसे कदापि न था और अब वह अपनी इस बात पर बिगड़ रही थी कि उसने उसको पैसा देने को क्यों मना किया। अब तो वह भी उस अपराध में शामिल हो गई है। एक आराम-कुर्सी में डूब कर उसे लगा जैसे उसके पैरों को लकवा मार गया है। उसने अपने को बेकार समझा—कुछ भी कर सकने में असमर्थ, केवल मरने के लिये ही उपयुक्त। किंतु अचानक जार्ज का ख्याल कर उसे कुछ संतोष हुआ। उसके लिये केवल जार्ज बच गया है—वही कुछ कर सकता है; सम्भवतः दोनों को बचा ले। तब बिना किसी से सहायता माँगे और अपने लोगों में उस सब को छिपाने के विचार से, उसने अपने को समेटा और सीढ़ियों पर चढ़ गई—इस विचार से छिपकर कि अभी भी उसका एक स्नेह शेष है। किन्तु ऊपर का कमरा खाली था। दरबान ने बताया कि मांसियर जार्ज पहले ही चले गये हैं। दूसरे दुर्भाग्य के चिह्न कमरे में गूँज गये। बिस्तर,

अपनी फटी और सिकुड़ी हुई चादर से वेदना की अव्यक्त कहानी स्पष्टतः प्रकट कर रहा था। एक कुर्सी कुछ कपड़ों के ऊपर गिरी हुई प्रतीत हो रही थी जैसे मृत्यु को रोक रही हो। जार्ज सम्भवतः उसी औरत के यहाँ होगा, और तब मैडम हगन अपनी रूखी आँखों एवं अस्थिर पैरों से सीढ़ियों से उतरी। उसे अपने लड़के चाहिये। वह उन्हें माँगने जा रही है।

आज प्रातःकाल से ही उलझनें नाना के सामने आ रही थीं। सबसे पहले वह रोटी वाला आया—जो सुबह नौ बजे ही अपना बिल लेकर आ गया था—व्यर्थ के लिये एक सौ तेतीस फ्रैंक की रोटियों का बिल जिसको वह अपने उस शान और शौकत के जीवन और रहन-सहन में भी भुगतान नहीं कर पाई थी। वह बीस बार आया होगा; उस दिन के उस ढंग को देख वह दुःखी होगया और आगे उधार देने को मना कर दिया। नौकरों ने उसे और भी उभार दिया। फ्राँकोइस ने कहा कि यदि वह शोर नहीं मचावेगा तो मैडम कभी भुगतान नहीं करेंगी। चार्ल्स बोला कि वह ऊपर जाकर भूसे के एक पुराने बिल का भुगतान कराता है किन्तु विक्टोरिया ने सलाह दी कि उनको तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिये जब तक कोई भद्र पुरुष न पहुँच जावे और जब वह ड्राइङ्ग-रूम में होगा तो वहाँ जाने पर रुपये मिल जावेंगे। नौकरों का स्थान बहुत मनोरंजक हो रहा था। सब दूकानदारों को सूचना दे दी गई थी कि क्या होने जा रहा है। तीन-चार घंटों तक गप शप चलती रही। मैडम की बेइज्जती की जा रही थी, मर्यादा टूक-टूक हो रही थी और वे हरामखोर नौकर, जो अच्छी तरह रहने से मोटे हो गये थे, मैडम के सम्बन्ध में ऊट-पटाँग बातें कर रहे थे। केवल नौकरानी जुलियन ने मैडम का पक्ष लेने का अभिनय किया। वैसे वह एक अच्छी औरत थी।

फ्राँकोइस ने पुनः बदमाशी करके बिना मैडम को सूचना दिये रोटी वाले को प्रतीक्षा-भवन में बैठाल रक्खा था। जब नाना दोपहर को भोजन करने आयी तो वह सामने ही मिल गया। उसने उसका बिल ले लिया और कहा कि वह तीन बजे दुबारा आ जावे। तब बड़बड़ाहट व ओछी बातचीत करता हुआ वह

लौट गया और कहता गया कि वह ठीक समय पर आकर, जैसे भी होगा, अपना भुगतान लेकर जावेगा।

इस दृश्य को देखकर नाना ने बहुत कम भोजन किया। इस बार तो उस आदमी को सन्तोष देना ही होगा। कम से कम दस अवसरों पर उसके पैसे अलग निकाल कर रखे होंगे किन्तु किसी न किसी कारण को लेकर वे समाप्त हो गये—फूलों के लिये अथवा किसी दिन पुराने घुड़सवार को चन्दे के लिये। कुछ भी हो वह फिलिप पर आश्रित थी परन्तु आश्चर्य में थी कि वह अभी तक अपने दो सौ फ्रैंक लेकर क्यों नहीं आया था। यह बड़ा दुर्भाग्य था। दो दिन पूर्व ही उसने सैटीन को एक नववधू की भाँति सजाया-सँवारा था और दो सौ फ्रैंक के लगभग उसकी पोशाकों—अण्डरवीयरों आदि, में व्यय किया था। अब उसके पास एक लुई भी शेष न बची थी।

लगभग दो बजे, जब नाना घोर चिन्तित हो रही थी, लेबार्डेट आया। वह पलंग के नमूने लाया था। वह एक परिवर्तन था जिसने उसमें ऐसा आनन्द भर दिया कि नौजवान स्त्री सब कुछ भूल गयी। वह अपने हाथ भींचती रही, नाचती रही, और तब विस्मय से भर कर, बैठक की एक मेज पर हाथ रख कर, उसने नमूने देखे जिनको लेबार्डेट समझाता रहा।

"तुम देखो यह एक नाव है, बीच में पूर्ण विकसित गुलाब के फूलों का एक गुलदस्ता है और तब फूलों का एक हार और कलियाँ; पत्तियाँ हरे सोने में होंगी और फूल लाल सोने में। और यह सिरहाने का भव्य रूप है—इन अप्सराओं के एक समूह का वह नमूना जो गोलाकार होकर एक चाँदी की बेल पर नृत्य कर रही हैं।"

किन्तु नाना ने प्रफुल्लित होते हुए टोका—

"ओह! क्या वह एक मजाक नहीं है, वह कोने वाला जो एक कलाबाजी खा रहा है? वह उसकी मोहक हँसी को देखती रही। उन सबके कैसी चंचल आँखें हैं। मैं कहती हूँ, उनके सामने कुछ भी करने के पूर्व मैं सतर्क रहूँगी।"

वह आत्म-सन्तोष की एक विशेष स्थिति में थी। सुनार कह रहा था

कि कोई भी महारानी ऐसे पलङ्ग पर कभी नहीं सोई। उसमें थोड़ा झंझट है। पैरों के टुकड़े के दो डिजाइन लेबार्डेट ने दिखलाये—एक तो नाव और अप्सरा वाले डिजाइन का ही अंश था और दूसरा पूर्णतः नवीन था—एक नारी का चित्रांकन। उसके घूंघट में रात्रि लिपटी हुई थी जिसको एक अन्य दासी खींच रही थी और उसकी मांसल नग्नता की भव्यता को प्रकट कर रही थी। उसने कहा कि यदि उसने यह दूसरा डिजाइन पसन्द किया तो सुनार कहता है कि वह रात्रि का ऐसा चित्र प्रदर्शित करेगा जैसा स्वयं उसका (नाना का) है। इस विचार ने, जो रुचि का एक प्रश्न था, नाना को प्रसन्नता में उभार दिया। उसने अपने आपको सोने एवं चाँदी की मूर्ति के समान समझा, जो एक हलकी गरमाहट का चिह्न है और रात्रि के अन्धकार का कामोत्तेजक आनन्द।

"निश्चित ही, तुमको सिर व कन्धों के लिये बैठना पड़ेगा," लेबार्डेट ने कहा।

"क्यों?" नाना ने उसके चेहरे की ओर उदास होकर देखते हुए प्रश्न किया। "चूंकि यह कला के कार्य का प्रश्न है अतः मैं उस बनाने वाले कारीगर की किंचित भी परवाह नहीं करूँगी।"

अतः यह निश्चित हो गया। नाना ने दूसरा डिजाइन भी चुन लिया तभी उसने नाना को टोका।

"रुको! इसमें छः हजार फ्रैंक अधिक व्यय होंगे।"

"ठीक है, मेरे लिये सब एक सा है।" हँसी में खिलखिलाते हुए नाना ने चीख कर कहा: "मेरा नन्हा मुफट भुगतान करेगा।"

अब वह अपने निकटतम परिचितों के बीच में मुफट को इस प्रकार सम्बोधित करती थी। भद्र पुरुषों ने उसके पीछे इसके अतिरिक्त उससे कभी पूछा—"क्या तुमने अपने "नन्हे मुफ···" को कल रात देखा था? आह! मैं सोच रहा था कि "नन्हा मुफ···" यहाँ मिलना चाहिये—एक साधारण सा अपनापन जिसको मुफट की उपस्थिति में व्यवहार में लाने का साहस उसने अभी तक नहीं किया था।

लेबार्डेट ने नाना को कुछ निर्देश देते हुए डिजाइनों को लपेट लिया

सुनार दो महीने के अन्दर पलंग देने के लिए तय कर लिया गया। पच्चीस दिसम्बर तक, अगले सप्ताह ही सुनार रात्रि का प्रारम्भिक चित्र लेने आवेगा। ज्योंही वह उसके साथ सीढ़ियों तक गई नाना को रोटी वाले का ध्यान आ गया। वह बोली—

"यों ही, क्या तुम्हारे पास इस समय दस लुई हैं?"

लेबार्डेट का एक सिद्धान्त था, जिसे वह अमूल्य मानता था, कि स्त्रियों को कभी रुपया उधार मत दो।

"नहीं, मेरी बच्ची! आजकल मैं बिल्कुल खाली हूँ। किन्तु क्या तुम अपने 'नन्हे मुफ···' के पास मेरा जाना पसन्द करोगी?"

उसने मना कर दिया; वह व्यर्थ है। दो दिन पूर्व उसने काउन्ट से पाँच हजार फ्रैंक लिये थे। लेबार्डेट के पीछे ही, जब कि वह गया था, तो कठिनाई से ढाई बजे थे—रोटी वाला फिर आ टपका और वह ऊटपटांग ढङ्ग से हॉल की बेंच पर बैठकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। नवयुवती, ऊपर सब सुन रही थी। नाना पीली पड़ गई विशेषत: उस स्थान पर उनकी आवाज सुनकर जो नौकरों का छिपा हुआ आनन्द था। वे लोग रसोई में हँसते हुए घूम रहे थे। कोचवान ने मैदान से देखा; बिना किसी आवश्यकता के फ्रांकोइस हॉल से निकला तथा जाकर औरों को बता आया कि बात किस प्रकार बढ़ रही है। वह रोटी वाले को 'अक्ल से काम लेने की' बात भी समझा आया। वे मैडम की तृणमात्र भी चिन्ता नहीं करते थे। उनकी प्रसन्नता से जैसे दीवालें फटी पड़ रही थीं। नाना ने अपने आप को अकेला पाया। वह नौकरों के द्वारा तुच्छ समझी जा रही है। वे छिपकर उसका विरोध और भद्दे मजाक कर रहे हैं। पहले के उस विचार को, कि वह 'जो' से एक सौ पैंतीस फ्राँक उधार ले लेगी, अब नाना ने छोड़ दिया। पहले ही से उसको कुछ रुपये देने थे और इंकार न करने के लिये नाना में अब भी बड़ा अहंकार था। तब उसके मन में इतना तीव्र भावातिरेक उभरा कि वह अपने सोने के कमरे में गई और उच्च स्वर में बोली :

"चिन्ता मत करो, मेरी लड़की; अपने आप पर भरोसा रक्खो। तुम्हारा शरीर अपना है और अपमान के सामने झुकने की अपेक्षा इसका प्रयोग करना अधिक उपयुक्त है।"

'जो' के लिये बिना घंटी बजाये ही वह उठी और जल्दी में कपड़े पहन लिये—अपने पुराने ट्राइकन के यहाँ जाने के लिये। भयानक कठिनाइयों के समय वह उसका एक बड़ा सहारा था। बहुत याद किये जाने पर, अथवा उस वृद्धा स्त्री के द्वारा बुलाये जाने पर, वह (नाना) कभी मना करती, कभी स्वीकार करती, अपनी आवश्यकतानुसार। वे दिन जब अधिकाधिक सुगम होगये—आते-जाते रहने के कारण जब वह अपने राजसी-जीवन में कभी बहुत दुःखी या तंग होती तो उसे सदैव निश्चय रहता कि कम से कम पच्चीस लुई उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। जैसे गरीब लोग महाजन की दुकान पर जाते हैं उसी भाँति नाना अपने स्वभावानुसार सरलतापूर्वक बूढ़ी ट्राइकन के यहाँ जावेगी।

किन्तु अपना सोने का कमरा छोड़ते ही बैठक के बीच में खड़े जार्ज के ऊपर वह भड़भड़ा कर गिर पड़ी। नाना उसकी क्षीण आक्रांत और खुली हुई मन्द आँखों को न देख सकी। उसने (नाना ने) तब सन्तोष की एक साँस ली।

"आह! तुम अपने भाई के पास से आ गये?"

"नहीं!" छोकरे ने और अधिक दीनता में कहा।

तब उसने (नाना ने) व्यथा की एक साँस ली। 'वह क्या चाहता है? वह उसके सामने क्यों खड़ा है? आओ! अरे वह जल्दी में है', और वह उसके आगे से निकल गई। तब अपने पैर पीछे हटाते हुए नाना ने पूछा:

"तुम्हारे पास कुछ समय है?"

"नहीं।"

"यह ठीक है—मैं कितनी मूर्ख हूँ। ऐसा कभी नहीं होता—बस के किराये के लिये छै पैसे भी नहीं। माँ कभी नहीं देगी; पुरुष कैसे होते हैं?"

वह जल्दी से बाहर जा रही थी किन्तु जार्ज ने उसे रोका। वह

उससे कुछ कहना चाहता था। नाना उत्तेजना में कहती रही कि उसके पास समय नहीं है तब एक शब्द कह कर उसने उसे जाने दिया।

"सुनो ! मैं जानता हूँ कि तुम मेरे भाई के साथ शादी करने जा रही हो।"

ठीक है, वह एक मसखरापन था। अपनी सरलतावश नाना एक कुर्सी पर गिरकर जोर से हँसी।

"हाँ", छोकरा कहता गया "और मुझे वह प्राप्त नहीं होगी। वह मैं हूँ जिससे तुम्हें शादी करनी चाहिये। यही कारण है कि मैं तुम्हारे पास आया हूँ।"

"हः क्या ? तुम भी ?" नाना ने सम्बोधित किया। "तब क्या यह पारिवारिक शिकायत है ? किन्तु कभी नहीं। क्या सनक है ? क्या मैंने तुमसे कभी ऐसी गन्दी बात करने को कहा ? न तुमसे न उससे—कभी नहीं।"

जार्ज का चेहरा एकदम चमक उठा। सम्भवतः दैवात वह गलती पर हो। उसने प्रारम्भ किया, "तब कसम खाओ कि तुम मेरे भाई की पत्नी नहीं होओगी।"

"आह ! तुम तो अब एक व्यवस्थित उलझन बनते जा रहे हो।" नाना ने पैरों को उठाते हुए और जाने की उद्विग्नता में कहा—"दस मिनट के लिये यह बड़ा मजेदार है किंतु मैं कहती हूँ कि मैं जाने की जल्दी में हूँ। तुम्हारे भाई की पत्नी तो तब बनूँ जब मैं चाहूँ। क्या तुम मुझे रक्खे हो—क्या तुम यहाँ खर्चा देते हो कि चले आये और लगे हिसाब पूछने ? हाँ, मैं तुम्हारे भाई की पत्नी हूँ।"

जार्ज ने नाना का हाथ पकड़ लिया और इतना मरोड़ा कि टूट जाय और वह लड़खड़ाते हुए कहता गया : "ऐसा मत कहो—ऐसा मत कहो।"

एक थप्पड़ के साथ नाना ने अपने को मुक्त किया।

"अब वह मुझे पीट रहा है। बन्दर ! मेरे छोटे बच्चे ! अभी चले जाओ यहाँ से, तुरन्त। मैंने कृपा करके तुमको यहाँ आने दिया। ऐसा ही है,

चाहे जितनी आँखें फाड़ो ! तुम आशा नहीं कर सकते, मेरा विश्वास है कि मेरी मृत्यु के दिन तक मुझे अपनी माँ के हेतु प्राप्त करो। चूहों की देखभाल करने से अधिक अच्छे काम करने के लिये मैं बनी हूँ।"

जार्ज ने अपनी समस्त वेदना सहित वह सब कुछ सुना दिया जिसने उसके अंग-अंग को जकड़ दिया और उसे शक्तिहीन बना दिया। प्रत्येक शब्द उसके हृदय में घाव कर रहा था और जिसकी चोट इतनी कठोर थी कि लग रहा था कि वह उसे मार रहा है। नाना उसकी व्यथा को बिना देखे, कहती रही, और प्रसन्न होती रही जैसे प्रातःकाल से अब तक की सारी चिन्ताओं को उस प्रकार कह कर उसने हलका कर लिया।

"वही बात तुम्हारे भाई के लिये भी है; वह एक अच्छा आदमी है, हाँ, वह है ! उसने मुझसे दो सौ फ्रैंक का वायदा किया है। आह ! ठीक है। मैं उसके लिये सदैव प्रतीक्षा कर सकती हूँ। मैं उसके पैसे की परवाह नहीं करती सो बात नहीं है। वह मेरी शृंगार की पोमेड के लिये भी पर्याप्त नहीं है। किन्तु उसने मुझे कठिनाई में डाल दिया है। अब तुम क्या जानना चाहते हो ? सुनो, तुम्हारे भाई के कसूर पर मैं बाहर जा रही हूँ—दूसरे आदमी से पच्चीस लुई पैदा करने।"

तब, घबरा कर चक्कर खाने की सी स्थिति में, वह द्वार के पास खड़ा हो गया। वह चिल्लाया, याचना करता रहा, तथा अपने हाथों को जोड़कर बड़बड़ाता रहा : "ओह, नहीं ! ओह, नहीं !"

"हाँ, मैं चाहती हूँ", नाना ने कहा : "तुम्हारे पास पैसा है ?"

नहीं, उसके पास पैसा नहीं था। उसको पाने के लिये वह अपना जीवन दे सकता था। इसके पूर्व उसने कभी अपने को इतना दयनीय नहीं समझा था, इतना बेकार, ऐसा छोकरा। उसका दयनीय शरीर सिसकियों से हिल उठा; उसने इतना तीव्र कष्ट प्रकट किया कि नाना ने उसे देखा और दयार्द्र हो उठी। सरलता से उसने उसे एक ओर किया।

"चलो, प्रिय ! मुझे निकल जाने दो, जरूर। समझ से काम लो। तुम अभी बच्चे हो, एक सप्ताह तक वह बहुत मजेदार था; किन्तु आज मुझे

अपना काम करने दो। उस पर सोचो, तुम्हारा भाई भी आदमी है। मैं उसके लिये कुछ नहीं कहती—आह! मुझ पर एक कृपा करो, यह सब उससे कुछ मत कहना। उसको यह सब जानने की आवश्यकता नहीं है कि मैं कहाँ जा रही हूँ। जब मैं क्रोध में होती हूँ तो बहुत कुछ कह जाती हूँ।"

नाना हँसी। फिर उसकी कमर में हाथ डालकर और उसके मस्तक को चूमकर उसने जोड़ दिया :

"नमस्कार, बच्चे! यह समाप्त हो गया, सब समाप्त, तुम समझते हो। अब मैं जाती हूँ।"

और वह उसे छोड़ गई। वह बैठक के बीच में खड़ा था। अन्तिम शब्द जैसे उसके कानों में चीत्कार कर रहे थे : "यह समाप्त हो गया, सब समाप्त", जैसे उसके पैरों के नीचे की भूमि धसक रही थी। मस्तिष्क के उस खोखलेपन में, वह व्यक्ति जो नाना की प्रतीक्षा कर रहा था, विलीन हो गया। केवल फिलिप रह गया, उस नारी के नंगे निरन्तर हाथों में। वह उससे मना नहीं करती; वह निश्चित् उसे प्यार करती थी, केवल वह उसकी उस वेदना को दूर रखना चाहती है जिसे कि वह यह समझता है कि वह धोखेबाज है। वह समाप्त हो गया, सब समाप्त। उसने एक गहरी सांस ली और कमरे में चारों ओर गहराई से देखा। वह उस भारीपन से रुँध गया जो उसे पीस रहा था। एक-एक करके स्मृतियाँ आती रहीं—लॉ मिगनट की वे आनन्ददायिनी रातें, प्यार के वे क्षण जिनमें वह अपने को उसका बच्चा समझता था, तब वे कामोद्दीपक सुखातिरेक जो उसी कमरे में मिले थे। कभी नहीं, आगे और कभी नहीं। वह बहुत छोटा है, वह जल्दी नहीं बढ़ गया; फिलिप ने उसका स्थान ले लिया है क्योंकि उसके दाढ़ी है। अतः यह अन्त है, वह आगे जीवित नहीं रह सकता। उसका कलुष अपनी असीम कोमलता से भर गया, इन्द्रियों की सराहना में, जिसमें उसका समस्त अस्तित्व केन्द्रित हो रहा था। तब वह कैसे भुला सकता है कि उसका भाई वहाँ रहे—उसका भाई जो एक ही खून का है; दूसरे जिसका आनन्द उसे ईर्षा में पागल बना रहा है? वह अन्त था। वह मरना चाहता था।

सब दरवाजे खुले हुए थे और नौकर शोर करते हुए इधर-उधर घूम रहे थे क्योंकि उन्होंने मैडम को पैदल जाते देख लिया था। नीचे हॉल में—बैंच पर बैठा रोटी वाला, चार्ल्स और फ्रांकोइस के साथ हँस रहा था। ज्योंही 'ज़ो' ने दौड़ते हुए बैठक को पार किया तो वह जार्ज को देखकर विस्मय में भर गई और उससे पूछा कि क्या वह मैडम की प्रतीक्षा कर रहा है। हाँ, वह नाना की प्रतीक्षा कर रहा था, वह कुछ कहना भूल गया था। और जब पुनः अकेला रह गया तो वह इधर-उधर घूमता रहा। कुछ उससे अधिक अच्छा न पाकर उसने ड्रैसिंग-रूम से एक तेज नोक वाली कैंची उठा ली, जिसको नाना निरन्तर व्यवहार में लाती थी—अपने बढ़े नाखून काटने अथवा अपने छोटे बाल साफ करने के काम में।

तब, एक घण्टे तक वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा, उसके हाथ अपनी जेब में थे और उसकी उंगलियाँ काँपती हुई कैंची को पकड़े हुए थीं।

"मैडम यहाँ हैं", लौटकर आते हुए 'ज़ो' ने कहा। सम्भवतः वह सोने के कमरे की खिड़की से उसको निरन्तर देखती रही थी।

इधर-उधर चलने की आवाजें आती रहीं और हँसी के स्वर, ज्योंही द्वार बन्द हुए, सुनाई दिये। जार्ज ने नाना को रोटी वाले का भुगतान करते व कुछ शब्द कहते सुना। तब नाना ऊपर आई।

"क्या? तुम अब भी यहाँ हो!" ज्योंही उसने जार्ज को देखा, नाना बोली: "आह, छोटे आदमी! अब हमें झगड़ा करना होगा।"

ज्योंही नाना सोने के कमरे में गई; जार्ज ने उसका पीछा किया।

"नाना, तुम मुझसे शादी करोगी?"

किन्तु नाना ने अपने कन्धे हिला दिये। वह बात इतनी बेहूदी थी कि उसने कोई उत्तर नहीं दिया। नाना का विचार था कि उसके मुँह पर दरवाजा पटक दे।

"नाना, तुम मुझसे शादी करोगी?"

नाना ने द्वार बन्द कर दिया। एक हाथ से जार्ज ने दरवाजा खोला

और दूसरे हाथ से उसने जेब से कैंची निकाल ली। फिर केवल एक भयानक झटके के साथ जार्ज ने कैंची अपने पेट में घुसेड़ ली।

नाना, केवल यही ख्याल कर रही थी कि कोई भीषण घटना होने जा रही है। वह घूम गई। जब उसने जार्ज को आत्मघात करते देखा तो वह क्रोध से भर गई।

"वह पागल हो गया है! वह पागल हो गया है! और मेरी ही कैंची से! क्या तुम जाओगे! ओ शैतान लड़के! आह, हे भगवान्! ... आह, हे भगवान्!"

नाना डर रही थी। छोकरा अपने घुटनों के बल गिर पड़ा। उसने अपने को दूसरी चोट और दी जिससे वह कालीन पर सीधा फैल गया। उसने सोने के कमरे के प्रवेश को रोक रक्खा था। तब नाना एकदम घबड़ा गई; वह अपनी सारी शक्ति से चिल्लायी और एक कदम भी उसके शरीर के ऊपर न बढ़ा सकी, जिससे वह वहीं एक प्रकार से बन्द हो गई और सहायता के लिये भागने को रुकी रही।

"जो! जो! जल्दी आओ। इसे यहाँ से भगाओ! यह कितना बेहूदा लड़का है, जो अपने आप को मारे डाल रहा है और वह भी मेरे ही मकान में। क्या किसी ने कभी ऐसा भी देखा है?"

जार्ज ने, नाना को डरा दिया। वह बिल्कुल सफेद हो रहा था। उसके नेत्र मुंद रहे थे। घाव से कठिनाई से रक्त निकल रहा था। वहाँ बहुत थोड़ा सा खून था जो बास्कट पर टपक रहा था। नाना उसके शरीर के ऊपर से जाने में घबड़ा रही थी जबकि एक भूत ने उसे पीछे ढकेल दिया। उसके सामने, बैठक के खुले द्वार से, नाना ने एक बूढ़ी महिला को आगे बढ़ते हुए देखा। उसने मैडम हगन को पहचान लिया—डरी हुई और उसकी उपस्थिति के विषय में पूछने में असमर्थ। नाना पीछे हटती गई, वह अभी भी अपना टोप और ग्लोब पहने हुए थी। उसका भय इतना तीव्र हो रहा था कि वह झिझकती आवाज में चीखकर अपने को बचाने की चेष्टा करना चाहती थी।

"मैडम ! मैं नहीं हूँ, मैं कसम खाती हूँ। वह मुझसे शादी करना चाहता था। मैंने कहा 'नहीं'; और उसने अपने आप को मार डाला।"

मैडम हुगन धीरे से सामने आई—काली पोशाक पहने, अपने पीले चेहरे व सफेद बालों सहित। गाड़ी में उसे फिलिप के पाप और अपराध का ही ख्याल आता रहा; वह जार्ज को भूल गई थी। सम्भवतः वह स्त्री कुछ उत्तर दे सकती जिससे जज अधिक कृपालु हो सकें और उसका इरादा यह था कि अपने लड़के की ओर से नाना को साक्षी देने के लिये तत्पर किया जाय। सीढ़ियों के नीचे, कोठी के दरवाजे चौपट खुले थे। सीढ़ियों पर पहले वह अपने लड़खड़ाते पैरों से झिझकी; जबकि भय की आवाजें उसके कानों में गूँजती रहीं। तब, ऊपर उसने एक व्यक्ति को भूमि पर पड़े देखा, जिसकी कमीज खून से सनी हुई थी। वह जार्ज था—उसका दूसरा लड़का।

नाना बेहूदे ढङ्ग से दोहराती गई: "वह मुझसे शादी करना चाहता था। मैंने कहा 'नहीं'; और उसने अपने आप को मार डाला।"

बिना चिल्लाये मैडम हुगन नीचे को झुकी। हाँ, वह दूसरा बच्चा था; वह जार्ज था। एक अपमानित, दूसरा मृत। उससे उसको आश्चर्य नहीं हुआ। यह उसके समस्त अस्तित्व का पूर्ण विनाश था, सर्वनाश। तब कालीन पर झुकते हुए और यह भूलकर कि वह कहाँ है, बिना किसी को देखे, उसने अनिमेष जार्ज के चेहरे को देखा, और उसके हृदय पर हाथ रख कर सुना। अचानक उसने एक हल्की सिसकी भरी। उसने अनुभव किया कि उसका हृदय धक्-धक् कर रहा है। तब उसने उसका सिर उठाया, उस कमरे व उस औरत का निरीक्षण किया और जैसे कुछ याद सी करती प्रतीत हुई। उसकी खोखली आँखों में अग्नि की तीव्रता उभर आई। वह इतनी विशाल और इतनी डरावनी थी कि जब उसने अपने को निर्दोष सिद्ध कनना चाहा तो वह काँपती गई, उस शव के ऊपर जिसने उन्हें जुदा कर दिया था।

"मैडम, मैं क़सम खाती हूँ। यदि इसका भाई यहाँ होता तो आपको कुछ समझा सकता था।"

"इसका भाई एक चोर है, वह जेल में है", माँ ने तेजी में कहा।

नाना स्थिर व अवाक् खड़ी रही और सांस लेने की चेष्टा करने लगी। किन्तु वैसा सब क्यों ? दूसरे ने डाका डाला । उस परिवार में सब पागल हैं ! उसने उलझन करना बन्द कर दिया और अपने को अपनी कोठी में न सोच-कर, उसने हगन को छोड़ दिया कि वे अपनी आज्ञा देना प्रारम्भ करें। कुछ नौकर, अन्त में घटनास्थल पर पहुँचे । वृद्ध महिला, जार्ज को, जो बेहोश था, गाड़ी पर ले चलने का अनुरोध करती रही । वह उसे उस घर से उठा ले जावेगी; उसीने उसकी हत्या की थी । नाना, घबड़ाई दृष्टियों से, नौकरों द्वारा उस गरीब जीजी को सिर व पैर पकड़ कर ले जाते हुए देखती रही। माँ उसके पीछे २ गई—पूर्णतः समाप्त, फर्नीचर पर झुकते हुए व उस के विध्वंस में डूबते हुए जिसे वह प्रेम करती थी । घुमाव पर उसने साँस ली और घूमकर दो बार कह गई :

"आह ! तुमने हमको बहुत क्षति पहुँचाई है । तुमने हमको बहुत क्षति पहुँचाई ।"

वह सब कुछ था । नाना—अपनी बेहोशी में बैठ गई । उसके दस्ताने अभी भी चढ़े हुए थे और उसका टोप सिर पर था । मकान एक मौन उदासी से भर गया, गाड़ी अभी-अभी चली गई थी और वह जड़वत् बैठी रही—बिना किसी ध्यान के । अभी तत्काल जो कुछ हुआ था, उससे उसका मस्तिष्क भनभना रहा था । पन्द्रह मिनट बाद, काउन्ट मुफट ने उसको उसी स्थान पर पाया । किन्तु तब उसने शब्दों की सरिता से अपने को शान्त किया और उससे उस दुर्भाग्य को बताती रही—बीसियों बार उसी विवरण को दोहराती रही, उस कैंची को उठाते हुए जो खून में सनी हुई थी । वह उस जीजी के हाव-भाव दोहराती रही जब उसने अपने को चोट दी । तब ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अपनी निर्दोषता को सिद्ध करने को आतुर है ।

"यहाँ आओ, डार्लिंग ! उसमें मेरा क्या दोष था ? यदि तुम न्याया-धीश होते तो क्या मुझको सजा देते ? मैंने फिलिप से कभी नहीं कहा कि वह चोरी करे । यह निश्चित् ही है कि उससे अधिक तो मैंने इस गरीब से यह बात कही कि वह आत्म-हत्या कर ले । इस सबसे मैं सर्वाधिक व्यथित हूँ ।

वे आते हैं और अपने आप बेवकूफ बनते हैं; और मुझे न जाने कितना कष्ट देते हैं, मैं जैसे एक नीच नारी समझी जाती हूँ।"

और वह चीत्कार में फूट पड़ी। उसकी रग-रग टूट रही थी जिससे वह शक्ति-हीन और दुःखी हो रही थी और अपनी वेदना से सम्मोहित थी।

"तुम भी, तुम भी विशेष प्रसन्न नहीं हो। ज़ो से पूछो, यदि मैं किंचित भी दोषी हूँ। ज़ो; बोलो, काउंट को स्पष्ट करो।"

कुछ मिनट तक नौकरानी, ड्रेसिंग-रूम से तौलिया व पानी का बर्तन लाकर कालीन को रगड़ती रही कि खून के धब्बे को साफ कर दे, जो अभी तक गीला था।

"ओह, श्रीमान्!" उसने कहा, "मैडम का हृदय चूर-चूर हो रहा है।"

मुफट अत्यधिक प्रभावित हो रहा था और उस अभिनय से जैसे मुग्ध पड़ता जा रहा था। उसके विचार, उस माँ के रुदन से, जो अपने दो पुत्रों के लिये हताश थी, भर रहे थे। वह उसके विशाल हृदय को जानता था, उसने उसे विधवा की पोशाक में देखा था जो लेस फान्डेट्स में अकेले पड़ी रहती थी। किन्तु नाना की क्लांति बढ़ती गयी। अब ज़ीज़ी का भूमि पर पड़ा शरीर, उसका चित्र, उसकी कमीज में खून का लाल धब्बा लगा हुआ चित्र, जैसे उसके बराबर रक्खा था।

"वह बड़ा सुन्दर था, बड़ा विनम्र, बहुत दुलार करने वाला! आह, तुम जानते हो, प्यारे! यदि तुम पसन्द न करो तो वह बहुत बुरा होता है। मैं, उस बच्चे को प्यार करती थी। मैं अपने को रोक नहीं सकती, वह मुझसे अधिक बलवान है। और अब उस सबसे तुम्हारा तो कोई सम्बन्ध रहा नहीं। अब वह यहाँ नहीं है। जो तुम चाहते थे तुमने पा लिया। अब तुम निश्चिन्त रहो कि हमको एक साथ अब कभी नहीं पकड़ोगे।"

पिछली बात से वह भर उठा और क्लेश में नाना को सान्त्वना देता रहा। उसको सहन करना चाहिये। वह ठीक थी; उसमें उसका कोई दोष नहीं। किन्तु नाना ने उसको कहने से रोक दिया—

"सुनो, दौड़ो और मेरे लिये तुरन्त उसकी कुछ सूचना लाकर दो। मैं अनुरोध करती हूँ !"

उसने अपना हैट उठाया और जार्ज के समाचार लेने चला गया। जब लगभग पौन घंटे बाद वह लौटा, उसने नाना को खिड़की से झांकते हुए, अपनी प्रतीक्षा में अधीर पाया। काउन्ट फुटपाथ से ही कहता आ रहा था कि छोकरा मरा नहीं है। वे उसके बचने की आशा करते हैं। तब वह पुनः प्रसन्नता में भर गयी। वह गाने लगी, नाचने लगी और जीवन की मधुरता का अनुभव करने लगी। ज़ो उसके इस व्यवहार से प्रसन्न न थी। वह उस खून के धब्बे को देखती रही और जब भी नाना पास से निकलती, वह कहती :

"तुम जानती हो, मैडम, यह अभी गया नहीं है।"

और सचमुच, वह धब्बा सूख गया था तथा हल्के लाल रंग के कालीन की सफेद डिजाइन पर अब भी झलक रहा था। वह कमरे के प्रवेश के निकट ही था, जैसे खून की एक रेखा मार्ग को रोक रही हो।

"वाह !" एक बार फिर प्रफुल्लित होते हुए नाना ने कहा : "पैरों का आवागमन इसे साफ कर देगा।"

अगले दिन तक काउंट मुफट भी उस घटना को भूल गया। जबकि रूये रिमेल्यू में बग्घी पर जाते हुए उसने कसम खायी थी कि वह कभी नाना के पास न जावेगा। भगवान ने उसे एक चेतावनी दी थी। उसने फिलिप व जार्ज की विपत्ति को समझा जो उसके अपने विनाश को रोके हुए थी। किन्तु न तो मैडम हूगन का वह दृश्य न उस युवक की ज्वर से पीड़ित उस आकृति ही में यह बल था कि काउन्ट अपनी कसम की रक्षा कर सकता और भावोद्वेग के उस क्षण से उसके अभिनय के उपरांत जो कुछ भी उसके मनमें था वह यह कि वह प्रसन्न था कि वह अपने एक प्रतिद्वन्द्वी से मुक्त हो गया जिसका आकर्षक यौवन उसे सदैव चिन्तित किये रहता था। वह नाना को प्यार करता था—इस आकांक्षा से कि वह यह जाने कि वह केवलमात्र उसे ही स्नेह करती है और केवल उसी की है—उसको सुने, उसे छुये; और उसकी

साँस के खुमार से भरी रहे। अब काउन्ट एकनिष्ठ आसक्ति में डूब रहा था, उस प्रकार की आसक्ति में जिसमें कोई उत्साह, कोई यौवन शेष न था। वह एक लगाव था जो उसकी बुद्धि के सन्तोप के परे था और जो अधिक पवित्र आस्था तक पहुँच गया था—एक उद्विग्न अनुराग, व्यतीत के प्रति ईर्पालु—जो पश्चाताप के समय कल्पना में आता था, क्षमायाचना में, जब दोनों उस परमपिता के समक्ष झुके हों। प्रतिदिन, धर्म अपने किसी न किसी प्रभुत्व सहित उस पर असर करता। वह पुनरपि जाकर सब कुछ प्रकट करने की, बताने की चेष्टा करता; निरन्तर अन्तर्द्वन्द्व में डूबता और अपनी क्लांति व उदासीनता को पाप के आनन्द और पश्चाताप में घोलता रहता। तब, उसका आध्यात्मिक निर्देशक, उसको अपनी आसक्ति को सहन करने की अनुमति देता, उसने उस प्रतिदिन की घृणा की आदत बना ली थी जिसे वह विश्वास के बहाव में मानता रहता जो धार्मिक लज्जा से भरा होता। वह बहुत झुक कर ईश्वर को याद करता, जैसे कोई पश्चाताप करने वाला दुःख सहन कर रहा हो। वह उस घृणित वेदना को सहन कर रहा था। यह दुःख बढ़ता जा रहा था। वह एक विश्वास करने वाले के भावों को बढ़ा रहा था, जिसका गम्भीर और भरा हुआ हृदय था और जो एक वेश्या की विक्षिप्त इन्द्रियलिप्सा में घिर गया था। उसमें जो सर्वाधिक वेदना भरती थी वह इस बात से कि वह औरत निरन्तर विश्वासघात करती थी; क्योंकि वह औरों का साझीदार बने ऐसा अपने को नहीं बना पाता था तथा उस औरत की उद्दण्ड आसक्ति को नहीं समझ पाता था। वह दैविक प्रेम की लालसा करता था, सदा से और उससे भी! इस पर भी, उस औरत ने सदैव भक्ति और निष्ठा की कसम खायी। वह उसके लिये उसे पैसा देता था। किन्तु वह सदैव अनुभव करता था कि वह झूठ बोल रही है, अपने को रोक नहीं पाती, अपने को अपने परिचितों और सड़क पर चलने वालों को अर्पित कर देती है जैसे कोई अच्छा जानवर अपनी नग्नावस्था में रहने के लिये पैदा हुआ हो।

एक सुबह उसने फोक्रामेंट को विचित्र समय में नाना के घर से निकलते देखा; उसने स्पष्टीकरण चाहा! वह तुरन्त उत्तेजना में भर गयी,

जैसे उसकी ईर्षा से ऊब रही हो। पहले से ही अनेक अवसरों पर वह बहुत भली बन चुकी थी। उदाहरणार्थ, उस रात्रि जब काउन्ट ने उसे जार्ज के साथ पकड़ लिया था, नाना ने प्रथम ही उन सबको निबटा कर समझौता कर लिया था—अपने अपराध को स्वीकार करते हुए, उसको दुलार और मीठे शब्दों से लादते हुए और उस बात को भूल जाने में सहायता करते हुए। किन्तु फिर भी औरत को न समझ सकने की अपनी जिद में वह उसे तंग करता है और तभी करुणापूर्वक नाना ने कहा—

"जी हाँ, मैं फोक्रामेंट की पत्नी बनी। और आगे? हः क्या वह तुम्हारे बालों को गोंद से सीधा कर रहा है, मेरे नन्हे मुफ...!"

वह पहला अवसर था जब उसने उसे "नन्हे मुफ..." कह कर सामने सम्बोधित किया था। काउन्ट क्रोधावेग में उफन रहा था और उसकी कसमों की धृष्टता को समझ रहा था और जब उसने अपनी मुट्ठियाँ भींचीं तो वह उसके पास गयी और उसके चेहरे को ग़ौर से देखा।

"अब बहुत हो चुका, तुम सुनते हो? यदि तुमको यह अच्छा नहीं लगता तो कृपा करके यहाँ से चले जाइये। मैं अपने ही घर में तुम्हारा झगड़ा पसन्द नहीं करती। समझ लो कि मैं जैसा चाहूँ वैसा करूँ इसके लिये मैं स्वतन्त्र रहना चाहती हूँ। यदि कोई आदमी मुझे आनन्द देता है तो मैं उसे यहाँ बुलाऊँगी। ठीक, यही मैं कहना चाहती हूँ। और तुमको तुरन्त अपना निश्चय कर लेना चाहिये, हाँ या नहीं, दरवाजा खुला हुआ है।"

वह गयी और दरवाजा खोल आयी। वह गया नहीं। और यह उसके साथ वैसा तुच्छ व्यवहार करने का और अधिक स्वभाव बन गया था। निष्प्रयोजन, किसी भी छोटे-मोटे झगड़े पर ही, नाना उसे उसका चुनाव समझा देती और कुछ बहुत ही घृणित बातें कह डालती। आह, ठीक है, वह सदैव ही उसको ढूंढ़ती रहेगी जो उससे अच्छा हो। ढूंढ़ने के लिये उसके पास न जाने कितने लोग हैं। कोई भी सड़क से आदमियों को ढूंढ़ ला सकता है, जितने भी कोई चाहे। और लोग उतने मूर्ख नहीं है जितना वह, उसका रक्त धमनियों में खौल रहा था। उसने अपना सिर झुका लिया—वह अच्छे दिनों की प्रतीक्षा

करता रहा, जब नाना धन की आवश्यकता में होगी, तो वह दुलार टपकावेगी और तब वह सब कुछ भुला देगा—एक रात्रि का प्यार, एक सप्ताह के अत्याचार और व्यथा को बराबर कर देगा। अपनी पत्नी से उसका पुनर्मिलन—उसके घर में असह्य हो रहा था। काउंटेस, उस फाचरी के द्वारा परित्यक्त, जो रोज के पूर्ण प्रभाव में हो गया था, अन्य अनैतिक सम्बन्धों में अपने को भुला रही थी। वह अपनी चालीस वर्ष की निराशाओं के आक्रमणों में पिस रही थी, उदास और घर को अपने रहन-सहन के ढङ्ग के अनुसार एक उत्तेजनामय हलचल में घेरे रहती थी। शादी के पश्चात् स्टेला ने अपने पिता को नहीं देखा था। वह छरहरी और आकर्षणहीन लड़की अचानक बदल कर एक पूर्ण विकसित स्त्री के रूप में लोहे के सदृश कठोर संकल्प की हो गयी थी और इतनी तीव्र कि डागनेट उसके सामने काँपता था। अब वह उसके साथ गिर्जाघर जाता था, पूर्ण परिवर्तित और अपने श्वसुर से बड़ा रुष्ट जो कि उन्हें बरबाद कर रहा था और उन स्त्रियों को तिरस्कृत कर रहा था। केवल, मोशियो वेनट काउंट के प्रति स्नेहमय बना रहा था और अपना समय देता था। उसने नाना के यहाँ भी प्रवेश पा लिया था और दोनों मकानों में जाता आता रहता था। और मुफट अपने मकान में इतना दयनीय, उदास तथा लज्जा से खदेड़ा हुआ था कि वह एवेन्यू विलियर्स के अपमान में रहना अधिक श्रेयस्कर मानता था।

तुरन्त, नाना व काउंट के बीच एक ही प्रश्न रह गया, यह था पैसे का। एक दिन, एक बार जब उसने यह निश्चित वचन दिया कि वह दस हजार फ्रैंक लावेगा तो काउंट ने साहस करके निश्चित समय पर खाली हाथों नाना के समक्ष अपने आप को प्रस्तुत किया। पिछले दो दिनों से नाना अपने दुलार से उसे अत्यधिक उत्तेजित किये हुये थी। वचन का उस प्रकार भंग होना, बहुत से छोटे-मोटे उपायों का व्यर्थ चला जाना—उस सबने नाना को रोष में बौखला दिया और वह बकझक करती रही, वह एकदम सफेद पड़ गयी।

"हः तुम्हारे पास अब पैसा नहीं है! तो, मेरे 'छोटे मुफ······' जहाँ से आये हो वहीं लौट जाओ और उससे भी जल्दी। कैसा नीच आदमी

है ! वह मुझे प्यार करने जा रहा था । 'पैसा नहीं तो कुछ भी नहीं !' पैसा नहीं तो कुछ नहीं मिलेगा । तुम समझ रहे हो ।"

उसने कुछ स्पष्ट करना चाहा । परसों वह रुपये पावेगा । किन्तु उसने उग्रतापूर्वक उसे रोका—

"और मेरे बिल जिनका भुगतान करना है । वे सब मेरे सामान पर कब्जा किये हैं जब कि ये लार्डशिप हाथ हिलाते चले आ रहे हैं । तुम, जरा अपने आपको देखो । क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे लिये तुम्हें प्रेम करती हूँ, जबकि तुम्हारा मुँह चौघड़े का सा है ? जो भी स्त्री को धन देता है वही उसे रखता है । नीच ! यदि आज रात को दस हजार फ्रैंक न लाये तो तुम मेरी उँगली का पोर भी न चूम सकोगे । सच ! मैं तुम्हें तुम्हारी बीबी के पास भेज दूँगी ।"

उस रात्रि वह दस हजार फ्रैंक लाया । नाना ने अपने ओठ बढ़ा दिये । काउन्ट ने एक दीर्घ चुम्बन लिया जिसने उसकी वेदना के दिनों को सन्तुष्ट किया । उस नौजवान स्त्री को जो सर्वाधिक रोष होता था वह इस पर कि वह सदा उसकी स्कर्ट से चिपकता था । नाना ने मोशियों वेनट से उसकी शिकायत की कि वह 'नन्हे मुफ...' को फुसला कर काउन्टेस के पास ले जावे । उनके पुनर्मिलन से कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ प्रतीत होता है और उसमें उसका भी कुछ सम्बन्ध था इसका उसे खेद है क्योंकि वह सदैव उसके पीछे लगा रहता था । क्रोध से तमतमाकर, जब कुछ दिनों नाना अपना स्वार्थ भूल जाती तो सोचती कि ऐसी गन्दी चाल खेलनी चाहिये कि फिर कभी वह उसके पास न आ सके । किन्तु जब कभी वह उसे तिरस्कृत करती, अपनी जाँघों को थपथपाते हुए, तो वह उसके चेहरे पर तमाचा भी जड़ सकती थी—तब भी वह वैसा ही रहता और धन्यवाद देता । फिर धन के प्रश्न को लेकर अब उनमें बराबर झगड़े होते रहे । वह उसको अन्ट-सन्ट बकती; प्रति क्षण घृणित रूप से लोभी दिखती; और इस बात से प्रसन्न होती कि उसने काउन्ट से कह दिया है कि केवल धन के अतिरिक्त और किसी कारण से वह उसे सहन नहीं करती; यह कि वह इसकी किंचित भी

चिन्ता नहीं करती है; वह दूसरे को स्नेह करती है और वह कितनी भाग्यहीन है कि ऐसे दुष्ट के साथ भी उसे निभाना पड़ता है।

राज्य-सभा में भी उसे कोई नहीं चाहता था जहाँ इस बात की चर्चा थी कि उससे अनुरोध किया जाय कि वह अपना त्यागपत्र भेज दे। महारानी ने कहा था : "वह बड़ा घृणित है।" और यह सत्य था। और नाना सदैव उस शब्द को जैसे झगड़ों में गोली की तरह दाग देती थी।

"सचमुच ! तुम बहुत घृणित हो।"

अब वह अपने में किंचित भी काबू न रख पाती थी, उसने पूर्ण निर्बन्धता ले रक्खी थी। प्रति दिन झील के किनारे, बायस तक वह घूमने जाती और नये २ परिचित बनाती जो स्वयं दूसरी जगहों पर आत्मीयता पाते। पुरुषों के लिये वह एक बड़ा काँटे से पकड़ने वाला मैच चल रहा था, भरे दिन में धरपकड़ की क्रिया, एक बनी-ठनी आकर्षक वेश्या के द्वारा पकड़ना और टाँग देना, जो सहिष्णुता की मुस्कराहट के बीच पेरिस की चमकती विलासिता में चलता रहा। डचेज एक दूसरे से, उसको दिखा कर, कानाफूँसी करती, धनवान व्यापारियों की पत्नियाँ उसके टोप की नकल करतीं, कभी-कभी जब उसकी लैन्डो पास से निकल जाती तो भव्य पुरुषों की लम्बी पंक्ति, उन लोगों की जो समस्त योरुप का धन अपनी तिजोरियों में रक्खे रहते थे और वे मिनिस्टर जिनकी उँगलियों पर आधा पेरिस नाचा करता था; और नाना बायस के इस सब संसार का एक भाग थी। उसने वहाँ एक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था और हर प्रकार की राजधानियों के लोगों में परिचित हो गई थी, विदेशियों में उसकी अच्छी माँग थी। वह अपने व्यभिचार के पागलपन को बढ़ा रही थी—उस भीड़ की तड़क-भड़क में जो एक राष्ट्र का परम आनन्द व सुख-समृद्धि थी।

तब रात्रि के गहन सम्पर्क में संगीत की चिड़िया को, जिसकी बात वह स्वयं अगले दिन भूल जाती थी, बड़े-बड़े जलपान गृहों में ले जाते—बहुत बार केफे मेड्रिड में जबकि मौसम सुहाना होता।

राजदूतों का सारा स्टाफ वहाँ कलुषित होता था। वह लूसी स्टेवर्ट के साथ भोजन करती, जिसने फ्रांस की भाषा की हत्या की थी, जो प्रसन्न होने के लिये धन से लादी जाती थी और जो लड़कियों को निश्चित् धन पर ले जाती थी—इस निर्देश पर कि वे बड़ी मोहक होनी चाहियें जबकि वे स्वयं ही प्रत्येक वस्तु से इतने खिन्न तथा उतरे हुए थे कि उन्हें कभी छू भी न पाते। और लड़कियाँ समझतीं जैसे वे किसी आनन्द-उपभोग के लिये जा रही हैं। अब वे घर आतीं, इस पर प्रसन्न होकर कि उनके साथ इतनी घृणा-पूर्वक व्यवहार किया गया था, और तब अपनी रुचि के किसी प्रेमी के साथ रात्रि व्यतीत करतीं।

जब नाना ने अपने आप कुछ नहीं बताया तो काउंट मुफट ने भी, जो कुछ चल रहा था, उस सबसे अनभिज्ञता का बहाना किया। वह अपने अस्तित्व की प्रतिदिन की दयनीयता से भी दुःखी था। एवेन्यू विलियर्स की कोठी एक जीते-जी नरक बनती जा रही थी; एक पागलखाना जहाँ दिनभर, प्रतिपल उन्माद की विभीषिका, घृणित दृश्यों को प्रकट करती थी। नाना अब अपने नौकरों से झगड़ा करने पर उतर आई थी। पहले वह अपने कोचवान चार्ल्स से विशेषतः प्रसन्न रहती थी। जब कभी वह किसी जलपान-गृह के बाहर रुकता था तब वह बैरा द्वारा उसके लिये जलपान भेज देती थी तथा अपनी लैंडो में, अधिक प्रसन्नता में, बातचीत करती जाती थी—यह सोच-कर कि वह बड़ा मसखरा है। जब सड़क पर कोई रुकावट आ जाती तो वह अन्य कोचवानों के प्रति बड़े अपशब्द कहता। परन्तु अचानक, अकारण, नाना पूरी तरह बदल गई और उसको मूर्ख समझने लगी। अब वह सदैव घास, दाना और रोटी के लिये भी झक-झक करती; जानवरों के प्रति प्रेम होते हुए भी वह सोचती कि उसके घोड़े बहुत खाते हैं। अन्त में एक दिन, निबटारा करते समय, उसने उसे लूटने के लिये दोषी ठहराया। चार्ल्स भी आवेश में इतना बढ़ गया कि उसने स्पष्ट रूप में उसे वेश्या कहकर सम्बोधित किया। जो भी हो, उससे तो घोड़े अच्छे थे कि वे हरेक को अपने आसपास तो नहीं घुसने देते। नाना ने भी उसी भाँति बकवास की और तब काउन्ट को

उन्हें पृथक् करना पड़ा और उसने कोचवान को कोठी के बाहर निकाल दिया। नौकरों के झमेले का यह प्रारम्भ था। हीरे की चोरी के बाद विक्टोरिन और फ्रांकोइस अपने आप भाग गये ; यहाँ तक कि जुलियन भी भाग गई और इस प्रकार की अफवाह फैली कि काउंट ने उसे भगा दिया है तथा उसे बहुत सा धन दिया है क्योंकि मैडम उसे बहुत चाहती थी। हर सप्ताह—नौकरों के हॉल में नये चेहरे दिखाई देते। वैसी बर्बादी पहले कभी नहीं हुई। केवल 'जो' ने अपना स्थान बनाये रक्खा, अपनी स्पष्ट नीयत सहित। उसकी केवल मात्र चिन्ता यह थी कि वह किसी प्रकार उस गड़बड़ी को सँभाले—उस समय तक जब तक अपनी प्राचीन योजना के अनुसार वह इतना धन न बचा ले कि स्वतन्त्र-रूप से कहीं जम सके।

वे तो केवल क़सम खाने भर के किस्से थे। काउन्ट अपनी मर्यादा के रहते भी मैडम मेलोर के साथ—जो एक महामूर्खा थी—बिजिक खेलता था। वह मैडम मेलोर और उसकी व्यर्थ बातों में समय गँवाता। नन्हे लुई और उसकी दुःख भरी व्यथा को सुनते हुए उस बच्चे की जिसे बीमारी ने निगल लिया था—वे दुर्गुण जो उसके किसी अज्ञात पिता से मिले थे। किन्तु उसे इससे भी तुच्छ अनेक बातें सहन करनी पड़ती थीं।

एक रात्रि, एक दरवाजे के पीछे, उसने नाना को अपनी नौकरानी से तीव्रतापूर्वक कहते सुना था कि एक नकली-धनवान उसे अभी-अभी अन्दर साथ लाया है। हाँ, एक सुन्दर युवक है जो कहता है कि वह अमेरिकन है और अपने देश में उसकी सोने की खानें हैं। वह एक निम्न कोटि का आवारा था जो उसे (नाना को) सोती छोड़कर भाग गया और एक पैसा भी न छोड़ गया और अपने साथ सिगरेट के कागज का एक पैकेट भी लेता गया। तब काउन्ट अति दुःखी व क्षीण हो पुनः अपने अँगूठों के बल सीढ़ियों से नीचे सरक गया जिससे वह उस घटना की अज्ञानता दिखा सके।

दूसरे अवसर पर उसे कष्ट करके सब कुछ जानना पड़ा। एक म्युजिक-हॉल में नाना एक गायक पर आसक्त होकर तथा उससे तिरस्कृत होकर, उदास भावावेश में, आत्म-हत्या करने पर तुल गई। दियासलाइयों को

गिलास में घोलकर वह पानी पी गई और परिणाम स्वरूप सख्त बीमार हो गयी किंतु मरी नहीं। तत्पश्चात काउन्ट को उसकी सेवा-सुश्रूषा करनी पड़ी। उसे नाना की कामोत्तेजना की वह कथा भी सुननी पड़ी जो आँसुओं और कसमों से भरपूर थी—यह कहते हुए कि वह पुरुषों की कभी परवाह न करेगी। उन सूअरों के प्रति घृणा सहित—जैसा वह पुरुषों के लिये कहती थी; —रह कर वह अपना हृदय स्वतन्त्र नहीं रख सकती—अपना कोई न कोई प्रेमी अपनी स्कर्ट में चिपकाये रहकर भी और शब्दों से व्यक्त न किये जा सकने वाले अश्लील कर्मों में डूबकर भी जो उसके थके शरीर के चरित्रहीन जायके थे।

जब से 'ज़ो' ने वहां की देखभाल बन्द करदी थी और चली गई थी मकान का अच्छा प्रबन्ध इस सीमा तक समाप्त हो गया कि मुफ्ट एक दरवाजा खोलने का साहस न कर सकता था, एक पर्दा नहीं हटा सकता था तथा खाने की आलमारी को भी न छू सकता था। वह सब पहले की सी व्यवस्था अब कार्य नहीं कर रही थी। पुरुष, हर ओर लटके दिखाई देते थे। हर मिनट वे एक दूसरे से टकराते थे। अब वह जानबूझ कर, खाँस कर कमरे में घुसता था क्योंकि एक संध्या उसने उस नवयुवती को फ्राँसिस की गर्दन पर हाथ फैलाये देखा था। वह कुछ मिनट के लिये ड्रेसिङ्ग-रूम से हट आया और गाड़ी लाने का आदेश दिया। तब नाई मैडम के बालों को कुछ अन्तिम हाथ लगाता रहा। उसके पीछे ये हर समय के कार्य थे। हर गन्दे कोने में सुख लूटा जाता था—जल्दी-जल्दी, उसके (नाना के) सेमीज में या बहुमूल्य पोशाक में और किसी के भी द्वारा जो उसके साथ होता। और अपनी लूट से प्रसन्न होकर वह काउन्ट के निकट आती, अपना चेहरा एकदम लाल किये हुए। उसके साथ किसी भी आनन्द का प्रश्न नहीं था; वह एक ऐसा घृणित शैतान था।

अपनी उस ईर्षा की व्यथा में, वह दुःखी व्यक्ति तब कुछ सन्तोष पाता जब वह नाना और सैटान को एक साथ अकेले छोड़ देता। वह इस मामले में उन्हें बढ़ावा दे सकता था जिससे पुरुष नाना से दूर बने रहें।

विद्रोह के दौरे, अब भी काउन्ट मुफट में आते रहते थे। वह अन्य लोगों की भीड़ सहन कर लेता था किन्तु जब उसका कोई मित्र अथवा परिचित उसे धोखा देता तब वह बौखला जाता था। जब उसे नाना के साथ फ़ोकामेंट की घनिष्ठता ज्ञात हुई तो वह और अधिक खिन्न हुआ। उस नौजवान का विश्वासघात उसे इतना घृणित प्रतीत हुआ कि उसने उसके साथ द्वन्द्व-युद्ध करने की ठानी। जब वह यह न सोच सका कि इस मामले में उसका सहयोगी कौन होना चाहिये तो उसने लेबार्डेट से सलाह ली। वह इस विचार से इतना विस्मित हुआ कि हँसे बिना न रह सका।

"नाना के लिये द्वन्द्व ! लेकिन मेरे भाई ! तुम पर समस्त पेरिस हँसेगा। कोई भी नाना के लिये नहीं लड़ सकता; यह बड़ा हास्यास्पद होगा।"

काउन्ट को बहुत क्षोभ हुआ। उसने एक उग्र भाव प्रदर्शित किया। "ठीक है, तब मैं सड़क पर सबके सामने उसको ठोकूँगा।"

एक घंटे तक लेबार्डेट उससे बहस करता रहा। किन्तु वह सब कहानी बड़ी भद्दी होगी। संध्या तक उस भेंट का सत्य कारण सब लोग जान जायेंगे। और वह समाचार पत्रों की हँसी का कारण बनेगा। अब लेबार्डेट ने अन्तिम निर्णय देते हुए कहा :

"असम्भव ! यह बड़ा लज्जास्पद होगा।"

प्रत्येक बार काउन्ट पर वे शब्द तेज चाकू की सी चोट देते रहे। वह उस स्त्री के लिये लड़ भी नहीं सकता जिसको वह स्नेह करता है। इसके पूर्व कभी भी उसने अपने प्रेम की स्थिति इतनी दयनीय न देखी थी, वह दैविक-भावना, जो आनन्द की भावना से हृदय की भावना को पीस रही थी, वह उसका अन्तिम विद्रोह था; उसको सन्तोष मिलना ही चाहिये। उस समय से वह उस मित्रों की भीड़ को सहायता देता रहा, उन समस्त लोगों को जो उस कोठी में छिपकर रहते थे।

कुछ ही महीनों में नाना उन सब को निगल गई—एक के बाद दूसरा। वैभव-विलास की वह बढ़ती चाह, उसकी भूख को बढ़ाती रही;

वह आदमी को अपने दाँतों की एक ही कड़क में साफ कर देती थी। पहला फोक्रामेंट था जो पन्दरह दिन भी न टिक सका। उसने जलसेना (नेवी) को छोड़ने के स्वप्न देखने प्रारम्भ कर दिये। दस साल के सामुद्रिक व्यापार के जीवन में संचित तीस हजार फ्रैंक जिन्हें वह अमरीका में खर्च करना चाहता था, और उसकी बुद्धि तथा कृपण प्रवृत्ति सब शान्त हो गई। उसने सब कुछ दे दिया, प्रवास-स्थान के बिलों के हस्ताक्षर तक और इस प्रकार उसने अपने भाग्य का निपटारा कर लिया। जब नाना ने उसे सीधे निकाल बाहर किया, तब उसके पास एक पाई भी शेष न बची थी। जैसे भी हो, उसने अपने को बड़ा सहृदय प्रदर्शित किया और नाना ने उसे सलाह दी कि वह अपने जहाज पर लौट जाय। जिद करने से क्या लाभ? चूँकि उसके पास पैसा नहीं बचा था तब वह उसके साथ कैसे रह सकता था। उसको यह समझ लेना चाहिये और बुद्धिमानी से काम लेना चाहिये। एक सर्वनाश को पहुँचा व्यक्ति नाना के हाथ से गिर गया...वैसे ही जैसे पका फल जो भूमि पर अपने आप लुढ़क जाता है।

आगे, नाना ने स्टेनियर को बिना तिरस्कार के सँभाला, बिना स्नेह के भी। वह उसे गन्दा ज्यू कहती थी वह अपनी पुरानी घृणा को सन्तुष्ट कर रही थी जिसके सम्बन्ध में वह ठीक से अपने आप को भी न समझा पाती थी। वह मोटा था, उद्दण्ड भी और उसने उसे उस प्रशियन की शीघ्र समाप्ति करने के लिये दोहरी शक्ति से घुमाया। उसने साइमन को छोड़ दिया था जिसके बासफोरस का सट्टा संकट में था। भारी-भारी खर्चों से नाना ने उसकी तबाही जल्दी बुला दी। एक महीने तक वह कौतुक दिखाता हुआ घिसटता रहा। उसने समस्त योरुप को अत्यधिक प्रचार के द्वारा छा दिया तथा वह पोस्टर, विज्ञापन, प्रासपेक्टस और बड़े दूर देशों से धन खींचता रहा। वह सब धन—वह एक सटोरिये की एक कौड़ी जो निर्धन की एक मोहर होती है—एवेन्यू डि० विलियर्स में स्वाहा होगया। तब अलसाक के एक लोहा ढालने वाले के यहाँ भी उसने साझा किया। वहाँ देश के एक कोने में मजदूर—कोयले की धूल से काले, पसीने में तर जो रात-दिन

अपने माँस को कसते व हड्डियों को चरचराते सुनते थे—नाना के आनन्द के हेतु बने हुए थे। वह एक बड़ी आग की तरह सब निगल गई—बार्स की चोरियाँ और मजदूरों की कमाई।

इस बार उसने स्टेनियर को समाप्त कर दिया। उसने (नाना ने) उसे फुटपाथ पर लौटा दिया, हड्डी तक चूस कर, इतना खोखला कि वह डाकेजनी को सोच भी न सके। अपने बैंकिंग के कारबार के असफल हो जाने पर वह पागल हो गया। पुलिस के नाममात्र से वह काँप जाता था। वह दिवालिया बना दिया गया, केवल शब्द 'धन' उसे घबड़ा देता और वह भय के विचार में भर जाता—वह जिसने लाखों अपने हाथ में संभाले थे। एक रात्रि, जब वह नाना के साथ था, चीख उठा। उसने नाना से सौ फ्रैंक अपने नौकरों को देने को उधार माँगे और नाना उस भयंकर पुराने आदमी की समाप्ति से प्रभावित होकर और आनन्द मान कर—जो विगत बीस वर्षों से पेरिस के बाजारों का मक्खन निकाल रहा था—धन ले आई और बोली :

"तुम जानते हो, मैं तुम्हें यह इसलिये दे रही हूँ कि यह बड़ा रोचक है। लेकिन सुनो, मेरे छोटे आदमी! तुम उस उम्र के नहीं हो कि मैं तुम्हें रक्खूँ। तुमको कुछ और धन्धा सोचना चाहिये।"

तब नाना तुरन्त लॉ फैलो पर फाँद पड़ी। वह बहुत दिनों से उस सौभाग्य की खोज में था कि वह उसके द्वारा विनाश को प्राप्त हो जिससे वह सम्पूर्ण रूप से मगन हो ले। यही वह चाहता था। उसे एक ऐसी स्त्री चाहिये थी जो उसे बाहर ले जाय। केवल दो महीनों में समस्त पेरिस उसे जान लेगा और वह अपना नाम समाचार पत्रों में पढ़ेगा। छै हफ्ते बहुत थे। उसको उत्तराधिकार में मिली सम्पत्ति में कुछ जमीन थी, पर्वत, चरागाह, मैदान और जंगल। एक के बाद एक उसे जल्दी २ बेचना पड़ा। हर दाँव पर नाना एक एकड़ निगल जाती। सूरज के नीचे चमकती वह लहलहाती अंगूर की बेल, वह ऊँची घास जिसमें गायें कन्धों तक ढक जाती थीं, सब चला गया जैसे किसी नरक में घिर गया हो। और वहाँ एक झरना था, चूने की

एक खान और पानी की तीन चक्कियाँ वे सब विलीन हो गयीं। नाना आक्रमणकारिणी फौज की तरह उसको रौंद गई—टिड्डी-दल के बादलों की भाँति जो अपनी उड़ान में समस्त प्रदेश को नष्ट कर देते हैं वैसे ही जैसे अग्नि की लपटें। वह उस समस्त भूमि को जलाकर राख कर देती जहाँ उसके छोटे पैर पड़ते। खेत के खेत, चरागाह—वह उत्तराधिकार की उस सब सम्पत्ति को अपने ढंग से कुतर गई, बिना यह देखे कि वह किसलिये है, उसी प्रकार जैसे वह भुने हुए बादामों के भरे थैले को चबा डाले, जो उसके घुटनों पर रक्खा हो, उसके भोजन के साथ। वह किसी अन्तिम फल का विषय नहीं था; वह केवल मिठाइयाँ थीं। किन्तु एक रात्रि वहाँ केवल छोटा जंगल रह गया। नाना उसे तिरस्कार के अहंकार में निगल गई क्योंकि वहाँ तो मुँह खोलने का कष्ट करने की भी आवश्यकता नहीं थी।

लॉ फेलो उद्दण्डतापूर्वक हँसा जब उसने अपनी घूमने वाली छड़ी की गाँठ को चूसा। कर्ज उसे दाब रहे थे; उसके पास अब सौ फ्रैंक की आमदनी भी शेष न थी। उसने यही उपयुक्त समझा कि अब गाँव लौट जाय और अपने एक सनकी चाचा के पास रहे। उसे अब कोई मतलब नहीं। अब वह मगन था; फिगारो ने दो बार उसका नाम छापा था। अपनी पतली गर्दन सहित, जो उसके कालर से ऊपर उठ जाती थी और कुछ आगे की ओर झुकी रहती थी, उसकी कमर एक बास्कट से कसी रहती थी। वह इधर-उधर घूमता और तोते की तरह बोलता और जंगल की कठपुतली की भाँति मलिनता प्रकट करता जिसके कोई भावनायें न हों। नाना ने, जिसे उसने एक बार अधिक रुष्ट कर दिया था, उसे पीट कर अन्त किया।

फाचरी जैसे भी हो, लौट आया था। वह अपने भाई के द्वारा लाया गया था। भाग्यहीन फाचरी इस समय एक प्रकार से पारिवारिक व्यक्ति बन गया था। काउन्टेस से सम्बन्ध-विच्छेद कर वह रोज के हाथों में था जो उसे अपना वास्तविक पति मानती थी। मिगनन मैडम का केवल घर का गुमास्तामात्र था। स्वामी की भाँति रह कर पत्रकार रोज से झूठ बोलता और जब कभी भी वह उसे धोखा देता तो हर प्रकार की सतर्कता बर्तता—

एक पति की सी ठीक नाप-तोल के साथ जो बाद में समझौता करने की इच्छा रखता। नाना की विजय थी—उसको डसवाने और उस समाचार-पत्र को निगलने में जिसे उसने अपने एक मित्र के पैसे से प्रारम्भ किया था। वह खुले तौर पर उसके साथ नहीं गई। इसके विपरीत नाना इस बात में प्रसन्न होती रही कि वह उसके साथ उस भद्र पुरुष का सा व्यवहार रक्खे, जो अपनी गति-विधियों को छिपाकर रखते हैं। जब कभी भी नाना रोज के सम्बन्ध में कहती तो वह कहता : "वह बेचारी रोज़ ! वह समाचार-पत्र कुछ महीनों तक उसे फल देता रहा। समस्त देश में उसके ग्राहक थे। वह हर वस्तु लेती थी---मुख्य लेख से लेकर थियेटर की समालोचना तक। फिर सम्पादकों को थका कर, व्यवस्थापकों को अस्त-व्यस्त कर, उसने अपनी एक बड़ी आसक्ति को शांत किया—कोठी के किनारे के एक वसन्त-कालीन बाग को, जहाँ मुद्रण की व्यवस्था थी, भी समाप्त करके।

एक दिन, पत्रकार के द्वारा उत्तेजित किये जाने पर नाना ने शर्त बदी कि वह लॉ फेलो के मुँह पर एक थप्पड़ लगावेगी। उसी दिन संध्या को उसने वैसा किया। वह उसे पीटती ही रही जो उसे बहुत आनन्ददायक लग रहा था। वह इस बात को सोचकर प्रफुल्लित हो रही थी कि पुरुष कितने कायर होते हैं। वह उसे अपनी पीटने की मशीन कहा करती और कहती कि आओ और थप्पड़ खाओ—थप्पड़ जो उसके हाथ लाल कर देते थे क्योंकि वह उस कवायद से परिचित न थी। लॉ फेलो स्वयं अपने मूर्खतापूर्ण ढङ्ग से हँसता रहता—जबकि उसके नेत्र आँसुओं से भरे होते। वह अपनापन, उसे भला लगता था। वह उसे बहुत अच्छा भी कहता था।

"तुम नहीं जानतीं", उसने एक रात्रि को थप्पड़ों की बौछार के पश्चात् कहा : "तुमको मेरे साथ शादी करनी चाहिये थी। ह: क्या हम एक सफल दम्पत्ति नहीं बनते ?"

यह कोई रिक्त व्यंग्य नहीं था। वास्तव में उसके हृदय में वैसी भावना बैठी हुई थी कि उस विवाह से वह समस्त पेरिस को चकित कर देगा। नाना का

पति—हः, हः, कैसा लगेगा ? जैसे एक भारी दैवी-भावना की बात। किन्तु नाना ने उसे बड़े सुन्दर ढङ्ग से दुतकार दिया :

"मैं तुमसे शादी करूँगी ! यदि मेरे मन में इस प्रकार के विचार की किंचित भी इच्छा होती तो बहुत दिन हुए मैं एक पति ढूँढ़ चुकी होती। और एक ऐसा आदमी जो तुमसे बीस गुना अधिक महत्व का होता। मेरे पास प्रस्तावों का अन्त नहीं था। आओ, सुनो : फिलिप, जार्ज, फोकामेंट, स्टेनियर, चार—बिना उनको जोड़े जिन्हें तुम जानते नहीं। वे सब एक ही गीत गाते हैं। मैं कभी भी उनके साथ ठीक नहीं रह सकती जब तक कि वे एक साथ न गावें—'क्या तुम मुझसे शादी करोगी ?" ··· "क्या तुम मुझसे शादी करोगी ?" वह उग्र होती जा रही थी। तब वह रोष में फूट पड़ी : "हाँ, नहीं, मैं कभी नहीं ? क्या, मैं कभी भी वैसे जीवन के लिये बनाई गई हूँ जैसा वह रहता है ? मुझे देखो। मैं कभी भी 'नाना' न रह पाती यदि एक पति की जीन कस लेती। और, साथ ही, यह बहुत कष्टप्रद होता।"

तब उसने भूमि पर थूका ; तिरस्कारसहित उसने अपने रुँधे गले को साफ किया जैसे उसने समस्त भू-मण्डल की गन्दगी देख ली हो।

एक रात्रि, लॉ फेलो गायब हो गया। एक सप्ताह बाद यह सुना गया कि वह गाँव में अपने चाचा के पास रह रहा है, जिसे खेती-बाड़ी की सनक है। उसने अपना जोड़ा भी पा लिया। उसने अपनी एक चचेरी बहन से—जो देखने में बड़ी भद्दी थी और बहुत अधिक धर्मभीरु—शादी कर ली। नाना उसके लिये अधिक नहीं रोई। उसने साधारणतः काउन्ट से कहा :

"हाँ, मेरे 'नन्हे मुफ···' एक और प्रतिद्वन्द्वी कम हुआ। आजकल तुम्हारा भाग्य अच्छा है। किन्तु वह बहुत गम्भीर हो रहा था। वह मुझसे शादी करना चाहता था।"

और जब वह पीला पड़ता गया तो नाना ने अपनी भुजायें हँसते हुए काउन्ट के गले में डाल दीं और अपनी प्रत्येक क्रूरता को दुलार से हटाती गई।

"और यह सब तुमको कष्ट देता है, यही न ! तुम नाना के साथ शादी नहीं कर सकते। जबकि वे सब प्रयत्न कर रहे हैं कि मैं उनके साथ शादी कर लूँ और तुम अकेले, एक किनारे पड़े कुपित हो रहे हो। यह सम्भव नहीं है, तुम तब तक प्रतीक्षा करो जब तक कि तुम्हारी पत्नी शिकायत करती रहे। आह ! जब तुम्हारी पत्नी को बड़बड़ाना होगा, तो क्या तुम मेरे पास दौड़े नहीं आओगे—क्या तब तुम अपने आप को मेरे चरणों में डाल दोगे और मुझे सब कुछ समर्पित करोगे—उसी अपने पुराने ढङ्ग से, सिसकियों से, आँसुओं से और शिकायतों से ? हः प्रियतम ! तब कितना सुन्दर होगा ?"

उसका स्वर कोमल होता गया और वह अपनी डरावनी खुशामद से उसे मूर्ख बनाती रही। काउन्ट अत्यधिक प्रभावित हुआ और जब वह उसके आलिंगनों का प्रत्युत्तर देता तो लज्जा में लाल हो जाता। तब नाना चीखी :

"वह सब शरारत है—यह सोचना कि मैंने ठीक सोचा है ! उसने वैसा सोच लिया है, जब तक उसकी पत्नी बड़बड़ावे तब तक वह प्रतीक्षा कर रहा है। आह ! यह बहुत है—वह औरों से अधिक बेईमान है।"

मुफट ने औरों को स्वीकार कर लिया था। और अब उसने अन्तिम रूप से अपनी उस मर्यादा की रक्षा की बात सोच ली थी कि वह नौकरों व अन्य यदा-कदा घर में आने वालों का स्वामी है—वह व्यक्ति जो अधिक दे रहा है, अधिकृत प्रेमी है। और उसका उद्रेक पहले से अधिक तीव्र हो गया। वह अपने स्थान को धन देकर प्राप्त किये हुए था, मुस्कानों को खूब धन देकर खरीद रहा था, किन्तु सदैव लूटे जाकर भी अपने धन का उचित भाग नहीं पा रहा था। यह एक प्रकार की बीमारी थी जो उसे खा रही थी। वह उससे कष्ट पाने को रोक नहीं सकता था। जब वह नाना के सोने के कमरे में पहुँचता तो एक मिनट के लिये खिड़कियाँ खोल देने में सन्तोष पा लेता कि दूसरों के द्वारा छोड़ी हुई गन्ध उड़ कर निकल जाय।

वह कमरा एक सार्वजनिक स्थान हो गया था। हर प्रकार के जूते निरन्तर प्रवेश-स्थान के निकट रखे रहते थे और किसी ने भी उस चिह्न को

नहीं देखा जो मार्ग को रोक रहा था। जो' उस धब्बे से बहुत दुःखी थी। वह मैडम के कमरे में बिना यह कहे कभी न घुसती :

"क्या तमाशा है कि वह मिटता ही नहीं है जबकि इतने लोग यहाँ आते जाते हैं।"

नाना, जो जार्ज के सम्बन्ध में अपनी सूचनायें पाती रहती थी, जो अपनी माँ के साथ लेस फान्डेट में स्वास्थ्य लाभ करने की स्थिति में था, प्रत्येक बार यही उत्तर देती :

"आह, तुमको उसके लिये समय देना चाहिये। वह पैरों के तले धीरे-धीरे हल्का पड़ता जा रहा है।

और सचमुच, प्रत्येक व्यक्ति—फोक्रामेंट, स्टेनियर, लॉ फेलो, फाचरी और अन्य—उस धब्बे का कुछ न कुछ अपने पैरों के तले में ले जाता था। और मुफट जो, 'जो' की ही भाँति उस धब्बे से परेशान था, उसको उसी प्रकार लाल रंग ने पढ़ता था। उसमें कोई छिपा हुआ भय भरा हुआ था और सदैव उस पर पैर रखने पर, वह अचानक उस भय से भर जाता कि किसी जीवित वस्तु को वह पीस रहा है—शरीर का एक नग्न अङ्ग वहाँ भूमि पर पड़ा है।

वह, धर्मभीरु हो रहा था तथा किसी तीर्थ-स्थान की भव्यता की झलक—जो अन्तर्ज्योति के रूप में मन को प्रफुल्लित किये हुए थी और जो एक भगवान पर विश्वास करने वाले आन्तरिक भावना सदृश थी—उसके हृदय के उत्साह सहित जैसे किसी चर्च में घुटनों के बल झुका खड़ा हो—से भर रहा था। वह वाद्य-ध्वनियों तथा धूप की सुगन्धि से मुदित हो रहा था।

और वह औरत, क्रोध की वेदना की भाँति ईर्षा की निरंकुशता में उसे भयभीत करके, कुछ सैकण्डों का आनन्द देकर, तब ऐंठते हुए घंटों का पीड़ित अत्याचार देकर, नरक के दर्शन व अपमान की ज्वाला सहित उस पर राज्य कर रही थी।

सदैव वही बुदबुदाहट, वही प्रार्थना, वही विवाद और एक शापित जीवन का सा भयंकर अपमान, उसके अस्तित्व के नीचे पिस रहा था।

मांसलता की चाहना, आत्मा की पुकार, प्रतीत होता था जैसे किसी वृक्ष का एक फूल हो। उसने प्रेम और विश्वास पर अपने आप को छोड़ दिया था, जिसका दोहरा लीवर—संसार को चेतना प्रदान करता है। सदैव विवेक से सोचे जाने पर नाना का कमरा उसमें पागलपन भर देता था। वह काँपते हुए उसके शक्तिशाली संकेत के समक्ष उसी प्रकार झुकता था जैसे उस अदृश्य की भव्यतासहित स्वर्ग के समक्ष झुकता हो।

जब नाना उसको इतना विनीत देखती तो वह अत्याचार पर उतरती। उसमें वह एक अन्दरूनी दोष होता था जो वस्तुओं का नाश करता था। वस्तुओं को बरबाद करना मात्र ही उसके लिये पर्याप्त न था, वह उन्हें दूषित भी करती थी। उसके कोमल हाथ, उनके पीछे विनाश के घृणित अवशेष के रूप में रह जाते थे। वे उससे भ्रष्ट हो जाते थे जिनको वे केवल छू कर नष्ट कर डालते थे। और वह, महामूर्ख, इस खिलवाड़ के समक्ष झुकता था, अपने महात्माओं की धुँधली स्मृति में डूबकर जिनको सिर की जुँओं ने खा डाला अथवा वे उसी को खाते थे जिसे वे छोड़ देते थे। जब वह उसे अपने कमरे में दरवाजे बन्द करके देखती, तब वह पुरुष की दुर्बलता की दावत खाती। पहले तो वह सब केवल एक मजाक था। वह काउन्ट को कभी हल्के से चपतिया देती और उसे तमाशे की बातें करने को विवश करती जैसे बच्चे की भाँति तुतला कर बोलना, वाक्यों को हकला कर बोलना।

"इस तरह कहो, और उस सब को भाड़ में झोंको! कोको! मैं चिन्ता नहीं करती।"

वह उसके शब्दोच्चारण की नकल करने की आज्ञा का पालन करता।

"और उस सबको भाड़ में झोंको? कोको! चिन्ता नहीं करती।"

वह बड़े बालों वाले शेर की भाँति, अपने चारों हाथ-पैरों से रोंएँदार कम्बल पर चल कर, सेमीज में घूमती और घुर्राती जैसे वह उसे चबाना चाहती है; और वह उसके कपड़ों को, मजाक में चाटती थी। फिर वह उठ बैठती और कहती:

"अब तुम्हारी बारी है। मैं शर्त बदती हूँ कि तुम मेरी भाँति बालों वाले शेर की नकल नहीं कर सकते।"

वह बड़ा आकर्षक था। वह उसे शेरनी बनकर प्रसन्न करती, अपना श्वेत त्वचा व सुनहले बालों और गर्दन सहित।

"क्या हम लोग उद्दण्ड नही हैं?" हः अन्त में वह कहती : "तुम्हें पता नहीं, तुम कितने भद्दे दिखाई देते हो। आह! अच्छा होता यदि वे अब तुम्हें केवल तूलरीज में देखते।"

किन्तु धीरे-धीरे इस प्रकार के खिलवाड़, भद्दे दृश्य बनते गये। यह उसकी क्रूरता नहीं थी; वह अब भी अच्छे स्वभाव की लड़की थी; उसकी पागलपन की सी सांस उभरती थी जो बन्द कमरे में बढ़ती और उत्तेजित होती थी। प्रतीत होता कि कामुकता उनमें पैंठती चली जाती और मांसलता की सन्निपात की सी उत्तेजना से वे भर जाते। एक दिन उसी प्रकार शेरनी का अभिनय करते-करते नाना ने काउन्ट को नीचे ढकेल दिया। वह एक फर्नीचर से टकरा गया। उसके ऊपर भी कोई भारी वस्तु आ पड़ी किन्तु वह फिर भी हँसता रहा। उस समय से जो स्वभाव नाना ने, लॉ फेलो के साथ उद्दड व्यवहार करके, बनाया था उसका प्रयोग वह काउन्ट पर भी करती रही और उसको जानवर की भाँति समझ कर व्यवहार करती रही तथा ठोकर लगाती रही।

"हुश! हुश! तुम तो घोड़े हो। हाः हः! निकम्मी घोड़ी! जल्दी भाग।"

और कभी वह कुत्ता बनता। वह अपना सुगन्धित रूमाल कमरे के दूसरे कोने में डाल देती और उसे अपने घुटनों और हाथों के बल रेंगते हुए उठाकर लाना पड़ता।

"पकड़ कर लाओ, सीजर! तुम जल्दी न दौड़े तो मैं एक बेंत लगाऊँगी। अच्छे कुत्ते, सीजर! सुन्दर, आज्ञाकारी जानवर! अब माँगो।"

और काउन्ट अपनी नीचता पर प्रसन्न होता और उस पशु-प्रवृत्ति से

आनन्द का अनुभव करता। वह और नीचे झुकने की आकांक्षा करके चिल्लाता :

"जोर से पीटो ! झुको, घुर्राओ ! मैं पागल हूँ, पीट कर भगाओ।"

नाना उस चंचलता में डूब जाती। उसने उससे कहा कि तुम अपनी उस भव्य राजदरबार की पोशाक में आओ। और जब वह अपनी उस राजसभा की पोशाक में तलवार लटका कर, टोप और सफेद बिजिस तथा सुनहली काम से भरा हुआ लाल रंग का कोट पहिन कर आया, जिसके बाँये हाथ की पूँछ पर वह सांकेतिक ताली के लटकने का चिह्न था, तब नाना ने उसकी खिल्ली उड़ाई। इस ताली ने उसे और प्रसन्नता दी और गन्दे वाक्यों के कहने के पागलपन से वह उत्तेजित हो उठी। सदा हँसने वाली, ऊँची बातों पर सदैव अश्रद्धा करने वाली और उस अधिकार के वैभव व चलन को पैरों तले रौंदने वाली नाना—काउन्ट को हिलाती रही और चुटकी काटती रही : "हः आगे आओ, तुम राजदरबारी !" और अपने शब्दों के साथ वह पीछे से ठोकर लगाती जाती थी। वह राजदरबार की भव्यता थी जो नाना को और ऊँचे सिंहासन पर बैठाल कर, भयसहित झुक कर, सलाम करके पागल बना रही थी।

नाना इस प्रकार समाज के सम्बन्ध में सोचती थी। वह उसका बदला था—अदृश्य पारिवारिक ईर्षा जो सम्पत्ति के रूप में रक्त से भरी हुई थी। जब वह राजदरबारी अपने कपड़े उतार कर, कोट को भूमि पर फैलाकर खड़ा होता तब नाना चीखती : 'कूदो !" फिर वह उस पर कूदता। वह थूकने के लिये चीत्कार भरती तो वह उस पर थूकता। तब वह चिल्लाती कि इसके स्वर्ण, इसके ईगल, इसके सजाव पर चलो और रौंदो, और वह वैसा करता। पीटो ! मसलो ! कुछ शेष नहीं है, सब पिस गया, धड़ाम हो गया। उसने एक राजदरबारी को वैसी सुगमता से गिरा दिया जैसे किसी सुगन्धि की शीशी को या मिठाई के डब्बे को। और उसे बदल कर गन्दगी का ढेर—सड़क के किनारे की धूल का ढेर—बना दिया।

और उस सुनार ने अपना वादा पूरा नहीं किया । जनवरी के मध्य के पहले उस पलंग की डिलीवरी नहीं हुई। उस समय मुफट नारमैंडी में था जहाँ उस विध्वंस की अन्तिम वस्तु को बेचने गया था । उसकी दो दिन से पहले लौटने की आशा नहीं थी; किन्तु अपना कार्य समाप्त करके वह शीघ्र लौटा और अपने घर रुये मिरोमेसलिन न जाकर वह पहले एवेन्यू विलियर्स गया।

दस का घंटा बोल रहा था । चूँकि रुये कार्डिनेट की ओर खुलने वाले द्वार की चाबी उसके पास थी अतः वह बिना किसी के देखे अन्दर चला गया। ऊपर, बैठक में 'जो' कुछ धूल साफ कर रही थी। वह उसे देखकर आश्चर्य में भर गई। यह न समझ पा कर कि उसे कैसे रोका जाये उसने मोशियो बेनट की लम्बी कहानी कहना प्रारम्भ किया, जो बड़ा क्रुद्ध होकर उसे कल से ढूँढ़ रहा था। वह वहाँ दो बार आया तथा उसने कहा कि यदि काउन्ट मैडम के पास आये तो उसे पहले उसके पास भेज दिया जाय।

मुफट ने वह सुना पर वह उस व्यर्थ बात को न समझ पाया और तब उसने उसकी घबड़ाहट को देखा और तुरन्त ईर्षा के आवेश में भरकर—जिसके लिये अब अपने को समर्थ न पाता था वह सोने के कमरे के द्वार की ओर बढ़ा जहाँ से खिलखिलाहट के शब्द प्रकट हो रहे थे। द्वार ने जगह ली और वह खुल गया और 'जो' अपने कन्धे उचकाती हुई हट गई। यह अब सर्वनाश हुआ। मैडम का दिमाग खराब हो गया है, मैडम इस गन्दगी से अपने आप ही निकलेगी।

और मुफट, देहली पर ही अपने सामने का दृश्य देखकर चीख उठा:

"हे भगवान् ! हे भगवान् !"

नया सजाया हुआ कमरा अपने राजसी वैभव को चमका रहा था। चाँदी के बटन, चाय के रंग के गुलाबी मखमल के पर्दों पर लगे हुए थे। वह प्रकाश का गुलाबी रंग था जो सुहानी रातों में चमकता है जब दिन की

समाप्ति-समय आकाश के हलके रंग पर क्षितिज में वीनस चमका करता है। सोने के डोरे किनारे-किनारे लटक रहे थे--सोने के वे तार जो छोटे-छोटे खाने बना रहे थे, चमकती अग्नि-ज्वाल से प्रतीत होते थे। लाल रंग के बल्वों के ढीले स्विच जो कमरे की नग्नता को आधा ढक रहे थे, कामोत्तेजना का पीलापन जिसे वे दुहरा कर रहे थे। उसके सामने सोने-चाँदी का पलंग पड़ा हुआ था जो अपने गुदगुदेपन में झलक रहा था—एक सिंहासन जो नाना के नग्न अंग-प्रत्यंगों के फैलाव के लिये बहुत बड़ा था—बिजान्टाइन की वैभव सम्पत्ति का पूजा-स्थान जो उसके (नाना के) सर्वशक्तिमान सेक्स के अनुरूप था और जिसको इस क्षण वह प्रदर्शित कर रही थी—नग्न व एक डरी हुई मूर्ति की धार्मिक चरित्रहीनता सहित। और उसके निकट--उसके वक्षस्थल की बर्फीली झलक में, उसकीभगवती की सी विजय में, एक निर्लज्ज और जीर्ण-शीर्ण व्यक्ति, एक हास्यास्पद और रुदन करने वाली समाप्ति का प्रतीक मारक्युस डि० चोरड अपनी रात्रि की कमीज में पड़ा था।

काउन्ट ने अपने हाथ जोड़ लिये। काँपने की भयावह स्थिति में वह दोहराता रहा : "हे परमात्मा, मेरे भगवान्।"

वह मारक्युस डि० चोरड था जिसके लिये उस नौका के स्वर्ण-पुष्प फूले थे—स्वर्ण के बने गुलाब के फूलों के गुलदस्ते स्वर्ण की पत्तियों के गुच्छों के ऊपर झलक रहे थे; यह उसके लिये था कि अप्सरायें चाँदी की बेलों पर गोल घेरे में नर्तन कर रही थीं और अपने शृंगारिक रूप व रसिक तृप्ति में सामने झाँक रही थीं; और वह भी उसके लिये ही था कि रोम देश की एक देवी सोयी हुई स्वर्ग की अप्सरा को नग्न कर रही थी—कामोत्तेजना से परेशान—रात्रि की वह मूर्ति जो नाना की सम्मानित नग्नता की प्रतिच्छया थी और वे दोनों भरी हुई जाँघें जिन्हें देखकर उसे कोई भी पहचान सकता था। वहाँ मनुष्यता की गन्दगी की भाँति पड़ा हुआ, साठ वर्ष के पापाचारों और व्यभिचारों से हिला हुआ मारक्युस दिख रहा था—मानो कब्रिस्तान के कोने में, नारी की चमकती माँसलता की शोभा से घिरा हुआ हो। जब उसने दरवाजा खुला देखा तो वह उठा जैसे पक्षाघात से मारा हुआ, किसी बूढ़े के डर सहित।

लम्पटता की वह अन्तिम रात्रि उसके शरीर व मन की दुर्बलता को कुचल रही थी। वह अपनी दूसरी बाल अवस्था को पहुँच चुका था और, आगे कोई शब्द न कह सकने के कारण, वह आधा पक्षाघात का मारा, लड़-खड़ाता, काँपता—भागने की तत्परता में था। उसकी रात्रि की कमीज एक शरीर के हड्डियों के ढाँचे पर सिकुड़ी हुई थी—एक पैर कपड़ों के बाहर था एक कमजोर, काले रंग का पैर सफेद बालों से भरा हुआ। नाना, अपने रोष में भी, हँसी न रोक सकी।

"लौट जाओ, कपड़ों के अन्दर हो जाओ" उसने उसको अन्दर धक्का देते हुए और चादर से ढकते हुए कहा जैसे कोई गन्दगी भरी छत हो जिसे कोई देखना न चाहता हो।

और वह द्वार बन्द करने को दौड़ी। सचमुच अपने 'नन्हे मुफ···' के लिये वह बड़ी भाग्यहीन थी। वह सदैव तभी उपस्थित होता था जब किसी अशोभनीय स्थिति में हो। और, क्यों, वह नारमैंडी में धन की खोज में गया था? वह बूढ़ा उसके लिये चार हजार फ्रैंक लाया था और उसने उसे इजाजत दे दी थी। उसने दुबारा द्वार को धक्का दिया और चिल्लायी :

"यह बहुत भद्दा है। वह सब तुम्हारा दोष है। किसी के कमरे में घुसने का यह कोई तरीका नहीं है। उधर बैठो, वह ठीक रहेगा। गुड-बाई।"

मुफट उस बन्द द्वार के सामने खड़ा रहा। जो कुछ उसने अभी-अभी देखा था इससे वह बेहद पिसा हुआ था। उसके कांपने की अवस्था बढ़ गई—वह कंपन उसके पैरों से चढ़कर उसके वक्ष व उसके सिर तक पहुँच रहा था। तब एक वृक्ष की भाँति, जिस पर बिजली गिर पड़ी हो, वह लड़खड़ाया और घुटनों पर गिर पड़ा। सब अंगों की टूटन में, और निराशा में अपने दोनों हाथ जोड़कर वह बड़बड़ाया :

"यह बहुत है। ओ भगवान्! यह बहुत है।"

उसने सब कुछ स्वीकार कर लिया था किन्तु अब आगे वह सहन नहीं

कर सकता। उसने अपने को शक्तिहीन पाया—उस अंधियारे में जहाँ मनुष्य की विवेक-शक्ति नष्ट हो जाती है। विचित्र चिल्लाहट में, अपने जुड़े हाथों को ऊपर उठाकर उसने भगवान् को पुकारा, उसने ईश्वर और स्वर्ग को बुलाया।

"ओह, नहीं! मैं नहीं! ओह! मेरे पास आओ, मेरे प्रभु! सहायता करो, या मुझे मर जाने दो। ओह! नहीं! वह आदमी नहीं, मेरे भगवान, वह समाप्त हो गया। मुझे यहां से उठा ले जाओ, जिससे मैं आगे देख न सकूं, जिससे मैं आगे अनुभव न कर सकूँ। ओह! मैं तुम्हारा हूँ, मेरे प्रभु—हमारा पिता जो स्वर्ग में है!"

एक विश्वास की जलन में वह वैसा करता रहा। और एक आन्तरिक प्रार्थना उसके ओठों पर प्रकट हुई। किन्तु किसी ने उसके कन्धों को थपथपाया। उसने अपनी आँखें उठायीं: वह मोशियो वेनट था जो उस बन्द द्वार के समक्ष उसे प्रार्थना करते हुए देखकर चकराया। तब, जैसे भगवान ने स्वयं उसकी प्रार्थना सुन ली है, उसने अपने आप को उस छोटे बूढ़े आदमी की भुजाओं में डाल दिया। अन्त में वह रो सका: वह सिसकियाँ भरता रहा, और दोहराता रहा:

"मेरे भाई, मेरे भाई।"

उसके अन्दर की समस्त दुःखी मानवता ने उस चीख में सन्तोष पाया। उसने मोशियो वेनट का चेहरा आँसुओं से भिगो दिया, उसने उसको चूमा और टूटे-टूटे वाक्य बोलता रहा।

"ओह! मेरे भाई, मैं कितनी वेदना सह रहा हूँ! मेरे लिये केवल तुम बचे हो, मेरे भाई। मुझे सदा के लिये यहां से ले चलो, ओह! भगवान् के लिये। दया के साथ यहाँ से ले चलो।"

तब मोशियो वेनट ने उसे अपनी छाती से लगा लिया। उसने भी उसे भाई कहा। किन्तु उसे तो दूसरी चोट भी सहन करनी थी। पिछले दिन से वह उसे ढूँढ़ रहा था—यह कहने के लिये कि काउन्टेस सैबीन ने अपनी गलतियों का ताज पहन लिया। वह एक लिनेन सीने वाले की दुकान में काम करने

वाले एक युवक के साथ लोप हो गई है—एक ऐसा डरावना काण्ड जिसके विषय में समस्त पेरिस चर्चा कर रहा है।

उसको उस प्रकार की धार्मिक प्रशंसा और प्रभाव में देखकर, उसने (मो० वेनट ने) उस बात को कहने का उपयुक्त अवसर समझा और उसने, वह सब क्या हुआ, स्पष्ट बता दिया, वह दुखान्त जिसमें उसका घर चक्कर काट रहा था, ऊब रहा था। काउन्ट पर किंचित भी प्रभाव न हुआ। वह उसे बाद में देखेगा। और पुनः अपनी व्यथा में डूबकर, द्वार की ओर देखते हुए, दिवालों व छत को डरावनेपन से देखकर, वह कुछ न कर सका और इन विनीत शब्दों को दोहराता रहा :

"मुझे यहाँ से ले चलो, मैं इसे आगे सहन नहीं कर सकता; मुझे ले चलो।"

बच्चों की भाँति मोशियो वेनट उसे वहाँ से उठा ले गये। उस समय से वह निरन्तर उसके पास बना रहा। मुफट पुनः एक बार धर्म की कठोर मर्यादाओं का पालन करता रहा। उसके जीवन में विस्फोट हो गया। उसने राज्य-सभा से अपने पद का त्याग-पत्र भेज दिया जो टुलियर्स की प्रतिष्ठा की चाहना थी। उसकी लड़की स्टेला ने उसके विरुद्ध एक कार्यवाही प्रारम्भ कर दी थी—उसकी एक चाची के द्वारा दिये गये साठ हजार फ्रांक के लिये; जो उसे उसकी शादी के समय मिलने चाहिये थे। लुटा हुआ सा और अपने सौभाग्य के दिनों के अवशेषों से बहुत सादगी का जीवन व्यतीत करते हुए, उसने अपने आप को धीरे-धीरे काउन्टेस के द्वारा समाप्त होने दिया जो नाना द्वारा तिरस्कृत वस्तुओं को निगल गई। सैबीन—नारी की उस विवेकहीनता के द्वारा बरबार की हुई उत्तेजना की चरमसीमा तक पहुँच गई तथा विनाश की अन्तिम खाई खोदती गई। वह घर की समाप्ति का कीड़ा था। बहुत से चक्करों और नये अनुभवों के पश्चात् वह लौटी थी और काउन्ट ने 'ईसाई मत की क्षमा' देकर उसे रख लिया था। वह उसके साथ जीवित लज्जा की भाँति बनी रही। किन्तु, वह अधिकाधिक उदास होकर उससे दूर होता गया—उन कष्टों से दूर जिनका कोई अन्त ही न था। भाग्य ने उसे

औरत के हाथों मे बचा लिया था—भगवान के हाथों में देने के लिये । नाना की व्यभिचारी सुखानुभूतियों के अनंतर उसमें धार्मिक प्रभावना थी, बुदबुदाहट, प्रार्थना और गहन निराशा—एक पतित प्राणी का अपमान जो अपने अस्तित्व की धूल के नीचे पिस रहा था।

पूजागृहों के अँधेरे कोनों में, उसके घुटने सर्द पत्थरों में जम जाते थे। उसने पुन: अपने बीते हुए दिनों का आनन्द प्राप्त कर लिया था—उसके अङ्गों का संकोच, उसकी बुद्धि का मोहक संताप, अपने अस्तित्व की चाहना का दूरस्थ सुख।

धीरे-धीरे नाना विषाद में भरती गई। प्रथम तो मारक्युस और काउन्ट की भेंट ने उसे दुःखी किया—कुछ थोड़े से भोग एवं सुख सहित। तब, उस बूढ़े आदमी का ध्यान आया जो अभी २ बग्घी में गया था, और अपने अर्ध-मृत व दयनीय 'नन्हे मुफ...' का स्मरण हुआ जिसे वह अब कभी नहीं देख पावेगी—उसको अनेक बार इतना दुःखी करने के पश्चात् जिसके कारण उसमें भावनामय अवसाद का प्रभाव प्रारम्भ हो गया था। अब सैटीन की बीमारी का समाचार सुनकर वह और भी खिन्न हुई। वह लड़की पन्द्रह दिन पूर्व गायब हो गई थी और धीरे-धीरे लारी बोसियर के अस्पताल में मरणासन्न थी क्योंकि मैडम राबर्ट ने उसे इस भयानक स्थिति पर पहुँचा दिया था। जैसे ही वह गाड़ी लाने का निर्देश देकर उस लड़की को देखने जाने की तत्परता में थी, 'जो' ने उसे अपने जाने का एक सप्ताह का नोटिस दे दिया। इससे वह और भी निराश हो गई। उसे ऐसा लगा जैसे वह अपने किसी पारिवारिक सदस्य को खो रही है। उसने 'जो' से बने रहने का अनुरोध किया। 'जो' ने मैडम के कष्ट से अधिक प्रभावित होकर उसे चूमा और कहा कि वह किसी शिकायत को लेकर नहीं जा रही है।

किन्तु, वह उसके दुःखों के दिन थे। वह अनेक उलझनों में भर कर अपनी बैठक में इधर-उधर टहल रही थी। तभी लेबार्डेट वहाँ आया। उसने किसी व्यापारिक वार्ता के पश्चात् एक-दो वाक्यों में सूचना दी कि जार्ज की मृत्यु हो गई है। यह सुनकर वह सुन्न हो गई।

"औज़ी मर गया !", वह चिल्लाई।

और उसके नेत्र अनायास ही कालीन के उस पीले धब्बे पर टिक गये। किन्तु अन्त में वह विलीन हो गया—पैरों की कुचलन ने उसे साफ कर दिया था। लेबार्डेट ने उसे कुछ विवरण दिया। किसी को ठीक पता नहीं कि क्या हुआ; किसी ने धाव की बात कही जो खोला गया था और कुछ ने आत्म-हत्या की कहानी बताई—लेस फान्डेट्स के किसी तालाब में डूब जाने की बात। नाना कहती रही :

"मर गया ! मर गया!"

तब वह सिसकियों में फूट पड़ी और अपने विवाद को शांत किया जो सुबह से भरा हुआ था। वह एक अदृश्य वेदना थी, कुछ भारी-भारी और अत्यधिक दुःखमय जिसने उसे घेर लिया था। लेबार्डेट ने जार्ज के सम्बन्ध में उसे सान्त्वना देने की चेष्टा की किन्तु उसने अपना हाथ हिलाकर उसे रोकने की चेष्टा की और फूटी आवाज में कहती गई :

"वह केवल वही नहीं, वे सब, वह सब कुछ। मैं अत्यधिक दुःखी हूँ। ओह ! मैं जानती हूँ ! वे सब फिर कहते हैं कि मैं बहुत घृणित स्त्री हूँ। यह माँ—जो वहाँ रो रही है और वह बेचारा आदमी जो सुबह मेरे दरवाजे के बाहर विलाप कर रहा था और अन्य जो सब बरबाद कर दिये गये, मेरे ऊपर एक-एक कौड़ी समाप्त करके। वह ठीक है, नाना को दो, एक खूँख्वार जानवर को दो। ओह ! मेरी बड़ी चौड़ी पीठ है, मैं वह सब सुन सकती हूँ जैसे वह मैं ही हूँ—एक गन्दी वेश्या जो सब को उसकाती है, जो कुछ को साफ करती है तथा औरों को मारती है—जो लोगों को अपार दुःख देती है'''।"

तब वह रुकने को विवश हुई, अपने आँसुओं में रुँध गई; वह अपनी व्यथा सहित एक सोफे पर गिर पड़ी। उसने अपना सिर एक तकिये में छिपा लिया। वे दुर्भाग्य उसने अपने चतुर्दिक देखे। वे विनाश, जो उसने किये थे, उसको निरन्तर चेतना में भरते रहे और उसकी आवाज एक छोटी लड़की की सी धीमी होती गई :

"ओह ! मैं दुःखी हूँ, ओह ! मैं दुःखी हूँ। मैं कुछ नहीं कर सकती, यह मेरा गला घोट रहा है। किसी के द्वारा न समझा जाना कितना कठोर है प्रत्येक को अपने विरुद्ध करना, क्योंकि वे शक्तिशाली हैं—तब भी जबकि किसी को कोई शिकायत न करनी हो, जब किसी की अपनी स्वतन्त्र आत्मा हो। हाँ नहीं, नहीं।"

उसका आवेश तिरस्कार में बदल गया। वह उठी, अपनी आँखें पोंछीं और बिगड़ते हुए कमरे में टहलती रही।

"हाँ, ठीक है ! जिसकी जो इच्छा हो कहे, वह मेरा दोष नहीं है ? क्या मैं क्रूर हूँ ? मेरे पास जो कुछ था मैंने दिया, मैंने एक मक्खी को भी चोट नहीं पहुँचायी। वह वे थे; हाँ, वह वे थे। मैंने कभी नही चाहा कि मैं किसी के प्रति भी दुःखदायी बनूँ। और वे सदा मेरी स्कर्ट के चारों ओर लटकते रहे। पर अब वे सब कुड़कुड़ाते हैं या प्रार्थना करते हैं और व्यथित होने का बहाना करते हैं।"

और तब लेब्रार्डेट के सामने रुक कर और उसके कन्धों को थपथपाती हुई कहती रही :

"हाँ अब आओ, तुम तो थे, सच कहना। क्या वह मैं थी जिसने उन्हें प्रोत्साहित किया ? क्या वहाँ सदैव एक दर्जन आदमी नहीं रहते थे जो एक दूसरे से अधिक घृणित कर्म सोचते और करते थे। वे मुझे दुःखी करते थे। मैंने अपने को अलग भी रक्खा जिससे कि मैं उनकी उत्तेजना में न फसूँ, मैं डरती थी। मैं एक उदाहरण देती हूँ, वे सब चाहते थे कि मुझसे शादी करें। अच्छा मजाक था। हः, मेरे प्रिय दोस्त, मैं कम से कम बीस बार यदि स्वीकार कर लेती तो बेरोनेस या काउन्टेस हो सकती थी। किन्तु, मैंने मना कर दिया, क्योंकि मैं न्यायोचित थी। आह ! मैंने उन्हें बहुत से तुच्छ कृत्यों और बहुत से अपराधों को कर ने से रोका। उन्होंने चोरियाँ की होतीं, हत्यायें की होतीं, या अपने माँ-बाप को मार डाला होता। मुझे केवल शब्द कहना पड़ता किंतु मैंने वह नहीं कहा। और आज मेरा इनाम देखो। वह उस डागनेट की तरह, जिसकी मैंने शादी कराई, एक मरभुखा व नीच है जिसकी स्थिति मैंने

नबई— व्यर्थ उसे अपने पास हफ्तों रख कर। कल, मैं उससे मिली थी, उसने अपना सिर घुमा लिया! ठीक है, भाड़ में जाओ! सूअर! मै वैसी उल्लू नहीं जैसा तू।"

वह फिर टहलने लगी। उसने तीव्रतापूर्वक अपनी मुट्ठियाँ तानीं और एक छोटी मेज पर पटकीं।

"सब तुच्छ। वह न्यायोचित नहीं है। समाज का निर्माण ठीक नहीं हुआ है। स्त्रियों को बुरा भला कहा जाता है जबकि पुरुष पूर्णतः दोषी है। वह ऐसी चीजों की आशा करता है! सुनो, अब मै तुमसे कह सकती हूँ। उस सबमें मुझे जब कभी भी पुरुष के सम्पर्क में आना पड़ता था, तब मुझे किंचित भी आनन्द नहीं मिलता था। नहीं, थोड़ा भी नहीं। वे सदैव मुझे दुःखी करते थे, मैं शपथपूर्वक कह सकती हूँ। नहीं, लेशमात्र भी नहीं। अतः मैं तुमसे पूछती हूँ कि क्या इस सबमें मेरा कोई भी अपराध था? आह, उन्होंने सदैव मेरे जीवन से मुझे उबा दिया, तंग कर दिया! और बिना उनके, मेरे प्रिय दोस्त, और उन्होंने मुझे क्या बना दिया, मैं किसी कान्वेन्ट में होती, क्योंकि मै सदा ही धार्मिक रही हूँ। और चाहे सब विनष्ट हो गया तब भी, यदि उन्होंने अपना धन अथवा अपना शरीर छोड़ा, तो वह उनका अपना दोष है! मुझे उससे क्या प्रयोजन!"

"निश्चित ही," लेबार्डेट ने सन्तुष्ट होते हुये कहा।

तभी जो ने मिगनन का प्रवेश कराया। नाना ने मुस्करा कर उसका स्वागत किया। उसने एक प्रसन्नता-भरी चीख मारी, किन्तु अब सब समाप्त हो चुका था। उसने उसके निवासगृह की बड़ी प्रशंसा की, जो अब भी गरमाहट व उत्साह में भरा हुआ था किन्तु वह शीघ्र ही उसे बतावेगी कि उसकी उस भव्य कोठी से अब बहुत कुछ समाप्त हो चुका। और अब वह कुछ और स्वप्न देख रही है। किसी शुभ दिन अब वह उस सबसे छुटकारा पा लेगी। तब उसने बहाना करके अपने आगमन का कारण बताया कि वे लोग उस बूढ़े बास्क के लिये एक प्रदर्शन करने जा रहे हैं जिसका धन उसको दिया जावेगा क्योंकि वह पक्षाघात से पीड़ित है तो नाना ने अपना दुःख प्रकट किया और बास्क के

दो टिकट ख़रीद लिये। जो ने तब बताया कि बाहर गाड़ी प्रतीक्षा कर रही है और नाना ने अपना टोप मांगा। और जब उसने उसके फ़ीते कसे तो उसने उस बेचारी सैटीन की बीमारी की कहानी बतायी।

"मैं हॉस्पिटल जा रही हूँ। किसी ने मुझे इतना स्नेह नहीं किया जितना उसने। आह! कोई भी पुरुषों पर यह दोषारोपण करने में न्यायोचित है कि उनके हृदय नहीं होता। कौन जानता है? सम्भवतः वह अब तक मर गयी हो। ठीक है; मैं उसे देखना चाहूँगी। मैं एक बार उसको फिर चूमना चाहूँगी।"

लेबार्डेट व मिगनन मुस्कराये। अब वह दुःखी नहीं थी, वह मुस्करायी भी पर उन दोनों ने उसकी बातों को कोई महत्व नहीं दिया। वे उसे समझते थे। उन दोनों ने उसकी प्रशंसा की, विचारमग्न हो मौन सहित—जबकि उसने अपने दस्तानों के बटन लगा लिये। वह अकेली तन कर खड़ी हो गयी, अपने उस निवासस्थान के धन-वैभव के ढेर के बीच उन पुरुषों की भीड़ सहित जो उसके पैरों तले रौंदे गये थे। उन प्राचीन राक्षसों की तरह जिनका भयानक साम्राज्य हड्डियों से भरा हुआ था। वह नाना, मस्तक की हड्डियों पर पैर रखती थी और विनाश उसे घेरे रहता था: वैन्डेव्रेस की भयानक होली, फोक्रामेंट की वह निराशा, चीन-सागर में डूबना, स्टेनियर की बरबादी जिसने उसे एक ईमानदार आदमी बनने को विवश किया, लॉ फेलो की शान्त मूर्खता, और मुफट-पति-पत्नी का विनाशकारी अन्त; तथा जार्ज के सफ़ेद शव का फिलिप के द्वारा देखा जाना जो जेल से एक दिन पहले छूटा था। सर्वनाश और मृत्यु का नाना का कार्य पूर्ण सफल था। मक्खी कूड़ेघर से गन्दगी भर-कर उड़ी थी और साथ में समाज की भट्टी की विनष्ट राख लेकर जिसने उन मनुष्यों को केवल स्पर्श मात्र से स्वाहा कर दिया था। वह ठीक थी, वह न्यायोचित थी। उसने अपने लोगों से ठीक बदला लिया था—उन बदमाशों और आवारा लोगों से जिनके बीच वह उत्पन्न हुयी थी।

और जबकि उस तीव्र ज्योति में उसको सैक्स चढ़ा तो वह अपने छितरे पीड़ितों पर चमकता रहा—उगते सूर्य के प्रकाश की भाँति जो मृत्यु के मैदान

को चमकाता है । वह एक अच्छे जानवर की भाँति अपनी अज्ञानता को बनाये रही जो अपने कार्य से अनभिज्ञ रहता है—सदैव अच्छे स्वभाव वाले की तरह। वह अपनी अच्छी तन्दुरुस्ती में और कभी न समाप्त होने वाली खिल-खिलाहट में उसी भाँति बड़ी तथा मांसल बनी रही किन्तु वह सब आगे कोई महत्व नहीं रखता। उसका वह भव्य-भवन उसे बड़ा भद्दा लगने लगा। वह बहुत छोटा था, फर्नीचर के ढेर से भरा हुआ जो सदा उसके मार्ग को रोकता रहा—एक साधारण बेकार की चीज, केवल वह चाहती थी पुनः प्रारम्भ करना। वह अब भी उससे कुछ अच्छे का स्वप्न देख रही थी। अन्तिम बार सैटीन को चूमने के लिये वह अपनी दमकती पोशाक में चल दी—स्वच्छ, भरी-पूरी, बिलकुल ताजी दीखती हुयी जैसे वह कभी व्यवहार में नहीं लायी गयी हो।

१४.

नाना अचानक गायब हो गयी—दूसरी डुबकी, एक भारी कपटाचरण, किसी अजनबी स्थान को पलायन। जाने के पूर्व वह नीलाम की भावुकता में भर गयी, हर वस्तु को दूर फेंकना—वह भवन, फर्नीचर, वे जवाहरात, यहाँ तक की पोशाकें और पर्दे। उनका मूल्य आंका गया। पाँच दिन में छः लाख फ्रांक आये। अन्तिम बार पेरिस ने उसे स्वर्ग की अप्सरा की सी शान्ति में देखा, : 'मेलूसिन'; गेटी–थियेटर में जिसको बार्डनोव ने धृष्टतापूर्वक बिना एक पैसा दिये ले लिया था। वहाँ वह प्रुलियर व फान्टन के साथ थी। उसकी भूमिका एक गूंगी की थी—सब प्रदर्शन मात्र, किन्तु एक वास्तविक चोट; प्लास्टिक की तीन भंगिमाओं में, शक्तिशालिनी और मौन अप्सरा थी। तब उस महान् सफलता के बीच—जब बार्डनोव पागलों के से प्रचार में, पेरिस को भारी पोस्टरों से भर रहा था, एक सुहानी सुबह को सुना गया कि एक रात्रि पूर्व नाना, कैरो चली गयी—उसके मैनेजर के साथ एक साधारण सी बहस; एक शब्द जो उसे पसन्द नहीं आया, एक स्त्री का चित्र–चांचल्य जो इतनी धनवान हो कि एक क्षण को भी तंग किया जाना सहन नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त वह उसकी धुन थी। बहुत दिनों से वह तुर्क लोगों को देखने की अभिलाषा कर रही थी।

महीनों बीत गये। उसे भुला दिया गया। जब कभी भी उसके मित्रों में उसका नाम आया—महान आश्चर्यजनक कहानियाँ घूमती रहीं। प्रत्येक एक दूसरे से अलग और विलक्षण सूचनायें देता। उसने वायसराय को फांसा है; वह एक महल के हरम में राज्य करती है—दो सौ दासों के ऊपर, जिसके सिर वह केवल हँसने के लिये कटवा देती है। यही नहीं; उसने एक बड़े नीग्रो

के साथ अपने को बरबाद कर दिया है—एक गन्दी आसक्ति जिसने उसके पास एक सेमीज भी नहीं छोड़ा है--कैंगे के उन मदहोश व्यभिचारों के बीच। दो सप्ताह पश्चात वह सर्वव्यापी आश्चर्य बनकर प्रचारित हुआ—किसी ने कसम खाकर कहा कि उसे वह रूस में मिली थी। यह कहानी धीरे-धीरे बढ़ती रही।

वह एक राजकुमार की मिस्ट्रेस थी। उसके हीरों की चर्चा की जाती थी। सभी स्त्रियाँ उनसे परिचित हो गयीं—उन विस्तृत विवरणों को सुनकर जो प्रचलित थे, बिना किसी के यह बताये कि—उन बातों का सूत्र क्या है, अँगूठियों, ब्रेसलेट, ईयररिंग, एक हीरे का नेकलेस, दो अंगुल चौड़ा महारानी का सा एक मुकुट—बीच के भारी जड़ाव के साथ इतना मोटा जितन एक अंगूठा। उन दूरस्थ व अपरिचित स्थानों में, वह एक प्रतिमा की कौतुक-पूर्ण चमक में थी और बहुमूल्य जवाहरातों से सुसज्जित थी। और वह गम्भीर बातों के द्वारा प्रकट की जाने लगी—उस मौन प्रशंसा सहित उस सौभाग्य प्राप्त होने के प्रति जो उसे जंगली लोगों में मिला था।

एक जुलाई की रात्रि को लगभग आठ बजे लूसी ने, जो रूये डु फार्ग-सेन्ट-होनोर की ओर ड्राइव करती जा रही थी, केरोलीन हेवेट को देखा, जो एक पड़ौस के दूकानदार को पैदल ही कुछ आर्डर देने गयी थी। वह उनके पास गयी और तुरन्त बोली

"तुमने भोजन कर लिया ? तुम खाली हो ? ओह ! तब, डियर, मेरे साथ चलो। नाना लौट आयी है।"

दूसरी, यह सुनकर, तुरन्त गाड़ी में बैठ गयी और लूसी कहती रही—

"और तुम जानती हो, प्रिय ! अब जब हम बातचीत कर रहे हैं सम्भवत: वह मर चुकी हो।"

"मर चुकी ! क्या कह रही हो ?" केरोलीन आश्चर्य में चिल्लायी। "और कहाँ ? और क्यों ?"

"ग्रान्ड-होटल में, चेचक से —ओह ! यह एक पूरी कथा है।"

लूसी ने अपने कोचवान से कहा कि जल्दी ले चलो। कहते ही घोड़े रूये रायल और बाउलेवर्ड के बीच दौड़ पड़े। तब उसने नाना के नवीन अनुभवों की कहानी सुनायी—टूटे हुये वाक्यों में और एक सांस में।

"तुम कल्पना नहीं कर सकतीं। नाना रूस से आ रही है, मैं भूल गयी क्यों—उसका उसके राजकुमार से झगड़ा हो गया। उसने अपना सामान स्टेशन पर छोड़ा और सीधी अपनी चाची के पास गयी। तुम्हें उस बूढ़ी स्त्री का ध्यान होगा? उसने अपने बच्चे को चेचक में बीमार पाया। बच्चा अगले दिन मर गया। और तब उसका अपनी चाची से उस धन के सम्बन्ध में झगड़ा हुआ जो उसे भेजना चाहिये था किन्तु उसको एक पाई भी नहीं भेजी गयी। ऐसा प्रतीत हुआ कि बच्चा उसी से मर गया—संक्षेप में, बच्चे को न ठीक से भोजन मिला, न ठीक से उसकी देखभाल हुयी। बहुत ठीक, नाना चली गयी, होटल में रही और मिगनन से मिली, तभी वह अपना सामान लाने की सोच रही थी। वह बड़ी विचित्र हो रही थी, वह काँपती थी, और बीमार होना चाहती थी। मिगनन उसे उसके कमरे में ले गया और उसकी देखभाल का वायदा किया। ह: क्या यह मज़ाक नहीं है? क्या यह विचित्र भी नहीं है? किन्तु, यही सब कुछ है। रोज़ ने नाना की बीमारी का हाल सुना और यह सुनकर कि वह एक दूर जगह में अकेली पड़ी है, वह विचलित हो उठी और रोते हुये उसकी देखभाल करने के लिये उसकी ओर भागी। तुम्हें याद है वे एक दूसरे से कितनी दूर थीं? झगड़ने वालियों की जोड़ी? तब, रोज़ नाना को ग्रान्ड होटल में ले आयी जिससे वह अच्छी जगह मर सके। उसने उसके साथ अब तक तीन रातें बिताई हैं, और सम्भव है वह भी बाद में उसी से मर जाय। लेबार्डेट ने ही मुझे यह सब बताया है अत: मैं उसे देखना चाहती हूँ।"

"हाँ, हाँ," केरोलीन ने अत्यधिक उद्विग्न होकर कहा: "हम लोग वहाँ चलेंगे।"

वे वहाँ पहुँच गयीं। बाउलेवर्ड में कोचवान को गाड़ियों की भीड़-भाड़ तथा पैदल चलने वालों के कारण रुकना पड़ा। दिन में, कार्प्स लेजिस्लेटिफ

ने युद्ध की घोषणा का निश्चय किया था। सब तरफ से फुटपाथों व सड़कों पर भीड़ भर गयी थी। मैडेलीन में सूर्य एक रक्तवर्ण बादल के पीछे छिप गया था, जिसकी लाल प्रतिच्छाया ऊँची खिड़कियों को चमका रही थी। चाँदनी बढ़ती आ रही थी; एक उदास और कष्टप्रद समय था, आसपास के मकानों में, जिनको गैस-लैम्पों ने अभी नहीं चमकाया था, अँधेरा घिरता आ रह था।

"वह मिगनन है," लूसी ने कहा : "वह हमें कुछ सूचना देगा।"

मिगनन ग्रान्ड होटल के भारी बरामदे में खड़ा था। पहले प्रश्न पर, जो लूसी ने पूछा, वह उग्र हो उठा और बोला :

"मुझे पता नहीं। पिछले दो दिन से मैं रोज को वहाँ से उठा कर ले जा पाया हूँ। इस प्रकार अपनी खाल को यों खतरे में डालना कितनी बड़ी बेहूदगी है! यदि वह पकड़ ले तो वह अच्छी लगेगी, सारे चेहरे पर धब्बे—तब वह हमारे उपयुक्त होगा।"

यह ध्यान कि रोज अपने सौन्दर्य को खो देगी—मिगनन को परेशान कर रहा था। वह जैसी भी हो—नाना को छोड़ देगा और उस मूर्खतापूर्ण अन्ध-विश्वास को दूर कर देगा जिसके लिये औरतें डूबती हैं। किन्तु, फाचरी ने बाउलेवर्ड की सड़क को तभी सामने पार किया। और जब वह उस भीड़ में सम्मिलित हो गया तो उसने भी समाचार जानने की उत्सुकता व्यक्त की। तब दोनों आदमियों ने एक दूसरे को विवश करने की चेष्टा की कि वे ऊपर जांय। वे दोनों ही एक दूसरे के प्रति बड़े आत्मीय थे।

"सदैव, वही छोटी ···," मिगनन बोला : "तुमको ऊपर जाना चाहिये तथा रोज के आने पर जोर देना चाहिये।"

"सच! तुम सहृदय हो, तुम हो भी," पत्रकार बोला : "तुम स्वयं ऊपर क्यों नहीं जाते?"

तब जब लूसी ने कमरे का नम्बर पूछा तो उन दोनों ने उससे अनुरोध किया कि वह रोज को नीचे ले आये अन्यथा वे दोनों ही नाराज होंगे, तब ठीक होगा! लूसी व केरोलीन फिर भी तुरन्त ऊपर नहीं गयीं। उन्होंने

फान्टन को देखा जो जेब में हाथ डाले चक्कर लगा रहा था और भीड़ में भिन्न-भिन्न चेहरों को देखकर बड़ा खुश हो रहा था। जब उसने सुना कि ऊपर नाना बीमार है तो वह अत्यधिक भावावेश में कह गया :

"बेचारी लड़की ! मैं जाऊँगा और उससे हाथ मिलाऊँगा। उसको क्या हुआ है ?"

"चेचक," मिगनन ने उत्तर दिया।

अभिनेता ने पहले ही अपना पग बरामदे की ओर बढ़ा लिया था किंतु वह पीछे हटा और एक कंपकंपी के साथ केवल बुदबुदा गया, "आह, वह राक्षस ?"

चेचक पकड़ लेना कोई मजाक नहीं है। जब वह पाँच साल का था तो फान्टन ने लगभग उसे पकड़ा ही था। मिगनन ने अपनी एक चचेरी बहन का किस्सा बताया जो उससे मर ही गयी। और फाचरी, वह उस सम्बन्ध में बात कर सकता था क्योंकि उसके अब भी वे धब्बे थे—तीन निशान, जो उसने अपनी नाक के पास सबको दिखाये। और जब मिगनन ने उसको ऊपर जाने को जोर दिया, इस बहाने को बताते हुये कि लोगों को वह दुबारा नहीं होती है, उसने उस सिद्धान्त का तीव्रता से खण्डन किया।

तभी सामने से "बर्लिन की ओर ! बर्लिन की ओर ! बर्लिन की ओर !" चिल्लाती हुयी एक भीड़ आगे बढ़ी और वे सभी देशसेवा के कार्यों की भावना में भर गये—उसी प्रकार जैसे कोई सैनिक-बेन्ड सामने से जाने पर हृदयों में उत्तेजना भर देता है।

"हाँ, हाँ, जाओ और अपने-अपने सिर फुड़वाओ।" एक दार्शनिक की भाँति मिगनन बोला।

किन्तु फान्टन ने उसे बड़ा दिव्य समझा। उसने सेना में अपनी भर्ती कराने की बात कही। जब शत्रु सरहद पर हो तो सब नागरिकों को शस्त्र लेकर खड़े हो जाना चाहिये और अपने देश की रक्षा करनी चाहिये; और उसने आस्टरलिट्ज में बोनापार्ट की सी भावभंगिमा प्रकट की।

६१

"हाँ तो तुम हमारे साथ ऊपर चल रहे हो," लूसी ने उससे प्रश्न किया।

"आह ! नहीं !" उसने कहा : "बीमार होने के लिये कदापि नहीं।"

ग्रैन्ड-होटल के सामने के एक स्थान पर एक आदमी बैठा था—अपने रूमाल से अपने चेहरे को छिपाये हुये। फाचरी ने, वहाँ पहुँचते हुये, आँख मारते मिगनन का ध्यान उस ओर आकर्षित किया। तो वह सदैव वहाँ रहता है ? हाँ, वह हमेशा वहाँ रहता है और तब पत्रकार ने उन दोनों स्त्रियों को उँगली का संकेत करने को मना किया। जब उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो उन सबने पहचाना और एक धीमी आवाज उभरी। वह काउंट मुफट था जिसने ऊपर की एक खिड़की पर दृष्टिपात किया।

"तुम जानते हो वह यहाँ आज सुबह से है," मिगनन ने बताया। "मैंने उसे छः बजे देखा था। वह कठिनाई से वहाँ से हिला होगा। जैसे ही लेवार्डेट ने उससे कहा वह वहाँ आ बैठा और अपने रूमाल से अपना मुँह ढक लिया। हर आध घंटे में वह यहाँ तक आता है और पूछता है कि क्या ऊपर का प्राणी ठीक है और पुनः अपने स्थान पर जा बैठता है। हाँ, तुम जानते हो, वह स्वस्थ नहीं है वह कमरा। कोई भी किसी को स्नेह कर सकता है किन्तु बिना शिकायत किये हुये।"

काउंट अपने बन्द नेत्रों से, ऐसा नहीं दिख रहा था कि उसके आसपास जो कुछ हो रहा है उसे वह जानता है। निस्संदेह, उसे युद्ध की घोषणा का भी पता नहीं है ! न तो उसने भीड़ का अनुभव किया न उसे सुना।

"देखो !" फाचरी बोला : "वह आ रहा है। अब केवल उसे देखो।"

काउंट ने अपना स्थान छोड़ दिया था और उस भारी द्वार में घुस गया था किन्तु तब तक दरबान ने, जो उससे परिचित हो गया था, उसे प्रश्न करने का समय ही न दिया। उसने एकदम कह दिया—

"श्रीमान्, उसकी एक मिनट पहले मृत्यु हो गयी।"

× × ×

नाना के मृत शरीर से दुर्गन्धि आ रही थी जो बुरी तरह से कमरे में भर रही थी। सब ओर त्रास फैला हुआ था।

उसके परिचित स्त्री पुरुषों की भीड़ उसे कमरे में देखकर बाहर निकल आयी थी—मिगनन, बार्डनोव, डागनेट, फाचरी, रोज़, गागा, लूसी, ब्लान्च, केरोलीन हेकेट, फान्टन, तातानेने, लुई वायलेन, नाना की मा, स्टेनियर, मेरिया ब्लान्ड, प्रुलियर इत्यादि—चार सौ एक नम्बर कमरे से एक-एक करके बाहर निकल आये।

"बाहर चलो, बाहर चलो, मित्रो!" गागा दोहराती गयी। 'यह स्थान स्वस्थ नहीं है।"

उस पलंग पर अन्तिम दृष्टिपात करके वे शीघ्र बाहर हो गये। रोज ने भी अन्तिम बार नाना को देखा—

"आह, वह पहचानी नहीं जाती—वह बदल गयी," कहते हुए रोज मिगनन बुदबुदायी जिसने सबसे अन्त में कमरा छोड़ा।

बाहर आकर उसने कमरा बन्द कर दिया और पर्दा खींच दिया। नाना अकेली छोड़ दी गयी, मोमबत्ती के प्रकाश में उसका चेहरा ऊपर उठा दिया गया था। वह स्थान कब्रिस्तान हो गया था, रक्तमांस का वह ढेर अवशेष था—एक फावड़े भर में आ जाने वाला दुर्गन्धित व सड़ा हुआ मांस-पिंड जो उस गद्दे पर पड़ा था। फफोलों ने सारे चेहरे को नष्ट कर दिया था जो एक दूसरे में मिलकर लिपट रहे थे—मुरझाये हुए, नीचे दबे हुये, धूल के से रंग के। प्रतीत हो रहा था वह सब उस बिगड़ी आकृति पर भूमि की मट्टी का ही परिवर्तन है जिसमें चेहरा ठीक से पहचाना भी न जा रहा था। बायीं आँख गन्दे मवाद के बढ़ने से पूरी तरह समाप्त हो गयी थी; दूसरी आधी खुली—काला व गहरा छेद सा दिख रही थी। नाक से अभी भी पीव बह रहा था। एक लाल पपड़ी एक गाल से बढ़ते हुए मुँह पर फैल गयी थी जो घृणित हास की सी गन्दगी में भर गया था और इस शून्य एवं नाश की भयंकर और विषम झिल्ली पर वे बाल, वे सुन्दर बाल, सूर्य के रंग की लाल

गर्मी को अब भी स्थिर किये हुए थे जो सोने की बहती धारा में डूब गये थे। वीनस बरबाद हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि जिन गन्दे कीटाणुओं को उसने गन्दी नालियों से इकट्ठा किया था, उन पशुओं, मुर्दा मांस, उस विषैले झाग और उत्तेजना, जिससे उसने लोगों को बरबाद किया था, उसका चेहरा भर गया था और उसे खा गया था।

वह कमरा खाली था। बाउलेवर्ड से विषाद की वायु उठकर पर्दे में भर रही थी।